अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन् ॥ ॥श्री गणेशाय नमः॥ 'विश्वविजय पंचाङ्ग' सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोऽर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति ॥

राजा चन्द्र



मंत्री शुक्र

शरभार्चन विशेषांक

52

नवः प्राच्यमार्गनिखिलनिगमाद्यैरपि तथा। समानीतात्सारात् गणितमनघं वहति यः॥

कुम्भस्थीयाब्दवृत्तीयं केतकीचित्रापक्षीयं सार्वदेशिकं धर्मशास्त्रसम्मतम्

श्री विश्वविजय पञ्चाङ्गम्

सदासेव्यः प्राज्ञैर्विविधगणितज्ञैरपि सतः। सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि जयते 'विश्वविजयः' ॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

अ.भा. ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम्

श्री विक्रम संवत् २०५८ शकः संवत् १९२३ सन् २००१-२००२ भारतीय गणराज्य संवत् ५२-५३

आद्य सम्पादक - स्व० श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी- ज्योतिषाचार्य, सम्पादक - Er. श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन, हि. प्र.

मूल्य रु. ४५/-

ज्योतिष्मती निकेतन सोलन हिमाचल प्रदेश १७३२१२

वर्ष ५७

श्रीविश्वविजय पंचांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियां

''श्रीविश्वविजय पंचांग'' और 'ज्योतिषमती'' के प्रधान सम्पादक संचालक पूज्य पिताश्री पं. श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से संतुष्ट होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त, १९८२ को संस्कृत-दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर ने राजमहल में आपको ५००१/- रुपये, उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारीत ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पिताश्री को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी) सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिषमार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों एवं अभिनन्दन-पत्र प्राप्त हो चुके है। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलन में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी जो सार्वजनिक संस्थाएं आपके दिव्य गुणो से परिचित हैं वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते है। गत दिसम्बर से अप्रेल ८७ तक आप जयपुर (मुख्यमंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व उन्नयन संसद ने आपको ''डॉ. ऑफ एस्ट्रोलॉजी'' के सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी की कई पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है। गत १४ अगस्त १९८७ को इंडियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजीकल साइंसेज मद्रास की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट कर के सम्मानित किया।

दिनांक १ दिसम्बर, १९९० ई. को ''अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्था, दिल्ली'' में आयोजित एक विशाल भव्य समारोह में श्रीविश्वविजय पंचांग कर्त्ता (पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी) को उनकी ज्योतिष एवं भारतीय संस्कृति की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा की जाने वाली अद्भुत सेवा से प्रसन्न होकर भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह जी ने 'ज्योतिष सम्राट' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया।

दि. २८ फरवरी, १९९२ ई. को कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मेलन के मंच से जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने ''ब्रह्मर्षि'' के सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया।

– पं. सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

'श्रीविश्वविजय पंचांग' के प्रशंसक महापुरुष

'श्रीविश्वविजय पंचांग' पर भारत के प्रायः सभी गणमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्चराज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहां प्रकाशित कर रहे हैं–

महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. डॉ. सम्पूर्णानन्द जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्र नेता स्व. श्री कमलापति त्रिपाठीजी, भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरण सिंह जी। रा. स्व. सं. के भूतपूर्व सरसंघचालक स्व. श्री मा.सा. गोलवलकरजी। भूतपूर्व अजमेर मेरवाड़ राज्य के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व वित्त एवं शिक्षामंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय। भारत सरकार के भूतपूर्व राज्यमंत्री और संसद के सचेतक मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह जी। लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास एवं राजस्थान के भूतपूर्व यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं भूतपूर्व उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा, उदासीन सम्प्रदाया आचार्य विश्व भर में वेद मंदिरों के प्रतिष्ठापक ११४ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् सर्वतंत्र स्वतंत्र महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर ''श्रीजी'' श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्यजी महाराज, वृन्दावन के परम तपस्वी संत वृज अकादमी के संस्थापक योगीराज परमपूज्य श्री १०८ श्रीपाद बाबा महाराज, बृजधाम गोकुल महावन रमणरेती श्री कार्ष्णिआश्रम के महान् विद्वान् तपस्वी संत महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी गुरु शरणानन्दजी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखंडानन्दजी सरस्वती महाराज, ब्रह्मलीन ज्योतिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान् संत योगीराज राष्ट्रकुलगुरु अनन्त श्री विभूषित परमशक्त मणिपुर वासी श्री स्वामीजी महाराज, श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के मणिद्वीप वासी श्री १०८ आचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज, स्व. महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी, कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी, स्व. श्री पं. गणपतिदेवजी शास्त्री पंचांगकर्त्ता काशी, स्व. त्यागमूर्ति १०८ गो. गणेशदत्तजी महाराज, रामभक्त स्व. श्री पं. कपीन्द्र जी महाराज, [illegible] व्यास ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसादजी पोद्दार आद्य

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने "ब्रह्मर्षि" के सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया।

— पं. सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

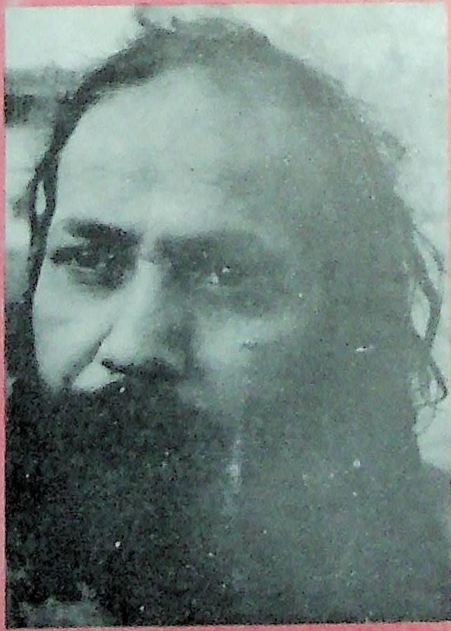
ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसादजी पोद्दार आद्य सम्पादक 'कल्याण' स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

श्रीः

श्रीविश्वविजय पंचांग को ब्रह्मा-विष्णु-शिव स्वरूप ब्रजमंडल के त्रिदेवों का स्नेहासीर्वाद



परमपूज्य अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मलीन श्री देवरहा बाबा



योगिराज तपःपूत श्री १०८ श्रीपादबाबा



योगिराज श्री १०८ स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द जी महाराज

विश्व की तीन महान् दैवी विभूतियों का स्नेहाशीर्वाद एक साथ प्राप्त करने का सौभाग्य "श्रीविश्वविजयपंचांग" को ४५वें वर्ष में प्राप्त हुआ। यह पंचांग प्रेमियों के लिए परम हर्ष का विषय है।

पहले हैं- विश्व विख्यात तपःपूत आध्यात्मिक जगत् के अमितायुः भीष्मपितामह ब्रह्मलीन योगिराज परम् सन्त अनन्त श्री विभूषित श्री देवराहा बाबा जो अनेक वर्षों से गंगा-यमुना तट पर घास फूस काष्ठ निर्मित ऊँचे मचान पर दिगम्बर रूप में निवास करते थे। कब वे मचान से उतर कर गंगा स्नान करने जाते और वापस लौटते थे यह कोई देख नहीं पाया। राष्ट्रपति पद तक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी मंत्रिगण आपके श्रीचरणों के दर्शन को लालायित रहते हैं। गत गुरुपूर्णिमा दि. २९ जुलाई १९८८ को अपराह्न काल में वृन्दावनधाम यमुनापार पवित्र मचान पर आपके दर्शनार्थ पंचांग सम्पादक पहुंचा। जब "श्रीविश्वविजयपंचांग" और "ज्योतिष्मती" का नववर्षांक मचान पर आपकी सेवा में पहुँचा तो बाबा ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। त्रिवेदी जी के प्रार्थना करने पर कि "नेत्र-व्याधि के कारण ३ वर्ष बाद मैं अब दूर से श्रीचरणों के दर्शन ठीक नहीं कर पा रहा हूँ। तो स्नेहार्दभाव से तत्काल दिगम्बर रूप में खड़े होकर बोले- 'ले कर ले, अच्छी तरह दर्शन, हम तुम्हारे कार्य से बड़े प्रसन्न हैं।" इतना कहकर अपने कर-कमलों से एक अमूल्य उपवस्त्र और पुष्कल-फल प्रसाद प्रदान कर पंचांग-कर्ता को स्नेहाशीर्वाद दिया।

दूसरे हैं- भारत के महान् सन्त, ब्रज अकादमी वृन्दावन के संस्थापक, अनन्त श्रीविभूषित योगिराज श्रीपादबाबा जिनके श्रीचरणों में रंक से राजा, राष्ट्रपति तक साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं।२ वर्ष पूर्व गुरु पूर्णिमा पर आपने भी श्रीविश्वविजय पंचांगकर्ता को अपने कर-कमलो से उपवस्त्र पहना कर पूजा का विशेष श्रीफल, कदली फल प्रसाद प्रदान कर उपकृत किया। आपका हस्तलिखित स्नेहाशीर्वाद विगत वर्ष के सं. २०४७ वि. के श्रीविश्वविजयपंचांग में पृष्ठ १५८ पर अंकित हैं।

तीसरे हैं- ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम श्रीरमणरेती महावन के अध्यक्ष तपपूत कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज से आपका हस्तलिखित शुभाशीर्वाद सं. २०४७ वि. के पंचांग पृ. १५८ पर प्रकाशित है। आप न्यायदर्शनवेदान्तादि के आचार्य हैं, "सन्तहृदय नवनीत समाना" की प्रतिकृति परमदयालु परदुःखकातर महापुरुष के साथ स्वयं कठोर तपस्वी भी हैं।१३ वर्ष पूर्व आपने गोवर्धन-क्षेत्रस्थ-श्रीमानसी गंगा का जीर्णोद्धार महीनों तक स्वयं सैकड़ों भक्तों के साथ खड़े रहकर करवाया। विगत वर्ष गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमा का कष्टसाध्य पावनयज्ञ पूर्ण किया। ऐसे तपस्वी सन्तों का स्नेहाशीर्वाद "श्रीविश्वविजयपंचांग" के लिए गौरव की वस्तु है।

विद्याप्रसाद मिश्र,

श्रीविश्वविजय पंचांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियां

''श्रीविश्वविजय पंचांग'' और ''ज्योतिष्मती'' के प्रधान सम्पादक संचालक पूज्य पिताश्री पं. श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से संतुष्ट होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त, १९८२ को संस्कृत-दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर ने राजमहल में आपको ५००१/- रुपये, उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारीत ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पिताश्री को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी) सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिषमार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों एवं अभिनन्दन-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलन में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी जो सार्वजनिक संस्थाएं आपके दिव्य गुणों से परिचित हैं वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते हैं। गत दिसम्बर से अप्रेल ८७ तक आप जयपुर (मुख्यमंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व उन्नयन संसद ने आपको ''डॉ. ऑफ एस्ट्रोलॉजी'' के सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी की कई पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है। गत १४ अगस्त १९८७ को इंडियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजीकल साइंसेज मद्रास की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट कर के सम्मानित किया।

दिनांक १ दिसम्बर, १९९० ई. को ''अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्था, दिल्ली'' में आयोजित एक विशाल भव्य समारोह में श्रीविश्वविजय पंचांग कर्ता (पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी) को उनकी ज्योतिष एवं भारतीय संस्कृति की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा की जाने वाली अद्भुत सेवा से प्रसन्न होकर भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह जी ने 'ज्योतिष सम्राट' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया।

दि. २८ फरवरी, १९९२ ई. को कुरुक्षेत्र मे अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मेलन के मंच से जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने ''ब्रह्मर्षि'' के सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया।

– पं. सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

'श्रीविश्वविजय पंचांग' के प्रशंसक महापुरुष

'श्रीविश्वविजय पंचांग' पर भारत के प्रायः सभी गणमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्चराज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहां प्रकाशित कर रहे हैं—

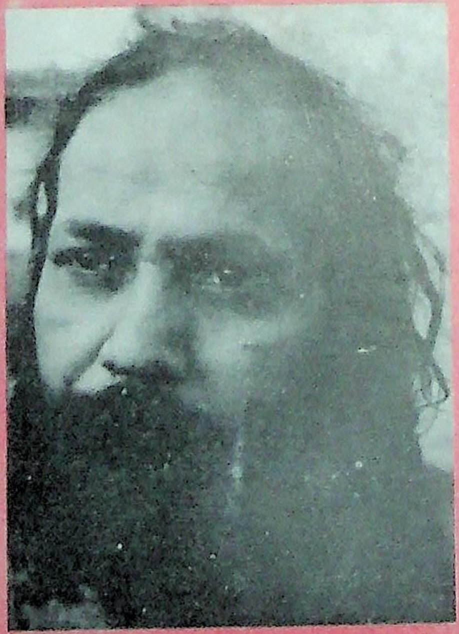
महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. डॉ. सम्पूर्णानन्द जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्र नेता स्व. श्री कमलापति त्रिपाठीजी, भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरण सिंह जी। रा. स्व. सं. के भूतपूर्व सरसंघचालक स्व. श्री मा.सा. गोलवलकरजी। भूतपूर्व अजमेर मेरवाड़ राज्य के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व वित्त एवं शिक्षामंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय। भारत सरकार के भूतपूर्व राज्यमंत्री और संसद के सचेतक मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह जी। लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास एवं राजस्थान के भूतपूर्व यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं भूतपूर्व उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा, उदासीन सम्प्रदाय आचार्य विश्व भर में वेद मंदिरों के प्रतिष्ठापक ११४ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् सर्वतंत्र स्वतंत्र महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर ''श्रीजी'' श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्यजी महाराज, वृन्दावन के परम तपस्वी संत वृज अकादमी के संस्थापक योगीराज परमपूज्य श्री १०८ श्रीपाद बाबा महाराज, बृजधाम गोकुल महावन रमणरेती श्री कार्ष्णिआश्रम के महान् विद्वान् तपस्वी संत महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी गुरु शरणानन्दजी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखंडानन्दजी सरस्वती महाराज, ब्रह्मलीन ज्योतिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान् संत योगीराज राष्ट्रकुलगुरु अनन्त श्री विभूषित परमशक्त मणिपुर वासी श्री स्वामीजी महाराज, श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के मणिद्वीप वासी श्री १०८ आचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज, स्व. महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी, कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी, स्व. श्री पं. गणपतिदेवजी शास्त्री पंचांगकर्त्ता काशी, स्व. त्यागमूर्ति १०८ गो. गणेशदत्तजी महाराज, रामभक्त स्व. श्री पं. कपीन्द्र जी महाराज, स्व. पदमभूषण डॉ. सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसादजी पोद्दार आद्य सम्पादक 'कल्याण' स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

श्री:

श्रीविश्वविजय पंचांग को ब्रह्मा-विष्णु-शिव स्वरूप ब्रजमंडल के त्रिदेवों का स्नेहासीर्वाद



परमपूज्य अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मलीन श्री देवरहा बाबा



योगिराज तपःपूत श्री १०८ श्रीपादबाबा



योगिराज श्री १०८ स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द जी महाराज

विश्व की तीन महान् दैवी विभूतियों का स्नेहाशीर्वाद एक साथ प्राप्त करने का सौभाग्य ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' को ४५वें वर्ष में प्राप्त हुआ। यह पंचांग प्रेमियों के लिए परम हर्ष का विषय है।

पहले हैं- विश्व विख्यात तपःपूत आध्यात्मिक जगत् के अमितायुः भीष्मपितामह ब्रह्मलीन योगिराज परम् सन्त अनन्त श्री विभूषित श्री देवराहा बाबा जो अनेक वर्षों से गंगा-यमुना तट पर घास फूस काष्ठ निर्मित ऊँचे मचान पर दिगम्बर रूप में निवास करते थे। कब वे मचान से उतर कर गंगा स्नान करने जाते और वापस लौटते थे यह कोई देख नहीं पाया। राष्ट्रपति पद तक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी मंत्रिगण आपके श्रीचरणों के दर्शन को लालायित रहते हैं। गत गुरुपूर्णिमा दि. २९ जुलाई १९८८ को अपराह्न काल में वृन्दावनधाम यमुनापार पवित्र मचान पर आपके दर्शनार्थ पंचांग सम्पादक पहुंचा। जब ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' और ''ज्योतिष्मती'' का नववर्षांक मचान पर आपकी सेवा में पहुँचा तो बाबा ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। त्रिवेदी जी के प्रार्थना करने पर कि ''नेत्र-व्याधि के कारण ३ वर्ष बाद मैं अब दूर से श्रीचरणों के दर्शन ठीक नहीं कर पा रहा हूँ। तो स्नेहार्दभाव से तत्काल दिगम्बर रूप में खड़े होकर बोले- 'ले कर ले, अच्छी तरह दर्शन, हम तुम्हारे कार्य से पड़े प्रसन्न हैं।'' इतना कहकर अपने कर-कमलों से एक अमूल्य उपवस्त्र और पुष्कल-फल प्रसाद प्रदान कर पंचांग-कर्ता को स्नेहाशीर्वाद दिया।

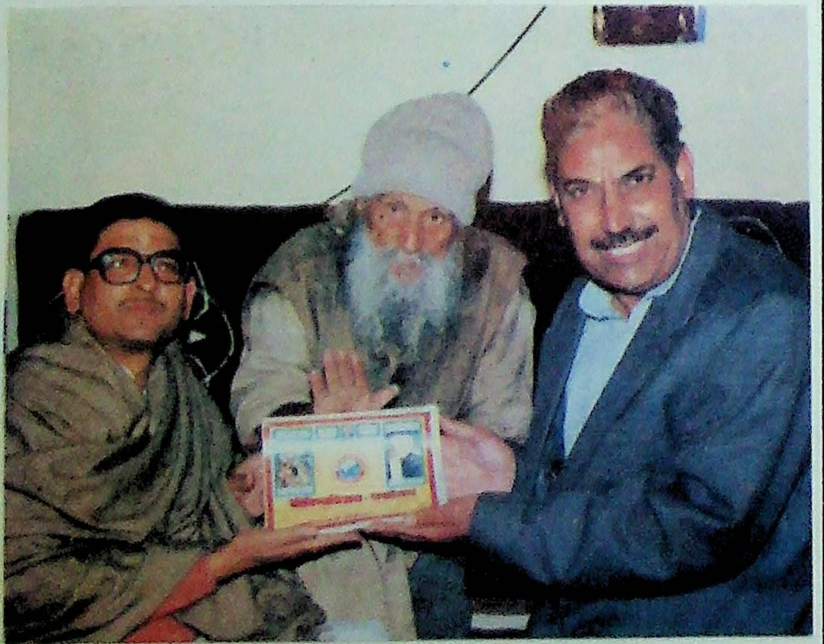
दूसरे हैं- भारत के महान् सन्त, ब्रज अकादमी वृन्दावन के संस्थापक, अनन्त श्रीविभूषित योगिराज श्रीपादबाबा जिनके श्रीचरणों में रंक से राजा, राष्ट्रपति तक साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं।२ वर्ष पूर्व गुरु पूर्णिमा पर आपने भी श्रीविश्वविजय पंचांगकर्ता को अपने कर-कमलों से उपवस्त्र पहना कर पूजा का विशेष श्रीफल, कदली फल प्रसाद प्रदान कर उपकृत किया। आपका हस्तलिखित स्नेहाशीर्वाद विगत वर्ष के सं. २०४७ वि. के श्रीविश्वविजयपंचांग में पृष्ठ १५८ पर अंकित हैं।

तीसरे हैं- ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम श्रीरमणरेती महावन के अध्यक्ष तपपूत कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज से आपका हस्तलिखित शुभाशीर्वाद सं. २०४७ वि. के पंचांग पृ. १५८ पर प्रकाशित है। आप न्यायदर्शनवेदान्तादि के आचार्य हैं, ''सन्तहृदय नवनीत समाना'' की प्रतिकृति परमदयालु परदुःखकातर महापुरुष के साथ स्वयं कठोर तपस्वी भी हैं।१३ वर्ष पूर्व आपने गोवर्धन-क्षेत्रस्थ-श्रीमानसी गंगा का जीर्णोद्धार महीनों तक स्वयं सैकड़ों भक्तों के साथ खड़े रहकर करवाया। विगत वर्ष गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमा का कष्टसाध्य पावनयज्ञ पूर्ण किया। ऐसे तपस्वी सन्तों का स्नेहाशीर्वाद ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' के लिए गौरव की वस्तु है।

' शरभावतार ' श्री शरभयन्त्रार्चन पद्धति



हिमालय क्षेत्र के तीन सौ वर्ष से अधिक आयु के वयोवृद्ध, महान् तपस्वी सन्यासी श्रीविश्वविजयपंचांग के सम्पादकों पं. सुधाकर शर्मा व पं. विनोद बिजल्वाण को शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए -



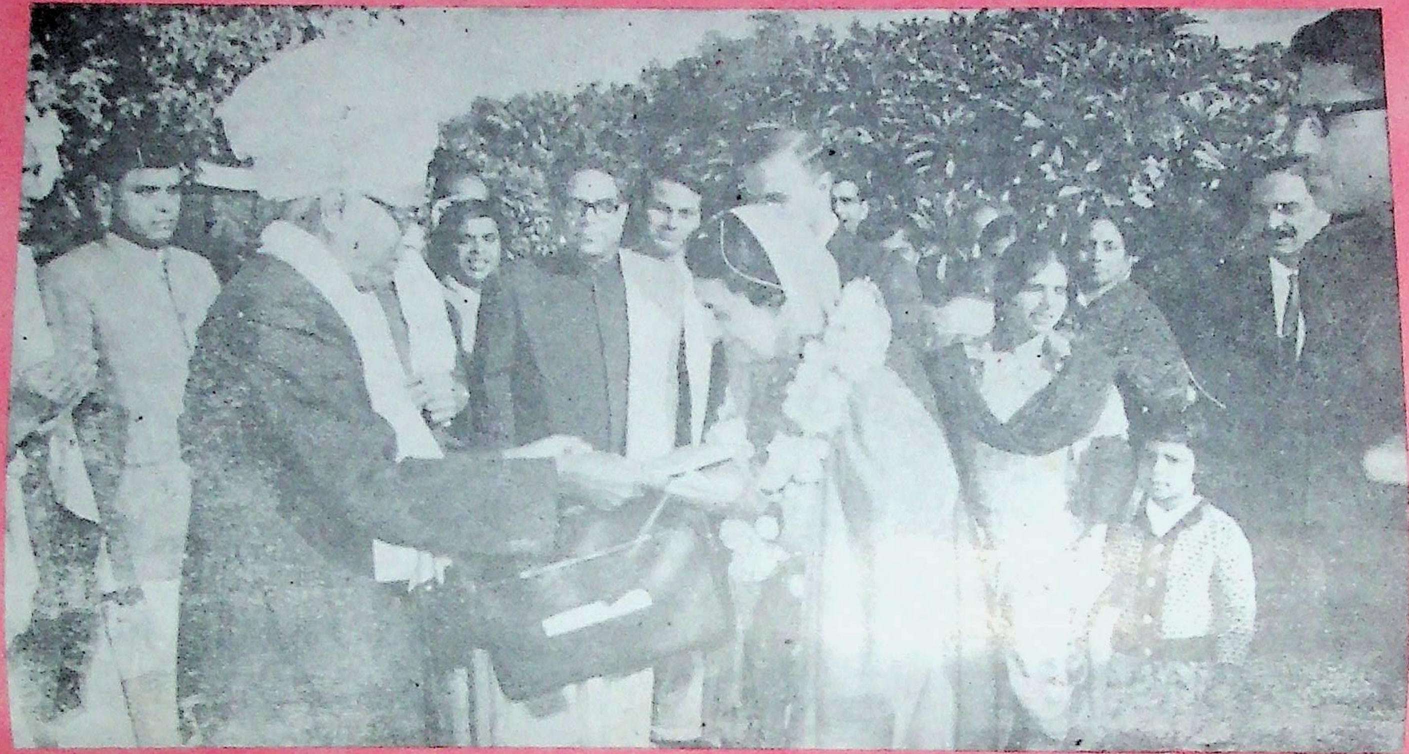
'शरभावतार' श्री शरभयन्त्रार्चन पद्धति



''श्रीविश्वविजयपंचांग''

भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों की दृष्टि में

आपका यह प्रिय पंचांग ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों, धर्माचार्यों एवं वरिष्ठ विद्वानों का ही कृपा पात्र नहीं, अपितु रंक से लेकर राजा तक के हृदय में अपना स्थान बना चुका है। (भू०पू० राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी, भू०पू० प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी, श्री लालबहादुर शास्त्री जी, श्रीमती इंदिरा गाँधी, श्री चौ० चरण सिंह एवं अनेक प्रांतों के राज्यपालों तथा मुख्यमंत्रियों के उद्‌गार यथा समय पंचांग व पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू जी को पंचांग से विशेष प्रेम था और वे अपने पंडित कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसका प्रमाण ४२ वर्ष पूर्व सोलन में घटी एक घटना प्रत्यक्षदर्शियों को अब भी स्मरण है। १६ जुलाई १९५९ को श्री पंडित नेहरू जी शिमला से लौटते समय कुछ देर नागरिकों का अभिनन्दन स्वीकार करने के लिए सोलन में रुके थे। श्री त्रिवेदी जी ने पुष्पमाला के साथ संवत् २०१६ वि० का ''विश्वविजयपंचांग'' भेंट किया तो बोले- 'धन्यवाद, इस वर्ष अभी तक मैंने आपका पंचांग खरीदा नहीं था। इस पर त्रिवेदी जी ने पूछा- ''क्या आप भी पंचांग खरीदते हैं?'' तत्काल उत्तर मिला- ''क्या आप मुझे पंडित नहीं मानते।'' उस समय श्री नेहरू जी के साथ श्रीमती इन्दिरा गाँधी और तत्कालीन उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर सिंह भी थे। ३१ वर्ष पूर्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने जन्म दिवस पर १९ नवम्बर १९६९ को प्रधानमंत्री निवास में श्री त्रिवेदी जी से संवत् २०२६ विक्रमी का ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' अभिवादन पूर्वक सस्नेह ग्रहण किया- उस समय का एक स्मृतिचित्र यहाँ प्रस्तुत है।



विश्वविजय पंचाङ्ग सदाऽस्तु विदुषा मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोऽर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति ॥

राजा चन्द्र



मंत्री शुक्र

नवः प्राच्यमार्गैरखिलनिगमाद्यैरपि तथा।
समालीनात्सारात् गणितमतवत् वहति यः॥

सदासेव्यः प्रोक्तोविधिगणितजैर्यप मतः।
सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि विजयते 'विश्वविजयः'॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

अ.भा.ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्गम्

श्री विक्रम संवत् २०५८ शकः संवत् १९२३ सन् २००१-२००२ भारतीय गणराज्य संवत् ५२-५३

आद्य सम्पादक-स्व. श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी-ज्योतिषाचार्य, सम्पादक- श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी ज्योतिष्पती निकेतन सोलन, हि. प्र. फोन: ०१७९२-२०५१६

मानद सह-सम्पादक- पं० विनोद कुमार बिजल्वाण, एम. एस. सी., ९१, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश फोन- ४३५४०१

वर्ष ५७

मुद्रक एवं वितरकः- रुचिका पब्लिकेशन्स

७/६४११, देवनगर, करोलबाग, नई दिल्ली- ५ फोनः- २९४३२५४, ५७२१४०३

।। श्री ।।

प्रकाशकीय प्राक्कथन

जगत् जननी माँ भगवती की प्रेरणा से एवम् पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी के शुभाशीर्वाद से मैंने आपके समक्ष श्रीविश्वविजयपंचांग प्रस्तुत किया। आप सबने मुझ को भरपूर प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया जिसके कारण अगामी श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०५८ वि. का आपके सामने प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक हर्ष हो रहा है। आगे भी आप सब लोग मुझे इसी प्रकार का सहयोग और सुझाव देते रहें जिससे पंचांग अपनी गरिमा को बनाये रखे।

इस पंचांग के प्रकाशन, मुद्रण और वितरण नववर्षारम्भ से तीन मास पूर्व पहुँचाने के कार्य में श्री वीरेन्द्र प्रताप गर्ग एवं श्री संजय कुमार गर्ग ने अपना पूर्ण सहयोग दिया इनका मैं आभारी हूँ।

माँ की कृपा रही तो आगामी नव वर्ष संवत् २०५९ वि. का श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०५८ वि. की दिपावली से पूर्व प्रकाशित हो सकेगा। आगे जैसी माँ की इच्छा होगी वही होगा।

पौष शुक्ल ९ गुरुवार संवत् २०५७ विक्रमी | *मातृचरणचंचरीक*
दिनाँक: ४-१-२००१ ई. | *सुधाकर शर्मा त्रिवेदी*

विषय सूची

आरम्भिका

या विद्या शिवकेशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषुप्रोता जगत्साक्षिणी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।

ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष फलदायक है। इसमें सन्देह नहीं, किन्तु इस शास्त्र पर सूक्ष्म अध्ययन और अनुशीलन की आवश्यकता है। इस शास्त्र का सृष्टि के आदि काल में भारतीय महर्षियों ने ही आविष्कार किया। भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षा वृत्ति से यह विज्ञान विदेशियों के हाथ लगा, उन्होंने इसको अपनाकर अद्भुत नाम एवं यश प्राप्त किया। अनेकों मुसलमान और अंग्रेजों ने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे और आज का समस्त पश्चिमी संसार इस विद्या के प्रभाव से लोगों को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीनविच की संसार प्रसिद्ध वेधशाला को कौन नहीं जानता ? वहां की जनता एवं सरकार अब भी प्रतिवर्ष करोड़ों रु० व्यय कर इस शास्त्र के अनुसंधान में लगी हुई है। पर, इसी शास्त्र के उद्गम स्थान भारत की दशा बड़ी शोचनीय है। यहां इस विज्ञान को कोई किसी प्रकार की सहायता तो पहुंचाता नहीं, पर आक्षेप या कुठाराघात करने पर सब प्रस्तुत हो जाते हैं। इन सब कारणों से व्यथित होकर यथाशक्ति इस वैज्ञानिक शास्त्र के द्वारा भारतीय संस्कृति के समुत्थान की शुभकामना से ही हम गत ५७ वर्षों से "श्रीविश्वविजय-पंचांग" के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं।

केतकी चित्रापक्षीय पंचांगों की सब ओर से संपुष्टि

उत्तर-भारत में केतकी चित्रापक्षीय पंचांग का जो कार्य हमने ५६ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया था उसके प्रचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रायः सभी प्राचीन पंचांगकारों ने सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव, मकरन्द और ब्रह्मपक्षीय ग्रहों के स्थान में चित्रापक्षीय (ज्योतिर्गणित केतकी आदि से) शुद्ध दृक्तुल्य ग्रह ग्रहणोदयास्तादि लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। विद्वान् सहयोगियों ने अनुभव किया है कि इस समय जब सूर्य परम मंदफल और चन्द्रमा के संस्कार फलों में कई कलाओं का अन्तर प्रत्यक्ष सिद्ध है तब सूर्य चन्द्रमा से निष्पन्न तिथिमान में भी १०-१५ घटी तक का अन्तर स्वाभाविक है। केतकी गणित के आधार पर दिये हुए "श्रीविश्वविजय-पंचांग" के तिथ्यादि धर्मशास्त्रीय निर्णय व्रतोपवासादि के लिए उपयोगी है, इसमें अब किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत-सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' और 'केलेण्डर' – रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट' में भी यही तिथि स्वीकार की गई और इसके आधार पर राष्ट्रीय पचांगों और राजकीय केलेण्डरों में पर्व त्यौहार एवं छुट्टियां लगाई जाती हैं। आज से ३८ वर्ष पूर्व विगत सं० २०१६ के चैत्र मास में कुम्भ महापर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आमंत्रण पर उत्तर-भारतीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि अगले वर्ष सं० २०२० वि० से उत्तर-भारत के सभी पंचांगकार अपने-अपने पंचांगों में तिथि नक्षत्र योग के घट्यादि का मान भी नवीन दृक्पक्ष (केतकी ज्योतिर्गणित वैजयन्ती आदि) से ही लगायेंगे। तदनुसार पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के प्रसिद्धपंचांगों में विगत वर्ष सं० २०२० वि० से तिथ्यादि भी नवीन सूक्ष्म गणित से लगानी प्रारम्भ कर दी, यह उत्तर-भारत में पंचांग एकीकरण के लिए परम हर्ष का विषय है।

इससे कुछ वर्ष पहले वैष्णव-सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री १०८ गो० गोकुलनाथ जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्दजी तीर्थ महाराज पुरीमठ, श्री १०८ जगद्गुरुशंकराचार्य सेकेश्वर करवीर मठ, जगद्गुरु श्री १०८ अनन्ताचार्य महाराज काञ्ची कामकोटि मठ आदि के शंकराचार्यचरणों ने भी सूक्ष्म तिथि से ही धर्मनिर्णय करने के आज्ञा पत्र निकाले हैं। वल्लभ-सम्प्रदाय की प्रधानपीठ श्रीनाथद्वारा के तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ गोविन्दलालजी महाराज की आज्ञानुसार गत ३८ वर्षों से 'श्रीनाथपंचांग' का भी केतकी चित्रापक्ष से ही निर्माण हो रहा है और नवलगढ़ के 'सरस्वती पंचांग' में भी अब तिथ्यादि मान, सूक्ष्म केतकी गणित से ही छपने लगा है। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य और जैन-धर्म के आचार्यों के धर्म कृत्य भी सूक्ष्म गणित प्रत्यक्ष पंचांग दृग्गणितानुसार प्रकाशित होने लगे हैं।

कुछ सज्जन तिथिमान को अदृश्य या अप्रत्यक्ष कहकर उसे आधुनिक काल के लिए अप्रत्यक्ष स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव सूर्यसिद्धान्त ब्रह्मपक्षादि से बनाने का आग्रह करते हैं – यह वर्तमान काल के लिए उपयुक्त नहीं। इस विषय में तैत्तिरीय संहिता, सिद्धान्त कामधेनु, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, नारदीय-पुराण आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण गत वर्षों के पंचांग की आरम्भिका में हम प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल दो आप्तवचन दे रहे हैं –

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृष्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम्।। (वशिष्ठः)
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्सममियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगल धर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा।। (ति० चि०)

भारत सरकार के मौसम-विभाग और अखिल-भारतीय-ज्योतिषपरिषद् के संयुक्त तत्वांवधान में दि० १६-२० नवम्बर ६८ को विज्ञानभवन, नई दिल्ली में विशाल पंचांग गोष्ठी का आयोजन किया गया – उसमें समस्त भारत के नवीन प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध विद्वान् पंचांगकार सम्मिलित हुए थे। दो दिन के विचार विमर्श के अनन्तर भारी बहुमत से दृक्पक्षीय (चित्रापक्षीय अयनांश) पंचांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाणित किया गया।

गत ११ वर्षों से इस पंचांग ने दैनिक चन्द्र का उदय-अस्त भारतीय स्टैंडर्ड टाइम घण्टा-मिनटों में एवं साम्पातिक काल (दिल्ली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता) के दिये गये हैं। इस वर्ष के पंचांग में अन्य कई उपयोगी विषय बढ़ाये गये हैं।

ज्योतिष्मती निकेतन
सोलन (हि० प्र०)

विदुषामनुचर :–
सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

पंचांग देखने की विधि

१. इस पंचांग (श्रीविश्वविजय) का सभी गणित दिल्ली के अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१७ पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा.स्टे.टा. से समाप्ति काल के हैं, जो भारत में सर्वत्र उसी टाईम से होंगे।

२. सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली के हैं। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ावें।

३. इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

४. सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्रमार्ग आदि भारतीय स्टें.टा. में है जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम मे होंगें। यह इस पंचांग की विशेषता है।

५. महीनों में अष्टमी पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः घं.५ मि. ३० के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

६. तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा ग्रहाचार आदि में २४-२५-२६ आदि अंक लिखें हैं उनका अर्थ यह है कि २४ को रात्रि के बारह बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे समझें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटाकर अर्द्ध रात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

७. इस पंचांग का गणित आचार्यों ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गई है वहां अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये हैं। यहां निरयन पद्धति को सर्वत्र मान्य की है।

८. दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिल्ली का है। और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

९. लस्टर में ABC... आदि चिन्ह दिये है, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह जहाँ लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाईन में लगाकर शेष मैटर लिखा है- नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से संपूर्ण विषय समझ में आ जावेंगे -

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग) अग्नि (पंचक), अक्टूबर, अगस्त, अप्रैल (मास)
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान यो., आषा. आश्विन
उ.षा. = उत्तराषाढ़ (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि) कला
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.फा. = उत्तर फाल्गुनी (नक्षत्र)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र) भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई मास
का. = कार्तिक (मास)
क्रां. सा. = क्रांति साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष
कु. = कुंभ (राशि)
गु. = गुरु (वार) गुरु ग्रह
गु. दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घण्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार) चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
जू. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि.ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धुलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
निं. = निंबार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग) पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारंभ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपद (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न) मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु. (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहिणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल. = लग्न
व. = वज्र, वरियान, यो. वणिज क. वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग) वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशाखा (नक्षत्र), विष्कंभ (योग), विकला
वि.मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि. = शिव योग
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सि. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख)

अवकाश दिन (छुट्टियां तारीख)

१ जनवरी सन् २००२ ई. मंगलवार

अवकाश दिन (छुट्टियाँ तातीलें)

विक्रम संवत् २०५८ सन् २००१-२००२ ई० में भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन

(२६ मार्च २००१ ई० से १२ अप्रैल २००२ ई० तक)

१.	श्री राम नवमी	२ अप्रेल सन् २००१ ई. सोमवार
२.	मोहर्रम (ताजिया) (वै.)*	५ अप्रेल सन् २००१ ई. गुरुवार
३.	महावीर जयंती	६ अप्रेल सन् २००१ ई. शुक्रवार
४.	बैशाखी (पंजाब), गुडफ्राइडे	१३ अप्रेल सन् २००१ ई. शुक्रवार
५.	अम्बेडकर जयंती	१४अप्रेल सन् २००१ ई. शनिवार
६.	मई दिवस	१ मई सन् २००१ ई. मंगलवार
७.	बुद्ध पूर्णिमा	७ मई सन् २००१ ई. सोमवार
८.	चेहल्लम (वै.)*	१४ मई सन् २००१ ई. सोमवार
९.	गंगा दशहरा	१ जून सन् २००१ ई. शुक्रवार
१०.	ईद-ए-मिलाद (वै.)*	५ जून सन् २००१ ई. मंगलवार
११.	रक्षाबंधन	४ अगस्त सन् २००१ ई. शनिवार
१२.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१२ अगस्त सन् २००१ ई. रविवार
१३.	स्वतंत्रता दिवस	१५ अगस्त सन् २००१ ई. बुधवार
१४.	गणेश चतुर्थी व्रत	२२ अगस्त सन् २००१ ई. बुधवार
१५.	अनन्त चतुर्दशी	१ सितंबर सन् २००१ ई. शनिवार
१६.	गांधी जयंती	२ अक्टूबर सन् २००१ ई. मंगलवार
१७.	श्री अग्रसेन जं.	१७ अक्टूबरसन् २००१ ई. बुधवार
१८.	विजयादशमी	२६ अक्टूबरसन् २००१ ई. शुक्रवार
१९.	श्री बाल्मीकी जयंती	१ नवंबर सन् २००१ ई. गुरुवार
२०.	शब-ए-बारात (वै.)*	२ नवंबर सन् २००१ ई. शुक्रवार
२१.	दीपावली	१४ नवंबर सन् २००१ ई. बुधवार
२२.	श्री महावीर निर्वाण	१५ नवंबर सन् २००१ ई. गुरुवार
२३.	विश्वकर्मा पूजा दिवस, भैया दूज	१६ नवंबर सन् २००१ ई. शुक्रवार
२४.	श्री गुरुनानक जयंती	३० नवंबर सन् २००१ ई. शुक्रवार
२५.	जमातुल विदा (वै.)*	१४ दिसंबर सन् २००१ ई. शुक्रवार
२६.	ईदुल-फितर (वै.)*	१७ दिसंबर सन् २००१ ई. रविवार
२७.	गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवस	१९ दिसंबर सन् २००१ ई. बुधवार
२८.	क्रिसमस डे	२५ दिसंबर सन् २००१ ई.मंगलवार
२९.	अंग्रेजी नव वर्ष प्रारम्भ (वै.)	१ जनवरी सन् २००२ ई. मंगलवार
३०.	लोहड़ी (पंजाब) (वै.)	१३ जनवरी सन् २००२ ई. रविवार
३१.	मकर सक्रांति (वै.)	१४ जनवरी सन् २००२ ई. सोमवार
३२.	श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी जन्म	२१ जनवरी सन् २००२ ई. रविवार
३३.	गणतंत्र दिवस	२६ जनवरी सन् २००२ ई. शनिवार
३४.	बसंत पंचमी (वै.)	१७ फरवरी सन् २००२ ई. रविवार
३५.	श्री महाशिवरात्री	१२ मार्च सन् २००२ ई. मंगलवार
३६.	होली	२८ मार्च सन् २००२ ई. गुरुवार
३७.	धुलैंडी	२९ मार्च सन् २००२ ई. शुक्रवार

नोट: (क)* मुस्लिम त्योहार की छुट्टियों में कभी कहीं स्थानीय चन्द्रदर्शन के अनुसार जिलाधीश फिर से निर्धारित कर एक दिन का अन्तर डाल सकते हैं।

(ख) उपर्युक्त छुट्टियों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है। किसी भूल या फेरबदल का दायित्व सम्पादक अथवा प्रकाशक पर नहीं है।

(ग) (वै.) शब्द जहाँ लिखा है उन्हें वैकल्पिक छुट्टियां समझें।

भारतीय अन्य विशेष पर्व त्योहार आदि

१. नवरात्र, नववर्षारम्भ	२६ मार्च, सोमवार
२. गणगौरी पूजन	२८ मार्च, बुधवार
३. नवरात्र समाप्त	२ अप्रैल, सोमवार
४. वैशाख स्नानारंभ	८ अप्रैल, रविवार
५. श्री वल्लभाचार्य ज.	१९ अप्रैल, गुरुवार
६. श्री परशुराम जयंती	२५ अप्रैल, बुधवार
७. श्री नृसिंह चौदस	६ मई, रविवार
८. वैशाख स्नान समाप्त	७ मई, सोमवार
९. टैगोर ज.	७ मई, सोमवार
१०. वट् सावित्री व्रत	२२ मई, मंगलवार
११. गंगा दशहरा	१ जून, शुक्रवार
१२. निर्जला एकादशी	२ जून, शनिवार
१३. कबीर जयंती	६ जून, बुधवार
१४. श्री गुरु हरगोविंद सिंह ज.	७ जून, गुरुवार
१५. श्री जगदीश रथयात्रा	२३ जून, शनिवार
१६. देवशयनी एकादशी व्रत	१ जुलाई, रविवार
१७. गुरु पूर्णिमा	५ जुलाई, गुरुवार
१८. मधुश्रवा तीज	२३ जुलाई, सोमवार
१९. नागपंचमी	२५ जुलाई, बुधवार
२०. कज्ञली तृतीया	७ अगस्त, मंगलवार
२१. श्री गणेश ४ व्रत	७ अगस्त, मंगलवार
२२. गोगा नवमी	१३ अगस्त, सोमवार
२३. वत्स द्वादशी	१६ अगस्त, गुरुवार
२४. हरितालिका तीज	२१ अगस्त, मंगलवार
२५. ऋषि पंचमी	२३ अगस्त, गुरुवार
२६. जलझूलनी मेला	२९ अगस्त, बुधवार
२७. वामन जयंती	३० अगस्त, गुरुवार
२८. श्राद्धारंभ	२ सितम्बर, रविवार
२९. अधिक मास प्रारम्भ	१८ सितम्बर, मंगलवार
३०. शारदीय नवरात्र प्रा.	१७ अक्टूबर, बुधवार
३१. श्री अग्रसेन जं.	१७ अक्टूबर, गुरुवार
३२. करवा चौथ	४ नवंबर, रविवार
३३. अहोई अष्टमी	८ नवंबर, गुरुवार
३४. गोपाष्टमी	२२ नवंबर, गुरुवार
३५. प्रबोधिनी एकादशी व्रत	२६ नवंबर, सोमवार
३६. कार्तिक स्नान मेला	३० नवंबर, शुक्रवार
३७. मोक्षदा एकादशी व्रत	२६ दिसंबर, बुधवार
३८. अन्नपूर्णा जयंती	३० दिसंबर, रविवार
३९. मकर संक्रांति	१४ जनवरी, सोमवार
४०. शाकम्भरी जयंती	२८ जनवरी, सोमवार
४१. लाला लाजपत राय जयंती	२८ जनवरी, सोमवार
४२. मेला जैसलमेर ३ दिन का	२५ फरवरी, सोमवार
४३. मेला खाटू श्याम जी (२ दिन का)	२५ से २६ मार्च सोमवार-मंगलवार

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् 2058

गणित परिलेखक- श्री पं. विनोद बिजल्वाण एम. एस.सी. (मानद पंचांगकर्ता)

संवत् २०५८ विक्रमी में भूमण्डल पर तीन ग्रहण लगेंगे जिनमें दो सूर्य ग्रहण एवं एक चन्द्रग्रहण होगा। भारत में केवल एक चन्द्र ग्रहण, जो कि खण्ड ग्रास होगा, ही दिखाई देगा।

१. **खग्रास सूर्य ग्रहण**-यह सूर्यग्रहण २१ जून २००१ ई. को खग्रास रूप में होगा। भारतीय समयानुसार यह ग्रहण दिन में ३ बजकर ३ मिनट पर आरम्भ होकर रात्रि ८ बजकर ५ मिनट पर समाप्त होगा। दिन में ४ बजकर ७ मिनट से ७ बजकर १ मिनट तक यह ग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण दक्षिण अफ्रीका, मेडागास्कर, दक्षिण एटलांटिक महासागर में दृष्टिगोचर होगा।

२. **कंकण सूर्यग्रहण**-यह सूर्य ग्रहण दिनांक १४ दिसम्बर २००१ ई. को होगा तथा यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका, मैक्सीको प्रशान्त महासागर आदि भागों में दृष्टिगोचर होगा। भारतीय समयानुसार इस ग्रहण का आरम्भ रात्रि ११ बजकर ३३ मिनट पर होगा तथा प्रात: ५ बजकर ११ मिनट पर ग्रहण समाप्त होगा। रात्रि १२ बजकर ४० मिनट से ४ बजकर ४ मिनट तक यह ग्रहण कंकणाकृति रूप में दृष्टिगोचर होगा।

३. **खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण**-यह चन्द्रग्रहण दिनांक ५ जुलाई सन् २००१ ई. तदनुसार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार को धनु राशि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में खण्डग्रास रूप में होगा। इसका ग्रहण का स्पर्श मोक्षादि काल भा. स्टे.टा. में इस प्रकार है-

ग्रहण स्पर्श		ग्रहण मध्य		ग्रहण मोक्ष		ग्रहण पर्वकाल	
घ.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१९	०६	२०	२६	२१	४६	२	४०

आगे चन्द्रोदयकाल तथा ग्रहण पर्वकाल विभिन्न स्थलों का दिया है। भारत के जिन स्थलों में चन्द्रोदय सांय ७ बजकर ६ मिनट के पश्चात् होगा वहां यह ग्रहण ग्रस्तोदित होगा। इस ग्रहण का सूतक दिन में १० बजकर ६ मिनट पर आरम्भ होगा। ग्रहण के सूतक के समय समर्थ जनों को भोजनादि का निषेध है। बालक, वृद्ध तथा रोगियों के लिए यह नियम नहीं है। ग्रहण के मोक्षकाल पर स्नानदान का विशेष फल शास्त्र में कहा गया है-

"उपमर्दे लक्षगुणं ग्रहणे चन्द्र सूर्ययोः पुण्यं कोटिगुणं मध्ये मुक्तिकाले त्वनन्तकम्"

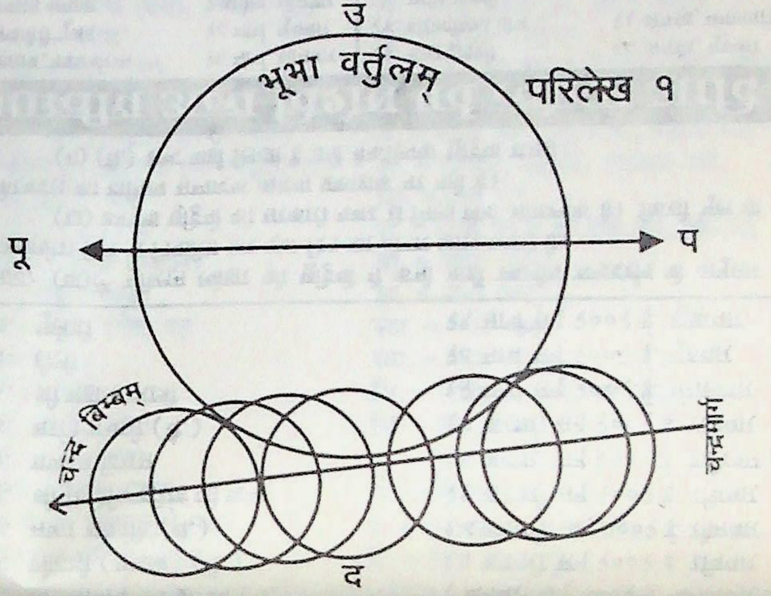
जिन लोगों का जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा है तथा धनु राशि वालों को अशुभ होने से यह ग्रहण नहीं देखना चाहिये। विभिन्न राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे दिया है-

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहण फल	रुकावट	कष्ट	पति-पत्नी कष्ट	शत्रुनाश	चिन्ता	दुःख	शुभ	हानि	कष्ट	हानि	सुख	शुभ

यह ग्रहण वारुण मण्डल में होने से वर्षा की अधिकता, सुभिक्ष की वृद्धि, वृक्षों में फल फूलों की अधिकता गायों में दूध की वृद्धि तथा प्रजा के लिए आनन्ददायक कहा गया है-

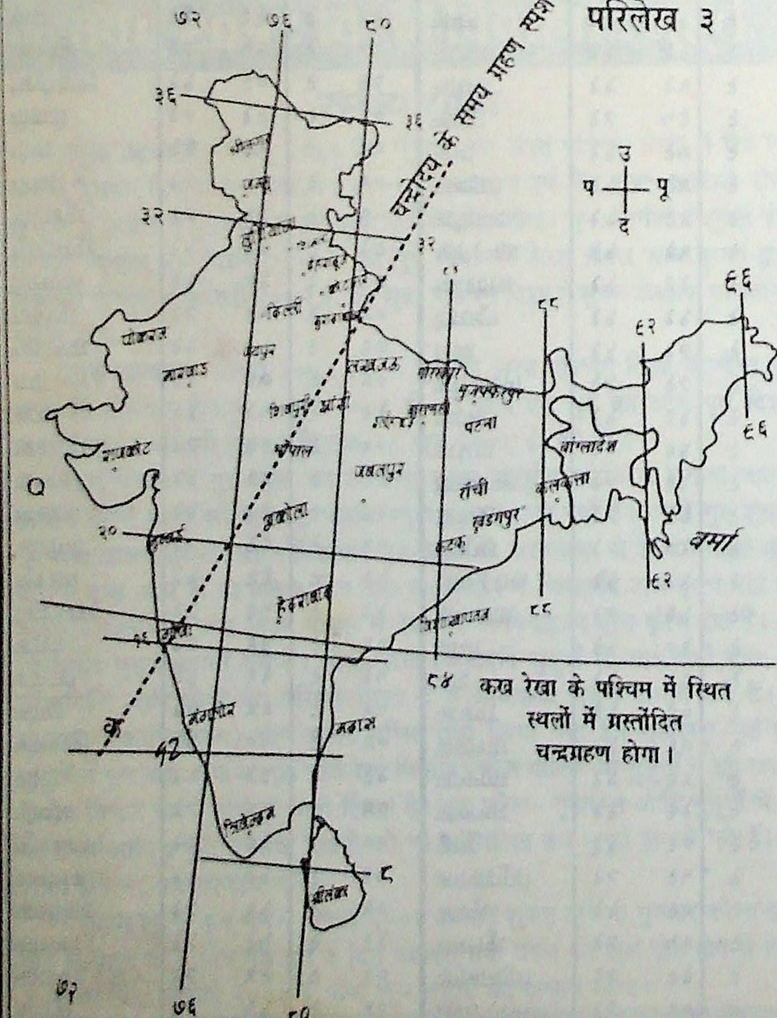
"गावो बहुक्षीरघृताफलाढ़या वृक्षाः प्रजाः क्षेमसुभिक्षयुक्ताः।
मेघाः प्रभूतांबुमुचो भवंति वर्गे जलेशस्य नृपाः सुशांताः।।

आगे इस खण्डग्रास चन्द्रग्रहण के तीन परिलेख दिये गये हैं। प्रथम परिलेख में भूछाया में चन्द्रमार्ग दर्शाया गया है। द्वितीय परिलेख में चन्द्र के स्पर्श मोक्ष स्थान के साथ विभिन्न समयों में चंद्रमा पर ग्रहण का ग्रासमान दिशा सहित दिया गया है। जिससे भारत में किसी भी स्थल पर उक्त ग्रहण का ग्रास अभीष्ट समय में जाना जा सकता है। तृतीय परिलेख द्वारा 'क ख रेखा' से यह जाना जा सकता है कि भारत के किन नगरों में ग्रहण ग्रस्तोदित होगा। साथ में लगभग २०० नगरों के चन्द्रोदय एवं ग्रहण पर्वकाल दिये हैं



परिलेख १

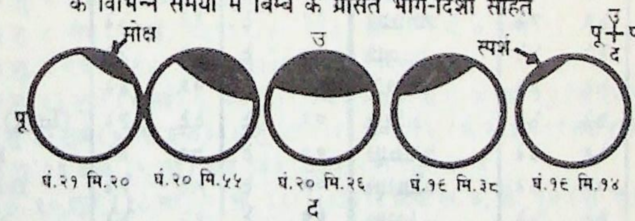
परिलेख ३



कब रेखा के पश्चिम में स्थित स्थलों में ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण होगा।

परिलेख-२

विक्रम संवत२०५८ आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार दिनांक ५ जुलाई२००१ ई. गुरुवार को होने वाले खण्डग्रास-चन्द्रग्रहण के विभिन्न समयों में बिम्ब के ग्रसित भाग-दिशा सहित



५ जुलाई सन् २००१ ई. को होने वाले खग्रास चन्द्रग्रहण का पर्वकाल

नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल		नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल	
	घं.	मिं.	घं.	मि.		घं.	मिं.	घं.	मि.
अंकलेश्वर	१९	२०	२	२५	आसनसोल	१८	२५	२	४०
अंबाजी	१९	२६	२	१९	इटावा	१९	०६	२	४०
अम्बाला	१९	२४	२	२२	इटारसी	१९	०२	२	४०
अंबिकापुर	१८	४०	२	४०	इन्दौर	१९	११	२	३५
अकल कोट	१८	५८	२	४०	इलाहाबाद	१८	५१	२	४०
अकोला	१९	०१	२	४०	उज्जैन	१९	१३	२	३३
अगरतला	१८	०८	२	४०	उदयपुर	१९	२४	२	२२
अजमेर	१९	२४	२	२२	उन्नाव	१८	५९	२	४०
अनन्तनाग	१९	३९	२	०७	ऊधमपुर	१९	३७	२	८
अमरावती	१८	५८	२	४०	ऊंझा	१९	२८	२	१८
अमृतसर	१९	३४	२	१२	एरनाकुलम	१८	४४	२	४०
अयोध्या	१८	५२	२	४०	एलिचपुर	१९	००	२	४०
अलवर	१९	१९	२	२७	औरंगाबाद	१९	०९	२	३७
अलमोड़ा	१९	१०	२	३६	कटक	१८	२४	२	४०
अलीगढ़	१९	१३	२	३३	कन्याकुमारी	१८	३५	२	४०
अहमदाबाद	१९	२५	२	२१	कन्नौज	१९	०२	२	४०
आगरा	१९	१२	२	३४	कपूरथला	१९	३३	२	१३
आजमगढ़	१८	४७	२	४०	करनाल	१९	२२	२	२४
अमरोहा	१९	१३	२	३३	कलकत्ता	१८	१८	२	४०

नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल		नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल		नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल		नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल	
	घं.	मिं.	घं.	मि.		घं.	मिं.	घं.	मि.		घं.	मिं.	घं.	मि.		घं.	मिं.	घं.	मि.
कांचीपुरम्	१८	३५	२	४०	छतरपुर	१८	५९	२	४०	पठानकोट	१९	३४	२	१२	मेरठ	१९	१६	२	३०
कानपुर	१८	५९	२	४०	छपरा (बिहार)	१८	४०	२	४०	पटियाला	१९	२६	२	२०	मैसूर	१८	४७	२	४०
काठमांडू (ने.)	१८	४२	२	४०	जगन्नाथपुरी	१८	२३	२	४०	प्रयागराज	१८	५१	२	४०	रतलाम	१९	१५	२	३१
कालका	१९	२५	२	२१	जबलपुर	१८	५४	२	४०	पाण्डीचेरी	१८	३३	२	४०	रत्नागिरि	१९	०९	२	३७
कालीकट	१८	४९	२	४०	जयपुर	१९	२०	२	२६	पानीपत	१९	२०	२	२६	रांची	१८	३२	२	४०
कासगंज	१९	११	२	३५	जयपाइगुड़ी	१८	२५	२	४०	पूना	१९	१०	२	३६	रामपुर	१९	१०	२	३६
कुंभकोणम्	१८	३३	२	४०	जम्मू	१९	३८	२	०८	पोरबन्दर	१९	३४	२	१२	रामेश्वरम	१८	३०	२	४०
कोचीन	१८	४४	२	४०	जालन्धर	१९	३१	२	१४	फतेहपुर	१९	१२	२	३४	रायबरेली	१८	५५	२	४०
कोटा	१९	१६	२	२९	जामनगर	१९	३४	२	१२	फर्रुखाबाद	१९	०४	२	४०	रोहतक	१९	२०	२	२६
कोल्हापुर	१९	०५	२	४०	जैसलमेर	१९	४०	२	०६	फरीदकोट	१९	३२	२	१४	रोपड़	१९	२६	२	२०
कोन्नूर	१८	४४	२	४०	जोधपुर	१९	३०	२	१५	फिरोजपुर	१९	३४	२	१२	लखनऊ	१८	५८	२	४०
कांगड़ा	१९	३१	२	१५	जींद	१९	२३	२	२३	बड़ौदा	१९	२०	२	२६	लुधियाना	१९	२८	२	१८
काशी	१८	४६	२	४०	झांसी	१९	०६	२	४०	बम्बई	१९	१५	२	३१	शिलांग	१८	१०	२	४०
किश्तवाड़	१९	३५	२	११	ट्रावनकोर	१८	३९	२	४०	बरेली	१९	०८	२	३८	शाहजहाँपुर	१९	०४	२	४०
कुरुक्षेत्र	१९	२३	२	२२	टोंक (राज.)	१९	१९	२	२७	बद्रीनाथ	१९	१३	२	३३	शिमला	१९	२३	२	२३
कोलम्बो	१८	२३	२	४०	डिब्रूगढ़	१८	०१	२	४०	बुलन्दशहर	१९	१४	२	३२	श्रीनगर (का.)	१९	४१	२	०५
खंडाला	१९	१३	२	३३	त्रिवेन्द्रम	१८	३९	२	४०	बीजापुर	१८	५९	२	४०	सिकन्दराबाद	१८	४८	२	४०
खंभात	१९	२४	२	२२	त्रिचनापल्ली	१८	३६	२	४०	बीकानेर	१९	३२	२	१४	सतारा	१९	०८	२	३८
खड़गपुर	१८	२२	२	४०	दरभंगा	१८	३६	२	४०	बंगलौर	१८	४४	२	४०	सागर (म.प्र.)	१९	००	२	४०
खुर्जा	१९	१५	२	३१	द्वारका	१९	३९	२	७	बिलासपुर(मप्र)	१८	४३	२	४०	श्रीनगर(गढ़वाल)	१९	१६	२	३०
गया	१८	३७	२	४०	दारजिलिंग	१८	२८	२	४०	बांसवाड़ा	१९	०१	२	४०	सहारनपुर	१९	१९	२	२७
ग्वालियर	१९	०९	२	३७	दिल्ली	१९	१८	२	२७	भटिन्डा	१९	३०	२	१६	सूरत	१९	२०	२	२६
गाजीपुर	१८	४४	२	४०	देहरादून	१९	१९	२	२७	भरतपुर	१९	१३	२	३३	सोलन	१९	२३	२	२३
गिलगित	१९	४९	१	५७	धर्मशाला	१९	३१	२	१५	भुवनेश्वर	१८	२४	२	४०	सोलापुर	१९	००	२	४०
गुरदासपुर	१९	३४	२	१२	धार (म.प्र.)	१९	१४	२	३२	भोपाल	१९	०५	२	४०	सोमनाथ	१९	२९	२	१७
गोरखपुर	१८	४८	२	४०	नाडियाद	१९	२३	२	२२	भूटान (थिम्पू)	१८	२२	२	४०	हरिद्वार	१९	१६	२	३०
गोण्डा	१८	५४	२	४०	नाथद्वारा	१९	२४	२	२२	भुज	१९	४०	२	०६	हिसार	१९	२५	२	२१
गोवा	१९	०४	२	४०	नाभा	१९	२७	२	१९	मद्रास	१८	३३	२	४०	हाथरस	१९	११	२	३५
गोहाटी	१८	१२	२	४०	नागपुर	१८	५३	२	४०	मथुरा	१९	१३	२	३३	हैदराबाद	१८	४९	२	४०
चित्तौड़गढ़	१९	२०	२	२६	नासिक	१९	१४	२	३२	मण्डी	१९	२६	२	२०	होशियारपुर	१९	३०	२	१६
चित्रकूट	१८	५४	२	४०	नैनीताल	१९	११	२	३५	मणिपुर	१७	५८	२	४०	होशंगाबाद	१९	०२	२	४०
चम्बा	१९	३२	२	१४	नीमच	१९	१९	२	२७	मुरादाबाद	१९	११	२	३५	हरदोई	१९	०२	२	४०
चण्डीगढ़	१९	२५	२	२१	पटना	१८	३७	२	४०	मुजफ्फरपुर	१८	३८	२	४०	हाजीपुर	१८	४६	२	४०

संवत् २०५८ वि. के विवाहादि मुहूर्त

समय शुद्धि

शुक्र उदयास्त- संवत् २०५८ वि. में शुक्र का अस्त पश्चिम दिशा में चैत्र शुक्ल तृतीया बुधवार दिनांक २८ मार्च सन् २००१ ई. को होगा एवं चैत्र शुक्ल अष्टमी रविवार दिनांक १ अप्रैल सन् २००१ ई. को शुक्र पूर्व में उदित होगा। पुन: मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी गुरुवार दिनांक २० दिसंबर २००१ को पूर्व दिशा में अस्त होकर माघ कृष्ण द्वादशी शुक्रवार दिनांक ८ फरवरी २००२ ई. को शुक्र पश्चिम दिशा में सुक्ष्म उन्नतांश गणितानुसार उदित होगा।

गुरु उदयास्त- संवत् २०५८ वि. में गुरु का अस्त पश्चिम दिशा में ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी सोमवार दिनांक ४ जून २००१ ई. को होगा एवं गुरु का उदय पूर्व दिशा में आषाढ़ शुक्ल अष्टमी गुरुवार दिनांक २८ जून २००१ ई. को होगा।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया जाता है। प्राचीन करण ग्रन्थों की कालांश पद्धति स्थूल होने से ग्राह्य नहीं है। उसमें गुरु शुक्र का उदयास्त प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पहले वृद्धत्व दोष में तथा उदय के पश्चात् ३ दिन तक बाल्य दोष में विवाहादि शुभ कृत्य नहीं करने चाहिए। होलाष्टक तथा भीष्म पंचक में देश भेद से विवाहादि शुभ कृत्य होते हैं। अत: विवाहादि मुहूर्त्त लगाये गये हैं। नीचे लिखे विवाहादि मुहूर्त्तों में जहां कहीं युति, वेध, दग्धातिथि आदि दोषों का परिहार मिला है वे विवाहादि मुहूर्त्त लगाये गये हैं। यहाँ महापात (क्रान्तिसाम्य) दोष सूक्ष्म गणित द्वारा लिया गया है। गृहारम्भ-गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में वृष चक्र तथा कलश चक्र एवं विपणि दुकान खोलने के मुहूर्त्तों में हट्ट चक्र का विशेष विचार कर मुहूर्त्तों के आगे लिखा है। गृह प्रवेश- गृहारम्भ आदि मुहूर्त्तों में अन्य पारिजात आदि प्रभृति ग्रन्थोक्त नक्षत्रों को भी सम्मिलित कर मुहूर्त्त लगाये गये हैं। कहीं शंका होने पर पत्र व्यवहार करें।

ग्रहण शूल- इस वर्ष ५ जुलाई २००१ आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार को चन्द्रग्रहण होने से ग्रहण के ३ दिन पूर्व एवं ३ दिन पश्चात् तक ग्रहण का शूल दोष होने से दिनांक २ जुलाई से ८ जुलाई २००१ ई. तक शुभ मुहूर्त्तों का अभाव रहेगा।

सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त (सब देशों के लिए)

वैशाख कृ. ७ रवौ (१५ अप्रैल) उ. षा. ऽ।।।ऽवऽऽ।। ल.११, १२ घं २४ मि. ४४ तक मृत्युवाण,
वैशाख कृ. ८ चन्द्रे (१६ अप्रैल) उ. षा. ऽ।।।। ऽव ऽऽ।। दिवा ल. ४ (१३/३२) तक, चन्द्र पूज्य
वैशाख शु. २ बुधे (२५ अप्रैल) रोहिणी।।ऽवृ।। ऽव।।।। ल. ११ (२७/३३ से), १२ (मं. पूज्य)
वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रो.।।ऽवृ।।।।।।। दिवा ल. ४, गो, १०, ११ (घं. २७ मि. ०२ तक)
वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) मृग.।।।।।। ऽऽ।। ल. ११ (घं. २७ मि. ०२ से), १२ (मं. पूज्य)
वैशाख शु. ४ शुक्रे (२७ अप्रैल) मृगशिर।।।।। ऽऽ।।। ल. गो
वैशाख शु. ८ भौमे (१ मई) मघा ऽ।।।।। ऽ।ऽ। ल. ११ (चं. ७ पूज्य)
वैशाख शु. ९ बुधे (२ मई) मघा ऽ।।।।ऽ रो ऽ।ऽ। दिवा ल. ४,
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फा.।।।।।ऽव ऽ।।। दिवा ल. ४ (घं. १२ मि. १७ तक मृत्युबाण)
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४मई) हस्त ऽऽ।ऽशु ऽऽव।।।।ल. गो, १२, (घं. २८ मि. १२ तक शुक्र पादवेध)
वैशाख शु. १३ शनौ. (५ मई) हस्त ऽऽ। ऽऽऽव।।।। दिवा ल. ४
ज्येष्ठ कृ. १० शुक्रे (१८ मई) उ. भा. ऽ।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ४, गो., १० (शु. पू.), ११, १
ज्येष्ठ कृ. ११ शनौ (१९ मई) उ. भा. ऽ।।।। ऽ नृ ऽऽ।। दिवा ल. ४ (घं. १० मि. ३१ तक)
ज्येष्ठ शु. १ गुरौ (२४ मई) रो.।।ऽ।।।।।।। दिवा ल. ४ (घं. १० मि. २६ तक), युति परिहार है
ज्येष्ठ शु. १ गुरौ (२४ मई) मृग. ।।ऽ।।।ऽ।।। दिवा ल. ४ (घं. १० मि. २६ से), गो., ११, १२, १
ज्येष्ठ शु. ६ चन्द्रे (२८ मई) मघा ऽ।।।। ऽ नृ ऽऽ।। ल. १
ज्येष्ठ शु. ७ भौमे (२९ मई) मघा ऽ।।।। ऽ नृ ऽऽ।। दिवा ल. ४
ज्येष्ठ शु. ८ बुधे (३० मई) उ. फा.।।।।। ऽ चौ ऽ।।। ल. ११ (शु पू.), १
ज्येष्ठ शु. ९ गुरौ (३१ मई) उ. फा.।।।।।ऽ चौ ऽ।।। दिवा ल. ४, ५, गो., १० (घं. २२ मि. ५२ तक)
ज्येष्ठ शु. ९ गुरौ (३१ मई) हस्त।।।।।।।ऽ।। ल. १० (घं. २२ मि. ५२ से)
ज्येष्ठशु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त ।।।।।।।ऽ।।दिवा ल. ४, (घं. ११ मि. २९ से गुरु वृद्धत्व) (१०/०० से व्यतिपात)
कार्तिक शु. १५ शुक्रे (३० नवम्बर) रोहिणी ।।ऽ।ऽ।।ऽ।। ल. ६ (बुधास्त)
मार्गशीर्ष कृ. १ शनौ (१ दिसम्बर) रोहिणी ।।ऽ।।ऽचौ।ऽ।। दिवा ल. १०, १२
मार्गशीर्ष कृ. १ शनौ (१ दिसं.) मृग.।।ऽरा।।ऽ चौ ऽ।।। ल. ६, (बुधास्त), ७ (घं. २९ मि. १६ से)
मार्गशीर्ष कृ. २ रवौ (२ दिसम्बर) मृगशिर।। ऽरा।।ऽ।।। दिवा. १२
मार्गशीर्ष कृ. ६ गुरौ (६ दिसम्बर) मघा ।ऽ।।ऽऽवऽ।।। ल. ७ (घं. २७ मि. ३० से)
मार्गशीर्ष कृ. ८ शनौ (८ दिसम्बर) उ. फा. ऽ।।।। नृ ऽऽऽ।। ल. गो, ७
मार्गशीर्ष कृ. ९ रवौ (९ दिसम्बर) हस्त ऽ।।।।।।ऽ।। दिवा ल., १२ (चं. ७ पूज्य), गो.
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) उ. भा।।।।।ऽ व।।।। दिवा ल. १, १० (घं. २० मि. ३० से दग्धा)
माघ शु. ९ गुरौ (२१ फर.) रोहिणी।ऽऽश।।ऽरो।ऽ।।ल. गो. (घं. १८ मि. ३९ से) युति परिहार है।
माघ शु. ९ गुरौ (२१ फरवरी) मृगशिर।।ऽ।ऽऽ रो ऽ।।। ल. १० युति परिहार है
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर ।।ऽ।ऽ।ऽ।।। दिवा ल. १२, गो.
फाल्गुन १ गुरौ (२८ फरवरी) उ. फाल्गुनी।।।ऽऽ चौ।।।। ल. गो., १०
फाल्गुन कृ. ७ भौमे (५ मार्च) अनु. ऽऽ।।ऽव।।।। दिवा ल. १२ (घं. ७ मि. ३० तक भद्रा है), गो.
फाल्गुन कृ. ८ बुधे (६ मार्च) मूल ।।।।ऽ।।ऽ।। ल. १०
फाल्गुन कृ. ९ गुरौ (७ मार्च) मूल।।।।ऽऽ नृ।ऽ।।दिवा ल. १२, गो. (घं १८ मि. ३० तक), नृपबाण,

नक्षत्र चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त (सब देशों के लिए)

वैशाख कृ. ८ चन्द्रे (१६ अप्रैल) श्रव. ऽऽ।।।।ऽऽ।। दि. ल. ४ (घं. १३ मि. ३२ से), (चं. पूज्य), ११, १२ गो.
वैशाख कृ. ९ भौमे (१७ अप्रैल) श्रवण ऽऽ।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ४ (चं. ७ पूज्य)
वैशाख कृ. ९ भौमे (१७ अप्रैल) धनिष्ठा।।।।।।।।।।ल. गो.
वैशाख कृ. १० बुधे (१८ अप्रैल) धनिष्ठा ।।।।।ऽ नृ ।।।।गो.
वैशाख शु. १३ शनौ (५ मई) चित्रा ऽ।।।।।ऽ।।। ल. गो., १०, ११
वैशाख शु. १४ रवौ (६ मई) चित्रा ऽ।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ४
ज्येष्ठ कृ. ८ भौमे (१५ मई) धनिष्ठा।।।।।।।ऽऽ। दिवा ल. ४ (चं.पू.), गो., (घ.२१ मि. २९ से मृत्युबाण) गणितेन क्रान्तिसम्याभाव
कार्तिक शु.१२ भौमे (२७नवं.) अश्विनी ऽऽ।।।ऽवऽ।।। ल.५ (घं. २४ मि. २१ से), ७ (चं. पूज्य)
कार्तिक शु. १३ बुधे (२८ नवम्बर) अश्विनी ऽऽ।।।ऽवऽ।।। दिवा ल. ११, १२
मार्गशीर्ष कृ. १० चन्द्रे (१० दिसम्बर) चित्रा।।।। ।ऽ चौ ऽऽ।। दिवा ल. १०, १२, गो., ६
माघ शु. ५ रवौ (१७) फरवरी) अश्विनी।।।।।ऽ नृ।।।।गो, ७ (चं. पूज्य), १०
फाल्गुन कृ. २ शुक्रे (१ मार्च) चित्रा।ऽ।ऽ शु ।ऽरो ।ऽ।। ल. १० पादात् शुक्रवेधाभाव
फाल्गुन कृ ४ शनौ (२ मार्च) चित्रा।ऽ।ऽशु।ऽ रो।ऽ।। दिवा ल. १२, गो. पादात् शुक्रवेधाभाव
फा. कृ. १२ रवौ (१० मार्च) श्रवण ऽ।।।।।।ऽ।। दिवा ल. १२, ४ (घं. ६ मि. ४१ तक परिधार्ध)

केवल पंजाब एवं त्रिगर्त देश के लिए शुद्ध विवाह मुहूर्त

श्रावण कृ. ६ गुरौ (१२ जुलाई) उ. भा. ऽ।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ४
श्रावण कृ. ७ शुक्रे (१३ जुलाई) रेवती ऽ।।।।ऽ रो।ऽ।। दिवा ल. ४, ६ (१०/२९ तक रोगबाण) (दग्धा परिहार है ११/३६ से,) १०, ११ गो.)
श्रावण कृ. ११ भौमे (१७ जुलाई) रोहिणी ।ऽऽ।।।।ऽ।। दिवा ल. ५, ६ (युति परिहार है) (१५/०७ से मृत्युबाण) (२४/५० से क्रान्तिसाम्य)
श्रावण शु. ३ चन्द्रे (२३ जुलाई) मघा ।ऽ।।।ऽ चौऽ।।। दिवा ल. ६ (१०/२२ से)
श्रावण शु. ४ भौमे (२४ जुलाई) उ. फा. ।।।।।।ऽऽ।। ल. गो., १२, (चं ७ पूज्य) (१६/४९ तक परिधार्ध) (२३/०२ से रोग बाण)
श्रावण शु. ५ बुधे (२५ जुलाई) उ. फा।।।।।ऽ रो ऽऽ।। दिवा ल. ५ (दग्धापरिहार है) (२४/०९ तक रोगबाण)
श्रावण शु. ५ बुधे (२५ जुलाई) हस्त।।।।।ऽ रो ।।।ऽ ल. गो., १२, (चं. ७ पूज्य) (दग्धापरिहार है) (२४/०९ तक रोगबाण)
श्रावण शु. ६ गुरौ (२६ जुलाई) हस्त।।।।।।।।।।लं ५ (९/३५ तक)
श्रावण शु. ९ शनौ (२८ जुलाई) स्वाती ।ऽ।।।ऽव ।ऽ।। दिवा ल. ५ (८/३३ तक) (२७/३० तक वह्निबाण है)

श्रावण शु. १० रवौ (२९ जुलाई) अनुराधा।।।।।।।ऽऽ। दिवा ल. ५ (९/०२ से), ६, गो. गणितेन क्रांति साम्याभाव (२८/३६ से नृप बाण)
श्रावण शु. ११ चन्द्रे (३० जुलाई) अनुराधा ।।।।।ऽ नृ ।ऽऽ। दिवा ल. ५, ६ (१०/०९ तक) (२९/४२ तक नृपबाण)
श्रावण शु. १३ गुरौ (२ अगस्त) उ. षाढ़ा।।।।।।।ऽ।। ल. गो, ११, १२ (२४/३६ से एकार्गल, २४/३६ तक उपग्रह)
भाद्र. कृ. ४ बुधे (८ अग.) उ. भा।।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ६ (चं. ७ पूज्य), गो., ११ (१४/१८ से नृपबाण)
भाद्रपद कृ. ५ गुरौ (९ अगस्त) उ. भाद्रपद।।।।।ऽ नृ ऽऽ।। दिवा ल. ६ (चं. ७ पूज्य) ९/३८ तक, (१५/२१ तक नृप बाण)
भाद्रपद कृ. ५ गुरौ (९ अगस्त) रेवती ।।।।।ऽ नृ।ऽ।। दिवा ल. ६ (९/३८ से) चं. ७ पूज्य), गो,११ (१५/२१ तक नृपबाण) २२/४७ से दग्धा
भाद्र. कृ. ६ शुक्रे (१० अग.) रे.।।।।।।।ऽ।। दिवा ल. ६ (चं. ७ पूज्य) (१६/२२ से चौर बाण)
भाद्रपद कृ. ९ चन्द्रे (१३ अगस्त) रोहिणी।।ऽश।।ऽरो।ऽ।। ल. गो, १२ (१९/२३ तक रोगबाण), युति परिहार है।
भाद्रपद कृ. १० भौमे (१४ अगस्त) रोहिणी।।ऽश।।।। दिवा ल. ५, ६ (२०/२२ से मृत्युबाण)
भाद्रपद शु. २ चन्द्रे (२० अगस्त) उ. फा।।।।।।ऽ।।। ल. ४ (२६/०३ से नृपबाण)
भाद्रपद शु. ३ भौमे (२१ अगस्त) उ. फा।।।।।ऽ नृ ऽ।।। दिवा ल. ७ (२६/५८ तक नृपबाण)
भाद्रपद शु. ३ भौमे (२१ अगस्त) हस्त ।ऽ।।।ऽ नृ ।।।।ल. १२ (चं ७ पूज्य), ४ (२६/५८ तक नृपबाण)
भाद्रपद शु. ५ गुरौ (२३ अगस्त) स्वाती।।।।।ऽ चौ. ।।।।ल. गो, ४ (२८/४६ तक चौर बाण)
भाद्रपद शु. ११ बुधे (२९ अग.) उ. षा ऽ।।।।।।।।। ल. ४ (२८/५८ से) (चं. ७ पूज्य) समयाल्प, २२/१६ से १
भाद्रपद शु. १२ गुरौ (३० अग.) उ. षा ऽ।।।।।।।।। दिवा ल. ६, ७, गो. १, (९/५६ से नृपबाण)
शुद्ध आश्विन शु. ३ शुक्रे (१९ अक्टूबर) अनुराधा।।।।।ऽ व।।।। ल. ५, ६ (२९/३५ तक) (१०/२९ तक मृत्युबाण) १० /२९ से वन्हि
शुद्ध आश्विन शु. १२ चन्द्रे (२९ अक्टूबर) उ. भा ऽ।।।।।ऽ।।। ल. गो., ६ (२८/३४ तक) (चं. ७ पूज्य)
शुद्ध आश्विन शु. १२ चन्द्रे (२९ अक्टूबर) रे. ।ऽ।।।।।।।। ल. ६ (चं. ७ पूज्य) (२८/३४ से)
शुद्ध आश्विनी शु. १३ भौमे (३० अक्टूबर) रेवती ।ऽ।।। ऽनृ।।।। ल. गो, ६ (चं. ७ पूज्य) (११/२५ से नृप बाण)
कार्तिक कृ. ३ रवौ (४ नवम्बर) मृगशिर।। ऽरा।।। ऽऽ।। ल. ११, गो, ५, ६, (युतिपरिहार है) (११/२३ तक रोग बाण)
कार्तिक शु. १० रवौ (२५ नवम्बर) उ. भा।।।।।।ऽऽ।ऽ दिवा ल. ११, ६ (दग्धा परिहार है) (७/५२ तक रोगबाण), गो.

पंजाब एवं द्विगर्त देश के नक्षत्र चतुष्टयी के शुद्ध विवाह मुहूर्त

श्रावण कृ. ४ चन्द्रे (९ जुलाई) धनिष्ठा।।।।।।।।।। दिवा ल. ५ (चं. ७ पूज्य)
श्रावण कृ. ८ शनौ (१४ जुलाई) अश्वि.।।।।।।ऽऽ।ऽ दिवा ल. ५ (दग्धापरिहार है) (११/३९ से मृत्युबाण)
श्रावण शु. ६ गुरौ (२६ जुलाई) चित्रा।।।।।ऽऽ।।ल. गो, ११ (२१/०५ से) (२५/१६ से मृत्युबाण)
श्रावण शु. १४ शुक्रे (३ अगस्त) श्रवण।।।।ऽऽ रो ऽऽ।।ल. १२ (२२/१६ से) (८/५८ से रोग बाण)
श्रावण शु. १५ शनौ (४ अगस्त) श्रवण।।।।ऽऽ रो ऽऽ।।ल. ६, ७, ११, १२ (२२/०६ तक) (१०/०३ तक रोग बाण)
भाद्रपद शु. ४ बुधे (२२ अगस्त) चित्रा ऽ।।।।।ऽऽ।।ल. १२ (चं. ७ पूज्य), ४ (२७/५२ से चौर बाण)
भाद्रपद शु. ५ गुरौ (२३ अगस्त) चित्रा ऽ।।।।ऽचौ ऽऽ।।ल. (२८/४६ तक चौर बाण
भाद्रपद शु. १२ गुरौ (३० अगस्त) श्रवण ऽ।।।ऽऽनृऽ।।।ल. ४ (चं. ७ पूज्य) (९/५६ से नृपबाण)
भाद्रपद शु. १३ शुक्रे (३१ अगस्त) श्रवणऽ।।।ऽऽ नृऽ।।।ल. ६, ७, गो., १, ४, (चं. ७ पूज्य) (१०/४५ तक नृपबाण), ४ (२८/०६ तक)
भाद्रपद शु. १३ शुक्रे (३१ अगस्त) धनिष्ठा।।।।।।।।।।ल. ४ (चं. ७ पूज्य) (२८/०६ से)
भाद्रपद शु. १४ शनौ (१ सितम्बर) धनिष्ठा।।।।।।।।।।ल. ६, ७, १ (११/३४ से चौर बाण)
शुद्ध आश्विन शु. ९ गुरौ (२५ अक्टूबर) धनिष्ठा ऽऽ।।। ऽरो।।।। ल. गो (१७/३२ से) ६ (११/१० से रोग बाण)
शुद्ध आशि. शु. १० शुक्रे (२६ अक्टू.) धनि. ऽऽ।।।ऽ रो।।।।ल. गो. (११/१५ तक रोग बाण)
शुद्ध आश्विन शु. १४ बुधे (३१ अक्टूबर) अश्विनी।।।।।।ऽऽ।।ल. ५ (११/२७ तक नृप बाण)
कार्तिक शु. ६ बुधे (२१ नवम्बर) श्रवण ।।।।।।ऽ।।।ल. ११ (८/५२ तक नृपबाण)

संवत् २०५८ के अशुद्ध विवाह मुहूर्त

वैशाख कृ. ५ (१२ अप्रैल) तक मीनेऽर्क
वैशाख कृ. ६ शुक्रे (१३ अप्रैल) मूल भौम युति
वैशाख कृ. ७ शनौ (१४ अप्रैल) मूल भौम युति
वैशाख कृ. १२ शुक्रे (२० अप्रैल) उ.भा. क्षीण चन्द्र
वैशाख शु. ११ गुरौ (३ मई) उ. फा मृत्युबाण
वैशाख शु. १४ रवौ (६ मई) स्वाती व्यतिपात भद्रा
वैशाख शु. १५ चन्द्रे (७ मई) स्वाती व्यतिपात
ज्येष्ठ कृ. १ भौमे (८ मई) अनुराधा सूर्यवेध
ज्येष्ठ कृ. २ बुधे (९ मई) अनुराधा सूर्यवेध
ज्येष्ठ कृ. ३ गुरौ (१० मई) मूल भौमयुति
ज्येष्ठ कृ. ४ शुक्रे (११ मई) मूल भौम युति
ज्ये. कृ. ५ शनौ (१२-१३ मई) उ.षाढ़ा, श्रवण मृत्युबाण- मासान्त
ज्येष्ठ कृ. ७ चन्द्रे (१४ मई) श्रवण-धनिष्ठा संक्रान्ति
ज्येष्ठ कृ. ११ शनौ (१९-२० मई) रेवती शुक्रयुति
ज्येष्ठ कृ. १२ रवौ (२० मई) अश्विनी क्षीण चन्द्र
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर मृत्युबाण, लग्ना भाव
१ जून ११/१९ से १ जुलाई १३/५२ तक गुर्वस्त दोष
२ जुलाई से ८ जुलाई तक ग्रहण शूल दोष
श्रावण कृ. ५ बुधे (११ जुलाई) उ.भा. लग्नाभाव
श्रावण कृ. ९ रवौ (१५ जुलाई) अश्विनी मासान्त
श्रावण कृ. १२ बुधे (१८ जुलाई) मृगशिर मृत्युबाण
श्रावण शु. २ रवौ (२२ जुलाई) मघा व्यतिपात
श्रावण शु. ८ शुक्रे (२७ जुलाई) चित्रा स्वाती- मृत्युबाण
श्रावण शु. १२ भौमे (३१ जुलाई) मूल केतुयुति
श्रावण शु. १३ बुधे (१ अगस्त) मूल वैधृति केतुयुति
श्रावण शु. १४ शुक्रे (३ अगस्त) उ.षा. लग्नाभाव
श्रावण शु. १५ शनौ (४-५ अगस्त) धनिष्ठा सूर्यवेध
भाद्रपद कृ. ६ शुक्रे (१०-११ अगस्त) अश्विनी भुजंगपात
भाद्र. कृ. १० भौमे (१४-१५ अगस्त) मृगशिर मृत्युबाण, मासांत
भाद्रपद शु. ४ बुधे (२२ अगस्त) हस्त भद्रा लग्नाभाव
भाद्रपद शु. ६ शुक्रे (२४ अगस्त) स्वाती क्रान्तिसाम्य
भाद्रपद शु. ७ शनौ (२५-२६ अगस्त) अनुराधा भद्रा-वैधृति
भाद्रपद शु. ९ चन्द्रे (२७-२८ अगस्त) मूल केतुयुति

२ से १७ सितम्बर श्राद्ध पक्ष

१८ सितम्बर से १६ अक्टूबर तक मलमास-अधिकमास आश्विन

शुद्ध आश्विन शु. १ बुधे (१७ अक्टू.) चित्रा स्वाती क्षीण चन्द्र
शुद्ध आश्विन शु. २ गुरौ (१८ अक्टूबर) स्वाती लग्नाभाव
शुद्ध आश्विन शु. ४ शुक्रे (२० अक्टूबर) अनुराधा भद्रा
शुद्ध आश्विन शु. ५ रवौ (२१-२२ अक्टूबर) मूल केतु युति
शुद्ध आश्विन शु. ७ भौम (२३-२४ अक्टू.) उ. षा. भौम युति
शुद्ध आश्विन शु. ८ बुधे (२४-२५ अक्टूबर) श्रवण भुजंगपात
शुद्ध आश्विन शु. १२ रवौ (२८ अक्टूबर) उ. भा. शुक्र पादवेध
शुद्ध आश्विन शु. १५ गुरौ (१ नवम्बर) अश्विनी लग्नाभाव
कार्तिक कृ. २ शनौ (३ नवम्बर) रोहिणी परिधार्ध भद्रा भौमवेध
कार्तिक कृ. ४ चन्द्रे (५ नवम्बर) मृगशिर लग्नाभाव
कार्तिक कृ. ९ शुक्रे (९ नवम्बर) मघा भौम वेध
कार्तिक कृ. १० शनौ (१०-११ नव.) उ. फा. लग्नाभाव, दग्धा
कार्तिक कृ. ११ रवौ (११ नवम्बर) हस्त दग्धा
कार्तिक कृ. १२ चन्द्रे (१२ नवं.) हस्त-चित्रा लग्नाभाव क्षीण चन्द्र
कार्तिक शु. १ शुक्रे (१६ नवम्बर) अनुराधा संक्रांति क्षीण चन्द्र
कार्तिक शु. २ शनौ (१७ नवम्बर) मूल केतुयुति
कार्तिक शु. ४ चन्द्रे (१९ नवम्बर) उ. षा. राहु वेध
कार्तिक शु. ५ भौमे (२० नवम्बर) श्रवण भौम युति
कार्तिक शु. ६ बुधे (२१ नवं.) धनिष्ठा भौम युति क्रान्ति साम्य
कार्तिक शु. ११ चन्द्रे (२६ नवम्बर) उ. भा. मृत्युबाण
कार्तिक शु. १२ भौमे (२७ नवम्बर) रेवती व्यतिपात
मार्गशीर्ष कृ. (७ शुक्रे ७ दिसम्बर) मघा लग्नाभाव
मार्गशीर्ष कृ. १२ भौमे (११ दिसम्बर) भौम वेध

१५ दिसम्बर से १३ जनवरी तक धनु में सूर्य खरमास

१७ दिस. ३०/५० से ११ फर. ११/२२ तक शुक्रास्त दोष

माघ शु. ४ शनौ (१६ फरवरी) उ. भा. लग्नाभाव भद्रा
माघ शु. ४ शनौ (१६-१७ फरवरी) रेवती भौमयुति
माघ शु. ८ बुधे (२० फरवरी) रोहिणी वैधृति
माघ शु. १४ भौमे (२६ फरवरी) मघा भद्रा लग्नाभाव
माघ शु. १५ बुधे (२७ फरवरी) मघा लग्नाभाव

फाल्गुन कृ. १ गुरौ (२८ फरवरी) हस्त भुजंगपात
फाल्गुन कृ. २ शुक्रे (१ मार्च) हस्त भुजंगपात
फाल्गुन कृ. ४ शनौ (२-३ मार्च) स्वाती सूर्य वेध
फाल्गुन कृ. ६ चन्द्रे (४ मार्च) अनुराधा भद्रा मृत्युबाण
फाल्गुन कृ. १० शुक्रे (८-९ मार्च) उ. षा. राहुवेध
फाल्गुन कृ. ११ शनौ (९ मार्च) श्रवण परिधार्ध लग्नाभाव
१४ मार्च से मीनस्थ सूर्य- खरमास आरम्भ

संवत् २०५८ वि. के शुभ मुहूर्त

नीचे दिये गये शुभ मुहूर्तों में वेधादि का विचार तथा युति का परिहार वाक्य जहां उपलब्ध हुआ है शुभ मुहूर्त लगाये गये हैं। जहां शुभ ग्रह का पाद से वेध नहीं वहां भी शुभ मुहूर्त लगाये गये हैं। पाप-क्रूर ग्रह का वेध सर्वथा त्याज्य माना गया है।

चूड़ा कर्म मुहूर्त

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य
वैशाख शु.१३ शनौ (५ मई) हस्त शनिवार वैश्यों को शुभ
ज्येष्ठ कृ. २ बुधे (९ मई) ज्येष्ठा
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर
ज्येष्ठ शु.५ रवौ (२७ मई) पुष्य रविवार ब्राह्मणों को शुभ है
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त
माघ शु. १ बुधे (१३ फर.) शतभिषा (१५/३२ बजे के बाद)
माघ शु. ५ रवौ (१७ फर.) अश्विनी रविवार ब्राह्मणों को शुभ
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर
फाल्गुन कृ. २ शुक्रे (१ मार्च) हस्त (तिथि क्षय दोष)
फाल्गुन कृ. ५ रवौ (३ मार्च) स्वाती रविवार ब्राह्मणों को शुभ

अक्षरारंभ- विद्यारम्भ

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य अक्षरारंभ
वैशाख शु. ११ गुरौ (३ मई) पू. फाल्गुनी विद्यारम्भ
वै. शु. १२ शुक्रे (४ मई) हस्त अक्षरारंभ (घं. १६ मि. ५१ उ.)
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर विद्यारम्भ
ज्येष्ठ शु. ५ रवौ (२७ मई) पुष्य विद्यारम्भ
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त अक्षरारम्भ विद्यारम्भ
माघ शु. २ गुरौ (१४ फरवरी) पू. भाद्रपद विद्यारम्भ
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) पू. भाद्रपद विद्यारम्भ
माघ शु. ५ रवौ (१७ फरवरी) अश्विनी विद्यारम्भ
माघ शु. ६ चन्द्रे (१८ फरवरी) अश्विनी अक्षरारंभ
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फर.) मृग. विद्यारम्भ (युति परिहार है)
माघ शु. १२ रवौ (२४ फरवरी) पुनर्वसु विद्यारम्भ
फाल्गुन शु. ३ रवौ (१७ मार्च) अश्विनी विद्यारम्भ
फा. शु. ७ गुरौ (२१ मार्च) मृग. विद्यारम्भ (युति परिहार है)
फाल्गुन शु. १३ बुधे (२७ मार्च) पू. फाल्गुनी विद्यारम्भ (घं. ७ मि. ३९ तक) होलाष्टक

गृहारम्भ मुहूर्त- (नक्षत्र पारिजात ग्रन्थोक्त लिए हैं)

वैशाख शु. ११ गुरौ (३ मई) उ. फा. वृष चक्र शुभ है
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फाल्गुनी वृष चक्र शुभ है १२/१७ से अग्निबाण दोष
वैशा. शु. १३ शनौ (५ मई) हस्त १३/०३ तक वह्नि दोष
श्रावण शु. ११ चन्द्रे (३० जुलाई) अनु. वृष चक्र शुभ है
श्रावण शु. १५ शनौ (४ अगस्त) श्रवण वृष चक्र शुभ है।
कार्तिक शु. ११ चन्द्रे (२६ नवं.) उ. भा. वृष चक्र शुभ है
कार्तिक शु. १५ शुक्रे (३० नवं.) रोहि. वृष चक्र शुभ है
मार्गशीर्ष कृ. १ शनौ (१ दिसंबर) रोहिणी वृष चक्र शुभ है
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृग. वृष चक्र शुभ है
फाल्गुन कृ. १ गुरौ (२८ फर.) उ. फा. वृष चक्र शुभ है
भाद्रपद शु. ११ बुधे (२९ अग.) उ. षा. वृष चक्र शुभ है
भाद्रपद शु. १२ गुरौ (३० अग.) उ. षाढ़ा वृष चक्र शुभ है
भाद्रपद शु. १२ गुरौ (३० अग.) श्रवण वृष चक्र शुभ है
भाद्र. शु. १३ शुक्रे (३१ अग.) श्रवण वृष चक्र शुभ है।
(कार्तिक तथा भाद्रपद मास मध्यम कहे गये हैं)

गृह प्रवेश मुहूर्त (नक्षत्र पारिजात ग्रन्थोक्त लिए हैं)

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य कलश चक्र शुभ है
वैशाख शु. ११ गुरौ (३ मई) उ. फा. कलश चक्र शुभ है
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फा. कलश चक्र शुभ है
वैशाख शु. १३ शनौ (५ मई) हस्त कलश चक्र शुभ है
ज्येष्ठ शु. ९ गुरौ (३१ मई) उ. फाल्गुनी कलश चक्र शुभ है (घं. १२ मि. ३५ के बाद)
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त कलश चक्र शुभ है
कार्तिक शु. ६ बुधे (२१ नवं.) श्रवण कलश चक्र शुभ है
कार्तिक शु. ११ चन्द्रे (२६ नवं.) उ. भा. कलश चक्र शुभ है (भीष्म पंचक)
कार्तिक शु. १३ बुधे (२८ नवम्बर) अश्विनी कलश चक्र शुभ है भीष्म पंचक
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृग. कलश चक्र शुभ है
माघ शु. ११ शनौ (२३ फरवरी) पुन. कलश चक्र शुभ है
फाल्गुन शु. ६ बुधे (२० मार्च) रो. कलश चक्र शुभ है।
फाल्गुन शु. ६ बुधे (२० मार्च) मृग. कलश चक्र शुभ है
फाल्गुन शु. ७ गुरौ (२१ मार्च) मृग. कलश चक्र शुभ है
फाल्गुन शु. ९ शनौ (२३ मार्च) पुनर्वसु कलश चक्र शुभ है (होलाष्टक)

जीर्ण गृह प्रवेश

वैशाख शु. २ बुधे (२५ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रोहिणी
वैशा. शु. ४ शुक्रे (२७ अप्रै.) मृग. (घं. १७ मि. ५ तक भद्रा है)
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर
श्रावण शु. ५ बुधे (२५ जुलाई) उ. फाल्गुनी
श्रावण शु. ८ शुक्रे (२७ जुलाई) स्वाती (भद्रा तक)
श्रावण शु. ११ चन्द्रे (३० जुलाई) अनुराधा
कार्तिक शु. ८ शुक्रे (२३ नवम्बर) शतभिषा
मार्गशीर्ष शु. ५ बुधे (१९ दिसम्बर) श्रवण-धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. ५ गुरौ (२० दिसम्बर) धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. १२ गुरौ (२७ दिसम्बर) रोहिणी
मार्गशीर्ष शु. १३ शुक्रे (२८ दिसम्बर) रोहिणी
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) उ. भाद्रपद
फाल्गुन शु. १ शुक्रे (१५ मार्च) उ. भाद्रपद-रेवती

उपनयन

वैशाख कृ. १ चन्द्रे (९ अप्रैल) स्वाती
वैशाख कृ. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फाल्गुनी

पृष्ठ २०३ का शेष

पृष्ठ २०३ का शेष

ज्येष्ठ कृ. २ बुधे (९ मई) अनुराधा
ज्येष्ठ शु. १ गुरौ (२४ मई) रोहिणी-मृगशिर
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर
ज्येष्ठ शु. ५ रवौ (२७ मई) पुष्य
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त
माघ शु. २ गुरौ (१४ फरवरी) पू. भाद्रपद
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) पू. भाद्रपद- उ. भाद्रपद
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर
माघ शु. १२ रवौ (२४ फरवरी) पुनर्वसु (ब्राह्मणों को वर्जित)
फा. कृ. १ गुरौ (२८ फर.) उ. फा. (घं. १० मि. ५० के बाद)
फाल्गुन कृ. २ शुक्रे (१ मार्च) हस्त
फाल्गुन शु. ३ रवौ (१७ मार्च) अश्विनी

द्विरागमन-मुहूर्त

वैशाख कृ. १० बुधे (१८ अप्रैल) धनिष्ठा
वैशाख कृ. ११ गुरौ (१९ अप्रैल) शतभिषा
वैशाख शु. २ बुधे (२५ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. ४ शुक्रे (२७ अप्रैल) मृग. (घं. १७ मि. ५ के बाद)
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फाल्गुनी
ज्येष्ठ कृ. २ बुधे (९ मई) अनुराधा
कार्तिक शु. ६ बुधे (२१ नवम्बर) श्रवण
कार्तिक शु. ११ चन्द्रे (२६ नवम्बर) उ. भाद्रपद
कार्तिक शु. १३ बुधे (२८ नवम्बर) अश्विनी
मार्गशीर्ष कृ. १० चन्द्रे (१० दिसम्बर) चित्रा (तिथिक्षय)
माघ शु. १ बुधे (१३ फरवरी) शतभिषा (१५/३२ के बाद)
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) उ. भाद्रपद
माघ शु. ६ चन्द्रे (१८ फरवरी) अश्विनी
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर
फाल्गुन कृ. १ गुरौ (२८ फरवरी) उ. फाल्गुनी
फाल्गुन कृ. २ शुक्रे (१ मार्च) हस्त (तिथि क्षय)

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फाल्गुनी
वैशाख शु. १३ शनौ (५ मई) हस्त
वैशाख शु. १५ चन्द्रे (७ मई) स्वाती
ज्येष्ठ शु. १ गुरौ (२४ मई) रोहिणी (६/३० के बाद) (तिथिक्षय)
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर
ज्येष्ठ शु. ५ रवौ (२७ मई) पुष्य
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) उ. भाद्रपद
माघ शु. ६ चन्द्रे (१८ फरवरी) अश्विनी
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर
माघ शु. १२ रवौ (२४ फरवरी) पुनर्वसु
फाल्गुन शु. ३ रवौ (१७ मार्च) अश्विनी
फाल्गुन शु. ६ बुधे (२० मार्च) रोहिणी
फाल्गुन शु.७ गुरौ (२१ मार्च) मृगशिर

दुकाने खोलने का मुहूर्त (विपणिकरण)

वैशाख शु. ३ गुरौ (२६ अप्रैल) रोहिणी
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (३० अप्रैल) पुष्य
वैशाख शु. १२ शुक्रे (४ मई) उ. फाल्गुनी हट्ट चक्र शुभ है
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (२५ मई) मृगशिर हट्ट चक्र शुभ है
ज्येष्ठ शु.५ रवौ (२७ मई) पुष्य
ज्येष्ठ शु. ९ गुरौ (३१ मई) उ. फाल्गुनी (१२/३५ के बाद)
ज्येष्ठ शु. १० शुक्रे (१ जून) हस्त हट्ट चक्र शुभ है
शुद्ध आश्विन शु. २ गुरौ (१८ अक्टूबर) स्वाती
शुद्ध आश्विन शु. ३ शुक्रे (१९ अक्टूबर) अनुराधा
शुद्ध आश्वि. शु. १० शुक्रे (२६ अक्टू.) धनि. हट्ट चक्र शुभ है
शुद्ध आश्वि. शु. १२ चन्द्रे (२९ अक्टू.) उ. भा. हट्ट चक्र शुभ है
कार्तिक शु. ६ बुधे (२१ नवम्बर) श्रवण (१३/१९ के बाद)
कार्तिक शु. १० रवौ (२५ नवम्बर) उ. भाद्रपद हट्ट चक्र शुभ है
कार्तिक शु. १३ बुधे (२८ नवम्बर) अश्विनी हट्ट चक्र शुभ है
माघ शु. ३ शुक्रे (१५ फरवरी) उ. भाद्रपद
माघ शु. १० शुक्रे (२२ फरवरी) मृगशिर

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मार्च २००२	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२८।१	उ.फा	९.	२८	१४	४१	१९	५५	१	९
१	ह.	६	२४	११	४०	१६	५७	२२	१६
२	चि.	३	३६	८	५८	१४	२२	१९	४८
३	स्वा.	१	१६	६	४६	१२	१९	१७	५४
३।४	वि.	२३	३२	५	१२	१०	५६	१६	४२
४।५	अनु.	२२	३१	४	२३	१०	१८	१६	१६
५।६	ज्ये.	२२	१७	४	२०	१०	२७	१६	३६
६।७	मू.	२२	४८	५	३	११	२०	१७	४०
८	पू.षा.	०	२	६	२६	१२	५३	१९	२१
९	उ.षा.	१	५१	८	२३	१४	५७	२१	३२
१०।११	श्र.	४	८	१०	४६	१७	२४	०	४
११।१२	ध.	६	४४	१३	२६	२०	७	२	५०
१२।१३	श.	९	३३	१६	१६	२३	०	५	४४
१३।१४	पू.भा.	१२	२८	१९	१३	१	५७	८	४२
१४।१५	उ.भा.	१५	२६	२२	११	४	५५	११	३९
१५।१६	रे.	१८	२३	१	७	७	५०	१४	३३
१६।१७	अश्वि.	२१	१५	३	५६	१०	३७	१७	१७
१७।१८	भ.	२३	५६	६	३४	१३	११	१९	४७
१९	कृ.	२	२१	८	५४	१५	२५	२१	५४
२०	रो.	४	२१	१०	४७	१७	१०	२३	३०
२१।२२	मृ.	५	४९	१२	५	१८	१८	०	२९
२२।२३	आर्द्रा	६	३७	१२	४२	१८	४४	०	४४
२३।२४	पुन.	६	४०	१२	३४	१८	२४	०	१२
२४	पु.	५	५७	११	३९	१७	१८	२२	५५
२५	श्ले.	४	२९	१०	१	१५	३०	२०	५७
२६	म.	२	२२	७	४५	१३	६	१८	२६
२६।२७	पू.फा.	२३	४४	५	१	१०	१७	१५	३२
२७।२८	उ.फा.	२०	४६	१	५९	७	१२	१२	२५
२८।२९	ह.	१७	३८	२२	५२	४	५	९	१९
२९।३०	चि.	१४	३४	१९	५०	१	७	६	२५
३०।३१	स्वा.	११	४४	१७	६	२२	२९	३	५४

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक संवत् २०५८ वि.

सुविधानुसार किसी विशेष माह में विवाह दिन ज्ञात करने के लिए विगत वर्षों से यह सूर्य, चन्द्र, गुरु शुद्धि का (त्रिबल शुद्धि) कोष्ठक देते आ रहे हैं। जिसमें वर के लिए सूर्य की पूजा तथा कन्याओं के लिए गुरु की पूजा के दिन भी दर्शाये रहते हैं अत: ज्योतिषियों को पृथक से त्रिबल शुद्धि का परिश्रम नहीं करना पड़ता। किन्तु यहां एक बात सदैव स्मरण रखनी चाहिये कि मात्र इसके आधार पर विवाह दिन निश्चित नहीं करना चाहिये। साथ में यह भी देखना आवश्यक है कि जिस दिन विवाह निश्चित कर रहे हैं उस दिन वर तथा कन्या के जन्म लग्न तथा जन्मराशि से आठवीं राशि विवाह लग्न नहीं होनी चाहिए तथा जन्म लग्न एवं जन्म राशि के शत्रु राशि का लग्न नवांश भी नहीं होना चाहिये क्योंकि किसी विशेष दिन में विवाह लग्न अत्यन्त सीमित होते हैं अत: विवाह दिन निश्चित करने से पूर्व इन सभी बातों का विचार कर लेना आवश्यक होता है। यहां ४/८ वाँ चन्द्रमा वर्जित किया है तथा १२ वाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। वर्तमान में कन्याओं का विवाह अधिक आयु में होने से ४-८-१२वाँ गुरु जो कि नेष्ट होता है पूज्य गुरु की श्रेणी में ही रखा गया है।

-श्री पं० विनोद बिजल्वाण, एम. एस.सी. (कैमिस्ट्री), ९१, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई.-१, २, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून.-१, जुलाई- ९, १२, १३, १४, अग. २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.- १, अक्टू.- २५, २६, २९, ३०, ३१ नव. ४, फर.- १५, १७, २१, २२, २८, मार्च.- १, २, ६, ७, १०	१३ अप्रैल से १३ जून, १६ अगस्त से १५ सितम्बर, १६ अक्टू. से १४ नव.	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई-१, २, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुलाई- ९, १२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६, २८, अग.-२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१ सित.-१, अक्टू.- २५, २६, २९, ३०, ३१ नव.-४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस. - १, २, ६, ८, ९ १०, फर.- १५, १७, २१, २२, २८, मार्च.- १, २, ६, ७, १०	१६ जून से
वृष	मई.- १५, १८, १९, २४, ३१, जून- १, जुला.- ९, १२, १३, १४, १७, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग.- ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, अक्टू.-१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नव. - ४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, २, ८, ९ १०, फर. - १५, १७, २१, २२, २८, मार्च १, २, ५, १०	१४ मई से १५ जुलाई, १६ सित. से १६ अक्टू., १५ नव. से १४ दिस., १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई.- ४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, ३१, जून-१, जुला.- ९, १२, १३, १४, १७, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग. - ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २३, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू.-१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, २, ८, ९ १०, फर.-१५, १७, २१, २२, २८, मार्च १, २, ५, १०	१५ जून तक
मिथुन	अप्रैल-१८, २५, २६, २७, मई-१, २, ५, ६, जुला.-९, १२, १३, १४, १७, २३, २६, २८, २९, ३०, अग.-२, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २२, २३, २९, सित.-१, अक्टू.-१९, २६, २९, ३०, ३१, नव.-४, २५, २७, २८, ३०, दिस.-१, २, ६, १०, फर.-१५, १७, २१, २२, मार्च-५, ६, ७	१४ जून से १५ अग., १६ अक्टू. से १४ नव., १२ फरवरी से १३ मार्च	अप्रैल- १८, २५, २६, २७, मई- १, २, ५, ६, १८, १९, २४, २८, २९, जुला.- ९, १२, १३, १४, १७, २३, २६, २८, २९, ३०, अग.- २, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २२, २३, २९, सित.-१, अक्टू.-१९, २६, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, २, ६, १०, फर- १५, १७, २१, २२, मार्च-२, ५, ६, ७	पूरा वर्ष
कर्क	अप्रैल- १५, १६, १७, २५, २६, २७, मई- १, २, ४, ५, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून- १, जुला.- १७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अगस्त- २, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१ सित.-१, नव.- २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, २, ६, ८, ९ १०,	१६ जुलाई से १५ सित., १५ नव. से १४ दिस., १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल-१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई-१, २, ४, ५, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला.-१२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अगस्त- २, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१ सित.-१, अक्टू.-१९, २५, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.-१, २, ६, ८, ९ १०, फर- १५, १७, २१, २२, २८, मार्च- १, २, ५, ६, ७, १०	१६ जून से
सिंह	अप्रैल-१५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई-१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला.-९, १४, अग.-२०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू.-२५, २६, ३१, नव. -४, फर-१७, २१, २२, २८, मार्च- १, २, ६, ७, १०	१३ अप्रैल से १३ मई, १६ अग. से १६ अक्टू., १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल-१५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई- १, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला.-९, १४, १७, २३, २४, २५, २६, २८, अगस्त-२, ३, ४, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू.-२५, २६, ३१, नव.- ४, २१, २७, २८, ३०, दिस.-१, २, ६, ८, ९ १०, फर- १७, २१, २२, २८, मार्च- १, २, ६, ७, १०	१५ जून तक

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या	मई-१५,१८,१९,२४,२८,२९,३०,३१,जून-१,जुला.-९,१२,१३, १७,२३,२४,२५,२६,२८,२९,३०,अग.-३,४,८,९,१०,१३,१४, अक्टू.-१९,२५,२६,२९,३०,नव.-४,२१,२५,३०,दिस.-१,२,६, ८,९,१०,फर.-१५,२१,२२,२८,मार्च-१,२,५,१०	१४ मई से १३ जून, १६सित. से १४नव., १३ जन. से ११ फर.	अप्रेल-१५,१६,१७,१८,२५,२६,२७,मई-१,२,४,५,६,१५,१८,१९,२४,२८,२९,३०, ३१,जून.-१,जुलाई-९,१२,१३,१७,२३,२४,२५,२६,२८,२९,३०,अग.-३,४,८,९,१०, १३,१४,२०,२१,२२,२३,३०,३१, सित.-१, अक्टू.-१९,२५,२६,२९,३०,नव.-४,२१, २५,३०,दिस.-१,२,६,८,९,१०,फर.-१५,२१,२२,२८,मार्च-१,२,५,१०	१६ जून से
तुला	अप्रेल-१८,२७,मई-१,२,४,५,६,जुला.-९,१२,१३,१४,२३,२४, २५,२६,२८,२९,३०,अग.-२,८,९,१०,२०,२१,२२,२३,२९, सित.-१,अक्टू.-१९,२६,२९,३०,३१,नव.-४,२५,२७,२८,दिस. -१,२,६,८,९,१०,फर.-१५,१७,२२,२८,मार्च-१,२,५,६,७	१४अप्रैल से १३ मई, १४जून से १५ जुलाई, १६ अक्टू. से १४ दिस., १२ फर. से १३ मार्च	अप्रेल-१८, २७, मई-१, २, ४, ५, ६, १८,१९, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला. - ९, १२, १३, १४, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग.- २, ८, ९, १०, २०, २१, २२, २३, २९, सित.-१, अक्टू.-१९, २६, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २५, २७, २८, दिस.-१, २, ६, ८, ९,१०, फर-१५,१७, २२, २८, मार्च- १, २, ५, ६, ७	१५ जून तक
वृश्चि.	अप्रैल- १५, १६, १७, २५, २६, मई.-१, २, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१,जून.-१, जुलाई- १७, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग.- २, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.- १, नव.- २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, ६, ८, ९, १०	१४ मई से १३ जून , १६ जुलाई से १५ अग., १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल-१५, १६, १७, २५, २६, मई-१, २, ४, ५, ६, १५, १८,१९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुलाई-१२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग.-२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.- १, अक्टू.-१९, २५, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, ६, ८, ९ १० फर-१५,१७, २१, २२, २८, मार्च- १, २, ५, ६, ७, १०	१६ जून से
धनु	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई.-१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१,जून.-१, जुलाई- ९, १४,अग. २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू. - १९, २५, २६, ३१ नव.- ४, फर.- १७, २१, २२, २८, मार्च- १, २, ५, ६, ७, १०	१३ अप्रैल से १३ मई, १४ जून से १५ जुलाई, १६ अगस्त से १५ सित., १३ जन. से ११ फरवरी	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २५, २६, २७, मई.-१, २, ४, ५, ६,१५, २४, २८, २९, ३०, ३१,जून.-१, जुलाई- ९, १४, १७, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, अग.- २, ३, ४,१३,१४, २०, २१, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू.- १९, २५, २६, ३१, नव.- ४, २१, २७, २८, ३०, दिस.- १, २, ६, ८, ९ १० फर-१७, २१, २२, २८, मार्च-१, २, ५, ६, ७, १०	१५ जून तक
मकर	मई.-१५,१८,१९,२४,३१,जून-१,जुला.-९,१२,१३,१४,१७, २४,२५,२६,२८,२९,३०,अग.- २,३,४,८,९,१०,१३,१४,अक्टू. -१९,२५,२६,२९,३०,नव.-४,२१,२५,३०,दिस.-१,२,८,९ १०,फर.-१५,२१,२२,२८,मार्च-१,२,५,६,७,१०	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १५ अग., १६ सित. से १५ अक्टू. ,१३ जन. से १३ मार्च	अप्रैल- १५,१६,१७,१८,२५,२६,२७,मई.- ४,५,६,१५,१८,१९,२४,३१,जून-१,जुला. -९,१२,१३,१७,२४,२५,२६,२८,२९,३०,अग.- २,३,४,८,९,१०,१३,१४,२०,२१, २२,२३,२९,३०,३१,सित.-१,अक्टू.-१९,२५,२६,२९,३०,नव.-४,२१,२५,३०,दिस. -१,२,८,९ १०,फर.-१५,२१,२२,२८,मार्च-१,२,५,६,७,१०	१६ जून से
कुम्भ	अप्रैल-१५,१६,१७,१८,२७,मई-१,२,५,६,जुला.-९,१२,१३,१४, २३,२६,२८,२९,३०,अग.-२,३,४,८,९,१०,२०,२२,२३,२९,३०, ३१,सित.-१,अक्टू.-१९,२५,२६,२९,३०,३१,नव.-४,२१,२५,२७, २८,दिस.-१,२,६,१०,फर.-१५,१७,२२,मार्च.-५,६,७,१०	१४ जून से १५ जुला. , १६ अग. से १५ सित., १६ अक्टू. से १४ नवं., १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- १५, १६, १७, १८, २७, मई-१, २, ५, ६, १५,१८,१९, २८, २९, ३०, जुलाई-९, १२, १३, १४, २३, २६, २८, २९, ३०, अग.-२, ३, ४, ८, ९,१०, २०, २२, २३, २९, ३०, ३१, सित.-१, अक्टू.-१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नव.- ४, २१, २५, २७, २८, दिस.-१, २, ६,१० , फर-१५,१७, २२, मार्च- ५, ६, ७, १०	१५ जून तक
मीन	अप्रैल-१५, १६, १७,१८, २५, २६, मई- १, २, ४, ५, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला.- १७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०,अगस्त- २, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१, सित.-१, नव.-२१, २५, २७, २८, ३०, दिस.- १, ६, ८, ९, १०	१३ अप्रै. से १३ मई, १६ जुलाई से १५ अग., १६ सित. से १६ अक्टू., १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल-१५, १६, १७,१८, २५, २६, मई- १, २, ४, ५, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून-१, जुला.- ९, १२, १३, १४,१७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०,अगस्त- २, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१, सित. -१, अक्टू.-१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नव. ·४, २१, २५, २७, २८, ३०, दिस. -१, ६, ८, ९,१०, फर-१५,१७, २१, २२, २८, मार्च-१, २, ५, ६, ७, १०	पूरा वर्ष

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०५८ वि. (सन् २००१-२००२ ई.)

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२८	मार्च	उ.भा	४
३१	,,	रेव.	१
३	अप्रैल	,,	२
७	,,	,,	३
१०	,,	,,	४
१३	,,	अश्वि.	१ मेष
१७	,,	,,	२
२०	,,	,,	३
२४	,,	,,	४
२७	,,	भर.	१
१	मई	,,	२
४	,,	,,	३
७	,,	,,	४
११	,,	कृति.	१
१४	,,	,,	२ वृष
१८	,,	,,	३
२१	,,	,,	४
२५	,,	रोहि.	१
२८	,,	,,	२
१	जून	,,	३
४	,,	,,	४
८	,,	मृग.	१
११	,,	,,	२
१५	,,	,,	३ मिथुन
१८	,,	,,	४
२२	,,	आर्द्रा	१
२५	,,	,,	२
२९	,,	,,	३
२	जुलाई	,,	४
६	,,	पुन.	१
९	,,	,,	२
१३	,,	,,	३
१६	,,	,,	४ कर्क
२०	,,	पुष्य	१
२३	,,	,,	२
२७	,,	,,	३
३०	,,	,,	४
३	अग.	श्लेषा	१
६	अग.	श्लेषा	२

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
९	अग.	श्लेषा	३
१३	,,	,,	४
१६	,,	मघा	१ सिंह
२०	,,	,,	२
२३	,,	,,	३
२७	,,	,,	४
३०	,,	पू. फा.	१
३	सित.	,,	२
६	,,	,,	३
१०	,,	,,	४
१३	,,	उ.फा.	१
१६	,,	,,	२ कन्या
२०	,,	,,	३
२३	,,	,,	४
२७	,,	हस्त	१
३०	,,	,,	२
३	अक्टू.	,,	३
७	,,	,,	४
१०	,,	चित्रा	१
१४	,,	,,	२
१७	,,	,,	३ तुला
२०	,,	,,	४
२४	अक्टू.	स्वाती	१
२७	,,	,,	२
३०	,,	,,	३
३	नव.	,,	४
६	,,	विशा.	१
९	,,	,,	२
१३	,,	,,	३
१६	,,	,,	४ वृशि.
१९	,,	अनु.	१
२३	,,	,,	२
२६	,,	,,	३
२९	,,	,,	४
२	दिस.	ज्ये.	१
६	,,	,,	२
९	,,	ज्ये.	३
१२	,,	,,	४
१६	,,	मूल	१ धनु

सूर्य- मंगल चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	दिस.	मूल	२
२२	,,	,,	३
२५	,,	,,	४
२९	,,	पू.षा.	१
१	जन.२००२ई.	,,	२
४	,,	,,	३
७	,,	,,	४
११	,,	उ.षा.	१
१४	,,	,,	२ मकर
१७	,,	,,	३
२१	,,	,,	४
२४	,,	श्रव.	१
२७	,,	,,	२
३०	,,	,,	३
३	फर..	,,	४
६	,,	धनि.	१
९	,,	,,	२
१३	,,	,,	३ कुंभ
१६	,,	,,	४
१९	,,	शत.	१
२२	,,	,,	२
२६	,,	,,	३
१	मार्च	,,	४
४	,,	पू.भा.	१
८	,,	,,	२
११	,,	,,	३
१४	,,	,,	४ मीन
१८	,,	उ.भा	१
२१	,,	,,	२
२४	,,	,,	३
२८	,,	,,	४
३१	,,	रेवती	१
४	अप्रैल	,,	२
७	,,	,,	३
१०	,,	,,	४

मंगलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३१	मार्च	ज्येष्ठा	४
१०	अप्रैल	मूल	१ धनु
२३	,,	,,	२

मंगल चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२९	मई	मूल	१
१०	जून	ज्ये	४ वृशि.
२०	जून	,,	३
२	जुलाई	,,	२
६	अग.	,,	३
१८	अग.	,,	४
२६	अग.	मूल	१ धनु
३	सित.	,,	२
१०	,,	,,	३
१६	,,	,,	४
२१	,,	पू.षा.	१
२७	,,	,,	२
३	अक्टू.	,,	३
८	,,	,,	४
१३	,,	उ.षा.	१
१८	,,	,,	२ मकर
२३	,,	,,	३
२८	,,	,,	४
२	नव.	श्रवण	१
७	,,	,,	२
१२	,,	,,	३
१६	,,	,,	४
२१	,,	धनि.	१
२६	,,	,,	२
३०	,,	,,	३ कुम्भ
५	दिस.	,,	४
९	,,	शत.	१
१४	,,	,,	२
१९	,,	,,	३
२३	,,	,,	४
२८	,,	पू.भा.	१
१	जन.२००२ई.	,,	२
६	,,	,,	३
१०	,,	,,	४ मीन
१५	जन.	उ.भा.	१
१९	,,	,,	२
२४	,,	,,	३
२९	,,	,,	४
२	फर.	रेवती	१

मंगल- बुध चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
७	फर.	रेवती	२
११	,,	,,	३
१६	,,	,,	४
२१	,,	अश्वि.	१
२५	,,	,,	२
२	मार्च	,,	३
७	,,	,,	४
१२	,,	भरणी	१
१६	,,	,,	२
२१	,,	,,	३
२६	,,	,,	४
३१	,,	कृति.	१
५	अप्रैल	,,	२
९	,,	,,	३

बुध-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२७	मार्च	पू.भा.	१
२९	,,	,,	२
३१	,,	,,	३
२	अप्रैल	,,	४
४	,,	उ.भा.	१
६	,,	,,	२
८	,,	,,	३
१०	,,	,,	४
१२	,,	रेवती	१
१४	,,	,,	२
१५	,,	,,	३
१७	,,	,,	४
१९	,,	अश्वि	१
२०	,,	,,	२
२२	अप्रै.	अश्वि.	३
२३	,,	,,	४
२५	अप्रै.	भर.	१
२७	,,	,,	२
२८	,,	,,	३
३०	,,	,,	४
१	मई	कृति.	१
३	,,	,,	२ वृष
४	,,	,,	३

बुध चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
६	मई	कृति.	४
८	,,	रोहि.	१
१०	,,	,,	२
१२	,,	,,	३
१४	,,	,,	४
१६	,,	मृग.	१
१९	,,	,,	२
२२	,,	,,	३ मिथुन
२६	,,	,,	४
१३	,,	,,	३
१९	,,	,,	२ वृष
६	जुलाई	,,	३ मिथुन
१०	,,	,,	४
१३	,,	आर्द्रा	१
१६	,,	,,	२
१८	,,	,,	३
२०	,,	,,	४
२२	,,	पुन.	१
२४	,,	,,	२
२५	,,	,,	३
२७	,,	,,	४ कर्क
२९	,,	पुष्य	१
३०	,,	,,	२
१	अगस्त	,,	३
३	,,	,,	४
४	,,	श्लेषा	१
६	,,	,,	२
७	,,	,,	३
९	,,	,,	४
११	,,	मघा	१ सिंह
१२	अगस्त	मघा	२
१४	,,	,,	३
१६	,,	,,	४
१८	,,	पू.फा.	१
१९	,,	,,	२
२२	,,	,,	३
२४	,,	,,	४

बुध चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	अगस्त	उ.फा.	१
२८	,,	,,	२ कन्या
३०	,,	,,	३
१	सितं.	,,	४
३	,,	हस्त	१
६	,,	,,	२
८	,,	,,	३
११	,,	,,	४
१४	,,	चित्रा	१
१७	,,	,,	२
२०	,,	,,	३ तुला
२४	,,	,,	४
८	अक्टू.	,,	३
११	,,	,,	२ कन्या
१४	,,	,,	१
१७	,,	हस्त	४
२९	,,	चित्रा	१
१	नव.	,,	२
३	,,	,,	३ तुला
६	,,	,,	४
८	,,	स्वा.	१
१०	,,	,,	२
१२	,,	,,	३
१४	,,	,,	४
१६	,,	विशा	१
१८	,,	,,	२
२१	,,	,,	३
२३	,,	,,	४वृशि.
२५	,,	अनु	१
२७	,,	,,	२
२९	,,	,,	३
१	दिस.	,,	४
३	,,	ज्ये.	१
५	,,	,,	२
७	,,	,,	३
१०	,,	,,	४
१२	,,	मूल	१ धनु
१४	,,	,,	२

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०५८ वि. (सन् २००१-२००२ ई.)

बुध चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१६	दिस.	मूल	३	
१८	,,	,,	४	
२०	,,	पू.षा.	१	
२२	,,	,,	२	
२४	,,	,,	३	
२६	,,	,,	४	
२९	,,	उ.षा.	१	
३१	,,	,,	२	मकर
२जन.२००२ई.		उ.षा.	३	
४	,,	,,	४	
६	,,	श्रवण	१	
९	,,	,,	२	
१२	,,	,,	३	
१६	,,	,,	४	
२१	,,	,,	३	
२५	,,	,,	२	
२८	,,	,,	१	
३०	,,	उ.षा.	४	
३	फर.	,,	३	
१४	,,	,,	४	
१९	,,	श्रव.	१	
२२	,,	,,	२	
२५	,,	,,	३	
२८	,,	,,	४	
३	मार्च	धनि.	१	
५	,,	,,	२	
८	,,	,,	३	कुम्भ
१०	,,	,,	४	
१२	,,	शत.	१	
१४	,,	,,	२	
१६	,,	,,	३	
१८	,,	,,	४	
२०	,,	पू.भा.	१	
२२	,,	,,	२	
२४	,,	,,	३	
२६	,,	,,	४	मीन
२८	,,	उ.भा.	१	
३०	,,	,,	२	

बुध-गुरु चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
३१	मार्च	उ.भा.	३	
२	अप्रैल	,,	४	
४	,,	रेव.	१	
५	,,	,,	२	
७	,,	,,	३	
९	,,	,,	४	
१०	,,	अश्वि.	१	मेष
१२	,,	,,	२	

गुरु-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२९	मार्च	रोहि.	२	
१६	अप्रैल	,,	३	
३	मई	,,	४	
१८	,,	मृग.	१	
१	जून	,,	२	
१६	,,	,,	३	मिथुन
३०	,,	,,	४	
१५	जुलाई	आर्द्रा	१	
३१	,,	,,	२	
१६	अग.	,,	३	
४	सित.	,,	४	
३०	,,	पुन.	१	
६	दिस.	आर्द्रा	४	
२जन.२००२ ई.		,,	३	
२९	,,	,,	२	
२	अप्रैल	,,	३	

शुक्र-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२८	मार्च	उ.भा.	४	
३	अप्रैल	,,	३	
९	,,	,,	२	
१	मई	,,	३	
८	,,	,,	४	
१४	,,	रेव.	१	
१८	मई	रेव.	२	
२३	,,	,,	३	
२७	,,	,,	४	
३०	,,	अश्वि.	१	मेष

शुक्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
३	जून	अश्वि.	२	
७	,,	,,	३	
१०	,,	,,	४	
१४	,,	भर.	१	
१७	,,	,,	२	
२०	,,	,,	३	
२३	,,	,,	४	
२७	,,	कृतिका	१	
३०	,,	,,	२	वृष
३	जुलाई	,,	३	
६	,,	,,	४	
९	,,	रोहि.	१	
१२	,,	,,	२	
१५	,,	,,	३	
१८	,,	,,	४	
२१	,,	मृग	१	
२४	,,	,,	२	
२७	,,	,,	३	मिथुन
३०	,,	,,	४	
२	अग.	आर्द्रा	१	
५	,,	,,	२	
७	,,	,,	३	
१०	,,	,,	४	
१३	,,	पुन.	१	
१६	,,	,,	२	
१९	,,	,,	३	
२२	,,	,,	४	कर्क
२५	अग.	पुष्य	१	
२७	,,	,,	२	
३०		,,	,,	३
२	सित.	,,	४	
५	,,	श्लेषा	१	
८	,,	,,	२	
१०	,,	,,	३	
१३	,,	,,	४	
१६	,,	मघा	१	सिंह
१९	,,	,,	२	
२१	,,	,,	३	

शुक्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२४	सित.	मघा	४	
२७	,,	पू.फा.	१	
२९	,,	,,	२	
२	अक्टू.	,,	३	
५	,,	,,	४	
८	,,	उ.फा.	१	
१०	,,	,,	२	कन्या
१३	,,	,,	३	
१६	,,	,,	४	
१८	,,	हस्त	१	
२१	,,	,,	२	
२४	,,	,,	३	
२६	,,	,,	४	
२९	,,	चित्रा	१	
१	नव	,,	२	
३	,,	,,	३	तुला
६	,,	,,	४	
९	,,	स्वा	१	
११	,,	,,	२	
१४	,,	,,	३	
१७	,,	स्वा.	४	
१९	,,	विशा.	१	
२२	,,	,,	२	
२५	,,	,,	३	
२७	,,	,,	४	वृश्चि.
३०	,,	अनु	१	
३	दिस.	,,	२	
५	,,	,,	३	
८	,,	,,	४	
११	,,	ज्ये.	१	
१३	,,	,,	२	
१६	,,	,,	३	
१९	,,	,,	४	
२१	,,	मूल	१	धनु
२४	,,	,,	२	
२६	,,	,,	३	
२९	,,	,,	४	
१जन.२००२ ई.		पू.षा.	१	

शुक्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
३	जन.	पू.षा.	२	
६	,,	,,	३	
९	,,	,,	४	
११	,,	उ.षा.	१	
१४	,,	,,	२	मकर
१७	,,	,,	३	
१९	,,	,,	४	
२२	,,	श्रव.	१	
२५	,,	,,	२	
२७		,,	,,	३
३०	,,	,,	४	
२	फर.	धनि.	१	
४	,,	,,	२	
७	फर.	धनि	३	कुम्भ
१०	,,	,,	४	
१२	,,	शत	१	
१५	,,	,,	२	
१८	,,	,,	३	
२०	,,	,,	४	
२३	,,	पू.भा.	१	
२६	,,	,,	२	
२८	,,	,,	३	
३	मार्च	,,	४	मीन
६	,,	उ.भा.	१	
८	,,	,,	२	
११	,,	,,	३	
१४	,,	,,	४	
१६	,,	रेव.	१	
१९	,,	,,	२	
२२	,,	,,	३	
२४	,,	,,	४	
२७	,,	अश्वि.	१	मेष
३०	,,	,,	२	
१	अप्रैल	,,	३	
४	,,	,,	४	
७	,,	भरणी	१	
१०	,,	,,	२	
१२	,,	,,	३	

शनि-राहु-केतु चार

शनि-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२६	मार्च	कृति.	३	
२५	अप्रैल	,,	४	
२१	मई	रोहि.	१	
१६	जून	,,	२	
१५	जुलाई	,,	३	
२२	अग.	रोहि.	४	
१	नव.	,,	३	
१५	दिस.	,,	२	
२अप्रैल२००२ई.		,,	३	

राहु-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
८	अप्रैल	आर्द्रा	३	
१०	जून	,,	२	
१२	अग.	,,	१	
१४	अक्टू.	मृग	४	
१५	दिस.	,,	३	
१फर.२००२ ई.		,,	२	वृष

केतु-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
८	अप्रैल	पू.षा	१	

केतु-यूरे.-ने.-प्लू. चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१०	जून	मूल	४	
१२	अग.	,,	३	
१४	अक्टू.	,,	२	
१५	दिस.	,,	१	
१६फर.२००२ ई.		ज्ये.	४	वृश्चि.

यूरेनस-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१०	अप्रैल	धनि.	३	कु.
१९	जुला.	,,	२	म.
२८जन.२००२ ई.		,,	३	कु.
३०	मार्च	धनि.	४	

नेपच्यून-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
५	अग.	श्रवण	१
२५	दिस.	,,	२
३अप्रैल२००२ ई.		,,	३

प्लूटो-चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
८	जून	ज्येष्ठ	१
२	नवम्बर	,,	२
१२फर.२००२ ई.		,,	३

ग्रहों के वक्री मार्गी

ग्रह	तारीख	गति
मंगल	११ मई	वक्री
,,	२० जुलाई	मार्गी
बुध	४ जून	वक्री
,,	२८ ,,	मार्गी
,,	१ अक्टू.	वक्री
,,	२३ अक्टू.	मार्गी
,,	१८ जन. २००२	वक्री
,,	८ फर.	मार्गी
गुरु	२ नव.	वक्री
,,	१ मार्च २००२	मार्गी

ग्रह	तारीख	गति
शुक्र	२० अप्रैल	मार्गी
शनि	२७ सित.	वक्री
,,	८ फर.२००२	मार्गी
यूरेनस	२९ मई	वक्री
,,	३० अक्टू.	मार्गी
नेप.	११ मई	वक्री
,,	१८ अक्टू.	मार्गी
प्लूटो	२३ अग.	मार्गी
,,	२० मार्च २००२	वक्री

शेष पृष्ठ १९४ पर

संवत् २०५८ वि. के सर्वार्थ सिद्धि, अमृतसिद्धि तथा रवियोग, द्विपुष्कर, रविपुष्य एवं गुरुपुष्य योग

तारीखों पर से स्टैं.टा. के अनुसार लिखे हैं। इस समय में शुभ कार्यारम्भ करना सिद्धि दायक होता है।

सर्वार्थ सिद्धियोग एवं अमृतसिद्धि योग

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
२७ मार्च सूर्योदय से २७ मार्च २०/४५ तक
२८ मार्च २१/१८ से २९ मार्च सूर्योदय तक
२ अप्रैल १८/४१ से ३ अप्रैल सूर्योदय तक
३ अप्रैल १७/०४ से ४ अप्रैल सूर्योदय तक
८ अप्रैल सूर्योदय से ८ अप्रैल ६/५६ तक
११ अप्रैल सूर्योदय से ११ अप्रैल २८/४२ तक
१५ अप्रैल १०/३४ से १६ अप्रैल सूर्योदय तक
१६ अप्रैल १३/३२ से १७ अप्रैल सूर्योदय तक
२२ अप्रैल २७/०५ से २३ अप्रैल सूर्योदय तक
२४ अप्रैल २७/४७ से २६ अप्रैल सूर्योदय तक
२९ अप्रैल २४/०९ से ३० अप्रैल २२/५१ तक
१ मई सूर्योदय से १ मई २१/२५ तक
९ मई सूर्योदय से ९ मई १३/५४ तक
१३ मई सूर्योदय से १३ मई २१/३८ तक
१४ मई सूर्योदय से १४ मई २४/३७ तक
२० मई ११/३९ से २१ मई सूर्योदय तक
२२ मई १२/०३ से २४ मई सूर्योदय तक
२७ मई ६/०० से २८ मई सूर्योदय तक
२ जून २१/२३ से ३ जून सूर्योदय तक
४ जून २१/२० से ५ जून सूर्योदय तक
१० जून सूर्योदय से १० जून ५/३५ तक
११ जून सूर्योदय से ११ जून ८/२८ तक
१५ जून १९/१० से १६ जून सूर्योदय तक
१७ जून सूर्योदय से १७ जून २१/२८ तक
१९ जून सूर्योदय से १९ जून २०/५६ तक
२० जून सूर्योदय से २१ जून सूर्योदय तक

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
२२ जून १६/०४ से २३ जून सूर्योदय तक
२४ जून सूर्योदय से २४ जून ११/३५ तक
३० जून सूर्योदय से ३० जून २७/०० तक
२ जुला. सूर्योदय से २ जुला. २८/३२ तक
७ जुला. १२/४९ से ८ जुला. सूर्योदय तक
१२ जुला. २७/०० से १४ जुला. सूर्योदय तक
१५ जुला. सूर्योदय से १५ जुला. ६/२० तक
१७ जुला. सूर्योदय से १७ जुला. ६/४७ तक
१८ जुला. सूर्योदय से १८ जुला. २८/२० तक
१९ जुला. २६/१४ से २० जुला. २३/४५ तक
२५ जुला. ११/०४ से २६ जुला. सूर्योदय तक
२८ जुला. सूर्योदय से २८ जुला. ८/३३ तक
३० जुला. सूर्योदय से ३० जुला. १०/०९ तक
३ अग. १९/११ से ४ अग. २२/०६ तक
७ अग. सूर्योदय से ८ अग. सूर्योदय तक
९ अग. ९/३८ से ११ अग. सूर्योदय तक
१३ अग. १५/३२ से १४ अग. सूर्योदय तक
१५ अग. सूर्योदय से १५ अग. १४/२० तक
१६ अग. १२/४१ से १७ अग. १०/२६ तक
२२ अग. सूर्योदय से २२ अग. १७/५१ तक
३१ अग. सूर्योदय से ३१ अग. २८/०६ तक
४ सितं. १२/५३ से ५ सितं. सूर्योदय तक
६ सितं. सूर्योदय से ७ सितं. १९/४८ तक
१० सितं. सूर्योदय से ११ सितं. सूर्योदय तक
१३ सितं. सूर्योदय से १४ सितं. सूर्योदय तक
२१ सितं. २३/३४ से २२ सितं. सूर्योदय तक
२३ सितं. २४/३५ से २४ सितं. सूर्योदय तक
२८ सितं. सूर्योदय से २८ सितं. १०/२४ तक

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
२ अक्टू. सूर्योदय से २ अक्टू. २१/३० तक
४ अक्टू. सूर्योदय से ४ अक्टू. २५/२६ तक
६ अक्टू. २७/५७ से ७ अक्टू. सूर्योदय तक
८ अक्टू. सूर्योदय से ८ अक्टू. २८/४८ तक
११ अक्टू. सूर्योदय से ११ अक्टू. २६/१६ तक
१४ अक्टू. १९/४४ से १५ अक्टू. सूर्योदय तक
१९ अक्टू. ९/२५ से २० अक्टू. सूर्योदय तक
२१ अक्टू. ९/१५ से २२ अक्टू. सूर्योदय तक
२८ अक्टू. २६/१२ से २९ अक्टू. सूर्योदय तक
३० अक्टू. ३०/३० से ३१ अक्टू. सूर्योदय तक
१ नवं. सूर्योदय से १ नवं. ८/०३ तक
३ नवं. ९/५१ से ४ नवं. सूर्योदय तक
५ नवं. सूर्योदय से ५ नवं. १०/१२ तक
८ नवं. सूर्योदय से ८ नवं. ८/१५ तक
११ नवं. सूर्योदय से १२ नवं. सूर्योदय तक
१५ नवं. १९/३० से १६ नवं. सूर्योदय तक
१६ नवं. सूर्योदय से १७ नवं. १८/५४ तक
१८ नवं. सूर्योदय से १८ नवं. १९/३७ तक
२५ नवं. १०/१७ से २६ नवं. सूर्योदय तक
२७ नवं. १४/५० से २८ नवं. सूर्योदय तक
१ दिसं. सूर्योदय से १ दिसं. १७/२९ तक
९ दिसं. सूर्योदय से ९ दिसं. ३०/४४ तक
१२ दिसं. २८/०४ से १३ दिसं. २७/४९ तक
१६ दिसं. २९/५९ से १७ दिसं. सूर्योदय तक
२३ दिसं. सूर्योदय से २३ दिसं. २१/२४ तक
२५ दिसं. सूर्योदय से २५ दिसं. २५/३६ तक
२६ दिसं. २६/४५ से २७ दिसं. सूर्योदय तक
३१ दिसं. २३/०० से १ जन. सूर्योदय तक

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
१ जन. २१/०४ से २ जन. सूर्योदय तक
६ जन. सूर्योदय से ६ जन. १२/०६ तक
९ जन. १०/२५ से १० जन. १०/४१ तक
१३ जन. १३/५३ से १४ जन. सूर्योदय तक
२२ जन. सूर्योदय से २२ जन. १०/२८ तक
२३ जन. १२/१० से २४ जन. सूर्योदय तक
२८ जन. ९/२५ से २८ जन. ३१/०५ तक
२९ जन. सूर्योदय से २९ जन. २८/२५ तक
६ फर. सूर्योदय से ६ फर. १६/०९ तक
१० फर. सूर्योदय से १० फर. २२/२३ तक
११ फर. सूर्योदय से ११ फर. २४/४९ तक
१७ फर. १५/१२ से १८ फर. सूर्योदय तक
१९ फर. २०/०५ से २१ फर. सूर्योदय तक
२४ फर. २०/३० से २५ फर. १८/१९ तक
२६ फर. सूर्योदय से २६ फर. १५/३८ तक
२ मार्च २५/१५ से ३ मार्च सूर्योदय तक
४ मार्च २२/३१ से ५ मार्च सूर्योदय तक
९ मार्च २८/०८ से १० मार्च सूर्योदय तक
११ मार्च सूर्योदय से ११ मार्च ६/४४ तक
१५ मार्च १८/२३ से १६ मार्च सूर्योदय तक
१७ मार्च सूर्योदय से १७ मार्च २३/५६ तक
१९ मार्च सूर्योदय से १९ मार्च २८/२१ तक
२० मार्च सूर्योदय से २१ मार्च सूर्योदय तक
२४ मार्च सूर्योदय से २४ मार्च २८/२९ तक
३० मार्च ११/४४ से ३१ मार्च सूर्योदय तक
१ अप्रैल ७/३४ से २ अप्रैल सूर्योदय तक
६ अप्रैल १०/१५ से ७ अप्रैल सूर्योदय तक
११ अप्रैल २४/२८ से १३ अप्रैल सूर्योदय तक

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक

रवि योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
२७ मार्च	२०/४५ से	२८ मार्च	२१/१८ तक
२९ मार्च	२१/३० से	३० मार्च	२१/२१ तक
२ अप्रै.	१८/४१ से	४ अप्रैल	१५/११ तक
६ अप्रैल	१०/५४ से	७ अप्रैल	८/४७ तक
१४ अप्रैल	७/५९ से	१५ अप्रैल	१०/३४तक
२५ अप्रैल	२७/३३से	२६ अप्रैल	२७/०२तक
२८ अप्रैल	२५/१७से	२९ अप्रैल	२४/०९तक
१ मई	२१/२५ से	३ मई	१८/२२ तक
५ मई	१५/३२ से	६ मई	१४/२६ तक
१३ मई	२१/३८ से	१४ मई	२४/३७ तक
२६ मई	७/३७ से	२७ मई	६/०० तक
२७ मई	२८/२३ से	२८ मई	२६/४८ तक
३० मई	२४/०० से	३१ मई	२२/५२ तक
३ जून	२१/०९ से	४ जून	२१/२० तक
१२ जून	११/२९ से	१३ जून	१४/२४ तक
२४ जून	११/३५ से	२५ जून	९/२३ तक
२६ जून	७/२२ से	२७ जून	५/३९ तक
२८ जून	२७/२३ से	३० जून	२७/०० तक
२ जुला.	२८/३२ से	४ जुला.	६/०१ तक
११ जुला.	२४/३१ से	१२ जुला.	२७/०० तक
२३ जुला.	१५/३१ से	२४ जुला.	१३/०५ तक
२५ जुला.	११/०४ से	२६ जुला.	९/३५ तक
२८ जुला.	८/३३ से	३० जुला.	१०/०९ तक
१ अग.	१३/५७ से	२ अग.	१६/२६ तक
२ अग.	२४/३६ से	३ अग.	१९/११ तक
१० अग.	११/५७ से	११ अग.	१३/४७ तक
२१ अग.	२०/०३ से	२२ अग.	१७/५१ तक
२३ अग.	१६/१६ से	२४ अग.	१५/२५ तक
२६ अग.	१६/०७ से	२८ अग.	१९/४३ तक
२ सितं.	७/०८ से	३ सितं.	१०/०५ तक
८ सितं.	२१/२२ से	९ सितं.	२२/२४ तक
१९ सितं.	२५/५१ से	२० सितं.	२४/२० तक
२१ सितं.	२३/३४ से	२२ सितं.	२३/३९ तक
२४ सितं.	२६/१८ से	२८ सितं.	१०/२४ तक
३० सितं.	१६/२१ से	१ अक्टू.	१९/०४तक
७ अक्टू.	२८/३७ से	८ अक्टू.	२८/४८तक
१९ अक्टू.	९/२५ से	२० अक्टू.	८/५६ तक
२१ अक्टू.	९/१५ से	२२ अक्टू.	१०/२२तक
२५ अक्टू.	१७/३२से	२७ अक्टू.	२३/२९तक
२९ अक्टू.	२८/३४ से	३० अक्टू.	३०/३०तक
७ नवं.	९/१३ से	८ नवं.	८/१५ तक
१७ नवं.	१८/५४ से	१८ नवं.	१९/३७ तक
१९ नवं.	१७/१५ से	१९ नवं.	२१/०१ तक
२० नवं.	२३/०३ से	२१ नवं.	२५/३६ तक
२४ नवं.	७/२७ से	२६ नवं.	१२/४७ तक
२८ नवं.	१६/१९ से	२९ नवं.	१७/१३ तक
६ दिसं.	१२/२० से	७ दिसं.	१०/५३ तक
१८ दिसं.	७/४७ से	१९ दिसं.	१०/०४ तक
२० दिसं.	१२/४५ से	२१ दिसं.	१५/४१ तक
२३ दिसं.	२१/२४ से	२५ दिसं.	२५/३६ तक
२७ दिसं.	२७/११ से	२८ दिसं.	२६/४९ तक
२८ दिसं.	२६/५७ से	२९ दिसं.	२६/०६ तक
४ जन.	१५/०५ से	५ जन.	१३/२६ तक
१६ जन.	२०/३६ से	१७ जन.	२३/२७ तक
१८ जन.	२६/२६ से	१९ जन.	२९/२४ तक
२२ जन.	१०/२८ से	२५ जन.	१३/२० तक
२७ जन.	११/२४ से	२८ जन.	९/२८ तक
२ फर.	१८/३२ से	३ फर.	१७/०१ तक
१५ फर.	९/१७ से	१६ फर.	१२/१७ तक
१७ फर.	१५/१२ से	१८ फर.	१७/५१ तक
१९ फर.	१४/४७ से	१९ फर.	२०/०५ तक
२१ फर.	२२/३९ से	२३ फर.	२२/०१ तक
२५ फर.	१८/१९ से	२६ फर.	१५/३८ तक
३ मार्च	२३/३२ से	४ मार्च	२१/१२ तक
४ मार्च	२२/३१ से	५ मार्च	२२/१७ तक
१६ मार्च	२१/१५ से	१७ मार्च	२३/५६ तक
१७ मार्च	२९/३५ से	१८ मार्च	२६/२१ तक
१९ मार्च	२८/२१ से	२० मार्च	२९/४९ तक
२३ मार्च	६/४० से	२४ मार्च	२८/२९ तक
२६ मार्च	२३/४४ से	२७ मार्च	२०/४६ तक
३ अप्रैल	६/१८ से	४ अप्रैल	६/५३ तक

रवि पुष्य योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
२९ अप्रैल	२४/०९ से	३० अप्रैल	सूर्योदय तक
२७ मई	६/०० से	२७ मई	२८/२३ तक
२४ जून	सूर्योदय से	२४ जून	११/३५ तक
२४ फर.	२०/३० से	२५ फर.	सूर्योदय तक
२४ मार्च	सूर्योदय से	२४ मार्च	२८/२९ तक

गुरु पुष्य योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
१३ सितं.	२०/०९ से	१४ सितं.	सूर्योदय तक
११ अक्टू.	सूर्योदय से	११ अक्टू.	२६/१६तक
८ नवं.	सूर्योदय से	८ नवं.	८/१५ तक

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
३१ मार्च	६/३० से	३१ मार्च	२०/५० तक
२ जून	९/१९ से	२ जून	२१/२३ तक
५ अग.	१३/५० से	५ अग.	२५/०६ तक
२९ सितं.	सूर्योदय से	२९ सितं.	१२/४६ तक
१ दिसं.	२५/२५से	२ दिसं.	१६/५७ तक
१५ जन.	१८/०१ से	१५ जन.	२२/१७ तक
२६ जन.	सूर्योदय से	२६ जन.	१२/०० तक
३ फर.	९/३१ से	३ फर.	१७/०० तक
३० मार्च	सूर्योदय से	३० मार्च	११/४४ तक

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
२४ अप्रैल	२७/४७ से	२५ अप्रैल	सूर्योदयतक
२९ अप्रैल	१३/३९ से	२९ अप्रैल	२४/०९ तक
२३ जून	सूर्योदय से	२३ जून	११/३९ तक
१ जुला.	१७/२० से	१ जुला.	२७/३१ तक
७ जुला.	सूर्योदय से	७ जुला.	१२/४९ तक
२५ अग.	सूर्योदय से	२५ अग.	१३/३१ तक
४ सितं.	सूर्योदय से	४ सितं.	१२/५३ तक
९ सितं.	१२/४२ से	९ सितं.	२२/२४ तक
२३ अक्टू.	१२/१४ से	२३ अक्टू.	१९/३० तक
२८ अक्टू.	सूर्योदय से	२८ अक्टू.	२६/१२ तक
३ नवं.	सूर्योदय से	३ नवं.	९/५१ तक
११ नवं.	२१/३५ से	११ नवं.	२५/४९ तक
११ दिसं.	२८/४१ से	११ दिसं.	२८/५२ तक
२२ दिसं.	सूर्योदय से	२२ दिसं.	१३/१२ तक
५ जन.	सूर्योदय से	५ जन.	१३/२६ तक
१९ फर.	२०/०५ से	१९ फर.	२९/०० तक
२३ फर.	२७/३२ से	२४ फर.	२०/३० तक
९ मार्च	२२/१७ से	९ मार्च	२८/०८ तक

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः।

आचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्तजगदाधार मूर्त्तये ब्रह्मणे नमः॥१॥
विचार्य सम्यग्गणितं सुनिश्चितं नवैः प्रकारैश्च तथा पुरातनैः,
विद्वद्वरः श्रीहरदेव शर्मा सुधाकरश्चैव तथा विपश्चित्।
पंचांगरत्नं प्रसरन्मयूखं श्रीकेतकीदृग्गणितेन युक्तम्,
लोकोपकाराय कृतप्रयत्न प्रचक्रतु मोहविनाशदक्षम्॥२॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपणम्,
स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपुजोत्सवम्।
देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फलं च श्रृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥३॥
तैलाभ्यंगं, स्नानमादौ च कृत्वा पीयूषोत्थं पारिभद्रस्य पत्रम्,
भक्षेत्सौख्यं मानवो व्याधिनाशं विद्यायुः श्री लभ्यते वर्षमूले॥४॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः,
सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥५॥
मरीचिहिंगुलवणमजमोदा सशर्कैरः।
तिंतिड़ीजीरकश्चैव भक्षयेद्रोगशान्तये॥६॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है। इस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज (अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जो ध्वज हो वह) लगायें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें। मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर, चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और वह भक्षण करें। इस प्रयोग से वर्ष भर में रक्त विकार नहीं होता और अनेक रोगों की शान्ति होती है।

पंचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दनम्,
सन्तोष्यानकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्ठम्॥
श्रृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं सक्रमेच्च,
क्रीड़न् स्त्रीभिश्च सार्धं निशि रहसि नरो यावदब्दं सुखी स्यात्॥७॥

पंचांगस्थ गणेश ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें। मिष्ठान आदि भोजन करावें। गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर यह सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

अथ युगानां व्यवस्था- चतुर्युगसहस्राणि ब्राह्मणो दिनमुच्यते, तेषु चतुर्दश मनवो भवन्ति। तन्नामानि १ स्वायम्भुवः, २ स्वारोचिषः, ३ औत्तमः, ४ तामसः, ५ रैवतः, ६ चाक्षुषः, ७ वैवस्वतः, ८ सावर्णिः, ९ दक्षसावर्णिः, १० ब्रह्मसावर्णिः, ११ धर्मसावर्णिः, १२ रुद्रसावर्णिः, १३ देवसावर्णिः, १४ इन्द्रसावर्णिः। तत्रैकैकस्य मनोरेकसप्ततिमहायुगानि भवन्ति।

महायुगप्रमाणं- विंशतिसहस्राधिक त्रिचत्वारिंशल्लक्षमिताब्दाः, एवं चाक्षुषपर्यन्तं षण्मनवो गताः, वर्तमान वैवस्वतमनुः सप्तमः। तत्र सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। वर्तमानमष्टाविंशतितमं महायुगम्।

चार युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, इन्हीं दिनों के मान से ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की होती है। इस समय ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय होकर १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल व्यतीत हो चुके हैं। ब्रह्माजी के एक दिन में उपर्युक्त १४ मनु होते हैं और १ मनु में ७१ महायुग होते हैं। एक महायुग के सौर मानुष वर्ष ४३ लक्ष २० हजार हैं, इस प्रकार चाक्षुष पर्यन्त ६ मनु निकल चुके और ७वां मनु वैवस्वत मन्वन्तर चालू है। इस मनु में २७ महायुग निकलकर २८वां महायुग चल रहा है।

कृतयुगप्रमाणम् १७२८००, त्रेतायुगप्रमाणं १२९६०००, द्वापरयुगप्रमाणम् ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ६००२ शेषकलिः ४२६८९८ कलियुगमध्ये षट् शककर्तारः। आदौ इन्द्रप्रस्थे युधिष्ठिर शकः ३०४४। द्वितीयोज्जयिन्यां विक्रमस्तस्य शकः १३५। तृतीयः प्रतिष्ठान नगरे शालिवाहनस्य शकः १८०००। चतुर्थो वैतरिण्यां विजयाभिनन्दनस्तस्य शकः १००००। पंचमो गौड़देशे धारातीर्थे नागार्जुनस्तस्यः शकः ४०००००। चतुर्लक्षवर्षाणि। षष्ठः करवीरपत्तने कर्णाटके कल्क्यवतारस्तस्य शकः ८२१ वर्षाणि।

अथ सत्ययुगादीनां व्यवस्था- सत्ययुग- कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सत्युग का आरम्भ हुआ। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी। इसमें श्री विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए। श्रीमत्स्यावतार ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्म को वेद लाकर दिये। भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मंदराचल को पीठ पर धारण कर एवं देव-दैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहावतार ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पादों में स्थिर था। गौएं कामधेनु के समान होती थीं। प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्कों के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था, इच्छित वर्षा होती थी, पृथ्वी सम्पूर्ण सस्य और रत्नों से परिपूर्ण थी, ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता तथा सत्यभाषी, परद्रव्य, परस्त्री पराङ्मुख और त्यागी होते थे, शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक-वर्ग (राज्यवंश) न्यायपरायण थे और प्रजा को औरस पुत्रवत्

के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह

समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में निरत रहते थे। इस युग में पुष्कर प्रधान तीर्थ था, प्रहलाद आदि दैत्यवंशी राजाओं की तीनों की तीनों लोकों में पहुंच थी।

त्रेतायुग- वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएं त्रिकाल दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चरित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर- माघ कृष्णा ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान श्री कृष्ण और श्रीबलराम के दो अवतार हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलराजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएं दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिर धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु-पर्यन्त दमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग- भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिसमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि-अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म कर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पांखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रताक्वचित देखने में आवेगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या-विक्रय करेंगे, गौ-ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता-पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः- पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति।

अथ कलिमहात्यम्- धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटनिश्चित च शाठ्योर्जितम्। राजानोऽर्थपरा हारक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे।। निर्बीजा पृथिवी निरोमधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्याभर्तुविरोधिनी पररता पुत्रापितुर्द्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः।। न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी बिरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचा अवनिपतयो दुष्टमत्यो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति।।

कलौ गंगायां स्थितिः- पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनी नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च- यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

।। अथ संवत्सर वर्ष राजादि फलम् ।।

अथ श्री मन्नृपति चक्र चूड़ामणि श्री विक्रमादित्यानां राज्य सिंहासनादतीताब्दानि तत् संवत्सरामिद्य: २०५८ तथा च श्रीमन्नृपति मुकुट मणि शक जाति यवन निर्बीजक शालिवाहन राज्यादगत-हायनानि तत्छाकामिद्य: १९२३, ईसवीय सन्-२००१-२००२, भारतीय गणराज्य संवत्सर ५२-५३, श्रीकृष्ण संवत् ५०३७, हिजरी सन् १४२१-२२, श्री महावीर निर्वाण जैन संवत्सर २५२७-२८ वर्षारम्भ गुरुमानेन प्रभवादि षट्यब्दानां मध्ये विष्णुविशत्यां जय नाम संवत्सर:। अथ मेषार्क दिवसे जयनाम

संवत्सरस्य भुक्तमासादय: ७/४/२/५२ भोग्यमासादय: ४/२५/५७/०८

अथ जयनाम संवत्सरस्तस्य फलम्-

जय मंगल घोषाद्यै: संकुला धरणी सदा।
जयाब्दे धरणी नाथा: संग्रामे जयकांक्षिण:।।

जयघोष एवं मंगल गान पृथ्वी में चारों ओर सुनाई दे एवं शासक एवं सेनानायक युद्ध में विजय की कामना करें।

अन्यच्च- "जयसंवत्सरे गुरु: स्वामी, महासुभिक्षं चैत्रे महर्घता, वैशाख ज्येष्ठयो: समर्घता, आषाढ़े मेघ वर्षा, अन्नं महर्घं, क्षावणे दिन २४ महामेघ:, भाद्रपदे दिन ७ मेघवृष्टि:, आश्विने अन्नं समर्घं, कणानां मणं प्रतिद्रामा ३५ लभ्या:, स्वर्णादि धातु समता, कार्तिकादि मास पंचक उत्तमं, अन्न समता अन्यवस्तुनि महर्घता भवति परं मौक्तिकादि प्रवालक महर्घता। मार्गशीर्षे रोगबहुलता वणिक्पीडा, उच्च मुलतान देशे रोगपीडा छत्र भंगोलोका दु:खिता:"

जय संवत्सर का स्वामी गुरु, चैत्र में तेजी, वैशाख ज्येष्ठ में अन्न सस्ता, आषाढ़ में मेघ वर्षा, अन्न तेज, श्रावण में २४ दिन महामेघ, भादौं में ७ दिन वर्षा, आश्विन में अन्न सस्ता सुवर्णादि धातु समता, कार्तिकादि पांच महीने आम, अन्न भाव सम, मोती मूंगा मंहगा, मार्गशीर्ष में रोग पीड़ा, व्यापारियों को पीड़ा, मुलतान देश में छत्र भंग, लोग दु:खी हों।

अथास्मिन वर्षे राजा चन्द्र: मंत्री शुक्र:, सस्येश: चन्द्र:, धान्येश: शनि:, मेघेश: गुरु:, रसेशो बुध:, नीरसेशोश्चन्द्र:, फलेशो गुरु:, धनेशो रवि:, दुर्गेशो गुरु:, एते दशाधिकारिण:।

राजा चन्द्रस्तस्य फलम्-

चन्द्रे नृपे मंगल शोभनानि प्रभूत वृष्टि: प्रचुरं च धान्यम्।।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।। १।।

राजा चन्द्र का फल- जगत् में मंगल कार्य उत्सवादि की वृद्धि होने से प्रजा में सुख शांति का वातावरण बनेगा। धान्यादि का उत्पादन भी बढ़ेगा। वर्षा अच्छी होगी। जिससे अनाज आदि का भाव मंदा रहेगा। चावल की उत्पत्ति बढ़ेगी। राजाओं का अभ्युदय होगा। पेड़ों पर फल फूल अधिक मात्रा में लगेंगे। रस कस पदार्थ तेज रहेंगे।। १।।

मंत्री शुक्रस्तस्य फलम्:-

भृगुसुते ननु मन्त्रीपदं गते शलभ मूषक-मूषक रौहिष:।
भवति धान्यं समर्घतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्।।

मंत्री शुक्र का फल- कृषि में टिड्डी, चूहे, कातरा व अन्य कीड़ों की अधिकता से हानि होगी। वर्षा श्रेष्ठ होने से धान्य भाव मन्दा होगा। नारियल, छुआरा, मेवा आदि का उत्पादन अच्छा होगा। शहरी लोग भय से सशंकित रहेंगे।। २।।

सस्येशो चन्द्र फलम् -

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघ: पयोमुंचति गोपगोधुक।
देवद्विजाराधन तत्परा नृपाधराभवेद्धान्य धनौघ पूर्णा।।

सस्येश चन्द्र का फल- चन्द्र के सस्याधिप होने पर वर्षा पर्याप्त होगी, प्रजा में सुख शान्ति हो, दूध का उत्पादन पर्याप्त होगा। शासक आस्तिक प्रवृत्ति के होकर देवताओं-ब्राह्मणों का पूजन-सम्मान करेंगे तथा पृथ्वी पर सुख शान्ति धन धान्य पर्याप्त होगा।

धान्येशो शनिस्तस्य फलम्-

निर्धना: क्षितिभुजो रणोदरा: सस्यमल्पमति रोगिणो नरा:।
नैव वर्षतिजलं सुरेश्वर: स्याद्यदान्नत्यकणप: शनैश्चर:।। ४।।

धान्येश शनि का फल वर्षा का अभाव रहे। कृषि उत्पादन में कमी रहे। महंगाई बढ़े। जनता में अशांति, कलह, दंगे-फसाद, रोगों की अधिकता होगी। शासन अस्थिर होने का भय होगा। ।४।।

मेघेशो गुरुस्तस्य फलम् -

गुरुरपि प्रियवृष्टिकर: सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा।
श्रुति विचारपरा नरपालका: रस समृद्धि युताखिल मानव:।। ५।।

मेघेश गुरु का फल- वर्षा समयानुकूल होगी। लोग धर्मपरायण, सुखी व समृद्ध हों। राष्ट्र नायकों की वेद- शास्त्रों में निष्ठा बढ़ेगी। पृथ्वी पर सुख व शांति का संचार हो।। ५।।

रसेशो बुधस्तस्य फलम्-

रसपतौ द्विजराजसुते मही सुलभ धान्य घृतादियुता जना:।।

प्रभुदितां वरनायक पालिताः बहुजलाऽखिल देश सुरक्षिताः।।६

रसेश बुध का फल- वर्षा अच्छी होगी धान्योत्पादन में वृद्धि होगी। रस पदार्थ, घृतादि सुलभ होंगे। जनता सुखी रहे। सज्जन प्रवृत्ति वालों को प्रसन्नता होगी। देश सुरक्षित होगा।। ६।।

नीरसेशो चन्द्रस्तस्य फलम् -

शुक्लवर्णादि वस्तुनां मुक्ता रजत वाससां।।

रत्न माणिक्य मुक्तादेरर्व वृद्धि प्रजायते।। ७।।

नीरसेश चन्द्र का फल- श्वेत वर्ण की वस्तुएं जैसे चांदी, मोती, रत्न माणिक्य और श्वेत वस्त्र आदि में अर्ध वृद्धि होगी। खनिज पदार्थ विशेष उपलब्ध होंगे।। ७।।

फलेशो गुरुस्तस्य फलम् -

सुरगुरुः फलनायकतांगतो गतभया वनराशि महाद्रुमाः।

यजनयाजनकोत्सव मन्दिराः श्रुति विचारपरा द्विजपूर्वकाः।।८।।

फलेश गुरु का फल- वर्षा उत्तम होगी व कृषि का उत्पादन बढ़ेगा। वृक्ष व बेलों पर प्रचुर मात्रा में फल हों। जनता निर्भीक हो। लोग धार्मिक भावना तथा सत्यनिष्ठा से यज्ञादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे।। ८।।

धनेशो रविस्तस्य फलम् -

द्रविणपोयदि वासरपस्तदा वणिजतो बहुद्रव्य समागमः।

गज तुरंगम-मेष-खरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रय विक्रयात।। ९।।

धनेश सूर्य का फल- व्यापारियों को लाभ के अनेक अवसर मिलेंगे तथा लाभ होगा। घोड़ा, ऊँट, हाथी, भेड़ आदि पशुओं का क्रय विक्रय करने वालों को लाभ प्राप्त होगा। विदेशों से व्यापारिक समझौते होंगे। धन का संचय होगा।। ९।।

दुर्गेशो गुरुस्तस्य फलम् -

सुरगुरौ गढ़पे नयशोभिता नरवराः नरपाः कर पालिताः।

गिरिषु वै नगरेषु समं सुखं सुखमति द्विज शस्त्रवत्तोऽनिशम्।। १०।।

दुर्गेश गुरु का फल- प्रजा जनों को सर्व प्रकार का सुख प्राप्त होगा। शासन में लोक प्रियता तथा न्याय भावना भी अधिक होगी। चोरी- डाके कम होकर सबको सुख वृद्धि होगी।।१०।।

वर्ष नाम कार्तिकस्तस्य फलम्-

पाप बुद्धिः रतालोका भवंति कार्तिके सदा।

देवता नैव मन्यंते राज्यं च तस्करैर्हतम्।।

वर्ष नाम कार्तिक का फल- वर्ष नाम कार्तिक होने पर लोग नास्तिक होंगे, सत्कर्मों से विरत रहकर, देवपूजा से विमुख रहेंगे। एवं चोरों तस्करों एवं अपराधी तत्वों से लोग पीड़ित होंगे।

विशेष- राजा (राष्ट्रपति), मंत्री (प्रधानमंत्री), सस्येश (वर्षा ऋतु की फसलों का स्वामी), धान्येश (शरद् ऋतु की फसलों का स्वामी), मेघेश (मेघ का स्वामी), रसेश (रस पदार्थों का स्वामी), नीरसेश (धातु वस्त्रादि का स्वामी), फलेश (सम्पूर्ण फलों का स्वामी), धनेश (धन एवं कोष का स्वामी), दुर्गेष (रक्षामंत्री एवं सेनानायक)। यद्यपि इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है तथापि राजा के विशेष फल का प्रभाव काश्मीर और अफगानिस्तान में, मंत्री का फल मालवा प्रान्त में, सस्येश का फल विदर्भ और पौंड्र देश में, धान्येश का नर्मदा नदी के तटवर्ती क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण और गोवा में एवं नीरसेश का फल उज्जैन, इन्दौर, मालवा आदि में एवं धनेश और दुर्गेश का फल सर्वत्र होता है।

संवर्त् चर्तुमेघ- इस वर्ष आवर्तादिक चर्तुमेघों में 'संवर्तनाम' का चर्तुमेघ होने से पर्याप्त वर्षा होगी। कहीं अतिवृष्टि से हानि भी होगी। नवमेघों में पुष्कर नाम का अन्य प्रकार से नील नाम का मेघ होने से वर्षा मध्यम होगी। कहीं अल्प वृष्टि भी हो। इस वर्ष द्वादश नागों में वासुकि संज्ञक नाग है अतः कृषि की उपज उत्तम हो एवं वर्षा पर्याप्त होगी। चर्तुवायु में प्रचण्ड नामक वायु होने से नामानुरूप कहीं आंधी व तेज तूफान से हानि होगी।

समय निवास- समय निवास रजक (धोबी) के घर में होने से जल पर्याप्त होगा

रोहिणी निवास- रोहिणी निवास इस वर्ष 'तट' पर है। "तटे वृष्टिः सुशोभना।" अतः समयानुकूल पर्याप्त वर्षा होगी। परिणामस्वरूप धान्यादि का उत्पादन अच्छा होगा। कृषि के विकास कार्यक्रम सफल होंगे।

वर्ष आदि के विश्वामान- वर्षा ७, धान्य ७, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १५, तृषा ९, निद्रा ७, आलस्य ११ उद्यम ११, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रत्व ७, पाप ३, पुण्य ५, व्याधि १, व्याधिनाश १३, आचार ११, अनाचार १५, मृत्यु ११, जन्म १, देशोपद्रव ५, देशस्वास्थ्य ९, चौर १५, चौरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशान्त ५, उद्भिज ११, जरायुज ३, अंडज ९, स्वेदज ५, शलभा १५, शुक १७, मूषक १७, सोना ९, तांबा ३, स्वचक्र १५, परचक्र १७, वृष्टि १९, वृष्टि नाश ९।

वर्षस्तम्भ चतुष्टय विचार- इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग ५२ प्रतिशत होने से जल स्तम्भ लगभग आधा है। वर्षा सामान्य होगी। वैशाख

शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग ७० प्रतिशत के आसन्न है, तृण स्तम्भ पौना बना है। पशुओं के लिए घास चारा पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होगा। घी, दूध का उत्पादन पर्याप्त होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का योगाभाव होने से वायुस्तम्भ का अभाव है। अत: गर्मी अधिक पड़ेगी तथा कुछ स्थानों में तापमान अत्यधिक बढ़ेगा जिससे लोग व्याकुल होंगे। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुर्नवसु नक्षत्र का योग नहीं है। अत: अन्न स्तम्भ का अभाव है। जिससे सरकार की दोषपूर्ण नीति से कृषकों को हानि होगी। जनता में अन्न की कमी के कारण व्यापक असन्तोष होगा। जन असन्तोष शासन की शिरोवेदना का कारण बनेगा।

गुरु चार- १६ जून सन् २००१ ईस्वी को घं. ७ मि. २६ पर गुरु वृष राशि से मिथुन राशि में संक्रमण करेगा। गुरु प्राय: एक राशि में एक वर्ष तक रहता है। भिन्नभिन्न राशि वालों पर वृष एवं मिथुन के गुरु का फल नीचे दिया गया है-

वृष राशि के गुरु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	भय	पीड़ा-रोग	धनलाभ	धनहानि	सुखवृद्धि	पीड़ा,हानि	यशोवृद्धि	दुःख	सुख वृद्धि	लाभ	अशान्ति

मिथुन राशि के गुरु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अशान्ति	धनलाभ	भय	पीड़ा-रोग	धनलाभ	धनहानि	सुखवृद्धि	पीड़ा हानि	यशोवृद्धि	दुःख	सुखवृद्धि	लाभ

शनि की दृष्टि- इस वर्ष शनि की दृष्टि पूर्व दिशा में है क्योंकि शनि वृष राशि में संचार कर रहा है। अत: भारत के पूर्वी भागों में प्राकृतिक प्रकोप, जलप्लावन, हिंसा, महामारी, अराजकता, आतंकवादी गतिविधियों, बम्बविस्फोटों से व्यापक क्षति होगी तथा कृषि को हानि पहुंचेगी।

शनिचार का फल- संवत् २०५८ में शनि वर्ष वृष राशि में ही रहेगा। वृष राशि में रहते हुए शनि की ढैय्या व साढ़ेसाती का फल जिन-जिन राशियों पर होगा। उसका फल नीचे दिया गया है।

शनि का प्रत्येक राशि पर संक्रमण या भ्रमण काल अढाई वर्ष हैं फलत: जिस राशि पर शनि होता है, उस राशि से एक राशि आगे और एक राशि पीछे और उस राशि के, ऐसे कुल साढ़े सात वर्ष की शनि की भ्रमणकाल की समयावधि को साढ़ेसाती

वृष राशि के शनि का फल

राशि	ढैय्या या साढ़े साती	अंग	प्रवेश या निर्गम	पाद	फल
मेष	साढ़े साती	पैर	निर्गम	लौह	धन हानि, शारीरिक पीड़ा, रोग
वृष	साढ़े साती	हृदय	— —	ताम्र	सामान्य फल
मिथुन	साढ़ेसाती	शिर	प्रवेश	रजत	भाग्योदय, सम्पत्ति लाभ,
तुला	ढैय्या	-	— —	ताम्र	सम्मान सामान्य शुभ फल,
कुम्भ	ढैय्या	-	— —	सुवर्ण	सुख, सम्पत्ति, भाग्योदय

कहते हैं। शनि अपनी इस साढ़ेसाती के काल में, किसी जातक को लगने में, किसी को उतरने में, किसी को मध्य में अशुभ होता है।

साढ़ेसाती में शनि का अरिष्ट फल प्रत्येक राशि के लिए इस प्रकार है- मेष राशि के व्यक्तियों को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ, वृष को प्रथम अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष और कर्क को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ हैं। सिंह को पहले पांच वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। कन्या को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष अशुभ और तुला को अंत के अढाई वर्ष विशेष अनिष्ट कारक हैं। वृश्चिक को अन्तिम पांच वर्ष अशुभ, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष नेष्ट हैं। धनु को आरंभ के अढाई वर्ष, मकर को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी पहले के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। कुम्भ को आरंभ और अंत के पांच वर्ष, उस कालावधि में अंत के अढाई वर्ष अधिक नेष्ट हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष उसमें भी अन्तिम अढाई वर्ष विशेष अशुभ फलदायक होते हैं।

जिनकी कुंडली में शनि शुभ फलप्रद हो तथा दशान्तर्दशा भी शुभ चल रही हो उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्मकुंडली में चन्द्र शनि अशुभ ग्रहों से युक्त अशुभ स्थानों में हों तो साढ़ेसाती और ढैय्या चिन्ता, पीड़ा, धन-हानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह पशु पीड़ा, धन खर्चा एवं हानि आदि नेष्ट फलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छायापात्र का दान, शनि मंत्र का जप, दशांश हवन व श्रीहनुमानजी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दूर समर्पण कर भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रात: शनिवार को पीपल का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत होता है। साढ़ेसाती, ढैय्या का विचार जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती का विचार स्थूल है।

राहु चार का फल- १६ फरवरी सन् २००२ ईस्वी को रात्रि १२ बजकर ४२ मिनट

पर राहु वक्र गति द्वारा मिथुन राशि को छोड़कर वृष राशि में प्रवेश करेगा। विभिन्न राशियों पर इसका प्रभाव निम्नवत् होगा-

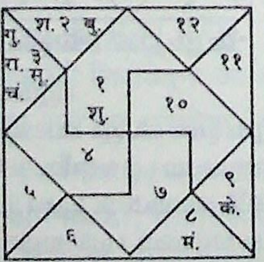
मिथुन राशि के राहु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धन लाभ	धन हानि	हानि	दुःख	शुभ	शत्रु वृद्धि	कष्ट	कष्ट	अशान्ति	धन लाभ	शोक	शत्रु वृद्धि

वृष राशि के राहु का फल

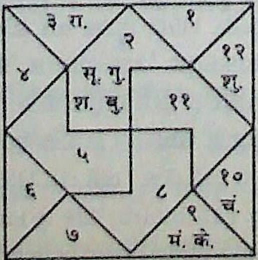
राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धन हानि	हानि	शोक	धनलाभ	शत्रुवृद्धि	दुःख	कष्ट	अशान्ति	धनलाभ	दुःख	कृतता	धनलाभ

आर्द्रा प्रवेश लग्न



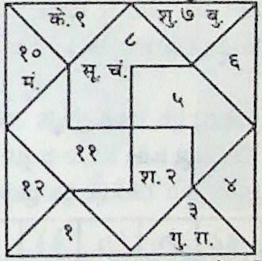
आर्द्रा प्रवेश- २१ जून रात्रि घं. २६ मि. ४२ सन् २००१ ई. आषाढ़ कृष्ण अमावस्या गुरुवार को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में मेष लग्न के समय प्रवेश करेगा। लग्न में शुक्र स्थित होकर सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखरहा है। अतः भारत में पूर्व एवं पश्चिमी भागों में वर्षा पर्याप्त होगी। दशम स्थान का अधिपति शनि बुध के साथ स्थित है अतः दक्षिणी भागों में तेज हवाओं एवं चक्रवात आने से जन धन की हानि होगी। लग्नेश का अष्टमस्थ होना हानि को बढ़ाने वाला है। चतुर्थ भाव में जलचर राशि स्थिति है एवं इस राशि का अधिपति शुभ एवं पाप ग्रहों के साथ है अतः अतिवर्षण; अल्पवर्षण एवं पर्याप्त वर्षा उत्तर के भागों में अलग-अलग स्थानों पर होगी।

शारदीय सस्य कुंडली



शारदीय सस्य- दिनांक १४ मई सोमवार को रात्रि ८ बजकर ३५ निट पर सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। लग्नाधिप शुक्र उच्च का रोगाधिप भी होकर लाभस्थ है एवं द्वितीय भाव में राहु स्थित होकर अष्टमस्थ भौम से भी दृष्ट होने के कारण शारदीय फसलों की कीट एवं रोगों प्राकृतिक प्रकोपों से बहुत हानि होने का योग है। लग्न में पाप ग्रह के साथ शुभ ग्रह भी स्थिति है जिससे धान्यों की हानि के साथ धान्यों की निष्पति भी होगी। केन्द्र में चतुग्रही योग कहीं बाढ़ जलप्लावन तूफान ओलावृष्टि से फसल की भारी तबाही करेगा। फलस्वरूप कुछ भागों में अन्न की भारी कमी होगी एवं खाद्यान्न की आपूर्ति करने के लिए विशेष व्यवस्था की आवश्यकता समझी जायेगी।

ग्रीष्म सस्य कुंडली



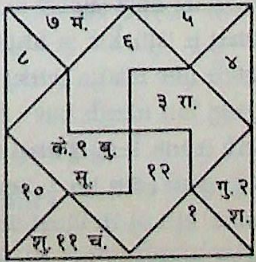
ग्रीष्मसस्य- दिनांक १६ नवम्बर शुक्रवार सन् २००१ ई. को दिन में ९ बजकर ५६ मिनट पर सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। केन्द्र में चन्द्रमा नीच का हीन बली है क्योंकि सूर्य के सान्निध्य में है तथा शनि से पूर्ण दृष्ट है तथा शनि केन्द्र में भी है अतः केन्द्र स्थान पाप ग्रह के प्रभाव में है जिससे ग्रीष्म ऋतु के धान्यों की प्राकृतिक प्रकोपों कीटों, रोगों असमयवर्षण, ओलावृष्टि आदि से हानि होगी। सूर्य से द्वादश भाव में बुध एवं शुक्र शुभ ग्रहों के भी स्थित होने से ग्रीष्म धान्यों की पैदावार प्राकृतिक प्रकोपों के होने पर भी पर्याप्त होगी।

"अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव व वा स्थितयोः।
व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्टया"

जहाँ एक ओर लग्नाधिप मंगल उच्चस्थ होने से धान्यों की निष्पति बढ़ाने वाला है तो दूसरी ओर सप्तमस्थ शनि धान्य की उत्तम पैदावार को नष्ट करने वाला भी है "पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति" इसी प्रकार द्वितीय भाव पर केतु की स्थिति एवं उस पर अष्टमस्थ गुरु की सप्तम दृष्टि कुछ भागों में पहली बुवाई की पौध की नष्ट कर दुबारा बीज बोने को बाध्य करेगी तथा धान्य की निष्पति पर्याप्त होगी।

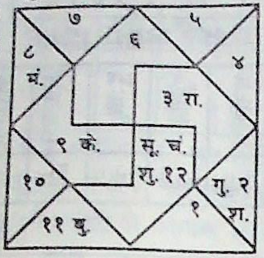
यूरोपीय राष्ट्र-दिनांक १ जनवरी का प्रवेश कन्या लग्न के समय हो रहा है। वर्ष प्रवेश के समय लग्नाधिपति चतुर्थ भावस्थ होकर सूर्य एवं केतु के साथ है। लग्नाधिप एक ओर तो केतु के साथ अंशों की निकटता लिये हुये है तो दूसरी ओर वह सूर्य के सानिध्य से अस्त हो रहा है जिससे यूरोप के कुछ देश इस वर्ष समस्या ग्रस्त होंगे, क्योंकि लग्नाधिप अस्त है अतः समस्या गम्भीर प्रकार की होगी जिससे भारी अशान्ति का वातावरणा बनेगा तथा भय व्याप्त होगा। कुटुम्बाधिपति छठे भाव में स्थित है एवं अष्टमाधिपति कुटुम्बभाव में स्थित हो गया है जिससे यूरोप के कुछ भाग युद्ध या किसी अन्य प्राकृतिक आपदा या आतंकवाद से बहुत अधिक

यूरोपीय राष्ट्रों की कुंडली १/१/२००१
(रात्रि घं. ० मि. ०)



प्रभावित होंगे जिससे जन धन की भारी हानि एवं लोगों का पलायन भी सुरक्षा की दृष्टि से होगा क्योंकि शनि-मंगल का षडष्टक योग भी विद्यमान है अतः यूरोपीय देशों में भारी अशान्ति का वातावरण रहेगा तथा शान्ति के प्रयास सफल नहीं होंगे। कुछ देशों की आर्थिक स्थित डांवाडोल होगी। एवं व्यापारिक हितों को क्षति पहुंचेगी। तृतीयेश द्वितीय भाव में स्थित है, तथा शनि से षडष्टक बना रहा है जिससे कुछ पड़ौसी देशों से संबंध गम्भीर स्तर तक बिगड़ेंगे तथा कुछ बड़ी विमान दुर्घटना, बम्बविस्फोट, अग्निकांड आतंकवादी कार्यवाही का प्रभाव बढ़ेगा। जिससे चिन्ता एवं भय व्याप्त होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति नवम में स्थित है तथा विपरीत प्रकृति के ग्रह के साथ स्थित है अतः राजनीतिक दृष्टि से कहीं आन्तरिक टकराव सत्तासंघर्ष एवं राजनीतिक अस्थिरता जन्म लेगी। पंचमेश षष्ठेश एक ही ग्रह के होने से शासन तन्त्र की विचार धारा दूषित होगी तथा बच्चों के प्रति अपराधों की संख्या में तेजी से वृद्धि होगी एवं बाल शोषण की घटनायें चिन्ता का कारण बनेंगी तथा बालरोग भी इस वर्ष अधिक होंगे। सप्तमाधिप के नवमस्थ होने से व्यापारिक दृष्टि से यथा स्थिति बनी रहेगी। शनि के प्रभाववश कुछ देशों के व्यापारिक हितों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। द्वादशेश के चतुर्थस्थ होने एवं लाभेश के छठे भाव में होने से कुछ यूरोपीय देश आर्थिक दृष्टि से संकटापन्न होंगे एवं अपने यहाँ राजनीतिक स्थिरता बनाये रखने के लिए कड़े प्रयास करने पड़ेंगे।

मुस्लिम राष्ट्रों की कुं.



मुस्लिम राष्ट्र-दिनांक २६ मार्च २००१ ई. को सूर्यास्त समय कन्या लग्न के समय चन्द्रदर्शन होगा। लग्नाधिप बुध छठे स्थान में स्थित है तथा उस पर शनि की दशम दृष्टि एवं भौम की भी अष्टमेश होकर पूर्ण दृष्टि होने से लग्न अत्यधिक पीड़ित हो गया है जिससे यह वर्ष मुस्लिम राष्ट्रों के लिए शुभ नहीं है। गुरु की लग्न पर पूर्ण पंचम दृष्टि कुप्रभाव को कुछ कम करने वाली है। तृतीयाधिपति के अष्टमाधिपति भी होने से कुछ राष्ट्रों में आन्तरिक सत्ता संघर्ष एवं रक्तपात होगा तथा भय व्याप्त होगा। किसी राष्ट्र का पड़ौसी राष्ट्र से सैनिक टकराव उग्ररूप धारण कर ले तो कोई आश्चर्य नहीं तथा परिणाम स्वरूप व्यापक जनधन हानि होगी क्योंकि पड़ोसी देश का प्रतिनिधिग्रह शनि के साथ समसप्तक योग भी बना रहा है शनि शत्रु स्थान का प्रतिनिधि होकर पड़ौसी देश के प्रतिनिधि ग्रह से पूर्ण दृष्टि संबंध बना रहा है। केवल गुरु ही लग्न व तृतीय भाव को देखकर स्थिति को सम्भालने का प्रयास कर रहा है कुटुम्बाधिपति शुक्र जो कि स्वयं उच्च का होकर सप्तमस्थ है द्वादशेश सूर्य के साथ अंशों की निकटता लिए हुए होकर वृद्धत्व को प्राप्त होकर निष्क्रियता की ओर अग्रसर है अतः मुस्लिम राष्ट्रों की प्रगति में बाधक बन गया है तथा कुछ राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव शुक्र वशात् पड़ेगा। चतुर्थ स्थान में केतु की स्थिति भी चिन्ता व भय बढ़ाने वाली है। पंचमेश शनि त्रिकोण में स्थित होकर शुभ ग्रह गुरु के साथ स्थित है किन्तु भौम से दृष्ट होने के कारण युद्ध प्रिय नीति पर चलने को बाध्य कर रहा है। अतः मुस्लिम राष्ट्र किसी समस्या विशेष को सुलझाने में अड़ियल रवैया अपनायेंगे। जिसके परिणाम आगे सुखद नहीं होंगे एवं विश्व शान्ति के प्रयास विफल होंगे। सप्तमाधिप के शत्रु राशि में स्थित होने से मुस्लिम राष्ट्रों की विदेश नीति त्रुटिपूर्ण होगी। सूर्य के द्वादशेश होकर सप्तमस्थ होने से व्यापारिक हितों को आघात पहुंचेगा तथा दशम स्थान में राहु की स्थिति तथा दशमेश का छठा होना कुछ शासकों को पदच्युत करेगा एवं सत्तासंघर्ष बढ़ायेगा। संघट्ट चक्र में टकराव का पूर्ण योग न बनने के कारण शान्ति प्रयासों को बल मिलने की भी कुछ सम्भावना है।

विंशोत्तरी मत से आय व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

योगिनी मत से आय व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृशि.	धनु.	मक.	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११

आय-व्यय देखने की विधि- आय-व्यय के दोनों अंकों को जोड़कर एक घटावें और आठ का भाग देकर यदि १, २, ६, ७, शेष रहें तो उस वर्ष में अच्छा लाभ होगा और यदि ३, ४, ५, ० शेष रहें तो लाभ कम खर्च अधिक होगा तथा अनेक प्रकार की चिन्ताएं उपस्थित होंगी।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार- जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो लग्न से और चंद्रमा बलवान हो तो जन्म राशि से जगल्लग्न जिस स्थान से आये वह भाव स्वस्वामी शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट बलवान हो तो उस भाव की वृद्धि होती है। यदि वह भाव पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है। जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से यदि वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें बारहवें हो तो उस व्यक्ति के लिए वह वर्ष शुभ लाभ फल प्रद नहीं होता।

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र



पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

संवत् २०५८ वि. (सन् २००१-२००२ ई.) की ग्रह परिषद् का विचार

संसार की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का दिग्दर्शन

दिग्दर्शक- सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हि.प्र.)

श्री विनोद बिजल्वाण, ऋषिकेश (उ.प्र.)

- विश्व में अशान्ति व्यापेगी, प्राकृतिक प्रकोपों, क्षेत्रीय विवादों, हिंसा, सशस्त्र संघर्ष, विग्रह से व्यापक क्षति के संकेत हैं।
- धार्मिक कट्टरवाद उलझनपूर्ण समस्याओं का सृजन करेगा। कृषि उपज की हानि अन्न संकट का कारण बनेगी।
- आन्तरिक व बाह्य शत्रु प्रधान शासक की शिरोवेदना का कारण बनेंगे। सत्ता संचालन का मार्ग अधिकाधिक कंटकाकीर्ण होगा।
- शासन की आर्थिक नीति से जन असंतोष भड़केगा। रुपये की क्रयशक्ति ह्रासमान तथा मंहगाई की सुरसा विशाल रूप लेगी।
- पड़ौसी शत्रु देश द्वारा प्रायोजित आतंकवाद व्यापक रक्तपात का जनक बनेगा। जनता त्रस्त होगी।
- सड़क, रेल, यान दुर्घटनाओं, अग्निकांडों, बम विस्फोटों से भयंकर जनधन की क्षति।
- आगामी वर्षों में यदि सरकार निष्क्रिय रही तो बरोजगारी, सामाजिक विघटन, असन्तोष की जनक बनेगी।
- औषधि विज्ञान, आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों को विशेष उपलब्धि प्राप्त होने के योगायोग।
- राजकोष का बड़ा भाग विकासेतर कार्यों में व्यय होने से योजना व्यय में कटौती के लिए शासन विवश।
- संसद में सरकार तथा विपक्ष में टकराव, तीव्र वाक्युद्ध से शासनाध्यक्ष की शिरोवेदना में वृद्धि व सरकार को अस्थिर करने के गम्भीर प्रयास होंगे।
- विश्व में भारत की प्रतिष्ठा तथा गौरव बढ़ेगा।
- वर्तमान प्रधानमन्त्री पाँच वर्ष के पूर्ण काल तक सत्तारूढ़ नहीं रह पायेंगे।
- कुछ महत्व के संविधान संशोधन तथा नये कानून बनेंगे। महिलाओं के प्रभाव में वृद्धि के संकेत।

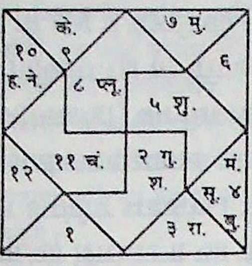
स्वतन्त्रता का ५४वाँ वर्ष

इस वर्ष वृश्चिक लग्न के समय ५४वाँ वर्ष आरम्भ हो रहा है। वर्ष लग्न के फलित विश्लेषण में मुंथा का विशेष महत्त्व माना गया है। इस वर्ष मुंथा वर्ष लग्न से द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भावस्थ मुंथा का फल ताजिक शास्त्र में इस प्रकार कहा है-

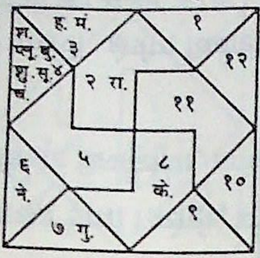
"व्ययोधिको दुष्ट जनैश्च संगो रुजातनौ विक्रमतोप्यसिद्धिः।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदास्या ज्जनतोऽपिवैरम्।।"

अर्थात् व्यय की अधिकता हो एवं दुष्ट मनुष्यों की संगति मिले शरीर में रोग हो एवं परिश्रम का फल न मिले, धर्म एवं धन की हानि हो एवं सज्जनों से दूरी बढ़े। किसी राष्ट्र के सन्दर्भ में लगभग यही रूप फलितार्थ होता है अतः मुंथा की स्थिति के फलस्वरूप आन्तरिक समस्यायें अधिक होंगी, राजकोष की स्थिति संतोष जनक नहीं होगी, योजना व्यय में कटौती करनी पड़ेगी, पड़ौसी देशों का व्यवहार शत्रुतापूर्ण होगा एवं योजना व्ययों में अनुमान से अधिक खर्चा होगा तथा रोगों, प्राकृनिक प्रकोपों एवं आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी फलस्वरूप अपव्यय की अधिकता होगी। धन भाव में केतु की स्थिति तथा अष्टम में राहु की स्थिति भी प्रतिकूल फल देने वाली ही है क्योंकि द्वितीयेश शत्रु राशि का बैठा है तथा अष्टमेश सूर्य के सानिध्य से अस्त है। लग्नाधिप भी नीच का होकर बलहीन है। अतः यह वर्ष समस्याओं से घिरा हुआ होगा। जन्मकालिक दशाओं का अवलोकन करें तो भी स्थिति प्रतिकूल ही दिखाई दे रही है। सन् १९८९ से विंशोत्तरी में शुक्र की महादशा चल रही है तथा शुक्र शत्रु स्थान का अधिपति भी है जिससे यह पूरी अवधि, शत्रु से पीड़ा आतंकवाद के रूप में दे रही है। वर्तमान में गुरु की अन्तर्दशा अष्टमेश की होने से जनता के लिए कष्टदायी ही है। अष्टमेश का छठा होना कष्टकारक माना जाता है। शुक्र जिसकी महादशा चल रही है सूर्य के साथ होने से अस्त है। अतः यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से विषम स्थिति वाला ही है क्योंकि राजकोष का स्वामी भी अस्त है, धन स्थान भी केतु युक्त है एवं मुंथा तो बारहवें भाव में स्थित है ही अतः जनता को मंहगाई, बेरोजगारी एवं आतंकवाद की मार झेलनी पड़ेगी। दशम भाव में द्वादशाधिपति शुक्र की स्थिति संसद में सरकार को प्रबल विरोध का सामना कराकर विचित्र स्थिति में डालेंगी। विरोधी पक्ष मजबूत होगा क्यों कि विरोधी पक्ष का प्रतिनिधि

स्वतन्त्रता का ५४ वाँ वर्ष



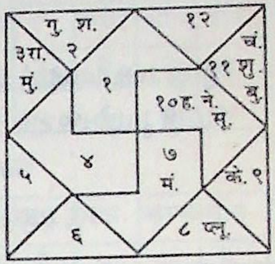
स्वतन्त्र भारत की कुंडली



ग्रह मित्र राशि में बैठा है एवं तृतीय दृष्टि से सत्ता पक्ष के ग्रह को हानि पहुंचा रहा है तथा सत्तापक्ष का स्वामी चर राशि में भी है अतः सत्ता पक्ष को सत्ता में बने रहने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। निष्कर्ष रूप में यह वर्ष सरकार के लिए भारी विरोधवाला एवं बहुत विपरीत स्थिति वाला होगा। क्योंकि सत्ता पक्ष का प्रतिनिधि ग्रह शत्रु भाव के स्वामी एवं अष्टम् भाव के स्वामी के साथ स्थित हो गया है। एवं राज्येश शनि से भी दृष्ट हो गया है अतः यह ग्रह स्थिति सत्तापक्ष के परिवर्तन का भी संकेत दे रही है। कर्म की प्रधानता सर्वत्र है अतः यदि सत्तापक्ष को सत्तारुढ़ रहना है तो बाधक ग्रहों के निवारणार्थ उनसे सम्बंधित कर्म मंहगाई, बेरोजगारी एवं आतंकवाद से जनता को छुटकारा दिलाने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होकर सरकार को कार्य करना होगा।

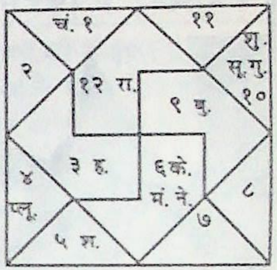
भारतीय गणतन्त्र का ५२ वाँ वर्ष

शुक्रवार २६ जनवरी सन् २००१ ई. को दिन में १२ बजकर ०५ मिनट पर मेष लग्न में भारतीय गणतन्त्र के ५२ वें वर्ष का प्रवेश होगा। **गणतंत्र के ५२ वें वर्ष की कुं**



इस वर्ष मुंथा तृतीया भावस्थ है। ताजिक शास्त्र में तृतीयस्थ मुंथा का फल शुभ लिखा है। साथ ही यह भी लिखा है कि अपने पराक्रम से यश, धन व सुख प्राप्त हो। अर्थात पराक्रम की आवश्यकता है अतः स्पष्ट है कि शत्रु बाधा रहेगी। वैसे भी जो ग्रह तृतीयेश है वही षष्ठेश भी है अतः पड़ौसी राष्ट्र शत्रुवत कार्यवाही करता रहेगा तथा आतंकवाद को बढ़ावा देकर अशान्ति उत्पन्न कर राष्ट्र की प्रगति में बाधा उत्पन्न करेगा। जो ग्रह लग्न का अधिपति है वही ग्रह अष्टम स्थान का भी अधिपति है जिससे लग्न पीड़ित हो गया है अतः आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड एवं दुर्घटनाओं में वृद्धि से लोगों में भय व्याप्त होगा। तृतीयेश तथा शत्रु स्थान का अधिपति जो कि मुंथा का भी अधिपति है कुटुम्ब भावस्थ शनि से दृष्ट होने से मिश्रित फलदायक है। कुटुम्ब स्थान में गुरु एवं शनि स्थित हैं कुटुम्बेश लाभस्थ है। कुटुम्ब स्थान में दो विपरीत प्रकृति के ग्रहों के होने से साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने में बाधा उत्पन्न होगी। कुटुम्ब स्थान अष्टमेश द्वारा दृष्ट होने से कहीं जातीय हिंसा से भारी रक्तपात भी सम्भव है। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि आतंकवादी गतिविधियों, अग्निकाण्ड, बम्बविस्फोट, दुर्घटनाओं से लोगों में भयव्याप्त हो एवं अशान्ति का वातावरण बढ़े। कुटुम्बेश के लाभस्थ होने से यह भी

भारतीय गणतन्त्र की कुं.



अभिप्राय है कि जनता पर करों का भार बढ़ेगा अर्थात् शासन जनता पर कर लगाकर अपनी (राष्ट्र की) आय बढ़ायेगा जिसके फलस्वरूप विरोध-प्रदर्शन होंगे एवं अशान्ति बढ़ेगी। चतुर्थ भाव जो कि सुख शान्ति कृषि, कृषि योग्य भूमि, एवं सम्पत्ति को दर्शाता है, की स्थिति भी सन्तोष जनक नहीं है क्योंकि शनि की तृतीय दृष्टि चतुर्थ भाव पर है यद्यपि तृतीय भाव पर गुप्त मित्र दृष्टि है किंतु इसी नियम से चतुर्थेश पर शत्रु दृष्टि होने से अशान्ति का वातावरण बनेगा। कुछ भागों में कृषि की भारी हानि प्राकृतिक कारणों से होगी। तथा कृषि योग्य भूमि तथा रिहायशी भूमि की भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि लोगों के किसी स्थान विशेष से प्राकृतिक प्रकोप के कारण पलायन का संकेत भी कर रही है। पंचम भाव से मूल रूप से शिक्षा का स्तर व शासन तन्त्र की विचार धारा का पता चलता है। पंचमाधिप शत्रु राशि में स्थित है शुभ ग्रहों बुध-शुक्र चन्द्र से दृष्ट होने से मिश्रित प्रभाव पड़ रहा है। पंचमेश की स्थिति शासन तन्त्र की विचार धारा पर विपरीत प्रभाव डालेगी जिससे सही लाभप्रद व सामाजिक उत्थान की योजनाओं का क्रियान्वयन त्रुटिपूर्ण होगा। शुभ ग्रहों से दृष्ट होने के कारण बालक-बालिकाओं के लिए तथा शिक्षा के लिए कुछ नवीन योजनाएं सामने आयेंगी। परिवार कल्याण के कार्यक्रमों पर जोर दिया जायेगा किन्तु उसका क्रियान्वयन ठीक प्रकार से नहीं होगा। षष्ठेश की लाभ स्थान में स्थिति बाल रोगों की ओर संकेत दे रही है। क्योंकि छठा भाव रोग एवं शत्रु का संकेत करता है अत: बुध बालकों को विशेष प्रकार से रोगों से पीड़ित करेगा। कहीं बाल रोग महामारी का रूप ले ले तो कोई आश्चर्य नहीं। शत्रु कृत बाधा तो प्रारम्भ से ही है तथा शत्रु भाव का अधिपति शत्रु से समस्यायें भी उत्पन्न करायेगा। प्रादेशिक विवाद भी उत्पन्न करेगा। सप्तम भाव विदेशों से सम्बन्ध, विदेश व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को दर्शाता है। जहां एक ओर सप्तमेश लाभस्थ होने से शुभ संकेत दे रहा है वहीं अष्टमेश की सप्तम भाव में स्थिति अशुभ संकेत भी दे रही है। जहां कुछ क्षेत्रों में विदेश व्यापार के नये अवसर प्राप्त होंगे वहीं कुछ क्षेत्रों में मंगल के कारण विदेश व्यापार पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार कुछ राष्ट्रों से अन्तर्राष्ट्रीय संबंध बहुत अच्छे होंगे तो कुछ से संबंधों में विशेष अवरोध होगा। इस वर्ष तलाकों में विशेष वृद्धि होगी। यहाँ गणतन्त्र की कुण्डली का विश्लेषण सामान्य दृष्टि से किया गया है विशेष प्रभाव वर्ष प्रवेश चक्र का ही पड़ता है। राज्येश लाभेश धर्मेश के द्वितीयस्थ होने से कुछ समस्यायें राज्यकार्य संचालन में प्रधानशासक के सामने आयेंगी। क्योंकि गुरु जो कि धर्मेश है कर्मेश से स्वभाव में एकदम भिन्नता लिए हुए है। तथा धर्म स्थान में केतु की स्थिति कुछ व्यवधान का संकेत भी कर रही है। भारतीय गणतन्त्र की जन्मकालीन कुण्डली के अनुसार अभी राहु की महादशा चल रही है। राहु लग्नस्थ होने से विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न करने वाला है जनता में अशान्ति, अत्याचारों व अन्याय में वृद्धि चोरी, डकैती व हत्याओं में वृद्धि राहु के लग्नस्थ होने से हो रही है। शनि का अन्तर वर्तमान में चल रहा है। शनि के छठे भाव में होने से शत्रु कृत बाधा सन् २००१ ई. के मध्य तक विशेष रहेगी। यही शनि शत्रु को अपनी दृष्टि से निर्बल करेगा। व्यय भाव पर स्वगृही पूर्ण दृष्टि योजनाओं में अपव्यय को बढ़ाने वाली है साथ ही आय का स्वामी भी होने से राजकोष पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अत: योजना व्यय में कटौती एवं वित्तीय अनुशासन ही एक मात्र विकल्प है।

ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ५६ वर्षों से इस पंचांग में यह स्तम्भ लिखा जा रहा है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के संबंध में जो भी भविष्यवाणी की गयी हैं, वे अधिकांश में सत्य सिद्ध हुई हैं। इसके साक्षी "श्रीविश्वविजयपंचांग" के विज्ञ वाचकवृंद दे रहे हैं। दैवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलौपैथी डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष-विज्ञान के गणित-विज्ञान ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों के स्पर्श मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है उसमें एक मिनट का भी अंतर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित ज्योतिष को 'दैव-विद्या' कहा गया है, इसलिए राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी करने वाले को "दैवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव-विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनहीन दैवज्ञ भी मनुष्य है सर्वज्ञ निर्भान्त नहीं, अत: उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रहगति रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सत्य ही हो- यह नहीं कहा जा सकता। मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इसका निरीक्षण-परीक्षण अवश्य होना चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिए। आज तक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब तक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे प्रगति क्यों न की हो पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन नहीं है। अत: इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्च राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। श्री नेहरू जी और स्वर्गीया प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी एकाधिक बार दैवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद हैं, किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नतमस्तक होते हैं वे सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते।" इस पर सर्वसाधारण जनता को इनके दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा, अस्तु।

मोदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखाएं हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको गुरु से जैसा ज्ञान मिलता हो- निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह-मिहिराचार्य कृत 'वाराही-संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है, इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त वक्रमार्ग, ग्रहों के विशेष योग और विश्व में कहाँ पर शांति और कहाँ अशांति रहेगी, इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्रचक्र, कर्पूरचक्र, कूर्मचक्र और नरपतिजयचर्या का संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, झंझावातादि के लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्हीं को आधार मानकर जो कुछ इस पंचांग में लिखा जा रहा है वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान एकत्र होकर सामूहिक निर्णय दें, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिए ग्रहों की राश्यंशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है अत: यहाँ प्रमुख ग्रहों की स्थिति का वर्षारंभ और वर्षांत का उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष संवत् २०५८ वि. में ग्रह स्थिति

नये वर्ष संवत् २०५८ वि. (२६ मार्च २००१ ई. से १२ अप्रैल २००२ ई.) में प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रापक्षीय निरयण मान से इस प्रकार है-

	चैत्र शुक्ल १ दि. २६ मार्च २००१ ई.						चैत्र कृ. ३० दि. १२ अप्रैल २००२ ई.					
प्रमुख ग्रह	राशि	अं.	क.	मार्गी वक्री	उदय अस्त	नक्षत्र	राशि	अं.	क.	मार्गी वक्री	उदय अस्त	नक्षत्र
शनि	वृष	३	१९	मार्गी	उदय	कृतिका	वृष	१७	३३	मार्गी	उदय	रोहिणी
गुरु	वृष	१२	४३	मार्गी	उदय	रोहिणी	मिथुन	१४	२२	मार्गी	उदय	आर्द्रा
मंगल	वृश्चि.	२४	३१	मार्गी	उदय	ज्येष्ठा	वृष	४	५५	मार्गी	उदय	कृत्तिका
हर्षल	मकर	२९	२१	मार्गी	उदय	धनिष्ठा	कुंभ	३	५३	मार्गी	उदय	धनिष्ठा
नेप्च्यून	मकर	१४	२१	मार्गी	उदय	श्रवण	मकर	१६	४९	मार्गी	उदय	श्रवण
वेंकटेश	वृश्चि.	२१	२७	मार्गी	उदय	ज्येष्ठा	वृश्चि.	२३	४७	वक्री	उदय	ज्येष्ठा
राहु	मिथुन	१७	२२	वक्री	अस्त	आर्द्रा	वृष	२७	७	वक्री	अस्त	मृगशिर
केतु	धनु	१७	२२	वक्री	अस्त	पू.षा.	वृश्चि.	२७	७	वक्री	अस्त	ज्येष्ठा

गुरु- वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि में है तथा १६ जून को गुरु मिथुन राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त में मिथुन राशि में ही रहेगा। ३ नवम्बर को वक्री तथा २ मार्च को गुरु मार्गी होगा।

शनि- पूरे वर्ष में शनि वृष राशि में रहेगा। २७ सितम्बर को वक्री तथा ८ फरवरी को मार्गी होगा।

मंगल- वर्षारम्भ में मंगल वृश्चिक राशि में रहेगा। १० अप्रैल को धुन राशि में। १० जून को वक्र गति द्वारा वृश्चिक राशि में। २६ अगस्त को धनु में। १८ अक्टूबर को मकर में। ३० नवम्बर कुम्भ में। १० जनवरी मीन में। २१ फरवरी मेष में तथा ४ अप्रैल को वृष में मंगल प्रवेश करेगा। ११ मई को वक्री तथा १९ जुलाई को मार्गी होगा।

राहु-केतु- वर्षारम्भ में राहु मिथुन में तथा केतु धनु में रहेगा। १६ फरवरी से वक्र गति द्वारा राहु वृष में तथा केतु वृश्चिक में प्रवेश करेगा।

हर्षल- वर्षारम्भ में हर्षल मकर राशि में तथा १० अप्रैल से कुम्भ में। १९ जुलाई से वक्र गति द्वारा मकर में। २८ जनवरी से पुन: कुम्भ में। २९ मई को हर्षल वक्री एवं ३० अक्टूबर को मार्गी होगा।

नेपच्यून- पूरे वर्ष नेपच्यून मकर राशि में रहेगा। ११ मई को नेपच्यून वक्री तथा १८ अक्टूबर को मार्गी होगा।

वेंकटेश- पूरे वर्ष प्लूटो (वेंकटेश) वृश्चिक राशि में ही रहेगा। १८ मार्च को वक्री एवं २३ अगस्त को मार्गी होगा।

कुछ मुख्य अशुभ योग- वर्षारम्भ के पहले से ही शनि-मंगल का समसप्तक योग तथा गुरु-शनि की एक राशि में युति, वैशाख कृष्ण पक्ष १० अप्रैल से शनि-मंगल का षडष्टक योग, ज्येष्ठ कृष्ण में चर्तुग्रही योग, ५ जुलाई को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, श्रावण कृष्ण पक्ष में चर्तुग्रही योग, भाद्रपद कृष्ण पक्ष तक शनि मंगल का समसप्तक, भाद्रपद शुक्ल से १८ नवम्बर तक शनि मंगल का षडष्टक योग, कार्तिक कृष्ण में चर्तुग्रही योग, मार्गशीर्ष शुक्ल में पुन: चर्तुग्रही योग, पौष कृष्ण में पुन: चर्तुग्रही योग, माघ शुक्ल से शनि मंगल का द्विर्द्वादश तथा चैत्र कृष्ण में शनि-मंगल-राहु की एक ही राशि में स्थिति।

कुछ अन्य अशुभ योग- ज्येष्ठ मास में पांच मंगलवार, भाद्रपद में पाँच रविवार, अधिक आश्विन में पाँच मंगलवार तथा भौमवारी अमावस्या, मार्गशीर्ष में पाँच शनि का रविवार, माघ में पाँच मंगलवार।

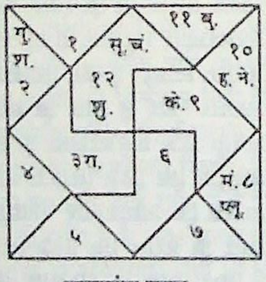
वर्ष सन् २००१-२००२ ई.

ज्योतिष के आधार पर आपके प्रिय इस 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में की गयी सैकड़ों भविष्यवाणियाँ अक्षरश: सत्य सिद्ध हो चुकी हैं। वि० सं० २०५७ के पंचांग पृष्ठ ३४ में लिखा गया था कि-'लग्नाधिप के रोगाधिप भी होने से लग्न पीड़ित हो गया है अत: यह वर्ष किसी सुखद स्थिति का संकेत नहीं दे रहा है। प्रधान शासक का

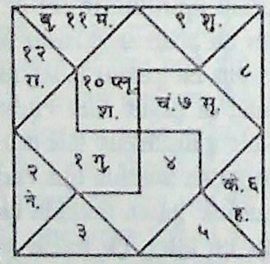
शासन मार्ग कंटकाकीर्ण हो गया है। स्वयं अपने ही लोग बाधा उत्पन्न करेंगे। प्रधान शासक को आन्तरिक एवं बाह्य दो प्रकार के प्रतिरोधों-विरोधों का सामना करना पड़ेगा।' लग्नाधिप का विचार करते हुए आगे लिखा गया था-'प्रधान शासक विपरीत स्वास्थ्य के कारण अपनी सामर्थ्य के अनुरूप कार्य नहीं कर पायेगा।' प्रधान मन्त्री के घुटनों की शल्य चिकित्सा इसका प्रमाण है तथा इनकी ही सरकार के सहयोगी मन्त्रियों ने इस्तीफा देकर परेशानी उत्पन्न की। आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए पृष्ठ ३५ में स्पष्ट लिखा गया-'कठोर कदमों, उपायों के अभाव में स्थिति बहुत खराब होती दिख रही है। भुगतान संतुलन बनाने के लिए कड़े वित्तीय उपायों के अलावा शासक वर्ग के पास दूसरा मार्ग नहीं होगा। फलस्वरूप जनता में असन्तोष की लहर दौड़ेगी। सामान्य लोगों को आर्थिक उपायों, कठोर वित्तीय नियमों की मार को झेलना पड़ेगा तथा मंहगाई पर नियन्त्रण करना एक बड़ी समस्या बनेगी। राजकोषीय घाटा कम नहीं हो पायेगा किन्तु घाटा कम करने के उपायों के परिणामस्वरूप अशान्ति बढ़ेगी।' तेलपूल घाटे को कम करने के लिए सरकार ने रसोई गैस की कीमतों एवं पैट्रोल की कीमतों में वृद्धि की है जिससे सामान्य जनों में भारी असन्तोष है। आतंकवाद के विषय में लिखा गया था-'शनि के राशि परिवर्तन के अभाव में तृतीयेश शनि ही है तथा नीच का है, मारकाधिप गुरु साथ में आ गया है। अतः पड़ौसी को अधिक क्षति उठानी पड़ेगी। किन्तु पड़ौसी के षडयन्त्र वर्ष के पूर्वार्द्ध में पुनः प्रभावी होंगे। पड़ौसी की नीच प्रवृत्ति में मंगल अंकुश लगायेगा किन्तु गुरु प्रेरक का काम कर रहा है अतः आतंकवादी गतिविधियों में स्थायी कमी नहीं होगी तथा आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्र का दायरा बढ़ेगा तथा आतंकवाद पर वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ नियन्त्रण होगा।' यहाँ पर कुछ पंक्तियाँ ही उद्धृत की गयी हैं। जिस प्रकार कारगिल जैसे युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी २०५६ के विश्वविजय पंचांग में की गयी थी वैसी ही आर्थिक क्षेत्र की स्पष्ट भविष्यवाणी २०५७ विक्रम संवत् के श्री विश्वविजय पंचांग में की गयी है। डालर के मुकाबले रुपये की गिरती कीमत से विदेशी कर्ज का भार बढ़ रहा है। इस विषय पर आगे विश्लेषण में लिखा गया है। आगामी संवत् २०५८ विक्रम संवत् का आरम्भ दिनाँक २५ मार्च सन् २००१ ईस्वी रविवार प्रातः ६ बजकर ५१ मिनट पर मीन लग्न के मकर नवमांश में हो रहा है। ग्रह स्थिति किसी शुभ स्थिति का संकेत नहीं दे रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के सन्दर्भ में जगत् लग्न का विश्लेषण विश्व में अशान्ति के वातावरण को जन्म देने वाला है। जगत् लग्न का स्वामी गुरु छठे भाव में स्थित होकर विश्व को रोगों, प्राकृतिक प्रकोपों से पीड़ित कर रहा है तथा छठे भाव में ही मित्राधिपति का भी स्थित होना, राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव डालकर शस्त्रास्त्रों की प्रतिद्वंद्विता को बढ़ा रहा है। पुनः शत्रु स्थान का अधिपति भी उच्च का होकर चतुर्थ भाव में स्थित होने से क्षेत्रीय विवादों एवं आवासीय समस्याओं को जन्म देने वाला है। अष्टमेश की लग्न में पाप ग्रहों के साथ स्थिति शस्त्रास्त्रों के संग्रह को बढ़ावा देने वाली है। जगत् लग्न चक्र की ग्रहस्थिति कुछ इस प्रकार की बन गयी है कि विश्व के किसी भाग में कोई भयंकर टकराव या राष्ट्रों में परस्पर युद्ध हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि लग्नेश तृतीयेश चतुर्थेश षष्ठेश का परस्पर सम्बन्ध यही दर्शा रहा है। चतुर्थ भाव का अधिपति छठे भाव में होने से विश्व के कुछ भागों में कृषि की पैदावार प्राकृतिक कारणों, रोगों आदि से बहुत कम होगी एवं कुछ भागों की कृषि विभिन्न कारणों से नष्ट हो जायेगी अतः विश्व में खाद्य समस्या उत्पन्न होगी तथा कुछ राष्ट्र खाद्य समस्या के रहते बहुत प्रभावित होंगे। चतुर्थाधिपति छठे भाव में स्थित है जो कृषि योग्य भूमि के नष्ट होने का संकेत करता है साथ ही भौम जो कि द्वादशाधिपति भी है, चतुर्थ भाव को देखकर पुनः कृषिभूमि की हानि दर्शा रहा है। अतः कृषि उत्पादों की कमी गम्भीर स्थिति उत्पन्न न करे यह ध्यान देने योग्य है। चतुर्थ भाव सुख शान्ति का भी द्योतक है, चतुर्थेश की स्थिति विश्वशान्ति को क्षति पहुंचाने वाली है अतः अशान्ति बढ़ेगी। पंचमेश भौम के होने से जनसंख्या सीमित करने के प्रयास जोर पकड़ेंगे। राज्येश राज्य स्थान को देख रहा है किन्तु राज्येश के साथ षष्ठेश के भी होने से सत्ता संघर्ष भी कुछ राष्ट्रों में होगा। राज्येश को भी द्वादशेश पंचमेश भौम देख रहा है जो कि शनि से पहले ही अशुभकारी षडष्टक योग बनाये हुए हैं अतः सत्ता संघर्ष या सैनिक क्रान्ति या युद्ध का स्वरूप भी देखने को मिल सकता है। राज्येश षष्ठेश का सम्बन्ध होने से विरोधी एवं सत्ता पक्ष में टकराव होगा विरोधी पक्ष का साथ जनता देगी क्योंकि षष्ठेश उच्च का चतुर्थस्थ है। नवमेश उच्च का पंचमस्थ होने से धार्मिक मामले विश्वराजनीति में विशेष महत्व रख सकते हैं क्योंकि कुछ देशों, प्रदेशों में धार्मिक कट्टरवाद विशेष उलझन पूर्ण स्थिति उत्पन्न करेगा अतः विश्व शान्ति के लिए प्रतिकूल स्थिति बनेगी।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली में लग्न का स्वामी तृतीय भाव में शत्रु राशि का होकर द्वादशेश के साथ स्थित है तथा अष्टमाधिप एवं षष्ठाधिप लग्नस्थ होने से किसी अनुकूल स्थिति का संकेत नहीं दे रहे हैं। प्रधान शासक के लिए सत्तासंचालन का मार्ग कंटकाकीर्ण

नववर्ष प्रवेश कुंडली

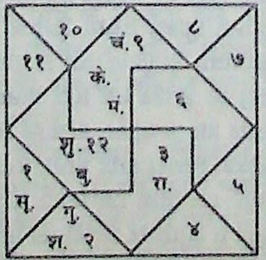


नवमांश चक्र



बल	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
इष्ट	४०	०	४६	१९	४०	५८	१२
कष्ट	१७	३२	११	३५	२०	१	४०

जगत् लग्न कुंडली



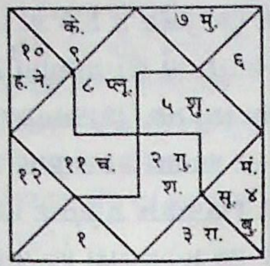
स्वतन्त्रता का ५४वाँ वर्ष

इस वर्ष वृश्चिक लग्न के समय ५४वाँ वर्ष आरम्भ हो रहा है। वर्ष लग्न के फलित विश्लेषण में मुंथा का विशेष महत्त्व माना गया है। इस वर्ष मुंथा वर्ष लग्न से द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भावस्थ मुंथा का फल ताजिक शास्त्र में इस प्रकार कहा है-

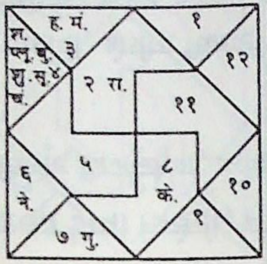
"व्ययोधिको दुष्ट जनैश्च संगो रुजातनौ विक्रमतोप्यसिद्धिः।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदास्या ज्जनतोऽपिवैरम्।।"

अर्थात् व्यय की अधिकता हो एवं दुष्ट मनुष्यों की संगति मिले शरीर में रोग हो एवं परिश्रम का फल न मिले, धर्म एवं धन की हानि हो एवं सज्जनों से दूरी बढ़े। किसी राष्ट्र के सन्दर्भ में लगभग यही रूप फलितार्थ होता है अतः मुंथा की स्थिति के फलस्वरूप आन्तरिक समस्यायें अधिक होंगीं, राजकोष की स्थिति संतोष जनक नहीं होगी, योजना व्यय में कटौती करनी पड़ेगी, पड़ौसी देशों का व्यवहार शत्रुतापूर्ण होगा एवं योजना व्ययों में अनुमान से अधिक खर्चा होगा तथा रोगों, प्राकृनिक प्रकोपों एवं आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी फलस्वरूप अपव्यय की अधिकता होगी। धन भाव में केतु की स्थिति तथा अष्टम में राहु की स्थिति भी प्रतिकूल फल देने वाली ही है क्योंकि द्वितीयेश शत्रु राशि का बैठा है तथा अष्टमेश सूर्य के सानिध्य से अस्त है। लग्नाधिप भी नीच का होकर बलहीन है। अतः यह वर्ष समस्याओं से घिरा हुआ होगा। जन्मकालिक दशाओं का अवलोकन करें तो भी स्थिति प्रतिकूल ही दिखाई दे रही है। सन् १९८९ से विंशोत्तरी में शुक्र की महादशा चल रही है तथा शुक्र शत्रु स्थान का अधिपति भी है जिससे यह पूरी अवधि, शत्रु से पीड़ा आतंकवाद के रूप में दे रही है। वर्तमान में गुरु की अन्तर्दशा अष्टमेश की होने से जनता के लिए कष्टदायी ही है। अष्टमेश का छठा होना कष्टकारक माना जाता है। शुक्र जिसकी महादशा चल रही है सूर्य के साथ होने से अस्त है। अतः यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से विषम स्थिति वाला ही है क्योंकि राजकोष का स्वामी भी अस्त है, धन स्थान भी केतु युक्त है एवं मुंथा तो बारहवें भाव में स्थित है ही अतः जनता को मंहगाई, बेरोजगारी एवं आतंकवाद की मार झेलनी पड़ेगी। दशम भाव में द्वादशाधिपति शुक्र की स्थिति संसद में सरकार को प्रबल विरोध का सामना कराकर विचित्र स्थिति में डालेंगी। विरोधी पक्ष मजबूत होगा क्योंकि विरोधी पक्ष का प्रतिनिधि ग्रह मित्र राशि में बैठा है एवं तृतीय दृष्टि से सत्ता पक्ष के ग्रह को हानि पहुंचा रहा है तथा सत्तापक्ष का स्वामी चर राशि में भी है अतः सत्ता पक्ष को सत्ता में बने रहने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। निष्कर्ष रूप में यह वर्ष सरकार के लिए भारी विरोधवाला एवं बहुत विपरीत स्थिति वाला होगा। क्योंकि सत्ता पक्ष का प्रतिनिधि ग्रह शत्रु भाव के स्वामी एवं अष्टम् भाव के स्वामी के साथ स्थित हो गया है। एवं राज्येश शनि से भी दृष्ट हो गया है अतः यह ग्रह स्थिति सत्तापक्ष के परिवर्तन का भी संकेत दे रही है। कर्म की प्रधानता सर्वत्र है अतः यदि सत्तापक्ष को सत्तारुढ़ रहना है तो बाधक ग्रहों के निवारणार्थ उनसे सम्बंधित कर्म मंहगाई, बेरोजगारी एवं आतंकवाद से जनता को छुटकारा दिलाने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होकर सरकार को कार्य करना होगा।

स्वतन्त्रता का ५४ वाँ वर्ष



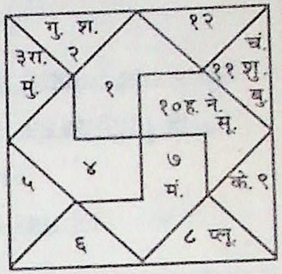
स्वतन्त्र भारत की कुंडली



भारतीय गणतन्त्र का ५२ वाँ वर्ष

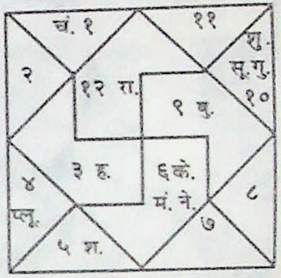
शुक्रवार २६ जनवरी सन् २००१ ई. को दिन में १२ बजकर ०५ मिनट पर मेष लंग्न में भारतीय गणतन्त्र के ५२ वें वर्ष का प्रवेश होगा।

गणतंत्र के ५२ वें वर्ष की कुं



इस वर्ष मुंथा तृतीया भावस्थ है। ताजिक शास्त्र में तृतीयस्थ मुंथा का फल शुभ लिखा है। साथ ही यह भी लिखा है कि अपने पराक्रम से यश, धन व सुख प्राप्त हो। अर्थात पराक्रम की आवश्यकता है अतः स्पष्ट है कि शत्रु बाधा रहेगी। वैसे भी जो ग्रह तृतीयेश है वही षष्ठेश भी है अतः पड़ौसी राष्ट्र शत्रुवत कार्यवाही करता रहेगा तथा आतंकवाद को बढ़ावा देकर अशान्ति उत्पन्न कर राष्ट्र की प्रगति में बाधा उत्पन्न करेगा। जो ग्रह लग्न का अधिपति है वही ग्रह अष्टम स्थान का भी अधिपति है जिससे लग्न पीड़ित हो गया है अतः आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड एवं दुर्घटनाओं में वृद्धि से लोगों में भय व्याप्त होगा। तृतीयेश तथा शत्रु स्थान का अधिपति जो कि मुंथा का भी अधिपति है कुटुम्ब भावस्थ शनि से दृष्ट होने से मिश्रित फलदायक है। कुटुम्ब स्थान में गुरु एवं शनि स्थित हैं कुटुम्बेश लाभस्थ है। कुटुम्ब स्थान में दो विपरीत प्रकृति के ग्रहों के होने से साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने में बाधा उत्पन्न होगी। कुटुम्ब स्थान अष्टमेश द्वारा दृष्ट होने से कहीं जातीय हिंसा से भारी रक्तपात भी सम्भव है। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि आतंकवादी गतिविधियों, अग्निकाण्ड, बम्बविस्फोट, दुर्घटनाओं से लोगों में भयव्याप्त हो एवं अशान्ति का वातावरण बढ़े। कुटुम्बेश के लाभस्थ होने से यह भी

भारतीय गणतन्त्र की कुं.



अभिप्राय है कि जनता पर करों का भार बढ़ेगा अर्थात् शासन जनता पर कर लगाकर अपनी (राष्ट्र की) आय बढ़ायेगा जिसके फलस्वरूप विरोध-प्रदर्शन होंगे एवं अशान्ति बढ़ेगी। चतुर्थ भाव जो कि सुख शान्ति कृषि, कृषि योग्य भूमि, एवं सम्पत्ति को दर्शाता है, की स्थिति भी सन्तोष जनक नहीं है क्योंकि शनि की तृतीय दृष्टि चतुर्थ भाव पर है यद्यपि तृतीय भाव पर गुप्त मित्र दृष्टि है किंतु इसी नियम से चतुर्थेश पर शत्रु दृष्टि होने से अशान्ति का वातावरण बनेगा। कुछ भागों में कृषि की भारी हानि प्राकृतिक कारणों से होगी। तथा कृषि योग्य भूमि तथा रिहायशी भूमि की भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि लोगों के किसी स्थान विशेष से प्राकृतिक प्रकोप के कारण पलायन का संकेत भी कर रही है। पंचम भाव से मूल रूप से शिक्षा का स्तर व शासन तन्त्र की विचार धारा का पता चलता है। पंचमाधिप शत्रु राशि में स्थित है शुभ ग्रहों बुध-शुक्र चन्द्र से दृष्ट होने से मिश्रित प्रभाव पड़ रहा है। पंचमेश की स्थिति शासन तन्त्र की विचार धारा पर विपरीत प्रभाव डालेगी जिससे सही लाभप्रद व सामाजिक उत्थान की योजनाओं का क्रियान्वयन त्रुटिपूर्ण होगा। शुभ ग्रहों से दृष्ट होने के कारण बालक-बालिकाओं के लिए तथा शिक्षा के लिए कुछ नवीन योजनाएं सामने आयेंगी। परिवार कल्याण के कार्यक्रमों पर जोर दिया जायेगा किन्तु उसका क्रियान्वयन ठीक प्रकार से नहीं होगा। षष्ठेश की लाभ स्थान में स्थिति बाल रोगों की ओर संकेत दे रही है। क्योंकि छठा भाव रोग एवं शत्रु का संकेत करता है अतः बुध बालकों को विशेष प्रकार से रोगों से पीड़ित करेगा। कहीं बाल रोग महामारी का रूप ले ले तो कोई आश्चर्य नहीं। शत्रु कृत बाधा तो प्रारम्भ से ही है तथा शत्रु भाव का अधिपति शत्रु से समस्यायें भी उत्पन्न करायेगा। प्रादेशिक विवाद भी उत्पन्न करेगा। सप्तम भाव विदेशों से सम्बन्ध, विदेश व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को दर्शाता है। जहां एक ओर सप्तमेश लाभस्थ होने से शुभ संकेत दे रहा है वहीं अष्टमेश की सप्तम भाव में स्थिति अशुभ संकेत भी दे रही है। जहां कुछ क्षेत्रों में विदेश व्यापार के नये अवसर प्राप्त होंगे वहीं कुछ क्षेत्रों में मंगल के कारण विदेश व्यापार पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार कुछ राष्ट्रों से अन्तर्राष्ट्रीय संबंध बहुत अच्छे होंगे तो कुछ से संबंधों में विशेष अवरोध होगा। इस वर्ष तलाकों में विशेष वृद्धि होगी। यहाँ गणतन्त्र की कुण्डली का विश्लेषण सामान्य दृष्टि से किया गया है विशेष प्रभाव वर्ष प्रवेश चक्र का ही पड़ता है। राज्येश लाभेश धर्मेश के द्वितीयस्थ होने से कुछ समस्यायें राज्यकार्य संचालन में प्रधानशासक के सामने आयेंगी। क्योंकि गुरु जो कि धर्मेश है कर्मेश से स्वभाव में एकदम भिन्नता लिए हुए है। तथा धर्म स्थान में केतु की स्थिति कुछ व्यवधान का संकेत भी कर रही है। भारतीय गणतन्त्र की जन्मकालीन कुण्डली के अनुसार अभी राहु की महादशा चल रही है। राहु लग्नस्थ होने से विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न करने वाला है जनता में अशान्ति, अत्याचारों व अन्याय में वृद्धि चोरी, डकैती व हत्याओं में वृद्धि राहु के लग्नस्थ होने से हो रही है। शनि का अन्तर वर्तमान में चल रहा है। शनि के छठे भाव में होने से शत्रु कृत बाधा सन् २००१ ई. के मध्य तक विशेष रहेगी। यही शनि शत्रु को अपनी दृष्टि से निर्बल करेगा। व्यय भाव पर स्वगृही पूर्ण दृष्टि योजनाओं में अपव्यय को बढ़ाने वाली है साथ ही आय का स्वामी भी होने से राजकोष पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अतः योजना व्यय में कटौती एवं वित्तीय अनुशासन ही एक मात्र विकल्प है।

ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ५६ वर्षों से इस पंचांग में यह स्तम्भ लिखा जा रहा है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के संबंध में जो भी भविष्यवाणी की गयी हैं, वे अधिकांश में सत्य सिद्ध हुई हैं। इसके साक्षी "श्रीविश्वविजयपंचांग" के विज्ञ वाचकवृंद दे रहे हैं। दैवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलोपैथी डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष-विज्ञान के गणित-विज्ञान ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों के स्पर्श मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है उसमें एक मिनट का भी अंतर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित ज्योतिष को 'दैव-विद्या' कहा गया है, इसलिए राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी करने वाले को "दैवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव-विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनहीन दैवज्ञ भी मनुष्य है सर्वज्ञ निर्भ्रान्त नहीं, अतः उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रहगति रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सत्य ही हो- यह नहीं कहा जा सकता। मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इसका निरीक्षण-परीक्षण अवश्य होना चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिए। आज तक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब तक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे प्रगति क्यों न की हो पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन नहीं है। अतः इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्च राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। श्री नेहरू जी और स्वर्गीया प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी एकाधिक बार दैवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद हैं, किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नतमस्तक होते हैं वे सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते।" इस पर सर्वसाधारण जनता को इनके दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा, अस्तु।

मोदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखाएं हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको गुरु से जैसा ज्ञान मिलता हो- निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह-मिहिराचार्य कृत 'वाराही-संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है, इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त वक्रमार्ग, ग्रहों के विशेष योग और विश्व में कहाँ पर शांति और कहाँ अशांति रहेगी, इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्रचक्र, कर्पूरचक्र, कूर्मचक्र और नरपतिजयचर्या का संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, झंझावातादि के लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्हीं को आधार मानकर जो कुछ इस पंचांग में लिखा जा रहा है वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान एकत्र होकर सामूहिक निर्णय दें, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिए ग्रहों की राश्यंशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है अत: यहाँ प्रमुख ग्रहों की स्थिति का वर्षारंभ और वर्षांत का उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष संवत् २०५८ वि. में ग्रह स्थिति

नये वर्ष संवत् २०५८ वि. (२६ मार्च २००१ ई. से १२ अप्रैल २००२ ई.) में प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रापक्षीय निरयण मान से इस प्रकार है-

	चैत्र शुक्ल १ दि. २६ मार्च २००१ ई.						चैत्र कृ. ३० दि. १२ अप्रैल २००२ ई.					
प्रमुख ग्रह	राशि	अं.	क.	मार्गी वक्री	उदय अस्त	नक्षत्र	राशि	अं.	क.	मार्गी वक्री	उदय अस्त	नक्षत्र
शनि	वृष	३	१९	मार्गी	उदय	कृतिका	वृष	१७	३३	मार्गी	उदय	रोहिणी
गुरु	वृष	१२	४३	मार्गी	उदय	रोहिणी	मिथुन	१४	२२	मार्गी	उदय	आर्द्रा
मंगल	वृश्चि.	२४	३१	मार्गी	उदय	ज्येष्ठा	वृष	४	५५	मार्गी	उदय	कृत्तिका
हर्षल	मकर	२९	२१	मार्गी	उदय	धनिष्ठा	कुंभ	३	५३	मार्गी	उदय	धनिष्ठा
नेप्च्यून	मकर	१४	२१	मार्गी	उदय	श्रवण	मकर	१६	४९	मार्गी	उदय	श्रवण
वेंकटेश	वृश्चि.	२१	२७	मार्गी	उदय	ज्येष्ठा	वृश्चि.	२३	४७	वक्री	उदय	ज्येष्ठा
राहु	मिथुन	१७	२२	वक्री	अस्त	आर्द्रा	वृष	२७	७	वक्री	अस्त	मृगशिर
केतु	धनु	१७	२२	वक्री	अस्त	पू. षा.	वृश्चि.	२७	७	वक्री	अस्त	ज्येष्ठा

गुरु- वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि में है तथा १६ जून को गुरु मिथुन राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त में मिथुन राशि में ही रहेगा। ३ नवम्बर को वक्री तथा २ मार्च को गुरु मार्गी होगा।

शनि- पूरे वर्ष मे शनि वृष राशि में रहेगा। २७ सितम्बर को वक्री तथा ८ फरवरी को मार्गी होगा।

मंगल- वर्षारम्भ में मंगल वृश्चिक राशि में रहेगा। १० अप्रैल को धुन राशि में। १० जून को वक्र गति द्वारा वृश्चिक राशि में। २६ अगस्त को धनु में। १८ अक्टूबर को मकर में। ३० नवम्बर कुम्भ में। १० जनवरी मीन में। २१ फरवरी मेष में तथा ४ अप्रैल को वृष में मंगल प्रवेश करेगा। ११ मई को वक्री तथा १९ जुलाई को मार्गी होगा।

राहु-केतु- वर्षारम्भ में राहु मिथुन में तथा केतु धनु में रहेगा। १६ फरवरी से वक्र गति द्वारा राहु वृष में तथा केतु वृश्चिक में प्रवेश करेगा।

हर्षल- वर्षारम्भ में हर्षल मकर राशि में तथा १० अप्रैल से कुम्भ में। ११ जुलाई से वक्र गति द्वारा मकर में। २८ जनवरी से पुन: कुम्भ में। २९ मई को हर्षल वक्री एवं ३० अक्टूबर को मार्गी होगा।

नेपच्यून- पूरे वर्ष नेपच्यून मकर राशि में रहेगा। ११ मई को नेपच्यून वक्री तथा १८ अक्टूबर को मार्गी होगा।

वेंकटेश- पूरे वर्ष प्लूटो (वेंकटेश) वृश्चिक राशि में ही रहेगा। १८ मार्च को वक्री एवं २३ अगस्त को मार्गी होगा।

कुछ मुख्य अशुभ योग- वर्षारम्भ के पहले से ही शनि-मंगल का समसप्तक योग तथा गुरु-शनि की एक राशि में युति, वैशाख कृष्ण पक्ष १० अप्रैल से शनि-मंगल का षडष्टक योग, ज्येष्ठ कृष्ण में चर्तुग्रही योग, ५ जुलाई को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, श्रावण कृष्ण पक्ष में चर्तुग्रही योग, भाद्रपद कृष्ण पक्ष तक शनि मंगल का समसप्तक, भाद्रपद शुक्ल से १८ नवम्बर तक शनि मंगल का षडष्टक योग, कार्तिक कृष्ण में चर्तुग्रही योग, मार्गशीर्ष शुक्ल में पुन: चर्तुग्रही योग, पौष कृष्ण में पुन: चर्तुग्रही योग, माघ शुक्ल से शनि मंगल का द्विर्द्वादश तथा चैत्र कृष्ण में शनि-मंगल-राहु की एक ही राशि में स्थिति।

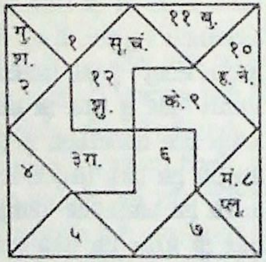
कुछ अन्य अशुभ योग- ज्येष्ठ मास में पांच मंगलवार, भाद्रपद में पाँच रविवार, अधिक आश्विन में पाँच मंगलवार तथा भौमवारी अमावस्या, मार्गशीर्ष में पाँच शनि का रविवार, माघ में पाँच मंगलवार।

वर्ष सन् २००१-२००२ ई.

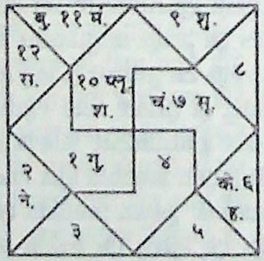
ज्योतिष के आधार पर आपके प्रिय इस 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में की गयी सैकड़ों भविष्यवाणियाँ अक्षरश: सत्य सिद्ध हो चुकी हैं। वि० सं० २०५७ के पंचांग पृष्ठ ३४ में लिखा गया था कि-'लग्नाधिप के रोगाधिप भी होने से लग्न पीड़ित हो गया है अत: यह वर्ष किसी सुखद स्थिति का संकेत नहीं दे रहा है। प्रधान शासक का

शासन मार्ग कंटकाकीर्ण हो गया है। स्वयं अपने ही लोग बाधा उत्पन्न करेंगे। प्रधान शासक को आन्तरिक एवं बाह्य दो प्रकार के प्रतिरोधों-विरोधों का सामना करना पड़ेगा।' लग्नाधिप का विचार करते हुए आगे लिखा गया था-'**प्रधान शासक विपरीत स्वास्थ्य के कारण अपनी सामर्थ्य के अनुरूप कार्य नहीं कर पायेगा।'** प्रधान मन्त्री के घुटनों की शल्य चिकित्सा इसका प्रमाण है तथा इनकी ही सरकार के सहयोगी मन्त्रियों ने इस्तीफा देकर परेशानी उत्पन्न की। आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए पृष्ठ ३५ में स्पष्ट लिखा गया-'**कठोर कदमों, उपायों के अभाव में स्थिति बहुत खराब होती दिख रही है। भुगतान संतुलन बनाने के लिए कड़े वित्तीय उपायों के अलावा शासक वर्ग के पास दूसरा मार्ग नहीं होगा। फलस्वरूप जनता में असन्तोष की लहर दौड़ेगी। सामान्य लोगों को आर्थिक उपायों, कठोर वित्तीय नियमों की मार को झेलना पड़ेगा तथा मंहगाई पर नियन्त्रण करना एक बड़ी समस्या बनेगी। राजकोषीय घाटा कम नहीं हो पायेगा किन्तु घाटा कम करने के उपायों के परिणामस्वरूप अशान्ति बढ़ेगी।'** तेलपूल घाटे को कम करने के लिए सरकार ने रसोई गैस की कीमतों एवं पैट्रोल की कीमतों में वृद्धि की है जिससे सामान्य जनों में भारी असन्तोष है। आतंकवाद के विषय में लिखा गया था-'**शनि के राशि परिवर्तन के अभाव में तृतीयेश शनि ही है तथा नीच का है, मारकाधिप गुरु साथ में आ गया है। अतः पड़ौसी को अधिक क्षति उठानी पड़ेगी। किन्तु पड़ौसी के षडयन्त्र वर्ष के पूर्वार्द्ध में पुनः प्रभावी होंगे। पड़ौसी की नीच प्रवृत्ति में मंगल अंकुश लगायेगा किन्तु गुरु प्रेरक का काम कर रहा है अतः आतंकवादी गतिविधियों में स्थायी कमी नहीं होगी तथा आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्र का दायरा बढ़ेगा तथा आतंकवाद पर वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ नियन्त्रण होगा।'** यहाँ पर कुछ पंक्तियाँ ही उद्धृत की गयी हैं। जिस प्रकार कारगिल जैसे युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी २०५६ के विश्वविजय पंचांग में की गयी थी वैसी ही आर्थिक क्षेत्र की स्पष्ट भविष्यवाणी २०५७ विक्रम संवत् के श्री विश्वविजय पंचांग में

नववर्ष प्रवेश कुंडली

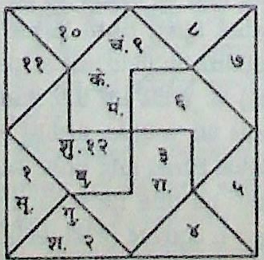


नवमांश चक्र



बल	सू.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.
इष्ट	४०	०	४६	१९	४०	५८	१२
कष्ट	१७	३२	११	३५	२०	१	४०

जगत् लग्न कुंडली



की गयी है। डालर के मुकाबले रुपये की गिरती कीमत से विदेशी कर्ज का भार बढ़ रहा है। इस विषय पर आगे विश्लेषण में लिखा गया है। आगामी संवत् २०५८ विक्रम संवत् का आरम्भ दिनाँक २५ मार्च सन् २००१ ईस्वी रविवार प्रातः ६ बजकर ५१ मिनट पर मीन लग्न के मकर नवमांश में हो रहा है। ग्रह स्थिति किसी शुभ स्थिति का संकेत नहीं दे रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के सन्दर्भ में जगत् लग्न का विश्लेषण विश्व में अशान्ति के वातावरण को जन्म देने वाला है। जगत् लग्न का स्वामी गुरु छठे भाव में स्थित होकर विश्व को रोगों, प्राकृतिक प्रकोपों से पीड़ित कर रहा है तथा छठे भाव में ही मित्राधिपति का भी स्थित होना, राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव डालकर शस्त्रास्त्रों की प्रतिद्वंद्विता को बढ़ा रहा है। पुनः शत्रु स्थान का अधिपति भी उच्च का होकर चतुर्थ भाव में स्थित होने से क्षेत्रीय विवादों एवं आवासीय समस्याओं को जन्म देने वाला है। अष्टमेश की लग्न में पाप ग्रहों के साथ स्थिति शस्त्रास्त्रों के संग्रह को बढ़ावा देने वाली है। जगत् लग्न चक्र की ग्रहस्थिति कुछ इस प्रकार की बन गयी है कि विश्व के किसी भाग में कोई भयंकर टकराव या राष्ट्रों में परस्पर युद्ध हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि लग्नेश तृतीयेश चतुर्थेश षष्ठेश का परस्पर सम्बन्ध यही दर्शा रहा है। चतुर्थ भाव का अधिपति छठे भाव में होने से विश्व के कुछ भागों में कृषि की पैदावार प्राकृतिक कारणों, रोगों आदि से बहुत कम होगी एवं कुछ भागों की कृषि विभिन्न कारणों से नष्ट हो जायेगी अतः विश्व में खाद्य समस्या उत्पन्न होगी तथा कुछ राष्ट्र खाद्य समस्या के रहते बहुत प्रभावित होंगे। चतुर्थाधिपति छठे भाव में स्थित है जो कृषि योग्य भूमि के नष्ट होने का संकेत करता है साथ ही भौम जो कि द्वादशाधिपति भी है, चतुर्थ भाव को देखकर पुनः कृषिभूमि की हानि दर्शा रहा है। अतः कृषि उत्पादों की कमी गम्भीर स्थिति उत्पन्न न करे यह ध्यान देने योग्य है। चतुर्थ भाव सुख शान्ति का भी द्योतक है, चतुर्थेश की स्थिति विश्वशान्ति को क्षति पहुंचाने वाली है अतः अशान्ति बढ़ेगी। पंचमेश भौम के होने से जनसंख्या सीमित करने के प्रयास जोर पकड़ेंगे। राज्येश राज्य स्थान को देख रहा है किन्तु राज्येश के साथ षष्ठेश के भी होने से सत्ता संघर्ष भी कुछ राष्ट्रों में होगा। राज्येश को भी द्वादशेश पंचमेश भौम देख रहा है जो कि शनि से पहले ही अशुभकारी षडष्टक योग बनाये हुए हैं अतः सत्ता संघर्ष या सैनिक क्रान्ति या युद्ध का स्वरूप भी देखने को मिल सकता है। राज्येश षष्ठेश का सम्बन्ध होने से विरोधी एवं सत्ता पक्ष में टकराव होगा विरोधी पक्ष का साथ जनता देगी क्योंकि षष्ठेश उच्च का चतुर्थस्थ है। नवमेश उच्च का पंचमस्थ होने से धार्मिक मामले विश्वराजनीति में विशेष महत्व रख सकते हैं क्योंकि कुछ देशों, प्रदेशों में धार्मिक कट्टरवाद विशेष उलझन पूर्ण स्थिति उत्पन्न करेगा अतः विश्व शान्ति के लिए प्रतिकूल स्थिति बनेगी।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली में लग्न का स्वामी तृतीय भाव में शत्रु राशि का होकर द्वादशेश के साथ स्थित है तथा अष्टमाधिप एवं षष्ठाधिप लग्नस्थ होने से किसी अनुकूल स्थिति का संकेत नहीं दे रहे हैं। प्रधान शासक के लिए सत्तासंचालन का मार्ग कंटकाकीर्ण

हो गया है। पंचमाधिप अस्त होकर अष्टमेश के साथ है अत: यह वर्ष प्रधान शासक के लिए शुभ नहीं कहा जा सकता है। आन्तरिक एवं बाह्य शत्रु अशान्ति का वातावरण उत्पन्न करने में कोई कमी नहीं करेंगे। प्रतिकूल परिस्थिति की दृढ़तापूर्वक सामना करने का तृतीयेश लग्नेश का अन्योन्यास सम्बन्ध संकेत दे रहा है किन्तु लग्नेश के शत्रुराशि में होने से लग्नेश के बल में कमी प्रधान शासक की इच्छाशक्ति में दृढ़ता की कमी की ओर इंगित कर रहा है जिससे समस्याओं का समाधान होने में बाधा उत्पन्न होगी जिससे जनता में चिन्ता एवं अशान्ति बढ़ेगी। क्योंकि लग्नाधिपति अपने से विपरीत प्रकृति के ग्रह शनि के साथ स्थित है तथा शनि मंगल का अशुभकारी समसप्तक योग बन रहा है जो कि विषम स्थिति निर्माण में प्रभावी है। प्रधान शासक को आन्तरिक समस्याओं के समाधान हेतु विशेष प्रयास करने पड़ेगे। अपने ही लोग अप्रत्यक्ष रूप से विषम स्थिति उत्पन्न करेंगे। द्वितीय भाव का स्वामी त्रिकोण में स्वगृही बैठा है जो कि राजस्व के बढ़ने का संकेत दे रहा है किन्तु शनि मंगल का समसप्तक राजस्व के अधिकांश भाग को गैर योजना व्यय या आकस्मिक व्यय में बदल रहा है क्योंकि शनि लाभ भाव के अधिपति के साथ है अत: शनि की दृष्टि को ध्यान में रखने से आर्थिक स्थिति सुधारने के प्रयासों को आघात लगना प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। आमलोगों को अधिक आर्थिक बोझ के कारण कष्ट उठाना पड़ेगा जिससे जनता में अशान्ति की लहर होगी तथा सरकार को जनता के प्रबल विरोध का सामना करना पड़ेगा। धनभाव कुटुम्ब की स्थिति को भी दर्शाता है तथा कुटुम्बेश शनि गुरु से दृष्ट है अत: जनता को प्राकृतिक प्रकोपों, शत्रुकृत बाधाओं एवं राजस्व बढ़ाने के उपायों द्वारा कष्ट उठाना पड़ेगा। शनि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन हानि दर्शा रहा है। मंगल का संबंध शुक्र से भी है तथा शुक्र अष्टमाधिप है अत: मुद्रा का अवमूल्यन होगा एवं मंहगाई सुरसा की तरह बढ़ेगी। आम आदमी के लिए मंहगाई बहुत अशान्ति का कारण बनेगी। तृतीय भाव पड़ौसी देश से सम्बन्धों का द्योतक है तथा राज्यों के आपसी संबंधों केन्द्र राज्यों के सम्बन्ध एवं साम्प्रदायिक सौहार्द को भी यह भाव प्रभावित करता है। तृतीय भाव का अधिपति जो कि अष्टमाधिपति होकर अधिक घातक होकर उच्चस्थ है तथा साथ में शत्रुभाव के अधिपति के साथ स्थित है अपनी शत्रुवत् कार्यवाही को बनाये रखेगा। अत: पड़ौसी देशों का भारत के साथ मित्रवत् व्यवहार नहीं रहेगा दूसरे शब्दों में शत्रुतापूर्ण कार्यवाही-आतंकवाद को बढ़ावा देना, विध्वंसक कार्यवाही कर्त्ताओं को सहयोग करना यह पड़ौसी देशों की कुत्सित चालों का मुख्य भाग होगा। अत: आतंकवादी गतिविधियों के फलस्वरूप कुछ भीषण दुर्घटनायें भी होंगी। शनि मंगल का समसप्तक तृतीय भाव के साथ है अत: भयंकर टकराव संभव है किन्तु संघट्ट चक्र में वेध न होने से अवश्यम्भावी नहीं है। किन्तु पड़ौसी द्वारा प्रायोजित आतंकवाद को कुचलने के प्रबल प्रयास किए जायेंगें। फलस्वरुप रक्तपात होगा। पड़ौसी देश भारत की प्रगति में बाधा उत्पन्न करने के हर संभव प्रयास करेंगे। तृतीयेश के उच्चस्थ होने से संचार साधनों रेलवे, यातायात टेलीफोन, दूरसंचार के माध्यमों में सुधार एवं विकास होगा। तृतीयेश के अष्टमेश भी होने के कारण रेलवे व यातायात कुछ बड़ी भयंकर दुर्घटनाओं से अपने को मुक्त नहीं रख सकेंगे। चतुर्थ भाव जो कि राहु से युक्त है भूमि- सम्पत्ति कृषि व कृषियोग्य भूमि को प्रभावित करता है। सुखेश द्वादशस्थ होने से कृषि की भारी हानि की सम्भावना कुछ भागों में है। कीट-पतंगों तथा कृषि रोगों से कृषि की हानि कुछ क्षेत्रों में होगी। प्राकृतिक प्रकोपों से कृषिभूमि की भी हानि होगी। कुछ क्षेत्र प्राकृतिक प्रकोप से इतना अधिक प्रभावित होंगे कि वहाँ के निवासियों को स्थान छोड़ कर विस्थापित होना पड़ेगा। इस प्रकार बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन होने से शासन को पुर्नवास समस्या का सामना करना पड़ेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति वर्गोत्तमी भी है अत: कुल मिलाकर कृषि उत्पादन संतोष जनक होगा। मंगल से भी चतुर्थ भाव दृष्ट है अत: बड़े अग्निकांड व दुर्घटना भी भौम के कारण होगी। चतुर्थ भाव खदानों का भी द्योतक है अत: बड़ी खदान दुर्घटना इस वर्ष होगी। लोक सभा में विरोधी दल की स्थिति में राहु के कारण विशेष विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। यहाँ शुभ व अशुभ प्रभाव दोनों ही एक साथ परिलक्षित हो रहे हैं। बुध के द्वादशस्थ होने से प्रतिकूल प्रभाव व वर्गोत्तमी होने से प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि होगी। ऐसा लगता है कि विरोधी दल के अन्दर कुछ पदलोलुपता के कारण आपसी टकराव होगा तथा परिणामस्वरूप अनुशासनात्मक कार्यवाही होगी। वर्गोत्तमी होने से प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि होगी। मंगल की दृष्टि से भी विरोधी पक्ष को कुछ हानि होगी। राहु आन्तरिक कलह बढ़ाने वाला होने के कारण पार्टी में आपसी फूट डालेगा। शिक्षा, मनोरंजन, जन्मदर, नैतिकता तथा शासन तन्त्र की विचारधारा को पंचम भाग दर्शाता है। पंचमेश चन्द्रमा है तथा लग्न में स्थित होकर प्रभावशाली बन गया है। किन्तु चन्द्रमा का षड्बलों में बल शून्य प्राय: है। क्योंकि वर्ष प्रवेश अमावस्या को होता है तथा अमावस्या को चन्द्रमा क्षीण हो जाता है अत: शिक्षा के स्तर में अभी सुधार की सम्भावना तो दूर गिरावट ही दर्ज होगी क्योंकि नवमांश में भी वह तुलाराशि में है। बालमृत्युदर बहुत अधिक होगी तथा नैतिकता का मार्ग पतनोन्मुखी होगा। इसी से यह भी सिद्ध है कि शासन तन्त्र की विचार धारा दोष पूर्ण होगी तथा शिक्षा नीति व विकास नीति उत्थान एवं सामाजिक स्तर को सुधारने में असफल होंगी। सुखेश, लग्नेश के सन्दर्भ में यदि पंचमेश को देखें तो गरीब लोगों की संख्या घटना या स्थिर होना तो दूर अपितु इसके विपरीत गरीबी बढ़ेगी ही। यहाँ इसी सन्दर्भ में भारत के शासन संचालकों को चेतावनी भरा एक सद्परामर्श ज्योतिषीय दृष्टि से देना आवश्यक है कि वर्तमान में गुरु का अन्तर स्वतन्त्र भारत के जन्मचक्र में चल रहा है एवं सन् २००२ ई. के मध्य में शनि का अन्तर शुक्र महादशा में प्रारम्भ होगा। उस समय आनेवाली परिस्थिति के लिए क्या वे तैयार हैं? क्या उन्हें पता है कि बेरोजगारी एवं गरीबी से त्रस्त एक विशाल भारतीय समाज के आक्रोश का उन्हें सामना करना पड़ सकता है एवं भारतीय समाज एक विघटन के दौर से गुजरेगा। "श्रीविश्वविजयपंचांग" ने पूर्व में ज्योतिष के आधार पर कई महत्त्वपूर्ण सत्य भविष्यवाणियाँ एवं सारगर्भित

चेतावनियां भारतीय समाज के उत्थान हेतु शासन तन्त्र को समय-समय पर दी हैं। गरीबी बेरोजगारी से त्रस्त नवयुवकों की प्रतिक्रिया को उन्हें भलीभाँति समझ लेना चाहिए एवं तदनुरूप योजना शीघ्रातिशीघ्र बनानी चाहिये। नहीं तो परिस्थितियाँ किसी भारी सामाजिक अस्थिरता को जन्म देने वाली बनेंगी। जिसके परिणाम विपरीत होंगे। क्योंकि शनि का यह अन्तर सितम्बर २००५ तक रहेगा। एवं शनि सूर्य के साथ अंशों की निकटता लिए हुए अस्त है तथा लग्नाधिप महादशानाथ भी अस्त है अत: असामान्य परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। रिपु भाव से विभिन्न रोगों, जनता के स्वास्थ्य, शत्रु का प्रभाव, ऋणों की स्थिति, नौ सेना एवं आयुर्विज्ञान का विचार करते हैं। इस वर्ष रोगाधिप लग्नस्थ मित्र राशि में है साथ अष्टमाधिप भी है। नवमांश में षष्ठाधिप अष्टमाधिप की ही राशि में है अत: जनता रोगों से त्रस्त होगी, अन्तर्राज्यीय विवाद भी बढ़ेंगे। कुछ भागों में संक्रामक रोगों के फैलने से भयव्याप्त होगा। देश के ऋणों के सन्दर्भ में देखने पर वैदेशिक ऋणों का बोझ बढ़ेगा तथा मुद्रा का अवमूल्यन होगा। मुद्रा के अवमूल्यन से पूर्व ऋणों की राशि में स्वत: वृद्धि होगी तथा कुछ बड़े नये ऋण भी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्राप्त होंगे क्योंकि षष्ठेश मित्र राशि में है तथा इसका इष्टबल भी बहुत है अत: नये ऋण प्राप्त होने में कोई विशेष बाधा इस वर्ष उत्पन्न नहीं होगी। षष्ठेश के प्रभाव वश यद्यपि शत्रुकृत बाधा में कमी होती दिखाई नहीं दे रही है किन्तु ऐसा लगता है कि पड़ोसी से वार्ता के द्वार भारत इस वर्ष खोल देगा क्योंकि लग्न की राशि, षष्ठेश की मित्र है तथा शत्रु भाव को नीतिवान सप्तमाधिप बुध पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। भारत को, चाहे कारण कुछ भी हो, बाध्य होकर वार्ता में भाग लेना पड़ेगा। यहाँ साथ में अष्टमाधिप के भी लग्नस्थ होने से कदम फूंक-फूंक कर रखने वाला समय होगा। भारत को वार्ता की मेज पर जाते समय यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि वार्त्ता की मेज पर बैठा दूसरा पक्ष विश्वसनीय नहीं है एवं उसकी कथनी एवं करनी में जमीन-आसमान का अन्तर होने से सतर्क पैनी दृष्टि हर दृष्टिकोण से रखनी होगी क्योंकि कुछ भी अशुभ घटित हो सकता है। अष्टमाधिप उच्च का शुक्र होने पर व पंचमेश के भी अस्त होने से नीतिनिर्धारण में कुशलता का अभाव अनुभव किया जायेगा। सूर्य का औषधियों से संबंध है अत: सूर्य के लग्नस्थ होने से औषधि विज्ञान आयुर्विज्ञान में विशेष उपलब्धि अर्जित होगी। नौ सेना की मारक क्षमता बढ़ेगी। तृतीयेश षष्ठेश शत्रु हैं एवं लग्नस्थ हैं अत: नौ सेना का शत्रु की कुत्सित चालों के विरुद्ध प्रयोग होने की प्रबल सम्भावना ग्रह स्थिति दर्शा रही है।

सप्तम भाव से विदेशों से सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय विवाद, विदेश व्यापार, अनैतिकता, विवाह एवं तलाकों का विचार मुख्यत: किया जाता है। सप्तमाधिप इस वर्ष द्वादश भाव में मित्र राशि में है तथा वर्गोत्तमी भी है एवं शनि से दृष्ट भी है अत: कुछ देशों से भारत के संबंध प्रगाढ़ होंगे तो कुछ देशों से सम्बन्धों में निष्क्रियता बढ़ेगी। अष्टमेश एवं षष्ठेश की दृष्टि सप्तमभाव पर है अत: कुछ देशों से संबंधों में गतिरोध भी उत्पन्न होगा। विदेश व्यापार में कुल मिलाकर स्थिति लगभग यथा स्थिति वाली ही रहेगी, क्योंकि सप्तमाधिप के व्ययस्थ होने से विदेश व्यापार में कमी होगी किन्तु वर्गोत्तमी होने से सुधार का द्योतक है फलत: स्थिति सामन्य रहेगी। इस वर्ष तलाक के मामलों में भारी वृद्धि होगी क्योंकि सप्तमाधिप शनि से दृष्ट है एवं मंगल की भी दृष्टि है अत: महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि होगी। महिलाओं पर अत्याचार की बढ़ती घटनायें शासन की शिरोवेदना बनेगी एवं शासन को कठोर कदम उठाने को बाध्य होना पड़ेगा। अष्टम भाव से मुख्यत: राजकोष, राष्ट्रीय मृत्युदर, आत्महत्याओं एवं राष्ट्रीय शोक का विचार किया जाता है। अष्टमाधिप लग्न में उच्चस्थ है अत: राजकोष की स्थिति सुदृढ़ रखने के पर्याप्त प्रयास किये जायेंगे एवं शुक्र के उच्चस्थ होने से इसमें सफलता भी मिलेगी किन्तु शुक्र के ही साथ षष्ठेश सूर्य के भी स्थित होने से अधिकांश राशि गैर योजनाखर्च, आकस्मिक खर्च, प्राकृतिक प्रकोपों से त्रस्त लोगों के सहायतार्थ व्यय भाव में चल जाने से राजकोष की स्थिति सन्तोषजनक नहीं रह सकेगी। सरकार को बाध्य होकर योजना व्यय में कटौती करनी पड़ेगी। राजकोष के सन्दर्भ में हम पूर्व वर्ष के पंचांग में भी लिख चुके हैं कि कठोर वित्तीय नियम लागू करना सरकार की मजबूरी एवं अनिवार्यता होगी इसके अभाव में वित्तीय स्थिति बहुत विपरीत होगी एवं इसको पटरी पर लाने में बहुत समय लग जायेगा। किन्तु प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है कि वित्तीय स्थिति के सुधार हेतु सरकार किसी दूरगामी परिणाम की योजना पर कार्य न कर तात्कालिक उपाय ही कर रही है। आश्चर्य है कि घाटे में चल रहे संस्थानों का गैर सरकारी करण ही सरकार को एक उपाय नजर आ रहा है, जबकि घाटे में चलने वाले संस्थानों को लाभप्रद स्थिति में कैसे लाया जा सकता है एवं रोजगार के अवसर कैसे बढ़ाये जा सकते हैं इस पर विचार नहीं किया जा रहा है। हम पूर्व में भी लिख चुके हैं कि शासन की विचारधारा दोषपूर्ण होगी तथा नीति निर्धारण त्रुटिपूर्ण होगा। यही कारण है कि सरकारी संस्थानों का गैर सरकारी करण एवं रोजगार के अवसरों में निरन्तर कमी होने के कारण बेरोजगारी एवं गरीबी निरन्तर बढ़ती जा रही है। इस मूल समस्या के निदान के लिए शासन के पास कोई दूरगामी योजना है, ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है। नेताओं को पुन: नेक सलाह है कि वह पदलोलुपता के पाश से स्वयं को मुक्त कर राष्ट्र की मूल समस्या बेरोजगारी एवं गरीबी को कम करने के लिए एक जुट होकर कार्य करें। अन्यथा वह स्मरण रखें हम ऊपर की पंक्तियों में लिख चुके हैं कि ग्रह स्थिति वशात् एक भारी सामाजिक अव्यवस्था का समय आनेवाला है जिससे भारी विकट स्थिति उत्पन्न होने का पूर्वाभास ग्रह स्थिति दे रही है। अत: नेताओं-राष्ट्र के कर्णधारों, उठो एवं अपने निजी स्वार्थों को तिलाञ्जलि देकर राष्ट्र की उपरोक्त दो मूल समस्याओं के निराकरण के लिए एक जुट हो जाओ, यही आग्रह श्री विश्वविजय पंचांग, भारत माता की सच्ची सेवा के लिए आपसे कर रहा है। नवम भाव से न्याय व्यवस्था, सांप्रदायिक स्थिति, धार्मिक माभले, धार्मिक स्थल एवं धर्म गुरु एवं न्यायाधीश इन सब विषयों का विचार किया जाता है। नवम भाव में भौम अपनी राशि में बैठा है। जातक शास्त्रों में मंगल की नवमभाव में स्थिति को धार्मिक दृष्टि से शुभ नहीं कहा गया

है यह पाप की ओर प्रवृत्ति कराने वाला ग्रह है एवं स्वराशिस्थ होने से अधिक प्रबल हो गया है अत: दिखावे का धार्मिक कट्टरतावाद बढ़ेगा। धर्म दूसरों को उपदेश देना मात्र रह गया है इसका अनुसरण करने वाले वैसे भी प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं एवं भौम इस स्थिति को और अधिक बढ़ायेगा फलस्वरूप सांप्रदायिक सद्भाव में कमी होगी एवं धर्म का राजनीतिक लाभ के लिए दुरुपयोग होगा। धार्मिक नेता अपने-अपने अनुयायियों को सद्मार्ग दिखाने में वैसे भी विफल हो रहे हैं एवं ग्रह स्थिति भी उन्हें विफल ही करेगी। प्लूटोग्रह भी नवम भाव में होने से अधिनायकवादी प्रवृत्ति का है जिससे धार्मिक नेता धर्म का दुरुपयोग अपने स्वार्थों के लिए करेंगे। शनि-मंगल का समसप्तक योग नवम भाव को प्रभावित कर रहा है अत: किसी धार्मिक स्थल को लेकर विवाद अपने चरम पर पहुंचकर सांप्रदायिक सौहार्द के लिए विपरीत परिस्थिति पैदा करेगा। यही किसी धार्मिक नेता को हानि भी पहुंचाने वाली ग्रहस्थिति हो सकती है। केवल गुरु विपरीत स्थिति को संभालने का कार्य कर रहा है। न्याय व्यवस्था के संदर्भ में न्यायालय कुछ कठोर फैसले व्यापक जनहित में लेंगें तथा नये कठोर कानूनों की पृष्ठभूमि भी बनेगी जिसमें शनि के कारण कुछ विरोध के स्वर जनाकांक्षाओं के विरोधियों की ओर से उठाये जायेंगे। न्यायालयों की भूमिका सामाजिक उत्थान में प्रबल होगी। दशमभाव प्रधानशासक-लोकसभा-राज्यसभा तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को दर्शाता है। दशमाधिपति गुरु शत्रु राशि का होकर तृतीयस्थ है तथा अपने से एकदम विपरीत विचारधारा वाले द्वादशाधिपति शनि के साथ स्थिर राशि में स्थित है। इससे यह प्रत्यक्ष है कि प्रधानशासक को विपरीत परिस्थितियों में ही शासन चलाना होगा तथा पद-पद पर बाधायें आयेंगी एवं बाधा बाहर के विपरीत अपने ही लोग अधिक उत्पन्न करेंगे। क्योंकि नवमांश में दशमाधिपति मित्र राशि में बैठा है साथ ही वह राशि चर भी है अत: यह स्पष्ट है कि प्रधान शासक को पदच्युत करने का प्रबल प्रयास उनके ही निकटस्थ लोग इस वर्ष सुनियोजित ढंग से करेंगे। क्योंकि लोकसभा का विचार भी इसी ग्रह स्थिति के परिप्रेक्ष्य में करना है अत: स्पष्ट है कि लोकसभा तथा राज्य सभा में कुछ ऐसे प्रश्न सामने आयेंगे एवं ऐसी स्थितियां बनेगी कि सरकार को भारी असुविधा संसद के दोनों सदनों में होगी। विपक्ष का ग्रह नवमांश में भी उसी राशि का है जिससे वह वर्गोत्तमी हो गया है तथा जिस राशि में विपक्ष का ग्रह बैठा है उसी राशि का अधिपति शनि गुरु के साथ है अत: सरकार को भारी शिरोवेदना इस वर्ष होगी, दशम स्थान में केतु भी स्थित है। सामान्य विचार से केतु चिन्ता एवं बाधा उत्पन्न करने वाला है। धनुराशि में इसकी स्थिति प्रबल हो जातीहै तथा केतु को प्रबल मारक ग्रह भी माना जाता है यदि इसके अच्छे बुरे प्रभावों का विश्लेषण करें तो यह शासक के लिए शासन चलाने में बाधा एवं चिंता उत्पन्न करने वाला ही है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में देखने से यह स्पष्ट है कि दशमेश की तृतीयस्थ स्थिति विश्व में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली ही होगी। तथा हम पूर्व वर्ष के पंचांगों में लिख चुके हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की बात को महत्त्व दिया जायेगा। इस वर्ष भी ग्रह स्थिति ऐसी है कि भारत की बात एवं प्रतिष्ठा को विश्व समुदाय महत्त्व देगा। लाभेश की तृतीयस्थ स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पूर्व में सप्तम भाव के विश्लेषण में भी लिखा है एवं लाभेश की स्थिति भी दर्शा रही है कि कुछ देशों से भारत के संबंध प्रगाढ़ होंगे एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की स्थिति मजबूत होगी तथा विदेश व्यापार में कुछ नये अवसर प्राप्त होंगे लेकिन कुछ पूर्व प्राप्त व्यापारिक अवसरों पर विपरीत प्रभाव भी पड़ेगा क्योंकि षष्ठेश की लग्नस्थ स्थिति प्रतिस्पर्धा को बढ़ानेवाली है। लाभेश मित्र राशि में होने से कुछ व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति विशेष उत्साहवर्धक होगी क्यों कि नवांश में लाभेश अपने घर में है जो कि लाभेश की स्थिति को प्रबल बना रहा है अत: भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष महत्वपूर्ण राष्ट्र की दृष्टि से देखा जायेगा एवं तदनुरूप स्थान भी प्राप्त होगा। लाभेश की स्थिति ही नये कानूनों का प्रावधान भी दर्शा रही है अत: कुछ महत्वपूर्ण नये कानूनों का प्रादुर्भाव भी होगा जिनका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। सामाजिक दृष्टि से देखने पर महिलाओं से संबंधित कानून भी बनेंगे क्योंकि तृतीयस्थ शनि की द्वादशस्थ सप्तमाधिपति पर पूर्ण दृष्टि पड़ रही है अत: नये कानून पर महिलाओं द्वारा प्रसन्नता एक समर्थन प्रदर्शित किया जायेगा क्योंकि बुध एवं शनि मित्रता का स्वभाव लिए हुए हैं। कुछ इसी प्रकार की स्थिति संविधान संशोधन के सन्दर्भ में भी है। ऐसा प्रतीत होता है कि संविधान में कोई महत्त्वपूर्ण संशोधन किया जायेगा जिसका व्यापक समर्थन महिलाओं द्वारा भी किया जायेगा। इस वर्ष द्वादशाधिपति पराक्रम स्थान में बैठा है तथा द्वादश भाव में बुध का होना एवं द्वादशाधिपति पर शनि की दृष्टि इस वर्ष जासूसी गतिविधियों की ओर इंगित करती है। अत: शत्रु पक्ष गुप्त षडयन्त्र कर यहाँ की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को अवांच्छित गतिविधियों द्वारा प्राप्त करने का प्रयास करेगा ऐसा लग रहा है कि कुछ अतिमहत्वपूर्ण गुप्त सूचनायें बाहरी शत्रु के हाथ लग जायेंगी जिससे कुछ विशेष विकास योजनायें प्रभावित हो सकती हैं। द्वादशाधिपति की स्थिति के कारण अपराधों में वृद्धि होगी एवं अपराधी तत्त्व अवांछित गतिविधियों में वृद्धि करेंगे जिससे भय व्याप्त होगा। भौम की द्वादश भाव एवं द्वादशेश पर दृष्टि अपराधी तत्त्वों के विरुद्ध कठोर कदम उठाने का संकेत देती है अत: शासन असामाजिक तत्त्वों के विरुद्ध नीतिगत कठोर निर्णय लेगा। द्वादश भाव जल से भी संबंधित होने के कारण एवं अग्नितत्त्व युक्त भौम से दृष्ट होने के कारण कुछ भागों में जल का भारी संकट होने की इस वर्ष सम्भावना है अत: कुछ भूभाग विशेष भयंकर सूखे की चपेट में आयेंगे तथा लोगों को विस्थापित होना पड़ेगा तथा कहीं बड़े अग्निकांड या दुर्घटना से बड़ी हानि होगी। द्वादशभाव स्वास्थ्य केन्द्रों के सन्दर्भ में देखने पर स्वास्थ्य केन्द्रों के विकास एवं सुधार की विशेष नीति बनेगी। इस वर्ष अपने गुप्तचर तन्त्र को विशेष रूप से सतर्क रखना राष्ट्रहित में होगा क्योंकि राष्ट्रविरोधी असामाजिक तत्त्वों की गतिविधियाँ रोकने के लिए उनके विरुद्ध कार्यवाही आवश्यक होगी जो कि वांच्छित सूचना के बिना सम्भव नहीं है। मंगल के कुम्भ नवमांश में स्थित होने से यह स्पष्ट है कि यदि इस वर्ष शासन

व गुप्तचर तन्त्र ने सतर्कता से काम नहीं लिया तो भारी क्षति, दुर्घटनाएं, अग्निकांड, बम्बविस्फोट, आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि के कारण होंगे।

विश्व परिदृश्य सं. २०५८ वि.

अमेरिका- भारतीय पद्धति से अमेरिका में तुला लग्न के समय वर्ष प्रवेश हुआ है। लग्नाधिप शुक्र उच्च का होकर छठा गया है। तथा राज्याधिप भी शत्रु स्थान में स्थित है अतः प्रधान शासक को विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। विरोधी पक्ष शासक दल के लिए समस्यायें खड़ी करेगा। कुटुम्बेश के कुटुम्ब स्थान में ही स्थित होने से आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होगा किन्तु चतुर्थेश के अष्टमस्थ होने से तथा शनि मंगल के समसप्तक होने से बड़ी दुर्घटना या आतंकवादी गतिविधि के परिणाम स्वरूप धन जन की हानि होगी एवं लोगों में असुरक्षा की भावना बनेगी एवं भय व्याप्त होगा। आतंकवादी गतिविधियों अग्निकाण्ड, बम्बविस्फोट आदि से शान्ति भंग होगी। पराक्रम भाव का अधिपति अष्टमस्थ होने से किसी देश विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। नवमेश के पंचमस्थ होने से नीतिनिर्धारक कुशलता का परिचय देते हुए बाल विकास तथा बच्चों की मनोवृत्ति के बारे में सुधार लाने हेतु नीति बनायेंगे। सप्तमेश के द्वितीयस्थ होने से व्यापार में पकड़ मजबूत होगी तथा तकनीकी क्षेत्र का विकास होगा। सप्तमेश मंगल स्वगृही होकर शनि से पूर्ण दृष्टि संबंध बना रहा है। अतः यह देश दूसरों को शान्ति का पाठ पढ़ायेगा तथा विध्वंसक हथियारों की तकनीक हस्तान्तरण न करने को कहेगा किन्तु स्वयं विध्वंसक हथियारों का उत्पादन व अपने मित्र देशों को विध्वंसक शस्त्रों से युक्त कराने में सहयोग करेगा। कहीं किसी देश के विरुद्ध बल प्रयोग भी अमेरिका इस वर्ष करेगा। नवम स्थान का अधिपति मित्र राशिस्थ होकर महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय करेगा। इससे धार्मिक क्षेत्र भी प्रभावित होगा। कर्मेश के षष्ठष्थ होने से सत्तारूढ़ दल व प्रधानशासक को शासन तन्त्र चलाने में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। लाभाधिप के भी व्ययस्थ होने से योजना व्यय में भारी वृद्धि होगी। व्ययेश का पंचमस्थ होना भी इसी ओर इंगित करता है। भारत व अमेरिका के नववर्ष प्रवेश लग्न परस्पर षडष्टक योग बना रहे हैं अतः इसी वर्ष भारत को अमेरिका के कारण किसी गतिरोध या विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा अमेरिका भारतीय हितों को क्षति पहुँचा सकता है।

रूस- मास्को में धनु लग्न के समय नववर्ष प्रवेश हो रहा है। लग्न में केतु के स्थित होने से इस वर्ष रूस हथियारों के उत्पादन, निर्यात, रखरखाव एवं विकास पर विशेष ध्यान देगा। लग्नाधिप एवं चतुर्थाधिप मन्द के साथ रिपु भावस्थ होने से आन्तरिक स्थिति विषम रहेगी। आतंकवादी गतिविधियों से जनता में भय व अशान्ति का वातावरण रहेगा तथा कुटुम्बेश की स्थिति वशात् मंहगाई बढ़ेगी एवं लोगों की क्रय शक्ति में कमी भी चिन्ता का विषय बनेगी। मंगल की भी लग्नेश पर दृष्टि है तथा लग्नेश सहित शनि मंगल का दृष्टि सम्बन्ध होने से दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी एवं आतंकवादी गतिविधियों के कारण बम्ब विस्फोट अग्निकाण्ड एवं दुर्घटनायें होंगी जिससे जन-धन की हानि होगी। तृतीयेश भी छठा गया है जिससे पड़ोसी राष्ट्र से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा एवं मंगल की दशमेश पर दृष्टि शासकों से कठोर कदम उठवायेगी। द्वितीयेश की स्थिति वशात आर्थिक ढांचे को मजबूत करने के लिए कठोर कदम उठाये जायेंगे। सप्तमेश बुध तृतीयस्थ होने से निर्यात व्यापार वृद्धि के लिए प्रभावी नीति बनायी जायेगी किन्तु राहु के भी सप्तमस्थ होने से तथा द्वादशेश की भी सप्तम भाव पर दृष्टि होने से सफलता प्राप्त नहीं होगी। अष्टमेश के चतुर्थस्थ होने से मुद्रा भण्डार-राजकोष में वृद्धि के प्रयास होंगे इसमें आंशिक सफलता प्राप्त होगी। क्योंकि लाभेश उच्च का है तथा वह षष्ठेश भी है। जिससे अनुमान से अधिक व्यय होगा अतः गैर योजना व्यय बढ़ेगा। षष्ठेश के प्रभाववश अनिच्छित व्यय करना पड़ेगा। प्राकृतिक आपदा या शत्रु-आतंक वादी कार्य वाही आदि में व्ययाधिक्य होगा। नवम भाव के अधिपति के केन्द्रस्थ होने से कानून व्यवस्था की स्थिति सन्तोष जनक होगी किन्तु शत्रु स्थान का अधिपति आन्तरिक अशान्ति उत्पन्न कर कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न करेगा। दशमेश के तृतीयस्थ होने से शासक शासन चलाने में अपनी दक्षता का परिचय नहीं दे पायेंगे अतः प्रधान शासक को कुछ विरोधों का समाना भी करना पड़ेगा। लाभेश के उच्चस्थ होने से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष रूस का मान बढ़ेगा तथा अन्य राष्ट्रों से सहयोग में वृद्धि होगी। मंगल के द्वादशस्थ स्वगृही होने से रूस के वर्चस्व में वृद्धि होगी। भारत व रूस के वर्ष प्रवेश लग्नों का अधिपति एक ही ग्रह होने से इस वर्ष दोनों देशों में आपसी सहयोग बढ़ने की अधिक सम्भावनायें हैं।

पाकिस्तान- वर्ष प्रवेश लग्न मीन है। लग्नाधिप तृतीय भाव में शत्रु राशि में स्थित है। अतः शासकों को आन्तरिक विरोधों का सामना करना पड़ेगा। यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि लग्नेश के तृतीयस्थ होने से भ्राता (पड़ोसी भारत) से संबंधों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया आरम्भ होगी किन्तु लग्नेश शत्रु राशि में है अतः वार्ता या संबंधों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया में गतिरोध उत्पन्न होगा। यद्यपि लाभेश भी वहीं स्थित है किन्तु लाभेश व्ययेश भी होने से अनपेक्षित रूप से अधिक समय तक वार्ता चलेगी। चतुर्थेश के व्ययस्थ होने से आन्तरिक अशान्ति मंहगाई- प्राकृतिक प्रकोपों दुर्घटनाओं से लोग त्रस्त रहेंगे। किसी भाग विशेष से लोगों का पलायन इस वर्ष सुरक्षा की दृष्टि से होगा। पंचमेश के लग्नस्थ होने से इस वर्ष नीतिनिर्धारक, भविष्य की योजनाओं के विषय में नये सिरे से विचार करेंगे तथा शिक्षा के स्तर को सुधारने के उपाय किये जायेंगे किन्तु पंचमेश के रश्मिहीन होने से शासन की विचार धारा एवं योजनायें त्रुटिपूर्ण एवं अपरिपक्व ही होंगी। षष्ठेश के लग्नस्थ होने से इस वर्ष शासक को कई अन्तर्विरोधों का सामना करना पड़ेगा। हो सकता है कि आतंकवादी संगठन जो कि पाकिस्तान में कई वर्षों से

अपनी गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं वहीं के शासन तन्त्र एवं जनता की शिरोवेदना बन जायें एवं स्वयं पाकिस्तान आतंकवाद की छाया से ग्रसित हो जाये क्योंकि एक ओर तो षष्ठेश अष्टमेश लग्नस्थ हैं तो दूसरी ओर लग्नेश द्वादशेश के साथ होकर शनि- मंगल के समसप्तक योग से प्रभावित है। इस दृष्टि से पाकिस्तान के लिए यह वर्ष सामान्य नहीं कहा जा सकता। सप्तमेश के द्वादशस्थ होने से विदेश सम्बन्ध विदेश व्यापार एवं निर्यात में यह वर्ष उलट फेर वाला है। क्योंकि पाकिस्तान का वर्ष प्रवेश सिंह नवांश में है एवं सूर्य नीच नवांशक है।

ग्रहयोगों को देखते हुए पाकिस्तान में इस वर्ष प्रजातंत्र को पुन: स्थापित करने का पाखण्डपूर्ण प्रयास आरम्भ हो सकता है। इस कपट, पाखण्ड के छद्मावरण के भीतर, सत्ता सूत्र सैनिक शासक के ही हाथ में रहेगा अत: भारतीय जनमानस को दिग्भ्रमित होना उचित न होगा। पाकिस्तान का जन्म ही, खोखली मध्ययुगीन अन्ध धार्मिक, सामन्तवादी कट्टरवादिता, घृणा, द्वेष, हिंसा तथा अराजकता की तामसिक, राक्षसी मनोवृत्ति से हुआ है। पाकिस्तान के शासन तन्त्र पर हावि यह मनोवृत्ति, कभी भी, भारत से मधुर, सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित नहीं होने देगी, अत: भारत के शासकों, सरकार, राजनेताओं और जनता को यह चेतावनी देना प्रासङ्गिक होगा, कि वह अराजक, आतंकवादी तत्वों तथा उनके प्रायोजकों के कपटजाल में फंसकर उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में युद्धविराम, सैनिक कार्यवाहियों पर आवांछित रोक लगाकर व्यापक राष्ट्रीय हितों से अमंगलकारी खिलवाड़ न करें। अराजक तत्वों तथा उनके प्रायोजकों से सख्ती से निपटना हितावह होगा अन्यथा विनाशकारी परिणाम सामने आ सकता है।

अफगानिस्तान- काबुल भी मीन लग्न पर ही नववर्ष प्रवेश कर रहा है अत: वहाँ की सत्तारूढ़ सरकार को बाध्य होकर वहाँ स्थित आतंकवादी संगठनों को अपनी कार्यवाही रोकने के लिए निर्देश देना पड़ेगा। इसके फलस्वरूप वहाँ की सत्तारूढ़ पार्टी को भी दोतरफा दबावों को झेलना आसान नहीं होगा जैसा कि पाकिस्तान के सन्दर्भ में पहले लिख चुके हैं कि एक ओर तो षष्ठेश व अष्टमेश लग्नस्थ हैं तो दूसरी ओर राज्येश- लग्नेश शत्रु के घर में स्थित होकर शनि-मंगल के समसप्तक योग से प्रभावित हो रहा है। अत: सत्तारूढ़ दल के लिए यह वहाँ असामान्य स्थिति पैदा करने वाला है एवं जनता को आन्तरिक परेशानी मंहगाई एवं आतंकवादी संगठनों से भी विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

चीन- वर्ष प्रवेश वृष लग्न में हो रहा है। लग्नेश भृगु उच्चस्थ होकर लाभस्थान में स्थित है तथा दशमेश शनि लग्नस्थ होकर शासक को दृढ़ता प्रदान कर रहा है। अत: शासक की शासन पर पकड़ मजबूत होगी। विकास की दर तेज होगी। गुरू के अष्टमेश होकर लग्नस्थ होने से एवं शुक्र के लग्नेश के साथ षष्ठेश भी होने से अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में किसी देश या देशों से गतिरोध उत्पन्न होगा। शनि मंगल का समसप्तक योग किसी विकट स्थिति को जन्म दे सकता है जिससे भय एवं अशान्ति का वातावरण उत्पन्न होगा। कुटुम्बेश यद्यपि केन्द्रस्थ है तथापि कुटुम्ब भाव में राहु उलझन पैदा करने वाला है जिससे अशान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीयेश अस्त होकर लाभ स्थान में है तथा तृतीय भाव शनि के प्रभाव में होने से पड़ौसी राष्ट्रों से संबंध सन्तोष जनक नहीं होंगे। आर्थिक दृष्टि से चीन प्रगति करेगा क्योंकि धन स्थान का अधिपति केन्द्रस्थ है एवं चीन अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य को ही मुख्यत: अपनी योजनाओं का आधार बनायेगा। धनेश ही पंचमेश भी है एवं इस कार्य में उसे पर्याप्त सफलता मिलेगी। कृषि क्षेत्र में भी उन्नति होगी क्योंकि कृषि क्षेत्राधिपति लाभस्थ है। भारत के साथ सम्बन्धों को सुधारने के प्रयास होंगे किन्तु वर्ष प्रवेश लग्नों की परस्पर मित्रता न होने से कुछ बातों को लेकर संबंधों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया में गतिरोध उत्पन्न होगा। षष्ठेश के उच्चस्थ होने से रोगों प्राकृतिक प्रकोपों से इस वर्ष चीन त्रस्त रहेगा। मंगल के स्वक्षेत्र सप्तमस्थ होने से विदेशों से सम्बधों के मामले में चीन अपनी नीति पर दृढ़ रहेगा तथा लचीलेपन का सर्वथा अभाव होने से तथा शनि-मंगल के समसप्तक योग के प्रभाववश किसी देश से सम्बन्धों में गम्भीर गतिरोध उत्पन्न होगा। यह गतिरोध इस स्तर का भी हो सकता है कि इससे विश्व में शान्ति चाहने वाले राष्ट्र चिंतित होंगे।

जापान- भारतीय पद्धति से टोकियों में मिथुन लग्न के समय वर्ष प्रवेश होगा। लग्नाधिप एवं चतुर्थाधिप के नवमस्थ मित्रराशिस्थ होने से यह वर्ष राष्ट्र के लिए उन्नतिकारक है। नवमेश-दशमेश के द्वादशस्थ होने से इस वर्ष प्रधान शासक को विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा तथा राजनीतिक दृष्टि से सत्तारूढ़ दल व शासक की पकड़ कमजोर होगी व कोई विवाद जन्म लेगा। कुटुम्बेश की स्थितिवशात् आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। तृतीयेश के प्रभाव वश अन्य देशों से संबंध मैत्रीपूर्ण होंगे। भारत के साथ संबंध सामान्य एवं आपसी सहयोग बढ़ाने वाले होंगे क्योंकि दोनों देशों के वर्ष प्रवेश लग्न चतुर्थ एवं दशम का संबंध बनाये हुए हैं। पंचमेश के उच्चस्थ होने से शिक्षा एवं बाल विकास को दृष्टिगत रखते हुए योजनाओं का प्रारूप तैयार होगा। मंगल के स्वगृही होकर रिपुभाव में स्थित होने से आयुर्विज्ञान में विशेष प्रगति एवं नवीन खोज होगी। सप्तमाधिप के द्वादशस्थ होने से विदेश व्यापार में वृद्धि होगी एवं निर्यात बढ़ेगा। विदेश व्यापार में प्रतिस्पर्धा स्वरूप किसी देश विशेष से व्यापारिक संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। सप्तमाधिप शत्रु राशिस्थ है तथा अष्टमाधिप के साथ है अत: व्यापार के कुछ क्षेत्र विशेष में जापानी हितों को विपरीत स्थिति का भी सामना करना पड़ेगा। अष्टमाधिप के प्रभाववश मुद्राबाजार में जापानी मुद्रा की क्रय शक्ति में कुछ न्यूनता दृष्टिगोचर होगी। जिससे वित्तीय प्रबन्धक चिंतित होंगे किन्तु यह स्थिति अस्थायी ही होगी।

फ्रांस- नव वर्ष का प्रवेश धनु के लग्न के मेष नवमांश में हो रहा है जिससे यह देश रक्षा उपकरणों शस्त्रास्त्रों के उत्पादन को बढ़ाने की ओर ज्यादा ध्यान देगा। सुखादि पति एवं लग्नाधिपति की नवमांश स्थिति सुखद प्रगति का संकेत कर रही है। राज्येश यद्यपि वर्गोत्तमी है तथापि तृतीयस्थ होने से शासक व शासन तन्त्र के लिए स्थिति चुनौती पूर्ण

रहेगी। कुछ अपनी ही पार्टी के लोग समस्या पैदा करेंगे। प्रधान शासक के निकट सहयोगी बाधा उत्पन्न करेंगे। आर्थिक दृष्टि से ग्रह प्रगति कारक है। मुद्रा की क्रय शक्ति बढ़ेगी एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों से सहयोग बढ़ेगा। लग्नस्थ केतु कुछ समस्यायें भी उत्पन्न करेगा। शस्त्र निर्माण एवं विकास से संबंधित व्यापार में फ्रांस के किसी देश विशेष से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। इस वर्ष शस्त्रास्त्र निर्यात में भारी वृद्धि की भी संभावना है। पंचमाधिप मंगल नीति निर्धारण में कुछ कठोरता का परिचय देते हुए कठोर नीति अपनाने को शासकों को प्रेरित करेगा क्योंकि पंचमाधिप द्वादशस्थ है अत: इससे विदेश नीति प्रभावित होगी। शनि मंगल के समसप्तक योग वशात् कुछ बड़ी दुर्घटनाओं की भी आशंका है जिससे जन-धन की हानि होगी। इन दुर्घटनाओं में समाज विरोधी या आतंकवादी संगठनों की भूमिका भी होगी। फलस्वरूप शासन कुछ कठोर कदम उठायेगा। फ्रांस के वर्ष प्रवेश लग्न का अधिपति एवं भारत के वर्ष प्रवेश लग्न का अधिपति एक ही ग्रह के होने से इस वर्ष दोनों देशों के संबंधों में भावियोजनाओं के संदर्भ में निकटता आयेगी एवं कुछ महत्वपूर्ण समझौते होंगे जिनका निकट भविष्य में बहुत महत्त्व होगा।

ब्रिटेन (लंदन)- भारतीय पद्धति से ब्रिटेन में नववर्ष का प्रवेश वृश्चिक लग्न के समय हो रहा है। लग्न का अधिपति मंगल लग्न में षष्ठेश होकर स्थित है। अत: ब्रिटेन अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों के सन्दर्भ में दृढ़ता का परिचय देगा तथा कहीं कठोर रुख के कारण अन्य देश से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। शनि तृतीयेश होकर सप्तमस्थ है तथा शनिमंगल का समसप्तक योग अशान्ति का वातावरण बनाने वाला है। इसके फलस्वरूप दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी तथा आतंकवादी तत्व समाज विरोधी कार्यवाही कर भय का वातावरण बनायेंगे। कुटुम्ब स्थान का केतु भी अशान्ति को दर्शा रहा है। आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष मुद्रा बाजार में ब्रिटेन की मुद्रा की क्रय शक्ति में अल्पावधि के लिए भारी गिरावट सम्भव है क्योंकि अष्टम स्थान में राहु है एवं धनेश शनि-मंगल के समसप्तक योग से प्रभावित हो रहा है जिससे अचानक मुद्राबाजार पर किसी अन्तर्राष्ट्रीय घटना का प्रभाव पड़ेगा। भारत के साथ संबंधों एवं सहयोग के सन्दर्भ में ब्रिटेन के वर्ष प्रवेश लग्न के अधिपति एवं भारत के नववर्ष प्रवेश के अधिपति की परस्पर मित्रता है फलत: दोनों देशों में आपसी समझ एवं सहयोग बढ़ेगा। मंगल के लग्नस्थ होने से हथियार शस्त्रों के निर्माण में भी ब्रिटेन रुचि लेगा तथा कहीं सैनिक सहायता या सैनिक कार्यवाही में आगे बढ़चढ़ कर भाग लेगा। राज्येश त्रिकोण में धर्माधिपति एवं सप्तमाधिपति-द्वादशाधिपति के साथ है अत: शासक योजना बनाते समय विदेश व्यापार एवं नैतिक-मूल्यों को विशेष स्थान देंगे किन्तु नैतिक मूल्यों का अधिपति चन्द्र क्षीण होने से सुधार की कोई सम्भावना नहीं है अत: बाल अत्याचार-शोषण की घटनाओं में वृद्धि चिन्ता का कारण बनेगी।

जर्मनी- धनु लग्न के मिथुन नवमांश में नववर्ष प्रवेश हो रहा है अत: शासक विदेश व्यापार को दृष्टिगत रखते हुए अपनी नीति निर्धारित करेंगे। लग्नाधिपति जो कि सुखाधिपति भी है छठे भाव में स्थित है तथा मंगल के नवमांश में स्थित है अत: शासक दल को विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा शासक के शीघ्र निर्णय एवं दृढ़ निर्णय के कारण विरोध के स्वर उठेंगें क्योंकि भौम का नवमांश बिना पर्याप्त विचार के निर्णय करायेगा जिससे शासक एवं शासक दल विपरीत स्थिति को देखकर चिंतित होंगें। केतु का लग्नस्थ होना भी विरोध का कारण बन रहा है। वर्ष प्रवेश लग्न एवं भारत का वर्ष प्रवेश लग्न एक ही ग्रह होने के कारण भारत एवं जर्मन में परस्पर सहयोग में इस वर्ष विशेष वृद्धि होगी। द्वादशेश भौम की तृतीया भाव पर पूर्ण दृष्टि है एवं नवांश में भी भौम तृतीयेश की राशि पर है एवं तृतीयेश छठे भाव पर स्थित है अत: किसी देश विशेष से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा तथा राहु के सप्तमस्थ होने एवं सप्तमेश के तृतीयस्थ होकर शनि से दृष्ट होने के कारण व्यापारिक हित प्रभावित होंगे किन्तु सप्तमेश के वर्गोत्तमी होने से जर्मनी व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति करेगा। न्याय व्यवस्था एवं कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार की आवश्यकता समझी जायेगी क्योंकि पंचमाधिप नवमांश में नीच राशि का बैठा है। आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष जर्मनी को भारी उतार-चढ़ाव देखने पड़ेंगे क्योंकि राजकोष का स्वामी अस्त है एवं धनेश के रिपु भाव में स्थित होने से जर्मन मुद्रा की क्रय शक्ति अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अस्थायी रूप से कम होगी जो कि वित्त प्रबन्धकों में चिंता का कारण बनेगी। लाभेश के उच्चस्थ होने से जर्मनी की प्रतिष्ठा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ेगी।

बर्मा- रंगून में नववर्ष प्रवेश के समय मेष लग्न है। लग्न का स्वामी मंगल अष्टमस्थ होकर यद्यपि अपनी राशि में ही स्थित है किंतु शनि के साथ समसप्तक योग भी होने से ग्रह स्थिति असामान्य हो गयी है। इस वर्ष बर्मा को आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के दबावों या विरोधों का समाना करना पड़ेगा क्योंकि शनि राज्येश भी है अत: शासकों की शासन तन्त्र पर पकड़ कमजोर होगी। कुटुम्ब स्थान का अधिपति एवं चतुर्थेश दोनों ही व्यय भाव में स्थित होने से ग्रह स्थिति आन्तरिक अशान्ति की ओर इंगित कर रही है। शासन किसी आन्दोलन आदि को दबाने या विरोध को दबाने के लिए मंगल से प्रेरित हो कठोर कार्रवाई करेगा जिससे भारी रक्तपात सम्भव है। तृतीय भाव में राहु के स्थित होने से पड़ोसी देशों से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। पंचमेश के भी व्ययस्थ होने से नीति निर्धारण त्रुटिपूर्ण होगा। जिससे विदेश व्यापार एवं आर्थिक स्थिति दोनों पर ही विपरीत प्रभाव पड़ेगा क्योंकि सप्तमेश-धनेश भी पंचमेश के ही साथ व्ययस्थ है। भारत एवं बर्मा के वर्ष प्रवेश लग्नाधिपति यद्यपि आपस में मित्र हैं तथापि दोनों परस्पर नवम-पंचम होने से दोनों देशों के बीच कुछ विषयों पर वैचारिक मतभेद उभरेंगे।

आस्ट्रेलिया- केनबरा में वृष लग्न के समय नववर्ष प्रवेश हो रहा है। लग्नेश की लाभ स्थान में स्थिति एवं दशमेश की लग्न में स्थिति शासन तन्त्र को स्थिरता प्रदान कर रही है। विकास की दर तेज होगी। गुरु अष्टमेश होकर लग्नस्थ है एवं शनि-मंगल का समसप्तक योग गुरु पर भी प्रभाव डाल रहा है यहाँ शनि राज्येश है अत: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

पर किसी देश विशेष से संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। धन स्थान का अधिपति केन्द्रस्थ है अत: आर्थिक दृष्टि से यह राष्ट्र प्रगति करेगा एवं इसकी मुद्रा की क्रय शक्ति बढ़ेगी। पंचम भाव का अधिपति एवं धन भाव का अधिपति एक ही ग्रह है अत: कार्य योजनायें राष्ट्र की प्रगति में सहायक होंगी एवं सुदृढ़ता प्रदान करेगी। औद्योगिक एक कृषि क्षेत्र की उत्पादकता विकासोन्मुखी होगी। आस्ट्रेलिया एवं भारत के वर्ष प्रवेश लग्नों की परस्पर मित्रता न होने से इस वर्ष दोनों देशों के संबंधों में प्रगाढ़ता नहीं आने पायेगी एवं कुछ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों तूफान आदि से इस वर्ष लोग त्रस्त होंगे क्योंकि षष्ठेश ही लग्नेश होकर उच्चस्थ है।

ईजराइल- नव वर्ष प्रवेश जेरुसलेम में मकर लग्न के समय हो रहा है। लग्न तथा कुटुम्ब भाव का अधिपति शनि द्वादशेश पराक्रमेश गुरु के साथ पंचमस्थ है तथा उस पर सुखेश-लाभेश भौम की दृष्टि होने से यह देश अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के सन्दर्भ में शक्तिशाली राष्ट्र की तरह व्यवहार करेगा। क्योंकि समसप्तक योग में कुटुम्बेश एवं सुखेश भी सम्मिलित हैं अत: जन धन की हानि का बड़ा कारण बनेगा जो कि बड़ी सैनिक कार्यवाही का सूत्रधार होगा। अष्टमेश एवं राज्येश दोनों तृतीयस्थ हैं जिससे शासक कोई कठोर निर्णय लेने के लिए बाध्य होगा। छठे भाव में राहु के स्थित होने एवं षष्ठेश के कुटुम्ब भाव में स्थित होने से पड़ोसी या किसी अन्य राष्ट्र से संबंधों में भारी गतिरोध उत्पन्न होगा जिसके फलस्वरूप आन्तरिक व्यवस्था एवं शान्ति प्रभावित होंगें। सप्तमेश के तृतीयस्थ होने से व्यापाकिर संबंधों पर भी कुछ विपरीत प्रभाव पड़ेगा किन्तु लाभेश भौम के लाभस्थ होने से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का मान बढ़ेगा। अष्टमेश रवि तृतीयस्थ होने से भी पड़ौसी राष्ट्रों से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। कर्माधिपति पंचमाधिपति होकर तृतीयस्थ उच्च का है अत: विदेश नीति को बहुत महत्व दिया जायेगा। व्ययेश के पंचमस्थ होने से तथा धनेश के साथ स्थित होने से रक्षा व्यय में भारी वृद्धि होगी। भारत एवं इजराइल के नववर्ष प्रवेश लग्न के स्वामी ग्रह एक ही स्थान पर स्थित हैं तथा दोनों नैसर्गिक रूप से सम हैं तथा सुखेश से दृष्ट हैं अत: आपसी लाभ को दृष्टिगत रखते हुए संबंधों में निकटता आयेगी।

प्रांतीय राज्यसंघ

इस पंचांग में प्रतिवर्ष ग्रह-गणना के आधार पर केन्द्र एवं प्रान्तों का संक्षिप्त भविष्य विवेचन यथामति विगत ५७ वर्षों से करा जा रहा है। अब यहाँ इस वर्ष सं. २०५८ वि. के वर्ष लग्न कुण्डली और केन्द्र एवं प्रान्तों की ग्रह स्थिति कूर्मचक्र विचारादि से संक्षेप में भारत के प्रमुख प्रान्तों का भविष्य विवेचन किया जाता है। प्रान्त एवं नगरों की प्रभाव राशियों पर प्रामाणिक निर्णय अभी तक सर्वसम्मत नहीं हो पाया है। कोई भारत की मकर राशि मानते हैं तो कुछ विद्वान कन्या राशि मानते हैं यही स्थिति प्रान्तों की भी है। यद्यपि अब राजतंत्र तो है नहीं, प्रजातंत्र में हर पांचवें वर्ष में मंत्रीमंडल एवं प्रधान शासक बदलते रहते हैं-उनकी प्रामाणिक जन्म कुंडलियां उपलब्ध न होने से केवल नाम राशि एवं सत्तारूढ़ लग्न से यथामति विचार लिखा जाता है, जिसके लिए यह नहीं कहा जा सकता कि यह विचार शत-प्रतिशत सही ही उतरेगा। तथापि गोचर स्थिति से मध्यम मानेन जो प्रान्तों का भविष्य लिखा जाता है वह ७५ प्रतिशत सही होता है ऐसा पंचांग पाठकों का मत है।

उत्तर प्रदेश- धनु राशि से प्रभावित भारत के इस सबसे बड़े राज्य की राशि में केतु स्थित है। जिसके प्रभाव वश इस वर्ष यह प्रदेश राजनीतिक दृष्टि से शीर्ष नेतृत्व के लिए चिन्ता का कारण बनेगा। क्योंकि राशि कुण्डली का लग्नाधिप रिपुभाव में कुटुम्बेश के साथ स्थित है। कुटुम्बाधिप पर मंगल की व्ययेश होकर दृष्टि पड़ने से राज्य सरकार व्ययभार वहन करने में अपने को असमर्थ समझेगी तथा राज्य की आर्थिक दृष्टि से स्थिति विपरीत होगी। सरकार को अपने गैर योजना व्यय में भारी कटौती करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। योजना-नीति का स्वामी भौम द्वादश भाव में अपने घर में स्थित होकर शनि से दृष्ट है। तृतीयेश के भी छठे होने से तथा शनि-मंगल के समसप्तक योग के प्रभाव वश उत्तर प्रदेश के अपने पड़ौसी राज्यों से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा तथा यह गतिरोध योजनाओं को प्रभावित करने वाला होगा। सुखभाव का अधिपति भी छठे भाव में गया है। सुखभाव सम्पत्ति, भूमि, मकान आदि परिसम्पत्तियों को दर्शाता है अत: परिसम्पत्तियों के बंटवारे में भी बाधा गतिरोध-विरोध उत्पन्न होगा। जनता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि की मार भी झेलनी पड़ेगी। सड़क-यातायात में सुधार की योजनाओं पर भी कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। शिक्षा के स्तर में सुधार की सम्भावना क्षीण है, पञ्चमाधिप मंगल द्वादश भाव में है एवं नैतिक शिक्षा का स्तर गिरने के साथ नैतिक पतन भी बढ़ेगा। यहाँ परिवार नियोजन को लागू करने के भी गम्भीर प्रयास करने पर विचार होगा किन्तु शनि की दृष्टि अभी प्रयासों को सफल नहीं होने देगी। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी एवं बाल शोषण की घटनाओं में वृद्धि होगी। षष्ठेश के उच्चस्थ होने से किसी रोग के महामारी का स्वरूप धारण करने की प्रबल सम्भावना है जिससे लोगों में भय व्याप्त होगा क्यों कि चतुर्थेश एवं षष्ठेश का अन्योन्यास संबंध हो गया है जिससे कुछ भाग अत्यधिक प्रभावित होकर कुछ लोग प्राकृतिक प्रकोपादि कारणों से स्थान परिवर्तन करने हेतु बाध्य होंगे। सप्तम स्थान में राहु की अवस्थिति तथा मंगल की सप्तमेश और सप्तम भाव पर दृष्टि तलाक एवं स्त्रियों पर अत्याचार की घटनायें बढ़ायेंगी। सप्तमेश बुध के होने से व्यापारिक उन्नति के अथक प्रयास किये जायेंगे एवं सूचना प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में इस वर्ष उत्तर प्रदेश विशेष उन्नति करेगा, बुध कर्मेश भी है और नीति निर्धारक ग्रह भौम से दृष्ट भी है। चन्द्रमा जो कि अष्टमेश है चतुर्थ भाव में स्थित होने से भूमिविकास एवं प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से राजकोष की स्थिति सुदृढ़ करने का प्रयास करेगा किन्तु चन्द्रमा के क्षीण होने से सफलता आंशिक ही मिलेगी।

नवमेश के षष्ठेश के साथ केन्द्रस्थ होने से कानून व्यवस्था की समस्या शासन की शिरावेदना बनेगी एवं कानून को शक्ति से लागू कर अपराधी तत्वों को नियन्त्रित करने के प्रयास किये जायेंगे। दशमेश तृतीयस्थ है एवं पंचमेश दशमेश को देख रहा है अत: शासक एवं शासक दल सत्ता पर पकड़ मजबूत करने की दृष्टि से नीति निर्धारण करेंगे किन्तु धनेश तृतीयेश एवं द्वादशेश की भी दशमेश पर दृष्टि शासक की सत्ता पर पकड़ को कमजोर करेगी। सत्ता पक्ष को सत्ता में बने रहने के लिए अथक प्रयास करने पड़ेंगे। सूर्य जो कि चतुर्थ भाव में स्थित है, धर्म के राजनीतिक दुरुपयोग का सूचक है क्योंकि चतुर्थ भाव विपक्ष को प्रभावित कर रहा है। अत: इसका लाभ विपक्ष को भी मिलेगा।

पंजाब- मीन राशि से प्रभावित इस राज्य का राश्यधिप तृतीयस्थ होकर लाभेश द्वादशेश शनि के साथ स्थित है। जिससे इस वर्ष यहाँ की राजनीति में गतिरोध उत्पन्न होगा तथा जोड़-तोड़ की राजनीति से यहाँ की सत्ता प्रभावित होगी। षष्ठेश सूर्य एवं अष्टमेश शुक्र दोनों ही लग्न को प्रभावित कर रहे हैं एवं दशम स्थान में केतु स्थित होकर सत्ता पक्ष के लिए विषम स्थिति पैदा करेगा। धनभाव का अधिपति नवम भाव में स्वराशिस्थ होने से इस राज्य की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। मंगल की दृष्टि तृतीय भाव में है एवं तृतीयेश उच्च का है अत: पड़ौसी राज्यों से कुछ नीतिगत विरोध स्वरूप संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। चतुर्थेश का द्वादश भावस्थ होना कुछ छोटी- बड़ी आतंकवादी घटनाओं का कारण बनेगा। चतुर्थ राहु लोगों में अशान्ति एवं भय का वातावरण उत्पन्न करेगा। प्राकृतिक प्रकोप एवं मानवीकृत प्रज्ञापराध के कारण कुछ स्थानों पर लोग पलायन के लिए बाध्य होंगे। पंचमेश क्षीण होकर लग्नस्थ है अत: कुशल नीति एवं विकास योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावित होगा। सप्तमेश बुध मित्र राशि का होकर व्ययस्थ है तथा मंगल से भी दृष्ट है अत: व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि होगी किन्तु कुछ क्षेत्रों में शनि की दृष्टि के कारण विपरीत प्रभाव पड़ेगा एवं औद्योगिक क्षेत्र प्रभावित होगा। धार्मिक क्षेत्र पर भी शनि के कारण प्रभाव पड़ रहा है। अत: धार्मिक कट्टरतावाद के विरुद्ध भी कुछ स्वर उठेंगे।

हरियाणा- यह प्रदेश बुध की राशि मिथुन के प्रभाव में है। लग्नाधिप बुध नवमभाव में मित्रराशिस्थ होकर मंगल से भी दृष्ट है। मंगल षष्ठेश भी है। अत: यह वर्ष इस राज्य की प्रगति की दृष्टि से मध्यम है। लग्नस्थ राहु शासन संचालकों के लिए नित्य नई समस्यायें उत्पन्न करेगा तथा जोड़-तोड़ की राजनीति भी इस राज्य की प्रगति में कुछ बाधा उत्पन्न करेगी। आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक नहीं होगी। धनेश क्षीण चन्द्र है एवं धन भाव पर शनि की दृष्टि भी है अत: राजकोष की स्थिति सुधारने के लिए विशेष प्रयास किये जायेंगे। इन प्रयासों को शनि गुरू के साथ होकर व्यापारिक गतिविधियों द्वारा एवं औद्योगिक क्षेत्र की नीति से बल मिलेगा। तृतीयेश रवि दशमस्थ है अत: उर्जा के क्षेत्र में विद्युत उत्पादन आदि पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। इस राज्य में कुछ महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को, पंचमेश शुक्र के उच्चस्थ होने के कारण, मूर्तरूप देने के लिए गम्भीर प्रयास किये जायेंगे। अष्टमेश शनि व्ययभाव में स्थित है तथा अष्टमेश नवमेश भी है अत: आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु बाहरी निवेश को प्राथमिकता दी जायेगी जिसमें आंशिक सफलता भी मिलेगी। नवमेश एवं नवम भाव के भौम से दृष्ट होने के फलस्वरूप कानून व्यवस्था में सुधार किया जायेगा एवं कानून को कठोरता से लागू किया जायेगा। जिसमें राज्याधिप का व्ययस्थ होना सहायक होगा।

काश्मीर- तुलाराशि से प्रभावित इस राज्य का लग्नेश एवं राज्येश छठे भाव में स्थित है अत: शान्ति की कल्पना एक दिवास्वप्न के समान प्रतीत हो रही है। सुखेश-पंचमेश शनि अष्टम में स्थित है तथा षष्ठेश के साथ में ही स्थित है तथा सप्तमेश-कुटुम्बेश के साथ प्रतियुति योग शनि-मंगल का बन गया है जो कि आतंकवादी गतिविधियों में कमी का संकेत नहीं दे रहा है। नवाब खान खाना का यह वाक्य **'यदा शत्रु खाने पड़े उच्च का, करे खाक दौलत, फिरे जावजा'** इस राज्य की आर्थिक स्थिति डांवाडोल होगी। यद्यपि धनेश स्वगृही धनभावस्थ ही है किन्तु शनि से एवं तृतीयेश-षष्ठेश गुरु से दृष्ट होने के कारण प्रभाव हीन हो गया है। मंगल के प्रभाव वश शासन कुछ कठोर निर्णय अवश्य लेगा एवं बुध की पंचमस्थ स्थिति कुछ दूरगामी शान्ति स्थापित करने की योजना बनवायेगी। नवमस्थ राहु सांप्रदायिकता से जुड़े समाज विरोधी तत्त्वों को बढ़ावा देगा जो कि राज्य की प्रगति के लिए बाधक होंगे। शासन तन्त्र को सत्ता का सुचारु संचालन करने के लिए बहुत प्रयास करने पड़ेंगे। शान्ति स्थापित करने के लिए की गई शान्ति वार्ताओं के सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी इस अभागे भूखण्ड में हिंसा, बम विस्फोट तथा अन्य विध्वंसक गतिविधियों द्वारा जनता को त्रस्त करते रहेंगे। शासन के उदारवादी शान्ति प्रयास तथा सैनिक कार्रवाइयों पर रोक, अनिष्टकारी सिद्ध होगी।

हिमाचल प्रदेश- इस प्रदेश की प्रभाव राशि मीन है। दशमेश शनि के साथ स्थित है एवं दशम में केतु स्थित है अत: शासक दल को या प्रधान शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा राज्य की आर्थिक स्थिति यद्यपि विकासोन्मुख होगी किन्तु शनि की धनेश पर दृष्टि अनपेक्षित व्यय, गैर योजनाव्यय बढ़ जाने पर विकास योजनाओं को प्रभावित करेगी। चतुर्थ भाव का राहु कुछ बड़े प्राकृतिक प्रकोपों का प्रभाव डालकर लोगों में भय एवं अशान्ति का वातावरण उत्पन्न करेगा। पंचमेश यद्यपि लग्नस्थ होकर योजनाओं के कार्यान्वियन का मार्ग प्रशस्त करता है किन्तु क्षीण चन्द्रमा वांछित परिणाम नहीं देगा। सप्तमेश द्वादशभाव में स्थित है एवं लाभेश शनि से भी दृष्ट होने से बाह्य निवेश औद्यौगिक क्षेत्र में विकास हेतु होगा। इस वर्ष कृषि क्षेत्र को प्राकृतिक प्रकोपों से भारी क्षति होगी।

मध्यप्रदेश- प्रभावराशि वृष का स्वामी शुक्र लाभ स्थान में बैठकर सत्तासंचालक को उच्चराशि द्वारा शक्ति प्रदान कर रहा है किन्तु प्रभाव राशि में उससे अष्टम स्थान के अधिपति की उपस्थिति अकस्मात किसी समस्या के उत्पन्न होने का भी संकेत कर रही

है। राज्याधिप- भाग्याधिप शनि लग्नस्थ मित्र राशि का होने से राज्य पक्ष के लिए शुभ हैं एवं राज्य की उन्नति कराने वाला है। द्वितीय भाव में राहु सत्तादल की अर्न्तकलह को जन्म देने वाला है जिससे प्रधान शासक को असुविधा होगी तथा विकास कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। चतुर्थेश के लाभस्थ होने से कृषि क्षेत्र एवं कृषि के विकास की ओर ध्यान दिया जायेगा। पंचमेश बुध केन्द्रस्थ मित्र राशि का होकर विकास योजनाओं को गति प्रदान करेगा एवं तकनीकी दृष्टि से भी, मंगल के सप्तमस्थ होने से, यह राज्य उन्नति करेगा। महिलाओं की प्रगति एवं विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार विशेष प्रयास करेगी। नीति निर्धारण में एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में यह राज्य अग्रणी सिद्ध होगा।

गुजरात- प्रभाव राशि सिंह का अधिपति रवि अपने से अष्टम राशि में पंचमेश एवं द्वादशेश के साथ है अत: शासक दल को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा कुछ अपने ही लोग राजनीतिक गतिरोध उत्पन्न करेंगे जो नेतृत्व के लिए चिन्ता का विषय होंगे। आर्थिक दृष्टि से यह राज्य औद्यौगिक आधार पर प्रगति करेगा। सुखेश सुख स्थान में बेठकर भूमि विकास एवं कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने के उपायों के होने का संकेत दे रहा है। केतु नवमस्थ होकर योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधक बन गया है जिससे विकास की गति अपेक्षित लक्ष्य से कम होगी। तृतीयेश अष्टमस्थ होकर जल सीमा या क्षेत्रीय सीमा विवाद जैसी किसी समस्या को उत्पन्न करेगा। बाल मृत्युदर में भी वृद्धि चिन्ता का कारण बनेगी। नैतिक शिक्षा का ह्रास भी चिन्ता का कारण बनेगा। कानून व्यवस्था की दृष्टि से देखने पर कुछ बड़ी दुर्घटनाओं या आतंकवादी गतिविधियों से जनित दुर्घटनाएं इस वर्ष होंगी जिन्हें नियंत्रित करने के लिए प्रशासन को कड़े उपाय करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

दिल्ली- देश की राजधानी की प्रभाव राशि वृष है राशि का स्वामी ग्रह लाभस्थ उच्च का होकर बैठा है अत: शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी। किन्तु धन भाव में स्थित राहु अर्न्तकलह को जन्म देने वाला है जिससे निपटने के लिए शासक को विकास कार्यों से हटकर ध्यान देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। तृतीयेश के क्षीण होकर लाभस्थ होने से केन्द्र सरकार एवं पड़ौसी राज्यों से कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों पर मतभेद होंगे एवं शासक का प्रबल विरोध भी होगा। चतुर्थेश लाभस्थ हैं अत: प्रभावी आवास योजना लागू होगी एवं राज्य की प्रगति अनेक बाधाओं के होने पर भी संतोष जनक होगी। महिलाओं की भागीदारी विकास में सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार विशेष प्रयास करेगी। इस राज्य की योजना एवं विकास दर प्रगति कारक होगी।

राजस्थान- इस राज्य की प्रभाव राशि तुला का स्वामी उच्च का होकर छठा बैठा है जो कि शासक के लिए विपरीत स्थिति पैदा करेगा एवं राज्य की प्रगति में बाधा डालने वाला है। विरोधीदल शासक के लिए चुनौती कारक स्थिति उत्पन्न करेगा। यह राज्य सीमापार से प्रायोजित आतंकवाद एवं समाज विरोधी अपराधी तत्त्वों के कुकृत्यों से

प्रभावित होगा। अत: राज्य की विकास योजनाएं प्रभावित होंगी एवं विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू ढंग से नहीं हो पायेगा। आर्थिक दृष्टि से यह राज्य मजबूत नहीं होगा। यद्यपि धनेश धन भाव में स्वराशिस्थ है क्योंकि तृतीयेश- षष्ठेश की कुटुम्ब भाव पर दृष्टि है तथा शनि भी उसे कमजोर कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार बुध के कारण होगा किन्तु मंगल-शनि की स्थिति वशात् नैतिक पतन एवं बालशोषण की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं कानून-व्यवस्था की स्थिति संतोष जनक नहीं होगी। अत: यह वर्ष सरकार के लिए चुनौती भरा है।

महाराष्ट्र- नामराशि सिंह का स्वामी गुरु अपने से अष्टम स्थान में दशमेश के साथ बैठकर सत्तासंघर्ष को बढ़ाने वाला है एवं शासक के लिए चुनौतियां पेश होंगी। आर्थिक दृष्टि से यह राज्य सम्पन्न होगा किन्तु अपराधों में कमी न होने के कारण सत्तापक्ष को भारी विरोधों का सामना करना पड़ेगा। सुखेश मंगल का रिपु भावाधिप शनि के साथ प्रतियोग होने से कुछ अप्रिय घटनायें घटेंगी तथा अपराधों में वृद्धि चिंता का कारण बनेगी। योजना कारक स्थान केतु के प्रभाव में होने से योजनाओं का क्रियान्वयन उचित प्रकार से नहीं होगा। इस राज्य में औद्यौगिक विकास की दरवांछित लक्ष्य को प्राप्त नहीं करेगी एवं बाह्य निवेशक इस राज्य में निवेश अल्प करेंगे। सप्तमेश पर मंगल की दृष्टिवशात् अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए यहाँ न्याय पालिका का हस्तक्षेप मंगल के प्रभाव वश होगा।

बिहार- नामराशि वृष से प्रभावित इस राज्य का राश्याधिप उच्च का होकर लाभस्थ है अत: शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी किन्तु लग्नाधिप रिपुभाव का भी अधिपति है एवं अष्टमेश लग्नस्थ है जो कि शासकदल एवं शासक के लिए कोई अकस्मात् गम्भीर चुनौती उत्पन्न करेगा जिससे शासक को पार पाने के लिए गम्भीर प्रयास करने होंगे। कुटुम्ब भाव पर राहु के स्थित होने से राज्य की आर्थिक स्थिति विषम होगी एवं घाटे की स्थिति बढ़ेगी। कानून व्यवस्था की स्थिति विस्फोटक होगी एवं शासक पूर्ण प्रयास करने पर भी स्थिति को पूर्ण नियंत्रित नहीं कर पायेंगे। शनि मंगल का प्रतियोग रक्तपात करायेगा। अष्टम स्थान का केतु भूमि संबंधी सुधार में बाधा उत्पन्न करेगा। योजनाओं का क्रियान्वयन बाधित होगा। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं महिलाओं के अधिकारों को लेकर गतिरोध उत्पन्न होगा। जनता में असुरक्षा एवं भय की भावना बलवती होगी।

दक्षिण राज्य आन्ध्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु- आन्ध्र प्रदेश की नामराशि का अधिपति अष्टम भाव में स्वराशिस्थ है अत: तकनीकी क्षेत्र का विकास राजकोष बढ़ाने में एवं राज्य की प्रगति में सहायक होगा। द्वादशेश एवं धनेश का अन्योन्यास संबंध बाह्य निवेश को राज्य की प्रगति के लिए आकर्षित करेगा। चतुर्थेश के द्वादशस्थ होने के कारण एवं शनि की दृष्टि के प्रभाव-वश प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि क्षेत्र एवं कृषि की हानि भी होगी। लग्नेश एवं राज्येश का परस्पर दृष्टि संबंध इस वर्ष प्रधान शासक से कुछ

ऐसे विपरीत निर्णय भी करा सकता है जिसके दूरगामी राजनीतिक परिणाम होंगे। कर्नाटक राज्य की राशि पर राहु का प्रभाव होने से विकास योजनाओं का क्रियान्वयन त्वरित गति से नहीं होगा क्योंकि कार्याधिप गुरु भी द्वादश भाव में स्थित है। द्वादशेश के दशमभाव में उच्चस्थ होने से वाह्य निवेश की प्रबल संभावना है। कृषि क्षेत्र एवं कृषि विकास की ओर यह राज्यध्यान देगा। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बुध के प्रभाव वश यह राज्य प्रगति करेगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी शुक्र के प्रभाववश विशेष कार्ययोजना द्वारा यह राज्य प्रगति करेगा। तुला नाम राशि वाले राज्य तमिलनाडु के लिए यह वर्ष उलटफेर वला सिद्ध हो सकता है। राश्याधिप उच्च का छठे भाव में बैठकर गैर योजना व्यय में भारी वृद्धि करेगा जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति विपरीत होने की सम्भावना है। राजनीतिक या किसी अन्य अकस्मात घटना के फलस्वरूप इस वर्ष राजनीतिक गतिरोध उत्पन्न होने की प्रबल सम्भावना है। योजनाओं का क्रियान्वयन करने में अनपेक्षित विलम्ब होगा। प्राकृतिक प्रकोपों से भी यह राज्य प्रभावित होगा। केरल राज्य भी राहु के प्रभाव वश योजनाओं के क्रियान्वयन में अपेक्षित गति से कार्य नहीं कर पायेगा। बाह्य निवेश को आकर्षित करने में यह राज्य सफल होगा। प्रौद्योगिकी की क्षेत्र में प्रगति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के गम्भीर प्रयास किये जायेंगे। प्रधान शासक को विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा।

बंगाल, असम, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा- बंगाल की राशि का अधिपति उच्च का होकर लाभस्थ है एवं अष्टमेश लग्नस्थ है तथा कुटुम्ब भाव में राहु यहाँ राजनीतिक गतिरोध को उत्पन्न करने वाला है। यह राज्य कुछ राजनीतिक अशान्ति से त्रस्त होगा। इस वर्ष इस राज्य की प्रगति में बाधा उत्पन्न होगी एवं योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारु रूप से नहीं हो पायेगा।

आसाम की राशि का अधिपति अष्टम राशि में स्वराशिस्थ है अरुणाचल प्रदेश एवं आसाम दोनों ही राज्यों में राज्याधिप की स्थिति वशात् एवं शनि-मंगल का प्रतियोग पूर्वोत्तर राज्यों को आतंकवादी गतिविधियों, बम्बविस्फोट, अग्निकाण्ड अपहरण एवं दुर्घटनाओं से पीड़ित रखेगा। परिणामस्वरूप लोगों में भय एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा। चतुर्थेश के व्ययस्थ होने से एवं शनि की दृष्टि वशात् कृषि क्षेत्र एवं कृषि की भी हानि, अतिवर्षण, आंधी-तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों से होगी। पराक्रम भाव में राहु पड़ौसी राज्यों से संबंधों में गतिरोध उत्पन्न करने वाला है। पंचमाधिप का व्ययस्थ होना नीति निर्धारण में पर्याप्त सावधानी नहीं बरतने देगा जिससे राज्यों की अपेक्षित प्रगति नहीं होगी। इस वर्ष इन राज्यों के शासकों को विषम राजनीतिक स्थिति का सामना करना पड़ेगा। मेघालय का राश्याधिप भी अष्टम राशि में स्थित है जिससे प्रधान शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। चतुर्थेश के बलवान होने पर भूमि विकास, योजनाओं का मुख्याधार होगा किन्तु शनि का प्रतियोग योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करने वाला है। त्रिपुरा में राजनीतिक गतिरोध सम्भव है। शासक को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा पड़ेगी एवं राज्य की विकास योजनायें मन्दगति से चलेंगी। उड़ीसा का राश्याधिप उच्च राशिस्थ है किन्तु कुटुम्ब स्थान राहु से ग्रसित होने के कारण लोगों को सत्ता से अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं होगा। इस वर्ष भूमिसुधार को लक्ष्य कर योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार के प्रयास होंगे। अष्टमस्थ केतु आंधी-तूफान आदि से कृषि क्षेत्र को क्षति पहुंचायेगा। चतुर्थेश के साथ षष्ठेश होने से कृषि क्षेत्र की हानि की प्रबल सम्भावना है। भारत के पूर्वाञ्चल में आतंकवादी अराजक तत्व, हिंसा, तोड़फोड़, बंब विस्फोट, दंगा फसाद आदि के द्वारा जनता को त्रस्त करेंगे तथा शासन के लिए समस्या प्रस्तुत करेंगे।

खाद्यान्न समस्या

अन्नं प्राणोबलं चान्नमन्नं सर्वार्थ साधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः।

गेहूँ आदि खाद्य पदार्थों की महंगाई निरन्तर बढ़ते जाने की भविष्यवाणी गत ३५ वर्षों से इस पंचांग में करते आ रहे हैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शनैः-शनैः महंगाई बढ़ती गई और विगत २२ वर्षों से तो सुरसा के मुख की भांति विकराल रूप से बढ़ती जा रही है। १०-११ वर्ष पूर्व गेहूँ चावल, चना, चीनी, चांदी, सोना आदि का जो भाव था वह दुगने तिगुने से भी अधिक हो गया है। मंहगाई रोकने और गरीबी दूर करने की राजनेताओं की चुनावी घोषणाएं निरर्थक सिद्ध हुई। भारत के प्राचीन महर्षियों ने अन्न की महिमा में कहा है कि राजा या राष्ट्रनायक को अपने राजकीय अन्न भंडार में तीन वर्ष तक राष्ट्र के पोषण योग्य संग्रह रखना चाहिए। सोना, चांदी, माणिक्य आदि रत्नों की ओर न भाग कर जैसे और जिस विधि से भी हो अधिक अन्न उपजाकर अपना तथा राष्ट्र का हित करना चाहिए।

चेतावनी- वर्ष प्रवेश लग्न चक्र के चतुर्थ भाव में राहु स्थित है तथा कृषि क्षेत्र का प्रतिनिधि ग्रह बुध द्वादश भाव में स्थित है, अतः देश के कृषि उत्पादक कृषकों को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा इसके फल स्वरूप कृषि उत्पादन में भारी गिरावट आयेगी एवं द्वादशस्थ बुध बाहर से कृषि उत्पादों का आयात कराने के लिए सरकार को बाध्य करेगा। अतः ग्रहस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए कृषकों की समस्याओं का समाधान करना राष्ट्र हित में होगा एवं इसके दूरगामी परिणाम होंगे।

वायु परीक्षा

यहाँ वर्षा दुर्भिक्ष उत्पातादि का विचार ग्रहयोगानुसार लिखा गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा और अन्य दिव्य अन्तरिक्ष-लक्षण जहाँ शुभ शकुन का संकेत देंगे, वहाँ अवर्षण उत्पात दुर्भिक्ष न होकर सामयिक सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जहाँ आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त समय दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कोण की वायु चलेगी वहाँ दुर्भिक्ष, उत्पात, रोग, भय, अधिक होंगे। विद्वान, दैवज्ञों को वर्ष भर के गर्भ लक्षण शकुन विचार नोट करने चाहिए। वर्ष भर के न हो सकें

शेष पृष्ठ २२५ पर

दैनिक स्पष्ट ग्रह

इस पंचांग में यहां नीचे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, विकला पर्यन्त तथा राहु, हर्षल और नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये हैं। ये दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ बजकर ३० मिनट के हैं। प्रारंभ में सूर्य से पूर्व साम्पातिक काल मध्य रात्रि १२ बजे का लगाया गया है। इन स्पष्ट ग्रहों के प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है जैसे भारत में कहीं भी किसी दिन स्टैण्डर्ड टाईम दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो प्रातः घण्टा ५ मिनट ३० से मध्यान्होत्तर घं. १४/४५ तक घं. ९/१५ हुए, यह घंटात्मक धन चालन हुआ। इस चालन को २।। (ढाई) से गुणा करने पर २३।७।३० घटी, पल, विपलात्मक चालन बन गया। इस चालन के द्वारा दैनिक ग्रह गति को त्रैराशिक या गोमूत्रिका क्रम से गुणा कर दें, कलादि फल को मार्गी ग्रह में जोड़ने से तथा वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट राहु में ६ राशि जोड़ने पर केतु स्पष्ट हो जाता है अतःएव यहाँ केतु अलग से नहीं लिखा है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने की विधि यह है कि जिस दिन गति स्पष्ट करनी है, उस दिन के राश्यादि ग्रह को अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटाने से जो शेष रहे वह उस दिन की गति होगी। यह चांद्र वर्ष २६ मार्च, २००१ से प्रारंभ होकर १२ अप्रैल २००२ ई. को समाप्त हो रहा है जिसके दैनिक स्पष्ट ग्रह यहाँ नीचे दिये जा रहे हैं-

मार्च सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५२′।०९″ मासारम्भे (प्लूटो) ७।२१°।२७′ (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मार्च	साम्पा. काल घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	मार्च
२६	१२।१४।०२	११।११।३१।२८	११।२२।२४।४३	०७।२४।३१।०४	१०।१७।५८।४२	०१।१२।४३।३३	११।१८।१४।३८	०१।०३।१९।०३	०२।१७।२२।१६	०९।२९।२१	०९।१४।२०	२६
२७	१२।१७।५९	११।१२।३०।५३	००।०५।०८।१२	०७।२४।५४।४२	१०।१९।२७।४०	०१।१२।५३।२८	११।१७।३८।२६	०१।०३।२४।५१	०२।१७।१९।२५	०९।२९।२४	०९।१४।२१	२७
२८	१२।२१।५५	११।१३।३०।१६	००।१८।०३।०२	०७।२५।१८।०१	१०।२०।५८।०६	०१।१३।०३।३१	११।१७।०१।२९	०१।०३।३०।४३	०२।१७।१५।५४	०९।२९।२६	०९।१४।२३	२८
२९	१२।२५।५१	११।१४।२९।३७	०१।०१।०९।०५	०७।२५।४१।०१	१०।२२।२९।५८	०१।१३।१३।३९	११।१६।२४।००	०१।०३।३६।३९	०२।१७।१२।१४	०९।२९।२९	०९।१४।२४	२९
३०	१२।२९।४९	११।१५।२८।५६	०१।१४।२६।३२	०७।२६।०३।४२	१०।२४।०३।१७	०१।१३।२३।५४	११।१५।४६।१४	०१।०३।४२।३९	०२।१७।०९।३३	०९।२९।३२	०९।१४।२५	३०
३१	१२।३३।५५	११।१६।२८।१२	०१।२७।५५।५९	०७।२६।२६।०४	१०।२५।३८।०१	०१।१३।३४।१५	११।१५।०८।२७	०१।०३।४८।४३	०२।१७।०६।२२	०९।२९।३४	०९।१४।२७	३१

अप्रैल सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : ५३°।०१′।२२″ मासारम्भे (प्लूटो) ७।२३°।४७′(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
अप्रैल	साम्पा. काल घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अप्रैल
१	२२।३६।४३	११।१७।१२।०३	०७।०२।०५।४६	००।२७।२२।१९	११।१०।४१।१८	०२।१३।११।५२	००।०५।४६।२५	०१।१६।३२।२२	०१।२७।४२।४०	१०।०३।२५	०९।१६।३६	१
२	१२।४०।४१	११।१८।११।१४	०७।१६।०४।०६	००।२८।०३।४३	११।१२।३८।३२	०२।१३।१७।३१	००।०७।००।२३	०१।१६।३७।३५	०१।२७।३९।२९	१०।०३।२७	०९।१६।३८	२
३	१२।४४।३७	११।१९।१०।२४	०७।२९।३३।०५	००।२८।४५।०५	११।१४।३७।०२	०२।१३।२३।१८	००।०८।१४।१९	०१।१६।४२।५३	०१।२७।३६।११	१०।०३।३०	०९।१६।३९	३
४	१२।४८।३३	११।२०।०९।३२	०८।१२।३५।०६	००।२९।२६।२५	११।१६।३६।४६	०२।१३।२९।१५	००।०९।२८।१४	०१।१६।४८।१५	०१।२७।३३।०८	१०।०३।३३	०९।१६।४०	४
५	१२।५२।३०	११।२१।०८।३८	०८।२५।१४।०७	०१।००।०७।४३	११।१८।३७।४१	०२।१३।३५।२१	००।१०।४२।०६	०१।१६।५३।४१	०१।२७।२९।५७	१०।०३।३५	०९।१६।४१	५
६	१२।५६।२७	११।२२।०७।४२	०९।०७।३४।४७	०१।००।४८।५९	११।२०।३९।४२	०२।१३।४१।३७	००।११।५५।५७	०१।१६।५९।१२	०१।२७।२६।४६	१०।०३।३८	०९।१६।४३	६
७	१३।००।२३	११।२३।०६।४५	०९।१९।४२।५३	०१।०१।३०।१३	११।२२।४२।४४	०२।१३।४८।०१	००।१३।०९।४५	०१।१७।०४।४७	०१।२७।२३।३६	१०।०३।४०	०९।१६।४४	७
८	१३।०४।२०	११।२४।०५।४६	१०।०१।३९।५६	०१।०२।११।२४	११।२४।४६।३८	०२।१३।५४।३५	००।१४।२३।३२	०१।१७।१०।२७	०१।२७।२०।२५	१०।०३।४३	०९।१६।४५	८
९	१३।०८।१६	११।२५।०४।४५	१०।१३।३२।५१	०१।०२।५२।३४	११।२६।५१।१८	०२।१४।०१।१७	००।१५।३७।१७	०१।१७।१६।१०	०१।२७।१७।१४	१०।०३।४५	०९।१६।४६	९
१०	१३।१२।१३	११।२६।०३।४२	१०।२५।२३।५१	०१।०३।३३।४२	११।२८।५६।३३	०२।१४।०८।०९	००।१६।५१।००	०१।१७।२१।५८	०१।२७।१४।०३	१०।०३।४८	०९।१६।४७	१०
११	१३।१६।१०	११।२७।०२।३८	११।०७।१५।२८	०१।०४।१४।४७	००।०१।०२।११	०२।१४।१५।०९	००।१८।०४।४२	०१।१७।२७।४९	०१।२७।१०।५३	१०।०३।५०	०९।१६।४८	११
१२	१३।२०।०६	११।२८।०१।३१	१०।१९।०९।४१	०१।०४।५५।५०	००।०३।०७।५९	०२।१४।२२।१७	००।१९।१८।२९	०१।१७।३३।४५	०१।२७।०७।४२	१०।०३।५३	०९।१६।४९	१२

अप्रैल सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।११" मासारम्भे (प्लूटो) ७।२१°।२४' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
अप्रैल	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	मई
१	१२।३७।४१	११।१७।२७।२६	०२।११।३८।२०	०७।२६।४८।०५	१०।२७।१४।११	०१।१३।४४।४२	११।१४।३०।५४	०१।०३।५४।५०	०२।१७।०३।११	०९।२९।३७	०९।१४।२८	१
२	१२।४१।३८	११।१८।२६।३८	०२।२५।३४।२८	०७।२७।०९।४७	१०।२८।५१।४६	०१।१३।५५।१६	११।१३।५३।४९	०१।०४।०१।०१	०२।१७।००।०१	०९।२९।३९	०९।१४।२९	२
३	१२।४५।३४	११।१९।२५।४७	०३।०९।४४।३८	०७।२७।३१।०८	११।००।३०।४६	०१।१४।०५।५५	११।१३।१७।२८	०१।०४।०७।१६	०२।१६।५६।५०	०९।२९।४२	०९।१४।३१	३
४	१२।४९।३०	११।२०।२४।५४	०३।२४।०७।५४	०७।२७।५२।०८	११।०२।११।१२	०१।१४।१६।४०	११।१२।४२।०३	०१।०४।१३।३३	०२।१६।५३।३९	०९।२९।४५	०९।१४।३२	४
५	१२।५३।२८	११।२१।२३।५९	०४।०८।४९।२८	०७।२८।१२।४६	११।०३।५३।०४	०१।१४।२७।३०	११।१२।०७।५०	०१।०४।१९।४४	०२।१६।५०।२९	०९।२९।४७	०९।१४।३३	५
६	१२।५७।२४	११।२२।२३।०२	०४।२३।२०।३२	०७।२८।३३।०२	११।०५।३६।२२	०१।१४।३८।२६	११।११।३५।००	०१।०४।२६।१९	०२।१६।४७।१८	०९।२९।४९	०९।१४।३४	६
७	१३।०१।२०	११।२३।२२।०२	०५।०७।५२।२९	०७।२८।५२।५६	११।०७।२१।०७	०१।१४।४९।२८	११।११।०३।४५	०१।०४।३२।४७	०२।१६।४४।०७	०९।२९।५२	०९।१४।३५	७
८	१३।०५।१७	११।२४।२१।००	०५।२२।२७।५२	०७।२९।१२।२६	११।०९।०७।२०	०१।१५।००।३४	११।१०।३४।१६	०१।०४।३९।१८	०२।१६।४०।५६	०९।२९।५४	०९।१४।३६	८
९	१३।०९।१३	११।२५।१९।५७	०६।०६।४९।३५	०७।२९।३१।३४	११।१०।५५।०२	०१।१५।११।४६	११।१०।०६।४२	०१।०४।४५।५२	०२।१६।३७।४६	०९।२९।५७	०९।१४।३७	९
१०	१३।१३।१०	११।२६।१८।५१	०६।२०।३४।०४	०७।२९।५०।१६	११।१२।४४।१२	०१।१५।२३।०३	११।०९।४१।११	०१।०४।५२।३०	०२।१६।३४।३५	०९।२९।५९	०९।१४।३८	१०
११	१३।१७।०७	११।२७।१७।४४	०७।०४।०२।०८	०८।००।०८।३५	११।१४।३४।५२	०१।१५।३४।२६	११।०९।१७।५१	०१।०४।५९।१०	०२।१६।३१।२४	१०।००।०१	०९।१४।३९	११
१२	१३।२१।०३	११।२८।१६।३४	०७।१७।०५।०६	०८।००।२६।२७	११।१६।२७।०२	०१।१५।४५।५३	११।०८।५६।४६	०१।०५।०५।५३	०२।१६।२८।१३	१०।००।०३	०९।१४।४०	१२
१३	१३।२४।५९	११।२९।१५।२३	०७।२९।४४।३७	०८।००।४३।५४	११।१८।२०।४२	०१।१५।५७।२५	११।०८।३८।०२	०१।०५।१२।३९	०२।१६।२५।०३	१०।००।०५	०९।१४।४१	१३
१४	१३।२८।५७	००।००।१४।१०	०८।१२।०४।०३	०८।०१।००।५४	११।२०।१५।५२	०१।१६।०९।०२	११।०८।२१।४२	०१।०५।१९।२८	०२।१६।२१।५२	१०।००।०८	०९।१४।४२	१४
१५	१३।३२।५३	००।०१।१२।५५	०८।२४।०८।०३	०८।०१।१७।२६	११।२२।१२।३२	०१।१६।२०।४३	११।०८।०७।४९	०१।०५।२६।२०	०२।१६।१८।४१	१०।००।१०	०९।१४।४३	१५
१६	१३।३६।४९	००।०२।११।३९	०९।०६।०१।५१	०८।०१।३३।३०	११।२४।१०।४१	०१।१६।३२।२९	११।०७।५६।२२	०१।०५।३३।१४	०२।१६।१५।३१	१०।००।१२	०९।१४।४४	१६
१७	१३।४०।४६	००।०३।१०।२१	०९।१७।५०।५७	०८।०१।४९।०६	११।२६।१०।१७	०१।१६।४४।२०	११।०७।४७।२४	०१।०५।४०।११	०२।१६।१२।२०	१०।००।१४	०९।१४।४४	१७
१८	१३।४४।४३	००।०४।०९।०१	०९।२९।४०।४२	०८।०२।०४।१२	११।२८।११।१७	०१।१६।५६।१५	११।०७।४०।५४	०१।०५।४७।१०	०२।१६।०९।०९	१०।००।१६	०९।१४।४५	१८
१९	१३।४८।३९	००।०५।०७।४०	१०।११।३५।५३	०८।०२।१८।४७	००।००।१३।३९	०१।१७।०८।१५	११।०७।३६।५०	०१।०५।५४।१२	०२।१६।०५।५८	१०।००।१८	०९।१४।४६	१९
२०	१३।५२।३६	००।०६।०६।१७	१०।२३।४०।३७	०८।०२।३२।५१	००।०२।१७।१८	०१।१७।२०।१८	मा.११।०७।३५।१२	०१।०६।०१।१६	०२।१६।०२।४८	१०।००।२०	०९।१४।४७	२०
२१	१३।५६।३२	००।०७।०४।५२	११।०५।५८।००	०८।०२।४६।२४	००।०४।२२।०८	०१।१७।३२।२६	११।०७।३५।५६	०१।०६।०८।२३	०२।१५।५९।३७	१०।००।२१	०९।१४।४७	२१
२२	१४।००।२८	००।०८।०३।२५	११।१८।३०।०३	०८।०२।५९।२४	००।०६।२८।०३	०१।१७।४४।३८	११।०७।३९।००	०१।०६।१५।३३	०२।१५।५६।२६	१०।००।२३	०९।१४।४८	२२
२३	१४।०४।२६	००।०९।०१।५७	००।०१।१७।३५	०८।०३।११।५१	००।०८।३४।५४	०१।१७।५६।५४	११।०७।४४।२१	०१।०६।२२।४३	०२।१५।५३।१५	१०।००।२५	०९।१४।४९	२३
२४	१४।०८।२२	००।१०।००।२७	००।१४।२०।१५	०८।०३।२३।४५	००।१०।४२।३२	०१।१८।०९।१४	११।०७।५१।५७	०१।०६।२९।५७	०२।१५।५०।०५	१०।००।२७	०९।१४।४९	२४
२५	१४।१२।१८	००।१०।५८।५४	००।२७।३६।४७	०८।०३।३५।०४	००।१२।५०।४५	०१।१८।२१।३८	११।०८।०१।४२	०१।०६।३७।१२	०२।१५।४६।५४	१०।००।२८	०९।१४।५०	२५
२६	१४।१६।१५	००।११।५७।२०	०१।११।०५।२५	०८।०३।४५।४८	००।१४।५९।१९	०१।१८।३४।०५	११।०८।१३।३४	०१।०६।४४।३०	०२।१५।४३।४३	१०।००।३०	०९।१४।५०	२६
२७	१४।२०।१२	००।१२।५५।४४	०१।२४।४४।१५	०८।०३।५५।५७	००।१७।०८।०१	०१।१८।४६।३६	११।०८।२७।३१	०१।०६।५१।४९	०२।१५।४०।३२	१०।००।३२	०९।१४।५१	२७
२८	१४।२४।०८	००।१३।५४।०६	०२।०८।३१।४१	०८।०४।०५।३०	००।१९।१६।३४	०१।१८।५९।११	११।०८।४३।२७	०१।०६।५९।१०	०२।१६।३७।२२	१०।००।३३	०९।१४।५१	२८
२९	१४।२८।०५	०१।१४।५२।२६	०२।२२।२६।२९	०८।०४।१४।२६	००।२१।२४।४१	०१।१९।११।४९	११।०९।०१।१८	०१।०७।०६।३३	०२।१५।३४।११	१०।००।३५	०९।१४।५२	२९
३०	१४।३२।०१	००।१५।५०।४३	०३।०६।२७।४८	०८।०४।२२।४५	००।२३।३२।०४	०१।१९।२४।३०	११।०९।२१।०१	०१।०७।१३।५७	०२।१५।३१।००	१०।००।३६	०९।१४।५२	३०

मई सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५२'।१४'' मासारम्भे (प्लूटो) ७।२०°।५८' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मई	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	मई
१	१४।३५।५८	००।१६।४८।५९	०३।२०।३४।५१	०८।०४।३०।२६	००।२५।३८।२४	०१।१९।३७।१४	११।०९।४२।३३	०१।०७।२१।२४	०२।१५।२७।४९	१०।००।३८	०९।१४।५२	१
२	१४।३९।५५	००।१७।४७।१२	०४।०४।४६।३२	०८।०४।३७।२९	००।२७।४३।२५	०१।१९।५०।०२	११।१०।०५।४९	०१।०७।२८।५१	०२।१५।२४।३९	१०।००।३९	०९।१४।५३	२
३	१४।४३।५१	००।१८।४५।२४	०४।१९।०१।००	०८।०४।४३।५३	००।२९।४६।४६	०१।२०।०२।५२	११।१०।३०।४७	०१।०७।३६।२१	०२।१५।२१।२८	१०।००।४१	०९।१४।५३	३
४	१४।४७।४७	००।१९।४३।३३	०५।०३।१५।२८	०८।०४।४९।३७	०१।०१।४८।१२	०१।२०।१५।४५	११।१०।५७।२२	०१।०७।४३।५१	०२।१५।१८।१७	१०।००।४२	०९।१४।५३	४
५	१४।५१।४४	००।२०।४१।४१	०५।१७।२६।०८	०८।०४।५४।४१	०१।०३।४७।२६	०१।२०।२८।४२	११।११।२५।३२	०१।०७।५१।२३	०२।१५।१५।०६	१०।००।४३	०९।१४।५३	५
६	१४।५५।४१	००।२१।३९।४७	०६।०१।२८।३७	०८।०४।५९।०५	०१।०५।४४।१४	०१।२०।४१।४०	११।११।५५।१२	०१।०७।५८।५७	०२।१५।११।५५	१०।००।४४	०९।१४।५३	६
७	१४।५९।३७	००।२२।३७।५१	०६।१५।१८।२४	०८।०५।०२।४८	०१।०७।३८।२३	०१।२०।५४।४२	११।१२।२६।२०	०१।०८।०६।३१	०२।१५।०८।४५	१०।००।४५	०९।१४।५४	७
८	१५।०३।३४	००।२३।३५।५३	०६।२८।५१।४३	०८।०५।०५।४८	०१।०९।२९।४०	०१।२१।०७।४६	११।१२।५८।५३	०१।०८।१४।०७	०२।१५।०५।३४	१०।००।४६	०९।१४।५४	८
९	१५।०७।३०	००।२४।३३।५४	०७।१२।०६।००	०८।०५।०८।०७	०१।११।१७।५७	०१।२१।२०।५३	११।१३।३२।४६	०१।०८।२१।४४	०२।१५।०२।२३	१०।००।४८	०९।१४।५४	९
१०	१५।११।२७	००।२५।३१।५३	०७।२५।००।२२	०८।०५।०९।४२	०१।१३।०३।०४	०१।२१।३४।०३	११।१४।०७।५८	०१।०८।२९।२२	०२।१४।५९।१२	१०।००।४९	०९।१४।५४	१०
११	१५।१५।२३	००।२६।२९।५१	०८।०७।३४।३०	व.०८।०५।१०।३४	०१।१४।४४।५५	०१।२१।४७।१४	११।१४।४४।२५	०१।०८।३७।०१	०२।१४।५६।०२	१०।००।४९	व.०९।१४।५४	११
१२	१५।१९।२०	००।२७।२७।४७	०८।१९।५३।३७	०८।०५।१०।४१	०१।१६।२३।२२	०१।२२।००।२९	११।१५।२२।०४	०१।०८।४४।४०	०२।१४।५२।५१	१०।००।५०	०९।१४।५४	१२
१३	१५।२३।१६	००।२८।२५।४२	०९।०१।५८।०९	०८।०५।१०।०४	०१।१७।५८।२२	०१।२२।१३।४५	११।१६।००।५३	०१।०८।५२।२१	०२।१४।४९।४०	१०।००।५१	०९।१४।५४	१३
१४	१५।२७।१३	००।२९।२३।३६	०९।१३।५३।२४	०८।०५।०८।४२	०१।१९।२९।४८	०१।२२।२७।०४	११।१६।४०।४९	०१।०९।००।०३	०२।१४।४६।२९	१०।००।५२	०९।१४।५४	१४
१५	१५।३१।१०	०१।००।२१।२८	०९।२५।४४।१३	०८।०५।०६।३५	०१।२०।५७।३९	०१।२२।४०।२४	११।१७।२१।४८	०१।०९।०७।४५	०२।१४।४३।१८	१०।००।५३	०९।१४।५४	१५
१६	१५।३५।०६	०१।०१।१९।१९	१०।०७।३४।४२	०८।०५।०३।४२	०१।२२।२१।४९	०१।२२।५३।४७	११।१८।०३।४९	०१।०९।१५।२८	०२।१४।४०।०८	१०।००।५३	०९।१४।५३	१६
१७	१५।३९।०२	०१।०२।१७।०९	१०।१९।३२।५३	०८।०५।००।०३	०१।२३।४२।१७	०१।२३।०७।१२	११।१८।४६।५०	०१।०९।२३।१२	०२।१४।३६।५७	१०।००।५४	०९।१४।५३	१७
१८	१५।४२।५९	०१।०३।१४।५८	११।०१।४०।२६	०८।०४।५५।३७	०१।२४।५८।५७	०१।२३।२०।३९	११।१९।३०।४६	०१।०९।३०।५६	०२।१४।३३।४६	१०।००।५५	०९।१४।५३	१८
१९	१५।४६।५६	०१।०४।१२।४६	११।१४।०२।२१	०८।०४।५०।२६	०१।२६।११।४८	०१।२३।३४।०८	११।२०।१५।३८	०१।०९।३८।४१	०२।१४।३०।३५	१०।००।५५	०९।१४।५३	१९
२०	१५।५०।५२	०१।०५।१०।३३	११।२६।४१।४१	०८।०४।४४।२८	०१।२७।२०।४६	०१।२३।४७।३८	११।२१।०१।२१	०१।०९।४६।२६	०२।१४।२७।२५	१०।००।५६	०९।१४।५३	२०
२१	१५।५४।४९	०१।०६।०८।१८	००।०९।४०।१३	०८।०४।३७।४५	०१।२८।२५।४७	०१।२४।०१।१०	११।२१।४७।५८	०१।०९।५४।१२	०२।१४।२४।१४	१०।००।५६	०९।१४।५२	२१
२२	१५।५८।४५	०१।०७।०६।०३	००।२२।५८।१५	०८।०४।३०।१६	०१।२९।२६।४८	०१।२४।१४।४४	११।२२।३५।१५	०१।०९।०१।५७	०२।१४।२१।०३	१०।००।५७	०९।१४।५२	२२
२३	१६।०२।४२	०१।०८।०३।४५	०१।०६।३४।३६	०८।०४।२२।०२	०२।००।२३।४५	०१।२४।२८।२०	११।२३।२३।२२	०१।१०।०९।४३	०२।१४।१७।५२	१०।००।५७	०९।१४।५२	२३
२४	१६।०६।३९	०१।०९।०१।२७	०१।२०।२६।४५	०८।०४।१३।०३	०२।०१।१६।३३	०१।२४।४१।५६	११।२४।१२।१३	०१।१०।१७।३०	०२।१४।१४।४२	१०।००।५७	०९।१४।५१	२४
२५	१६।१०।३५	०१।०९।५९।०७	०२।०४।३१।११	०८।०४।०३।२१	०२।०२।०५।०८	०१।२४।५५।३५	११।२५।०१।४६	०१।१०।२५।१६	०२।१४।११।३१	१०।००।५७	०९।१४।५१	२५
२६	१६।१४।३१	०१।१०।५६।४६	०२।१८।४३।५८	०८।०३।५२।५६	०२।०२।४९।२७	०१।२५।०९।१४	११।२५।५२।०१	०१।१०।३३।०२	०२।१४।०८।२०	१०।००।५८	०९।१४।५०	२६
२७	१६।१८।२८	०१।११।५४।२४	०३।०३।०१।१४	०८।०३।४१।४८	०२।०३।२९।२४	०१।२५।२२।५५	११।२६।४३।५८	०१।१०।४०।४९	०२।१४।०५।०९	१०।००।५८	०९।१४।५०	२७
२८	१६।२२।२५	०१।१२।५२।००	०३।१७।१९।२६	०८।०३।३०।००	०२।०४।०४।५५	०१।२५।३६।३६	११।२७।३४।२६	०१।१०।४८।३५	०२।१४।०१।५८	१०।००।५८	०९।१४।४९	२८
२९	१६।२६।२१	०१।१३।४९।३५	०४।०१।३५।४०	०८।०३।१७।३१	०२।०४।३५।५७	०१।२५।५०।१९	११।२८।२९।३३	०१।१०।५६।२१	०२।१३।५८।४७	व.१०।००।५८	०९।१४।४९	२९
३०	१६।३०।१८	०१।१४।४७।०८	०४।१५।४७।३०	०८।०३।०४।२४	०२।०५।०२।२५	०१।२६।०४।०३	११।२९।१९।१६	०१।११।०४।०७	०२।१३।५५।३७	१०।००।५८	०९।१४।४८	३०
३१	१६।३४।१४	०१।१५।४४।४०	०४।२९।५२।५९	०८।०२।५०।३९	०२।०५।२४।१८	०१।२६।१७।४८	००।००।१२।३३	०१।११।११।५२	०२।१३।५२।२६	१०।००।५८	०९।१४।४७	३१

जून सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५२'।१९' मासारम्भे (प्लूटो) ७।२०°।१२' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
जून	साम्पा. काल घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	जून
१	१६।३८।११	०१।१६।४२।१०	०५।१३।५०।२१	०८।०२।३६।१९	०२।०५।४९।३३	०१।२६।३१।३३	००।०१।०६।२३	०१।११।१९।३७	०२।१३।४९।१५	१०।००।५७	०९।१४।४७	१
२	१६।४२।०८	०१।१७।३९।३९	०५।२७।३७।५४	०८।०२।२१।२३	०२।०५।५४।०८	०१।२६।४५।१९	००।०२।००।४४	०१।११।२७।२२	०२।१३।४६।०४	१०।००।५७	०९।१४।४६	२
३	१६।४६।०४	१०।१८।३७।०७	०६।११।१४।००	०८।०२।०५।५५	०२।०६।०२।०४	०१।२६।५९।०६	००।०२।५५।३६	०१।११।३५।०६	०२।१३।४२।५३	१०।००।५७	०९।१४।४५	३
४	१६।५०।००	०१।१९।३४।३४	०६।२४।३७।०९	०८।०१।४९।५६	व.०२।०६।०५।२३	०१।२७।१२।५४	००।०३।५०।५७	०१।११।४२।४९	०२।१३।३९।४३	१०।००।५७	०९।१४।४५	४
५	१६।५३।५८	०१।२०।३२।००	०७।०७।४६।०४	०८।०१।३३।२७	०२।०६।०४।०९	०१।२७।२६।४२	००।०४।४६।४७	०१।११।५०।३२	०२।१३।३६।३२	१०।००।५६	०९।१४।४४	५
६	१६।५७।५४	०१।२१।२९।२४	०७।२०।४०।०१	०८।०१।१६।३१	०२।०५।५८।२७	०१।२७।४०।३१	००।०५।४५।०५	०१।११।५८।१५	०२।१३।३३।२१	१०।००।५६	०९।१४।४३	६
७	१७।०१।५०	०१।२२।२६।४८	०८।०३।१८।५५	०८।००।५९।०९	०२।०५।४८।२७	०१।२७।५४।२०	००।०६।३९।५०	०१।१२।०५।५६	०२।१३।३०।१०	१०।००।५६	०९।१४।४२	७
८	१७।०५।४६	०१।२३।२४।११	०८।१५।४३।३०	०८।००।४१।२३	०२।०५।३४।२०	०१।२८।०८।०९	००।०७।३७।०१	०१।१२।१३।३७	०२।१३।२६।५९	१०।००।५५	०९।१४।४१	८
९	१७।०९।४३	०१।२४।२१।३३	०८।२७।५५।२२	०८।००।२३।१५	०२।०५।१६।२१	०१।२८।२२।५९	००।०८।३४।३७	०१।१२।२१।१७	०२।१३।२३।४९	१०।००।५५	०९।१४।४१	९
१०	१७।१३।४०	०१।२५।१८।५५	०९।०९।५६।५३	०८।००।०४।४७	०२।०४।५४।४९	०१।२८।३५।४९	००।०९।३२।३८	०१।१२।२८।५६	०२।१३।२०।३८	१०।००।५४	०९।१४।४०	१०
११	१७।१७।३७	०१।२६।१६।१६	०९।२१।५१।१६	०७।२९।४६।०३	०२।०४।३०।०४	०१।२८।४९।४०	००।१०।३१।०२	०१।१२।३६।३४	०२।१३।१७।२७	१०।००।५४	०९।१४।३९	११
१२	१७।२१।३३	०१।२७।१३।३६	१०।०३।४२।१७	०७।२९।२७।०४	०२।०४।०२।३१	०१।२९।०३।३०	००।११।२९।४९	०१।१२।४४।१२	०२।१३।१४।१६	१०।००।५३	०९।१४।३८	१२
१३	१७।२५।२९	०१।२८।१०।५६	१०।१५।३४।१२	०७।२९।०७।५२	०२।०३।३२।३७	०१।२९।१७।२१	००।१२।२८।५८	०१।१२।५१।४८	०२।१३।११।०५	१०।००।५२	०९।१४।३७	१३
१४	१७।२९।२७	०१।२९।०८।१६	१०।२७।३१।३५	०७।२८।४८।३०	०२।०३।००।५३	०१।२९।३१।११	००।१३।२८।२८	०१।१२।५९।२३	०२।१३।०७।५४	१०।००।५२	०९।१४।३६	१४
१५	१७।३३।२३	०२।००।०५।३५	११।०९।३९।०४	०७।२८।२९।०२	०२।०२।२७।५०	०१।२९।४५।०२	००।१४।२८।११	०१।१३।०६।५७	०२।१३।०४।४४	१०।००।५१	०९।१४।३५	१५
१६	१७।३७।१९	०२।०१।०२।५४	११।२२।०१।१०	०७।२८।०९।२९	०२।०१।५४।०१	०१।२९।५८।५२	००।१५।२८।२९	०१।१३।१४।२९	०२।१३।०१।३३	१०।००।५०	०९।१४।३४	१६
१७	१७।४१।१६	०२।०२।००।१२	००।०४।४१।४७	०७।२७।४९।५५	०२।०१।२०।०१	०२।००।१२।४३	००।१६।२८।४९	०१।१३।२२।००	०२।१२।५८।२२	१०।००।४९	०९।१४।३३	१७
१८	१७।४५।१३	०२।०२।५७।३०	००।१७।४३।५६	०७।२७।३०।२३	०२।००।४६।२५	०२।००।२६।३३	००।१७।२९।४७	०१।१३।२९।३०	०२।१२।५५।११	१०।००।४८	०९।१४।३२	१८
१९	१७।४९।०९	०२।०३।५४।४८	०१।०१।०९।१५	०७।२७।१०।५५	०२।००।१३।४७	०२।००।४०।२३	००।१८।३०।५३	०१।१३।३६।५९	०२।१२।५२।००	१०।००।४८	०९।१४।३१	१९
२०	१७।५३।०६	०२।०४।५२।०६	०१।१४।५७।४०	०७।२६।५१।३४	०१।२९।४२।४१	०२।००।५४।१२	००।१९।३२।१७	०१।१३।४४।२६	०२।१२।४८।५०	१०।००।४७	०९।१४।२९	२०
२१	१७।५७।०२	०२।०५।४९।२३	०१।२९।०७।०९	०७।२६।३२।२४	०१।२९।१३।३८	०२।०१।०८।०१	००।२०।३३।५७	०१।१३।५१।५१	०२।१२।४५।३९	१०।००।४६	०९।१४।२८	२१
२२	१८।००।५८	०२।०६।४६।३९	०२।१३।३३।४५	०७।२६।१३।२७	०१।२८।४७।०९	०२।०१।२१।४९	००।२१।३५।४३	०१।१३।५९।१४	०२।१२।४२।२८	१०।००४४	०९।१४।२७	२२
२३	१८।०४।५५	०२।०७।४३।५५	०२।२८।११।५७	०७।२५।५४।४६	०१।२८।२३।४०	०२।०१।३५।३७	००।२२।३८।०४	०१।१४।०६।३६	०२।१२।३९।१७	१०।००।४३	०९।१४।२६	२३
२४	१८।०८।५२	०२।०८।४१।११	०३।१२।५५।१७	०७।२५।३६।२५	०१।२८।०३।३६	०२।०१।४९।२४	००।२३।४०।३१	०१।१४।१३।५६	०२।१२।३६।०६	१०।००।४२	०९।१४।२५	२४
२५	१८।१२।४८	०२।०९।३८।२६	०३।२७।३७।०८	०७।२५।१८।२५	०१।२७।४७।१७	०२।०२।०३।१०	००।२४।४३।१२	०१।१४।२१।१४	०२।१२।३२।५६	१०।००।४१	०९।१४।२३	२५
२६	१८।१६।४४	०२।१०।३५।४१	०४।१२।११।३७	०७।२५।००।४९	०१।२७।३५।०२	०२।०२।१६।५६	००।२५।४६।०८	०१।१४।२८।३१	०२।१२।२९।४५	१०।००।४०	०९।१४।२२	२६
२७	१८।२०।४२	०२।११।३२।५५	०४।२६।३४।०४	०७।२४।४३।४०	०१।२७।२७।०५	०२।०२।३०।४०	००।२६।४९।१८	०१।१४।३५।४५	०२।१२।२६।३४	१०।००।३९	०९।१४।२१	२७
२८	१८।२४।३८	०२।१२।३०।०८	०५।१०।४१।२३	०७।२४।२७।००	मा.०१।२७।२३।३९	०२।०२।४४।२४	००।२७।५२।४१	०१।१४।४२।५७	०२।१२।२३।२३	१०।००।३७	०९।१४।१९	२८
२९	१८।२८।३४	०२।१३।२७।२१	०५।२४।३१।५८	०७।२४।१०।५१	०१।२७।२४।५३	०२।०२।५८।०६	००।२८।५६।१७	०१।१४।५०।०८	०२।१२।२०।१२	१०।००।३६	०९।१४।१८	२९
३०	१८।३२।३१	०२।१४।२४।३४	०६।०८।०५।२५	०७।२३।५५।१६	०१।२७।३०।५३	०२।०३।११।४७	०१।००।००।०६	०१।१४।५७।१६	०२।१२।१७।०१	१०।००।३४	०९।१४।१७	३०

जुलाई सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।२४" मासारम्भे (प्लूटो) ७।१९°।२५' (वक्री)

ता. जुलाई	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता. जुलाई
१	१८।३६।२८	०२।१५।२१।४६	०६।२१।२२।१२	०७।२३।४०।१६	०१।२७।४१।४५	०२।०३।२५।२७	०१।०१।०४।०७	०१।१५।०४।२१	०२।१२।१३।५१	१०।००।३३	०९।१४।१५	१
२	१८।४०।२४	०२।१६।१८।५७	०७।०४।२३।१८	०७।२३।२५।५३	०१।२७।५७।३१	०२।०३।३९।०६	०१।०२।०८।२१	०१।१५।११।२५	०२।१२।१०।४०	१०।००।३२	०९।१४।१४	२
३	१८।४४।२१	०२।१७।१६।०९	०७।१७।०९।५१	०७।२३।१२।०८	०१।२८।१८।१४	०२।०३।५२।४३	०१।०३।१२।४७	०१।१५।१८।२६	०२।१२।०७।२९	१०।००।३०	०९।१४।१३	३
४	१८।४८।१७	०२।१८।१३।२०	०७।२९।४३।३६	०७।२२।५९।०४	०१।२८।४३।५२	०२।०४।०६।१९	०१।०४।१७।२५	०१।१५।२५।२४	०२।१२।०४।१८	१०।००।२८	०९।१४।११	४
५	१८।५२।१३	०२।१९।१०।३१	०८।१२।०५।३३	०७।२२।४६।४१	०१।२९।१४।२६	०२।०४।१९।५४	०१।०५।२२।१४	०१।१५।३२।२०	०२।१२।०१।०७	१०।००।२७	०९।१४।१०	५
६	१८।५६।११	०२।२०।०७।४२	०८।२४।१७।१८	०७।२२।३५।०१	०१।२९।४१।५३	०२।०४।३३।२७	०१।०६।२७।१५	०१।१५।३९।१४	०२।११।५७।५७	१०।००।२५	०९।१४।०८	६
७	१९।००।०७	०२।२१।०४।५३	०९।०६।२०।२९	०७।२२।२४।०५	०२।००।३०।११	०२।०४।४६।५८	०१।०७।३२।२७	०१।१५।४६।०५	०२।११।५४।४६	१०।००।२४	०९।१४।०७	७
८	१९।०४।०३	०२।२२।०२।०४	०९।१८।१७।०२	०७।२२।१३।५३	०२।०१।१५।१७	०२।०५।००।२८	०१।०८।३७।५०	०१।१५।५२।५४	०२।११।५१।३५	१०।००।२२	०९।१४।०५	८
९	१९।०८।००	०२।२२।५९।१६	१०।००।०९।१५	०७।२२।०४।२७	०२।०२।०५।०९	०२।०५।१३।५७	०१।०९।४३।२४	०१।१५।५९।४०	०२।११।४८।२४	१०।००।२०	०९।१४।०४	९
१०	१९।११।५७	०२।२३।५६।२७	१०।११।५९।४८	०७।२१।५५।४८	०२।०२।५९।४३	०२।०५।२७।२३	०१।१०।४९।०८	०१।१६।०६।२३	०२।११।४५।१३	१०।००।१८	०९।१४।०२	१०
११	१९।१५।५३	०२।२४।५३।३९	१०।२३।५१।५३	०७।२१।४७।५६	०२।०३।५८।५६	०२।०५।४०।४८	०१।११।५५।०२	०१।१६।१३।०३	०२।११।४२।०३	१०।००।१७	०९।१४।०१	११
१२	१९।१९।५०	०२।२५।५०।५२	११।०५।४९।०७	०७।२१।४०।५२	०२।०५।०२।४४	०२।०५।५४।११	०१।१३।०१।०७	०१।१६।१९।४०	०२।११।३८।५२	१०।००।१५	०९।१३।५९	१२
१३	१९।२३।४६	०२।२६।४८।०५	११।१७।५५।३१	०७।२१।३४।३७	०२।०६।११।०४	०२।०६।०७।३२	०१।१४।०७।२१	०१।१६।२६।१५	०२।११।३५।४१	१०।००।१३	०९।१३।५८	१३
१४	१९।२७।४३	०२।२७।४५।१८	००।००।१५।२३	०७।२१।२९।११	०२।०७।२३।५२	०२।०६।२०।५०	०१।१५।१३।४५	०१।१६।३२।४६	०२।११।३२।३०	१०।००।११	०९।१३।५६	१४
१५	१९।३१।४०	०२।२८।४२।३३	००।१२।५२।५८	०७।२१।२४।३४	०२।०८।४१।०४	०२।०६।३४।०७	०१।१६।२०।१८	०१।१६।३९।१४	०२।११।२९।१९	१०।००।०९	०९।१३।५५	१५
१६	१९।३५।३६	०२।२९।३९।४७	००।२५।५२।०८	०७।२१।२०।४८	०२।१०।०२।३४	०२।०६।४७।२२	०१।१७।२७।००	०१।१६।४५।४०	०२।११।२६।०९	१०।००।०७	०९।१३।५३	१६
१७	१९।३९।३२	०३।००।३७।०३	०१।०९।१५।५५	०७।२१।१७।५२	०२।११।२८।११	०२।०७।००।३४	०१।१८।३३।५१	०१।१६।५२।०२	०२।११।२२।५८	१०।००।०५	०९।१३।५२	१७
१८	१९।४३।२९	०३।०१।३४।१९	०१।२३।०५।५२	०७।२१।१५।४७	०२।१२।५८।१२	०२।०७।१३।४४	०१।१९।४०।५१	०१।१६।५८।२०	०२।११।१९।४७	१०।००।०३	०९।१३।५०	१८
१९	१९।४७।२६	०३।०२।३१।३५	०२।०७।२१।२३	०७।२१।१४।३३	०२।१४।३२।०५	०२।०७।२६।५२	०१।२०।४७।५९	०१।१७।०४।३६	०२।११।१६।३६	१०।००।०१	०९।१३।४८	१९
२०	१९।५१।२२	०३।०३।२८।५२	०२।२१।५९।४९	मा.०७।२१।१४।१०	०२।१६।०९।५१	०२।०७।३९।५७	०१।२१।५५।१५	०१।१७।१०।४८	०२।११।१३।२५	०९।२९।५९	०९।१३।४७	२०
२१	१९।५५।१९	०३।०४।२६।१०	०३।०६।५५।१०	०७।२१।१४।३८	०२।१७।५१।२०	०२।०७।५३।००	०१।२३।०२।४०	०१।१७।१६।५६	०२।११।१०।१४	०९।२९।५७	०९।१३।४५	२१
२२	१९।५९।१५	०३।०५।२३।२८	०३।२१।५९।३८	०७।२१।१५।५७	०२।१९।३६।२२	०२।०८।०५।५९	०१।२४।१०।१२	०१।१७।२३।०१	०२।११।०७।०४	०९।२९।५५	०९।१३।४४	२२
२३	२०।०३।१२	०३।०६।२०।४६	०४।०७।०४।०४	०७।२१।१८।०७	०२।२१।२४।४५	०२।०८।१८।५७	०१।२५।१७।५२	०१।१७।२९।०३	०२।११।०३।५३	०९।२९।५३	०९।१३।४२	२३
२४	२०।०७।०९	०३।०७।१८।०५	०४।२२।५९।२९	०७।२१।२१।०७	०२।२३।१६।१३	०२।०८।३१।५१	०१।२६।२५।३९	०१।१७।३५।००	०२।११।००।४२	०९।२९।५१	०९।१३।४०	२४
२५	२०।११।०५	०३।०८।१५।२५	०५।०६।३८।२४	०७।२१।२४।५७	०२।२५।१०।३२	०२।०८।४४।४२	०१।२७।३३।३३	०१।१७।४०।५४	०२।१०।५७।३२	०९।२९।४९	०९।१३।३९	२५
२६	२०।१५।०१	०३।०९।१२।४५	०५।२०।५५।४३	०७।२१।२९।३७	०२।२७।०७।२४	०२।०८।५७।३०	०१।२८।४१।३५	०१।१७।४६।४४	०२।१०।५४।२१	०९।२९।४७	०९।१३।३७	२६
२७	२०।१८।५८	०३।१०।१०।०५	०६।०४।४९।०३	०७।२१।३५।०६	०२।२९।०६।३०	०२।०९।१०।१६	०१।२९।४९।४४	०१।१७।५२।३०	०२।१०।५१।१०	०९।२९।४४	०९।१३।३६	२७
२८	२०।२२।५५	०३।११।०७।२५	०६।१८।१८।२२	०७।२१।४२।२४	०३।०१।०७।३२	०२।०९।२२।५८	०२।००।५७।५९	०१।१७।५८।१३	०२।१०।४७।५९	०९।२९।४२	०९।१३।३४	२८
२९	२०।२६।५१	०३।१२।०४।४६	०७।०१।२५।२३	०७।२१।४८।३०	०३।०३।१०।०९	०२।०९।३५।३७	०२।०२।०६।२२	०१।१८।०३।५१	०२।१०।४४।४८	०९।२९।४०	०९।१३।३२	२९
३०	२०।३०।४८	०३।१३।०२।०८	०७।१४।१२।५३	०७।२१।५६।२३	०३।०५।१४।०१	०२।०९।४८।१२	०२।०३।१४।५२	०१।१८।०९।२५	०२।१०।४१।३७	०९।२९।३८	०९।१३।३१	३०
३१	२०।३४।४४	०३।१३।५९।३०	०७।२६।४४।०५	०७।२२।०५।०२	०३।०७।१८।४७	०२।१०।००।४४	०२।०४।२३।२८	०१।१८।१४।५५	०२।१०।३८।२७	०९।२९।३५	०९।१३।२९	३१

अगस्त सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।२९" मासारम्भे (प्लूटो) ७।१८°।५२' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अगस्त	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अगस्त
१	२०।३१।४८	०३।१४।५६।५३	०८।०९।०२।१५	०७।२२।१४।२८	०३।०९।२४।०९	०२।१०।१३।१३	०२।०५।३२।११	०१।१८।२०।२१	०२।१०।३५।१६	०९।२९।३३	०९।१३।२७	१
२	२०।४२।३८	०३।१५।५४।१६	०८।२१।१०।२२	०७।२२।२४।३८	०३।११।२९।४७	०२।१०।२५।३८	०२।०६।४१।०१	०१।१८।२५।४३	०२।१०।३२।०५	०९।२९।३१	०९।१३।२६	२
३	२०।४६।३४	०३।१६।५१।४०	०९।०३।११।०४	०७।२२।३५।३३	०३।१३।३५।२५	०२।१०।३८।००	०२।०७।४९।५८	०१।१८।३१।००	०२।१०।२८।५४	०९।२९।२८	०९।१३।२४	३
४	२०।५०।३०	०३।१७।४९।०५	०९।१५।०६।३४	०७।२२।४७।११	०३।१५।४०।४८	०२।१०।५०।१८	०२।०८।५९।०१	०१।१८।३६।१४	०२।१०।२५।४४	०९।२९।२६	०९।१३।२३	४
५	२०।५४।२७	०३।१८।४६।३०	०९।२६।५८।५२	०७।२२।५९।३२	०३।१७।४५।४१	०२।११।०२।३२	०२।१०।०८।११	०१।१८।४१।२२	०२।१०।२२।३३	०९।२९।२४	०९।१३।२१	५
६	२०।५८।२४	०३।१९।४३।५७	१०।०८।४९।४८	०७।२३।१२।३४	०३।१९।४९।५३	०२।११।१४।४३	०२।११।१७।२७	०१।१८।४६।२७	०२।१०।१९।२२	०९।२९।२१	०९।१३।१९	६
७	२१।०२।२०	०३।२०।४१।२५	१०।२०।४१।१६	०७।२३।२६।१८	०३।२१।५३।१३	०२।११।२६।५०	०२।१२।२६।५०	०१।१८।५१।२७	०२।१०।१६।११	०९।२९।१९	०९।१३।१८	७
८	२१।०६।१६	०३।२१।३८।५८	११।०२।३५।२३	०७।२३।४०।४३	०३।२३।५५।३३	०२।११।३८।५२	०२।१३।३६।१९	०१।१८।५६।२२	०२।१०।१३।००	०९।२९।१७	०९।१३।१६	८
९	२१।१०।१३	०३।२२।३६।२४	११।१४।३४।३९	०७।२३।५५।४७	०३।२५।५६।४६	०२।११।५०।५१	०२।१४।४५।५८	०१।१९।०१।१३	०२।१०।०९।५०	०९।२९।१४	०९।१३।१४	९
१०	२१।१४।१०	०३।२३।३३।५६	११।२६।४२।०३	०७।२४।११।३०	०३।२७।५६।४७	०२।१२।०२।४६	०२।१५।५५।३६	०१।१९।०५।५९	०२।१०।०६।३९	०९।२९।१२	०९।१३।१३	१०
११	२१।१८।०६	०३।२४।३१।२९	००।०९।०१।०२	०७।२४।२७।५२	०३।२९।५५।३०	०२।१२।१४।३६	०२।१७।०५।२४	०१।१९।१०।४०	०२।१०।०३।२८	०९।२९।१०	०९।१३।११	११
१२	२१।२२।०३	०३।२५।२९।०३	००।२१।३५।२९	०७।२४।४४।५२	०४।०१।५२।५२	०२।१२।२६।२२	०२।१८।१५।१८	०१।१९।१५।१७	०२।१०।००।१७	०९।२९।०७	०९।१३।१०	१२
१३	२१।२५।५९	०३।२६।२६।३९	०१।०४।२९।२३	०७।२५।०२।२९	०४।०३।४८।५२	०२।१२।३८।०४	०२।१९।२५।१८	०१।१९।१९।४९	०२।०९।५७।०७	०९।२९।०५	०९।१३।०८	१३
१४	२१।२९।५६	०३।२७।२४।१६	०१।१७।४६।२६	०७।२५।२०।४३	०४।०५।४३।२७	०२।१२।४९।४१	०२।२०।३५।२५	०१।१९।२४।१५	०२।०९।५३।५६	०९।२९।०२	०९।१३।०७	१४
१५	२१।३३।५३	०३।२८।२१।५५	०२।०१।२९।३१	०७।२५।३९।३३	०४।०७।३६।३५	०२।१३।०१।१४	०२।२१।४५।३६	०१।१९।२८।३७	०२।०९।५०।४५	०९।२९।००	०९।१३।०५	१५
१६	२१।३७।४९	०३।२९।१९।३५	०२।१५।३९।५६	०७।२५।५८।५९	०४।०९।२८।१८	०२।१३।१२।४२	०२।२२।५५।५४	०१।१९।३२।५४	०२।०९।४७।३४	०९।२८।५८	०९।१३।०३	१६
१७	२१।४१।४५	०४।००।१७।१७	०३।००।१६।२८	०७।२६।१८।५९	०४।११।१८।३३	०२।१३।२४।०५	०२।२४।०६।१७	०१।१९।३७।०६	०२।०९।४४।२४	०९।२८।५५	०९।१३।०२	१७
१८	२१।४५।४३	०४।०१।१५।००	०३।१५।१४।५०	०७।२६।३९।३४	०४।१३।०७।२२	०२।१३।३५।२३	०२।२५।१६।४६	०१।१९।४१।१२	०२।०९।४१।१३	०९।२८।५३	०९।१३।००	१८
१९	२१।४९।३९	०४।०२।१२।४४	०४।००।२७।३२	०७।२७।००।४३	०४।१४।५४।४५	०२।१३।४६।३७	०२।२६।२७।२०	०१।१९।४५।१३	०२।०९।३८।०२	०९।२८।५०	०९।१२।५९	१९
२०	२१।५३।३५	०४।०३।१०।३०	०४।१५।४४।३२	०७।२७।२२।२४	०४।१६।४०।४२	०२।१३।५७।४५	०२।२७।३७।५९	०१।१९।४९।०९	०२।०९।३४।५१	०९।२८।४८	०९।१२।५७	२०
२१	२१।५७।३२	०४।०४।०८।१७	०५।००।५४।५६	०७।२७।४४।३९	०४।१८।२५।१४	०२।१४।०८।४८	०२।२८।४८।४३	०१।१९।५२।५९	०२।०९।३१।४१	०९।२८।४६	०९।१२।५६	२१
२२	२२।०१।२८	०४।०५।०६।०५	०५।१५।४८।४३	०७।२८।०७।२५	०४।२०।०८।२२	०२।१४।१९।४६	०२।२९।५९।३३	०१।१९।५६।४४	०२।०९।२८।३०	०९।२८।४३	०९।१२।५४	२२
२३	२२।०५।२५	०४।०६।०३।५५	०६।००।१८।२९	०७।२८।३०।४२	०४।२१।५०।०७	०२।१४।३०।३८	०३।०१।१०।२७	०१।२०।००।२४	०२।०९।२५।१९	०९।२८।४१	०९।१२।५३	२३
२४	२२।०९।२२	०४।०७।०१।४६	०६।१४।२०।११	०७।२८।५४।३०	०४।२३।३०।२९	०२।१४।४१।२५	०३।०२।२१।२७	०१।२०।०३।५८	०२।०९।२२।०८	०९।२८।३९	०९।१२।५१	२४
२५	२२।१३।१८	०४।०७।५९।३८	०६।२७।५३।०६	०७।२९।१८।४८	०४।२५।०९।२९	०२।१४।५२।०६	०३।०३।३२।३१	०१।२०।०७।२७	०२।०९।१८।५८	०९।२८।३६	०९।१२।५०	२५
२६	२२।१७।१४	०४।०८।५७।३१	०७।१०।५९।११	०७।२९।४३।३४	०४।२६।४७।०९	०२।१५।०२।४२	०३।०४।४३।४०	०१।२०।१०।५०	०२।०९।१५।४७	०९।२८।३४	०९।१२।४८	२६
२७	२२।२१।११	०४।०९।५५।२६	०७।२३।४२।००	०८।००।०८।५०	०४।२८।२३।२८	०२।१५।१३।१२	०३।०५।५४।५५	०१।२०।१४।०७	०२।०९।१२।३६	०९।२८।३२	०९।१२।४७	२७
२८	२२।२५।०८	०४।१०।५३।२२	०८।०६।०५।५९	०८।००।३४।३३	०४।२९।५८।२७	०२।१५।२३।३६	०३।०७।०६।१३	०१।२०।१७।१८	०२।०९।०९।२५	०९।२८।२९	०९।१२।४६	२८
२९	२२।२९।०४	०४।११।५१।१९	०८।१८।१५।४८	०८।०१।००।४३	०५।०१।३२।०६	०२।१५।३३।५४	०३।०८।१७।३७	०१।२०।२०।२४	०२।०९।०६।१५	०९।२८।२७	०९।१२।४४	२९
३०	२२।३३।०१	०४।१२।४९।१७	०९।००।१५।३७	०८।०१।२७।१९	०५।०३।०४।२६	०२।१५।४४।०६	०३।०९।२९।०६	०१।२०।२३।२४	०२।०९।०३।०४	०९।२८।२५	०९।१२।४३	३०
३१	२२।३६।५८	०४।१३।४७।१७	०९।१२।०९।२८	०८।०१।५४।२१	०५।०४।३५।२७	०२।१५।५४।१२	०३।१०।४०।३९	०१।२०।२६।१८	०२।०८।५९।५३	०९।२८।२२	०९।१२।४२	३१

सितम्बर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५२'।३३" मासारम्भे (प्लूटो) ७।१८°।४५'

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
सित.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	सित.
१	२२।४०।५४	०४।१४।४५।१८	०९।२४।००।२७	०८।०२।२१।४९	०५।०६।०५।०७	०२।१६।०४।११	०३।११।५२।१७	०१।२०।२९।०६	०२।०८।५६।४२	०९।२८।२०	०९।१२।४०	१
२	२२।४४।५१	०४।१५।४३।२१	१०।०५।५१।०४	०८।०२।४९।४०	०५।०७।३३।२८	०२।१६।१४।०५	०३।१३।०३।५१	०१।२०।३१।४९	०२।०८।५३।३२	०९।२८।१८	०९।१२।३९	२
३	२२।४८।४७	०४।१६।४१।२५	१०।१७।४३।१६	०८।०३।१७।५६	०५।०९।००।२८	०२।१६।२३।५२	०३।१४।१५।४७	०१।२०।३४।२५	०२।०८।५०।२१	०९।२८।१६	०९।१२।३८	३
४	२२।५२।४३	०४।१७।३९।३१	१०।२९।३८।३६	०८।०३।४६।३४	०५।१०।२६।०६	०२।१६।३३।३३	०३।१५।२७।३९	०१।२०।३६।५६	०२।०८।४७।१०	०९।२८।१३	०९।१२।३६	४
५	२२।५६।४१	०४।१८।३७।३९	११।११।३८।२७	०८।०४।१५।३७	०५।११।५०।२१	०२।१६।४३।०७	०३।१६।३९।३६	०१।२०।३९।२०	०२।०८।४४।००	०९।२८।११	०९।१२।३५	५
६	२३।००।३७	०४।१९।३५।४८	११।२३।४४।१५	०८।०४।४५।०१	०५।१३।१३।१३	०२।१६।५२।३४	०३।१७।५१।३८	०१।२०।४१।३९	०२।०८।४०।४९	०९।२८।०९	०९।१२।३४	६
७	२३।०४।३३	०४।२०।३४।०८	००।०५।५७।४६	०८।०५।१४।४७	०५।१४।३४।३८	०२।१७।०१।५५	०३।१९।०३।४४	०१।२०।४३।५१	०२।०८।३७।३८	०९।२८।०७	०९।१२।३३	७
८	२३।०८।३०	०४।२१।३२।१३	००।१८।२१।१४	०८।०५।४४।५५	०५।१५।५४।३५	०२।१७।११।०८	०३।२०।१५।५५	०१।२०।४५।५७	०२।०८।३४।२७	०९।२८।०५	०९।१२।३२	८
९	२३।१२।२७	०४।२२।३०।२८	०१।००।५७।२८	०८।०६।१५।२३	०५।१७।१३।०३	०२।१७।२०।१५	०३।२१।२८।११	०१।२०।४७।५७	०२।०८।३१।१७	०९।२८।०२	०९।१२।३०	९
१०	२३।१६।२३	०४।२३।२८।४६	०१।१३।४९।४२	०८।०६।४६।१३	०५।१८।२९।५६	०२।१७।२९।१५	०३।२२।४०।३१	०१।२०।४९।५१	०२।०८।२८।०६	०९।२८।००	०९।१२।२९	१०
११	२३।२०।२०	०४।२४।२७।०६	०१।२७।०१।२१	०८।०७।१७।२३	०५।१९।४५।१४	०२।१७।३८।०७	०३।२३।५२।५५	०१।२०।५१।३८	०२।०८।२४।५५	०९।२७।५८	०९।१२।२८	११
१२	२३।२४।१६	०४।२५।२५।२७	०२।१०।३५।३९	०८।०७।४८।५२	०५।२०।५८।५०	०२।१७।४६।५२	०३।२५।०५।२४	०१।२०।५३।१९	०२।०८।२१।४४	०९।२७।५६	०९।१२।२७	१२
१३	२३।२८।१३	०४।२६।२३।५१	०२।२४।३४।४९	०८।०८।२०।४१	०५।२२।१०।४२	०२।१७।५५।३०	०३।२६।१७।५८	०१।२०।५४।५४	०२।०८।१८।३४	०९।२७।५४	०९।१२।२६	१३
१४	२३।३२।१०	०४।२७।२२।१७	०३।०८।५९।१८	०८।०८।५२।५०	०५।२३।२०।४३	०२।१८।०४।००	०३।२७।३०।३५	०१।२०।५६।२२	०२।०८।१५।२३	०९।२७।५२	०९।१२।२५	१४
१५	२३।३६।०६	०४।२८।२०।४५	०३।२३।४६।४२	०८।०९।२५।१८	०५।२४।२८।४८	०२।१८।१२।२२	०३।२८।४३।१७	०१।२०।५७।४४	०२।०८।१२।१२	०९।२७।५०	०९।१२।२४	१५
१६	२३।४०।०२	०४।२९।१९।१५	०४।०८।५१।२६	०८।०९।५८।०४	०५।२५।३४।५०	०२।१८।२०।३७	०३।२९।५६।०२	०१।२०।५८।५९	०२।०८।०९।०२	०९।२७।४८	०९।१२।२३	१६
१७	२३।४३।५९	०५।००।१७।४७	०४।२४।०४।४८	०८।१०।३१।०८	०५।२६।३८।४१	०२।१८।२८।४३	०४।०१।०८।५२	०१।२१।००।०८	०२।०८।०५।५१	०९।२७।४६	०९।१२।२२	१७
१८	२३।४७।५६	०५।०१।१६।२१	०५।०९।१५।५८	०८।११।०४।३१	०५।२७।४०।१२	०२।१८।३६।४२	०४।०२।२१।४६	०१।२१।०१।१०	०२।०८।०२।४०	०९।२७।४५	०९।१२।२१	१८
१९	२३।५१।५२	०५।०२।१४।५६	०५।२४।१४।२१	०८।११।३८।१०	०५।२८।३९।१५	०२।१८।४४।३२	०४।०३।३४।४३	०१।२१।०२।०६	०२।०७।५९।२९	०९।२७।४३	०९।१२।२०	१९
२०	२३।५५।४८	०५।०३।१३।३४	०६।०८।५०।५५	०८।१२।१२।०७	०५।२९।३५।३८	०२।१८।५२।१४	०४।०४।४७।४४	०१।२१।०२।५५	०२।०७।५६।१९	०९।२७।४१	०९।१२।१९	२०
२१	२३।५९।४५	०५।०४।१२।१४	०६।२२।५९।५३	०८।१२।४६।२१	०६।००।२९।१०	०२।१८।५९।४८	०४।०६।००।४८	०१।२१।०३।३८	०२।०७।५३।०८	०९।२७।३९	०९।१२।१८	२१
२२	००।०३।४२	०५।०५।१०।५५	०७।०६।३९।०२	०८।१३।२०।५१	०६।०१।१९।३७	०२।१९।०७।१३	०४।०७।१३।५७	०१।२१।०४।१४	०२।०७।४९।५७	०९।२७।३७	०९।१२।१७	२२
२३	००।०७।३८	०५।०६।०९।३८	०७।१९।४९।२०	०८।१३।५५।३७	०६।०२।०६।४४	०२।१९।१४।२९	०४।०८।२७।०८	०१।२१।०४।४४	०२।०७।४६।४६	०९।२७।३६	०९।१२।१७	२३
२४	००।११।३५	०५।०७।०८।२२	०८।०२।३४।०४	०८।१४।३०।३९	०६।०२।५०।१६	०२।१९।२१।३७	०४।०९।४०।२३	०१।२१।०५।०७	०२।०७।४३।३६	०९।२७।३४	०९।१२।१६	२४
२५	००।१५।३१	०५।०८।०७।०९	०८।१४।५७।४९	०८।१५।०५।५६	०६।०३।२९।५५	०२।१९।२८।३६	०४।१०।५३।४२	०१।२१।०५।२३	०२।०७।४०।२५	०९।२७।३२	०९।१२।१५	२५
२६	००।१९।२८	०५।०९।०५।५७	०८।२७।०५।४७	०८।१५।४१।२७	०६।०४।०५।२१	०२।१९।३५।२६	०४।१२।०७।०४	०१।२१।०५।३३	०२।०७।३७।१४	०९।२७।३१	०९।१२।१४	२६
२७	००।२३।२५	०५।१०।०४।४६	०९।०९।०३।०७	०८।१६।१७।१३	०६।०४।३६।१४	०२।१९।४२।०७	०४।१३।२०।२९	व.०१।२१।०५।३६	०२।०७।३४।०४	०९।२७।२९	०९।१२।१४	२७
२८	००।२७।२१	०५।११।०३।३८	०९।२०।५४।३९	०८।१६।५३।१३	०६।०५।०२।११	०२।१९।४८।३९	०४।१४।३३'।४७	०१।२१।०५।३३	०२।०७।३०।५३	०९।२७।२८	०९।१२।१३	२८
२९	००।३१।१७	०५।१२।०२।३१	१०।०२।४४।३२	०८।१७।२९।२६	०६।०५।२२।४७	०२।१९।५५।०२	०४।१५।४७।२९	०१।२१।०५।२३	०२।०७।२७।४२	०९।२७।२६	०९।१२।१२	२९
३०	००।३५।१४	०५।१३।०१।२६	१०।१४।३६।०९	०८।१८।०४।४२	०६।०५।[illegible]।४०	०२।२०।०२।१६	०४।१७।०२।०४	०१।२१।०४।०६	०२।०७।२४।३१	०९।२७।२४	०९।१२।१२	३०

अक्टूबर सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।३६" मासारम्भे (प्लूटो) ७।१९°।०८'

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अक्टू.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अक्टू.
१	००।३९।११	०५।१४।००।२३	१०।२६।३२।०३	०८।१८।४२।३१	व.०६।०५।४६।२२	०२।२०।०७।२०	०४।१८।१४।४२	०१।२१।०४।४३	०२।०७।२१।२१	०९।२७।२३	०९।१२।११	१
२	००।४३।०७	०५।१४।५९।२२	११।०८।३४।०२	०८।१९।११।२३	०६।०५।४८।२८	०२।२०।१३।१४	०४।१९।२८।२४	०१।२१।०४।१३	०२।०७।१८।१०	०९।२७।२२	०९।१२।११	२
३	००।४७।०४	०५।१५।५८।२२	११।२०।४३।१७	०८।१९।५६।२७	०६।०५।४३।३४	०२।२०।१८।५९	०४।२०।४२।०९	०१।२१।०३।३७	०२।०७।१४।५९	०९।२७।२१	०९।१२।१०	३
४	००।५१।००	०५।१६।५७।२५	००।०३।००।३८	०८।२०।३३।४३	०६।०५।३१।१८	०२।२०।२४।३५	०४।२१।५५।५७	०१।२१।०२।५४	०२।०७।११।३८	०९।२७।१९	०९।१२।१०	४
५	००।५४।५७	०५।१७।५६।३०	००।१५।२६।४६	०८।२१।११।१०	०६।०५।११।२१	०२।२०।३०।००	०४।२३।०९।४८	०१।२१।०२।०५	०२।०७।०८।३८	०९।२७।१८	०९।१२।०९	५
६	००।५८।५४	०५।१८।५५।३७	००।२८।०२।३३	०८।२१।४८।४९	०६।०४।४३।३१	०२।२०।३५।१६	०४।२४।२३।४२	०१।२१।०१।०९	०२।०७।०५।२७	०९।२७।१७	०९।१२।०९	६
७	०१।०२।५०	०५।१९।५४।४७	०१।१०।४९।१५	०८।२२।२६।४०	०६।०४।०७।४४	०२।२०।४०।२१	०४।२५।३७।४४	०१।२१।००।०७	०२।०७।०२।१६	०९।२७।१६	०९।१२।०८	७
८	०१।०६।४६	०५।२०।५३।५९	०१।२३।४८।३७	०८।२३।०४।४९	०६।०३।२४।०९	०२।२०।४५।१७	०४।२६।५१।४०	०१।२०।५८।५९	०२।०६।५९।०६	०९।२७।१४	०९।१२।०८	८
९	०१।१०।४३	०५।२१।५३।१३	०२।०७।०२।५३	०८।२३।४२।५३	०६।०२।३३।०६	०२।२०।५०।०२	०४।२८।०५।४४	०१।२०।५७।४३	०२।०६।५५।५५	०९।२७।१३	०९।१२।०८	९
१०	०१।१४।४०	०५।२२।५२।२९	०२।२०।३४।१९	०८।२४।२१।१६	०६।०१।३५।१४	०२।२०।५४।३७	०४।२९।१९।५०	०१।२०।५६।२२	०२।०६।५२।४८	०९।२७।१२	०९।१२।०८	१०
११	०१।१८।३६	०५।२३।५१।४८	०३।०४।२४।५१	०८।२४।५९।४९	०६।००।३१।३१	०२।२०।५९।०१	०५।००।३४।००	०१।२०।५४।५४	०२।०६।४९।३३	०९।२७।११	०९।१२।०७	११
१२	०१।२२।३३	०५।२४।५१।०९	०३।१८।३५।२०	०८।२५।३८।३२	०५।२९।२३।१३	०२।२१।०३।१५	०५।०१।४८।१२	०१।२०।५३।२०	०२।०६।४६।२३	०९।२७।१०	०९।१२।०७	१२
१३	०१।२६।२९	०५।२५।५०।३२	०४।०३।०४।४५	०८।२६।१७।२६	०५।२८।११।५३	०२।२१।०७।१८	०५।०३।०२।२७	०१।२०।५१।३९	०२।०६।४३।१२	०९।२७।०९	०९।१२।०७	१३
१४	०१।३०।२६	०५।२६।४९।५७	०४।१७।४९।३५	०८।२६।५६।२९	०५।२६।५९।२३	०२।२१।११।११	०५।०४।१६।४५	०१।२०।४९।५२	०२।०६।४०।०१	०९।२७।०९	०९।१२।०७	१४
१५	०१।३४।२३	०५।२७।४९।२५	०५।०२।४३।४२	०८।२७।३५।४३	०५।२५।४७।४३	०२।२१।१४।५२	०५।०५।३१।०५	०१।२०।४७।५९	०२।०६।३६।५०	०९।२७।०८	०९।१२।०७	१५
१६	०१।३८।१९	०५।२८।४८।५५	०५।१७।३८।४८	०८।२८।१५।०६	०५।२४।३८।५७	०२।२१।१८।२२	०५।०६।४५।२८	०१।२०।४५।५९	०२।०६।३३।४०	०९।२७।०७	०९।१२।०६	१६
१७	०१।४२।१५	०५।२९।४८।२७	०६।०२।२५।४५	०८।२८।५४।३८	०५।२३।३५।०७	०२।२१।२१।४२	०५।०७।५९।५३	०१।२०।४३।५३	०२।०६।३०।२९	०९।२७।०६	०९।१२।०६	१७
१८	०१।४६।१२	०६।००।४८।०१	०६।१६।५६।०३	०८।२९।३४।११	०५।२२।३८।०७	०२।२१।२४।५०	०५।०९।१४।२०	०१।२०।४१।४२	०२।०६।२७।१८	०९।२७।०६	मा.०९।१२।०६	१८
१९	०१।५०।०९	०६।०१।४७।३७	०७।०१।०३।२०	०९।००।१४।१०	०५।२१।४९।३२	०२।२१।२७।४७	०५।१०।२८।५०	०१।२०।३९।२४	०२।०६।२४।०७	०९।२७।०५	०९।१२।०६	१९
२०	०१।५४।०५	०६।०२।४७।१५	०७।१४।४८।०५	०९।००।५४।०९	०५।२१।१०।४०	०२।२१।३०।३२	०५।११।४३।२१	०१।२०।३७।००	०२।०६।२०।५७	०९।२७।०४	०९।१२।०६	२०
२१	०१।५८।०२	०६।०३।४६।५५	०७।२७।५७।४४	०९।०१।३४।१७	०५।२०।४२।२४	०२।२१।३३।०६	०५।१२।५७।५५	०१।२०।३४।३१	०२।०६।१७।४६	०९।२७।०४	०९।१२।०७	२१
२२	०२।०१।५८	०६।०४।४६।३७	०८।१०।४६।१४	०९।०२।१४।३३	०५।२०।२५।१६	०२।२१।३५।२९	०५।१४।१२।३१	०१।२०।३१।५५	०२।०६।१४।३५	०९।२७।०३	०९।१२।०७	२२
२३	०२।०५।५५	०६।०५।४६।२०	०८।२३।१३।१४	०९।०२।५४।५७	मा.०५।२०।१९।२८	०२।२१।३७।४०	०५।१५।२७।०९	०१।२०।२९।१४	०२।०६।११।२४	०९।२७।०३	०९।१२।०७	२३
२४	०२।०९।५२	०६।०६।४६।०५	०९।०५।२३।२७	०९।०३।३५।२८	०५।२०।२४।४९	०२।२१।३९।४०	०५।१६।४१।४९	०१।२०।२६।२७	०२।०६।०८।१४	०९।२७।०३	०९।१२।०७	२४
२५	०२।१३।४८	०६।०७।४५।५२	०९।१७।२२।०७	०९।०४।१६।०७	०५।२०।४०।५७	०२।२१।४१।२८	०५।१७।५६।३०	०१।२०।२३।३५	०२।०६।०५।०३	०९।२७।०२	०९।१२।०७	२५
२६	०२।१७।४४	०६।०८।४५।४०	०९।२९।१४।२५	०९।०४।५६।५४	०५।२१।०७।१५	०२।२१।४३।०४	०५।१९।११।१३	०१।२०।२०।३७	०२।०६।०१।५२	०९ : २७।०२	०९।१२।०७	२६
२७	०२।२१।४२	०६।०९।४५।३०	१०।११।०५।१६	०९।०५।३७।४७	०५।२१।४२।५९	०२।२१।४४।२९	०५।२०।२५।५८	०१।२०।१७।३४	०२।०५।५८।४१	०९।२७।०२	०९।१२।०८	२७
२८	०२।२५।३८	०६।१०।४५।२२	१०।२२।५८।५६	०९।०६।१८।४७	०५।२२।२७।२२	०२।२१।४५।४२	०५।२१।४०।४५	०१।२०।१४।२५	०२।०५।५५।३१	०९।२७।०"	०९।१२।०८	२८
२९	०२।२९।३४	०६।११।४५।१६	११।०४।५८।५६	०९।०६।५९।५४	०५।२३।१९।३०	०२।२१।४६।४३	०५।२२।५५।३३	०१।२०।११।१२	०२।०५।५२।२०	०९।२७।०२	०९।१२।०८	२९
३०	०२।३३।३१	०६।१२।४५।११	११।१७।०७।५५	०९।०७।४२।०६	०५।२४।१८।३४	०२।२१।४७।३२	०५।२४।१०।२४	०१।२०।०७।५३	०२।०५।४९।०९	मा.०९।२७।०१	०९।१२।०९	३०
३१	०२।३७।२८	०६।१३।४५।०८	११।२९।२७।४०	०९।०८।२२।२६	०५।२५।२३।४३	०२।२१।४८।०९	०५।२५।२५।१५	०१।२०।०४।२९	०२।०५।४५।५८	०९।२७।०१	०९।१२।०९	३१

नवम्बर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।३९" मासारम्भे (प्लूटो) ७।१९°।५८'

ता. नव.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. नव.
१	०२।४१।२४	०६।१४।४५।०७	००।११।५९।०६	०९।०९।०३।५१	०५।२६।३४।१०	०२।२१।४८।३५	०५।२६।४०।०९	०१।२०।०१।०१	०२।०५।४२।४८	०९।२७।०१	०९।१२।१०	१
२	०२।४५।२०	०६।१५।४५।०७	००।२४।४२।२८	०९।०९।४५।२१	०५।२७।४९।११	व.०२।२१।४८।४८	०५।२७।५५।०४	०१।१९।५७।२७	०२।०५।३९।३७	०९।२७।०२	०९।१२।१०	२
३	०२।४९।१७	०६।१६।४५।१०	०१।०७।३७।३३	०९।१०।२६।५८	०५।२९।०८।०७	०२।२१।४८।५०	०५।२९।१०।०१	०१।१९।५३।४९	०२।०५।३६।२६	०९।२७।०२	०९।१२।११	३
४	०२।५३।१३	०६।१७।४५।१५	०१।२४।४४।०२	०९।११।०८।४०	०६।००।३०।२२	०२।२१।४८।४०	०६।००।२५।००	०१।१९।५०।०६	०२।०५।३३।१५	०९।२७।०२	०९।१२।११	४
५	०२।५७।१०	०६।१८।४५।२१	०२।०४।०१।४२	०९।११।५०।२७	०६।०१।५५।२५	०२।२१।४८।१७	०६।०१।४०।००	०१।१९।४६।१९	०२।०५।३०।०५	०९।२७।०२	०९।१२।१२	५
६	०३।०१।०७	०६।१९।४५।३०	०२।१७।३०।३७	०९।१२।३२।२०	०६।०३।२२।४७	०२।२१।४७।४३	०६।०२।५५।०१	०१।१९।४२।२७	०२।०५।२६।५४	०९।२७।०२	०९।१२।१२	६
७	०३।०५।०३	०६।२०।४५।४१	०३।०१।११।०४	०९।१३।१४।१७	०६।०४।५२।०६	०२।२१।४६।५६	०६।०४।१०।०५	०१।१९।३८।३१	०२।०५।२३।४३	०९।२७।०३	०९।१२।१३	७
८	०३।०८।५९	०६।२१।४५।५३	०३।१५।०३।२०	०९।१३।५६।२०	०६।०६।२२।५८	०२।२१।४५।५८	०६।०५।२५.।०९	०१।१९।३४।३१	०२।०५।२०।३२	०९।२७।०३	०९।१२।१४	८
९	०३।१२।५७	०६।२२।४६।०८	०३।२९।०७।१५	०९।१४।३८।२८	०६।०७।५५।०८	०२।२१।४४।४७	०६।०६।४०।१६	०१।१९।३०।२७	०२।०५।१७।२१	०९।२७।०४	०९।१२।१५	९
१०	०३।१६।५३	०६।२३।४६।२५	०४।१३।२१।५८	०९।१५।२०।४१	०६।०९।२८।१९	०२।२१।४३।२५	०६।०७।५५।२३	०१।१९।२६।१९	०२।०५।१४।११	०९।२७।०४	०९।१२।१५	१०
११	०३।२०।४९	०६।२४।४६।४४	०४।२७।४५।०२	०९।१६।०२।५९	०६।११।०२।१८	०२।२१।४१।५०	०६।०९।१०।३२	०१।१९।२२।०७	०२।०५।११।००	०९।२७।०५	०९।१२।१६	११
१२	०३।२४।४६	०६।२५।४७।०५	०५।१२।१२।५७	०९।१६।४५।२१	०६।१२।३६।५५	०२।२१।४०।०३	०६।१०।२५।४२	०१।१९।१७।५१	०२।०५।०७।४९	०९।२७।०५	०९।१२।१७	१२
१३	०३।२८।४३	०६।२६।४७।२७	०५।२६।४०।३५	०९।१७।२७।४८	०६।१४।११।५९	०२।२१।३८।०४	०६।११।४०।५४	०१।१९।१३।३२	०२।०५।०४।३८	०९।२७।०६	०९।१२।१८	१३
१४	०३।३२।३९	०६।२७।४७।५२	०६।११।०२।०४	०९।१८।१०।२०	०६।१५।४७।२४	०२।२१।३५।५४	०६।१२।५६।०६	०१।१९।०९।१०	०२।०५।०१।२८	०९।२७।०६	०९।१२।१९	१४
१५	०३।३६।३६	०६।२८।४८।१८	०६।२५।११।२७	०९।१८।५२।५६	०६।१७।२३।०३	०२।२१।३३।३१	०६।१४।११।२०	०१।१९।०४।४४	०२।०४।५८।१७	०९।२७।०७	०९।१२।२०	१५
१६	०३।४०।३२	०६।२९।४८।४६	०७।०९।०३।४५	०९।१९।३५।३६	०६।१८।५८।५०	०२।२१।३०।५६	०६।१५।२६।३४	०१।१९।००।१६	०२।०४।५५।०६	०९।२७।०८	०९।१२।२०	१६
१७	०३।४४।२८	०७।००।४९।१६	०७।२२।३५।३२	०९।२०।१८।२१	०६।२०।३४।४२	०२।२१।२८।१०	०६।१६।४१।५०	०१।१८।५५।४४	०२।०४।५१।५५	०९।२७।०९	०९।१२।२१	१७
१८	०३।४८।२६	०७।०१।४९।४७	०८।०५।४५।१८	०९।२१।०१।०९	०६।२२।१०।४५	०२।२१।२५।१२	०६।१७।५७।०७	०१।१८।५१।१०	०२।०४।४८।४४	०९।२७।१०	०९।१२।२२	१८
१९	०३।५२।२२	०७।०२।५०।१९	०८।१८।३३।३२	०९।२१।४४।०२	०६।२३।४६।५६	०२।२१।२२।०३	०६।१९।१२।२४	०१।१८।४६।३३	०२।०४।४५।३४	०९।२७।११	०९।१२।२३	१९
२०	०३।५६।१८	०७।०३।५०।५३	०९।०१।०२।१९	०९।२२।२६।५८	०६।२५।२२।१३	०२।२१।१८।४२	०६।२०।२७।४२	०१।१८।४१।५४	०२।०४।४२।२३	०९।२७।१२	०९।१२।२५	२०
२१	०४।००।१५	०७।०४।५१।२८	०९।१३।१५।०३	०९।२३।०९।५७	०६।२६।५७।५५	०२।२१।१५।०९	०६।२१।४३।०१	०१।१८।३७।१२	०२।०४।३९।१२	०९।२७।१३	०९।१२।२६	२१
२२	०४।०४।१२	०७।०५।५२।०४	०९।२५।१६।००	०९।२३।५३।००	०६।२८।३३।२३	०२।२१।११।२६	०६।२२।५८।२०	०१।१८।३२।२९	०२।०४।३६।०१	०९।२७।१४	०९।१२।२७	२२
२३	०४।०८।०८	०७।०६।५२।४२	१०।०७।०९।५७	०९।२४।३६।०६	०७।००।०८।५७	०२।२१।०७।३१	०६।२४।१३।४०	०१।१८।२७।४३	०२।०४।३२।५०	०९।२७।१५	०९।१२।२८	२३
२४	०४।१२।०५	०७।०७।५३।२०	१०।१९।०१।५१	०९।२५।१९।१५	०७।०१।४४।१६	०२।२१।०३।२५	०६।२५।२९।००	०१।१८।२२।५६	०२।०४।२९।४०	०९।२७।१६	०९।१२।२९	२४
२५	०४।१६।०१	०७।०८।५४।००	११।००।५६।२९	०९।२६।०२।२७	०७।०३।१९।३६	०२।२०।५९।०९	०६।२६।४४।२१	०१।१८।१८।०७	०२।०४।२६।२९	०९।२७।१७	०९।१२।३०	२५
२६	०४।१९।५८	०७।०९।५४।४१	११।१२।५८।१८	०९।२६।४५।४२	०७।०४।५४।२८	०२।२०।५४।४२	०६।२७।५९।४३	०१।१८।१३।१७	०२।०४।२३।१८	०९।२७।१९	०९।१२।३२	२६
२७	०४।२३।५५	०७।१०।५५।२३	११।२५।११।०७	०९।२७।२८।५९	०७।०६।२९।२३	०२।२०।५०।०४	०६।२९।१५।०५	०१।१८।०८।२६	०२।०४।२०।०७	०९।२७।२०	०९।१२।३३	२७
२८	०४।२७।५१	०७।११।५६।०६	००।०७।३७।४४	०९।२८।१२।१८	०७।०८।०४।०९	०२।२०।४५।१६	०७।००।३०।२८	०१।१८।०३।३३	०२।०४।१६।५६	०९।२७।२१	०९।१२।३४	२८
२९	०४।३१।४७	०७।१२।५६।५०	००।२०।२०।४०	०९।२८।५५।४०	०७।०९।[illegible]	०२।२०।४०।१८	०७।०१।४५।५२	०१।१७।५८।३९	०२।०४।१३।४६	०९।२७।२३	०९।१२।३६	२९

दिसम्बर सन् २००१ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।४४" मासारम्भे (प्लूटो) ७।२१°।०४'

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
दिस.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	दिस.
१	०४।३९।४१	०७।१४।५८।२२	०१।१६।३६।१५	१०।००।२२।३०	०७।१२।४७।५०	०२।२०।२९।५२	०७।०४।१६।३९	०१।१७।४८।५०	०२।०४।०७।२४	०९।२७।२६	०९।१२।३८	१
२	०४।४३।३७	०७।१५।५९।०९	०२।००।०७।२८	१०।०१।०५।५८	०७।१४।२२।१३	०२।२०।२४।२४	०७।०५।३२।०३	०१।१७।४३।५५	०२।०४।०७।१३	०९।२७।२७	०९।१२।४०	२
३	०४।४७।३४	०७।१६।५९।५८	०२।१३।५१।४७	१०।०१।४९।२८	०७।१५।५६।३२	०२।२०।१८।४७	०७।०६।४७।२९	०१।१७।३८।५९	०२।०४।०१।०२	०९।२७।२९	०९।१२।४१	३
४	०४।५१।३०	०७।१८।००।४८	०२।२७।४६।४२	१०।०२।३३।००	०७।१७।३०।४७	०२।२०।१३।००	०७।०८।०२।५५	०१।१७।३४।०४	०२।०३।५७।५२	०९।२७।३१	०९।१२।४३	४
५	०४।५५।२७	०७।१९।०१।४०	०३।११।४९।३१	१०।०३।१६।३३	०७।१९।०५।०१	०२।२०।०७।०५	०७।०९।१८।२१	०१।१७।२९।०८	०२।०३।५४।४१	०९।२७।३२	०९।१२।४४	५
६	०४।५९।२४	०७।२०।०२।३३	०३।२५।५७।३६	१०।०४।००।०८	०७।२०।३९।१३	०२।२०।०१।०१	०७।१०।३३।४८	०१।१७।२४।१२	०२।०३।५१।३०	०९।२७।३४	०९।१२।४६	६
७	०५।०३।२०	०७।२१।०३।२७	०४।१०।०८।३२	१०।०४।४३।४५	०७।२२।१३।२४	०२।१९।५४।४८	०७।११।४९।१५	०१।१७।१९।१७	०२।०३।४८।१९	०९।२७।३६	०९।१२।४७	७
८	०५।०७।१६	०७।२२।०४।२२	०४।२४।२०।०२	१०।०५।२७।२४	०७।२३।४७।३७	०२।१९।४८।२६	०७।१३।०४।४३	०१।१७।१४।२२	०२।०३।४५।०८	०९।२७।३८	०९।१२।४९	८
९	०५।११।१३	०७।२३।०५।१९	०५।०८।२९।५८	१०।०६।११।०४	०७।२५।२१।५०	०२।१९।४२।५७	०७।१४।२०।१२	०१।१७।०९।२९	०२।०३।४२।५७	०९।२७।४०	०९।१२।५०	९
१०	०५।१५।१०	०७।२४।०६।१७	०५।२२।३६।०७	१०।०६।५४।४६	०७।२६।५६।०६	०२।१९।३५।११	०७।१५।३५।४२	०१।१७।०४।३६	०२।०३।३८।४७	०९।२७।४२	०९।१२।५२	१०
११	०५।१९।०६	०७।२५।०७।१६	०६।०६।३६।१०	१०।०७।३८।३०	०७।२८।३०।२६	०२।१९।२८।३४	०७।१६।५१।१०	०१।१६।५९।४४	०२।०३।३५।३६	०९।२७।४४	०९।१२।५४	११
१२	०५।२३।०३	०७।२६।०८।१६	०६।२०।२७।४०	१०।०८।२२।१५	०८।००।०४।५०	०२।१९।२१।४२	०७।१८।०६।४०	०१।१६।५४।५३	०२।०३।३२।२५	०९।२७।४६	०९।१२।५५	१२
१३	०५।२६।५९	०७।२७।०९।१७	०७।०४।०८।०९	१०।०९।०६।०१	०८।०१।३९।१८	०२।१९।१४।४३	०७।१९।२२।१०	०१।१६।५०।०४	०२।०३।२९।१४	०९।२७।४८	०९।१२।५७	१३
१४	०५।३०।५६	०७।२८।१०।१९	०७।१७।३५।२५	१०।०९।४९।४९	०८।०३।१३।५१	०२।१९।०७।३७	०७।२०।३७।४०	०१।१६।४५।१६	०२।०३।२६।०३	०९।२७।५०	०९।१२।५९	१४
१५	०५।३४।५२	०७।२९।११।२२	०८।००।४७।४४	१०।१०।३३।३७	०८।०४।४८।३१	०२।१९।००।२४	०७।२१।५३।११	०१।१६।४०।३०	०२।०३।२२।५३	०९।२७।५२	०९।१३।०१	१५
१६	०५।३८।४९	०८।००।१२।२६	०८।१३।४४।०६	१०।११।१७।२७	०८।०६।२३।१६	०२।१८।५३।०६	०७।२३।०८।४१	०१।१६।३५।४६	०२।०३।१९।४२	०९।२७।५४	०९।१३।०२	१६
१७	०५।४२।४५	०८।०१।१३।३०	०८।२६।२४।२४	१०।१२।०१।१९	०८।०७।५८।०८	०२।१८।४५।४२	०७।२४।२४।१२	०१।१६।३१।०४	०२।०३।१६।३१	०९।२७।५६	०९।१३।०४	१७
१८	०५।४६।४२	०८।०२।१४।३५	०९।०८।४९।३३	१०।१२।४५।११	०८।०९।३३।०७	०२।१८।३८।१२	०७।२५।३९।४३	०१।१६।२६।२४	०२।०३।१३।२०	०९।२७।५९	०९।१३।०६	१८
१९	०५।५०।३९	०८।०३।१५।४१	०९।२१।०१।२६	१०।१३।२९।०४	०८।११।०८।१२	०२।१८।३०।३७	०७।२६।५५।१४	०१।१६।२१।४७	०२।०३।१०।०९	०९।२८।०१	०९।१३।०८	१९
२०	०५।५४।३५	०८।०४।१६।४६	१०।०३।०२।५२	१०।१४।१२।५७	०८।१२।४३।२२	०२।१८।२२।५८	०७।२८।१०।४५	०१।१६।१७।१३	०२।०३।०६।५९	०९।२८।०३	०९।१३।१०	२०
२१	०५।५८।३१	०८।०५।१७।५२	१०।१४।५७।२७	१०।१४।५६।५२	०८।१४।१८।३९	०२।१८।१५।१४	०७।२९।२६।१६	०१।१६।१२।४१	०२।०३।०३।४८	०९।२८।०६	०९।१३।१२	२१
२२	०६।०२।२८	०८।०६।१८।५९	१०।२६।४९।२१	१०।१५।४०।४६	०८।१५।५३।५९	०२।१८।०७।२६	०८।००।४१।४६	०१।१६।०८।१२	०२।०३।००।३७	०९।२८।०८	०९।१३।१३	२२
२३	०६।०६।२५	०८।०७।२०।०५	११।०८।४३।०६	१०।१६।२४।४२	०८।१७।२९।२३	०२।१७।५९।३५	०८।०१।५७।१७	०१।१६।०३।४६	०२।०२।५७।२६	०९।२८।११	०९।१३।१५	२३
२४	०६।१०।२१	०८।०८।२१।१२	११।२०।४३।२७	१०।१७।०८।३७	०८।१९। ४।४९	०२।१७।५१।४०	०८।०३।१२।४८	०१।१५।५९।२४	०२।०२।५४।१५	०९।२८।१३	०९।१३।१७	२४
२५	०६।१४।१८	०८।०९।२२।१९	००।०२।५५।०४	१०।१७।५२।३३	०८।२०।४०।१४	०२।१७।४३।४३	०८।०४।२८।१८	०१।१५।५५।०५	०२।०२।५१।०४	०९।२८।१६	०९।१३।१९	२५
२६	०६।१८।१४	०८।१०।२३।२५	००।१५।२२।१४	१०।१८।३६।२८	०८।२२।१५।३५	०२।१७।३५।४३	०८।०५।४३।४८	०१।१५।५०।४९	०२।०२।४७।५४	०९।२८।२१	०९।१३।२१	२६
२७	०६।२२।११	०८।११।२४।३२	००।२८।०८।३०	१०।१९।२०।२४	०८।२३।५०।५०	०२।१७।२७।४१	०८।०६।५९।१०	०१।१५।४६।३७	०२।०२।४४।४३	०९।२८।२१	०९।१३।२३	२७
२८	०६।२६।०८	०८।१२।२५।३९	०१।११।१६।१६	१०।२०।०४।२०	०८।२५।२५।५३	०२।१७।१९।३६	०८।०८।१४।४८	०१।१५।४२।२९	०२।०२।४१।३२	०९।२८।२३	०९।१३।२५	२८
२९	०६।३०।०४	०८।१३।२६।४७	०१।२४।४६।२८	१०।२०।४८।१५	०८।२७।००।३९	०२।१७।११।३१	०८।०९।३०।१८	०१।१५।३८।२५	०२।०२।३८।२१	०९।२८।२६	०९।१३।२७	२९
३०	०६।३४।००	०८।१४।२७।५४	०२।०८।३८।१४	१०।२१।३२।१०	०८।२८।३५।०२	०२।१७।०३।२४	०८।१०।४५।४८	०१।१५।३४।२५	०२।०२।३५।१०	०९।२८।२९	०९।१३।२९	३०
३१	०६।३७।५८	०८।१५।२९।०१	०२।२२।४८।४६	१०।२२।१६।०५	०९।००।०८।४४	०२।१६।५५।१७	०८।१२।०१।१८	०१।१५।३०।२९	०२।०२।३२।००	०९।२८।३१	०९।१३।३१	३१

जनवरी सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२′।४९″ मासारम्भे (प्लूटो) ७।२२°।१४′

ता. जन.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता. जन.
१	०६।४१।५४	०८।१६।३०।०९	०३।०७।१३।३३	१०।२३।००।००	०९।०१।४२।०९	०२।१६।४७।०९	०८।१३।१६।४८	०१।१५।२६।३७	०२।०२।२८।४९	०९।२८।३४	०९।१३।३३	१
२	०६।४५।५०	०८।१७।३१।१७	०३।२१।४६।४७	१०।२३।४३।५४	०९।०३।१४।३२	०२।१६।३९।०१	०८।१४।३२।१७	०१।१५।२२।५०	०२।०२।२५।३८	०९।२८।३७	०९।१३।३५	२
३	०६।४९।४७	०८।१८।३२।२५	०४।०६।२२।१०	१०।२४।२७।४८	०९।०४।४५।५३	०२।१६।३०।५४	०८।१५।४७।४७	०१।१५।१९।०७	०२।०२।२२।२७	०९।२८।४०	०९।१३।३८	३
४	०६।५३।४३	०८।१९।३३।३३	०४।२०।५३।४७	१०।२५।११।४८	०९।०६।१५।५५	०२।१६।२२।४७	०८।१७।०३।१६	०१।१५।१५।२९	०२।०२।१९।१६	०९।२८।४३	०९।१३।४०	४
५	०६।५७।४०	०८।२०।३४।४२	०५।०५।१६।४६	१०।२५।५५।३५	०९।०७।४४।२२	०२।१६।१४।४१	०८।१८।१८।४६	०१।१५।११।५५	०२।०२।१६।०५	०९।२८।४६	०९।१३।४२	५
६	०७।०१।३७	०८।२१।३५।५१	०५।१९।२७।४५	१०।२६।३९।२७	०९।०९।१०।५२	०२।१६।०६।३७	०८।१९।३४।१६	०१।१५।०८।२७	०२।०२।१२।५५	०९।२८।४८	०९।१३।४४	६
७	०७।०५।३३	०८।२२।३७।००	०६।०३।२४।४९	१०।२७।२३।२०	०९।१०।३५।०३	०२।१५।५८।३४	०८।२०।४९।४५	०१।१५।०५।०३	०२।०२।०९।४४	०९।२८।५१	०९।१३।४६	७
८	०७।०९।२९	०८।२३।३८।०९	०६।१७।०७।११	१०।२८।०७।१२	०९।११।५६।२६	०२।१५।५०।३४	०८।२२।०५।१५	०१।१५।०१।४५	०२।०२।०६।३३	०९।२८।५४	०९।१३।४८	८
९	०७।१३।२७	०८।२४।३९।१८	०७।००।३४।२४	१०।२८।५१।०३	०९।१३।१४।३२	०२।१५।४२।३६	०८।२३।२०।४४	०१।१४।५८।३१	०२।०२।०३।२२	०९।२८।५७	०९।१३।५०	९
१०	०७।१७।२३	०८।२५।४०।२७	०७।१३।४९।४३	१०।२९।३४।५४	०९।१४।२८।४४	०२।१५।३४।४१	०८।२४।३६।१३	०१।१४।५५।२४	०२।०२।००।११	०९।२९।००	०९।१३।५३	१०
११	०७।२१।१९	०८।२६।४१।३७	०७।२६।५१।००	११।००।१८।४५	०९।१५।३८।२४	०२।१५।२६।४९	०८।२५।५१।४३	०१।१४।५२।२१	०२।०१।५७।०१	०९।२९।०३	०९।१३।५५	११
१२	०७।२५।१६	०८।२७।४२।४६	०८।०९।४०।००	११।०१।०२।३५	०९।१६।४२।४८	०२।१५।१९।०१	०८।२७।०७।१२	०१।१४।४९।२४	०२।०१।५३।५०	०९।२९।०६	०९।१३।५७	१२
१३	०७।२९।१३	०८।२८।४३।५५	०८।२२।१७।२१	११।०१।४६।२४	०९।१७।४१।०९	०२।१५।११।१७	०८।२८।२२।४०	०१।१४।४६।३३	०२।०१।५०।३९	०९।२९।१०	०९।१३।५९	१३
१४	०७।३३।०९	०८।२९।४५।०३	०९।०४।४३।३९	११।०२।३०।१३	०९।१८।३२।३७	०२।१५।०३।३८	०८।२९।३८।०९	०१।१४।४३।४८	०२।०१।४७।२८	०९।२९।१३	०९।१४।०१	१४
१५	०७।३७।०६	०९।००।४६।११	०९।१६।५९।३६	११।०३।१४।०१	०९।१९।२६।१८	०२।१४।५६।०३	०९।००।५३।३७	०१।१४।३१।०८	०२।०१।४४।१७	०९।२९।१६	०९।१४।०४	१५
१६	०७।४१।०२	०९।०१।४७।१९	०९।२९।०६।११	११।०३।५७।४८	०९।१९।५१।१९	०२।१४।४८।३३	०९।०२।०९।०५	०१।१४।३८।३४	०२।०१।४१।०७	०९।२९।१९	०९।१४।०६	१६
१७	०७।४४।५८	०९।०२।४८।२६	१०।११।०५।२२	११।०४।४१।३४	०९।२०।१६।४८	०२।१४।४१।०८	०९।०३।२४।३२	०१।१४।३६।०६	०२।०१।३७।५६	०९।२९।२२	०९।१४।०८	१७
१८	०७।४८।५६	०९।०३।४९।३३	१०।२२।५९।०१	११।०५।२५।२०	०९।२०।३१।५७	०२।१४।३३।५०	०९।०४।३९।५९	०१।१४।३३।४५	०२।०१।३४।४५	०९।२९।२५	०९।१४।१०	१८
१९	०७।५२।५२	०९।०४।५०।३८	११।०४।५०।०९	११।०६।०९।०४	०९।२०।३६।०७	०२।१४।२६।३७	०९।०५।५५।२६	०१।१४।३१।२९	०२।०१।३१।३४	०९।२९।२९	०९।१४।१३	१९
२०	०७।५६।४८	०९।०५।५१।४३	११।१६।४२।२३	११।०६।५२।४८	०९।२०।२८।४९	०२।१४।१९।३१	०९।०७।१०।५१	०१।१४।२९।२०	०२।०१।२८।२३	०९।२९।३२	०९।१४।१५	२०
२१	०८।००।४५	०९।०६।५२।४७	११।२८।३९।५६	११।०७।३६।३०	०९।२०।०९।५०	०२।१४।१२।३२	०९।०८।२६।१७	०१।१४।२७।१७	०२।०१।२५।१३	०९।२९।३५	०९।१४।१७	२१
२२	०८।०४।४२	०९।०७।५३।५०	००।१०।४७।२७	११।०८।२०।११	०९।१९।३९।१८	०२।१४।०५।३९	०९।०९।४१।४१	०१।१४।२५।२०	०२।०१।२२।०२	०९।२९।३८	०९।१४।१९	२२
२३	०८।०८।३८	०९।०८।५४।५२	००।२३।०९।४९	११।०९।०३।५०	०९।१८।५७।४५	०२।१३।५८।५४	०९।१०।५७।०५	०१।१४।२३।३०	०२।०१।१८।५१	०९।२९।४२	०९।१४।२२	२३
२४	०८।१२।३५	०९।०९।५५।५३	०१।०५।५१।४४	११।०९।४७।२९	०९।१८।०६।०६	०२।१३।५२।१६	०९।१२।१२।२९	०१।१४।२१।४६	०२।०१।१५।४०	०९।२९।४५	०९।१४।२४	२४
२५	०८।१६।३१	०९।१०।५६।५३	०१।१८।५७।१८	११।१०।३१।०६	०९।१७।०५।४३	०२।१३।४५।४७	०९।१३।२७।५१	०१।१४।२०।०८	०२।०१।१२।२९	०९।२९।४८	०९।१४।२६	२५
२६	०८।२०।२८	०९।११।५७।५२	०२।०२।२९।२२	११।११।१४।४१	०९।१५।५८।११	०२।१३।३९।२५	०९।१४।४३।१४	०१।१४।१८।३७	०२।०१।०९।१९	०९।२९।५२	०९।१४।२८	२६
२७	०८।२४।२४	०९।१२।५८।५०	०२।१६।२८।५३	११।११।५८।१५	०९।१४।४५।५७	०२।१३।३३।११	०९।१५।५८।३४	०१।१४।१७।१३	०२।०१।०६।०८	०९।२९।५५	०९।१४।३१	२७
२८	०८।२८।२१	०९।१३।५९।४७	०३।००।५४।०६	११।१२।४१।४७	०९।१३।३०।५०	०२।१३।२७।०६	०९।१७।१३।५६	०१।१४।१५।५५	०२।०१।०२।५७	०९।२९।५८	०९।१४।३३	२८
२९	०८।३२।१७	०९।१५।००।४३	०३।१५।४०।२०	११।१३।२५।१७	०९।१२।१५।१३	०२।१३।२१।१०	०९।१८।२९।१६	०१।१४।१४।४३	०२।००।५९।४६	१०।००।०२	०९।१४।३५	२९
३०	०८।३६।१३	०९।१६।०१।३८	०४।००।४०।०३	११।१४।०८।४७	०९।११।०१।१७	०२।१३।१५।२३	०९।१९।४४।३६	०१।१४।१३।३९	०२।००।५६।३४	१०।००।०५	०९।१४।३८	३०
३१	०८।४०।११	०९।१७।०२।३२	०४।१५।४३।५७	११।१४।५२।१४	०९।०९।५०।५९	०२।१३।०९।४५	०९।२०।५९।५५	०१।१४।१२।४१	०२।००।५३।२४	१०।००।०८	०९।१४।४०	३१

फरवरी सन् २००२ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२′ ।५४″ मासारम्भे (प्लूटो) ७।२३°।१२′

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
फर.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	फर.
१	०८।४४।०७	०९।१८।०३।२६	०५।००।४४।२४	११।१५।३५।४०	०९।०८।४५।५८	०२।१३।०४।१६	०९।२२।१५।१३	०१।१४।११।४९	०२।००।५०।१४	१०।००।१२	०९।१४।४२	१
२	०८।४८।०३	०९।१९।०४।१८	०५।१५।२७।०४	११।१६।१९।०४	०९।०७।४७।३३	०२।१२।५८।५७	०९।२३।३०।३१	०१।१४।११।०४	०२।००।४७।०३	१०।००।१५	०९।१४।४४	२
३	०८।५२।००	०९।२०।०५।१०	०५।२९।५२।०४	११।१७।०२।२७	०९।०६।५६।४०	०२।१२।५३।४८	०९।२४।४५।४८	०१।१४।१०।२६	०२।००।४३।५२	१०।००।१९	०९।१४।४७	३
४	०८।५५।५७	०९।२१।०६।०१	०६।१३।५४।२५	११।१७।४५।४८	०९।०६।१३।५४	०२।१२।४८।४८	०९।२६।०१।०५	०१।१४।०९।५५	०२।००।४०।४२	१०।००।२२	०९।१४।४९	४
५	०८।५९।५३	०९।२२।०६।५१	०६।२७।३३।४४	११।१८।२९।०८	०९।०५।३९।३६	०२।१२।४३।५९	०९।२७।१६।२१	०१।१४।०९।३१	०२।००।३७।३१	१०।००।२६	०९।१४।५१	५
६	०९।०३।५०	०९।२३।०७।४०	०७।१०।५१।३३	११।१९।१२।२६	०९।०५।१३।४६	०२।१२।३९।२०	०९।२८।३१।३७	०१।१४।०९।१३	०२।००।३४।२०	१०।००।२९	०९।१४।५३	६
७	०९।०७।४६	०९।२४।०८।२९	०७।२३।५०।२९	११।१९।५५।४३	०९।०४।५६।१८	०२।१२२।३४।५२	०९।२९।४६।५२	०१।१४।०९।०२	०२।००।३१।०९	१०।००।३२	०९।१४।५६	७
८	०९।११।४३	०९।२५।०९।१६	०८।०६।३३।३६	११।२०।३८।५८	मा.०९।०४।४६।५३	०२।१२।३०।३४	१०।०१।०२।०६	मा.०१।१४।०८।५८	०२।००।२७।५९	१०।००।३६	०९।१४।५८	८
९	०९।१५।४०	०९।२६।१०।०२	०८।१९।०३।५१	११।२१।२२।११	०९।०४।४५।१०	०२।१२।२६।२७	१०।०२।१७।२०	०१।१४।०९।०१	०२।००।२४।४८	१०।००।३९	०९।१५।००	९
१०	०९।१९।३६	०९।२७।१०।४८	०९।०१।२३।४७	११।२२।०५।२३	०९।०४।५०।४२	०२।१२।२२।३१	१०।०३।३२।३३	०१।१४।०९।१०	०२।००।२१।३७	१०।००।४३	०९।१५।०२	१०
११	०९।२३।३२	०९।२८।११।३२	०९।१३।३५।२७	११।२२।४८।३३	०९।०५।०३।०१	०२।१२।१८।४६	१०।०४।४७।४५	०१।१४।०९।२७	०२।००।१८।२६	१०।००।४६	०९।१५।०५	११
१२	०९।२७।२९	०९।२९।१२।१५	०९।२५।४०।२४	११।२३।३१।४२	०९।०५।२१।३८	०२।१२।१५।१२	१०।०६।०२।५७	०१।१४।०९।५०	०२।००।१५।१५	१०।००।५०	०९।१५।०७	१२
१३	०९।३१।२६	१०।००।१२।५६	१०।०७।३९।५१	११।२४।१४।४९	०९।०५।४६।०४	०२।१२।११।४९	१०।०७।१८।०७	०१।१४।१०।२०	०२।००।१२।०५	१०।००।५३	०९।१५।०९	१३
१४	०९।३५।२२	१०।०१।१३।३६	१०।१९।३५।००	११।२४।५७।५८	०९।०६।१५।५२	०२।१२।०८।३८	१०।०८।३३।१७	०१।१४।१०।५७	०२।००।०८।५४	१०।००।५७	०९।१५।११	१४
१५	०९।३९।१९	१०।०२।१४।१५	११।०१।२७।१४	११।२५।४०।५७	०९।०६।५०।३८	०२।१२।०५।३९	१०।०९।४८।२५	०१।१४।११।४१	०२।००।०५।४३	१०।०१।००	०९।१५।१४	१५
१६	०९।४३।१५	१०।०३।१४।५२	११।१३।१८।२०	११।२६।२३।५९	०९।०७।२९।५६	०२।१२।०२।५१	१०।११।०३।३३	०१।१४।१२।३२	०२।००।०२।३२	१०।०१।०४	०९।१५।१६	१६
१७	०९।४७।१२	१०।०४।१५।२७	११।२५।१०।४४	११।२७।०६।५९	०९।०८।१३।२४	०२।१२।००।१५	१०।१२।१८।३९	०१।१४।१३।२९	०१।२९।५९।२२	१०।०१।०७	०९।१५।१८	१७
१८	०९।५१।०९	१०।०५।१६।००	००।०७।०७।३४	११।२७।४९।५६	०९।०९।००।४४	०२।११।५७।५१	१०।१३।३३।४४	०१।१४।१४।३३	०१।२९।५६।११	१०।०१।११	०९।१५।२०	१८
१९	०९।५५।०५	१०।०६।१६।३२	००।१९।१२।४४	११।२८।३२।५२	०९।०९।५१।३५	०२।११।५५।३८	१०।१४।४८।४९	०१।१४।१५।४४	०१।२९।५३।००	१०।०१।१४	०९।१५।२२	१९
२०	०९।५९।०१	१०।०७।१७।०२	०१।०१।३०।४०	११।२९।१५।४६	०९।१०।४५।४२	०२।११।५३।३८	१०।१६।०३।५१	०१।१४।१७।०२	०१।२९।४९।४९	१०।०१।१८	०९।१५।२४	२०
२१	१०।०२।५८	१०।०८।१७।३०	०१।१४।०६।१४	११।२९।५८।३८	०९।११।४२।४९	०२।११।५१।४९	१०।१७।१८।५३	०१।१४।१८।२६	०१।२९।४६।३९	१०।०१।२१	०९।१५।२७	२१
२२	१०।०६।५५	१०।०९।१७।५६	०१।२७।०४।१३	००।००।४२।२७	०९।१२।४२।४४	०२।११।५०।१२	१०।१८।३३।५३	०१।१४।१९।५७	०१।२९।४३।२८	१०।०१।२४	०९।१५।२९	२२
२३	१०।१०।५१	१०।१०।१८।२०	०२।१०।२८।५१	००।०१।२४।१५	०९।१३।४५।१५	०२।११।४८।४७	१०।१९।४८।५२	०१।१४।२१।३४	०१।२९।४०।१७	१०।०१।२८	०९।१५।३१	२३
२४	१०।१४।४८	१०।११।१८।४३	०२।२४।२२।५३	००।०२।०७।००	०९।१४।५०।१०	०२।११।४७।३४	१०।२१।०३।५०	०१।१४।२३।१८	०१।२९।३७।०६	१०।०१।३१	०९।१५।३३	२४
२५	१०।१८।४४	१०।१२।१९।०३	०३।०८।४६।४०	००।०२।४९।४३	०९।१५।५७:२१	०२।११।४६।३३	१०।२२।१८।४६	०१।१४।२५।०१	०१।२९।३३।५६	१०।०१।३५	०९।१५।३५	२५
२६	१०।२२।४१	१०।१३।१९।२२	०३।२३।३७।०५	००।०३।३२।२४	०९।१७।०६।३८	०२।११।४५।४४	१०।२३।३३।४२	०१।१४।२७।०६	०१।२९।३०।४५	१०।०१।३८	०९।१५।३७	२६
२७	१०।२६।३८	१०।१४।१९।३९	०४।०८।४७।१७	००।०४।१५।०३	०९।१८।१७।५५	०२।११।४५।०७	१०।२४।४८।३५	०१।१४।२९।०९	०१।२९।२७।३४	१०।०१।४२	०९।१५।३९	२७
२८	१०।३०।३४	१०।१५।१९।५४	०४।२४।०७।१६	००।०४।५७।३९	०९।१९।३१।०५	०२।११।४४।४१	१०।२६।०३।२८	०१।१४।३१।११	०१।२९।२४।२३	१०।०१।४५	०९।१५।४१	२८

मार्च सन् २००२ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशा : २३°।५२'।५८'' मासारम्भे (प्लूटो) ७।२३°।४२'

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मार्च	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	मार्च
१	१०।३४।३०	१०।१६।२०।०८	०५।०९।२५।२०	००।०५।४०।१३	०९।२०।४६।०१	मा.०२।११।४४।२८	१०।२७।१८।१९	०१।१४।३३।३५	०१।२९।२१।१३	१०।०१।४८	०९।१५।४३	१
२	१०।३८।२८	१०।१७।२०।११	०५।२४।३०।२१	००।०६।२२।४६	०९।२२।०२।३८	०२।११।४४।२६	१०।२८।३३।०९	०१।१४।३५।४८	०१।२९।१८।०२	१०।०१।५२	०९।१५।४५	२
३	१०।४२।२४	१०।१८।२०।३०	०६।०९।१३।३४	००।०७।०५।१६	०९।२३।२०।५२	०२।११।४४।३७	१०।२९।४७।५७	०१।१४।३८।२७	०१।२९।१४।५१	१०।०१।५५	०९।१५।४७	३
४	१०।४६।२०	१०।१९।२०।३८	०६।२३।२९।४५	००।०७।४७।४३	०९।२४।४०।३८	०२।११।४४।५९	११।०१।०२।४५	०१।१४।४१।०२	०१।२९।११।४०	१०।०१।५८	०९।१५।४९	४
५	१०।५०।१७	१०।२०।२०।४५	०७।०७।१७।११	००।०८।३०।०९	०९।२६।०१।५४	०२।११।४५।३३	११।०२।१७।३१	०१।१४।४३।४३	०१।२९।०८।३०	१०।०२।०२	०९।१५।५१	५
६	१०।५४।१३	१०।२१।२०।५१	०७।२०।३७।३७	००।०९।१२।३३	०९।२७।२४।३५	०२।११।४६।१८	११।०३।३२।१६	०१।१४।४६।३१	०१।२९।०५।१९	१०।०२।०५	०९।१५।५३	६
७	१०।५८।१०	१०।२२।२०।५५	०८।०३।३३।५४	००।०९।५४।५५	०९।२८।४८।३८	०२।११।४७।१६	११।०४।४६।५९	०१।१४।४९।२४	०१।२९।०२।०८	१०।०२।०८	०९।१५।५५	७
८	११।०२।०७	१०।२३।२०।५७	०८।१६।१०।११	००।१०।३७।१४	१०।००।१४।०३	०२।११।४८।२५	११।०६।०१।४१	०१।१४।५२।२४	०१।२८।५८।५८	१०।०२।१२	०९।१५।५७	८
९	११।०६।०३	१०।२४।२०।५८	०८।२८।३१।१६	००।११।१९।३२	१०।०१।४०।४७	०२।११।४९।४६	११।०७।१६।२२	०१।१४।५५।३०	०१।२८।५५।४७	१०।०२।१५	०९।१५।५९	९
१०	११।०९।५९	१०।२५।२०।५७	०९।१०।४०।४८	००।१२।०१।४८	१०।०३।०८।४८	०२।११।५१।१८	११।०८।३१।०२	०१।१४।५८।४२	०१।२८।५२।३६	१०।०२।१८	०९।१६।०१	१०
११	११।१३।५६	१०।२६।२०।५५	०९।२२।४२।२६	००।१२।४४।०१	१०।०४।३८।०५	०२।११।५३।०२	११।०९।४५।४०	०१।१५।०१।५९	०१।२८।४९।२५	१०।०२।२२	०९।१६।०३	११
१२	११।१७।५३	१०।२७।२०।५१	१०।०४।३८।५७	००।१३।२६।१३	१०।०६।०८।३७	०२।११।५४।५८	११।११।००।१७	०१।१५।०५।२३	०१।२८।४६।१५	१०।०२।२५	०९।१६।०४	१२
१३	११।२१।४९	१०।२८।२०।४४	१०।१६।३२।३०	००।१४।०८।२२	१०।०७।४०।२४	०२।११।५७।०५	११।१२।१४।५२	०१।१५।०८।५२	०१।२८।४३।०४	१०।०२।२८	०९।१६।०६	१३
१४	११।२५।४५	१०।२९।२०।३७	१०।२८।२४।४०	००।१४।५०।३०	१०।०९।१३।२४	०२।११।५९।२४	११।१३।२९।२६	०१।१५।१२।२८	०१।२८।३९।५३	१०।०२।३१	०९।१६।०८	१४
१५	११।२९।४३	११।००।२०।२७	११।१०।१६।४६	००।१५।३२।३५	१०।१०।४७।३७	०२।१२।०१।५३	११।१४।४३।५९	०१।१५।१६।०९	०१।२८।३६।४२	१०।०२।३४	०९।१६।१०	१५
१६	११।३३।३९	११।०१।२०।१५	११।२२।१०।०७	००।१६।१४।३८	१०।१२।२३।०४	०२।१२।०४।३४	११।१५।५८।२९	०१।१५।१९।५५	०१।२८।३३।३२	१०।०२।३८	०९।१६।१२	१६
१७	११।३७।३५	११।०२।२०।०१	००।०४।०६।१४	००।१६।५६।३९	१०।१३।५९।४४	०२।१२।०७।२७	११।१७।१२।५८	०१।१५।२३।४८	०१।२८।३०।२१	१०।०२।४१	०९।१६।१३	१७
१८	११।४१।३२	११।०३।१९।४४	००।१६।०७।१२	००।१७।३८।३८	१०।१५।३७।३७	०२।१२।१०।३१	११।१८।२७।२५	०१।१५।२७।४६	०१।२८।२७।१०	१०।०२।४४	०९।१६।१५	१८
१९	११।४५।२८	११।०४।१९।२६	००।२८।१५।४१	००।१८।२०।३५	१०।१७।१६।४३	०२।१२।१३।४५	११।१९।४१।५१	०१।१५।३१।४९	०१।२८।२३।५९	१०।०२।४७	०९।१६।१७	१९
२०	११।४९।२५	११।०५।१९।०५	०१।१०।३५।०७	००।१९।०२।२९	१०।१८।५७।०४	०२।१२।१७।११	११।२०।५६।१४	०१।१५।३५।५८	०१।२८।२०।४९	१०।०२।५०	०९।१६।१८	२०
२१	११।५३।२२	११।०६।१८।४२	०१।२३।०९।२७	००।१९।४४।२१	१०।२०।३८।३९	०२।१२।२०।४७	११।२२।१०।३६	०१।१५।४०।१२	०१।२८।१७।३८	१०।०२।५३	०९।१६।२०	२१
२२	११।५७।१८	११।०७।१८।१७	०२।०६।०३।००	००।२०।२६।११	१०।२२।२१।३०	०२।१२।२४।३५	११।२३।२४।५६	०१।१५।४४।३२	०१।२८।१४।२७	१०।०२।५६	०९।१६।२२	२२
२३	१२।०१।१४	११।०८।१७।४९	०२।१९।१९।५७	००।२१।०७।५८	१०।२४।०५।३७	०२।१२।२८।३२	११।२४।३९।१४	०१।१५।४८।५६	०१।२८।११।१७	१०।०२।५९	०९।१६।२३	२३
२४	१२।०५।१२	११।०९।१७।२०	०३।०३।०३।४३	००।२१।४९।४३	१०।२५।५१।००	०२।१२।३२।४१	११।२५।५३।३०	०१।१५।५३।२६	०१।२८।०८।०६	१०।०३।०२	०९।१६।२५	२४
२५	१२।०९।०८	११।१०।१६।४७	०३।१७।१५।५५	००।२२।३१।२६	१०।२७।३७।४०	०२।१२।३६।५९	११।२७।०७।४४	०१।१५।५८।०१	०१।२८।०४।५५	१०।०३।०५	०९।१६।२६	२५
२६	१२।१३।०४	११।११।१६।१३	०४।०१।५५।२६	००।२३।१३।०६	१०।२९।२५।३९	०२।१२।४१।२८	११।२८।२१।५५	०१।१६।०२।४१	०१।२८।०१।४४	१०।०३।०८	०९।१६।२८	२६
२७	१२।१७।०१	११।१२।१५।३७	०४।१६।५७।३१	००।२३।५४।४४	११।०१।१४।५६	०२।१२।४६।०७	११।२९।३६।०५	०१।१६।०७।२६	०१।२७।५८।३४	१०।०३।११	०९।१६।२९	२७
२८	१२।२०।५८	११।१३।१४।५८	०५।०२।१३।५२	००।२४।३६।२०	११।०३।०५।३३	०२।१२।५०।५७	००।००।५०।१३	०१।१६।१२।१५	०१।२७।५५।२३	१०।०३।१४	०९।१६।३१	२८
२९	१२।२४।५४	११।१४।१४।१७	०५।१७।३३।३५	००।२५।१७।५३	११।०४।५७।३०	०२।१२।५५।५६	००।०२।०४।१९	०१।१६।१७।१०	०१।२७।५२।१२	१०।०३।१६	०९।१६।३२	२९
३०	१२।२८।५१	११।१५।१३।३४	०६।०२।४५।०७	००।२५।५९।२४	११।०६।५०।४६	०२।१३।०१।०५	००।०३।१८।२३	०१।१६।२२।०९	०१।२७।४९।०१	१०।०३।१९	०९।१६।३३	३०
३१	१२।३२।४७	११।१६।१२।४९	०६।१७।३८।१५	००।२६।४०।५३	११।०८।४५।२२	०२।१३।०६।२४	००।०१।३२।२५	०१।१६।२७।१३	०१।२७।४५।५१	१०।०३।२२	०९।१६।३५	३१

ता. २६ मार्च से ८ अप्रैल सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
चैत्र शुक्ल पक्षः १

ता. २६ मार्च से ८ अप्रैल सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ चैत्र तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

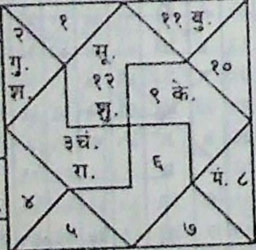
ग. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. चैत्र	तारीख मु. जिल्हिज	तारीख अं. मार्च	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
५	१	चं	३	३१	७	४७	रे	३३	४०	१९	५०	ऐं	२७	४६	ब	७	४७	३०	२४	६	२२	१८	३२	१३	३०	२६	मे. १९।५०
६	२	मं	४	४९	८	१७	अश्वि	३६	०१	२०	४५	वै	२६	४९	कौ	८	१७	३०	२८	६	२१	१८	३२	१४	मु.१	२७	मेष
७	३	बु	५	०८	८	२३	भ	३७	२६	२१	१८	वि	२५	३४	ग	८	२३	३०	३२	६	२०	१८	३३	१५	२	२८	वृ. २७।२३
८	४	गु	४	३१	८	०७	कृ	३७	५८	२१	३०	प्री	२४	०२	वि	८	०७	३०	३६	६	१९	१८	३४	१६	३	२९	वृष
९	५	शु	३	००	७	३०	रो	३७	३८	२१	२१	आ	२२	१४	बा	७	३०	३०	४०	६	१८	१८	३४	१७	४	३०	वृष
१०	६	श	०	३५	६	३०	मृ	३६	२३	२०	५०	सौ	२०	०७	तै	६	३०	३०	४४	६	१६	१८	३५	१८	५	३१	मि. ९।०८
०	७	श	५७	१२	२९	०९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
११	८	र	५२	५३	२७	२४	आ	३४	१२	१९	५६	शो	१७	४२	वि	१६	२०	३०	४९	६	१५	१८	३५	१९	६	अ.१	मिथुन
१२	९	चं	४७	४०	२५	१८	पुन	३१	०६	१८	४१	अ	१५	००	बा	१४	२४	३०	५३	६	१४	१८	३६	२०	७	२	क. १३।०१
१३	१०	मं	४१	३७	२२	५२	पु	२७	०१	१७	०४	सु	१२	०१	तै	१२	०७	३०	५७	६	१३	१८	३६	२१	८	३	कर्क
१४	११	बु	३४	५४	२०	०१	श्ले	२२	२८	१५	११	धृ	८ / २१	४६ / २१	व	९	३२	३१	०१	६	१२	१८	३७	२२	९	४	सिं. १५।११
१५	१२	गु	२७	४४	१७	१६	म	१७	१८	१३	०६	ग	२५	४९	व	६	४४	३१	०६	६	११	१८	३७	२३	१०	५	सिंह
१६	१३	शु	२०	२६	१४	२०	पूफा	११	५५	१०	५६	वृ	२२	१७	तै	१४	२०	३१	१०	६	१०	१८	३८	२४	११	६	क. १६।२३
१७	१४	श	१३	२१	११	२९	उफा	६	४२	८	४९	ध्रु	१८	५२	व	११	२९	३१	१४	६	८	१८	३९	२५	१२	७	कन्या
१८	१५	र	६	५२	८	५२	ह	२ / ५८	०२ / १७	१ / २१	५६ / २६	व्या	१५	४३	ब	८	५२	३१	१८	६	७	१८	३९	२६	१३	८	तु. १८।०८

पनक समाप्त १९।५०, वसंत नवरात्र प्रा., घटस्थापन, संवत्सरारंभ, वर्षफल श्रवण, गुड़ीपड़वा, A
मत्स्य जं., उ.भा. में बुध १४।०६, मुहर्रम मु १, हिजरी सन् १४२२ प्रा.
भद्रा २०।१८ से, विनायक ४, गौरी ३, सौभाग्यशयनी ३, अन्दोलन ३ (मरहल-विहार), B
भद्रा ८।०७ तक, लक्ष्मीपूजन, श्री पंचमी, रोहिणी २ में गुरु २०।२२
स्कन्ध षष्ठी, यमुना षष्ठी, मेला माईसर खाना, B शुक्र अस्त पश्चिम में १८/५३,
भद्रा २९।०९ से, कालरात्रि ७, रेवती में सूर्य १०।१६, D शुक्र पूर्व में उदय १५।३२, अप्रैल मा. ४ ता. ३०
सप्तमी तिथि क्षय C मेला बाहुफोर्ट (कश्मीर), मेला श्री मनसादेवी (हरि), जैन आयंबिल ओली प्रा., D
भद्रा १६।२० तक, अशोकाष्टमी, श्रीदुर्गा ८, महाष्टमी, भवानुत्पत्ति ८, अन्नपूर्णा ज., C
श्री रामनवमी, तारा जयन्ती, नवरात्र समाप्त, बुध मीन में २२/०४, आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण
E जैन आयंबिल ओली समाप्त, आर्द्रा ३ में राहु पू. षा. १ में केतु १२/३४
भद्रा ९।३२ से २०।०९ तक, कामदा ११ व्रत सबका, उभा. में बुध २१/४४, F
प्रदोष व्रत, मुहर्रम, A चन्द्रदर्शन, मु. ३०, उ. भृंगी. नेजा मेला (मेरठ), कृत्तिका ३ में शनि ९।२६, गौतम ज.,
अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), व्यति. महा. १५।१७ से १९।४२ तक,
भद्रा ११।२९ से भद्रा २२।०८ तक, मन्व व्रत, F शुक्र बाल्यत्व समाप्त १५/३२
चैत्री १५, वैशाख स्नान प्रा., श्री हनुमान ज. (द.भा.) सिद्धांचल यात्रा, E

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

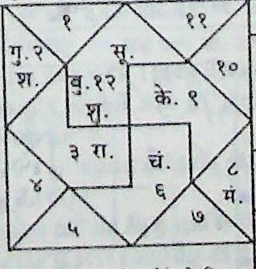
चैत्र शुक्ल ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३२८३

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा.	के
११	२	७	१०	१	११	१	२	८
१७	११	२६	२७	१३	१४	३	१७	१७
२७	३८	४८	१४	४४	३०	५४	३	३
२६	२०	०५	११	४२	५४	५०	११	११
५९	८३६	२१	९७	१०	३७	६	३	३
१२	८	४२	३५	३४	०५	१०	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	मा उ	व अ	व अ
रेवती २	आर्द्रा २	उ.षा. ४	पू.भा. ३	रोहि. २	उ.भा. ४	कृत्ति. ३	आर्द्रा ४	पू.षा. २



इस वर्ष जयनाम का संवत्सर है फलस्वरूप राष्ट्रों में आपसी वैमनस्य में वृद्धि होगी तथा समस्याओं का युद्ध से निराकरण करने की बात कुछ शासकों के मन में उत्पन्न होगी तथा युद्ध में जय की कामना करेंगे अतः जनधन हानि होगी। इस पक्ष में बुध मीन राशि में प्रवेश कर रहा है अतः हाथी तथा मृगों का नाश होगा तथा शासक एवं जनता में विरोध उत्पन्न होने से अशांति का वातावरण बनेगा "धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान गजान्। राजा विरोध कृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति।।" पक्ष के उत्तरार्ध में बुध के संक्रमण वशात् सूर्य बुध शुक्र एक ही राशि में होंगे इसके फलस्वरूप सब धान्यों में तेजी होगी तथा वर्षा में कमी होगी "एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्व धान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः।" शनि मंगल का समसप्तक योग होने से विश्व में अशांति का वातावरण रहेगा तथा कुछ राष्ट्रों के आपसी संबंधों में तनाव की स्थिति बढ़ेगी। गुरु के भी शनि के साथ होने से कुछ राष्ट्र शांति प्रयासों को आगे बढ़ायेंगे। जातीय हिंसा में भी वृद्धि गुरु शनि के एक राशिस्थ होने से होगी। गुरु शनि के एक ही राशि में होने पर प्रजा का नाश तथा अन्न मंहगा होना कहा गया है। "यदा जीवयुतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः। तदाप्रजा विनश्यंति भूयश्चान्नपरिक्षयः"

चैत्र शुक्ल १५ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३२९०



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा.	के
११	५	७	११	१	११	१	२	८
२४	२२	२९	९	१५	१०	४	१६	१६
२१	२७	१२	७	०	३४	३९	४०	४०
०	५२	२६	२०	३४	१६	१८	५६	५६
५८	८५३	१९	१०७	११	२७	६	३	३
५६	४२	८	४२	१२	३४	३४	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
रेवती ३	हस्त ४	उ.षा. ४	उ.भा. २	रो. २	उ.भा. ३	कृत्ति. ३	आर्द्रा ४	पू.षा. २

आकाश लक्षण- मंगल- गुरु के वायु नाड़ी में स्थित होने से तथा पक्ष के उत्तरार्ध में सूर्य एवं शुक्र के साथ बुध के भी स्थित होने से तेज वायु का प्रवाह होगा। हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, बंगाल में तेज हवा के साथ बूंदाबांदी होगी। समुद्री इलाकों में तूफान के साथ वर्षा होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
वैशाख कृष्ण पक्षः २

ता. ९ से २३ अप्रैल सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति चैत्र १९ से वैशाख ३ तक। उत्तरायण उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

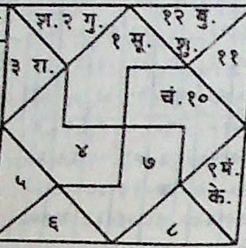
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिन मान घटी	दिन मान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हिं.	मुस्लिम	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
१९	१	चं	१	२३	६	३९	स्वा	५५	५८	२८	२९	ह	१२	५५	कौ	६	३९	३१	२२	६	६	१८	४०	२७	१४	०१	तुला
०	२	चं	५७	१५	२९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२०	३	मं	५४	५३	२८	०२	वि	५५	११	२८	१३	व	१०	३६	व	१६	२६	३१	२६	६	५	१८	४०	२८	१५	१०	वृ.२२/१३
२१	४	बु	५४	२७	२७	५१	अनु	५६	३५	२८	४२	सि	८	५२	ब	१५	५१	३१	३०	६	४	१८	४१	२९	१६	११	वृश्चिक
२२	५	गु	५६	०३	२८	२८	ज्ये	५९	४९	२९	५९	व्य	७	४५	कौ	१६	०३	३१	३५	६	३	१८	४१	३०	१७	१२	ध.२९/५९
२३	६	शु	५९	३२	२९	५१	मू	६०	००	-	-	व	७	१६	ग	१७	०४	३१	३९	६	२	१८	४२	वै.१	१८	१३	धनु
२४	७	श	६०	००	-	-	मू	४	५५	७	५९	प	७	२२	वि	१८	४७	३१	४३	६	१	१८	४२	२	१९	१४	धनु
२५	७	र	४	३८	७	५१	पूषा	११	२६	१०	३४	शि	७	५६	ब	७	५१	३१	४७	६	०	१८	४३	३	२०	१५	म.१७/१७
२६	८	चं	१०	४३	१०	१६	उषा	१८	५३	१३	३२	सि	८	४८	कौ	१०	१६	३१	५१	५	५९	१८	४४	४	२१	१६	मकर
२७	९	मं	१७	१२	१२	५१	श्र	२६	३९	१६	३७	सा	९	४९	ग	१२	५१	३१	५५	५	५८	१८	४४	५	२२	१७	मकर
२८	१०	बु	२३	२७	१५	२०	ध	३४	०६	१९	३५	शु	१०	४७	वि	१५	२०	३१	५९	५	५७	१८	४५	६	२३	१८	कु.६/०८
२९	११	गु	२८	४४	१७	२१	श	४०	४४	२२	१३	शु	११	३२	बा	१७	२१	३२	३	५	५६	१८	४५	७	२४	१९	कुम्भ
३०	१२	शु	३३	१०	१९	११	पूभा	४६	१०	२४	२३	ब्र	११	५७	कौ	६	२५	३२	७	५	५५	१८	४६	८	२५	२०	मी.१७/५३
वै.१	१३	श	३६	०४	२०	१९	उभा	५०	१६	२६	००	ऐं	११	५७	ग	७	४९	३२	११	५	५४	१८	४६	९	२६	२१	मीन
२	१४	र	३७	३२	२०	५३	रे	५३	००	२७	०५	वै	११	३२	वि	८	४०	३२	१५	५	५३	१८	४७	१०	२७	२२	मे.२७/०५
३	३०	चं	३७	४०	२०	५६	अश्वि	५४	२९	२७	३९	वि	१०	४०	च	८	५८	३२	१८	५	५२	१८	४८	११	२८	२३	मेष

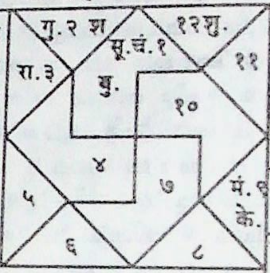
वैशाख मास में जलदान, धर्मघटादि दान करना चाहिये A
द्वितीया तिथि क्षय — A श्री एकलिंग जी का पाटोत्सव (उदयपुर, राज.)
भद्रा १६/२६ से २८/०२ तक, मूल धनु में मंगल १८/१०,
श्री गणेश ४ व्रत, बुध पूर्व में अस्त १०/१७ चन्द्रोदय २२/०७,
रेवती में बुध ८/१४,
भद्रा २९/५१ से, अश्विनी मेष में सूर्य २३/४२, वैशाखी (पंजाब), B
भद्रा १८/४७ तक, — B विषुवत्संक्रांति पुण्यकाल, गुडफ्राइडे
कालाष्टमी, (विवाह मु. उ.षा. में), हिमाचल स्थापना दिवस, ईस्टर डे
रोहिणी ३ में गुरु २०/४३, (विवाह मु.उ.षाढ़ा में)
भद्रा २६/०७ से, — C वै. महा. १५/१३ से २०/४० तक,
भद्रा १५/२० तक, पंचक आरम्भ ६/०८, अश्विनी मेष में बुध २६/४९,
वरुथिनी ११ व्रत सबका, श्री वल्लभाचार्य जयंती, C
शुक्र मार्गी १४/३७, सायन वृष में सूर्य ६/०७, ग्रीष्म ऋतु प्रा.,
भद्रा २०/१९ से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, रा. वैशाख प्रा.
भद्रा ८/४० तक, पंचक समाप्त २७/०५
अमावस्या पुण्य, सोमवती अमावस्या

वैशाख कृ. ८ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३२९८ — (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) — वैशाख कृ. ३० चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३०५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	८	११	१	११	१	२	८
२	६	१	२४	१६	७	५	१६	१६
११	१	३३	१०	३२	५६	३३	१५	१५
३९	५१	३०	४१	२९	२२	१४	३१	३१
५८	७०१	१५	११९	११	८	६	३	३
४२	५	३६	३६	५१	५८	५७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि.१	कृ.	मू.	रेव.	रोहि.	उभा.	कृति.	आर्द्रा.	पूर्व.



इस पक्ष में मंगल के धनु राशिस्थ होने से तृण, काष्ठ, मूलद्रव्य, घृत, कपास तथा पशु यह सब मंहगे होंगे "धनुराशि गते भौमे मूल-द्रव्य तृणानि च। काष्ठं च घृत कार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम।।" बुध के पक्ष के उत्तरार्ध में मेष राशि में प्रवेश से पशु मंहगे होंगे तथा सुवर्ण का भाव सम रहेगा "यदा सौम्यः स्थितो मेषे महर्घं च चतुष्पदाम्।। सुवर्ण समतां याति नात्र कार्या विचारणा।।" इस मास में पांच सोमवार होने से धन धान्य से समृद्धि कारक तथा सुख शांति कारक होगा "सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवंतिहि। धन धान्य समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा" मेष राशि में रवि शुक्रवार के दिन प्रवेश कर रहा है अत: दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि से लोगों में भय तथा कष्ट, उत्तर के देशों में युद्ध आदि का भय और पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा। "नैर्ऋत्येच यदादृष्टि भयक्ते सं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्ष च फलं भवेत्" शनि मंगल का षडष्टक योग होने से विश्वशांति के प्रयास सफल नहीं होंगे तथा कुछ राष्ट्रों में परस्पर संवाद समाप्त होकर वैमनस्य बढेगा तथा कहीं आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी तथा प्राकृतिक प्रकोपों व दुर्घटनाओं में वृद्धि से जनधन हानि होगी। आगे कहीं सैनिक कार्यवही से भी रक्तपात होगा।



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
०	०	८	०	१	११	१	२	८
१९	१	३	८	१७	७	६	१५	१५
१	१७	११	३४	५६	४४	२२	५३	५३
५७	३५	५१	५४	५४	२१	४३	१५	१५
५८	७८२	११	१२७	१२	७	७	३	३
३०	३९	५४	३८	२०	३६	१४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि.	अश्वि.	मूल	अश्वि.	रोहि.	उभा.	कृति.	आर्द्रा	पूर्व.

आकाश लक्षण- सूर्य के आगे गुरु एवं शनि के वायु एवं चण्डानाड़ियों में स्थित होने से तेजवायु का प्रवाह होगा, कहीं तूफान प्राकृतिक प्रकोपों से हानि संभव है। पूर्वोत्तर भारत, महाराष्ट्र में तेज हवा के साथ बूंदाबादी होगी तथा ऋतु परिवर्तन के साथ बादल चाल होगी एवं कुछ भागों में गर्मी बढ़ेगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
वैशाख शुक्ल पक्षः ३

दिन मान	स्टैं. टा. सूर्योदय	स्टैं. टा. सूर्यास्त	तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा.

ता. २४ अप्रैल से ७ मई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १७ वैशाख तक। उत्तरायण उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

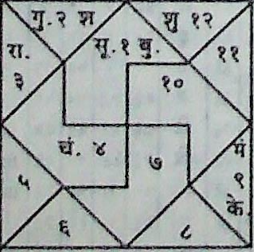
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	वैशाख	मुहर्रम	अप्रैल	रा.घं.मि.
४	१	मं	३६	३८	२०	३०	भ	५४	५१	२७	४७	प्री	९	२५	किं	८	४६	३२	२२	५	५१	१८	४८	१२	२९	२४	मेष
५	२	बु	३४	३६	१९	४०	कृ	५४	११	२७	३३	आ	७	५०	बा	८	०८	३२	२६	५	५०	१८	४९	१३	३०	२५	वृ. ९/४६
६	३	गु.	३१	४६	१८	३१	रो	५३	०२	२७	०२	सौ	५ २७	५० ५१	तै	७	०८	३२	३०	५	४९	१८	४९	१४	स. १	२६	वृष
७	४	शु	२८	१६	१७	०६	मृ	५१	०९	२६	१५	अं	२५	३३	व	५	५१	३२	३४	५	४८	१८	५०	१५	२	२७	मि. १४/४०
८	५	श	२४	१३	१५	२८	आ	४८	४५	२५	१७	सु	२३	०५	बा	१५	२८	३२	३७	५	४७	१८	५१	१६	३	२८	मिथुन
९	६	र	१९	४३	१३	३९	पु	४५	५७	२४	०९	धृ	२०	२८	तै	१३	३९	३२	४१	५	४६	१८	५१	१७	४	२९	क. १८/२६
१०	७	चं	१४	४८	११	४०	पु	४२	४४	२२	५१	शू	१७	४४	व	११	४०	३२	४५	५	४५	१८	५२	१८	५	३०	कर्क
११	८	मं	९	३१	९	३३	श्ले	३९	१२	२१	२५	ग	१४	५३	ब	९	३३	३२	४८	५	४४	१८	५२	१९	६	म. १	सिं. २१/२५
१२	९	बु	३	५८	७	१९	म	३५	२८	१९	५५	वृ	११	५८	कौ	७	१९	३२	५२	५	४४	१८	५३	२०	७	२	सिंह
०	१०	बु	५८	१३	२९	०१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
१३	११	गु	५२	२९	२६	४३	पूफा	३१	३८	१८	२२	ध्रु	९	००	व	१५	५१	३२	५५	५	४३	१८	५३	२१	८	३	क. २३/५९
१४	१२	शु	४६	५८	२४	२९	उफा	२७	५६	१६	५३	व्या	६ २७	०२ ०१	ब	१३	३५	३२	५९	५	४२	१८	५४	२२	९	४	कन्या
१५	१३	श	४१	५४	२२	२७	ह	२४	३६	१५	३२	व	२४	२६	कौ	११	२६	३३	२	५	४१	१८	५४	२३	१०	५	तु. २६/५७
१६	१४	र	३७	३४	२०	४२	चि	२१	५५	१४	२६	सि	२१	५८	ग	९	३२	३३	६	५	४०	१८	५५	२४	११	६	तुला
१७	१५	चं	३४	१७	१९	२३	स्वा	२०	११	१३	४४	व्य	१९	५१	वि	७	५९	३३	९	५	४०	१८	५६	२५	१२	७	तुला

A चन्द्रदर्शन मु. ३० उत्तर श्रृंगो. (विवाह मु. रोहिणी में), अगस्त्य अस्त २१/२८,
श्री परशुराम ज., शिवाजी ज., भरणी में बुध १०/५७, कृत्तिका ४ में शनि १४/४२, A
अक्षय तृतीया, श्री बद्रीकेदारनाथ यात्रा प्रा. श्रीमातंगी ज., सफर मु. २, B
भद्रा ५/५१ से १७/०६ तक, विनायक ४, भरणी में सूर्य १५/२७, (विवाह मु. मृग. में)
श्री आद्यशंकराचार्य जयन्ती, B (विवाह मु. रोहिणी- मृगशिर में), वर्षी तप जैन
श्री रामानुजाचार्य ज., C (विवाह मु. मघा में), दुर्गाष्टमी, सीता नवमी
भद्रा ११/४० से २२/३८ तक, श्री गंगा सप्तमी,
कृत्तिका में बुध १७/१६, व्य.महापात २८/१६ से, मई मा. ५ ता. ३१, C
श्री महावीर केवल ज्ञान दिवस, रोहिणी ४ में गुरु २४/०८, व्य.महा. ९/५१ तक, D
दशमी तिथि क्षय E वैशाख स्नान समाप्त, यमप्रीत्यर्थ जल कुम्भदान, टैगोर जं.,
भद्रा १५/५१ से २६/४३ तक, मोहिनी ११ व्रत स्मार्त्तों का, वृष में बुध ८/०५,
मोहिनी ११ व्रत वैष्णवों का, (विवाह मु.उ.फा. में),
शनि प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय १३/४५, D (विवाह मु. मघा में)
भद्रा २०/४२ से, श्री नृसिंह ज., शनि पश्चिम में अस्त २४/३१,
भद्रा ७/५९ तक, सत्य व्रत, बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयन्ती, वैशाखी १५, E,

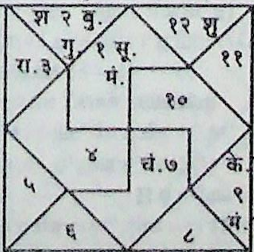
वैशाख शु. ८ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३१३ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
० १६ ४८ ५९	३ २० ३४ ५१	८ ४ ३० २६	० २५ ३८ २४	१ ११ ३७ १४	११ ९ ४२ ३३	१ ७ २१ २४	२ १५ २७ ४९	८ १५ २७ ४९
५८ १३	८५१ ४१	७ ०३	१२५ ०१	१२ ४८	२३ १६	७ २७	३ ११	३ ११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
भरणी २	आश्ले. २	मूल २	भरणी ४	रोहि. १	उ.भा. २	कृत्ति. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १



इस पक्ष में बुध वृष राशि में प्रवेश कर रहा है इससे अशांति एवं भय का वातावरण बनेगा तथा कुछ राष्ट्रों के परस्पर संबंधों में कटुता बढ़ेगी "सोमपुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनीनवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम्" शनि मंगल का षडष्टक योग कहीं राष्ट्रों में परस्पर टकराव की स्थिति उत्पन्न करने वाला है कहीं शांति स्थापित करने के लिए सैनिक कार्यवाही करनी पड़े। दुर्घटनाओं, आतंकवादी गतिविधियों बम्ब विस्फोटों में वृद्धि होगी एवं भय का वातावरण बनेगा।

वैशाख शु. १५ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३१९



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
० २२ ३७ ५१	६ १५ १८ २४	८ ५ २ ४८	१ ७ ३८ २३	१ २० ५४ ४२	११ १२ २६ २०	१ ८ ६ ३१	२ १५ ८ ४५	८ १५ ८ ४५
५८ ०२	८१३ १८	३ ०	१११ १७	१३ ०४	३२ ३३	७ ३६	३ ११	३ ११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
भरणी ३	स्वाति ३	मूल २	कृत्ति. ४	रोहि. ४	उ.भा. ३	कृत्ति. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १

शनि के साथ गुरु के भी होने से शांति प्रयासों को भी बल मिलेगा। बुध के भरणी एवं कृत्तिका नक्षत्र में इस पक्ष में संचार से अनाज के भावों में तेजी का रुख रहेगा। सूर्य के भरणी नक्षत्र में संचार से सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं में तेजी का रुख रहेगा। पक्षान्त में शनि के अस्त होने से रुई, सोना और शेयरों के भावों में गिरावट होगी एवं अरण्डी के भावों में तेजी का रुख रहेगा। बुध के पश्चिम में उदय होने से चावल, धान्य, घी, तेल, विनौला, अरण्डी, सरसों आदि वस्तुओं के भाव में तेजी का रुख रहेगा। चांदी के भावों में वृद्धि होगी जबकि रुई एवं शेयरों के भाव गिरेंगे।

आकाश लक्षण- सूर्य के आगे गुरु शनि के होने से तथा सूर्य के साथ बुध के होने से कुछ स्थानों पर तेज वायु के साथ वर्षा तथा कुछ स्थानों पर साधारण बूंदाबांदी होगी। कहीं-कहीं मात्र तेज हवा ही चलेगी। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश में बादल चाल के साथ तापमान में वृद्धि होने लगेगी। कहीं तेज वायु के प्रवाह से आंधी तूफान की संभावना है।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ४

ता. ८ से २३ मई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १८ वैशाख से २ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

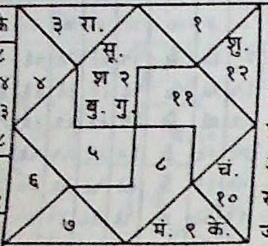
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घंटा	दिनमान मिनट	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	पु. सफर	अं. मई	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
१८	१	मं	३२	१९	१८	३५	वि	१९	४१	१३	३१	व	१८	०९	बा	६	५४	३३	१२	५	३९	१८	५६	२६	१३	८	वृ. ७/३१
१९	२	बु	३१	५४	१८	२४	अनु	२०	४०	१३	५४	प	१६	५७	तै	६	२४	३३	१६	५	३८	१८	५७	२७	१४	९	वृश्चिक
२०	३	गु	३३	०८	१८	५३	ज्ये	२३	१६	१४	५६	शि	१६	१६	व	६	३३	३३	१९	५	३८	१८	५८	२८	१५	१०	ध. १४/५६
२१	४	शु	३६	०३	२०	०२	मू	२७	३१	१६	३७	सि	१६	०७	ब	७	२३	३३	२२	५	३७	१८	५८	२९	१६	११	धनु
२२	५	श	४०	२८	२१	४७	पूषा	३३	१४	१८	५४	सा	१६	२६	कौ	८	५१	३३	२५	५	३६	१८	५९	३०	१७	१२	म. २५/३३
२३	६	र	४६	००	२४	००	उषा	४०	०५	२१	३८	शु	१७	०८	ग	१०	५१	३३	२८	५	३६	१८	५९	३१	१८	१३	मकर
२४	७	चं	५२	०८	२६	२६	श्र	४७	३४	२४	३७	शु	१८	०३	वि	१३	१२	३३	३१	५	३५	१९	०	ज्ये१	१९	१४	मकर
२५	८	मं	५८	१७	२८	५३	ध	५५	०५	२७	३७	ब्र	१९	०३	बा	१५	४१	३३	३४	५	३४	१९	१	०२	२०	१५	कु. १४/०७
२६	९	बु	६०	००	-	-	श	६०	००	-	-	ऐं	१९	५५	तै	१८	०२	३३	३७	५	३४	१९	१	०३	२१	१६	कुम्भ
२७	९	गु	३	४९	७	०५	श	२	०४	६	२३	वै	२०	३०	ग	७	०५	३३	४०	५	३३	१९	२	०४	२२	१७	मी. २६/१२
२८	१०	शु	८	१३	८	५०	पूभा	७	५८	८	४४	वि	२०	४१	वि	८	५०	३३	४३	५	३३	१९	२	०५	२३	१८	मीन
२९	११	श	११	०८	१०	००	उभा	१२	२६	१०	३१	प्री	२०	२३	बा	१०	००	३३	४५	५	३२	१९	३	०६	२४	१९	मीन
३०	१२	र	१२	२४	१०	३०	रे	१५	१९	११	३९	आ	१९	३३	तै	१०	३०	३३	४८	५	३२	१९	४	०७	२५	२०	मे. ११/३९
३१	१३	चं	१२	०२	१०	२०	अश्वि	१६	३४	१२	०९	सौ	१८	१३	व	१०	२०	३३	५१	५	३१	१९	४	०८	२६	२१	मेष
ज्ये१	१४	मं	१०	०८	९	३४	भ	१६	२१	१२	०३	शो	१६	२४	श	९	३४	३३	५३	५	३१	१९	५	०९	२७	२२	वृ. १७/५७
२	३०	बु	६	५४	८	१६	कृ	१४	५१	११	२७	अ	१४	१२	ना	८	१६	३३	५६	५	३०	१९	५	१०	२८	२३	वृष

श्री नारद ज., रोहिणी में बुध १२/०८,
A श्री मां आनन्दमयी जयंती
भद्रा ६/३३ से १८/५३ तक, **श्रीगणेश ४ व्रत**, चन्द्रोदय २१/४९, A
कृतिका में सूर्य ९/४१, मंगल वक्री १३/०८,
B वै.महापात २१/०६ उ. २८/५७ या, चेहल्लम (मु.),
भद्रा २४/०० से, रेवती में शुक्र २९/००,
भद्रा १३/१२ तक, वृष में सूर्य २०/३५, पुण्यकाल १४/११ से, B
पंचक आरम्भ १४/०७, **कालाष्टमी**
मृगशिर में बुध २२ /४३,
भद्रा २०/०२ से, मृगशिर १ में गुरु २८/१९,
भद्रा ८/५० तक, (विवाह मु.उ.भा. में),
अपरा (भद्रकाली) ११ व्रत सबका, (विवाह मु.उ. भा. में),
पंचक समाप्त ११/३९, **प्रदोष व्रत**, सायन मिथुन में सूर्य २९/१५
भद्रा १०/२० से २२/०१ तक, **मास शिवरात्रि**, रोहिणी १ में शनि २३/२६,
वट् सावित्री व्रत, मिथुन में बुध १९/१६, रा. ज्येष्ठ प्रा.,
अमावस्या पुण्य, भावुका ३०, वट्सावित्री ३०, शहादत-ए-इमामहसन,

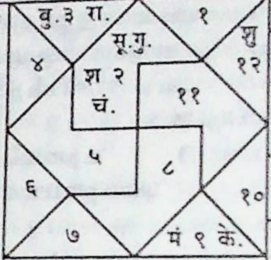
ज्येष्ठ कृ. ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३३२७

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
१	९	८	१	१	११	१	२	८
०	२५	५	२०	२२	१७	९	१४	१४
२१	४४	६	५७	४०	२९	७	४३	४३
२८	१३	३५	३९	२४	४८	४५	१८	१८
५७	[illegible]	२	८४	१३	४२	७	३	३
५२	२९	५३	१०	२३	०१	४३	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
कृत्ति. २	धनि. २	मूल २	रोहिणी ४	रोहिणी ४	रेवती २	कृत्तिका ४	आर्द्रा ३	पूषा २



पक्षांत में बुध मिथुन राशि में प्रवेश कर रहा है अतः पशुओं के भावों में तेजी का रुख रहेगा तथा वायु का तेज प्रवाह एवं प्रबल मेघ होंगे "**बुधो-मिथुनराशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम्। तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्**" इस मास में वृष राशि पर चर्तुग्रही योग भी बन रहा है। अतः कहीं जलप्लावन या दुर्घटना युद्धादि से जन-धन हानि होगी "**एक राशौ यदा यांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा**" इसी मास में पांच बुधवारों के साथ पांच ही मंगलवार भी हैं अतः इस मास में विश्व के किसी भाग में विशेष उथल-पुथल होगी एवं जनधन हानि होगी। "**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्**" मंगल के धनु राशि में रहते वक्र होने पर विश्व में अशांति बढ़ेगी, प्रजा में भय व्याप्त होगा तथा प्राकृतिक प्रकोपों से हानि अधिक होगी, कहीं विग्रह भी होगा। सोमवार के दिन सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। अतः उत्तर के देशों में कष्ट तथा बालकों को पीड़ा, दक्षिण देशों में युद्ध आदि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा।



ज्येष्ठ कृ. ३० बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३३३५

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
१	१	८	२	१	११	१	२	८
८	६	४	००	२४	२३	१०	१४	१४
३	३४	२२	२३	२८	२३	९	१७	१७
४५	३६	०२	४५	२०	२२	४३	५२	५२
५७	८३२	०८	५२	१३	४८	७	३	३
४२	९	५९	४८	३६	५४	४७	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
कृत्ति. ४	कृत्ति. ३	मूल ३	मृग ३	मृग २	रेवती ३	रोहि. २	आर्द्रा ३	पूषा २

आकाश लक्षण- सूर्य शनि के चण्डानाड़ी में स्थित होने से तथा बुध गुरु के वायु नाड़ी में होने से कुछ भागों में तेज गर्म हवाओं का प्रभाव होगा तथा कहीं तेज आंधी तूफान से व प्राकृतिक प्रकोप से हानि की संभावना है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, में गर्म तेज हवाओं एवं रोगों से लोग व्याकुल होंगे।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ५

ता. २४ मई से ६ जून सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १६ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

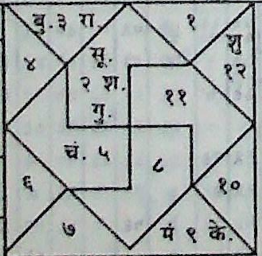
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

																		दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदय		स्टैं. टा. सूर्यास्त		तारीखे हि.	तारीखे मु.	तारीखे अं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	ज्येष्ठ	सफर	मई	रा.घं.मि.	
३	१	गु	२	३७	६	३३	रो	१२	२०	१०	२६	सु	११	४१	बा	६	३३	३३	५८	५	३०	१९	६	११	२९	२४	मि. २१/४८	चन्द्र दर्शन मु. ३०, उ. शृंगोन्नति, श्री गंगादशाश्व मेघ स्नान प्रा. A
०	२	गु	५७	३१	२८	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वितीया तिथि क्षय A (विवाह मु. रोहिणी-मृगशिर में),
४	३	शु	५१	५४	२६	१५	मृ	९	०४	९	०७	घृ	८	५५	तै	१५	२४	३४	०१	५	३०	१९	६	१२	१	२५	मिथुन	रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती, मेला हल्दी घाटी मेवाड़ (राज.), B
५	४	श	४५	५९	२३	५३	आ	५	१९	७	३७	शू	५ २६	५९ ५९	व	१३	०५	३४	०३	५	२९	१९	७	१३	२	२६	क. २४/२५	भद्रा १३/०५ से २३/५३ तक, विनायक ४, उमावतार ४, श्री गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस
६	५	र	३९	५७	२१	२८	पुन	१ ५७	१८ १६	६ २८	०० २३	वृ	२३	५६	व	१०	४०	३४	०५	५	२९	१९	८	१४	३	२७	कर्क	व्य. महा. १४/२४ से २४/२१ तक, B रोहिणी में सूर्य ५/५१, रवि उल अव्वल मु. ३
७	६	चं	३३	५९	१९	०४	श्ले	५३	१८	२६	४८	ध्रु	२०	५६	कौ	८	१६	३४	०७	५	२९	१९	८	१५	४	२८	सिं २६/४८	(विवाह मु. मघा में) C गुरु का वृद्धत्व आरम्भ ११/२९, जून मा. ६ ता. ३०, D
८	७	मं	२८	१३	१६	४६	म	४९	३६	२५	१९	व्या	१८	००	ग	५	५४	३४	०९	५	२८	१९	९	१६	५	२९	सिंह	भद्रा १६/४६ से २७/३९ तक, (विवाह मु. मघा में) D (विवाह मु. हस्त में)
९	८	बु	२२	४७	१४	३५	पूफा	४६	१८	२४	००	ह	१५	१०	व	१४	३५	३४	११	५	२८	१९	९	१७	६	३०	सिंह	अश्विनी मेष में शुक्र २३/५१, (विवाह मु. उ.फा. में), मेला क्षीर भवानी (काश्मीर) E
१०	९	गु	१७	४८	१२	३५	उफा	४३	२९	२२	५२	व	१२	३०	कौ	१२	३५	३४	१३	५	२८	१९	१०	१८	७	३१	क. ५/४१	(विवाह मु. उ.फा., हस्त में) E धूमावती ज., दुर्गाष्टमी
११	१०	शु	१३	२२	१०	४९	ह	४१	१६	२१	५८	सि	१०	००	ग	१०	४९	३४	१५	५	२८	१९	१०	१९	८	जू१	कन्या	भद्रा २२/०१ से, श्री गंगादशहरा, श्री बटुक भैरव ज., मृगशिर २ में गुरु २०/१२, C
१२	११	श	९	३७	९	१९	चि	३९	४९	२१	२३	व्य	७	४४	वि	९	१९	३४	१७	५	२८	१९	११	२०	९	२	तु. ९/३८	भद्रा ९/१९ तक, निर्जला ११ व्रत सबका,
१३	१२	र	६	४२	८	०८	स्वा	३९	१५	२१	०९	व	५ २८	४४ ०२	बा	८	०८	३४	१८	५	२७	१९	११	२१	१०	३	तुला	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ
१४	१३	चं	४	४४	७	२१	वि	३९	४३	२१	२०	शि	२६	४१	तै	७	२१	३४	२०	५	२७	१९	१२	२२	११	४	वृ. १५/१५	बुध वक्री १६/२९, गुरु पश्चिम में अस्त ११/२९,
१५	१४	मं	३	५३	७	००	अनु	४१	२१	२१	५९	सि	२५	४३	व	७	००	३४	२१	५	२७	१९	१२	२३	१२	५	वृश्चिक	भद्रा ७/०० से १९/०१ तक, सत्यव्रत, ईद ए मिलाद (मु.)
१६	१५	बु	४	१६	७	०९	ज्ये	४४	१५	२३	०९	सा	२५	१०	ब	७	०९	३४	२३	५	२७	१९	१३	२४	१३	६	ध. २३/०९	ज्येष्ठी १५, कबीर ज., बुध पश्चिम में अस्त २५/३३, वट् सावित्री व्रत समाप्त,

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

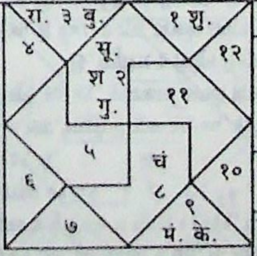
ज्येष्ठ शु. ८ बुधे प्रातः स्टैण्डर्ड टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३४२

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
१	४	८	२	१	११	१	२	८
१४	१५	३	५	२६	२९	११	१३	१३
४७	४७	४	२	४	१९	०४	५५	५५
०८	३०	२४	२५	०३	१६	०७	३७	३७
५७	८४५	१३	२१	१३	५३	७	३	३
३२	२८	४५	५३	४५	१७	४५	११	११
मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में शुक्र मेष राशि में प्रवेश कर रहा है अतः सभी धान्य महंगे होंगे तथा भैंस आदि पशुओं को पीड़ा होगी और मेघ वर्षा भी करेंगे- **"दैत्य गुरुर्यदा मेषे सर्वधान्यमहर्घता। महिषीपशुपीडा च मेघवर्षा भविष्यति"** शुक्ल द्वितीया का क्षय होने से आगे वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख रहेगा। शनि-मंगल का षडष्टक विश्व में अशांति एवं भय का वातावरण बनाए रखेगा तथा विश्व शांति के प्रयास सफल नहीं होंगे। दुर्घटनाओं, आतंकवादी गतिविधियों से लोग त्रस्त होंगे। गुरु के अस्त होने से सोना, चांदी और अनाज के भाव पक्षान्त से पूर्व गिरेंगे। रुई तथा शेयरों के भावों में तेजी का रुख होगा। पक्षान्त में बुध के पश्चिम दिशा में अस्त होने से शेयरों के भाव गिरेंगे तथा चांदी के बाजार में तेजी का रुख रहेगा तथा रुई में मंदी का रुख होगा। त्रयोदशी को बुध के वक्री होने से शेयरों में तेजी आयेगी। खांड, गुड़, शक्कर, घी, तेल, तिल, विनौला, मूंगफली एवं कपूर में आगे तेजी का रुख रहेगा जबकि गेहूं, जौ तथा चने के भाव में गिरावट होगी। चांदी के भाव में तेजी दर्ज होगी। रूई कुछ तेज होकर फिर सस्ती होगी।

ज्येष्ठ शु. १५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३४९



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
१	७	८	२	१	०	१	२	८
२१	२०	१	५	२७	५	११	१३	१३
२९	४०	१६	५८	४०	४३	५८	३३	३३
२४	०१	३१	२७	३१	०५	१५	२१	२१
५७	७५८	१७	१०	१३	५६	७	३	३
२४	५३	२२	००	४९	४४	४१	११	११
मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा अ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- बुध तथा राहु के सूर्य से आगे स्थित होने से तेज गर्मी पड़ेगी तथा वर्षा में बाधा उत्पन्न होगी। सूर्य के साथ गुरु तथा शनि के स्थित होने से कहीं बिल्कुल सूखा व कहीं पर्याप्त वर्षा की संभावना है। जैसा कि पहले लिखा है कि बुध राहु के आगे स्थित होने से कहीं तेज वायु का प्रवाह होगा एवं वर्षा का अवरोध उत्पन्न होगा। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, बिहार में लोग गर्मी से व्याकुल होंगे। कहीं जल का संकट भी उत्पन्न होगा।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
आषाढ़ कृष्ण पक्षः ६

ता. ७ से २१ जून सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३१ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

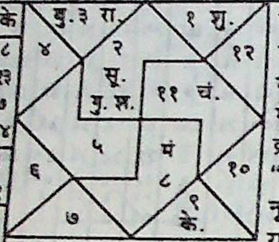
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
१७	१	गु	५	५८	७	५०	मू	४८	२६	२४	४१	शु	२५	०२	कौ	७	५०	३४	२४	५	२७	१९	१३	२५	१४	७	धनु
१८	२	शु	८	५१	९	०२	पूषा	५३	५२	२७	००	शु	२५	१८	ग	९	०२	३४	२५	५	२७	१९	१३	२६	१५	८	धनु
१९	३	श	१३	१४	१०	४४	उषा	६०	००	-	-	ब्र	२५	५४	वि	१०	४४	३४	२७	५	२७	१९	१४	२७	१६	९	म. ९/३७
२०	४	र	१८	२१	१२	५०	उषा	००	२१	५	३५	ऐं	२६	४५	बा	१२	५०	३४	२८	५	२७	१९	१४	२८	१७	१०	मकर
२१	५	चं	२४	२४	१५	१२	श्र	७	३४	८	२८	वै	२७	४४	तै	१५	१२	३४	२९	५	२७	१९	१५	२९	१८	११	कु. २१/५९
२२	६	मं	३०	३०	१७	३९	ध	१५	०५	११	२९	वि	२८	४२	व	१७	३९	३४	३०	५	२७	१९	१५	३०	१९	१२	कुम्भ
२३	७	बु	३६	१४	१९	५७	श	२२	२४	१४	२४	प्री	-	-	वि	६	५०	३४	३१	५	२७	१९	१५	३१	२०	१३	कुम्भ
२४	८	गु	४१	०६	२१	५३	पूभा	२८	५७	१७	०२	प्री	५	२९	बा	८	५८	३४	३२	५	२७	१९	१६	आ१	२१	१४	मी. १०/२५
२५	९	शु	४४	३६	२३	१८	उभा	३४	१७	१९	१०	आ	५	५७	तै	१०	४०	३४	३३	५	२७	१९	१६	२	२२	१५	मीन
२६	१०	श	४६	२७	२४	०२	रे	३८	०२	२०	४०	सौ	५ / २१	५७ / २६	व	११	४५	३४	३४	५	२७	१९	१६	३	२३	१६	मे. २०/४०
२७	११	र	४६	२८	२४	०२	अश्वि	४०	०१	२१	२८	अ	२८	११	ब	१२	०८	३४	३५	५	२७	१९	१७	०४	२४	१७	मेष
२८	१२	चं	४४	३१	२३	११	भ	४०	१२	२१	३२	सु	२६	३७	कौ	११	४६	३४	३६	५	२७	१९	१७	०५	२५	१८	वृ. २७/२७
२९	१३	मं	४१	०१	२१	५५	कृ	३८	४१	२०	५६	धृ	२४	२४	ग	१०	४२	३४	३७	५	२८	१९	१७	०६	२६	१९	वृष
३०	१४	बु	३६	१०	१९	५६	रो	३५	४२	१९	४५	शू	२१	४१	वि	८	५९	३४	३७	५	२८	१९	१७	०७	२७	२०	वृष
३१	३०	गु	३०	००	१७	२८	मृ	३१	३२	१८	०५	गं	१८	३७	च	६	४५	३४	३८	५	२८	१९	१८	०८	२८	२१	मि. ६/५८

श्री गुरु हरगोविन्द जन्मदिन, मृगशिर में सूर्य २७/४४,
भद्रा २१/५० से, वै. महापात १६/१३ से,
भद्रा १०/४४ तक, श्री गणेश ४ व्रत, वै. महापात १८/०६ तक, चन्द्रोदय २२/१२,
वक्री ज्येष्ठा ४ वृश्चिक में मंगल ११/३९, वक्री आर्द्रा २ में राहु मूल ४ में A
A केतु १०/१६, ईद ए मौलाद,
पंचक आरम्भ २१/५९,
भद्रा १७/३९ से,
भद्रा ६/५० तक, भरणी में शुक्र २६/०५, शनि उदय पूर्व में १७/३९,
मिथुन में सूर्य २७/०९, पुण्यकाल अगले दिन, कालाष्टमी
B मृगशिर ३ मिथुन में गुरु ७/२६, रोहिणी २ में शनि २३/०४,
भद्रा ११/४५ से २४/०२ तक, पंचक समाप्त २०/४०, B
योगिनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
योगिनी ११ व्रत निम्बार्कों का,
भद्रा २१/५५ से, भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, वक्री वृष में बुध १५/५७
भद्रा ८/५९ तक, C सायन कर्क में सूर्य १३/०९, दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रा.,
अमावस्या पुण्य, आर्द्रा में सूर्य २६/४२, व्य. महा. १७/५७ से, C

आषाढ़ कृ. ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३३५७

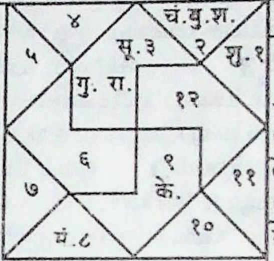
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	७	२	१	०	१	२	८
२१	२७	२८	३	२१	१३	१२	१३	१३
८	३१	४८	०	३१	२८	५१	७	७
१६	३५	३०	५३	११	२८	२३	५४	५४
५७	७१३	११	३३	१३	५६	७	३	३
११	२१	२८	०३	५१	५६	३४	११	११
मा उ	मा उ	व उ	व अ	मा अ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मृग. २	पूभा. १	ज्ये. ४	मृग. २	मृग. २	भर. १	रोहि. १	आर्द्रा २	मूल ४



वक्र गति द्वारा बुध वृष राशि में प्रवेश कर रहा है अतः विश्व में अशांति, कलह तथा भय का वातावरण बनेगा **"सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनी नवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम"** इस पक्ष में मंगल भी वक्र गति द्वारा वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहा है। अतः सभी द्रव्य मंहगे होंगे एवं शासकों में क्रोध की अधिकता होगी व ईर्षा होगी **"यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घ सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्"** इस पक्ष में गुरु वृष राशि को छोड़ कर मिथुन राशि में प्रवेश करेगा अतः वर्षा कम होगी। राजाओं में विग्रह होगा तथा दारुण भय व्याप्त होगा **"मिथुने च गु[illegible]र्याति तत्राब्दे [illegible]गरुणं भयम्। नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।"** भौम के राशिचार से शनि मंगल का षडष्टक समसप्तक योग में परिवर्तित हो गया है अतः विश्व में अशांति का वातावरण रहते हुए राजनीतिक समीकरण बदलेंगे तथा विश्व में अनेक राष्ट्रों के परस्पर संबंधों में गतिरोध उत्पन्न होगा। वृहस्पतिवार के दिन सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा अतः पूर्व तथा दक्षिण के देशों में पीड़ा, पश्चिम के देशों में युद्धादि का भय और उत्तर के देशों में सुख होगा। **"आग्नेय्यां दृष्टिमार्गस्तु वारुणाद्यौ यथा क्रमम्। देशभंगं विजानीयात् सृष्टिसंहारकारकम्।।"**

आषाढ़ कृ. ३० गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३३६४



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
२	१	७	१	२	०	१	२	८
५	२१	२६	२१	१	२०	१३	१२	१२
४१	७	३२	१३	०८	३३	५१	४५	४५
२३	०९	२४	३८	०१	५७	५१	३९	३९
५७	८६६	१८	२६	१३	६१	७	३	३
१६	३५	५७	२१	४८	५६	२३	११	११
मा उ	मा अ	व उ	व अ	मा अ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
मृग. ४	मृग. २	ज्ये. ३	मृग. २	मृग. ३	भरणी ३	रोहि. ३	आर्द्रा २	मूल ४

आकाश लक्षण- पक्ष के आरंभ में तेज वायु का योग बना रहेगा। बुध तथा राहु के सूर्य के आगे स्थित होने से वर्षा का अवरोध तथा तेज गर्म वायु की आंधी तूफान की संभावना है। राजस्थान, उ.प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली में लोग गर्मी से व्याकुल होंगे।

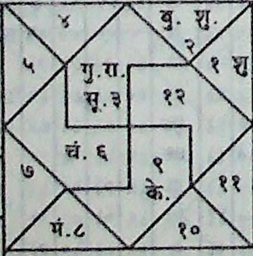
श्री संवत् २०५८ शक: १९२३
आषाढ़ शुक्ल पक्ष: ७

ता. २२ जून से ५ जुलाई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १४ आषाढ़ तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

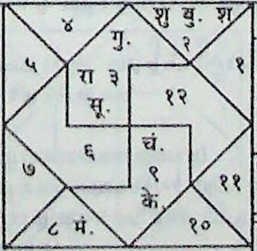
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि. आषाढ़	मु. ज़िल्क़ाद	अं. जून	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
आ.१	१	शु	२२	५९	१४	४०	आ	२६	३०	१६	०४	वृ	१५	१५	ब	१४	४०	३४	३८	५	२८	१९	१८	९	२९	२२	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. ४५, उ. श्रृंगो., रा. आषाढ़ प्रा., मेला शूलिनी (हि.प्र.) आरम्भ,
२	२	श	१५	२६	११	३९	पुन	२०	५८	१३	५२	ध्रु	११	४३	कौ	११	३९	३४	३७	५	२८	१९	१८	१०	१.१	२३	क.८/२५	रथोत्सव २, श्री जगदीश रथ यात्रा (पुरी), व्य. महा. ८/३६ तक, रविउल आखिर मु. ४,
३	३	र	७	४२	८	३४	पु	१५	१६	११	३५	व्या	८ २८	७ ३४	ग	८	३४	३४	३७	५	२९	१९	१८	११	२	२४	कर्क	भद्रा १९/०२ से, विनायक ४, मेला शूलिनी समाप्त,
४	४	चं	०	०६	५	३१	श्ले	९	४६	९	२३	ब	२५	०१	वि	५	३१	३४	३६	५	२९	१९	१८	१२	३	२५	सिं.९/२३	भद्रा ५/३१ तक, C पण्ढरपुर यात्रा (महाराष्ट्र), पुर्नयात्रा, जुलाई मा. ७ ता. ३१, D
०	५	चं	५२	५५	२६	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	पंचमी तिथि क्षय A बुध पूर्व में उदित ९/५४, श्री महावीर च्यवन दिवस,
५	६	मं	४६	२४	२४	०३	म	४	४३	७	२२	सि	२१	५७	कौ	१३	१९	३४	३५	५	२९	१९	१९	१३	४	२६	सिंह	कुमार षष्ठी, जैन ओली प्रा., कृतिका में शुक्र २५/५७, A
६	७	बु	४०	४६	२१	४८	पूफा	० ५७	२४ ०१	५ २८	३१ १८	व्य	१९	०३	ग	१०	५२	३४	३४	५	३०	१९	१९	१४	५	२७	क.११/१७	भद्रा २१/४८ से, विवस्वत सप्तमी, B वृष में शुक्र २९/२७,
७	८	गु	३६	१०	१९	५८	ह	५४	४३	२७	२३	व	१६	२८	वि	८	५०	३४	३३	५	३०	१९	१९	१५	६	२८	कन्या	भद्रा ८/५० तक, बुधमार्गी १६/४८, गुरु पूर्व में उदित १३/५२, दुर्गाष्टमी
८	९	शु	३२	४६	१८	३७	चि	५३	४०	२६	५८	प	१४	१६	बा	७	१३	३४	३२	५	३०	१९	१९	१६	७	२९	तु.१५/०६	भडुली नवमी, मेला शरीफ भवानी (का.), मनसा पूजा प्रा. (बंगाल), B
९	१०	श	३०	३३	१७	४४	स्वा	५३	४५	२७	००	शि	१२	२८	तै	६	०८	३४	३१	५	३१	१९	१९	१७	८	३०	तुला	भद्रा २९/३० से, मृगशिर ४ में गुरु १९/५४, D गुरु का बाल्यत्व समाप्त १३/५२,
१०	११	र	२९	३४	१७	२०	वि	५५	०१	२७	३१	सि	११	०३	वि	१७	२०	३४	३०	५	३१	१९	१९	१८	९	१जु.	वृ.२१/२०	भद्रा १७/२० तक, देवशयनी ११ व्रत सबका, चार्तुमास व्रत नियम प्रा., C
११	१२	चं	२९	५०	१७	२७	अनु	५७	३२	२८	३२	सा	१०	०३	बा	१७	२७	३४	२९	५	३१	१९	१९	१९	१०	२	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत, F खण्डग्रास ग्रस्तोदित चन्द्र ग्रहण मोक्ष २१/४६, (परिलेख देखें) G
१२	१३	मं	३१	१८	१८	०३	ज्ये	६०	००	-	-	शु	९	२५	कौ	५	४१	३४	२८	५	३२	१९	१९	२०	११	३	वृश्चिक	जया पार्वती व्रतारम्भ, E पुर्नवसु में सूर्य २६/१५. वै. महा. ७/१० तक, F
१३	१४	बु	३३	५४	१९	०६	ज्ये	१	११	६	०१	शु	९	०९	ग	६	३१	३४	२६	५	३२	१९	१९	२१	१२	४	ध.६/०१	भद्रा १९/०६ से, वै. महा. ९/०४ से, चौमासी १४ (जैन) G तेरापन्थ स्थापना दिवस
१४	१५	गु	३७	३३	२०	३४		५	५५	७	५५	ब्र	९	१४	वि	७	४७	३४	२६	५	३२	१९	१९	२२	१३	५	धनु	भद्रा ७/४७ तक, सत्यव्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, सन्यासियों का चतुर्मास प्रा. E

आषाढ़ शु. ८ गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३७१ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आषाढ़ शु. १५ गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३७८

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
२	५	७	१	२	०	१	२	८
१२	१०	२४	२७	२	२५	१४	१२	१२
३०	४१	२७	२३	४४	५२	४२	२३	२३
०८	२३	०	३९	२४	४१	५७	२३	२३
५७	८३०	१६	१	१३	६३	७	३	३
१३	३४	०९	१४	४२	३५	११	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



शुक्र वृष राशि में प्रवेश कर रहा है अत: प्रजा के लिए सुखकारक है, कहीं विग्रह भी होगा तथा सामान्यतया सुभिक्षकारक करने वाला है। "भृगुपुत्रे वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वीतले। प्रजानां सुख मुत्पन्नं किंचिद्विग्रह कारणम्" मंगल के ज्येष्ठ नक्षत्र में स्थित होने से रोगों की अधिकता होगी तथा वर्षा में कमी होगी "ज्येष्ठा कुजे स्वल्प जलं च रोगा:" बुध के मिथुन राशि में प्रवेश से पशु महंगे होंगे तथा वायु का प्रवाह तेज होगा तथा मेघ बहुत होंगे। "बुधे मिथुनराशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम्। तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्" शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय के कारण आगे वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख होगा। मंगल के आषाढ़ कृष्ण में वक्र गति द्वारा राशि परिवर्तन से शनि मंगल का समसप्तक योग बन रहा है जिससे विश्व में अशांति एवं भय का वातावरण रहेगा। विश्व शांति के प्रयासों को बल नहीं मिलेगा। यान दुर्घटनाओं, अग्निकाण्डों, प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होगी तथा कहीं सैनिक कार्यवाही आदि से रक्तपात आगे होगा। शुक्र के कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश से हीरा, मणि, मोती आदि रत्न एवं जौ तथा चावल में तेजी का रुख होगा।



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
२	८	७	१	२	१	१	२	८
११	१२	२२	२१	४	५	१५	१२	१२
१०	५	४६	१४	१९	२२	३२	१	१
३१	३३	४१	२६	५४	१४	२०	७	७
५७	७३१	११	३५	१३	६५	६	३	३
११	४४	४०	२७	३३	०४	५४	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य के साथ राहु एवं गुरु के स्थित होने से खण्ड वृष्टि होगी। कहीं तेज वायु के साथ वर्षा होगी। कहीं अधिक तथा कहीं अत्यल्प वर्षा होगी। उड़ीसा, केरल, आसाम, महाराष्ट्र में वर्षा होगी। पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, म. प्रदेश में खण्डवृष्टि होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
श्रावण कृष्ण पक्षः ८

ता. ६ से २० जुलाई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २९ आषाढ़ तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

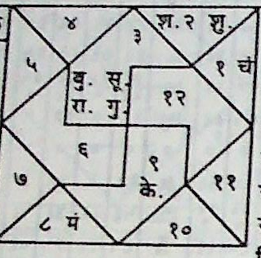
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आषाढ़	मु. रबिउस्सानी	अं. जुलाई	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.
१५	१	शु	४२	०९	२२	२४	पूषा	११	३७	१०	१२	ऐं	९	३७	बा	९	२७	३४	२४	५	३३	१९	१९	२३	१४	६	म.१६/४९
१६	२	श	४७	३०	२४	३३	उषा	१८	०९	१२	४९	वै	१०	१६	तै	११	२७	३४	२२	५	३३	१९	१८	२४	१५	७	मकर
१७	३	र	५३	२३	२६	५५	श्र	२५	१७	१५	४१	वि	११	०७	व	१३	४३	३४	२१	५	३४	१९	१८	२५	१६	८	कु.२९/१०
१८	४	चं	५९	२८	२९	२२	ध	३२	४६	१८	४१	प्री	१२	०६	ब	१६	०८	३४	१९	५	३४	१९	१८	२६	१७	९	कुम्भ
१९	५	मं	६०	००	-	-	श	४०	१५	२१	४१	आ	१३	०६	कौ	१८	३४	३४	१८	५	३५	१९	१८	२७	१८	१०	कुम्भ
२०	५	बु	५	२३	७	४४	पूभा	४७	१९	२४	३१	सौ	१४	०१	तै	७	४४	३४	१६	५	३५	१९	१८	२८	१९	११	मी.१७/५०
२१	६	गु	१०	४३	९	५३	उभा	५३	३२	२७	००	शो	१४	४३	व	९	५३	३४	१४	५	३६	१९	१८	२९	२०	१२	मीन
२२	७	शु	१५	००	११	३६	रे	५८	२८	२८	५९	अ	१५	०४	ब	११	३६	३४	१२	५	३६	१९	१७	३०	२१	१३	मे.२८/५९
२३	८	श	१७	५०	१२	४५	अश्वि	६०	००	-	-	सु	१४	५७	कौ	१२	४५	३४	११	५	३७	१९	१७	३१	२२	१४	मेष
२४	९	र	१८	५७	१३	१२	अश्वि	२	४६	६	२०	धृ	१४	१८	ग	१३	१२	३४	०९	५	३७	१९	१७	३२	२३	१५	मेष
२५	१०	चं	१८	०९	१२	५३	भ	३	१६	६	५६	शू	१३	०२	वि	१२	५३	३४	०६	५	३८	१९	१६	श्रा१	२४	१६	वृ.१२/५८
२६	११	मं	१५	२६	११	४९	कृ	२	५१	६	४७	ग	११	०९	ब	११	४९	३४	०४	५	३८	१९	१६	२	२५	१७	वृष
२७	१२	बु	१०	५४	१०	००	रो	० ५६	३६ ४३	५ २८	५३ २०	वृ	८	४०	तै	१०	००	३४	०२	५	३९	१९	१६	३	२६	१८	मि.१७/११
२८	१३	गु	४	४५	७	३३	आ	५१	२८	२६	१४	ध्रु	५ २६	४० १३	व	७	३३	३४	००	५	३९	१९	१५	४	२७	१९	मिथुन
०	१४	गु	५७	२०	२८	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२९	३०	शु	४८	५७	२५	१५	पुन	४५	१३	२३	४५	ह	२२	२६	च	१४	५७	३३	५९	५	४०	१९	१५	५	२८	२०	क.१८/२४

हिण्डोले प्रारम्भ व्रजमण्डल, मार्गी मिथुन में बुध ११/४७,
अशून्यशयन २,
भद्रा १३/४३ से २६/५५ तक, पंचक आरम्भ २९/१०,
श्री गणेश ४ व्रत, चंद्रोदय २२/०८, रोहिणी में शुक्र ११/३३,
नागपंचमी (मरुस्थल तथा बंगाल में)
भद्रा ९/५३ से २२/४८ तक,
पंचक समाप्त २८/५९, आर्द्रा में बुध १५/१२, कालाष्टमी,
A पुण्यकाल १९/१६ तक,
भद्रा २५/०८ से, आर्द्रा १ में गु. १६/०८ रोहिणी ३ में शनि ८/१८,
भद्रा १२/५३ तक, दक्षिणायन संक्राति कर्क में सूर्य १३/५७, A
कामदा ११ व्रत सबका, व्य.महापात २४/५० से,
प्रदोष व्रत, व्य.महापात १०/१० तक,
भद्रा ७/३३ से १८/०८ तक, मास शिवरात्रि, पुष्य में सूर्य २५/४६, B
B मंगलमार्गी २७/०८,
चतुर्दशी तिथि क्षय
हरियाली अमावस्या, अमावस्या, पुण्य,

श्रावण कृ. ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३८७

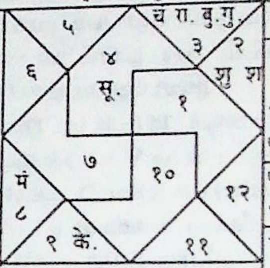
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
२	०	७	२	२	१	१	२	८
२७	०	२१	७	६	१५	१६	११	११
४५	१५	२९	२३	२०	१३	३२	३२	३२
१८	२३	११	५२	५०	४५	४६	३०	३०
५७	[illegible]	४	७७	१३	६६	६	३	३
१५	३५	३७	१२	१७	३३	२८	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ पुन	४ अश्वि.	२ कृ	१ आर्द्रा	४ मृ	२ रोहिणी	२ रोहिणी	२ आर्द्रा	४ मृ



इस पक्ष में राहु सहित चर्तुग्रही योग बन रहा है जिसके फलस्वरूप कहीं जलप्लावन अथवा दुर्घटनादि से जनधन हानि होगी "एक राशौ यदायांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा" बुध के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से वायु का प्रवाह तेज हो तथा वर्षा कोअधिकता हो तथा प्राकृतिक प्रकोप से कहीं लोगों को कष्ट होगा। "आर्द्रायांवृष्टिर तुला ग्रहपाताः प्रवाहतः" गुरु के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से वर्षा अच्छी होगी तथा सुभिक्ष कारक होने से अशुभ फलों में कमी होगी। "मृगशीर्षे तथार्द्रायां यदि तिष्ठेद् वृहस्पति। सुभिक्षं लभते सौख्यं वृष्टिजातं सदा जनः" इस पक्ष में तिथि वृद्धि तथा क्षय से वस्तुओं के भावों में घट बढ़ होगी। सोमवार को दक्षिणायन संक्राति होने से पूर्व तथा उत्तर के देशों में कष्ट दक्षिण के देशों में युद्धादि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा। "ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशुनां च विनाशहिं" शुक्र के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश से ऊन, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, अलसी तथा सभी प्रकार की धातुओं के भाव में गिरावट होगी। पक्ष के मध्य में बुध के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से वर्षा अधिक होगी एवं गेहूं, तिल आदि सस्ते होंगे। मंगल के पक्षान्त में मार्गी होने से रुई में मंदी तथा तेल एवं चांदी में तेजी का रुख होगा।

श्रावण कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३३९३



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	२	७	२	२	१	१	२	८
३	२१	२१	१६	७	२१	१७	११	११
२८	५९	१४	९	३९	५५	१०	१३	१३
५२	४९	१०	५१	५७	१५	४८	२५	२५
५७	८१५	०	१०१	१३	६७	६	३	३
१८	२०	२८	२९	०३	२५	०८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पुन.	१ पुन.	२ कृ.	३ आर्द्रा	१ आर्द्रा	४ रोहिणी	३ रोहिणी	२ आर्द्रा	४ मृ.

आकाश लक्षण- पक्ष के पूर्वार्ध में सूर्य के साथ गुरु-बुध-राहु के स्थित होने से काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली उत्तर प्रदेश, राजस्थान में कहीं साधारण व कहीं अच्छी वर्षा होगी। राहु एवं बुध के सूर्य के साथ स्थित होने से तेज वायु वर्षा का अवरोध कुछ स्थलों पर करेगी।

श्री संवत् २०५७ शकः १९२२
श्रावण शुक्ल पक्षः ९

ता. २१ जुलाई से ४ अगस्त सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ३० आषाढ़ से १३ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

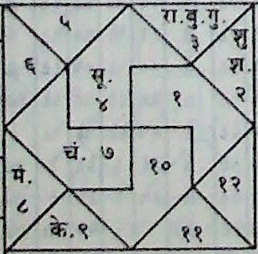
																		दिन		स्टैं. टा.				तारीखें			चन्द्र संचार	
																		मान		सूर्योदय		सूर्यास्त		हि.	मु.	अं.	स्टै.टा.	
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	श्रावण	१३ आषाढ़	जुलाई	रा.घं.मि.	
३०	१	श	४०	००	२२	४०	पु	३८	२१	२	१	व	१८	२६	कि	११	२९	३३	५५	५	४०	१९	१४	०६	२१	२१	कर्क	मृगशिर में शुक्र ११/३९, A जमादि उल अव्वल मु. ५, राष्ट्रीय श्रावण प्रा.
३१	२	र	३०	५४	१८	२	श्ले	३१	२०	१८	१३	मि	१८	१२	वा	७	५१	३३	५३	५	४१	१९	१४	०७	३०	२२	मि. १८/१३	पुनर्वसु में बुध १०/४६, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, उ. शृंगो. सायनसिंह में सूर्य २३/५८
श्रा१	३	चं	२२	३	१४	३१	म	२४	३४	१५	३१	व्य	१०	२२	ग	१६	३१	३३	५०	५	४१	१९	१३	०८	ज.१	२३	सिंह	भद्रा २४/५० से, श्री तिलक ज., मधुश्रवा ३, सिंधारा, ठकुराई जयन्ती, A
२	४	मं	१३	५०	११	१४	पूफा	१८	२८	१३	५	व	६ / ३०	३४ / ०३	वि	११	१४	३३	४७	५	४२	१९	१३	०९	२	२४	क. १८/३२	भद्रा ११/१४ तक, विनायक ४, बुध पूर्व में अस्त १७/५१,
३	५	बु	६	३७	८	२१	उफा	१३	२४	११	४	शि	२३	५७	वा	८	२१	३३	४५	५	४३	१९	१२	१०	३	२५	कन्या	नाग पंचमी, कल्कि जयन्ती,
४	६	गु	०	४३	६	००	ह	९	४१	९	३५	सि	२१	२१	तै	६	००	३३	४२	५	४३	१९	१२	११	४	२६	तु. २१/०५	भद्रा २८/१६ से, भानु सप्तमी, शीतला ७, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
०	७	गु	५६	२१	२८	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी तिथि क्षय B कर्क में बुध १६/०८, मिथुन में शुक्र ९/०६,
५	८	शु	५३	३९	२७	११	चि	७	३१	८	४४	सा	१९	१६	वि	१५	३८	३३	३९	५	४४	१९	११	१२	५	२७	तुला	भद्रा १५/३८ तक, श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्रीनयनादेवी व चिन्तपूर्णी (हि.प्र.), B
६	९	श	५२	३९	२६	४८	स्वा	७	१	८	३३	शु	१७	४५	वा	१४	५४	३३	३६	५	४४	१९	११	१३	६	२८	वृ. २६/५१	C आर्द्रा २ में गुरु २८/०४,
७	१०	र	५३	१८	२७	४	वि	८	१३	९	२	शु	१६	४६	तै	१४	५१	३३	३४	५	४५	१९	१०	१४	७	२९	वृश्चिक	पुष्य में बुध ७/२४, वै. महापात २०/५७ से २८/११ तक,
८	११	चं	५५	२८	२७	५६	अनु	१०	५९	१०	९	ब्र	१६	१६	व	१५	२६	३३	३१	५	४५	१९	९	१५	८	३०	वृश्चिक	भद्रा १५/२६ से २७/५६ तक, पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त्त वैष्णवों का, C
९	१२	मं	५८	४९	२९	१८	ज्ये	१५	८	११	४९	ऐं	१६	१२	ब	१६	३५	३३	२८	५	४६	१९	९	१६	९	३१	ध. ११/४९	पुत्रदा ११ व्रत निम्बार्कों का, रामानुज वल्लभों का,
१०	१३	बु	६०	०	-	-	मू	२०	२६	१३	५७	वै	१६	२९	कौ	१८	०८	३३	२५	५	४६	१९	८	१७	१०	अ. १	धनु	प्रदोष व्रत, आर्द्रा में शुक्र २९/०८, अगस्त मा. ८ ता. ३१,
११	१३	गु	३	१३	७	४	पूषा	२६	३८	१६	२६	वि	१७	२	तै	७	४	३३	२१	५	४७	१९	७	१८	११	२	म. २३/०६	अश्लेषा में सूर्य २४/३६ D अमरनाथ यात्रा, अश्लेषा में बुध १६/५१,
१२	१४	शु	८	२२	९	८	उषा	३३	२९	१९	११	प्री	१७	४८	व	९	८	३३	१८	५	४८	१९	७	१९	१२	३	मकर	भद्रा ९/०८ से २२/१६ तक, सत्य व्रत, हयग्रीव ज.,
१३	१५	श	१४	०४	११	२६	श्र	४०	४५	२२	६	आ	१८	४२	ब	११	२६	३३	१५	५	४८	१९	६	२०	१३	४	मकर	रक्षा बन्धन, श्री गायत्री जयन्ती, संस्कृत दिवस, ऋषि तर्पण, उपाकर्म, D

श्रावण शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३४००

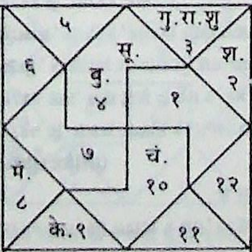
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

श्रावण शु. १५ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गण ३४०८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	७	२	२	१	१	२	८
१०	४	२१	२९	९	२९	१७	१०	१०
१०	४९	३५	६	१०	४९	५२	५१	५१
५	३	६	३०	१६	४४	३०	१०	१०
५७	७८१	६	१२१	१२	६८	५	३	३
२०	१८	१८	२	४२	१५	४३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



बुध के कर्क राशि में प्रवेश से सुभिक्ष में कमी होगी तथा प्रजा को कष्ट व दुःख की अधिकता होगी "निशापतेश्च तनयः कर्क राशौ यदा भवेत्। ततोति दुःख भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम्" शुक्र के मिथुन राशि में होने से गेहूँ, चावल यव और चना महंगे होंगे। "मिथुने च यदा शुक्रो महर्घ तत्र जायते। यवगो धूम चणकाः शालिश्चैव विशेषतः" बुध के पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश से बालकों में पीड़ा तथा सूत, कपास के भावों में मन्दी होगी "पुनर्वसौ बाल पीडा कार्पासे सूत्रमन्दता जनेषु सर्वसंयोगः पुष्ये राज्ञां भयं जनः" बुध के पुष्य नक्षत्र में प्रवेश से प्रजा को शासक से भय होगा। पक्ष के मध्य में तिथि क्षय तथा पक्ष के अन्त के निकट तिथि वृद्धि होने से वस्तुओं के भावों में घट बढ़ होगी। शुक्ल तिथि के क्षय के कारण आगे कार्तिक में छत्र भंग होगा "श्रावणे शुक्ल पक्षे च तिथिः काऽपि क्षया भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्र भंगः प्रजायते" पक्षारम्भ में मृगशिर नक्षत्र में शुक्र के प्रवेश से गेहूं, चना तथा ज्वार में मन्दी का रुख होगा। चतुर्थी को बुध पूर्व दिशा में अस्त होगा फलस्वरूप गेहूं, चावल आदि सभी प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी का रुख होगा। स्वर्ण के भावों में पहले कुछ मन्दी आयेगी तथा बाद में तेजी का रुख होगा। रुई में घटा बढ़ी होगी। पक्षान्त में बुध के अश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश से रसकस में तेजी का रुख होगा।



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
३	९	७	३	२	२	१	२	८
१७	१५	२२	१५	१०	८	१८	१०	१०
४९	६	४७	४०	५०	५९	३६	२५	२५
५	३४	११	४८	१८	१	१४	४४	४४
५७	७१२	१२	१२४	१२	६९	५	३	३
२५	१८	२१	५३	१४	१०	८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	श्रवण [illegible]	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा [illegible]	आर्द्रा [illegible]	[illegible]	आर्द्रा [illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य चन्द्र के अमृता नाड़ी में स्थित होने एवं बुध के जलानाड़ी एवं गुरु शुक्र राहु के सौम्य नाड़ी में स्थित होने से अधिकांश स्थानों में अच्छी वर्षा होगी। सूर्य के साथ बुध के स्थित होने से एवं शुभ ग्रहों के सूर्य पीछे स्थित होने से तथा शनि मंगल के वायु नाड़ी में स्थित होने से कुछ भागों में तेज वायु का प्रवाह तूफान आंधी का रूप धारण करेगा तथा वर्षा की कमी होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
भाद्रपद कृष्ण पक्षः १०

ता. ५ से १९ अगस्त सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

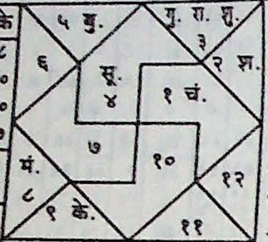
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिन मान घंटे	दिन मान मि.	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (श्रावण)	मु.	अं. (अगस्त)	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	
१४	१	र	२०	०५	१३	५०	ध	४८	१४	२५	०६	सौ	१९	४१	कौ	१३	५०	३३	१२	५	४९	१९	५	२१	१४	५	कु. ११/३६	पचंक आरम्भ ११/३६,
१५	२	चं	२६	१०	१६	१७	श	५५	४१	२८	०६	शो	२०	४०	ग	१६	१७	३३	०९	५	४९	१९	४	२२	१५	६	कुम्भ	भद्रा २९/२९ से,
१६	३	मं	३२	०५	१८	४०	पूभा	६०	००	-	-	अ	२१	३५	वि	१८	४०	३३	०५	५	५०	१९	४	२३	१६	७	मी.२४/१६	भद्रा १८/४० तक, श्री गणेश ४ व्रत, कज्जली ३, बहुला ४, चन्द्रोदय २१/१४, A ७/३८, व्य. महा. १४/५९ से २०/४१ तक,
१७	४	बु	३७	३५	२०	५२	पूभा	२	५१	६	५९	सु	२२	२२	ब	७	४८	३३	०२	५	५०	१९	३	२४	१७	८	मीन	
१८	५	गु	४१	२०	२२	४७	उभा	९	२९	९	३८	धृ	२२	५५	कौ	९	५२	३२	५८	५	५१	१९	२	२५	१८	९	मीन	रक्षा पंचमी (उड़ीसा)
१९	६	शु	४६	००	२४	१५	रे	१५	१५	११	५७	शू	२३	०७	ग	११	३५	३२	५५	५	५१	१९	१	२६	१९	१०	मे. ११/५७	भद्रा २४/१५ से, पंचक समाप्त ११/५७, चन्द्र षष्ठी, हल ६,
२०	७	श	४८	१६	२५	१०	अश्वि	१९	४८	१३	४७	गं	२२	५४	वि	१२	४८	३२	५१	५	५२	१९	०	२७	२०	११	मेष	भद्रा १२/४८ तक, मघा सिंह में बुध ६/२४,
२१	८	र	४९	५२	२५	२५	भ	२२	५०	१५	००	वृ	२२	१०	बा	१३	२३	३२	४८	५	५२	१८	५९	२८	२१	१२	वृ. २१/१२	कालाष्टमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत सबका, आर्द्रा १ में राहु मूल ३ में केतु A
२२	९	चं	४७	३७	२४	५६	कृ	२४	०७	१५	३२	ध्रु	२०	५०	तै	१३	१६	३२	४४	५	५३	१८	५९	२९	२२	१३	वृष	नन्द महोत्सव, गोगा ९, मंगला गौरी पूजन, पुर्नवसु में शुक्र १७/२२, B आर्द्रा ३ में गुरु २०/५१,
२३	१०	मं	४४	२८	२३	४१	रो	२३	३२	१५	१८	व्या	१८	५४	व	१२	२४	३२	४१	५	५४	१८	५८	३०	२३	१४	मि. २६/५५	भद्रा १२/२४ से २३/४१ तक,
२४	११	बु	३९	२९	२१	४२	मृ	२१	०५	१४	२०	ह	१६	२२	ब	१०	४६	३२	३७	५	५४	१८	५७	३१	२४	१५	मिथुन	अजा ११ व्रत सबका, स्वतन्त्रता दिवस, जैन पर्यूषण पर्वारम्भ,
२५	१२	गु	३२	५०	१९	०३	आ	१६	५५	१२	४१	व	१३	१६	कौ	८	२७	३२	३३	५	५५	१८	५६	भा१	२५	१६	क. २१/०२	मघा सिंह में सूर्य २२/१८, पुण्यकाल १५/५४ से, प्रदोष व्रत, वत्सद्वादशी, B
२६	१३	शु	२४	५०	१५	५१	पुन	११	१६	१०	२६	सि	९/२१	४२/४४	व	१५	५१	३२	३०	५	५५	१८	५५	२	२६	१७	कर्क	भद्रा १५/५१ से २६/०६ तक, मास शिवरात्रि,
२७	१४	श	१५	४९	१२	१५	पु	४/५७	३१/०५	[illegible]/२८	४४/४६	व	२५	३२	श	१२	१५	३२	२६	५	५६	१८	५४	३	२७	१८	सिं. २८/४६	अघोरा १४, कैलाश यात्रा, पू.फा. में बुध ८/१७, बुध पश्चिम में उदय २९/३७, C C डाकिनी १४,
२८	३०	र	६	१३	८	२५	म	४१	२४	२५	४२	प	२१	१४	ना	८	२५	३२	२२	५	५६	१८	५३	४	२८	१९	सिंह	कुशोत्पाटिनी अमावस्या,

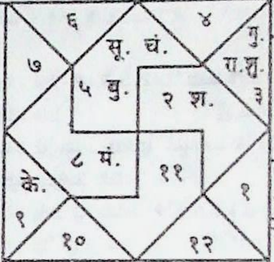
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

भाद्रपद कृ. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३४१६

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
३	०	७	४	२	२	१	२	८
२५	२१	२४	१	१२	१८	१९	१०	१०
२९	३५	४४	५२	२६	१५	१५	००	००
०३	२९	५२	५२	२२	१८	१७	१७	१७
५७	[illegible]	१७	११६	११	७०	४	३	३
३६	५४	३७	००	४२	००	३२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मघा	आर्द्रा	आर्द्रा	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]



भाद्रपद कृ. ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३४२३



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	७	४	२	२	१	२	८
२	०	२७	१४	१३	२६	१९	९	९
१२	२७	०	५४	४६	२७	४५	३८	३८
४४	३२	४३	४५	३७	२०	१३	०२	०२
५७	११७	२१	१०५	११	७०	३	३	३
४६	००	४१	५७	०८	३९	५६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा	मघा	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	[illegible]

बुध के सिंह राशि में प्रवेश से सब धान्यों के भाव समान रहें तथा सुवर्ण देवदारु यह मंहगे हों "सिंह राशौ बुधः स्याच्चेत्सर्वधान्यमहर्घता। सुवर्ण देवदारुश्च महर्घं प्रभवेत्तदा" गुरुवार को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा फलस्वरूप पूर्व तथा दक्षिण के देशों में पीड़ा, पश्चिम के देशों में युद्धभय और उत्तर के देशों में सुख होगा। "आग्नेय्यां दृष्टिमार्गस्तु वारुणादौ यथा क्रमम्। देशभंगं विजानीयात् सृष्टिसंहारकारकम्" शनि मंगल का समसप्तक योग विश्व में अशान्ति का वातावरण बनाये रखेगा। दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी तथा आतंकवादी गतिविधियों, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड आदि से जनधन हानि व भयव्याप्त होगा। जर्मन, पौलेन्ड, आयरलैन्ड, ईरान, नार्वे आदि शनि-मंगल के प्रतियोग से प्रभावित होंगे। इस मास में पांच रविवार होने से दुर्भिक्ष, छत्रभंग तथा महाभय होगा "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंचसंततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यातदास्ते च महद्भयम्"। बुध के मघा नक्षत्र में प्रवेश से सभी प्रकार के अनाजों के भाव में तेजी का रुख होगा जबकि पक्षान्त में बुध के पूर्वाफाल्गुनी में प्रवेश से अनाजों के भावों में मन्दी आयेगी। शुक्र के पुनर्वसु नक्षत्र में पक्ष के मध्य में प्रवेश से अनाजों के भावों में तेजी का रुख रहेगा तथा सोना, चांदी, रुई, बिनौला के भावों में मन्दी का रुख रहेगा अमावस्या को बुध पश्चिम में उदित होगा अतः चावल, धान्य, घी, तेल, सरसों, बिनौला, अरण्डी आदि के भावों में तेजी का रुख होगा।

आकाश लक्षण- बुध के सूर्य से आगे स्थित होने से तथा अमृता नाड़ी में स्थित होने से तेज वायु के साथ वर्षा होगी। समुद्र तटीय भागों में तेज तूफान के साथ वर्षा होगी। पर्वतीय भागों में भी तेज हवाओं के साथ अच्छी वर्षा होगी। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा में कहीं अच्छी वर्षा तथा तेजवायु के साथ खण्ड वृष्टि होगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३ भाद्रपद शुक्ल पक्ष: ११

ता. २० अगस्त से २ सितम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २९ श्रावण से ११ भाद्रपद तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

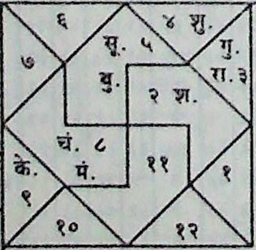
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. भाद्रपद	तारीखें मु. ज.उ.अव्वल	तारीखें अं. अगस्त	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
०	१	र	५६	२१	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय A रोहिणी ४ में शनि २६/४९, संवत्सरी (जैन)
२९	२	चं	४७	०३	२४	४६	पूफा	४१	५७	२२	४४	शि	१६	५८	ब	१४	३७	३२	१८	५	५७	१८	५२	५	२९	२०	क. २८/०२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. शृंगो. B मेलापाट आरम्भ D श्री कालू निर्वाण दिवस,
३०	३	मं	३८	२२	२१	१८	उफा	३५	१५	२०	०३	सि	१२	५५	तै	१०	५९	३२	१५	५	५७	१८	५१	६	ज.१	२१	कन्या	हरितालिका ३, वाराह जयन्ती, कर्क में शुक्र २९/३८, जमादि उल आखिर मु. ६
३१	४	बु	३०	५२	१८	१९	ह	२९	४२	१७	५१	सा	९	१२	व	७	४४	३२	११	५	५८	१८	५०	७	२	२२	तु. २८/५८	भद्रा ७/४४ से १८/१९ तक, कलंक ४, श्री गणेश जन्मोत्सव, चन्द्रदर्शन निषेध, A
भा.१	५	गु	२४	५७	१५	५७	चि	२५	४३	१६	१६	शु	५/३०	५७/१६	वा	१५	५७	३२	०७	५	५८	१८	४९	८	३	२३	तुला	ऋषि पंचमी, रा. भाद्रपद प्रा., सायन कन्या में सूर्य ६/५८, शरद ऋतु प्रारम्भ, B
२	६	शु	२०	५२	१४	२०	स्वा	२३	३५	१५	२५	ब्र	२५	१३	तै	१४	२०	३२	०३	५	५९	१८	४८	९	४	२४	तुला	सूर्य षष्ठी, बलदेव ६, पुष्य में शुक्र २५/१५, वै. महापात ७/१८ से १२/०९ तक, D
३	७	श	१८	४१	१३	३१	वि	२३	२७	१५	२२	ऐं	२३	५०	व	१३	३१	३१	५९	५	५९	१८	४७	१०	५	२५	वृ. ९/१८	भद्रा १३/३१ से २५/२५ तक, मुक्ता भरण ७, उ.फा. में बुध २७/४३, मेलापाट समाप्त
४	८	र	१८	४८	१३	३१	अनु	२५	१९	१६	०७	वै	२३	०४	ब	१३	३१	३१	५५	६	०	१८	४६	११	६	२६	वृश्चिक	श्री राधाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ, मूल धनु में मंगल २१/०८,
५	९	चं	२०	४१	१४	१७	ज्ये	२९	०१	१७	३७	वि	२२	५२	कौ	१४	१७	३१	५१	६	०	१८	४५	१२	७	२७	ध. १७/३७	अदुःख नवमी, श्रीचन्द्र जयन्ती, उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव, भागवत सप्ताह प्रा., E
६	१०	मं	२४	१२	१५	४२	मू	३४	१४	१९	४३	प्री	२३	०८	ग	१५	४२	३१	४७	६	१	१८	४३	१३	८	२८	धनु	भद्रा २८/३६ से, E कन्या में बुध २९/५२, G सन्यासियों का चतुर्मास समाप्त
७	११	बु	२८	५९	१७	३७	पूषा	४०	३७	२२	१६	आ	२३	४५	वि	१७	३७	३१	४३	६	१	१८	४२	१४	९	२९	म. २८/५८	भद्रा १७/३७ तक, पद्मा ११ व्रत सबका, जलझूलनी मेला श्री चार भुजानाथ गढबोर F
८	१२	गु	३४	३५	१९	५२	उषा	४७	४१	२५	०७	सौ	२४	३५	ब	६	४३	३१	३९	६	२	१८	४१	१५	१०	३०	मकर	वामन १२, श्री भुवनेश्वरी ज. मेला (अम्बाला, पटियाला), पू. फा. में सूर्य १८/१२,
९	१३	शु	४०	३८	२२	१८	श्र	५५	०९	२८	०६	शो	२५	३३	कौ	९	०३	३१	३५	६	२	१८	४०	१६	११	३१	मकर	प्रदोष व्रत, आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस, ओनम F मेवाड़ (राज.), अगस्त्योदय १८/१८,
१०	१४	श	४६	५१	२४	४७	ध	६०	००	-	-	अ	२६	३२	ग	११	३०	३१	३१	६	३	१८	३९	१७	१२	सि.१	कु. १७/३८	भद्रा २४/४७ से, पंचक आरम्भ १७/३८, अनन्त चतुर्दशी, सितम्बर मा. ९ ता.३०
११	१५	र	५२	५४	२७	१३	ध	२	४२	७	०८	सु	२७	२८	वि	१४	०१	३१	२७	६	३	१८	३८	१८	१३	२	कुम्भ	भद्रा १४/०१ तक, सत्य व्रत, प्रौष्ठ पदी पूर्णिमा श्राद्ध, भागवत सप्ताह समाप्त, G

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

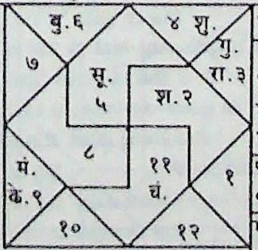
भाद्रपद शु. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४३०

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
४	७	७	४	२	३	१	२	८
८	१०	२९	२६	१५	४	२०	९	९
५७	५९	४३	४७	२	४३	१०	१५	१५
३१	११	३४	०९	४२	४०	५०	४७	४७
५७	[illegible]	२५	१६	१०	७६	३	३	३
५५	४९	१६	१९	३०	१५	१७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



मंगल के धनु राशि में प्रवेश से घृत, कपास, काष्ठ, तृण, मूल द्रव्य और पशु यह सभी मंहगें होंगे-"धनराशिगते भौमे मूलद्रव्यतृणानि च। काष्ठं च घृतकार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम्" बुध के कन्याराशि में प्रवेश से छै माह तक सुवर्ण और शक्कर में तेजी रहकर फिर सस्ते होते हैं। "कन्याराशिं गते ज्ञे हि कांचनं शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुनः शस्तो भविष्यति" शुक्र के कर्क राशि में प्रवेश से रस पदार्थ मंहगे होंगे तथा सब धान्य सस्ते होंगे तथा मेघों की प्रबलता होगी- "दैत्य गुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि" मंगल के राशि परिवर्तन के साथ ही मंगल शनि का षडष्टक योग आरम्भ हो गया है जिसके फलस्वरूप विश्व में अशान्ति का वातावरण उत्पन्न होगा तथा दुर्घटनाओं, अग्निकाण्ड एवं आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी। अरब राष्ट्र आस्ट्रेलिया, स्पेन, हंगरी, जर्मन, पौलेण्ड आयर्लेण्ड, ईरान आदि प्रभावित होंगे। बुध के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश से रुई में पहले कुछ तेजी होकर बाद में मन्दी का रुख होगा। उड़द एवं मघ के भावों में तेजी का रुख होगा। मंगल के मूल नक्षत्र में प्रवेश से धान्यों के भावों में साधारण तेजी का रुख रहेगा।

भाद्रपद शु. १५ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४३७



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	८	५	२	३	१	२	८
१५	५	२	७	१६	१३	२०	८	८
४३	५१	४९	३३	१४	३	३१	५३	५३
२१	०४	४०	२८	०५	५९	४९	३२	३२
५८	७१२	२८	८७	१	७१	२	३	३
०४	१२	१६	००	४७	४८	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य बुध के अमृता एवं नीरा नाड़ी में स्थित होने से तथा बुध के सूर्य से आगे होने से वायु का तेज प्रवाह होने के साथ कुछ स्थलों में तेज भारी वर्षा होगी जिससे कृषि की हानि होगी तथा हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, काश्मीर, मध्य प्रदेश, राजस्थान के अधिकांश भागों में सामान्य वर्षा होगी। कुछ स्थलों में वर्षा कुछ कम भी होगी तथा कहीं कृषि की हानि भी अनियमित वर्षा तथा अतिवर्षण से होगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३
शुद्ध प्रथम आश्विन कृष्ण पक्ष: १२

ता. ३ से १७ सितम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ भाद्रपद तक। दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु।

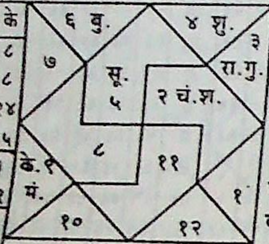
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय स्टै. टा. घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि. भाद्रपद	मु. ज. आखिर	अं. सितम्बर	चन्द्र संचार स्टै. टा. ग. घं. मि.	
१२	१	चं	५८	३८	२९	३१	श	१०	०२	१०	०५	धृ	२८	१८	वा	१६	२३	३१	२३	६	४	१८	३७	१९	१४	३	कुम्भ	प्रतिपदा का श्राद्ध, हस्त में बुध २२/०८,
१३	२	मं	६०	००	-	-	पूभा	१७	०२	१२	५३	शू	२८	५९	तै	१८	३६	३१	१९	६	४	१८	३६	२०	१५	४	मी. ६/१२	द्वितीया का श्राद्ध, अश्लेषा में शुक्र २९/३७, आर्द्रा ४ में गुरु २१/३९,
१४	२	बु	३	५१	७	३७	उभा	२३	३०	१५	२९	ग	२९	२९	ग	७	३७	३१	१५	६	५	१८	३४	२१	१६	५	मीन	भद्रा २०/३५ से, तृतीया का श्राद्ध
१५	३	गु	८	२७	९	२८	रे	२९	१९	१७	४९	वृ	२९	४४	वि	९	२८	३१	११	६	५	१८	३३	२२	१७	६	मे. १७/४९	भद्रा ९/२८ तक, पंचक समाप्त १७/४९, श्री गणेश ४ व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, व्य. A
१६	४	शु	१२	१४	१०	५९	अश्वि	३४	१६	१९	४८	ध्रु	२९	४१	बा	१०	५९	३१	०७	६	६	१८	३२	२३	१८	७	मेष	पंचमी का श्राद्ध A महापात २२/०१ से २६/५० तक चन्द्रोदय २०/४८,
१७	५	श	१४	५९	१२	०६	भ	३८	०९	२१	२२	व्या	२९	१५	तै	१२	०६	३१	०३	६	६	१८	३१	२४	१९	८	वृ. २७/४१	षष्ठी का श्राद्ध, स्वामी शिवानन्द ज., B १२/०७, चित्रा में बुध २९/१४
१८	६	र	१६	२९	१२	४२	कृ	४०	४३	२२	२४	ह	२८	२३	व	१२	४२	३०	५८	६	७	१८	३०	२५	२०	९	वृष	भद्रा १२/४२ से २४/४८ तक, सप्तमी का श्राद्ध
१९	७	चं	१६	३१	१२	४३	रो	४१	४७	२२	५०	व	२७	०१	ब	१२	४३	३०	५४	६	७	१८	२९	२६	२१	१०	वृष	क्रालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध
२०	८	मं	१४	५४	१२	०५	मृ	४१	१२	२२	३७	सि	२५	०६	कौ	१२	०५	३०	५०	६	८	१८	२७	२७	२२	११	मि. १०/४९	नवमी का श्राद्ध C शस्त्र-विष जलादि से मृतकों का श्राद्ध, मघा सिंह में शुक्र ६/४७
२१	९	बु	११	३५	१०	४६	आ	३८	५५	२१	४२	व्य	२२	३८	ग	१०	४६	३०	४६	६	८	१८	२६	२८	२३	१२	मिथुन	भद्रा २१/५१ से, दशमी का श्राद्ध
२२	१०	गु	६	३४	८	४६	पुन	३५	००	२०	०९	व	१९	३८	वि	८	४६	३०	४२	६	९	१८	२५	२९	२४	१३	क. १४/३५	भद्रा ८/४६ तक, इन्दिरा ११ व्रत स्मार्तो का, एकादशी का श्राद्ध, उ.फा. में सूर्य B
२३	११	शु	०	०१	६	०९	पु	२९	३९	१८	०१	प	१६	१०	बा	६	०९	३०	३७	६	९	१८	२४	३०	२५	१४	कर्क	इन्दिरा ११ व्रत वैष्णवों का, द्वादशी तथा सन्यासियों का श्राद्ध,
०	१२	शु	५२	१०	२७	०१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी तिथि क्षय D पितृ पक्ष समाप्त, मेला फलगू (पिहोवा, हरियाणा)
२४	१३	श	४३	२१	२३	३०	श्ले	२३	१०	१५	२६	शि	१२	१९	ग	१३	१८	३०	३३	६	१०	१८	२३	३१	२६	१५	सिं. १५/२६	भद्रा २३/३० से, शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, त्रयोदशी का श्राद्ध
२५	१४	र	३३	५७	१९	४५	म	१५	५७	१२	३३	सि	८ / २७	११ / ५६	वि	९	३९	३०	२९	६	१०	१८	२१	आ१	२७	१६	सिंह	भद्रा ९/३९ तक, कन्या में सूर्य २२/१२, पुण्यकाल १५/४८ से, C
२६	३०	चं	२४	२७	१५	५७	पूफा	८	२७	९	३४	शु	२३	४३	चं	५	५१	३०	२५	६	११	१८	२०	२	२८	१७	क. १४/४९	सोमवती अमावस्या, सर्वपितृ श्राद्ध, चर्तुदशी व अमावस्या का श्राद्ध, D

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

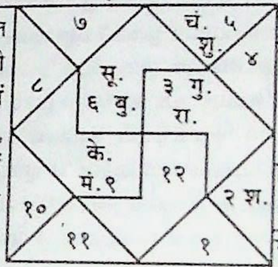
प्र. आश्विन कृ ८ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४४६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१	८	५	२	३	१	२	८
२४	२७	७	१९	१७	२३	२०	८	८
२७	१	१७	४५	३८	५२	५१	२४	२४
०६	२१	२३	१४	०७	५५	३८	५५	५५
५८	८१४	३१	७३	८	७२	१	३	३
२१	१८	२९	३६	४५	२९	४१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४	२	३	३	४	३	४	१	३
पूफा	मृग	मूल	हस्त	आर्द्रा	आश्ले	रोहि	आर्द्रा	मूल



इस पक्ष में शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करेगा फलस्वरूप सुवर्ण, लाल वस्तुएं, पशु तथा सभी धान्यों में तेजी होगी तथा वर्षा नहीं होगी **"दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पद:। धान्यानि चमहर्घाणि नाशं याति च वारिद:"** बुध के हस्त तथा चित्रा नक्षत्र में प्रवेश से गणिका, कारीगर तथा द्विजाति को पीड़ा तथा वर्षा अल्प होगी **"हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदा:। चित्रायां गणिका शिल्पिद्विजपीडाल्प वर्षणम्"** रविवार को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करेगा अत: दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय, उत्तर के देशों में युद्ध आदि का भय और पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा **"नैऋत्ये च यदादृष्टि भयत्तोसं च दारूणम्। नृपाणांच भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्"** बुध के चित्रा नक्षत्र में प्रवेश से रुई के भावों में पहले कुछ मन्दी होकर बाद में तेजी का रुख होगा। शुक्र के अश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश से अनाज के भावों में तेजी का रुख होगा तथा रुई के भाव घटेंगे। शनि तथा मंगल का षडष्टक योग होने से विश्व में अशान्ति का वातावरण बनेगा। विश्व शान्ति के प्रयास विफल होंगे। आतंकवादी गतिविधियों एवं प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन की हानि होगी।

प्र. आश्विन कृ. ३० चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४५२



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
५	४	८	५	२	४	१	२	८
०	२४	१०	२६	१८	१	२१	८	८
१७	४	३१	३८	२८	८	०	५	५
४७	४४	०८	४१	४३	५२	०८	५१	५१
५८	९११	३३	६१	७	७२	१	३	३
३४	१४	२३	३१	५९	५४	०२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	४	४	१	४	१	४	१	३
उफा.	पू.फा.	मूल	चित्रा	आर्द्रा	मघा	रोहि.	आर्द्रा	मूल

आकाश लक्षण- सूर्य के साथ बुध के होने से तथा सूर्य के पीछे शुक्र के होने के कारण तेज वायु के प्रवाह के साथ खण्ड वृष्टि होगी। उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, आसाम, कर्नाटक, उड़ीसा, गोवा में बादल चाल के साथ वर्षा होगी व खण्ड वृष्टि होगी। तेज वायु के तूफान में परिवर्तित होने से हानि की संभावना है।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
(अधिक) आश्विन शुक्ल पक्षः १३

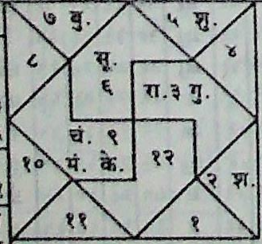
ता. १८ सितम्बर से २ अक्टूबर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २७ भाद्रपद से १० आश्विन तक। दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

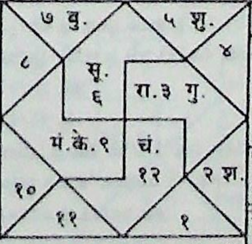
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखे हि. (आश्विन)	मु. (रज्जब)	अं. (सितम्बर)	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	
२७	१	मं	१५	१८	१२	१८	उफा	१/५४	१०/३५	६/२८	३९/०१	शु	१९	४०	व	१२	१८	३०	२१	६	११	१८	१९	३	२१	१८	कन्या	पुरुषोत्तम मलमास प्रारम्भ, वै. महा. ९/१४ से १३/५१ तक, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. शृंगो.
२८	२	बु	६	५७	८	५९	चि	४९	०१	२५	५१	ब्र	१५	५७	कौ	८	५९	३०	१६	६	१२	१८	१८	४	२१	१९	तु. १४/५२	रज्जब मु. ७
०	३	बु	५९	५५	३०	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि क्षय
२९	४	गु	५४	३१	२८	०१	स्वा	४५	१८	२४	२०	ऐं	१२	४१	व	१६	५९	३०	१२	६	१२	१८	१७	५	२	२०	तुला	भद्रा १६/५९ से २८/०१ तक, विनायक ४, तुला में बुध १६/१४,
३०	५	शु	५१	०६	२६	३९	वि	४३	२४	२३	३४	वै	१०	०१	व	१५	१४	३०	०८	६	१३	१८	१५	६	३	२१	वृ. १७/४१	पू.षा. में मंगल २८/५३,
३१	६	श	४९	५१	२६	०९	अनु	४३	३५	२३	३९	वि	८	००	कौ	१४	१८	३०	०४	६	१३	१८	१४	७	४	२२	वृश्चिक	सायन तुला में सूर्य २८/५३, दक्षिण गोल में सूर्य प्रवेश,
आ१	७	र	५०	४५	२६	३२	ज्ये	४	५४	२४	३५	प्री	६/३०	४०/००	ग	१४	१४	२९	५९	६	१४	१८	१३	८	५	२३	ध. २४/३५	भद्रा २६/३२ से, राष्ट्रीय आश्विन प्रा.,
२	८	चं	५३	३८	२७	४१	मू	५०	०९	२६	१८	सौ	२१	५६	वि	१५	०१	२९	५५	६	१४	१८	१२	९	६	२४	धनु	भद्रा १५/०१ तक, दुर्गाष्टमी
३	९	मं	५८	०७	२९	२९	पूषा	५५	५७	२८	३८	शो	-	-	बा	१६	३१	२९	५१	६	१५	१८	११	१०	७	२५	धनु	B श्री लालबहादुर शास्त्री ज.
४	१०	बु	६०	००	-	-	उषा	६०	००	-	-	शो	६	२१	तै	१८	३४	२९	४७	६	१५	१८	९	११	८	२६	मं. ११/१७	हस्त में सूर्य २७/३२, पू. फा. में शुक्र २९/१९, शनि वक्री २९/३०,
५	१०	गु	३	४२	७	४५	उषा	२	५०	७	२४	अ	७	०६	ग	७	४५	२९	४२	६	१६	१८	८	१२	९	२७	मकर	भद्रा २०/५८ से,
६	११	शु	९	५५	१०	१४	श्र	१०	१९	१०	२४	सु	८	०२	वि	१०	१४	२९	३८	६	१६	१८	७	१३	१०	२८	कु. २३/५५	भद्रा १०/१४ तक, पंचक आरम्भ २३/५५, कमला ११ व्रत सबका,
७	१२	श	१६	१४	१२	४६	ध	१७	५३	१३	२६	धृ	९	००	बा	१२	४६	२९	३४	६	१७	१८	६	१४	११	२९	कुम्भ	शनि प्रदोष व्रत, पुनर्वसु में गुरु २४/३५
८	१३	र	२२	१६	१५	११	श	२५	१०	१६	२१	शू	९	५४	तै	१५	११	२९	३०	६	१७	१८	५	१५	१२	३०	कुम्भ	A अक्टूबर मा. १० ता. ३१, जन्म हजरत अली
९	१४	चं	२७	४६	१७	२४	पूभा	३१	५७	१९	०४	ग	१०	३९	व	१७	२४	२९	२५	६	१८	१८	३	१६	१३	अ१	मी. १२/२५	भद्रा १७/२४ से, व्य.महा. २७/३१ से, बुध वक्री १९/५४, A
१०	१५	मं	३२	३१	१९	१९	उभा	३८	००	२१	३०	वृ	११	११	वि	६	२४	२९	२१	६	१८	१८	२	१७	१४	२	मीन	भद्रा ६/२४ तक, सत्य व्रत, व्य. महापात ८/१५ तक, गांधी जयन्ती, B

प्र. आश्विन शु. ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३४५९ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) प्र. आश्विन शु. १५ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण ३४६७

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
५	८	८	६	२	४	१	२	८
७	२	१४	२	११	९	२१	७	७
८	३४	३०	५०	२१	४०	०५	४३	४३
२२	०४	३९	१६	३७	२३	०७	३६	३६
५८	७०२	३५	३९	६	७३	०	३	३
४७	४५	१७	३९	५९	१९	१६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस मास में पांच मंगलवार होने से कहीं रक्तपात होगा तथा छत्र भंग होगा "यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत"।। दशमी को शनि के वक्र होने से अशुभ फलों में वृद्धि होगी। तुला राशि में बुध के प्रवेश होने से पृथ्वी पर कलह तथा क्लेश एवं युद्धादि का भय हो तथा वर्षा होगी "यदा च तुलराशिस्थो निशाकर सुतस्तग्र। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता" मंगल के पृ. षाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश से वर्षा बहुत हो, गौ दूध कम दें, पृथ्वी पर अन्न पर्याप्त हो, धान, तिल, घृत, उड़द यह मंहगे हों "पूषा कुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्ण महर्घता। शालितिलाज्य माषेष्वग्नौ हि तत्पूर्ववदेव भावम्" गुरु के पुनर्वसु में प्रवेश से वर्षा में कमी, भय तथा दुर्भिक्ष होगा "आदित्यपुष्याश्लेषासु गुरुभोगे प्रसंगिनी। "अनावृष्टिभयंघोरदुर्भिक्षं सर्वमण्डले" दशमी को शनि के वक्री होने से रुई के भावों में गिरावट होगी। शेयरों के भावों में तेजी होगी। गेहूं, ज्वार, अलसी, सरसो, तेल, तम्बाकू, शीशा तथा कपड़े के भावों में तेजी होगी। सोने के भावों में गिरावट होगी। बुध के चतुर्दशी को वक्री होने से खाण्ड, मूंगफली, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, कपूर आदि के भावों में आगे तेजी होगी। गेहूँ, जौ और चने के भावों में मन्दी होगी।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	८	६	२	४	१	२	८
१४	०८	१९	५	२०	१९	२१	७	७
५९	३४	१९	४८	१३	२८	४	१८	१८
२२	०२	२३	२८	१४	२४	१३	१०	१०
५९	७२१	३७	४	५	७३	०	३	३
००	१५	०४	५४	४५	४५	३६	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में भी बुध सूर्य से आगे स्थित है तथा शुक्र सूर्य के पीछे है। सूर्य नीरा तथा शुक्र अमृता नाड़ी मे स्थित है अतः तेज वायु के साथ वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर वर्षा कम होगी तथा कहीं खण्ड वृष्टि होगी। गुजरात, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, गोवा, उड़ीसा में तेज वायु के साथ खण्ड वृष्टि होगी। कहीं कम वर्षा चिन्ता का कारण बनेगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३
अधिक आश्विन कृष्ण पक्ष: १४

ता. ३ से १६ अक्टू. सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ आश्विन तक। दक्षिणायन दक्षिण गोल, शरद ऋतु।

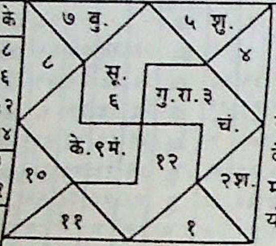
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्विन	मु. रमजान	अं. अक्टूबर	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	
११	१	बु	३६	३०	२०	५५	रे	४३	१७	२३	३८	धु	११	२९	बा	८	०९	२९	१७	६	११	१८	१	१८	१५	३	मे. २३/३८	पंचक समाप्त २३/३८,
१२	२	गु	३९	३७	२२	१०	अश्वि	४७	४६	२५	२६	व्या	११	३२	तै	९	३५	२९	१३	६	११	१८	०	१९	१६	४	मेष	
१३	३	शु	४१	५२	२३	०५	भ	५१	२२	२६	५३	ह	११	१८	व	१०	४०	२९	०८	६	२०	१७	५९	२०	१७	५	मेष	भद्रा १०/४० से २३/०५ तक,
१४	४	श	४३	०१	२३	३६	कृ	५४	०२	२७	५७	व	१०	४८	ब	११	२३	२९	०४	६	२०	१७	५८	२१	१८	६	वृ. ९/११	श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २०/३४,
१५	५	र	४३	२३	२३	४२	रो	५५	३९	२८	३७	सि	९	५९	कौ	११	४३	२९	००	६	२१	१७	५७	२२	१९	७	वृष	उ. फाल्गुनी में शुक्र २५/४२, बुध पश्चिम में अस्त २३/४९,
१६	६	चं	४२	२७	२३	२०	मृ	५६	०६	२८	४८	व्य	८	४९	ग	११	३५	२८	५६	६	२२	१७	५५	२३	२०	८	मि. १६/४६	भद्रा २३/२० से
१७	७	मं	४०	१५	२२	२८	आ	५५	१७	२८	२९	व	७, २१	१६, १८	वि	१०	५८	२८	५१	६	२२	१७	५४	२४	२१	९	मिथुन	भद्रा १०/५८ तक,
१८	८	बु	३६	४२	२१	०३	पुन	५३	०८	२७	३८	शि	२६	५४	बा	९	५०	२८	४७	६	२३	१७	५३	२५	२२	१०	क. २१/५३	कालाष्टमी, चित्रा में सूर्य १६/३७, कन्या में शुक्र १८/२९,
१९	९	गु	३१	४९	१९	०७	पु	४९	४१	२६	१६	सि	२४	०५	तै	८	०९	२८	४३	६	२३	१७	५२	२६	२३	११	कर्क	भद्रा २९/५७ से, वक्री कन्या में बुध १६/४३,
२०	१०	शु	२५	४३	१६	४१	श्ले	४५	०४	२४	२५	सा	२०	५२	वि	१६	४१	२८	३९	६	२४	१७	५१	२७	२४	१२	सिं. २४/२५	भद्रा १६/४१ तक, शब ए मिराज
२१	११	श	१८	३४	१३	५०	म	३९	३०	२२	१२	शु	१७	२०	बा	१३	५०	२८	३५	६	२४	१७	५०	२८	२५	१३	सिंह	कमला ११ व्रत सबका, उ.षा. में मंगल १९/२२, मृग. ४ में राहु A
२२	१२	र	१०	४०	१०	४१	पूफा	३३	१८	१९	४४	शु	१३	३४	तै	१०	४१	२८	३०	६	२५	१७	४९	२९	२६	१४	क. २५/०६	प्रदोष व्रत, वै. महापात १७/३९ से २१/५६ तक, A मूल २ में केतु २९/३७,
२३	१३	चं	२	२१	७	२२	उफा	२६	५१	१७	१०	ब्र	९, २१	४०, ४८	व	७	२२	२८	२६	६	२६	१७	४८	३०	२७	१५	कन्या	भद्रा ७/२२ से १७/४२ तक, मास शिवरात्रि,
०	१४	चं	५४	०३	२८	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चर्तुदशी तिथि क्षय,
२४	३०	मं	४६	०८	२४	५३	ह	२०	३६	१४	४१	वै	२६	०४	च	१४	२६	२८	२२	६	२६	१७	४७	३१	२८	१६	तु. २५/३१	भौमवती अमावस्या पुण्य, पुरुषोत्तम-मलमास समाप्त

द्वि आश्विन कृ. ८ बुधे प्रात: स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४७५

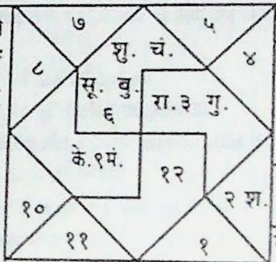
सू.	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
५	२	८	६	२	४	१	२	८
२२	२०	२४	१	२०	२९	२०	६	६
५२	३४	२१	३५	५४	११	५६	५२	५२
२९	११	१६	१४	३७	५०	२२	४४	४४
५९	८३०	३८	६३	४	७४	१	३	३
११	३२	३३	४३	२४	१०	२८	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
हस्त ४	पुन १	पूषा ४	चित्रा ३	पुन १	उफा १	रोहि ४	मृग ४	मूल २

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)



शुक्र के कन्या राशि में प्रवेश से कृषि की हानि होगी तथा सभी धान्य मंहगे होंगे एवं चावल विशेषकर मंहगे होंगे **"कन्याराशि गते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति। तत्र धान्य महर्घाणि शालिश्चैव विशेषत:"** वक्री होकर बुध कन्या राशि में प्रवेश करेगा। अत: आगे सुवर्ण और शक्कर यह लाभ देंगे तथा पुन: सस्ते हों **"कन्या राशिं गते ज्ञे हि कांचनं शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुन: शस्तो भविष्यति"** मंगल शनि का षडष्टक योग विश्व में अशांति तथा दुर्घटनाओं, बम्ब विस्फोट एवं आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि करने वाला है। इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग भी बन रहा है जिससे कहीं जल प्लावन या रक्त पात होने से जन धन हानि होगी **"एक राशौ यदा यांति चत्वार: पंचखेचरा:। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा"** बुध के वक्री अवस्था में अस्त होने से चांदी के भावों में तेजी का रुख होगा। शुक्र के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश से सभी प्रकार के अनाजों में तेजी का रुख होगा। मंगल के उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आने से घी, तेल, उड़द और धान्य के भावों में तेजी का रुख होगा।

द्वि. आश्विन कृ. ३० भौमे प्रात: स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३४८१



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
५	५	८	५	२	५	१	२	८
२८	१७	२८	२४	२१	६	२०	६	६
४८	३८	१५	३८	१८	४५	४५	३३	३३
५५	४८	०६	५७	२२	२८	५९	४०	४०
५९	८८६	३९	६३	३	७४	२	३	३
३२	५७	३२	५०	२०	२५	६	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा २	हस्त ३	उषा १	चित्रा १	पुन १	उफा ४	रोहि ४	मृग ४	मूल २

आकाश लक्षण- सूर्य के आगे बुध तथा सूर्य के पीछे शुक्र के होने से वायु वेग के साथ बूंदाबांदी होगी तथा कहीं तेज [illegible] के साथ बादल चाल होगी। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में कहीं-कहीं बादल चाल, तेज हवा के साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी [illegible]

... सूर्य के पीछे शुक्र के होने से वायु वेग के साथ बूंदाबांदी होगी तथा कहीं तेज वायु के साथ बादल चाल होगी। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,
राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में कहीं-कहीं बादल चाल, ते... साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी ...

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्षः १५

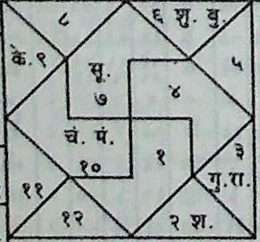
ता. १७ अक्टूबर से १ नवम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २५ आश्विन से १० कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	हि. कार्तिक	मु. रज्जब	अं. अक्टूबर	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	
२५	१	बु	३९	०४	२२	०४	चि	१४	५९	१२	२६	वि	२२	३७	किं	११	२६	२८	१८	६	२७	१७	४६	का१	२९	१७	तुला	संक्राति तुला में सूर्य १०/०८, पुण्यकाल १६/३२ तक, शारदीय नवरात्रारम्भ, A
२६	२	गु.	३३	१७	१९	४६	स्वा	१०	२६	१०	३८	प्री	१९	३५	बा	८	५१	२८	१४	६	२७	१७	४५	२	३०	१८	वृ. २७/४०	हस्त में शुक्र २०/१२, चन्द्रदर्शन मु. ४५, उ. शृंगो. A घटस्थापन (१२/२६ के बाद), B
२७	३	शु	२९	०८	१८	०७	वि	७	२३	९	२५	आ	१७	०५	तै	६	५१	२८	१०	६	२८	१७	४४	३	शा१	१९	वृश्चिक	भद्रा २९/३५ से, शावान मु. ८ B मातामहश्राद्ध, अग्रसेन ज., वक्री हस्त में बुध ११/३३, C
२८	४	श	२६	५५	१७	१५	अ	६	०१	८	५६	सौ	१५	१२	वि	१७	१५	२८	०६	६	२९	१७	४३	४	२	२०	वृश्चिक	भद्रा १७/१५ तक, विनायक ४, बुध पूर्व में उदय २०/०२,
२९	५	र	२६	४७	१७	१२	ज्ये	६	५४	९	१५	शो	१३	५८	बा	१७	१२	२८	०२	६	२९	१७	४२	५	३	२१	ध. ९/१५	ललिता पंचमी, सरस्वती आवाहन, C मकर में मंगल २०/५७
३०	६	चं	२८	४२	१७	५९	मू	९	४१	१०	२२	अ	१३	२२	तै	१७	५९	२७	५८	६	३०	१७	४१	६	४	२२	धनु	कालरात्रि सप्तमी, सरस्वती पूजन, बुध मार्गी ३०/२८, E व्य. महापात ९/४४ से १५/१४ तक,
का१	७	मं	३२	२७	१९	३०	पूषा	१४	१८	१२	१४	सु	१३	२१	ग	६	३९	२७	५४	६	३१	१७	४०	७	५	२३	म. १८/४८	भद्रा १९/३० से, स्वाती में सूर्य २७/०२, रा. कार्तिक प्रा., सायन वृश्चि. में सूर्य १३/५७, D
२	८	बु	३७	३७	२१	३४	उषा	२०	२४	१४	४१	धृ	१३	४७	वि	८	२८	२७	५०	६	३१	१७	३९	८	६	२४	मकर	भद्रा ८/२८ तक, महाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, सरस्वती विसर्जन
३	९	गु.	४३	४०	२४	००	श्र	२७	२९	१७	३२	शू	१४	३३	बा	१०	४५	२७	४६	६	३२	१७	३८	९	७	२५	मकर	महानवमी, गजाश्व नवमी, D हेमन्त ऋतु प्रा., सरस्वती बलिदान,
४	१०	शु	५०	००	२६	३३	ध	३४	५८	२०	३२	ग	१५	२७	तै	१३	१६	२७	४२	६	३३	१७	३७	१०	८	२६	कु. ७/०१	पंचक आरम्भ ७/०१, विजयादशमी, बौद्धावतारः १०, शस्त्र पूजा
५	११	श	५६	०५	२८	५९	श	४२	१९	२३	२९	वृ	१६	२०	व	१५	४७	२७	३८	६	३३	१७	३६	११	९	२७	कुम्भ	भद्रा १५/४७ से २८/५९ तक, पांपाकुशा ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का, E
६	१२	र	६०	००	-	-	पूभा	४१	०५	२६	१२	ध्रु	१७	०५	ब	१८	०७	२७	३४	६	३४	१७	३५	१२	१०	२८	मीन१९/३३	पांपांकुशा ११ व्रत निम्बार्कों का, मार्गी चित्रा में बुध २९/४२,
७	१२	चं	१	२७	७	०९	उभा	५४	५९	२८	३४	व्या	१७	३४	बा	७	०९	२७	३१	६	३५	१७	३५	१३	११	२९	मीन	सोम प्रदोष व्रत, चित्रा में शुक्र १३/१९, G नवम्बर मा. ११ ता. ३०,
८	१३	मं	५	५२	८	५६	रे	५९	४५	३०	३०	ह	१७	४४	तै	८	५६	२७	२८	६	३६	१७	३४	१४	१२	३०	मे. ३०/३१	पंचक समाप्त ३०/३१, F लक्ष्मी पूजा, आकाश दीप दान,
९	१४	बु	९	१२	१०	१७	अ	६०	००	-	-	ब	१७	३४	व	१०	१७	२७	२४	६	३६	१७	३३	१५	१३	३१	मेष	भद्रा १०/१७ से २२/४७ तक, सत्यव्रत, शरद पूर्णिमा, कोजागरी पूर्णिमा, कुमारी पूर्णिमा, F
१०	१५	गु.	११	२५	११	११	अ	३	३४	८	०३	सि	१७	०४	ब	११	११	२७	२०	६	३७	१७	३२	१६	१४	न१	मेष	महर्षि वाल्मीकि ज., कार्तिक स्नान प्रा., वक्री रोहिणी ३ में शनि १२/२०, G

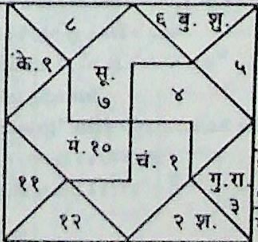
द्वि. आश्विन शु. ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३४८९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
६	९	९	५	२	५	१	२	८
६	५	३	२०	२१	१६	२०	६	६
४६	२३	३५	२४	३९	४१	२६	८	८
०५	२७	२८	४९	४०	४९	२७	१४	१४
५९	७१८	४०	१६	१	७४	२	३	३
४७	४०	३९	०८	४८	४१	५२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाति १	उषा ३	उषा ३	हस्त ४	पुन. १	हस्त ३	रोहि. ४	मृग. ४	मूल २



पक्षारम्भ में मंगल मकर राशि में प्रवेश कर रहा है अतः घृत, तेल मंहगे होंगे एवं सब धान्य सस्ते होंगे और लोगों को दुःख पीड़ा भी होगी "मकरे च स्थिते भौमे घृततैलमहर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीडनम्" सूर्य के बुधवार को तुला राशि में प्रवेश से उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा, पूर्व के देशों में युद्ध आदि का भय और दक्षिण के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा- "वायव्ये च यदादृष्टिः सर्वसौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत" बुध के हस्त तथा चित्रा नक्षत्रों में प्रवेश से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। शुक्र के हस्त नक्षत्र में प्रवेश से रुई में मन्दी का रुख होगा। बुध के चतुर्थी को पूर्व में उदय से अनाज के भावों में गिरावट आयेगी। गेहूँ, जौ, चना, लाल मिर्च एवं घी के भावों में तेजी का रुख होगा। षष्ठी को बुध मार्गी होगा अतः रुई के भावों में पहले गिरावट होकर बाद में तेजी का रुख होगा। शेयरों के भावों में गिरावट दर्ज होगी। चांदी में तेजी दर्ज होगी। गेहूँ, अनाज, चना आदि में तेजी तथा अलसी, विनौलां, मूंगफली तथा गुड़ आदि में मन्दी का रुख होगा।

द्वि. आश्विन शु. १५ गुरौ प्रातः स्टै.टा. ५/३० केतकी अहर्गण ३४९७



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	९	५	२	५	१	२	८
१४	११	९	२६	२१	२६	२०	५	५
४५	५९	३	३४	४८	४०	०१	४२	४२
०७	०६	५१	१०	३५	०९	०१	४८	४८
६०	७६३	४१	७५	०	७४	३	३	३
००	२२	३०	०१	१३	५४	३४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाति ३	अश्वि. ४	उषा ४	चित्रा १	पुन. १	चित्रा २	रोहि. ४	मृग. ४	मूल २

आकाश लक्षण- सूर्य के वायु नाड़ी में स्थित होने एवं भौम के नीरा नाड़ी में होने से उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान गुजरात, पंजाब, जम्मू काश्मीर, मध्य प्रदेश, आसाम में वायु के साथ वर्षा होगी तथा शीत का प्रकोप बढ़ने लगेगा। पर्वतीय इलाकों में शीत का प्रकोप बढ़ने के साथ तेज वर्षा होगी एवं शीतलहर चलेगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३
कार्तिक कृष्ण पक्ष: १६

ता. २ से १५ नवम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

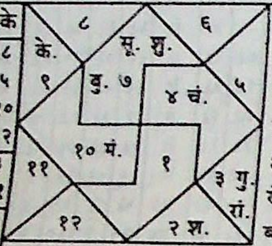
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. कार्तिक	मु. शाबान	अं. नवम्बर	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
११	१	शु	१२	३३	११	३९	भ	६	१८	९	०९	व्य	१६	१४	कौ	११	३९	२७	१६	६	३८	१७	३१	१७	१५	२	वृ. १५/२२
१२	२	श	१२	४२	११	४३	कृ	८	०२	९	५१	व	१५	०५	ग	११	४३	२७	१२	६	३८	१७	३१	१८	१६	३	वृष
१३	३	र	११	५४	११	२५	रो	८	५२	१०	१२	प	१३	३९	वि	११	२५	२७	०९	६	३९	१७	३०	१९	१७	४	मि. २२/१५
१४	४	चं	१०	१४	१०	४६	मृ	८	५१	१०	१२	शि	११	५७	बा	१०	४६	२७	०५	६	४०	१७	२९	२०	१८	५	मिथुन
१५	५	मं	७	४३	९	४६	आ	८	००	९	५३	सि	९	५८	तै	९	४६	२७	०१	६	४१	१७	२८	२१	१९	६	क. २७/२५
१६	६	बु	४	२३	८	२७	पुन	६	२०	९	१३	सा	७ २१	४४ १४	व	८	२७	२६	५७	६	४१	१७	२८	२२	२०	७	कर्क
१७	७	गु	०	१४	६	४८	पु	३	५२	८	१५	शु	२६	२९	ब	६	४८	२६	५३	६	४२	१७	२७	२३	२१	८	कर्क
०	८	गु	५५	२१	२८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
१८	९	शु	४९	४५	२६	३७	श्ले	० ५६	३९ ४७	६ २१	५८ २६	ब्र	२३	३१	तै	१५	४५	२६	५०	६	४३	१७	२७	२४	२२	९	सिं. ६/५८
१९	१०	श	४३	३६	२४	१०	पूफा	५२	२३	२७	४१	ऐं	२०	२२	व	१३	२५	२६	४६	६	४४	१७	२६	२५	२३	१०	सिंह
२०	११	र	३७	०७	२१	३५	उफा	४७	४०	२५	४९	वै	१७	०५	ब	१०	५३	२६	४३	६	४५	१७	२५	२६	२४	११	क. ९/१३
२१	१२	चं	३०	३३	१८	५८	ह	४२	५६	२३	५६	वि	१३	४५	कौ	८	१७	२६	३९	६	४५	१७	२५	२७	२५	१२	कन्या
२२	१३	मं	२४	११	१६	२६	चि	३८	२८	२२	०९	प्री	१०	२८	व	१६	२६	२६	३६	६	४६	१७	२४	२८	२६	१३	तु. ११/०१
२३	१४	बु	१८	२२	१४	०८	स्वा	३४	३८	२०	३८	आ	७ २८	१९ २६	श	१४	०८	२६	३३	६	४७	१७	२४	२९	२७	१४	तुला
२४	३०	गु	१३	२६	१२	१०	वि	३१	४६	१९	३०	सौ	२५	५३	ना	१२	१०	२६	३०	६	४८	१७	२३	३०	२८	१५	वृ. १३/४५

श्रवण में मंगल १३/५६. गुरु वक्री १३/३०. शब ए बारात मु.,
भद्रा २३/३७ से, तुला में बुध २०/४३, तुला में शुक्र २१/२९.,
भद्रा ११/२५ तक, श्रीगणेश ४ व्रत, करक ४ (करवा चौथ), चन्द्रोदय २०/०१.
विशाखा में सूर्य ११/१६,
भद्रा ८/२७ से १९/४० तक,
कालाष्टमी, अहोई ८, राधा कुण्ड स्नान (मथुरा), स्वाती में बुध ९/५६. A
A स्वाती में शुक्र २९/२४,
अष्टमी तिथि क्षय
वै. महापात ८/१५ से १३/५५ तक,
भद्रा १३/२५ से २४/१० तक,
रमा ११ व्रत सबका B श्री हनुमान ज., श्री जवाहरलाल नेहरू ज.,
सोम प्रदोष व्रत, गोवत्स द्वादशी, यमदीप १३, बुधपूर्व में अस्त १८/४५,
भद्रा १६/२६ से २७/१५ तक, मासशिवरात्रि, धनतेरस, श्रीधन्वन्तरी ज.,
नरकहरा रूप चतुर्दशी, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कमला ज., B
अमावस्या पुण्य, श्री महावीर निर्वाण दिवस (जैन), अन्नकूट, गोवर्धन पूजा

कार्तिक कृ. ७ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५०४

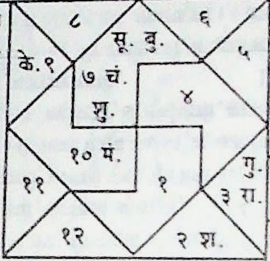
सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
६	३	९	६	२	६	१	२	८
२१	१५	१३	६	२१	५	१९	५	५
४५	३	५६	२२	४५	२५	३४	२०	२०
५३	२०	२०	५८	५८	०९	३१	३२	३२
६०	८४३	४२	१२	१	७५	४	३	३
१५	५५	०८	१०	११	०७	४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा. १	पुष्य ४	श्रवण १	चित्रा ४	पुन. १	चित्रा ४	रोहि. ३	मृग. ४	मूल २

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)



बुध के तुला राशि में प्रवेश से वर्षा होगी तथा पृथ्वी पर कलह तथा क्लेश युद्धादि हों। "यदा च तुलराशिस्थो निशाकरसुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता" शुक्र के तुला राशि में होने से पृथ्वी पर क्षेम, आरोग्यता रहे और कहीं विरोध हो "यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशि प्रवर्त्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्" मंगल के श्रवण नक्षत्र में प्रवेश से रोग हों तथा धान्य पर्याप्त हो किंतु पीछे मेघ वर्षा करें- "श्रुतौ च रोगो बहुधान्ययोगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च" सूर्य बुध शुक्र के एक ही राशि में स्थित होने से धान्यों के भावों में तेजी होगी और मेघ वर्षा कम करेंगे- "एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्वाधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः" मंगल के श्रवण नक्षत्र में प्रवेश से गेहूं, जौ, तिल, अफीम और धातुओं के भावों में तेजी आयेगी। शुक्र के स्वाती नक्षत्र में प्रवेश से रसकस के भावों में तेजी का रुख होगा और अनाज के भाव गिरेंगे। द्वादशी को बुध के पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल आदि सभी प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी का रुख होगा। सोना पहले कुछ मन्दा होकर बाद में तेज होगा।

कार्तिक कृ. ३० गुरौ प्रातः स्टै.टा. ५/३० केतकी अहर्गण ३५११



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
६	६	९	६	२	६	१	२	८
२८	२५	१८	१७	२१	१४	१९	४	४
४८	११	५२	२३	३३	११	४	५८	५८
१८	२७	५६	०३	३१	२०	४४	१७	१७
६०	८३२	४२	१५	२	७५	४	३	३
२८	१८	४०	४७	३५	१५	२८	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा. ३	विशा. २	श्रवण ३	स्वाती ४	पुन. १	स्वाती ३	रोहि. ३	मृग. ४	मूल २

आकाश लक्षण- सूर्य के चण्डानाड़ी में होने से, बुध के वायु नाड़ी में, मंगल के अमृता नाड़ी, गुरु के नीरा नाड़ी में होने से शीत वायु का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं-कहीं वर्षा होगी एवं कहीं कहीं बादल चाल के साथ बूंदाबादी होगी। दक्षिण भारत एवं पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
कार्तिक शुक्ल पक्षः १७

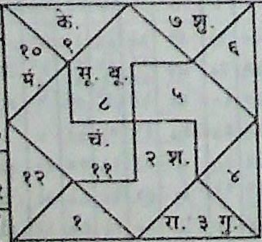
ता. १६ से ३० नवम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २५ कार्तिक से ९ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

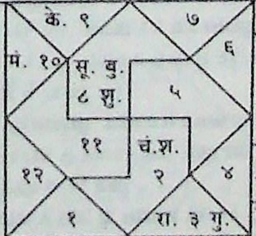
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. शाबान	तारीखें अं. नवम्बर	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
२५	१	शु	९	४३	१०	४२	अनु	३०	१३	१८	५४	अ	२३	४८	ब	१०	४२	२६	२७	६	४८	१७	२३	मा१	२९	१६	वृश्चिक	सं० वृश्चिक मेंसूर्य ९/५६, पुण्यकाल १६/२० तक, भैयादूज, यमद्वितीया, चित्रगुप्तापूजा, A
२६	२	श	७	३१	९	५०	ज्ये	३०	१३	१८	५४	सु	२२	१३	कौ	९	५०	२६	२३	६	४९	१७	२३	२	र१	१७	ध.१८/५४	रमजान मु. ९, रोजा प्रारम्भ मु., A विशाखा में बुध २०/४८, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगो.
२७	३	र	७	०३	९	३१	मू	३१	५६	१९	३७	धृ	२१	१२	ग	९	३१	२६	२०	६	५०	१७	२२	३	२	१८	धनु	भद्रा २१/५० से, विनायक ४, दुर्वा ४, B रा. मार्गशीर्ष प्रा., सायन धनु में सूर्य ११/३२
२८	४	चं	८	२३	१०	१२	पूषा	३५	२४	२१	०१	शू	२०	४४	वि	१०	१२	२६	१७	६	५१	१७	२२	४	३	१९	म. २७/२८	भद्रा १०/१२ तक, अनुराधा में सूर्य १७/१५, विशाखा में शुक्र २०/३९,
२९	५	मं	११	२९	११	२७	उषा	४०	२८	२३	०३	ग	२०	४६	बा	११	२७	२६	१५	६	५२	१७	२१	५	४	२०	मकर	पांडव ५, सौभाग्यपंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन)
३०	६	बु	१६	०५	१३	१९	श्र	४६	४९	२५	३६	वृ	२१	१३	तै	१३	१९	२६	१२	६	५३	१७	२१	६	५	२१	मकर	सूर्य षष्ठी व्रत, धनिष्ठा में मंगल ११/०५, व्य. महा. १७/०६ से २५/०८ तक,
मा१	७	गु.	२१	४७	१५	३६	ध	५३	५८	२८	२८	ध्रु	२१	५७	व	१५	३६	२६	०९	६	५३	१७	२१	७	६	२२	कु. १५/०१	भद्रा १५/३६ से २८/५१ तक, पंचक आरम्भ १५/०१, गोपाष्टमी, वृश्चि. में बुध २७/१४, B
२	८	शु	२८	०२	१८	०७	श	६०	००	-	-	व्या	२२	४८	ब	१८	०७	२६	०६	६	५४	१७	२१	८	७	२३	कुम्भ	श्री दुर्गाष्टमी, C यात्रा (महाराष्ट्र), चातुर्मास व्रत नियम समाप्त, तुलसी विवाह
३	९	श	३४	१४	२०	३६	श	१	१९	७	२७	ह	२३	३६	बा	७	२३	२६	०४	६	५५	१७	२०	९	८	२४	मी. २७/३६	अक्षय ९, कुष्माण्ड नवमी, आमला ९, अनुराधा में बुध २९/३७,
४	१०	र	३९	४९	२२	५१	पूभा	८	२३	१०	१७	व	२४	१२	तै	९	४६	२६	०१	६	५६	१७	२०	१०	९	२५	मीन	F कार्तिक स्नान समाप्त, अनु. में शुक्र ११/२७, रथ यात्रा (जैन), कुम्भ में मंगल १७/०३,
५	११	चं	४४	२०	२४	४०	उभा	१४	३७	१२	४७	सि	२४	२९	व	११	४९	२५	५९	६	५७	१७	२०	११	१०	२६	मीन	भद्रा ११/४९ से २४/४० तक, प्रबोधिनी ११ व्रत सबका, भीष्मपंचक प्रा. पण्ढरपुर C
६	१२	मं	४७	३०	२५	५७	रे	१९	४०	१४	५०	व्य	२४	२१	ब	१३	२३	२५	५६	६	५७	१७	२०	१२	११	२७	मे. १४/५०	पंचक समाप्त १४/५०, वृश्चिक में शुक्र १९/४७, E (विवाह मु. रोहिणी में) F
७	१३	बु	४९	१२	२६	३९	अ	२३	२१	१६	१९	व	२३	४६	कौ	१४	२३	२५	५४	६	५८	१७	२०	१३	१२	२८	मेष	प्रदोष व्रत, D रेणुका तीर्थ (हि.प्र.), निम्बार्काचार्य ज., गुरुनानक ज., E
८	१४	गु.	४९	२१	२६	४३	भ	२५	३५	१७	१३	प	२२	४३	ग	१४	४६	२५	५२	६	५९	१७	२०	१४	१३	२९	वृ. २३/२२	भद्रा २६/४३ से, वैकुण्ठ चतुर्दशी विद्यापति जयन्ती,
९	१५	शु	४८	१४	२६	१७	कृ	२६	२९	१७	३५	शि	२१	१६	वि	१४	३१	२५	५०	७	०	१७	२०	१५	१४	३०	वृष	भद्रा १४/३१ तक, सत्यव्रत, भीष्म पंचक समाप्त, मेला पुष्कर राज (गढ़गंगा), D

कार्तिक शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३५१९ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) कार्तिक शु. १५ शुक्रे प्रातः स्टै.टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३५२६

सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
७	१०	९	७	२	६	१	२	८
६	७	२४	०	२१	२४	१८	४	४
५२	९	३६	८	७	१३	२७	३२	३२
४२	५७	०६	५७	३१	४०	४३	५०	५०
६०	७११	४३	९५	४	७५	४	३	३
३८	५४	०९	१९	०६	२०	४७	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
२ अनु.	१ शत.	१ धनि.	४ विशा.	१ पुन.	२ विशा.	३ रोहि.	४ मृग.	२ मूल



पश्चात् में मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश कर रहा है अतः सब धान्य मंहगे होंगे तथा अन्य वस्तुएं भी मंहगी हों तथा लोग निर्भय हों- "भूसुतः कुम्भ राशिस्थः सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायते हर्षं लोकमध्ये तु निर्भयम्" बुध के वृश्चिक राशि में प्रवेश से घृत तेल मंहगे होंगे और धान्य का सुभिक्ष होगा तथा लोगों में सुख होगा- "बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महर्घता। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत" शुक्र के वृश्चिक राशि में प्रवेश से सब धान्य सस्ते होंगे तथा लोग निर्भय तथा स्वस्थ चित्त से रहें "वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य समर्घता। लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखस्वस्थं प्रवर्तते"



सू	चं	मं	बु	गु.	शु	श	रा	के
७	१	९	७	२	७	१	२	८
१३	३	२९	११	२०	३	१७	४	४
५७	२०	३१	१३	३५	१	५३	१०	१०
३५	१३	०४	२२	१०	१४	४५	३५	३५
६०	७११	४३	९४	५	७५	४	३	३
४७	०२	२६	२८	१८	२५	५५	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४ अनु.	३ कृत्ति.	२ धनि.	३ अनु.	१ पुन.	४ विशा.	३ रोहि.	४ मृग.	२ मूल

सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेश से दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय, उत्तर के देशों में युद्ध आदि का भय और पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा- "नैर्ऋत्ये च यदा दृष्टि भयत्कं सं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्" द्वादशी को शुक्र के राशि परिवर्तन से सूर्यबुध शुक्र के एक ही राशि में आ जाने से सब धान्य तेज होंगे और मेघ वर्षा कम करें- "एक राशौ गत ह्येते सौम्य शुक्रदिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः" मंगल के धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश से गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, घी और अनाज के भावों में गिरावट होगी। गेहूं, जौ, राई और मक्के में आगे तेजी का रुख होगा।

आकाश लक्षण- सूर्य के चण्डानाड़ी तथा मंगल के अमृता एवं बुध शुक्र के भी चण्डा नाड़ी में होने से एवं गुरु के नीरा नाड़ी में होने से तेज शीतल वायु के साथ जम्मू काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, अत्तरांचल के पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा होगी या हिमपात होगा। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में शीत बढ़ेगी। कुछ क्षेत्रों में वायु के साथ वर्षा होगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष: १८

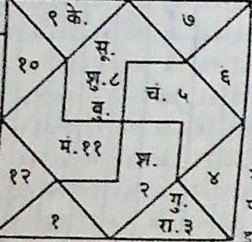
ता. १ से १४ दिसम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

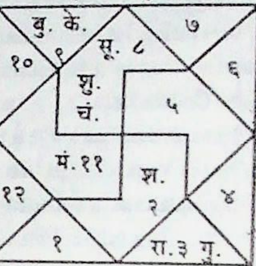
रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	मु. रमजान	अं. दिसंबर	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
१०	१	श	४६	००	२५	२५	रो	२६	११	१७	२९	सि	१९	२६	बा	१३	५१	२५	४७	७	०	१७	२०	१६	१५	दि१	मि. २९/१६	दिसम्बर मा. १२ ता. ३१, (विवाह मु. रोहिणी, मृगशिर में),
११	२	र	४२	४४	२४	०७	मृ	२४	५०	१६	५७	सा	१७	१६	तै	१२	४८	२५	४५	७	१	१७	२०	१७	१६	२	मिथुन	ज्येष्ठा में सूर्य २१/३६, (विवाह मु. मृगशिर में),
१२	३	चं	३८	४१	२२	३०	आ	२२	४०	१६	०६	शु	१४	५१	व	११	२१	२५	४४	७	२	१७	२०	१८	१७	३	मिथुन	भद्रा ११/२१ से २२/३० तक, ज्येष्ठा में बुध १६/३३,
१३	४	मं	३४	०४	२०	४०	पुन	१९	५३	१५	००	शु	१२	१२	ब	९	३७	२५	४२	७	३	१७	२०	१९	१८	४	क.९/१७	श्री गणेश ४ व्रत, वै. महापात २१/०१ से, चन्द्रोदय २०/४९
१४	५	बु	२९	०२	१८	४०	पु	१६	३९	१३	४३	ब्र	१/३०	२५/१२	कौ	७	४१	२५	४०	७	४	१७	२०	२०	१९	५	कर्क	वै. महापात ७/२६ तक,
१५	६	गु.	२३	४६	१६	३५	श्ले	१३	०८	१२	२०	वै	२७	३५	व	१६	३५	२५	३८	७	४	१७	२०	२१	२०	६	सिं१२/१९	भद्रा १६/३५ से २७/३० तक, वक्री आर्द्रा ४ में गुरु ९/२५, (विवाह मु. मघा में)
१६	७	शु	१८	२३	१४	२६	म	९	२९	१०	५३	वि	२४	३८	ब	१४	२६	२५	३७	७	५	१७	२०	२२	२१	७	सिंह	काल भैरवाष्टमी, शहादत ए हजरत अली मु.,
१७	८	श	१३	०१	१२	१८	पूफा	५	५०	९	२६	प्री	२१	४२	कौ	१२	१८	२५	३५	७	६	१७	२०	२३	२२	८	क. १५/०४	(विवाह मु. उ.फा. में),
१८	९	र	७	४७	१०	१३	उफा	२/५१	११/०३	८/३०	०२/४४	आ	१८	४९	ग	१०	१३	२८	३४	७	६	१७	२०	२४	२३	९	कन्या	भद्रा २१/१३ से, शतभिषा में मंगल २१/२२, (विवाह मु. हस्त में),
१९	१०	चं	२	५०	८	१५	चि	५६	११	२९	३६	सौ	१६	०३	वि	८	१५	२५	३३	७	७	१७	२०	२५	२४	१०	तु. १८/०८	भद्रा ८/१५ तक, उत्पन्ना ११ व्रत स्मार्त्तों का, ज्येष्ठा में शुक्र २५/५६, A
०	११	चं	५८	२०	३०	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि क्षय. A श्री महावीर दीक्षा दिवस (जैन),
२०	१२	मं	५४	२२	२८	५२	स्वा	५३	५३	२८	४१	शो	१३	२६	कौ	१७	३८	२५	३२	७	८	१७	२१	२६	२५	११	तुला	उत्पन्ना ११ व्रत वैष्णवों का, मूल धनु में बुध २८/१५,
२१	१३	बु	५१	१०	२७	३७	वि	५२	१८	२८	०४	अ	११	०१	ग	१६	१२	२५	३१	७	८	१७	२१	२७	२६	१२	वृ. २२/११	भद्रा २७/३७ से, प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य तिथि
२२	१४	गु.	४८	५५	२६	४३	अ	५१	४०	२७	४९	सु	८/३१	५१/००	वि	१५	०७	२५	३०	७	९	१७	२१	२८	२७	१३	वृश्चिक	भद्रा १५/०७ तक, मास शिवरात्रि, मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (का.), B
२३	३०	शु	४७	४९	२६	१७	ज्ये	५२	०९	२८	०१	शू	२९	३१	च	१४	२७	२५	२९	७	१०	१७	२२	२९	२८	१४	ध. २८/०१	अमावस्या पुण्य, जमातुल विदा B श्रीबाला ज., शब ए कद्र मु.,

मार्गशीर्ष कृ. ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५३४ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) मार्गशीर्ष कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टै.टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५४०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	४	१०	७	२	७	१	२	८
२२	२४	५	२३	१९	१३	१७	३	३
४	२०	२७	४७	४८	४	१४	४५	४५
२२	०२	२४	३७	२६	४३	२२	०८	०८
६०	[illegible]	४३	९४	६	७५	४	३	३
५७	५८	४०	१३	२१	२९	५३	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



बुध के धनु राशि में प्रवेश से मृग, हाथी, वन्य पशुओं की हानि होगी तथा शासक प्रजा का विरोध हो- "धने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति" बुध के ज्येष्ठा नक्षत्र में रहने से गन्ना, धान, घृत तेज हों एवं घोड़ों में रोग हो। बुध तृतीया को ज्येष्ठा में प्रवेश कर रहा है- "ज्येष्ठायामिक्षु शाल्याज्य महर्घमश्वरोगिता" मंगल के शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश से कीट पतंग तथा चूहे अधिक होंगे किन्तु धान्य भी पर्याप्त हो- "स्युर्वारुणे कीटक मूषकाह्यस्तथापि धान्यानि बहूनिभूम्याम्" इस मास में पांच रविवार होने से दुर्भिक्ष, छत्र भंग तथा महाभय हो- "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदास्ते च महद्भयम्" बुध के ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश से घी और धान्यों के भावों में तेजी का रुख रहेगा। दशमी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगा फलस्वरूप सोना, चांदी के भावों में गिरावट दर्ज होगी एवं अनाज के भावों में भी गिरावट दर्ज होगी। बुध के द्वादशी को मूल नक्षत्र में प्रवेश से पशुओं एवं बालकों को शारीरिक कष्ट होगा। पूर्वार्ध में सूर्य बुध शुक्र के एक ही राशि में होने से वर्षा में कमी एवं सब धान्यों में तेजी होगी। "एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः।"



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	१०	८	२	७	१	२	८
२८	१७	९	३	१९	२०	१६	३	३
१०	३५	४१	१३	७	३७	४५	२६	२६
१९	२५	४९	५१	३७	४०	१६	०३	०३
६१	[illegible]	४३	९४	७	७५	४	३	३
०३	१९	४८	४०	१३	३९	४६	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य बुध के वायु नाड़ी में होने एवं मंगल के अमृता व जला नाडी में होने से तथा गुरु के सौम्या नाड़ी में रहने से उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, बिहार, बंगाल में वायु के वेग के साथ वर्षा होगी तथा शीत बढ़ेगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हल्की वर्षा व हिमपात के साथ शीत का प्रकोप बढ़ेगा। समुद्रतटीय क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ शीत बढ़ेगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः १९

ता. १५ से ३० दिसम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २४ मार्गशीर्ष से ९ पौष तक। दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

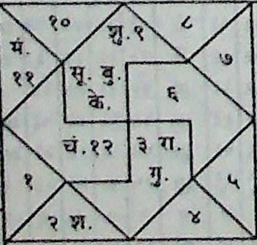
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (पौष)	मु. (रमजान)	अं. (दिसं.)	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
२४	१	श	४८	००	२६	२३	मू	५३	५३	२८	४४	गं	२८	२६	किं	१४	१६	२५	२८	७	१०	१७	२२	१	२९	१५	धनु	सं० मूल धनु में सूर्य २४/३६, पुण्यकाल अगले दिन, वक्री रोहिणी २ में शनि ८/००, A
२५	२	र	४९	३६	२७	०१	पूषा	५७	००	२९	५९	वृ	२७	४७	बा	१४	३८	२५	२७	७	११	१७	२२	२	३०	१६	धनु	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगो., मं. पुण्यकाल १२/३४ तक A मृग. ३ में राहु, मूल १ में केतु २७/१४,
२६	३	चं	५२	३८	२८	१५	उषा	६०	००	-	-	ध्रु	२७	३४	तै	१५	३४	२५	२७	७	११	१७	२३	३	श.१	१७	म. १२।२३	व्य. महा. ७/४८ से २५/३३ तक, शुक्र का वृद्धत्व आरम्भ ३०/५०, B
२७	४	मं	५६	५९	३०	००	उषा	१	२६	७	४७	व्या	२७	४५	व	१७	०४	२५	२६	७	१२	१७	२३	४	२	१८	मकर	भद्रा १७/०४ से ३०/०० तक, विनायक ४, B शव्वाल मु. १०, इदुलफित्तर
२८	५	बु	६०	००	-	-	श्र	७	०८	१०	०४	ह	२८	१६	ब	१९	०३	२५	२६	७	१३	१७	२४	५	३	१९	कु. २३।२२	पंचक आरम्भ २३/२२, गुरुतेगबहादुर बलिदान दिवस,
२९	५	गु	२	२५	८	११	ध	१३	५०	१२	४५	व	२९	००	बा	८	११	२५	२६	७	१३	१७	२४	६	४	२०	कुम्भ	पू. षाढ़ा में बुध १४/४३, शुक्र पूर्व में अस्त ३०/५०,
३०	६	शु	८	३४	१०	४०	श	२१	०७	१५	४१	सि	२९	५१	तै	१०	४०	२५	२६	७	१४	१७	२४	७	५	२१	कुम्भ	चम्पाषष्ठी, स्कन्द ६, मूल धनु में शुक्र १६/१२, सायन मकर में सूर्य २४/५३ C
पौ१	७	श	१८	५५	१३	१२	पूभा	२८	३०	१८	३८	व्य	३०	३७	व	१३	१२	२५	२६	७	१४	१७	२५	८	६	२२	मी. ११।५४	भद्रा १३/१२ से २६/२६ तक, रा. पौष प्रा., C उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
२	८	र	२०	५४	१५	३६	उभा	३५	२४	२१	२४	व	३१	१०	ब	१५	३६	२५	२६	७	१५	१७	२५	९	७	२३	मीन	दुर्गाष्टमी F वै. महा. १०/५२ से २५/३३ तक, बुध पश्चिम में उदय १३/०२, G
३	९	चं	२५	५७	१७	३८	रे	४१	१९	२३	४७	प	-	-	कौ	१७	३८	२५	२६	७	१५	१७	२६	१०	८	२४	मे. २३।४७	पंचक समाप्त २३/४७, G श्रीत्रिपुरी भैरव ज.
४	१०	मं	२९	३६	१९	०६	अ	४५	५०	२५	३६	प	७ ३१	२२ ०५	ग	१९	०६	२५	२६	७	१६	१७	२७	११	९	२५	मेष	क्रिसमस डे (बड़ा दिन),
५	११	बु	३१	३५	१९	५४	भ	४८	४१	२६	४५	सि	३०	१५	व	७	३६	२५	२७	७	१६	१७	२७	१२	१०	२६	मेष	भद्रा ७/३६ से १९/५४ तक, मोक्षदा ११ व्रत सबका, गीता जयंती, E
६	१२	गु	३१	४४	१९	५८	कृ	४९	४७	२७	११	सा	२८	५२	व	८	०२	२५	२७	७	१७	१७	२८	१३	११	२७	वृ. ८।५५	पू. भाद्रपद में मंगल २७/०७, E मौनी एकादशी (जैन), जोड़मेला (पं.)
७	१३	शु	३०	७	१९	२०	रो	४९	११	२६	५७	शु	२६	५७	कौ	७	४४	२५	२८	७	१७	१७	२८	१४	१२	२८	वृष	प्रदोष व्रत, पू. षाढ़ा में सूर्य २६/४९, उ. षाढ़ा में बुध २४/१५
८	१४	श	२६	५१	१८	०२	मृ	४७	०३	२६	०६	शु	२४	३२	व	१८	०२	२५	२८	७	१७	१७	२९	१५	१३	२९	मि. १४।३६	भद्रा १८/०२ से २९/१० तक, दत्तात्रेय जयन्ती, पिशाच मोचनी चतुर्दशी, F
९	१५	र	२२	११	१६	१०	आ	४३	३५	२४	४३	ब्र	२१	४०	ब	१६	१०	२५	२९	७	१८	१७	३०	१६	१४	३०	मिथुन	सत्यव्रत, अन्नपूर्णा ज., मकर में बुध २७/१२,

मार्गशीर्ष शु. ८ रवौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३५४९

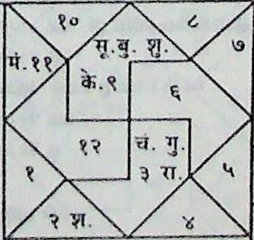
(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

मार्गशीर्ष शु. १५ रवौ प्रातः स्टैं.टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३५५६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	११	१०	८	२	८	१	२	८
७	८	१६	१७	१७	१	१६	२	२
२०	४३	२४	२९	४९	५७	३	५७	५७
०५	०६	४२	२३	३५	१७	४६	२६	२६
६१	७१०	४३	९५	७	७५	४	३	३
०७	२१	५५	२६	५५	३४	२२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
३ मूल	२ उ.भा.	३ शत.	२ पू.षा.	४ आर्द्रा	१ मूल	२ रोहिणी	३ मृग.	१ मूल



षष्ठी को शुक्र धनु राशि में प्रवेश कर रहा है अतः सब धान्य महंगे होंगे तथा कृषि की हानि होगी- "यदा च धनराशिस्थो दैत्याचार्य्यः प्रवर्त्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति" मंगल के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश से तिल वस्त्र, कपास, सुपारी इनका भाव तेज हो। "पूभामहीजे तिलवस्त्रसूतकार्पास पूगादिमहर्घता वा" बुध के मकर राशि में प्रवेश से अन्नादि का समभाव रहे तथा शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के मिश्रित फल हों। बुध मकर राशि में पक्षान्त में प्रवेश कर रहा है "निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम्" शुक्र का राक्षस गण नक्षत्र में अस्त होने से हिंदू देशों में विग्रह हो, खर्पर राज्य में युद्ध तथा मिश्र देश में अन्न का विग्रह हो। मारवाड़ तथा सिंधु देश में सामान्य दुर्भिक्ष हो, समुद्र में जहाजों की दुर्घटना हो। पांचाल सौराष्ट्र देश में कष्ट हो, मालव देश में हानि हो तथा दक्षिण में सुख हो- "शुक्रास्ते राक्षस गणे हिंदुदेशेषु विग्रहः। खर्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः। मरुस्थले सिंधुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत। यानपात्र विनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रहः।।" द्वादशी को मंगल के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश से सोना चांदी के भावों में वृद्धि होगी। एरण्ड, अलसी, तिल, तेल, रुई, कपास, सूत और सुपारी, के भावों में भी वृद्धि होगी।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	१०	८	२	८	१	२	८
१४	८	२१	२८	१७	१०	१५	२	२
२७	३८	३२	३५	३	४५	३४	३५	३५
५४	१४	१०	०२	२४	४८	२५	१०	१०
६१	८५०	४३	९३	८	७५	३	३	३
०७	३२	५५	५३	०७	३०	५६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
१ पू.षा.	१ आर्द्रा	१ पूभा	१ उ.षा.	४ आर्द्रा	४ मूल	३ रोहिणी	३ मृग.	१ मूल

आकाश लक्षण- मंगल के जलानाड़ी में होने से तथा बुध के नीरा नाड़ी में होने से शीत लहर के साथ बूंदा बांदी व बादल चाल होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात या ओलावृष्टि के साथ शीत का प्रकोप बढ़ेगा। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में कहीं कहीं वर्षा व तेज बादल चाल के साथ बूंदाबांदी होगी।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३ पौष कृष्ण पक्ष: २०

ता. ३१ दिसम्बर सन् २००१ ई. से १३ जनवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ पौष तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

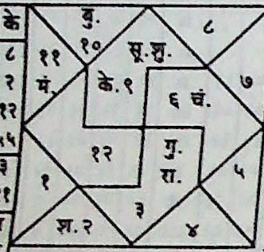
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. पौष	मु. शव्वाल	अं. दिसं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
१०	१	चं	१६	२८	१३	५३	पुन	३९	१६	२३	००	ऐं	१८	३१	कौ	१३	५३	२५	३०	७	१८	१७	३१	१७	१५	३१	क.१७।२९	पू.षाढ़ा में शुक्र ३०/३०,
११	२	मं	१०	०१	११	११	पु	३४	२५	२१	०४	वै	१५	१०	ग	११	११	२५	३१	७	१८	१७	३१	१८	१६	ज.१	कर्क	भद्रा २१/५७ से, जनवरी मा. १ ता. ३१ सन् २००२ ईस्वी आरम्भ, A
१२	३	बु	३	०८	८	३४	श्ले	२९	१४	१९	००	वि	११	४१	वि	८	३४	२५	३२	७	१८	१७	३२	१९	१७	२	सिं १९।००	भद्रा ८/३४ तक, श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २०/४९,
०	४	बु	५६	१२	२१	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय
१३	५	गु	४९	२८	२७	०६	म	२४	०८	१६	५८	प्री	८ २८	११ ४७	कौ	१६	२५	२५	३३	७	१९	१७	३२	२०	१८	३	सिंह	A वक्री आर्द्रा ३ में गुरु २६/३६,
१४	६	शु	४३	१४	२४	३६	पूफा	१९	२४	१५	०५	सौ	२५	३२	ग	१३	४९	२५	३५	७	१९	१७	३३	२१	१९	४	क. २०।३८	भद्रा २४/३६ से,
१५	७	श	३७	४२	२२	२४	उफा	१५	१७	१३	२६	शो	२२	३१	वि	११	२८	२५	३६	७	१९	१७	३४	२२	२०	५	कन्या	भद्रा ११/२८ तक,
१६	८	र	३३	०१	२०	३२	ह	११	५७	१२	०६	अ	१९	४६	बा	९	२५	२५	३८	७	१९	१७	३५	२३	२१	६	तु. २३।३४	कालाष्टमी, श्रवण में बुध १९/२४,
१७	९	चं	२९	१९	१९	०३	चि	९	३३	११	०८	सु	१७	२०	तै	७	४४	२५	३९	७	१९	१७	३५	२४	२२	७	तुला	भद्रा ३०/२८ से
१८	१०	मं	२६	३१	१७	५९	स्वा	८	०८	१०	३५	धृ	१५	१४	वि	१७	५९	२५	४१	७	१९	१७	३६	२५	२३	८	वृ. २८।२५	भद्रा १७/५९ तक, श्री पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन),
१९	११	बु	२५	०३	१७	२०	वि	७	४५	१०	२५	शू	१३	२७	बा	१७	२०	२५	४३	७	१९	१७	३७	२६	२४	९	वृश्चिक	सफला ११ व्रत सबका, B व्य. महापात १८/०० से २७/५७ तक,
२०	१२	गु	२४	२१	१७	०७	अनु	८	२४	१०	४१	ग	१२	००	तै	१७	०७	२५	४४	७	१९	१७	३८	२७	२५	१०	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, उ.षाढ़ा में सूर्य २८/५१, मीन में मंगल १९/१३, B
२१	१३	शु	२४	५९	१७	१९	ज्ये	१०	०३	११	२१	वृ	१०	५२	व	१७	१९	२५	४६	७	१९	१७	३९	२८	२६	११	ध. ११।२१	भद्रा १७/१९ से २९/३५ तक, मास शिवरात्रि, उ.षाढ़ा में शुक्र २०/५०,
२२	१४	श	२६	३२	१७	५६	मू	१२	४४	१२	२५	ध्रु	१०	०४	श	१७	५६	२५	४८	७	१९	१७	३९	२९	२७	१२	धनु	
२३	३०	र	२९	०८	१८	५९	पूषा	१६	२५	१३	५३	व्या	९	३५	ना	१८	५९	२५	५१	७	१९	१७	४०	३०	२८	१३	म. २०।१९	अमावस्या पुण्य, लोहड़ी महोत्सव (पंजाब)

पौष कृ. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५६३

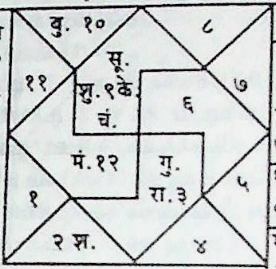
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	५	१०	९	२	८	१	२	८
२१	११	२६	९	१६	१९	१५	२	२
३५	२७	३९	१०	६	३४	०८	१२	१२
५१	४५	२७	५२	३७	१६	२७	५५	५५
६१	[illegible]	४३	८४	८	७५	३	३	३
०१	०४	५३	११	०३	२९	२४	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



मंगल के मीन राशि में प्रवेश से तृण, काष्ठ, पशु यह मंहगे होंगे- "मीन राशि कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदम्। महर्घं जायते सर्व गृह्यते तत्र पण्डितैः" बुध के श्रवण नक्षत्र में प्रवेश से गुड़, अलसी, धान्य, चणे की शीत से हानि हो- "श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु हिमाद्भवेत्" इस पक्ष में चर्तुग्रही योग बनने से कहीं जलप्लावन या रक्तपात से जनधन हानि होगी- "एकराशौ यदा यांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा" चर्तुग्रही योग का शनि के साथ षडष्टक योग अशुभ फलों में वृद्धि करेगा किंतु इसी मास में पाँच सोमवार होने से शुभ फलों की वृद्धि होगी, लोग धन धान्य से सुखी होंगे अतः यह मास मिश्रित फल वाला है- "सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धन धान्य स्मृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा" शुक्र पक्षारम्भ में ही पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है फलस्वरूप मोठ, उड़द, मघ के भावों में तेजी का रुख होगा। गुड़, चीनी और शक्कर के भावों में गिरावट दर्ज होगी। पक्ष के मध्य में बुध के श्रवण नक्षत्र में प्रवेश से गुड़, अलसी तथा चने के भावों में वृद्धि होगी। त्रयोदशी को शुक्र के उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश से अलसी और एरण्डी के भावों में गिरावट दर्ज होगी तथा रुई में अत्यधिक घटा बढ़ी होगी।

पौष कृ. ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५७०



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	११	९	२	८	१	२	८
२८	२२	१	१७	१५	२८	१४	१	१
४३	१७	४६	४१	११	२२	४६	५०	५०
५५	२१	२४	०९	१७	४०	३३	३९	३९
६१	[illegible]	४३	५१	७	७५	२	३	३
०८	१८	४९	२८	३१	२९	४५	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
उषा. १	पू.षा. ३	पूभा. ४	श्रवण ३	आर्द्रा ३	उषा. १	रोहि. २	मृगं. ३	मूल १

आकाश लक्षण- सूर्य मंगल के नीरा नाड़ी में स्थित होने से तथा बुध के अमृता नाड़ी में आने से उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, बंगाल में कहीं वर्षा, कहीं बूंदा-बांदी होगी। शीत लहर का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात व शीतलहर का प्रकोप होगा।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
पौष शुक्ल पक्षः २१

ता. १४ से २८ जनवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ पौष से ८ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

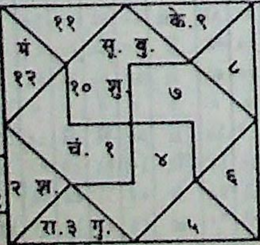
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. शव्वाल	अं. जनवरी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
२४	१	चं	३२	४६	२०	२६	उषा	२१	०६	१५	४६	ह	९	२५	किं	७	३१	२५	५३	७	१९	१७	४१	मा.१	२९	१४	मकर
२५	२	मं	३७	२३	२२	१७	श्र	२६	४४	१८	०१	व	९	३३	बा	९	१८	२५	५५	७	१९	१७	४२	२	३०	१५	मकर
२६	३	बु	४२	५२	२४	२८	ध	३३	१२	२०	३६	सि	९	५८	तै	११	२०	२५	५७	७	१९	१७	४३	३	जि.१	१६	कु.७/१६
२७	४	गु	४१	०१	२६	५५	श	४०	२०	२३	२७	व्य	१०	३७	व	१३	४०	२६	००	७	१९	१७	४३	४	२	१७	कुम्भ
२८	५	शु	५५	२८	२९	३०	पूभा	४७	४९	२६	२६	व	११	२६	ब	१६	१२	२६	०२	७	१९	१७	४४	५	३	१८	मी.१९/४१
२९	६	श	६०	००	-	-	उभा	५५	१४	२९	२४	प	१२	१८	कौ	१८	४७	२६	०५	७	१९	१७	४५	६	४	१९	मीन
३०	६	र	१	४९	८	०२	रे	६०	००	-	-	शि	१३	०५	तै	८	०२	२६	०८	७	१८	१७	४६	७	५	२०	मीन
मा.१	७	चं	७	३०	१०	१८	रे	२	०६	८	०९	सि	१३	४०	व	१०	१८	२६	१०	७	१८	१७	४७	८	६	२१	मे.८/०९
२	८	मं	१२	०२	१२	०६	अ	७	५४	१०	२८	सा	१३	५२	ब	१२	०६	२६	१३	७	१८	१७	४८	९	७	२२	मेष
३	९	बु	१४	५७	१३	१६	भ	१२	१२	१२	१०	शु	१३	३५	कौ	१३	१६	२६	१६	७	१७	१७	४९	१०	८	२३	वृ.१८/२९
४	१०	गु	१५	५७	१३	४०	कृ	१४	४०	१३	०९	शु	१२	४३	ग	१३	४०	२६	१९	७	१७	१७	४९	११	९	२४	वृष
५	११	शु	१४	५३	१३	१४	रो	१५	०८	१३	२०	ब्र	११	१३	वि	१३	१४	२६	२२	७	१७	१७	५०	१२	१०	२५	मि.२५/०८
६	१२	श	११	४८	१२	००	मृ	१३	३९	१२	४४	ऐं	९/३०	०४/२०	बा	१२	००	२६	२५	७	१६	१७	५१	१३	११	२६	मिथुन
७	१३	र	६	५२	१०	०१	आ	१०	२०	११	२४	वि	२७	०५	तै	१०	०१	२६	२८	७	१६	१७	५२	१४	१२	२७	क.२८/००
८	१४	चं	०	२३	७	२५	पुन	५/५१	३२/३६	९/३१	१८/०५	प्री	२३	२५	व	७	२५	२६	३१	७	१६	१७	५३	१५	१३	२८	कर्क
०	१५	चं	५२	४२	२८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००

मकर में सूर्य ११/२१, उत्तरायण संक्राति पुण्य सूर्यास्त तक, C
उ. भाद्रपद में मंगल ८/४६, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. शृंगो.
पंचक आरम्भ ७/१६, जिल्काद मु. ११,
भद्रा १३/४० से २६/५५ तक, विनायक ४,
बुध वक्री २२/५६. C मकर में शुक्र १२/२६, पोंगल (द.भा.)
A पंचक समाप्त ८/०९, बुध पश्चिम में अस्त १२/३८, राष्ट्रीय माघ प्रा.,
सायन कुम्भ में सूर्य ११/३३
भद्रा १०/१८ से २३/१६ तक, श्री गुरुगोविन्दसिंह जन्मदिन, A
दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी नवरात्रारम्भ, श्रवण में शुक्र ११/१९,
नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, श्रवण में सूर्य ३१/०६,
भद्रा २५/३३ से, वै. महापात ११/२४ से १८/२१ तक,
भद्रा १३/१४ तक, पुत्रदा ११ व्रत सबका, वैकुण्ठ ११ (द.भा.)
शनि प्रदोष व्रत, गणतन्त्र दिवस,
B लाला लाजपतराय जं.
भद्रा ७/२५ से १७/५६ तक, सत्य व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ, शाकम्भरी ज., B
पूर्णिमा तिथि क्षय

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

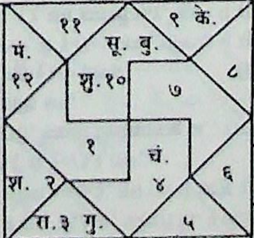
पौष शु ८ भौमे प्रातः स्टे. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३५७९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	११	९	२	९	१	२	८
७	१०	८	१९	१४	९	१४	१	१
५३	४७	२०	३९	५	४९	२५	२२	२२
५०	२७	११	१८	३९	४९	२०	०२	०२
६१	[illegible]	४३	४९	६	७५	१	३	३
०२	२२	३९	३३	४५	२४	५०	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
उषा. ४	अश्वि.४	उ.भा. २	श्रवण १	आर्द्रा ३	उ.षा. ४	रोहि. २	मृग ३	मूल १



शुक्र के मकर राशि में प्रवेश से कृषि की हानि होगी और सब धान्य महंगे हों "मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत्। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा" मंगल के उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश से दुर्भिक्ष हो वर्षा तथा अन्न की उत्पत्ति न हो "दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोत्रयनेपि किंचित्"। सोमवार को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा अतः पूर्व तथा उत्तर के देशों में कष्ट तथा बालकों को पीड़ा, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख हो "ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देश भंङ्ग विजानीयात् शिशूनां च विनाशहिं" सूर्य, बुध, शुक्र के एक राशि में होने से सब धान्यों में तेजी होगी तथा मेघ वर्षा कम करेंगे "एक राशौ गता होते सौम्य शुक्रदिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः" मंगल के द्वितीया को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में आने से चन्दन, कपूर और धान्यों के भावों में आगे तेजी दर्ज होगी यह तेजी एक मास में होती है। अष्टमी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में प्रवेश करेगा।

पौष शु. १४ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण ३५८५



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	३	११	९	२	९	१	२	८
१३	०	१२	१३	१३	१७	१४	१	१
५१	५४	४१	३०	२७	१३	१५	२	२
४७	६	४७	५०	०६	५६	५५	५७	५७
६०	८८६	४३	७५	५	७५	१	३	३
५६	१४	३०	३७	५६	२०	१२	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
श्रवण २	पुन. ४	उ.भा. २	श्रवण २	आर्द्रा ३	श्रवण ३	रोहि. २	मृग. ३	मूल १

अतः सोना, चांदी, गुड़, शक्कर और धान्यों के भावों में गिरावट आयेगी। रुई, तिल तथा तेल के भावों में तेजी आयेगी।

आकाश लक्षण- बुध शुक्र के अमृता नाड़ी में स्थित होने से उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल में कहीं कहीं वर्षा, कहीं बादल चाल के साथ बूंदाबांदी होगी तथा शीत लहर के साथ मेघ गर्जना करें। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होगा। मैदानी भागों में शीत लहर का जोर बढ़ेगा।

श्री संवत् २०५८ शक: १९२३
माघ कृष्ण पक्ष: २२

ता. २९ जनवरी से १२ फरवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

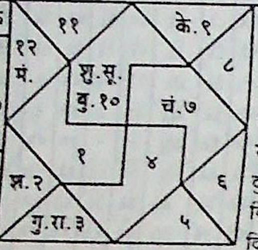
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
९	१	मं	४४	१८	२४	५८	श्ले	५२	५५	२८	२५	आ	११	२१	बा	१४	४१	२६	३५	७	१५	१७	५४	१६	१४	२९	सि. २८/२५	वक्री आर्द्रा २ में गुरु १०/१७,
१०	२	बु	३५	३०	२१	२७	म	४५	५७	२५	३७	सौ	१५	२३	तै	११	१३	२६	३८	७	१५	१७	५४	१७	१५	३०	सिंह	श्रीमहात्मा गांधी निधन दिवस, वक्री उ.षाढ़ा में बुध २६/१९,
११	३	गु	२६	५६	१८	०१	पूफा	३१	२१	२२	५८	शो	११	१८	व	७	४०	२६	४१	७	१४	१७	५५	१८	१६	३१	क. २८/२१	भद्रा ७/४० से १८/०१ तक, श्री गणेश ४ व्रत, संकट हारिणी चतुर्थी, A
१२	४	शु	१८	५२	१४	४६	उफा	३३	११	२०	३३	अ	७/२७	२१/३१	बा	१४	४६	२६	४५	७	१४	१७	५६	१९	१७	फ १	कन्या	धनिष्ठा में शुक्र २६/०८, फरवरी मा. २ ता. २८, A चन्द्रोदय २०/४८,
१३	५	श	११	४३	११	५४	ह	२८	१७	१८	३२	धृ	२४	१९	तै	११	५४	२६	४८	७	१३	१७	५७	२०	१८	२	तु. २९/४२	रेवती में मंगल १७/०३, बुध पूर्व में उदय २६/४७,
१४	६	र	५	४७	९	३१	चि	२४	३२	१७	०१	शू	२१	२६	व	९	३१	२६	५२	७	१२	१७	५८	२१	१९	३	तुला	भद्रा ९/३१ से २०/३२ तक,
१५	७	चं.	१	१८	७	४३	स्वा	२२	१७	१६	०७	ग	१९	०२	व	७	४३	२६	५५	७	१२	१७	५९	२२	२०	४	तुला	कालाष्टमी, स्वामी विवेकानन्द ज., रामानन्दाचार्य ज., व्य.महा. ३०/२९ से,
०	८	चं.	५८	२५	३०	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि क्षय
१६	९	मं	५७	०७	३०	०१	वि	२१	३६	१५	४९	वृ	१७	०८	तै	१८	१२	२६	५९	७	११	१७	५९	२३	२१	५	वृ. ९/५०	व्य. महापात १२/०३ तक, B शुक्र पश्चिम में उदित ११/२२,
१७	१०	बु	५७	२०	३०	०५	अ	२२	२७	१६	०९	ध्रु	१५	४४	व	१७	५९	२७	०३	७	११	१८	०	२४	२२	६	वृश्चिक	भद्रा १७/५९ से ३०/०५ तक, धनिष्ठा में सूर्य १०/२१,
१८	११	गु	५८	५३	३०	४३	ज्ये	२४	४३	१७	०३	व्या	१४	४७	ब	१८	२०	२७	०६	७	१०	१८	१	२५	२३	७	ध. १७/०३	षट्तिला ११ व्रत स्मार्त्तो का, कुम्भ में शुक्र ९/४०,
१९	१२	शु	६०	००	-	-	मू	२८	१३	१८	२६	ह	१४	१४	कौ	१९	१२	२७	१०	७	९	१८	२	२६	२४	८	धनु	षट्तिला ११ व्रत वैष्णवों का, बुध मार्गी १६/५१, शनि मार्गी ८/५५, B
२०	१२	श	१	४०	७	४८	पूषा	३२	४५	२०	१५	व	१४	०२	तै	७	४८	२७	१४	७	८	१८	३	२७	२५	९	म. २६/४५	शनि प्रदोष व्रत, C अमावस्या पुण्य, शतभिषा में शुक्र १७/१९,
२१	१३	र	५	२५	९	१८	उषा	३८	०१	२२	२३	सि	१४	०६	व	९	१८	२७	१७	७	८	१८	३	२८	२६	१०	मकर	भद्रा ९/१८ से २२/१० तक, मास शिवरात्रि, मेरु त्रयोदशी (जैन)
२२	१४	चं	९	५८	११	०६	श्र	४४	१६	२४	४९	व्य	१४	२५	श	११	०६	२७	२१	७	७	१८	४	२९	२७	११	मकर	शुक्र का बाल्यत्व समाप्त ११/२२,
२३	३०	मं	१५	१२	१३	११	ध	५०	५७	२७	२१	व	१४	५५	ना	१३	११	२७	२५	७	६	१८	५	फा१	२८	१२	कु. १४/०८	सं. कुम्भ में सूर्य २४/२२ पुण्य १२/३५ से, पंचक आरम्भ १४/०८, मौनी अमावस्या C

माघ कृ. ९ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३५९३

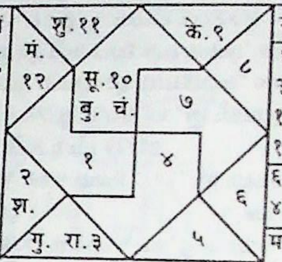
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

माघ कृ. ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ३६००

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	११	९	२	९	१	२	८
२२	२७	१८	५	१२	२७	१४	०	०
६	३३	२९	३९	४३	१६	९	३७	३७
५१	४४	०८	३६	५९	२१	३१	३१	३१
६०	७११	४३	२५	४	७५	०	३	३
४९	४९	१८	५०	३९	१६	१८	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा अ	व उ	व अ	व अ
श्रवण ४	विशा. ३	रेवती १	उ.फा. ३	आर्द्रा ३	धनि. ३	रोहिणी २	मृग. ३	मृग. १



मंगल के रेवती नक्षत्र में प्रवेश से सुख और सुभिक्ष हो, मनुष्यों को रोग हों एवं धान्य की अधिकता होगी- **"सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगा बहुधान्य लक्ष्मा"** शुक्र के कुम्भ राशि में होने से वर्षा की अधिकता तथा सुभिक्ष हो- **"कुंभराशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः"** शुक्र के उदय वशात् गुर्जर देश में भय दुर्भिक्ष और धन की हानि हो। रेशमी सूत तथा नारियल का अभाव हो एवं किसी श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु हो। देशों में उत्पात हो, सिंधु देश में विग्रह, तीन दिन वाणिज्य व्यवसाय बंद रहे तथा मालव देश में विग्रह हो- **"नक्षत्रे राक्षस गणे शुक्रस्याभ्युदये सति। गुर्जरि मुद्गलभयं दुर्भिक्षं द्रव्यहीनता। पंचवर्ण पट्टसूत्रं मूल्येनापि च दुर्लभम्। श्रीफलं दुर्लभं मृत्युः श्रेष्ठः पुंसश्च कस्यचित्। उत्पातादिषु देवेषु सिंधु देशेतिविग्रहः। दिनत्रयम वाणिज्यं विग्रहो मालवादिके"** इस पक्ष में बुध शुक्र, सूर्य के राशिस्थ होने से सब धान्यों में तेजी होगी तथा मेघ वर्षा कम करेंगे। अमावस्या को मंगलवार होने से अशुभकारी है। शुक्र के चतुर्थी को धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश से गेहूँ के भावों में गिरावट होगी। चांदी, चावल, मोठ, उड़द के भावों में तेजी होगी। पक्षान्त में शुक्र के शतभिषा में प्रवेश से गेहूँ, चावल, गुड़, खांड और घी में तेजी का रुख होगा।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	९	११	९	२	१०	१	२	८
२९	२५	२३	५	१२	६	१४	०	०
१२	४०	३१	२१	१५	२	९	१५	१५
१५	२४	४२	३८	१२	५७	५०	१५	१५
६०	७११	४३	२४	३	७५	०	३	३
४१	२७	०७	२६	२३	०१	३०	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
धनि. २	धनि. १	रेवती ३	उ.षा. ३	आर्द्रा २	धनि. ४	रोहि. २	मृग. ३	मृग. १

आकाश लक्षण- उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तरांचल प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश में शीतलहर के साथ वर्षा होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में बादल चाल के साथ मेघगर्जना करेंगे एवं हिमपात होगा। दक्षिण भारत में कहीं तेज वायु के साथ खण्ड वृष्टि होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
माघ शुक्ल पक्षः २३

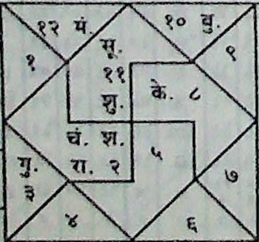
ता. १३ से २७ फरवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ माघ से ८ फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ग. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. फाल्गुन	मु. जिल्काद	अं. फरवरी	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
२४	१	बु	२०	५९	१५	२९	श	५८	०५	३०	१९	प	१५	३६	व	१५	२९	२७	२९	७	५	१८	६	२	२९	१३	कुम्भ	चन्द्रदर्शन मु. १५, उ. शृंगो. C रा. फाल्गुन प्रा., दुर्गाष्टमी
२५	२	गु	२७	१०	१७	५७	पूभा	६०	००	-	-	शि	१६	२३	कौ	१७	५७	२७	३३	७	५	१८	६	३	जि१	१४	मी. २६/३२	जिल्हेज मु. १२ A राहु, ज्येष्ठा ४ वृश्चिक में केतु २४/४२,
२६	३	शु	३३	३५	२०	३०	पूभा	५	३४	९	१७	सि	१७	१५	तै	७	१३	२७	३७	७	४	१८	७	४	२	१५	मीन	(विवाह मु. उ.भाद्रपद में), B श्रवण में बुध ९/१८,
२७	४	श	३९	५९	२३	०२	उभा	१३	०६	१२	१७	सा	१८	०७	व	९	४७	२७	४१	७	३	१८	८	५	३	१६	मीन	भद्रा ९/४७ से २३/०२ तक, विनायक ४, तिल ४, वक्री मृगशिर २ वृष में A
२८	५	र	४५	५८	२५	२५	रे	२०	२४	१५	१२	शु	१८	५४	ब	१२	१६	२७	४५	७	२	१८	९	६	४	१७	मे. १५/१२	पंचक समाप्त १५/१२, श्री बसन्त पंचमी, श्री पंचमी, श्री सरस्वती ज.,
२९	६	चं	५१	०७	२७	२८	अ	२७	०५	१७	५१	शु	११	२८	कौ	१४	३०	२७	४९	७	१	१८	९	७	५	१८	मेष	वै. महा. २१/०८ से २६/१६ तक, सायन मीन में सूर्य २५/४४, बसन्त ऋतु आरम्भ
३०	७	मं	५५	००	२९	००	भ	३२	४३	२०	०५	ब्र	१९	४१	ग	१६	१९	२७	५३	७	०	१८	१०	८	६	१९	वृ. २६/३४	भद्रा २९/०० से, रथ सप्तमी, अचला सप्तमी, शतभिषा में सूर्य १४/४७, B
फर.१	८	बु	५७	११	२९	५२	कृ	३६	५१	२१	४४	ऐं	११	२७	वि	१७	३२	२७	५७	६	५९	१८	११	९	७	२०	वृष	भद्रा १७/३२ तक, भीष्माष्टमी, अश्विनी मेष में मंगल ३०/१५, C
२	९	गु	५७	१५	२९	५६	रो	३९	१०	२२	३९	वै	१८	३८	बा	१८	००	२८	०१	६	५८	१८	११	१०	८	२१	वृष	(विवाह मु. रोहिणी-मृगशिर में) E रथयात्रा जैन पर्व, मेला जयन्ती देवी, (पं.)
३	१०	शु	५५	२९	२९	०९	मृ	३९	२८	२२	४५	वि	१७	१०	तै	१७	३९	२८	०५	६	५७	१८	१२	११	९	२२	मि. १०/४८	(विवाह मु. मृगशिर में), D पू. भा. में शुक्र ९/०३, इदुलजुहा मु.
४	११	श	५१	२८	२७	३२	आ	३७	४०	२२	०१	प्री	१५	०३	व	१६	२६	२८	०९	६	५७	१८	१३	१२	१०	२३	मिथुन	भद्रा १६/२६ से २७/३२ तक, जया ११ व्रत स्मार्त्त वैष्णवों का, D
५	१२	र	४५	३२	२५	०८	पुन	३३	५६	२०	३०	आ	१२	१६	ब	१४	२५	२८	१४	६	५६	१८	१४	१३	११	२४	क. १४/५७	जया ११ व्रत निम्बार्क, रामानुज वल्लभों का,
६	१३	चं	३७	५९	२२	०६	पु	२८	३२	१८	१९	सौ	८/२१	५५/०४	कौ	११	४२	२८	१८	६	५५	१८	१४	१४	१२	२५	कर्क	सोम प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राज.) ३ दिन का
७	१४	मं	२९	१५	१८	३५	श्ले	२१	५१	१५	३८	अ	२४	५३	ग	८	२४	२८	२२	६	५४	१८	१५	१५	१३	२६	सिं १५/३८	भद्रा १८/३५ से २८/४३ तक, श्री रामचरण महाप्रभु ज. (रामस्नेही), E
८	१५	बु	१९	४२	१४	४६	म	१४	१८	१२	३६	सु	२०	२८	ब	१४	४६	२८	२६	६	५३	१८	१६	१६	१४	२७	सिंह	सत्य व्रत, श्रीरविदास जयन्ती, श्रीललिता जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त

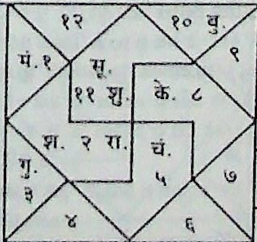
माघ शु. ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६०८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१	११	९	२	१०	१	१	७
७	१	२९	१०	११	१६	१४	२९	२९
१७	३०	१५	४५	५३	३	१७	४९	४९
०२	४०	४६	४२	३८	५१	०२	४९	४९
६०	७५	४२	५७	१	७५	१	३	३
२८	३४	५२	०७	४१	०२	२४	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
धनि.	कृत्ति.	रेवती	श्रवण	आर्द्रा	शत.	रोहि.	मृग.	ज्ये.



मंगल के मेष राशि में प्रवेश से सब धान्य सस्ते हों तथा मूंगा तेज हो और राजाओं में क्रोध उत्पन्न हो- "भूमिपुत्रो यदामेषे सुभिक्षं सर्व-धान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेन्नृपः" चतुर्थी को राहु वृष राशि में प्रवेश कर रहा है अतः मनुष्यों को दुःख होगा तथा धान्य की उपलब्धता घटेगी- "वृषे राहुर्यदा याति दुःखं सर्वजनेषु च। दुर्लभानि च धान्यानि नान्यथा ऋषिभाषितम्" बुध के श्रवण नक्षत्र में प्रवेश से गुड़, अलसी, धान्य और चने को हिम शीत से हानि हो। प्रतिपदा के दिन बुधवार होने से अन्न महंगा होगा और आगे वर्ष में भय होगा- "दैवयोगेन बुधवारो यदा भवेत्। अन्नं महर्घतां याति वर्षे त्वागामिके भयम्" द्वितीया को गुरुवार होने से तृण की उपज अच्छी हो तथा शासक व प्रजा सुखी रहे- "यदि स्याद् गुरु संयुक्ता तदा सस्याकुला धरा। राजानस्तत्र सुखिनः प्रजा नन्दन्ति नित्यशः" मंगल के राशि परिवर्तन से शनि मंगल का द्विर्द्वादश योग बना गया है फलस्वरूप विश्व में अशान्ति का वातावरण बनेगा। आतंकवादी गतिविधियों तथा दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। शुक्र एकादशी को पूर्वाभाद्रपद में प्रवेश करेगा फलस्वरूप रुई में तेजी का रुख दर्ज होगा। सप्तमी को बुधवार के श्रवण में जाने से गुड़, अलसी तथा चने में तेजी होगी। मंगल के अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश से ज्वार, बाजरा और चना तेजी का रुख लेगा। चांदी के भावों में गिरावट होगी।

माघ शु १५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६१५



सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	०	९	२	१०	१	१	७
१४	८	४	१८	११	२४	१४	२९	२९
११	४७	१५	१७	४५	४८	२१	२७	२७
३९	२७	०३	५५	०७	३५	०९	३४	३४
६०	१११	४२	७३	०	७४	२	३	३
१५	५९	३६	१०	२६	५३	१०	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
शत.	मघा	अश्वि	श्रवण	आर्द्रा	पूभा.	रोहि.	मृग.	ज्ये.

आकाश लक्षण- सूर्य मंगल बुध के जला, वायु, अमृता नाड़ी में स्थित होने से मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल प्रदेश में बादल चाल के साथ बूंदा बांदी, कहीं वर्षा या शीत लहर के साथ मौसम अचानक शीतयुक्त होगा एवं कहीं ओलावृष्टि से हानि होगी। दक्षिण भारत में गर्मी में वृद्धि होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
फाल्गुन कृष्ण पक्षः २४

ता. २८ फरवरी से १४ मार्च सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु।

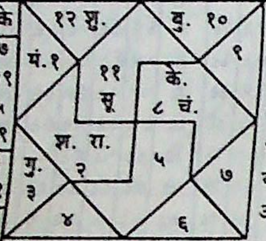
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. फाल्गुन	मु. जिल्हिज	अं. फरवरी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
९	१	गु	९	५९	१०	५१	पूफा	६ / ५८	१० / ५४	९ / ३०	२८ / २४	धृ	१६	०४	कौ	१०	५१	२८	३०	६	५२	१८	१७	१७	१५	२८	क. १४/४१
१०	२	शु	०	२७	७	०१	ह	५१	५३	२७	३६	शू	११	४६	ग	७	०१	२८	३४	६	५१	१८	१७	१८	१६	मा १	कन्या
०	३	शु	५१	३४	२७	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
११	४	श	४३	५२	२४	२२	चि	४६	०५	२५	१५	ग	७ / २८	४४ / ०५	ब	१३	५१	२८	३९	६	४९	१८	१८	१९	१७	२	तु. १४/२२
१२	५	र	३७	४१	२१	५३	स्वा	४१	४८	२३	३२	धु	२४	५८	कौ	११	०३	२८	४३	६	४८	१८	१८	२०	१८	३	तुला
१३	६	चं	३३	१७	२०	०६	वि	३९	११	२२	३१	व्या	२२	२६	ग	८	५४	२८	४७	६	४७	१८	१९	२१	१९	४	वृ. १६/४२
१४	७	मं	३०	५१	१९	०७	अनु	३८	४६	२२	१७	ह	२०	३१	वि	७	३०	२८	५१	६	४६	१८	१९	२२	२०	५	वृश्चिक
१५	८	बु	३०	२३	१८	५४	ज्ये	४०	०७	२२	४८	व	१९	१३	बा	६	५५	२८	५६	६	४५	१८	२०	२३	२१	६	ध. २२/४८
१६	९	गु	३१	४५	१९	२६	मू	४३	१४	२४	०२	सि	१८	३०	तै	७	०५	२९	००	६	४४	१८	२१	२४	२२	७	धनु
१७	१०	शु	३४	४३	२०	३६	पूषा	४७	५०	२५	५१	व्य	१८	१७	व	७	५७	२९	०४	६	४३	१८	२१	२५	२३	८	धनु
१८	११	श	३८	५८	२२	१७	उषा	५३	३५	२८	०८	व	१८	२७	ब	९	२३	२९	०९	६	४२	१८	२२	२६	२४	९	म. ८/२३
१९	१२	र	४४	०८	२४	२०	श्र	६०	००	-	-	प	१८	५५	कौ	११	१६	२९	१३	६	४१	१८	२३	२७	२५	१०	मकर
२०	१३	चं	४९	५४	२६	३७	श्र	०	१२	६	४४	शि	१९	३५	ग	१३	२७	२९	१७	६	४०	१८	२३	२८	२६	११	कु. २०/०७
२१	१४	मं	५६	०१	२९	०३	ध	७	१६	९	३३	सि	२०	२३	वि	१५	४९	२९	२२	६	३९	१८	२४	२९	२७	१२	कुम्भ
२२	३०	बु	६०	००	-	-	श	१४	३७	१२	२८	सा	२१	१४	च	१८	१८	२९	२६	६	३७	१८	२४	३०	२८	१३	कुम्भ
२३	३०	गु	२	२०	७	३३	पूभा	२२	०५	१५	२६	शु	२२	०७	ना	७	३३	२९	३०	६	३६	१८	२५	चै १	२९	१४	मी. ८/४२

(विवाह मु. उ. फाल्गुनी में),
भद्रा १७/१२ से २७/२८ तक, गुरु मार्गी १२/५३, मार्च मा. ३ ता. ३१,
A चन्द्रोदय २१/४८,
तृतीया तिथिक्षय
श्री गणेश ४ व्रत, धनिष्ठा में बुध २९/१३, व्य. महा. १९/४८ से २३/५८ तक, A
मीन में शुक्र ९/२१,
भद्रा २०/०६ से, पू. भाद्रपद में सूर्य २१/१२,
भद्रा ७/३० तक, उ. भाद्रपद में शुक्र २५/३३, (विवाह मु. अनुराधा में),
कालाष्टमी, सीताष्टमी, हलाष्टमी, (विवाह मु. मूल में),
श्री रामदास नवमी, कुम्भ में बुध २५/३३, (विवाह मु. मूल में),
भद्रा ७/५७ से २०/३६ तक, **स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती**
विजया ११ व्रत सबका,
भद्रा २६/३७ से, पंचक आरम्भ २०/०७, सोम प्रदोष व्रत, भरणी में मंगल २५/५७,
भद्रा १५/४९ तक, **श्री महाशिवरात्रि व्रत सबका**, शतभिषा में बुध १३/४३,
सं. मीन में सूर्य २१/१७, पुण्यकाल १४/५३ से, अमावस्या पुण्य, वै. महा. २९/३५ से,

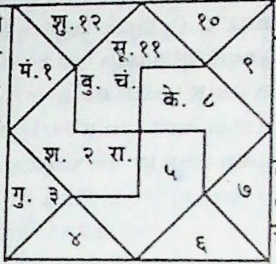
फाल्गुन कृ. ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६२२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	०	९	२	११	१	१	७
२१	२०	९	२७	११	३	१४	२९	२९
२०	३७	१२	२४	४६	३२	४६	५	५
५१	३७	३३	३५	१८	१६	३१	१९	१९
६०	[illegible]	४२	८४	०	७४	२	३	३
०४	१७	२२	०३	५८	४३	५३	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.भा. २	ज्येष्ठा २	अश्विनी ३	धनि. २	आर्द्रा २	पू.भा. २	रोहिणी २	मृग. २	ज्ये. ४



बुध के धनिष्ठा तथा शतभिषा नक्षत्र में संक्रमण से गायों को पीड़ा होगी तथा अन्त्यजों को रोग हो तथा दुर्भिक्ष हो **"वासवे तु गवां पीडा वारुणे शूद्ररोगता"** पंचमी को शुक्र मीन राशि में प्रवेश कर रहा है अतः सुभिक्ष कारक है पृथ्वी सुख से संयुक्त होगी **"मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षंप्रचुर भवेत्। मोदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः"** नवमी को बुध कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा अतः अन्नादि का सम भाव रहे तथा शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल हों- **"निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुखं तथैव च शुभाशुभम्"** मंगल के भरणी नक्षत्र में प्रवेश से ब्राह्मणों को पीड़ा हो और अशुभ हो- **"द्विजपीडा भरण्यादौ नाशः स्यादतिशीघ्रगे। सर्वदेशेग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता"** लोगों को पीड़ा हो तथा धान्य मंहगे हों। अमावस्या के दिन ही संक्राति होने से अशुभकारी खर्प्पर योग बन गया है अतः प्राणियों को कष्ट तथा धान्य का नाश होगा। संक्राति गुरुवार को होने से पूर्व तथा दक्षिण के देशों में पीड़ा, पश्चिम के देशों में युद्ध भय और उत्तर के देशों में सुख हो। **"आग्नेय्यां दृष्टिमार्गस्तु वारुणादौ यथा क्रमम्। देशभंगं विजानीयात् सृष्टिसंहारकारकम"** शुक्र के सप्तमी को उत्तराभाद्रपद में प्रवेश से श्वेत वस्तुओं के भावों में गिरावट दर्ज होगी। चावल, चीनी, मोती, कपूर, और सारी श्वेत वस्तुओं में गिरावट दर्ज होगी।

फाल्गुन कृ ३० गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६३०



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	०	१०	२	११	१	१	७
२९	२८	१४	९	११	१३	१५	२८	२८
२०	२४	५०	१३	५९	२९	१२	३९	३९
३७	४०	३०	२४	२४	२६	२८	५३	५३
५९	७१२	४२	९४	२	७४	३	३	३
५०	०६	०५	१३	२९	३३	४१	११	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
पू.भा. ३	पू.भा. ३	भरणी १	शत. १	आर्द्रा २	उ.भा. ४	रोहिणी २	मृग. २	ज्ये. ४

आकाश लक्षण- कुछ स्थानों पर साधारण व कुछ स्थानों पर अच्छी वर्षा होगी। साथ ही ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं शीत लहर के साथ ओला वृष्टि या वर्षा होगी। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में बादल चाल के साथ कहीं बूंदाबांदी तथा कहीं-कहीं वर्षा होगी।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२३
फाल्गुन शुक्ल पक्षः २५

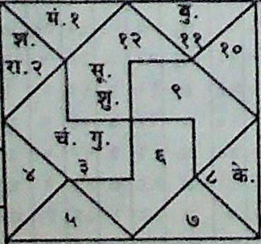
ता. १५ से २८ मार्च सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ फाल्गुन से ७ चैत्र तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

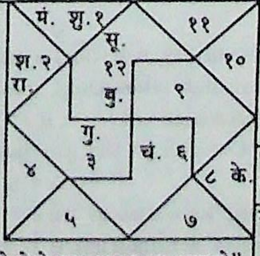
ग्र.मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
२४	१	शु	८	३६	१०	०२	उभा	२९	३०	१८	२३	शु	२२	५८	ब	१०	०२	२९	३५	६	३५	१८	२६	२	३०	१५	मीन	वै. महापात ११/०३ तक, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगो.
२५	२	श	१४	४२	१२	२७	रे	३६	४२	२१	१५	ब्र	२३	४४	कौ	१२	२७	२९	३९	६	३४	१८	२६	३	मु१	१६	मे. २१/१५	पंचक समाप्त २१/१५, श्रीरामकृष्ण परमहंस ज., रेवती में शुक्र १८/५१, A
२६	३	र	२०	२६	१४	४३	अ	४३	२८	२३	५६	ऐं	२४	२२	ग	१४	४३	२९	४३	६	३३	१८	२७	४	२	१७	मेष	भद्रा २७/४६ से, उ.भाद्रपद में सूर्य २९/३५, A मुहर्रम मु.१ हिजरी सन् १४२३ प्रा.
२७	४	चं	२५	३२	१६	४४	भ	४९	३३	२६	२१	वै	२४	४७	वि	१६	४४	२९	४७	६	३२	१८	२७	५	३	१८	मेष	भद्रा १६/४४ तक, विनायक ४,
२८	५	मं	२९	४१	१८	२३	कृ	५४	३६	२८	२१	वि	२४	५३	बा	१८	२३	२९	५२	६	३१	१८	२८	६	४	१९	वृ. ८/५४	E व्य. महा. १५/२० से १९/१३ तक, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त
२९	६	बु	३२	३३	१९	३१	रो	५८	११	२९	४९	प्री	२४	३४	कौ	७	०१	२९	५६	६	२९	१८	२८	७	५	२०	वृष	पू. भाद्रपद में बुध २०/२३, सायन मेष में सूर्य २४/४७, उत्तरगोल में सूर्य प्रवेश
३०	७	गु	३३	४९	२०	००	मृ	६०	००	-	-	आ	२३	४५	ग	७	५१	३०	००	६	२८	१८	२९	८	६	२१	मि. १८/१८	भद्रा २०/०० से, B राष्ट्रीय चैत्रारम्भ, राष्ट्रीय शक १९२४ आरम्भ,
चै१	८	शु	३३	१५	१९	४५	मृ	०	२४	६	३७	सौ	२२	२०	वि	७	५८	३०	०५	६	२७	१८	३०	९	७	२२	मिथुन	भद्रा ७/५८ तक, होलाष्टक प्रा. श्रीदुर्गाष्टमी, अष्टान्हिक जैन व्रतारम्भ, B
२	९	श	३०	४३	१८	४३	आ	० ५८	३६ ५२	६ २१	४० ५७	शो	२०	१८	बा	७	२०	३०	०९	६	२६	१८	३०	१०	८	२३	क. २४/१२	C महोत्सव प्रा., मेलाखाटूश्यामजी (राज.) दो दिन का, बुध पूर्व में अस्त ७/२५, मुहर्रम,
३	१०	र	२६	१४	१६	५४	पु	५५	११	२८	२९	अ	१७	४०	ग	१६	५४	३०	१३	६	२५	१८	३१	११	९	२४	कर्क	भद्रा २७/४३ से,
४	११	चं	१९	५८	१४	२३	श्ले	४९	५७	२६	२२	सु	१४	२६	वि	१४	२३	३०	१८	६	२४	१८	३१	१२	१०	२५	सिं २६/२२	भद्रा १४/२३ तक, आमला ११ व्रत सबका, रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुर का फूलडोल C
५	१२	मं	१२	१२	११	१५	म	४३	२५	२३	४४	धृ	१०	४४	बा	११	१५	३०	२२	६	२२	१८	३२	१३	११	२६	सिंह	भौम प्रदोष व्रत, मीन में बुध १३/०३,
६	१३	बु	३	१९	७	४१	पूफा	३६	०२	२०	४६	शू	६ २६	३९ २०	तै	७	४१	३०	२६	६	२१	१८	३२	१४	१२	२७	क. २५/५९	भद्रा २७/५० से, अश्विनी मेष में शुक्र १३/१३,
०	१४	बु	५३	४३	२७	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि क्षय D श्री चैतन्य महाप्रभु ज., होलाष्टक समाप्त, उ. भा. में बुध ८/३६, E
७	१५	गु	४३	५७	२३	५५	उफा	२८	१६	१७	३८	वृ	२१	५६	वि	१३	५३	३०	३१	६	२०	१८	३३	१५	१३	२८	कन्या	भद्रा १३/५३ तक, सत्य व्रत, दारुण रात्रि, हुताशनी, होलिका दहन १८/३३ के बाद, D

फाल्गुन शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६३८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) फाल्गुन शु. १५ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६४४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	०	१०	२	११	१	१	७
७	६	२०	२२	१२	२३	१५	२८	२८
१८	३	२६	२१	२४	२४	४४	१४	१४
१७	०	११	३०	३५	५६	३२	२७	२७
५९ ३२	७९६ ५७	४१ ४७	१०४ ०७	३ ५७	७४ १८	४ २४	३ ११	३ ११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	भरणी ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



बुध के पू. भाद्रपद में संक्रमण से सुख तथा आरोग्यता रहे एवं उत्तराभाद्रपद में प्रवेश से शासकों में क्लेश एवं पशु पक्षियों को आरोग्यदायक है। बुध के मीन राशि में प्रवेश से मृग तथा हाथियों की हानि होगी एवं शासक-प्रजा का आपस में विरोध होगा **"धने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति"** त्रयोदशी को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करेगा अतः सब धान्य महंगे होंगे एवं भैंसादि पशुओं को पीड़ा होगी और मेघ वर्षा भी करेंगे **"दैत्य गुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीडा च मेघ वर्षा भविष्यति"** इस मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिम देश में विग्रह तथा खड्गयुद्ध हो **" यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते"** शनि-मंगल का द्विर्द्वादश योग विश्व शान्ति में बाधक होने राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य में वृद्धि होगी एवं परस्पर विश्वास में कमी होगी। विश्व शान्ति के प्रयास विफल होंगे। आतंकवादी गतिविधियों एवं दुर्घटनाओं में भी वृद्धि होगी तथा आतंकवाद बढ़ेगा। द्वितीया को शुक्र रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा फलस्वरूप रुई, कपास, चन्दन और रत्नों के भावों में गिरावट दर्ज होगी। षष्ठी को बुध पूर्वाभाद्रपद में प्रवेश करेगा जिससे रुई के भावों में घट-बढ़ होगी।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	०	११	२	०	१	१	७
१३	२	२४	३	१२	०	१६	२७	२७
१४	१३	३६	५	५०	५०	१२	५३	५३
५८	५२	२०	३३	५७	१३	१५	२३	२३
५९ १९	१११ ४३	४१ ३३	१११ ५७	४ ५९	७४ ०६	४ ५५	३ ११	३ ११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	भरणी ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- उत्तरभारत में ऋतु परिवर्तन होगा। कहीं बादल चाल के साथ बूंदाबांदी होगी। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तरांचल, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा में दिन में गर्मी एवं रात्रि में शीत का प्रभाव पड़ेगा। दक्षिण भारत में गर्मी बढ़ेगी। मंगल के चण्डा नाड़ी में होने से कुछ भागों में तेज वायु का प्रवाह होने से आंधी आने की सम्भावना है।

श्री संवत् २०५८ शकः १९२४
चैत्र कृष्ण पक्षः २६

ता. २९ मार्च से १२ अप्रैल सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ चैत्र तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

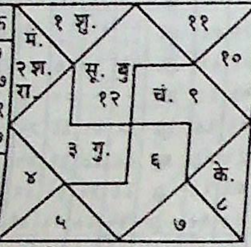
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	स्टै. टा. सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.
८	१	शु	३४	२८	२०	०६	ह	२०	३७	१४	३४	ध्रु	१७	३६	बा	९	५९	३०	३५	६	१९	१८	३३	१६	१४	२९	तु. २५/०७
९	२	श	२५	४४	१६	३५	चि	१३	३७	११	४४	व्या	१३	३१	तै	६	१८	३०	३९	६	१८	१८	३४	१७	१५	३०	तुला
१०	३	र	१८	१२	१३	३३	स्वा	७	४२	९	२९	ह	९	४९	वि	१३	३३	३०	४३	६	१७	१८	३५	१८	१६	३१	वृ. २५/५७
११	४	चं	१२	१२	११	०८	वि	३	१७	७	३४	व	६ २७	३६ ५९	बा	११	०८	३०	४७	६	१६	१८	३५	१९	१७	अ.१	वृश्चिक
१२	५	मं	८	०५	९	२९	अ	०	४२	६	३२	व्य	२६	०१	तै	९	२९	३०	५१	६	१५	१८	३५	२०	१८	२	वृश्चिक
१३	६	बु	६	०४	८	४०	ज्ये	०	१०	६	१८	व	२४	४४	व	८	४०	३०	५६	६	१४	१८	३६	२१	१९	३	ध. ६/१८
१४	७	गु	६	१२	८	४१	मू	१	४२	६	५३	प	२४	०४	ब	८	४१	३१	००	६	१२	१८	३७	२२	२०	४	धनु
१५	८	शु	८	१४	९	२९	पूषा	५	०८	८	१४	शि	२३	५८	कौ	९	२९	३१	०५	६	११	१८	३७	२३	२१	५	म. १४/४१
१६	९	श	११	५६	१०	५६	उषा	१०	१२	१०	१५	सि	२४	१८	ग	१०	५६	३१	०९	६	१०	१८	३८	२४	२२	६	मकर
१७	१०	र	१६	५६	१२	५५	श्र	१६	३०	१२	४५	सा	२४	५८	वि	१२	५५	३१	१३	६	९	१८	३८	२५	२३	७	कु. २६/०८
१८	११	चं	२२	४५	१५	१३	ध	२३	३७	१५	३४	शु	२५	४९	बा	१५	१३	३१	१७	६	८	१८	३९	२६	२४	८	कुम्भ
१९	१२	मं	२८	५९	१७	४२	श	३१	०६	१८	३३	शु	२६	४५	तै	१७	४२	३१	२२	६	६	१८	३९	२७	२५	९	कुम्भ
२०	१३	बु	३५	१६	२०	१२	पूभा	३८	३९	२१	३३	ब्र	२७	४१	ग	६	५७	३१	२६	६	५	१८	४०	२८	२६	१०	मी. १४/४८
२१	१४	गु	४१	२०	२२	३६	उभा	४५	५९	२४	२८	ऐं	२८	३१	वि	९	२५	३१	३०	६	४	१८	४१	२९	२७	११	मीन
२२	३०	शु	४७	००	२४	५१	रे	५२	५५	२७	१३	वै	२९	१४	च	११	४५	३१	३४	६	३	१८	४१	३०	२८	१२	मे. २७/१३

होली, धुलैण्डी, होलामेला आनन्दपुर, वसंतोत्सव, आम्रकुसुमप्राशन
कृतिका में मंगल २८/५८,
भद्रा २७/०१ से, सन्त तुकाराम ज., चन्द्रोदय २१/४०,
भद्रा १३/३३ तक, श्री गणेश ४ व्रत, रेवती में सूर्य १६/२९,
अप्रैल मा. ४ ता. ३०,
रंग पंचमी, मार्गी आर्द्रा ३ में गुरु १५/५३, मार्गी रोहिणी ३ में शनि १६/२९,
भद्रा ८/४० से २०/३४ तक, एकनाथ षष्ठी, रेवती में बुध ३०/०७,
कालाष्टमी, शीतला सप्तमी, शीतलाष्टमी (बसोड़ा), वृष में मंगल २५/००,
वर्षी तपारंभ (जैन), मेला केसरिया मेवाड़ एवं कैला देवी करौली (राज.) B
B ऋषभ देवजी ज.,
भद्रा २३/५३ से,
भद्रा १२/५५ तक, पंचक आरम्भ २६/०८, भरणी में शुक्र ८/४९,
पापमोचनी ११ व्रत सबका,
A वै. महापात ८/१३ से १३/०२ तक,
भौम प्रदोष व्रत,
भद्रा २०/१२ से, मास शिवरात्रि, अश्विनी मेष में बुध १७/३६, A
भद्रा ९/२५ तक, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.),
पंचक समाप्त २७/१३, अमावस्या पुण्य, चान्द्र संवत्सर २०५८ समाप्त

चैत्र कृ. ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६५२

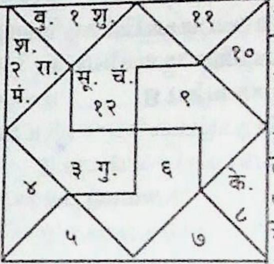
(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	१	११	२	०	१	१	७
२१	२५	०	१८	१३	१०	१६	२७	२७
८	१४	७	३७	३५	४२	५३	२९	२९
३८	०७	४३	४१	२१	०६	४१	५७	५७
५९	[illegible]	४१	[illegible]	६	७३	५	३	३
०४	४०	१६	०१	१६	५९	३१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती २	पू.षा. ४	कृत्ति. २	रेवती १	आर्द्रा ३	अश्वि. ४	रोहि. ३	मृग. २	ज्ये. ४



सप्तमी को मंगल वृष राशि में प्रवेश कर रहा है। अतः सब धान्य मंहगे होंगे एवं चन्दन, केशर, वस्त्र और कपास आदि भी मंहगे होंगे। "**वृष राशौ यदा भौमः सर्वधान्य महर्घता। चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादि महर्घता**" त्रयोदशी को बुध मेष राशि में प्रवेश कर रहा है अतः पुश महंगे होंगे और सुवर्ण का भाव समान रहे। "**यदा सौम्यः स्थितो मेषे महर्घं च चतुष्पदाम। सुवर्ण समतां याति नात्र कार्या विचारणा**" शनि मंगल एवं राहु एक ही राशि वृष में होने से आगे दुर्भिक्ष कारक है तथा विश्व में अशान्ति का वातावरण बनेगा तथा कहीं आगे आतंकवादी गतिविधियों, दुर्घटनाओं या युद्धादि से जन धन की हानि होगी। विश्व शान्ति के प्रयास विफल होंगें। द्वितीया को मंगल कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करेगा जिससे गेहूँ में तेजी तथा रुई में मन्दी आयेगी। दशमी को शुक्र भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा अतः रुई में तेजी और उड़द, मघ, अलसी, तिल, तेल, घी में मन्दी होगी। षष्ठी को बुध के रेवती नक्षत्र में प्रवेश से वायदे की वस्तुओं में तेजी होगी। त्रयोदशी को बुध के अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश से गुड़ और खाण्ड के भावों में गिरावट का रुख होगा तथा घी भी सस्ता होगा। गेहूँ, जौ, अलसी, चने में तेजी का रुख आयेगा।

चैत्र कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ३६५९



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	१	०	२	०	१	१	७
२८	११	४	३	१४	११	१७	२७	२७
१	९	५५	७	२२	१८	३३	७	७
३१	४१	५०	५९	१७	११	४५	४२	४२
५८	[illegible]	४१	१२५	७	७३	५	३	३
५२	११	०१	४३	१७	३७	५९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती ४	रेवती २	कृत्ति. ३	अश्वि. १	आर्द्रा ३	भरणी २	रोहि. ३	मृग. २	ज्ये. ४

आकाश लक्षण- सूर्य के दहना नाड़ी में स्थित होने से, मंगल शुक्र के चण्डा नाड़ी में होने से मैदानी भागों में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा तथा वायु के तेज प्रवाह के साथ पर्वतीय क्षेत्रों में बूंदा-बांदी व बादल चाल होगी। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश में बादल चाल के साथ वायु का तेज प्रवाह होगा।

स्मार्त्त वैष्णव विचार

पंचाङ्ग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त वैष्व भेद से दो दिन अलग-अलग होते है, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते है। इनका निर्णय धर्म-शास्त्रीय व्यवस्था से पंचाङ्गों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते है। स्मार्त्त लोग जिस समय अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते है और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते है।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन?- साधारण जन यह नही समझ पाते कि वे स्मार्त्त है या वैष्णव उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति- स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन स्मार्त्त है। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते है और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त है। **'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।'** *(मनुः)* जो लोग यह समझते हैं कि मांस मदिरा प्याज लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव है, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शङ्ख चक्र अंकित करवाये है वे या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्दक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते है, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

दैनिक-लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए हुए लग्न का समाप्तिकाल रेलवे-स्टैण्डर्ड-टाइम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भ काल समझें। ता. ३ अप्रैल, को सारिणी में मीन लग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखे है, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे हुए घण्टा-मिनट अर्धरात्रोत्तर क्रमशः अर्ध रात्रि-पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे है। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घ.२४ मि.१५ लिखे हुए मिलेंगे,ऐसे ही मध्यान्ह के पश्चात् एक बजे की जगह १३,दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी-परिवर्तन उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न-समाप्ति-काल लाना हो तो जिस तारीख को जो लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्ति काल का घण्टा-मिनट लिखें, पश्चात-पंचांग-परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगर के आगे या नगर के समीप के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लें वह देशान्तर मिनट ऋण(—) हो तो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न समाप्ति- काल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन(+) हो तो ऋण करें तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न-समाप्ति-काल होगा फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति-काल लाना है उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिला दें,ऋण आया हो तो घटा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति-काल होगा उदाहरण ता. ३ अप्रैल को मीन लग्न समाप्तिकाल ६ घण्टा ४२ मिनट है, इसी लग्न का सोलन में समाप्ति-काल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि-सारिणी में दिल्ली से सोलन में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशदि-सारिणी में दिल्ली से सोलन का देशान्तर मिनट ०।१२ है, वहां यह मिनट ऋण होने से ६ घण्टा ४२ मिनट में मिला दें तो ६ घं. ४२ मि. १२ सै. यह सोलन का देशान्तर संस्कृत मीन लग्न का समाप्ति-काल हुआ। इस दिन ३ अप्रैल को सूर्य की क्रांति+उत्तर ५ अंश ७ क. है और सोलन के अक्षांश ३०।५५ है इन क्रांति और अक्षांश से चरान्तर लिया तो वह १ आया, अतः उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल घ. ६ मि. ४३ सै. १२ यही सोलन का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्ली के समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिए संस्कार नहीं किया जाए तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिए ऊपर दिए उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्ति-काल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें, शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे, उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्ध १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणा कर फिर ९ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट हो वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्ति-काल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारंभ मकर से, मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ (—) उपर्युक्त सोलन का आया हुआ मेषारम्भ समय घं. ६ मि. ४३ सै.१२ तथा अन्त घंटा ८ मिनट १७ अन्त में प्रारम्भ घटाया तो घंटा १ मि. ३३ इसके मिनट किये तो मिनट ९३ हुए इसमें ९ का भाग देने पर मिनट १० सै. २० यह एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्न में वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश मुक्त हुए, अतः एक नवांश के मान (मि.१० से. २०) को ७ से गुणा किया तो घंटा १ मि. १२ सै. २० आये, यह घण्टादि मेष लग्न के प्रारम्भ समय घंटा ६ मि. ४३ में जोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं. ७ मिनट ५५ सै. २० हुआ, इसी में एक नवांश का मान मि..१० से. २० जोड़ें तो घण्टा ८ मि. ५ से. २० हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति-काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश-सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४।०७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७।०७	१९।२५	२१।४५	२४।०३	२।०७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७।०३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।०४	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५।०६
६	६।३१	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९।०९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५।०२
७	६।२७	८।०३	०९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९।०५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	०९।५३	१२।०६	१४।२५	१६।४३	१९।००	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	०९।४९	१२।०२	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	०९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	०९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१।०८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६।०६	७।४३	०९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१।०४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६।०३	७।३९	०९।३४	११।४७	१४।०६	१६।२४	१८।४१	२१।००	२३।१९	१।२३	३।०६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	०९।३०	११।४३	१४।०२	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३।०२	४।३०
१५	५।५६	७।३२	०९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	०९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३।०८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	०९।१९	११।३२	१३।५१	१६।०९	१८।२६	२०।४५	२३।०४	१।०८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	०९।१५	११।२८	१३।४७	१६।०५	१८।२२	२०।४१	२३।००	१।०४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	०९।११	११।२४	१३।४३	१६।०२	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१।०१	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	०९।०७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४।०७
२१	५।३२	७।०७	०९।०३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४।०३
२२	५।२७	७।०३	०८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८।०५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	०८।५४	११।०७	१३।२६	१५।४४	१८।०१	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	०८।५०	११।०३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	०८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	०८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०।०८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५।०६	६।४२	०८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०।०४	२२।२२	०।२६	२।०९	३।३७
२८	५।०३	६।३८	०८।३३	१०।४६	१३।०६	१५।२४	१७।४१	२०।००	२२।१८	०।२२	२।०५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	०८।२९	१०।४२	१३।०२	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२।०१	३।२९
३०	४।५५	६।३१	०८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२।०६	००।०९	०१।५३	०३।२२	०४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५।०७	१७।२४	१९।४४	२२।०२	००।०५	०१।४९	०३।१८	०४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५।०३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	००।०१	०१।४५	०३।१४	०४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४२	१५।००	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	०१।४२	०३।११	०४।३५
५	६।११	८।०६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	०१।३७	०३।०७	०४।३१
६	६।०७	८।०२	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७।०९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	०१।३४	०३।०३	०४।२७
७	६।०३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७।०५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	०१।३०	०२।५९	०४।२३
८	५।५८	७।५४	१०।०६	१२।२५	१४।४४	१७।०१	१९।२१	२१।३९	२३।४२	०१।२६	०२।५५	०४।१९
९	५।५४	७।५०	१०।०२	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	०१।२२	०२।५१	०४।१४
१०	५।५०	७।४६	०९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	०१।१८	०२।४७	०४।१०
११	५।४५	७।४१	०९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९।०८	२१।२६	२३।२९	०१।१३	०२।४२	०४।०५
१२	५।४१	७।३७	०९।४९	१२।०९	१४।२७	१६।४४	१९।०४	२१।२२	२३।२५	०१।०९	०२।३८	०४।०२
१३	५।३८	७।३४	०९।४६	१२।०५	१४।२४	१६।४१	१९।०१	२१।१९	२३।२२	०१।०६	०२।३५	०३।५८
१४	५।३४	७।३०	०९।४२	१२।०१	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	०१।०२	०२।३१	०३।५४
१५	५।३१	७।२६	०९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	००।५७	०२।२७	०३।५१
१६	५।२७	७।२३	०९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१।०८	२३।११	००।५५	०२।२४	०३।४८
१७	५।२४	७।२०	०९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१।०५	२३।०८	००।५२	०२।२१	०३।४५
१८	५।२१	७।१६	०९।२८	११।४६	१४।०६	१६।२३	१८।४३	२१।०१	२३।०४	००।४८	०२।१७	०३।४२
१९	५।१७	७।१३	०९।२५	११।४३	१४।०३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।०१	००।४५	०२।१४	०३।३८
२०	५।१४	७।०९	०९।२२	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	००।४१	०२।१०	०३।३४
२१	५।१०	७।०५	०९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	००।३७	०२।०६	०३।३०
२२	५।०६	७।०१	०९।१३	११।३३	१३।५१	१६।०८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	००।३३	०२।०२	०३।२५
२३	५।०३	६।५७	०९।०९	११।२९	१३।४७	१६।०४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	००।२९	०१।५८	०३।२२
२४	४।५८	६।५३	०९।०५	११।२५	१३।४३	१६।००	१८।२०	२०।३८	२२।४१	००।२५	०१।५४	०३।१८
२५	४।५४	६।४९	०९।०२	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	००।२१	०१।५०	०३।१४
२६	४।५०	६।४५	०८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	००।१७	०१।४६	०३।१०
२७	४।४६	६।४१	०८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८।०८	२०।२६	२२।२९	००।१३	०१।४२	०३।०६
२८	४।४२	६।३७	०८।४९	११।०८	१३।२७	१५।४४	१८।०४	२०।२२	२२।२५	००।०९	०१।३८	०३।०३
२९	४।३८	६।३३	०८।४५	११।०३	१३।२३	१५।४०	१८।००	२०।१७	२२।२१	००।०५	०१।३४	०२।५८
३०	४।३४	६।२९	०८।४२	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	००।०२	०१।३०	०२।५४
३१	४।२९	६।२४	०८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०।०९	२२।१२	२३।५६	०१।२५	०२।४९

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	०६।१९	०८।३२	१०।५१	१३।०९	१५।२६	१७।४६	२०।०४	२२।०८	२३।५२	०१।२०	०२।४५	०४।२१
२	०६।१५	०८।२८	१०।४७	१३।०५	१५।२२	१७।४२	२०।००	२२।०३	२३।४७	०१।१५	०२।४०	०४।१६
३	०६।११	०८।२४	१०।४३	१३।०१	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	०१।११	०२।३६	०४।१२
४	०६।०७	०८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	०१।०७	०२।३२	०४।०८
५	०६।०३	०८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	०१।०३	०२।२८	०४।०४
६	०५।५९	०८।१२	१०।३१	१२।४९	१५।०६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	००।५९	०२।२४	०४।००
७	०५।५५	०८।०८	१०।२७	१२।४५	१५।०२	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	००।५५	०२।२०	०३।५६
८	०५।५२	०८।०५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	००।५२	०२।१७	०३।५३
९	०५।४८	०८।०१	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	००।४८	०२।१३	०३।४९
१०	०५।४४	०७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	००।४४	०२।०९	०३।४५
११	०५।४०	०७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७।०७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	००।४०	०२।०५	०३।४१
१२	०५।३६	०७।४९	१०।०८	१२।२६	१४।४३	१७।०३	१९।२१	२१।२४	२३।०८	००।३६	०२।०१	०३।३७
१३	०५।३२	०७।४५	१०।०४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३।०४	००।३२	०१।५७	०३।३३
१४	०५।२९	०७।४२	१०।०१	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३।०१	००।२९	०१।५३	०३।३०
१५	०५।२५	०७।३८	०९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	००।२५	०१।५०	०३।२६
१६	०५।२१	०७।३४	०९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९।०६	२१।०९	२२।५३	००।२१	०१।४६	०३।२२
१७	०५।१७	०७।३०	०९।४९	१२।०७	१४।२४	१६।४४	१९।०२	२१।०५	२२।४९	००।१७	०१।४२	०३।१८
१८	०५।१३	०७।२६	०९।४५	१२।०३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।०१	२२।४५	००।१३	०१।३८	०३।१४
१९	०५।१०	०७।२३	०९।४२	१२।००	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	००।१०	०१।३५	०३।११
२०	०५।०६	०७।१९	०९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	००।०६	०१।३१	०३।०७
२१	०५।०२	०७।१५	०९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	००।०२	०१।२७	०३।०३
२२	०४।५८	०७।११	०९।३०	११।४८	१४।०६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	०१।२३	०२।५९
२३	०४।५४	०७।०७	०९।२६	११।४४	१४।०२	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	०१।१९	०२।५५
२४	०४।५०	०७।०३	०९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	०१।१५	०२।५१
२५	०४।४७	०७।००	०९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	०१।१२	०२।४८
२६	०४।४३	०६।५६	०९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	०१।०८	०२।४४
२७	०४।३९	०६।५२	०९।११	११।२९	१३।४७	१६।०६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	०१।०४	०२।४०
२८	०४।३५	०६।४८	०९।०७	११।२५	१३।४३	१६।०२	१८।२०	२०।२३	२२।०७	२३।३५	०१।००	०२।३६
२९	०४।३१	०६।४४	०९।०३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२।०३	२३।३१	००।५५	०२।३२
३०	०४।२७	०६।४०	०८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	००।५२	०२।२८

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	०६।३६	०८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८।०८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	००।४९	०२।२४	०४।१९
२	०६।३२	०८।५२	११।०९	१३।२७	१५।४७	१८।०४	२०।०८	२१।५१	२३।२०	००।४५	०२।२०	०४।१५
३	०६।२८	०८।४८	११।०५	१३।२३	१५।४३	१८।००	२०।०४	२१।४७	२३।१६	००।४१	०२।१६	०४।११
४	०६।२४	०८।४४	११।०१	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०।०१	२१।४३	२३।१२	००।३७	०२।१२	०४।०७
५	०६।२०	०८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३।०८	००।३३	०२।०८	०४।०३
६	०६।१६	०८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३।०४	००।२९	०२।०४	०३।५९
७	०६।१२	०८।३२	१०।४९	१३।०७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३।००	००।२५	०२।००	०३।५५
८	०६।०८	०८।२८	१०।४५	१३।०३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	००।२१	०१।५६	०३।५१
९	०६।०४	०८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	००।१७	०१।५२	०३।४७
१०	०६।००	०८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	००।१३	०१।४८	०३।४३
११	०५।५७	०८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	००।१०	१०।४५	०३।४०
१२	०५।५३	०८।१३	१०।३०	१२।४८	१५।०८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	००।०६	०१।४१	०३।३६
१३	०५।४९	०८।०९	१०।२६	१२।४४	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।०८	२२।३७	००।०२	०१।३७	०३।३२
१४	०५।४५	०८।०५	१०।२२	१२।४०	१५।००	१७।१७	१९।२२	२१।०४	२२।३३	२३।५८	०१।३३	०३।२८
१५	०५।४१	०८।०१	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१।००	२२।२९	२३।५४	०१।२९	०३।२४
१६	०५।३७	०७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७।०९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	०१।२५	०३।२०
१७	०५।३३	०७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७।०५	१९।१०	२०।५२	२२।२१	२३।४६	०१।२१	०३।१६
१८	०५।२९	०७।४९	१०।०६	१२।२४	१४।४४	१७।०१	१९।०६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	०१।१७	०३।१२
१९	०५।२५	०७।४५	१०।०२	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९।०२	२०।४४	२२।१३	२३।३८	०१।१३	०३।०८
२०	०५।२१	०७।४१	०९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२।०९	२३।३४	०१।०९	०३।०४
२१	०५।१७	०७।३७	०९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२।०५	२३।३०	०१।०५	०३।००
२२	०५।१३	०७।३३	०९।५०	१२।०८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२।०१	२३।२६	०१।०१	०२।५४
२३	०५।१०	०७।३०	०९।४७	१२।०५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	००।५८	०२।५१
२४	०५।०६	०७।२६	०९।४३	१२।०१	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	००।५४	०२।४७
२५	०५।०२	०७।२२	०९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	००।५०	०२।४३
२६	०४।५८	०७।१८	०९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	००।४६	०२।३९
२७	०४।५४	०७।१४	०९।३२	११।४९	१४।०९	१६।२६	१८।३१	२०।१२	२१।४२	२३।०७	००।४२	०२।३५
२८	०४।५०	०७।१०	०९।२८	११।४५	१४।०५	१६।२२	१८।२७	२०।०९	२१।३८	२३।०३	००।३८	०२।३१
२९	०४।४६	०७।०६	०९।२४	११।४१	१४।०१	१६।१८	१८।२३	२०।०५	२१।३४	२२।५९	००।३४	०२।२७
३०	०४।४२	०७।०२	०९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०।०१	२१।३०	२२।५४	००।३०	०२।२३
३१	०४।३९	०६।५९	०९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	००।२७	०२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष.	वृषभ	मिथुन
१	०६५५	०९१३	११३१	१३५०	१६०८	१८११	१९५५	२११३	२२४८	००२४	०२१८	०४३१
२	०६५१	०९०९	११२७	१३४६	१६०४	१८०७	१९५१	२११९	२२४४	००२०	०२१४	०४२७
३	०६४७	०९०५	११२३	१३४२	१६००	१८०३	१९४७	२११५	२२४०	००१६	०२१०	०४२३
४	०६४३	०९०१	१११९	१३३७	१५५६	१७५९	१९४३	२१११	२२३६	००१२	०२०६	०४१९
५	०६३९	०८५७	१११५	१३३४	१५५२	१७५५	१९३९	२१०७	२२३२	०००८	०२०२	०४१५
६	०६३५	०८५३	११११	१३३०	१५४८	१७५१	१९३५	२१०३	२२२८	०००४	०१५८	०४११
७	०६३१	०८४९	११०७	१३२६	१५४४	१७४७	१९३१	२०५९	२२२४	००००	०१५४	०४०७
८	०६२८	०८४६	११०४	१३२३	१५४१	१७४४	१९२८	२०५६	२२२१	२३५७	०१५१	०४०४
९	०६२४	०८४२	११००	१३१९	१५३७	१७४०	१९२४	२०५२	२२१७	२३५३	०१४७	०४००
१०	०६२०	०८३८	१०५६	१३१५	१५३३	१७३६	१९२०	२०४८	२२१३	२३४९	०१४३	०३५६
११	०६१६	०८३४	१०५२	१३११	१५२९	१७३२	१९१६	२०४४	२२०९	२३४५	०१३९	०३५२
१२	०६१२	०८३०	१०४८	१३०७	१५२५	१७२८	१९१२	२०४०	२२०५	२३४१	०१३५	०३४८
१३	०६०८	०८२६	१०४४	१३०३	१५२१	१७२४	१९०८	२०३६	२२०१	२३३७	०१३१	०३४४
१४	०६०४	०८२२	१०४०	१२५९	१५१७	१७२०	१९०४	२०३२	२१५७	२३३३	०१२७	०३४०
१५	०६००	०८१८	१०३६	१२५५	१५१३	१७१६	१९००	२०२८	२१५३	२३२९	०१२३	०३३६
१६	०५५५	०८१३	१०३१	१२५०	१५०८	१७११	१८५५	२०२३	२१४८	२३२४	०११८	०३३२
१७	०५५१	०८०९	१०२७	१२४६	१५०४	१७०७	१८५१	२०१९	२१४४	२३२०	०११४	०३२७
१८	०५४७	०८०५	१०२३	१२४२	१५००	१७०३	१८४७	२०१५	२१४०	२३१६	०११०	०३२३
१९	०५४३	०८०१	१०१९	१२३८	१४५६	१६५९	१८४३	२०११	२१३६	२३१२	०१०६	०३१९
२०	०५३९	०७५७	१०१५	१२३४	१४५२	१६५५	१८३९	२००७	२१३२	२३०८	०१०२	०३१५
२१	०५३५	०७५३	१०११	१२३०	१४४८	१६५१	१८३५	२००३	२१२८	२३०४	००५८	०३११
२२	०५३१	०७४९	१००७	१२२६	१४४४	१६४७	१८३१	१९५९	२१२४	२३००	००५४	०३०७
२३	०५२७	०७४५	१००३	१२२२	१४४०	१६४३	१८२७	१९५५	२१२०	२२५६	००५०	०३०३
२४	०५२३	०७४१	०९५९	१२१८	१४३६	१६३९	१८२३	१९५१	२११६	२२५२	००४६	०२५९
२५	०५१९	०७३७	०९५५	१२१४	१४३२	१६३५	१८१९	१९४७	२११२	२२४८	००४२	०२५५
२६	०५१६	०७३४	०९५२	१२११	१४२९	१६३२	१८१६	१९४४	२१०९	२२४५	००३९	०२५२
२७	०५१२	०७३०	०९४८	१२०७	१४२५	१६२८	१८१२	१९४०	२१०५	२२४१	००३५	०२४८
२८	०५०८	०७२६	०९४४	१२०३	१४२१	१६२४	१८०८	१९३६	२१०१	२२३७	००३१	०२४४
२९	०५०४	०७२२	०९४०	११५९	१४१७	१६२०	१८०४	१९३२	२०५७	२२३३	००२७	०२४०
३०	०५०१	०७१९	०९३७	११५६	१४१४	१६१७	१८०१	१९२९	२०५४	२२३०	००२४	०२३७
३१	०४५८	०७१६	०९३४	११५३	१४११	१६१४	१७५८	१९२६	२०५१	२२२७	००२१	०२३४

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

दि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	०७१२	०९३०	११५०	१४०७	१६११	१७५४	१९२३	२०४८	२२२३	००१८	०२३०	०४५०
२	०७०८	०९२६	११४६	१४०३	१६०७	१७५०	१९१९	२०४४	२२१९	००१४	०२२६	०४४६
३	०७०४	०९२२	११४२	१३५९	१६०३	१७४६	१९१५	२०४०	२२१५	००१०	०२२२	०४४२
४	०७००	०९१८	११३८	१३५५	१५५९	१७४२	१९११	२०३६	२२११	०००६	०२१८	०४३८
५	०६५६	०९१४	११३४	१३५१	१५५५	१७३८	१९०७	२०३२	२२०७	०००२	०२१४	०४३४
६	०६५२	०९१०	११३०	१३४७	१५५१	१७३४	१९०३	२०२८	२२०३	२३५८	०२१०	०४३०
७	०६४८	०९०६	११२६	१३४३	१५४७	१७३०	१८५९	२०२४	२१५९	२३५४	०२०६	०४२६
८	०६४४	०९०२	११२२	१३३९	१५४३	१७२६	१८५५	२०२०	२१५५	२३५०	०२०२	०४२२
९	०६४०	०८५८	१११८	१३३५	१५३९	१७२२	१८५१	२०१६	२१५१	२३४६	०१५८	०४१८
१०	०६३६	०८५४	१११४	१३३१	१५३५	१७१८	१८४७	२०१२	२१४७	२३४२	०१५४	०४१४
११	०६३२	०८५०	१११०	१३२७	१५३१	१७१४	१८४३	२००८	२१४३	२३३७	०१५०	०४१०
१२	०६२८	०८४६	११०६	१३२३	१५२७	१७१०	१८३९	२००४	२१३९	२३३४	०१४६	०४०६
१३	०६२४	०८४२	११०२	१३१९	१५२३	१७०६	१८३५	२०००	२१३५	२३३०	०१४२	०४०२
१४	०६२२	०८३८	१०५८	१३१५	१५१९	१७०२	१८३१	१९५६	२१३१	२३२६	०१३८	०३५८
१५	०६१६	०८३४	१०५४	१३११	१५१५	१६५८	१८२७	१९५२	२१२७	२३२२	०१३४	०३५४
१६	०६११	०८२९	१०४९	१३०६	१५१०	१६५३	१८२२	१९४७	२१२२	२३१७	०१२९	०३५०
१७	०६०७	०८२५	१०४५	१३०२	१५०६	१६४९	१८१८	१९४३	२११८	२३१३	०१२५	०३४६
१८	०६०३	०८२१	१०४१	१२५८	१५०२	१६४५	१८१४	१९३९	२११४	२३०९	०१२१	०३४२
१९	०५५९	०८१७	१०३७	१२५४	१४५८	१६४१	१८१०	१९३५	२११०	२३०५	०११७	०३३७
२०	०५५५	०८१३	१०३३	१२५०	१४५४	१६३७	१८०४	१९३१	२१०६	२३०१	०११३	०३३३
२१	०५५१	०८०९	१०२९	१२४६	१४५०	१६३३	१८००	१९२७	२१०२	२२५७	०१०९	०३२९
२२	०५४७	०८०५	१०२५	१२४२	१४४६	१६२९	१७५६	१९२३	२०५८	२२५३	०१०५	०३२५
२३	०५४३	०८०१	१०२१	१२३८	१४४२	१६२५	१७५२	१९१९	२०५४	२२४९	०१०१	०३२१
२४	०५३९	०७५७	१०१७	१२३४	१४३८	१६२१	१७४८	१९१५	२०५०	२२४५	००५७	०३१७
२५	०५३५	०७५३	१०१३	१२३०	१४३४	१६१७	१७४४	१९११	२०४६	२२४१	००५३	०३१३
२६	०५३१	०७४९	१००९	१२२६	१४३०	१६१३	१७४०	१९०७	२०४२	२२३७	००४९	०३०९
२७	०५२७	०७४५	१००५	१२२२	१४२६	१६०९	१७३६	१९०३	२०३८	२२३३	००४५	०३०५
२८	०५२३	०७४१	१००१	१२१८	१४२२	१६०५	१७३२	१८५९	२०३४	२२२९	००४१	०३०१
२९	०५१९	०७३७	०९५७	१२१४	१४१८	१६०१	१७२८	१८५५	२०३०	२२२५	००३७	०२५७
३०	०५१४	०७३४	०९५४	१२११	१४१५	१५५८	१७२४	१८५२	२०२७	२२२२	००३३	०२५४

अक्टूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	०७।३०	०९।५०	१२।०७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	००।३०	०२।५०	०५।०८
२	०७।२६	०९।४६	१२।०३	१४।०७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	००।२६	०२।४६	०५।०४
३	०७।२२	०९।४२	११।५९	१४।०३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	००।२२	०२।४२	०५।००
४	०७।१८	०९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७।०९	१८।३६	२०।११	२२।०६	००।१८	०२।३८	०४।५६
५	०७।१४	०९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७।०५	१८।३२	२०।०७	२२।०२	००।१४	०२।३४	०४।५२
६	०७।१०	०९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७।०१	१८।२८	२०।०३	२१।५८	००।१०	०२।३०	०४।४८
७	०७।०६	०९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	००।०६	०२।२६	०४।४४
८	०७।०२	०९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	००।०२	०२।२२	०४।४०
९	०६।५८	०९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	०२।१८	०४।३६
१०	०६।५३	०९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	०२।१३	०४।३१
११	०६।४९	०९।०९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८।०७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	०२।०९	०४।२७
१२	०६।४५	०९।०५	११।२२	१३।२६	१५।०९	१६।३६	१८।०३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	०२।०५	०४।२३
१३	०६।४१	०९।०१	११।१८	१३।२२	१५।०५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	०२।०१	०४।१९
१४	०६।३८	०८।५८	११।१५	१३।१९	१५।०२	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	०१।५८	०४।१६
१५	०६।३४	०८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	०१।५४	०४।१२
१६	०६।३०	०८।५०	११।०७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	०१।५०	०४।०८
१७	०६।२५	०८।४५	११।०२	१३।०६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	०१।४५	०४।०३
१८	०६।२१	०८।४१	१०।५८	१३।०२	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१।०९	२३।२१	०१।४१	०३।५९
१९	०६।१७	०८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६।०८	१७।३५	१९।१०	२१।०५	२३।१७	०१।३७	०३।५५
२०	०६।१३	०८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६।०४	१७।३१	१९।०६	२१।०१	२३।१३	०१।३३	०३।५१
२१	०६।०९	०८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६।००	१७।२७	१९।०२	२०।५७	२३।०९	०१।२९	०३।४७
२२	०६।०५	०८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३।०५	०१।२५	०३।४३
२३	०६।०१	०८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३।०१	०१।२१	०३।३९
२४	०५।५७	०८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	०१।१७	०३।३५
२५	०५।५३	०८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	०१।१३	०३।३१
२६	०५।५०	०८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७।०८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	०१।१०	०३।२८
२७	०५।४६	०८।०६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७।०४	१८।३९	२०।३२	२२।४६	०१।०६	०३।२४
२८	०५।४२	०८।०२	१०।१९	१२।२३	१४।०६	१५।३३	१७।००	१८।३५	२०।२९	२२।४२	०१।०२	०३।२०
२९	०५।३८	०७।५८	१०।१५	१२।१९	१४।०२	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	००।५८	०३।१६
३०	०५।३४	०७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	००।५४	०३।१२
३१	०५।३०	०७।५०	१०।०७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	००।५०	०३।०७

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	०७।४५	१०।०३	१२।०७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	००।४६	०३।०३	०५।२१
२	०७।४१	०९।५९	१२।०३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	००।४२	०२।५९	०५।१७
३	०७।३७	०९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०।०६	२२।१८	००।३८	०२।५५	०५।१३
४	०७।३३	०९।५१	११।५५	१३।३८	१५।०७	१६।३१	१८।०७	२०।०२	२२।१४	००।३४	०२।५१	०५।०९
५	०७।२९	०९।४७	११।५१	१३।३४	१५।०३	१६।२७	१८।०३	१९।५८	२२।१०	००।३०	०२।४७	०५।०५
६	०७।२५	०९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२।०६	००।२६	०२।४३	०५।०१
७	०७।२१	०९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२।०२	००।२२	०२।३९	०४।५७
८	०७।१८	०९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	००।१९	०२।३६	०४।५४
९	०७।१४	०९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४९	१९।४३	२१।५५	००।१५	०२।३२	०४।५०
१०	०७।१०	०९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६।०८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	००।११	०२।२८	०४।४६
११	०७।०६	०९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६।०४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	००।०७	०२।२४	०४।४२
१२	०७।०२	०९।२०	११।२४	१३।०७	१४।३६	१६।००	१७।३६	१९।३१	२१।४३	००।०३	०२।२०	०४।३८
१३	०६।५८	०९।१७	११।२०	१३।०३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	०२।१६	०४।३४
१४	०६।५४	०९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	०२।१२	०४।३०
१५	०६।५०	०९।०९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	०२।०८	०४।२६
१६	०६।४७	०९।०६	११।०९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	०२।०५	०४।२३
१७	०६।४३	०९।०२	११।०५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२५	२३।४४	०२।०१	०४।१९
१८	०६।३९	०८।५८	११।०१	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९।०८	२१।२१	२३।४०	०१।५७	०४।१५
१९	०६।३५	०८।५४	१०।५७	१२।४०	१४।०९	१५।३३	१७।०९	१९।०४	२१।१७	२३।३७	०१।५३	०४।११
२०	०६।३१	०८।५०	१०।५२	१२।३६	१४।०५	१५।२९	१७।०५	१९।००	२१।१३	२३।३३	०१।४९	०४।०७
२१	०६।२७	०८।४६	१०।४९	१२।३२	१४।०१	१५।२५	१७।०१	१८।५६	२१।०९	२३।२९	०१।४५	०४।०३
२२	०६।२३	०८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१।०५	२३।२५	०१।४१	०३।५९
२३	०६।१९	०८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१।०१	२३।२१	०१।३७	०३।५५
२४	०६।१५	०८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	०१।३३	०३।५१
२५	०६।११	०८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५।०९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	०१।२९	०३।४७
२६	०६।०७	०८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५।०५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३।०९	०१।२५	०३।४३
२७	०६।०३	०८।२२	१०।२५	१२।०८	१३।३७	१५।०१	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३।०५	०१।२१	०३।३९
२८	०५।५९	०८।१८	१०।२१	१२।०४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३।०१	०१।१७	०३।३५
२९	०५।५५	०८।१४	१०।१७	१२।००	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	०१।१३	०३।३१
३०	०५।५२	०८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	०१।१०	०३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ति	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	०८।०५	१०।०९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	०१।०६	०३।२३	०५।४३
२	०८।०१	१०।०५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	०१।०२	०३।१९	०५।३९
३	०७।५७	१०।०१	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८।०८	२०।२१	२२।४०	००।५८	०३।१५	०५।३५
४	०७।५३	०९।५७	११।४१	१३।०९	१४।३४	१६।०९	१८।०४	२०।१७	२२।३६	००।५४	०३।११	०५।३१
५	०७।४९	०९।५३	११।३७	१३।०५	१४।३०	१६।०५	१८।००	२०।१३	२२।३२	००।५०	०३।०७	०५।२७
६	०७।४६	०९।४९	११।३३	१३।०१	१४।२६	१६।०१	१७।५६	२०।०९	२२।२८	००।४६	०३।०३	०५।२३
७	०७।४३	०९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०।०६	२२।२५	००।४३	०३।००	०५।२०
८	०७।३९	०९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०।०३	२२।२२	००।४०	०२।५७	०५।१७
९	०७।३५	०९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	००।३६	०२।५३	०५।१३
१०	०७।३१	०९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	००।३२	०२।४९	०५।०९
११	०७।२७	०९।३१	११।१५	१२।४३	१४।०८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	००।२८	०२।४५	०५।०५
१२	०७।२३	०९।२७	११।११	१२।३९	१४।०४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२।०६	००।२४	०२।४१	०५।०१
१३	०७।१९	०९।२३	११।०७	१२।३५	१४।००	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२।०२	००।२०	०२।३७	०४।५७
१४	०७।१५	०९।१९	११।०३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	००।१६	०२।३३	०४।५३
१५	०७।१०	०९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	००।११	०२।२८	०४।४८
१६	०७।०६	०९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	००।०७	०२।२४	०४।४४
१७	०७।०२	०९।०६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४७	००।०३	०२।२०	०४।४०
१८	०६।५८	०९।०२	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७।०९	१९।२२	२१।४२	२३।५९	०२।१६	०४।३६
१९	०६।५४	०८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७।०५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	०२।१२	०४।३२
२०	०६।५०	०८।५४	१०।३८	१२।०६	१३।३१	१५।०६	१७।०१	१९।१४	२१।३३	२३।५१	०२।०८	०४।२८
२१	०६।४६	०८।५०	१०।३४	१२।०२	१३।२७	१५।०२	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	०२।०४	०४।२४
२२	०६।४२	०८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९।०६	२१।२५	२३।४३	०२।००	०४।२०
२३	०६।३८	०८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९।०२	२१।२१	२३।३९	०१।५६	०४।१६
२४	०६।३५	०८।३८	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	०१।५३	०४।१३
२५	०६।३१	०८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	०१।४९	०४।०९
२६	०६।२८	०८।३२	१०।१६	११।४४	१३।०९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	०१।४६	०४।०६
२७	०६।२४	०८।२८	१०।१२	११।४०	१३।०५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१।०७	२३।२५	०१।४२	०४।०२
२८	०६।२०	०८।२४	१०।०८	११।३६	१३।०१	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१।०३	२३।२१	०१।३८	०३।५८
२९	०६।१६	०८।२०	१०।०४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	०१।३४	०३।५४
३०	०६।१३	०८।१७	१०।०१	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	०१।३१	०३।५१
३१	०६।०९	०८।१३	०९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	०१।२७	०३।४७

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ति	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	०८।०९	०९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३।०६	०१।२४	०३।४३	०६।०१
२	०८।०५	०९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३।०२	०१।२०	०३।३९	०५।५७
३	०८।०१	०९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६।०८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	०१।१६	०३।३५	०५।५३
४	०७।५७	०९।४१	११।०९	१२।३४	१४।१०	१६।०४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	०१।१२	०३।३१	०५।४९
५	०७।५३	०९।३७	११।०५	१२।३०	१४।०६	१६।००	१८।१३	२०।३३	२२।५०	०१।०८	०३।२७	०५।४५
६	०७।४९	०९।३३	११।०१	१२।२६	१४।०२	१५।५६	१८।०९	२०।२९	२२।४६	०१।०४	०३।२३	०५।४१
७	०७।४५	०९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८।०५	२०।२५	२२।४२	०१।००	०३।१९	०५।३७
८	०७।४२	०९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८।०२	२०।२२	२२।३९	००।५७	०३।१६	०५।३४
९	०७।३७	०९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	००।५३	०३।१२	०५।३०
१०	०७।३४	०९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	००।४९	०३।०८	०५।२६
११	०७।३१	०९।१५	१०।४३	१२।०८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	००।४६	०३।०५	०५।२३
१२	०७।२७	०९।११	१०।३९	१२।०४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०।०७	२२।२४	००।४२	०३।०१	०५।१९
१३	०७।२४	०९।०८	१०।३६	१२।०१	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०।०४	२२।२१	००।३९	०२।५८	०५।१६
१४	०७।२०	०९।०४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०।००	२२।१७	००।३५	०२।५४	०५।१२
१५	०७।१७	०९।०१	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	००।३२	०२।५१	०५।०९
१६	०७।१३	०८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	००।२८	०२।४७	०५।०५
१७	०७।०९	०८।५३	१०।२२	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२।०६	००।२४	०२।४२	०५।०१
१८	०७।०४	०८।४८	१०।१६	११।४२	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२।०१	००।१९	०२।३८	०४।५६
१९	०७।००	०८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५।०७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	००।१५	०२।३४	०४।५२
२०	०६।५६	०८।४०	१०।०८	११।३३	१३।०९	१५।०३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	००।११	०२।३०	०४।४८
२१	०६।५२	०८।३६	१०।०४	११।२९	१३।०५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	००।०७	०२।२६	०४।४४
२२	०६।४८	०८।३२	१०।००	११।२५	१३।०१	१४।५५	१७।०८	१९।२८	२१।४४	००।०३	०२।२२	०४।४०
२३	०६।४३	०८।२७	०९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७।०३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	०२।१७	०४।३५
२४	०६।३९	०८।२३	०९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	०२।१३	०४।३१
२५	०६।३५	०८।१९	०९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	०२।०९	०४।२७
२६	०६।३१	०८।१५	०९।४३	११।०८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	०२।०५	०४।२३
२७	०६।२७	०८।११	०९।३९	११।०४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९।०७	२१।२४	२३।४२	०२।०१	०४।१९
२८	०६।२३	०८।०७	०९।३४	११।००	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९।०३	२१।२०	२३।३८	०१।५७	०४।१५
२९	०६।१९	०८।०३	०९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	०१।५३	०४।११
३०	०६।१५	०७।५९	०९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।११	२३।३०	०१।४९	०४।०७
३१	०६।११	०७।५५	०९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१।०७	२३।२६	०१।४५	०४।०३

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

दि.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
१	०७।५०	०९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१।०४	२३।२१	०१।४२	०३।५८	०६।०२
२	०७।४६	०९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१।००	२३।१७	०१।३७	०३।५४	०५।५८
३	०७।४२	०९।१२	१०।३६	१२।१२	१४।०७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	०१।३४	०३।५१	०५।५५
४	०७।३९	०९।०८	१०।३२	१२।०८	१४।०३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	०१।३०	०३।४७	०५।५१
५	०७।३६	०९।०५	१०।२९	१२।०५	१४।००	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।०७	०१।२७	०३।४४	०५।४८
६	०७।३२	०९।०१	१०।२५	१२।०१	१३।५६	१६।०८	१८।२८	२०।४६	२३।०३	०१।२३	०३।४१	०५।४४
७	०७।२८	०८।५७	१०।२२	११।५७	१३।५२	१६।०४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	०१।१९	०३।३७	०५।४०
८	०७।२४	०८।५३	१०।१८	११।५३	१३।४८	१६।००	१८।२०	२०।३८	२२।५५	०१।१५	०३।३३	०५।३६
९	०७।२०	०८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	०१।११	०३।२९	०५।३२
१०	०७।१५	०८।४४	१०।०८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	०१।०६	०३।२४	०५।२७
११	०७।११	०८।४०	१०।०४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८।०७	२०।२५	२२।४२	०१।०२	०३।२०	०५।२३
१२	०७।०७	०८।३६	१०।००	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८।०३	२०।२१	२२।३८	००।५८	०३।१६	०५।१९
१३	०७।०३	०८।३२	०९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	००।५४	०३।१२	०५।१५
१४	०६।५९	०८।२८	०९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	००।५०	०३।०८	०५।११
१५	०६।५५	०८।२४	०९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०।०९	२२।२६	००।४६	०३।०४	०५।०७
१६	०६।५१	०८।२०	०९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०।०५	२२।२२	००।४२	०३।००	०५।०३
१७	०६।४७	०८।१६	०९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०।०१	२२।१८	००।३८	०२।५६	०४।५९
१८	०६।४३	०८।१२	०९।३६	११।१२	१३।०७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	००।३४	०२।५२	०४।५५
१९	०६।३९	०८।०८	०९।३२	११।०८	१३।०३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	००।३०	०२।४८	०४।५१
२०	०६।३४	०८।०३	०९।२७	११।०३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२।०५	००।२५	०२।४३	०४।४६
२१	०६।३०	०७।५९	०९।२३	१०।५९	१२।५४	१५।०६	१७।२६	१९।४४	२२।०१	००।२१	०२।३९	०४।४२
२२	०६।२६	०७।५५	०९।१९	१०।५५	१२।५०	१५।०२	१७।२२	१९।४०	२१।५७	००।१७	०२।३५	०४।३८
२३	०६।२२	०७।५१	०९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	००।१३	०२।३१	०४।३४
२४	०६।१८	०७।४७	०९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	००।०९	०२।२७	०४।३०
२५	०६।१४	०७।४३	०९।०७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	००।०५	०२।२३	०४।२६
२६	०६।११	०७।४०	०९।०४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७।०७	१९।२५	२१।४२	००।०२	०२।२०	०४।२३
२७	०६।०७	०७।३६	०९।००	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७।०३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	०२।१६	०४।१९
२८	०६।०३	०७।३२	०८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	०२।१२	०४।१५

यह लग्न का समाप्ति काल है। प्रत्येक मास में दिए हुए स्टैण्डर्ड टाइम को ऊपर लिखी राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

दि.	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	०७।२८	०८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	०२।०८	०४।११	०५।५५
२	०७।२४	०८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९।०९	२१।२६	२३।४६	०२।०४	०४।०७	०५।५२
३	०७।२०	०८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९।०५	२१।२२	२३।४२	०२।००	०४।०३	०५।४७
४	०७।१६	०८।४२	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९।०१	२१।१८	२३।३८	०१।५६	०३।५९	०५।४३
५	०७।१३	०८।३८	१०।१३	१२।०८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	०१।५३	०३।५६	०५।४०
६	०७।०९	०८।३४	१०।०९	१२।०४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	०१।४९	०३।५२	०५।३६
७	०७।०५	०८।३०	१०।०५	१२।००	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१।०७	२३।२७	०१।४५	०३।४८	०५।३२
८	०७।०१	०८।२६	१०।०१	११।५६	१४।०९	१६।२८	१८।४६	२१।०३	२३।२३	०१।४२	०३।४४	०५।२८
९	०६।५७	०८।२२	०९।५७	११।५२	१४।०५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	०१।३७	०३।४०	०५।२४
१०	०६।५२	०८।१७	०९।५२	११।४७	१४।००	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	०१।३२	०३।३५	०५।१९
११	०६।४८	०८।१३	०९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	०१।२८	०३।३१	०५।१५
१२	०६।४४	०८।०९	०९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३।०६	०१।२४	०३।२७	०५।११
१३	०६।४०	०८।०५	०९।४०	११।३५	१३।४८	१६।०७	१८।२५	२०।४२	२३।०२	०१।२०	०३।२३	०५।०७
१४	०६।३६	०८।०१	०९।३६	११।३१	१३।४४	१६।०३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	०१।१६	०३।१९	०५।०३
१५	०६।३२	०७।५७	०९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	०१।१२	०३।१५	०४।५९
१६	०६।२८	०७।५३	०९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	०१।०८	०३।११	०४।५५
१७	०६।२४	०७।४९	०९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८।०९	२०।२६	२२।४६	०१।०४	०३।०७	०४।५१
१८	०६।२०	०७।४५	०९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८।०५	२०।२२	२२।४२	०१।००	०३।०३	०४।४७
१९	०६।१६	०७।४२	०९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८।०१	२०।१८	२२।३८	००।५६	०२।५९	०४।४३
२०	०६।१२	०७।३७	०९।१२	११।०७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१६	२२।३४	००।५२	०२।५५	०४।३९
२१	०६।०८	०७।३३	०९।०८	११।०३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	००।४८	०२।५१	०४।३५
२२	०६।०४	०७।२९	०९।०४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०।०६	२२।२६	००।४४	०२।४७	०४।३१
२३	०६।००	०७।२५	०९।००	१०।५५	१३।०८	१५।२७	१७।४५	२०।०२	२२।२२	००।४०	०२।४३	०४।२७
२४	०५।५५	०७।२१	०८।५६	१०।५१	१३।०४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	००।३६	०२।३९	०४।२३
२५	०५।५२	०७।१७	०८।५२	१०।४७	१३।००	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	००।३२	०२।३५	०४।१९
२६	०५।४८	०७।१३	०८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	००।२८	०२।३१	०४।१५
२७	०५।४४	०७।०९	०८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२।०६	००।२४	०२।२७	०४।११
२८	०५।४०	०७।०५	०८।४०	१०।३५	१२।४८	१५।०७	१७।२५	१९।४२	२२।०२	००।२०	०२।२३	०४।०७
२९	०५।३६	०७।०१	०८।३६	१०।३१	१२।४४	१५।०३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	००।१६	०२।१९	०४।०३
३०	०५।३२	०६।५७	०८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	००।१२	०२।१५	०३।५९
३१	०५।२८	०६।५३	०८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	००।०८	०२।११	०३।५५

अथ जन्म-समयादि विचार

सर्वशास्त्र- शिरोमणि ज्योतिःशास्त्र की महत्ता को सारा संसार जानता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष फलदायक है, अतः प्राचीन काल से लेकर आज तक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके बिना और कोई शास्त्र नहीं, जो कि तीनों काल (भूत,भविष्य,वर्तमान) की वर्ता को बतला सके और वेद के छः अंगों में से यह नेत्र स्थानीय है। जिस प्रकार सम्पूर्ण अंगों के सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्र विहीन मनुष्य का जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रों के पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत, भविष्य को बतलाने में मूक सा रह जाता है। परन्तु खेद इस बात का है कि ऐसा होने पर भी आजकल फलादेश के पूरा न मिलने से लोगों की श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत है, परन्तु दो चार यहां बतलाये जाते है- जब बालक का जन्म होता है उस समय गांव वालों के पास कोई घड़ी आदि का सुप्रबन्ध न होने से वे लोग समय को निश्चित रूप से नहीं बता सकते, यदि किसी ने सब प्रकार से अपना प्रबंध करके समय को निश्चित रूप से नोट किया भी हो तो वह घर में आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्र के अनभिज्ञ पंडित से कुण्डली बनवाकर रख लेते है और पंडितजी रुपये के लालच में फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमान को दे देते है, जिसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परंतु कलंक का टीका ज्योतिःशास्त्र पर मढ़ा जाता है। क्योंकि लग्न के ठीक होने पर ही फलादेश ठीक मिल सकता है, वह फलादेश इष्ट पर निर्भर है, और वह इष्ट नोट किये हुए समय पर निर्भर है, अतः समय के नोट करने में सावधानी रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं, इसके निश्चय के लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिए :-

तत्रादौ पितृपरोक्ष ज्ञान- बालक के जन्म के समय पिता घर में था कि नहीं? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिए कि जन्मकुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म के समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थानों में चरराशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था, इन्हीं स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा लग्न को न देखें तो पिता अपने देश में ही था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था ऐसा जानना चाहिए।

जन्म समय शनि लग्न में हो अथवा सातवें स्थान पड़ा हो अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्र में से एक तो चन्द्रमा से द्वादश स्थान में और द्वितीय स्थान में पड़ा हो तो भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म जानना, परन्तु यहाँ चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में होना अंशों के योग से भी जान लेना, जैसे बुध के स्पष्ट पांच अंश हों चन्द्रमा के दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो भी पूर्वोक्त योग जानना चाहिए।

चिन्ह ज्ञान :- जिसके जन्म समय १।५।६।९ इन स्थानों में सूर्य हो उसकी भुजा में कोई चिन्ह होगा, यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और केन्द्र में चन्द्रमा हो तो [illegible] बालक की छः अंगुलियाँ होती है। चिन्ह विचार करते समय इतना पहले विचार कर [illegible] कि योगकर्त्ता ग्रह कौन है? उसमें यदि सूर्य हो तो शिर में चन्द्रमा के होने से मुख में, मंगल [illegible] में, बुध छाती में, गुरु नाभि में, शुक्र पीठ या जांघ में, शनि राहु तथा केतु इनके योग से पेट, [illegible] या दाँतों पर चिन्ह जानना चाहिए। **विशेष विचार-** सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर पाप ग्रह हों या लग्न में शुक्र और आठवें पाप ग्रह के होने से बाँई भुजा पर चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु होवे तो माथे या बाएँ कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११ इन स्थानों में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगल की ओर तिल का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थान में शनि हो, इसको शुक्र देखे तो गुदा (मलद्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।६ स्थान में शनि हो इसको ८वें बुध, गुरु लब्ध में या चौथे शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर पर शुक्र या तीसरे मंगल शनि हो, लग्न में आठवें सूर्य हों तो कमर में चिन्ह होगा। चौथे घर पर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो तो पादमुल या बाएँ पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६।११वें स्थान में बुध के होने से गुदा के समीप गोलाकार चिन्ह या व्रणादि होते है। छठे घर का स्वामी पाप ग्रह के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते है। लग्न में मंगल, सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या व्रणादि के चिन्ह हों। लग्न में मंगल, शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जानना।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान - यहाँ पर समभूमि से जो ऊँचा स्थान हो उसकी अंतरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनु और मीन ये लग्न हों उसका जन्म अंतरिक्ष में जानना, शेष लग्न हों तो समभूमि में जानना।

बालक का रोदन ज्ञान- जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न हों, तो बालक ने जन्म समय के बाद जल्दी ही रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या, तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया हो, शेष लग्नों में बालक ने देरी से शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान- लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार- लग्न और चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्न से सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्ध और सप्तम से लग्न पर्यन्त दृश्यार्ध होता है, लग्न से लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्ध में हों तो उपसूतिका घर के अन्दर और दृश्यार्ध में हो तो उपसूतिका बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति अवस्था आदि का विचार उन ग्रहों से ही कहना, परन्तु उन ग्रहों में जितने ग्रह उच्च के तथा वक्री हों उनकी संख्या को तीन से गुणा, अपने नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काण में स्थित की संख्या को दूगुना और नीच राशि में स्थित और अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके सूतिका के पास उपसूतिकाएँ कहनी चाहियें।

शिर: पादजात ज्ञान- शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म के समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो तो शिर से, पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय हो तो पैरों से और मीन का नवांश हो तो हाथ से जन्म जानना।

सूतिकागृह द्वार ज्ञान- केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका का गृह का द्वार जानना, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हो तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में कहना।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि-ग्रहों का अधिकार- पुरुष के शिर और मुख प्रदेश में सूर्य का अधिकार है, वक्षःस्थल और गले में चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठ स्थल और उदर में मंगल का अधिकार है। हस्त और पादों में बुध का अधिकार है। कटि प्रदेश और जघन स्थान में गुरु का अधिकार है। गुप्तेन्द्रिय और वृष्णों में शुक्र का अधिकार, जानु और उरु प्रदेश में शनि का अधिकार है। जन्म समय, प्रश्न समय और गोचर में जब-जब सूर्यादि ग्रह अनिष्ट-स्थान में जाते है तब पुरुषों के उपरोक्त अंगों को पीड़ित करते हैं।

मेषादि-राशियों का अंग-विभाग- कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनुः राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

अथ प्रसूति लग्न-विचार

मेष- सूतिका गृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लाल रंग के। प्रसव से पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव मे कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३। बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात- श्लेष्म कद छोटा, शरीर दृढ़। वाणी चंचल। कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८। **उपाय-** गोदान, तुला दान, मृत्युंजय जप इत्यादि। उपरांत आयु १०० वर्ष।

वृष- माता का शिर दक्षिण में, सूतिका घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्तपित्त। कष्टवर्ष १।२।८।३३।४४।६१। **उपाय-** अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युञ्जय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मिथुन- माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रंग के पुराने, प्रसव से पहले भोजन नमकीन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह हो, जन्म अंतरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर में, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, बालक के नेत्र रोगयुक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो। कष्टवर्ष ४।१०।१४।३८।५८। **उपाय-** शिवार्चन, मृत्युंजय जप, होम। उपरान्तु आयु ८६ वर्ष।

कर्क- माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तर में, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिन्ह, बालक का शिर मोटा, आँखें चंचल, प्रकृति वात श्लेष्म, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। **उपाय-** छाया पात्र, तुलादान, मृत- संजीवनी-मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह- माता का शिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८। **उपाय-** सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न- दान यदि कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष आयु हो।

कन्या- माता का शिर उत्तर में, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रंग के, मिष्ठान भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले और जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५। **उपाय-** मुद्‌गान्न दान, गोदान, मृत्युजंय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला- माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसव कष्ट अधिक, पिता क्लेश में, माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो, भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो दीपक हाथ में उठाया गया, बालक का रंग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।३१।३५।६२।६४। इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक- माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में, वस्त्र लाल या दग्ध, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग

श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। उपाय- तुलादान, मृत्युंजय जप और मिष्ठान भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनुः- माता का शिर पूर्व में, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान तथा माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थान या छत पर, रोदन स्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह २१।२०।२८।३१।३४।४२ वें वर्षों में महाकष्ट भोग कर बचे तो ८१ वर्ष जिये। उपायः कष्टकारक वर्षारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप और ब्राह्मण-भोजन कराने से कल्याण हो।

मकर- माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले, पुराने, शाकादि के साथ भोजन करके ठण्डा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर के बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। **उपाय-** रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ- माता का शिर पश्चिम में, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, साधारण कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घर में न हो, भूमि पर जन्म होने के चिर पीछे बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा. प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट २।२८।३३।४८।६४। **उपाय-** तुलादान, महिषीदान, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन- माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसृति गृह उत्तर भाग में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में, बालक जन्म के उपरान्त देर से रोया, माता ने ठण्डा जल पिया, उपसूतिका पहले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी हुई, आंखें भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८। इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। **उपाय-** मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय-जप कराने से कल्याण हो।

सूचना-* *जिस लग्न के लक्षण अधिक मिलें, वही लग्न ठीक मानना चाहिए। ऊपर लिखे लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये है अतः सम्भव है कि किसी-किसी स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति लग्न का विचार पहले लिखा जा चुका है।

बालारिष्ट के योग- जन्म लग्न से ६।८।१२ वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जानना। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक का आयु एक मास जानना। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़ें हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई को भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छटे चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हों बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जानना। जन्म लग्न से बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा,शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न बारहवें तथा छटे आठवें दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक की शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्ट भंग योग- बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमे से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान होकर यदि बृहस्पति लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पाँचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

माता-पिता को अरिष्ट योग- हर एक बालक के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में और ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल- चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हों तो पिता या गर्भवती की ६ मास में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घर धनी को महाभय अरिष्ट होवे। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ आदि का शीघ्र दान करें, घर में हवन शान्तिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन कर व्याहृति मन्त्रों से आहूति दें, जिससे शान्ति हो।

त्रिखल-जन्म-फल- तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, या तीन कन्याओं के पश्चात पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता-पिता को अरिष्ट, महामय धनहानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

दन्तोत्पत्ति फल- बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता को महा अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में

दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। १ मास में दाँत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनि नष्ट चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे मे बहुभोग, ७ वें मे पितृ सुख, ८ वें मे पुष्टि, ९ वें में धनी, १० वें में सुख, ११ वें सुख, १२ वें में धनी।

एकनक्षत्र जातक फल- पिता पुत्र, माता पुत्र या कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान, शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

गण्डमूल के नक्षत्र					
अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

ये ६ नक्षत्र गण्ड मूल कहलाते है, इन नक्षत्रों मे जन्मा हुआ बालक, माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वय का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव ऐश्वर्य हाथी, घोड़ो का स्वामी होता है। गण्डमूल मे जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्णदान आदि शांति कर पश्चात् शुभ बेला मे बालक का मुख देखें।

मूलनिवासचक्र

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूल निवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश	शुभम्

अथ मूलाश्लेषा-पादफल

मूल पादफल		अश्लेषा पादफल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फल	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या मे	स्वशरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि में	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

मूलजनने-वृक्षविभाग:

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्य:
मूलनाश	दश-नाश	मातृ-क्लेश	मातुलनाश:	मैत्री-पदम्	मत्री-पदम्	विपुल-लाभ:	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वो:	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्य.
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो:	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्य:
पशुनाश	धन नाश	धनलाभ	कुटिला	धनलाभ	दयाव:	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्य	फलम्

अथ अश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवाया	स्कधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्य:
पुत्रादि	पितृना.	मातृना	स्त्रीलाभ	गुरुभक्त	बली	आत्मह.	भ्रम.	तपस्वी	धनहानि	फलम्

अथ अश्लेषापुरुषवृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखाया	त्वचाया	लताया	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानि	मातृहानि	पितृहानि	अल्पायु:

अथ अभुक्तमूलविचार- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शाति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शाति, रुद्रार्चन, महामृत्युंजयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करे।

अश्विनी पादफल	मघा पादफल	ज्येष्ठा पादफल	रेवती पादफल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृभय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभाग
शुभम्	पितृनाश	मातृनाश	मातुलनाश	कुलहानि	[illegible]हानि	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटाकर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दे, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जाने। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहे, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करे।

सिनीवाली-कुहूजनन फल

सिनीवाली जनन फल- सिनीवाली उसे कहते है कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हों अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो। ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु प्रसूति हुए हों तो धन हानि, अपयश आदि भय होते है।

कुहूजनन फल- कुहू कहते है चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जाये। अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक-ठीक समय आयेगा प्राचीन गणित से नहीं), उस समय से बालक का जन्म या पशु जन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है। इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति-विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट-दोषों में जन्म फल- व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृ हानि, परिघ योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रांति दिन, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथि, महापात (क्रांति साम्य) विश्वधस्र पक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट-शात्यर्थ शांति-विधान करना चाहिए, ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हो।

स्त्री-दासी-गौ-आदि पशु-यमल जन्मफलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितासिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते।

जन्म स्थान विचार- जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्णचन्द्र लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर या जल के समीप स्थान में पैदा हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा कहना। लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नरराशि में शनैश्चर लग्न में हो और मंगल देखता हो तो शमशान के समीप जन्म हुआ कहना और नरलग्नगत शनि को शुक्र चंद्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना। बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय गोशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुध देखता हो तो शिल्पालय, चित्रकारी से बने हुए सुन्दर स्थान में जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहें।

अन्य शुभशुभ योग- मंगल शनि दोनों त्रिकोण में हो और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो जन्मा बालक माता से जुदा हो जाए तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता से त्यागा हुआ बालक दीर्घायु और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मंगल हो ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो बालक को छः अंगुली है ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मंगल हो, तो बायां नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक को दुःखित हो या नष्ट हो ऐसा कहें। मंगल, शनि, राहु पांचवें स्थान में हों तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह बृहस्पति हो, दसवें घर में सूर्य मंगल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८वें में, मंगल सातवें में, राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक की जन्मकुण्डली में लग्न में बुध, शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो, दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है, अर्थात् उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दसवें स्थान में मंगल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान, दीर्घायुषी, बुद्धिमान, चतुर (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्त्तव्यमान्, कीर्तिमान, सर्वमानी, राज में तथा जनमानस में बहुमानी, अधिकारी महान पुरूष होता है। लग्न में शनि हो छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो या चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जानना। दशम स्थान में पापग्रह हो तो पिता को अरिष्ट जाने। दशम स्थान में पापग्रह हो और दशम में मंगल शत्रु राशि का हो तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, सूर्य भौम तथा बुध हो तो बालक के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली में सातवें राहु छठे ८वें में चन्द्रमा हो शेष ग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक की आयु बहुत अल्प होती है ऐसा आचार्यों का मत है। शनि के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो या लग्न में मंगल, ८वें में गुरु हो तो बालक की केवल १२ वर्ष की आयु होती है। जन्म समय लग्न में छठे ८वें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश पाप ग्रह युक्त या परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है। मंगल के घर में बृहस्पति हो और ६।८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो या अष्टमेश क्षीण चन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता-पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहु के साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालक की कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहां का जन्म हो वहां के सूर्योदय से तथा उसी नगर की लग्न सारिणी से लग्न साधन करें। जन्म टाईम स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनावें। सूर्योदय और जन्म टाइम समान जाति के लेकर इष्ट साधन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आये।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तंथा, रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ- पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हां हां हीं हीं हुं हुं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानादरुद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रूदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चंदन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूँ के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग साँप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वांस, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्ण पोली, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूँ के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	ॐ भगवती हीं हीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं ग्राह-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना, कभी-कभी रोना, मोह, मुर्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर।	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथी दांत घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वांस, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वांस।	एक सेर गेहूँ का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायं. दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ हीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्यमांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुं २ हन २ दुष्टानां ह्रां हुं फट् स्वाहा।	

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
			१	२	३	४							
अश्विनी दस्रौ	वातज्वर, गात्रपीड़ा निद्राभय, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृत दीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य	सुवर्ण घृत कुम्भ	गुडौदन तिल	खण्ड यव घृत	अपमार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐअश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः।।
(भरणी) (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत गुग्गुल धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचड़ी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐयमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः।।
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्रपीड़ा, अनिद्रा अतिदाह, उरूशूल	९	९	११	१६	२८	श्वेत चन्दन गंध, जुही पुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुल धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका नैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायस घृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐअग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाᳪरेताᳪसिजिन्वति ॐअग्नये नमः।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिरपीड़ा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	३०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्णगौ दान, ५कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षोद्र शाख्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवःसुबे धन्याउपमाअस्य विष्ठाः शतश्चयोनिमसतश्चविवः ॐब्रह्मणेनमः
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९	५	७	१०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, पायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधि पायस	जयन्ती मूलम्	१० सहस्र	ॐइमन्देवा असपत्नᳪसुवध्यं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्यायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳪराजा ॐचन्द्रमसेनमः
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर सर्वाङ्ग पीड़ा, अनिद्रा	मृ. तु.	०	१८	०	०	श्वेत चन्दनगंध, सौरभ पुष्प, दशांङ्ग धूप घृतदीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्यामवृषभ दान श्याम वस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	सचंदनाश्च त्यमूलम्	१० सहस्र	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः। ॐरुद्राय नमः।।
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिरपीड़ा कटिपीड़ा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प अष्टगंध धूप, घृत दीप घृताक्तपीतवर्णान्नि नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्क मूलम्	१० सहस्र	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिमाता सपिता स पुत्रःविश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॐअदि०
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, [illegible]	७	७	७	१०	२१	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल, [illegible], [illegible]दीप, घृतपावस, शर्करा नैवेद्य।	सुवर्ण, गौ, पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं चेहि चित्रम्। ॐबृहस्पतये नमः।।
आश्लेषा (सर्प)	सर्वाङ्ग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसमकष्ट	मृ. तु.	०	०	४१	०	कुंकुम अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतक्षीर नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धगात्रपीड़ा	२०	१५	७	१७	२०	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतमिष्टान्न नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, माष दान	सतिलाज्य दुग्धान	तिल घृत तण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तापितरः पितरः शुन्धध्वम्। ॐपि०
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ. तु.	०	१५	०	३०	श्वेत चन्दनगंध, मालती पुष्प, घृतबिल्व धूप, घृतदीप अपूपोदनमोदक नैवेद्य।	पित्तल, यवमाषान्न, स्वर्ण, गौ दान	घृतौदन पायस	कङ्गनी तिलघृत	कष्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवाददन्नः। भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भवप्रनृभिर्नृ वनःस्याय।। ॐभगायनमः।
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर शिरपीड़ा अतिकष्ट	७	७	१४	७	६०	कर्पूर, केसरगंध अर्कपुष्प, घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, स्वर्ण रजत, अन्न, गौदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐदेवावध्वर्यू आगतरथेनसूर्यत्वचा मध्वायर्णᳪसमंजाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम।। ॐअर्यम्णे नमः।।
हस्त (सविता)	उरुशूल, अफारा सर्वांग पीड़ा प्रस्वेद	१५	१५	१७	१५	०	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान	मिष्टान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दध ज्ञपत चविहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॐसवित्रे नमः।
चित्रा विश्वकर्मा	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११	९	९	१६	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, विचित्रान्नमोदक नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य घृत तण्डुल	मखव मूलम्	१० सहस्र	ॐत्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदाछन्दऽ इन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदधः।। ॐविश्वकर्मणे नमः।।

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मंत्र
स्वाति (वायुः)	नानाकष्ट, ज्वरपीड़ा,	मृ.तु.	६०	१७	३०	०	चन्दनगंध (दमनकपुष्प) अगरु गुग्गुल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वा म सोम पीतये।। ॐवायवे नमः।।
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५	०	४	१३	चन्दन केसरगंध, कमलपुष्प, देवदारु घृतधूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृष छायापात्रदान	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगतꣳसुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता।। ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः।।
अनुराधा (मित्रः)	शिर पीड़ा, तीव्र ज्वर	स्थिर	६०	१२	३६	३०	केसरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव घृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतꣳसपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशꣳसत।। ॐमित्रायनमः।।
ज्येष्ठ (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	११	९	६	४	श्वेत चन्दनगंध, चम्पकादिपुष्प, कपूरधूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल, नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ।।ॐ शुक्राय नमः।।
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर रोग सन्निपात	७	०	९	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप, कृष्णागुरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारी पूजा	सहवि माषान्न	कंदमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणिꣳस्वेयोनावभारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिविश्वकर्मा विमुञ्चतु।। ॐ निर्ऋतये नमः।।
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कम्पन, महाकष्ट	मृ. तु.	०	१५	२४	१०	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न, नैवेद्य।	स्वर्णवस्त्र तिल तंडुल जल कुम्भ गौदान	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपाम्मार्गत्वमस्मदप दुःस्वप्न्यꣳसुव।। ॐ अद्भ्यो नमः।।
उ. षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा उरुशूल, प्रलाप	३०	३०	२४	२६	१६	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न स्वर्णदान	सहविपायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुतेमꣳहवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठय। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम्।। ।।ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।।
श्रवण (विष्णुः)	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोषमय, अतिसार	११	६०	२४	६	९	श्वेत चन्दनगंध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो र्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ विष्णवे नमः।।
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५	२	२७	२१	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण गौ	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।।ॐ वसुभ्यो नमः।।
शतभिषा (वरुणः)	वातज्वर, सन्निपात कष्ट	११	०	४५	३	३६	केसर अगरगंध, कमलपुष्प, कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न घट, अश्व छायापात्र	घृतचित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।। ॐ वरुणाय नमः।।
पू. भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता शरीर पीड़ा, त्रिदोष	मृ. तु.	०	१२	५१	१७	केसर चंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतोषधि मिश्रितधूप, घृतदीपक, दधिपायस, नैवेद्य।	स्वर्णरजत अन्न, श्वेतवस्त्र,छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु।। ।।ॐ अजैकपदे नमः।।
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल वात ज्वर	७	१०	२०	७	१५	चन्दन कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्रदान	तिल घृत मुद्ग माष	तिलाज्य यव	अश्वत्थ मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहिंꣳसी नवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याम।। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।।
रेवती (पूषा)	वात पित्तमय ज्वर उरुशूल, चित्तभ्रम	स्थिर	१८	१०	९	२०	रक्तचन्दगंध, मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्थ मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ।।ॐ पूष्णे नमः।।

घाततिथिर्घातवार: घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम्॥ } **अथ घातचक्र** { यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें। विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुषघातचद्र:	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घातचद्र:	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढ़ा

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधकचक्र)

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशीर्ष	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनि	अश्व योनी	गज योनी	मेष योनी	सर्प योनी	सर्प योनी	श्वान योनी	मार्जार योनी	मेष योनी	मार्जार योनी
गण	देव गण	मनुष्य गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	देव गण	मनुष्य गण	देव गण	देव गण	राक्षस गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लु, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ क, ४ की	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हू, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राश्यधिपति	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर

नक्षत्र	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी
योनी	मूषक योनी	मूषक योनी	गो योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	मृग योनी	मृग योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राश्यधिपति	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	वनचर	मानव	मानव	कीटक

नक्षत्र	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शततारका	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनि	श्वान योनी	वानर योनी	नकुल योनी	वानर योनी	सिंह योनी	अश्व योनी	सिंह योनी	गो योनी	गज योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देवगण
चरणांक / चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
राश्यधिपति	गुरु	शनि	शनि	गुरु
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	मानव	जलचर	मानव	जलचर

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणी:	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्यु ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढया	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढया	सुभगा	सुरुपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढया	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानाश	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	सुकृता	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्य नाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्री लाभ	रोगः	धर्म लाभ	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्री कष्ट	शत्रुभीः	शत्रु पीडा	शोकः	धनलाभ	धन नाश
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धन लाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमा	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्र लाभः	शत्रुभीः	शोकः	धन लाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	मयं	धननाश	एश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्ट	धन लाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धननाश	धन लाभ	वैर	शोकः	श्रीः	क्लहः	मृत्युः	दुःखं	वैर	सुख	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धन लाभ	क्लहः	रोगः	पापं	शौकः	कीर्ति	शत्रु भीः

अथ वर्षकुण्डल्यांतन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धन लाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रु नाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्.	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसर्न	दुर्भीति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सोख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्र लाभ	क्लेह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्रा.	अष्टम्	सुखम्	रोग	धर्म लाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धन लाभ	शत्रुभीः	स्त्री सुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धन लाभः	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्री कष्ट	रोग	भाग्याहा	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी.	कष्टम्	धर्म हानि	विजय	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्याना	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्था:	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसर्न	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य-लाभ	पादोपरि	स्थानलाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोषलाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रु मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोर्द्व	विजय	वक्षः स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आंत्रिक	कोषवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्रीलाभ

ग्रहाः गौचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः													जप सं.	जपनीय मन्त्रः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्तगौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्त वस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्व पुष्प	हाथी दांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीत वस्त्र	पीत पुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू.उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्ण वस्त्र	कृष्ण पुष्प	कस्तूरी	कृष्णगो	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नील वस्त्र	कृष्ण पुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्र वस्त्र	धूम्र पुष्प	नारियल	कंबल	कबरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथी दांत	मुथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि- (यथा सिद्धौषधै रोगन्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।।)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला इलायची देवदारु खस, केशर मुलहठी रक्त पुष्प रक्तकनेर	पञ्चगव्य गजमद शंख सिप्पी श्वेत चन्दन स्फटिक	बिल्वछाल रक्त चन्दन धमनी रक्त पुष्प सिंगरफ माल कंगनी मौलसिरी	गोबर अक्षत फल गोरोचन मधु मोती सुवर्ण	मालती पुष्प श्वेत सरसों मुलहठी मधु मालती	इलायची मनशिला सुवृक्षमूल केशर	कालेतिल सुरमा लोबान धमनी सौंफ मुत्थरा खिल्लां	लोबान तिल पत्र मुत्थरा गजदन्त कस्तूरी	लोबान तिल पत्र मुत्थरा गजदन्त छागमूत्र

सप्त धान्य- उड़द १, मूंगी २, कणक- (गेहूँ) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७।।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्लां, कांगनी, जव सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधी, लौध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करनेसे सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)।।

शनि विचार- गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः। द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये द्यना नादौ च विलोमतः।। **फलं-** नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृद मानसीव्यथा, चरणे भ्रमणं देशे देशः संचारयेच्छनिः।।

अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणीं प्रवदन्ति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्यार्धि बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्यु चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं, लोहं शस्त्र भयं, सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा।।१।। **अथ बृहत् कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्-** राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिर्नाना क्लेश करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीड़येत्। हानिः स्थान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामाकृद्धि विनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा।।२।।

अथ ग्रहाणां राशि प्रवेश समये पाद निर्णय- किसी ग्रह का राशि प्रवेश समय में पाद देखना हो तो अपनी राशि से जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि तक गिनें, वह संख्या २।५।९ हो तो रजतपाद, ३।७।१० में ताम्रपाद, १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना। गुरु सुवर्णपाद में शनि लोहपाद में, मङ्गल ताम्रपाद में, शुक्र रजतपाद में शुभ होते हैं। शनिवाहन- जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि बदले उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें, शेष क्रमशः शनि का वाहन समझें- १ गर्दभ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ छाग, ८ मयूर, ९ हंस। इसमें वाहनों के गुणानुसार फल समझें।

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७				राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्				आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४	श	२	६	१२
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	९	१८
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	च	१	४	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	च	१	६	०	मं	०	११	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	च	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४

शनि दशा वर्ष १९				बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
के	१	१	९	शु	२	१०	०	र	०	४	६	च	१	८	०
शु	३	२	०	र	०	१०	६	च	०	७	०	मं	१	२	०
र	०	११	१२	च	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
च	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
मं	१	१	९	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
बृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

त्रिराशिपति चक्रम

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.
सू.	शु.	श	शु	गु	च.	बु.
गु.	चं.	बु.	म.	सू.	शु.	श.
वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	
मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दि.	प.
शु	श.	मं.	गु.	चं.	रा.	प.

दशा का भुक्त भोग्य- गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणाकर फल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें, लब्ध अंक वर्ष। शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेष को ३० से गुणा कर भभोग की पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। इन्हें दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
श्र. आर्द्रा चित्रा			ध. पुनर्वसु स्वाति			श. पुष्य विशा.			अश्वि अश्ले अनु. पूभा.			भर. मघा ज्ये. उ. भा.			कृ. पूफा. मू. रे.			रो. उ. फा. पू. षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	गु.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सिं.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सिं.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सिं.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सिं.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सिं.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सिं.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सिं.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

अथांङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यताः
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द.कर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंधयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तोषः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथिवार नक्षत्र- यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन चारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पु. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है। **पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म्म-** पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र-सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत काञ्चयापात्रदान करना भी उचित है।

छिक्का फल- छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, धांस फल हीनीं।। छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबै सवारे।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारों भाई।।३।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

विविध मुहूर्त्ताः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने शुभाशुभ विचारः

शुभ मासाः - वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास और शुक्ल पक्ष श्रेष्ठ हैं।

शुभ तिथि- १।२।५।७।१०।११।१३।१५, कृष्णपक्ष में दशमी पर्यन्त मध्यम, उपरान्त नेष्ट। चन्द्र, बुध, गुरु शुक्रवार श्रेष्ठ। अश्विनी, रो. मू. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. श. ध. रे. नक्षत्र शुभ। पुन. कृ. म. वि. मू. नक्षत्र मध्यम, अन्य अशुभ। वृ. मि. कर्क, कं. तुला ध. मी. लग्न शुभयुक्त तथा शुभ दृष्ट हों तो प्रथम रजोदर्शन शुभ है।

अशुभ समय- अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता, अमावस, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ग्रहण, मार्ग में, कुदेश, उत्पात का समय इन योगों में प्रथम रजोदर्शन होवे तो अनिष्ट है। इसका यथा विधि जाति विधान करने पर शुभ होवे।

स्नान मुहूर्त- ह. स्वा. मृ. अश्विनी अनु. ध. रो. उत्तरा ३. पु. शुभ तिथि, शुभ वार में कुयोग रहित समय में, लग्नबल देख शुभनवांश में, प्रथम ऋतुमती स्नान करें।

अथ गर्भाधान मुहूर्त्त विचार- रजो दर्शन की ४ रात्रि को छोड़कर समरात्रि में, रो. मृ. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्र तथा मेष कर्क सिंह तुला ध. म. इन लग्नों में, लग्न से ३।६।११ वें में पाप ग्रह और र.मं.गु. लग्न को देखें तथा विषम राशि नवांश में हो, पति पत्नि को चन्द्र शुभ हो, ऐसे समय में गर्भाधान संस्कार करें। पुन. अश्वि. पुष्य चि. नक्षत्र गर्भाधान में मध्यम माने है। गर्भाधान में चन्द्रबल स्त्री को विशेष होना चाहिए।

गर्भाधानान्तर दश मासो के स्वामी- प्रथम मास का स्वामी शुक्र, द्वितीय का मंगल, तृतीय का गुरु, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ठ का शनि, सप्तम का बुध, अष्टम का गर्भ लग्नपति, नवम का चन्द्र और दशम मास का स्वामी सूर्य है। अष्टम मास में श्र. रो. पुष्य. नक्षत्र शुभ तिथिवार और अष्टम स्थान शुद्ध लग्न में गर्भ रक्षार्थ विष्णु-पूजन करें।

पुंसवन सीमान्त मुहूर्त्त विचार- गर्भ के द्वितीय तृतीय मास में पुंसवन करना चाहिए। छठे और आठवें मास में मासाधिपति बलवान होने पर सीमन्त कर्म करे। पुंसवन सीमन्त में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं है। र.मं.गुरूवार, मतांतर से सो. बु. शुक्रवार, दम्पत्ति का चन्द्रबल, तारा शुद्धि देख रो.,मृ.,पुष्य.,पुन.,हस्त,मू.,मं,उत्तरा ३ जन्म नक्षत्र बिना इन नक्षत्रों में तथा १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्ल पक्ष की तिथियों में, कृष्ण पक्ष में १० पर्यन्त शुभ, पूर्वान्ह श्रेष्ठ है। पुरुष संज्ञक लग्न तथा नवांश में लग्न से १।४।५।८।९।१० में शुभग्रह ३।६।११ में पापग्रह, चन्द्र १।६।८।१२ वें वर्ज्यकर अन्य स्थानों में हो ऐसे मुहूर्त में पुंसवन और सीमान्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

मेधाजनन संस्कार- नालछेदन से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर स्वर्ण सहित अंगुली से शहद में गौघृत मिलाकर '**ॐ भूस्त्वयि दधामि.**' 'ॐ

मन्त्रों से नवजात बालक को थोड़ा-थोड़ा मधु धृत चार बार चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान मुहूर्त- पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृति रिक्ता तिथि का त्याग कर शुभ तिथि वार में पुन पुष्य. मृ. ह. श्र. रे. नक्षत्र में स्तनपान करना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त- रिक्ता तिथि को छोड़कर शुभ तिथि, र. मं. गु. वार अश्विनी रो. मृ. तीनों उत्तरा, ह. स्वा. अनु. रेवती नक्षत्रों में कुयोग रहित दिन में प्रसूति स्नान शुभ है।

जल पूजन मुहूर्त- मास के समाप्त होने पर बु. गु. चन्द्रवार, रिक्ता अमावस रहित तिथियों में मृ. पुन. पु. ह. अनु. मू. नक्षत्रों जल पूजन श्रेष्ठ है। चैत्र, पौष, अधिक मास, गुरु शुक्र का अस्त, मास पूरा होने पर वर्ज्य करें अर्थात् एक मास तक इनका दोष नहीं।

जातक कर्म नामकरण संस्कार- जातक कर्म नाल छेदने के पूर्व करना योग्य है। उस समय न हो सके तो सूतक निवृत्त होने पर ब्राह्मण ११वें, क्षत्रिय १३वें, वैश्य १६वें, शूद्र २१वें दिन नाम कर्म पूर्वकुलाचार के अनुसार करें। सूतक समाप्ति पर ११वें या १२वें दिन जातक कर्म नामकर्म संस्कार न हुआ हो तो भद्रा व्यतिपात वैवृति संक्रांति रहित १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, शुभवार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. तीनों उत्तरा अभि. श्र. ध. श. रे. इन नक्षत्रों में लग्न नवांश बल की योजना कर विधि के अनुसार बालक के दक्षिण कर्ण में तीन बार राम कहें।

दोलारोहरण (बालक को झूले में झुलाना)- जन्म दिवस से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन रिक्ता अमावस रहित तिथि, शुक्रवार, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. तीनों उत्तरा रे. नक्षत्रों में शुभ होता है। सूर्य नक्षत्र से आगे ५ और पीछे ७ नक्षत्र शुभ होते हैं।

अथ निष्क्रमण मुहूर्त- बारहवें दिन बालक का निष्क्रमण करें। सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य और नक्षत्रों के दर्शन करावें। यह न हो तो तृतीय चतुर्थ मास में मं. श. वर्जित वारों में रिक्ता भद्रा अमावस आदि कुयोग रहित शुभ दिन में, अश्वि. रो. पुन. पुष्य. ह. अनु. स्वा. मू. श्र. ध. नक्षत्रों में शुभ है।

भूम्युपवेशन- पांचवें मास में पृथ्वी और वराह का पूजन कर रिक्ता अमा. रहित तिथि शुभवार, अश्वि., रो. मृ. पुष्य. हस्त. अनु. ज्ये. अभि. तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में बालक की कमर में सूत्र बांधकर पृथ्वी पर बिठावें। मन्त्र यह है- "**ॐ रक्षैनं वसुधे देवि! सदा सर्वगते शुभे! आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!।।**"

बालक को पृथ्वी पर बिठाने के समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, दवात, सुवर्ण, चांदी, शस्त्र, वेद की पुस्तकें, धान्य, मशीनें, छोटी मोटरें, इन्जिन आदि वस्तुएँ रखें, इनमें से जिस वस्तु को बालक पहले ग्रहण करे उसी से उसकी जीविका होती है, इसलिए आगे वही विद्या उसकी पढ़ाई जावे।

में कन्या को भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित १।३।५।[illegible] इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रे. इन नक्षत्रों में, जन्मलग्न या जन्मराशि से आठवां लग्न या नवांश तथा मीन, मेष, वृश्चिक लग्न को त्याग कर दशम स्थान में पापग्रह न हो तो अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

कर्णवेध- चातुर्मास (आषाढ़ शु.११ से कार्तिक शु. ११ तक) चैत्र पौष जन्म मास तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि ४।९।१४ और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें या १६वें दिन अथवा ६।७।८ वें मास में या विषम वर्षों में, शुभवार अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. चि. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, वृ. तु. ध. मीन लग्न और लग्न में गुरु हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ होता है।

मुण्डन चौल (चूड़ाकर्म) संस्कार- बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो ५ वर्ष से न्यून के बालक का चौलकर्म नहीं करना। ज्येष्ठ मास में नहीं करना, तथा चैत्र मास को छोड़ विषम वर्ष में उत्तरायण में, २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथियों में, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभिजित्, श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में। अष्टम स्थान शुद्ध होने पर चौल करना श्रेष्ठ है। तथा कुलाचारानुसार इष्टदेवता के आगे भी मुण्डन संस्कार और कर्णवेध कर दिया जाता है, यह 'यथा कुलधर्मतः' इस स्मृति के अनुसार ठीक ही है।

क्षौर करने के नियम तथा मुहूर्त्त- चौलकर्म की तिथि क्षौर नक्षत्र क्षौर (बाल कटाने) के लिए श्रेष्ठ है। रवि मंगल शनिवार, पूर्व क्षौर से ९वां दिन, ४।८।९।१४।१५।३० तिथि, संक्रांति, रात्रि, संध्याकाल, बिना आसन, सग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान करके शरीर में उबटन लगाने के अनन्तर भोजन के बाद क्षौर कराना अशुभ है। परन्तु विवाह, यज्ञ, मृतक कार्य, कारागार से छूटने पर ब्राह्मणाज्ञा, राजाज्ञा से किसी समय में क्षौर बनवा सकते है। राजकर्मचारी तथा रूपजीवी जैसे नट, भाट बहुरूपिये नाटक कम्पनी, फिल्म कम्पनियों में काम करने वाले प्रतिदिन क्षौर बनवा सकते है, उनके लिए मुहूर्त्त की आवश्यकता नहीं। ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय मंगल को, वैश्य शूद्र शनिवार को भी क्षौर बनवा सकते है, तथा ब्राह्मण को शाखेश के वार में भी क्षौर करवाने में हानि नहीं।

कन्या का नाक छेदन मुहूर्त्त- शुक्ल पक्ष, शुभ तिथि शुभ वार कुयोग रहित प्रथम प्रहर में कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, स्वाति शत. इनमें नाकछेदन करना शुभ है।

कन्या को सीना पिरोना सिखाने का मुहूर्त्त- रिक्ता अमावस रहित तिथि, रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। अश्वि. पुन. चि. अनु. ध. इन नक्षत्रों में कुयोगादि रहित शुद्ध दिन में कन्या को चन्द्र बल देख सीना कसीदा आदि का कार्य सिखाना आरम्भ करें।

अक्षरारम्भ- उत्तरायण में जन्म से ५,७ वें वर्ष २।३।५।६।११।१२ तिथि, शुक्रवार,अश्वि, आर्द्रा..पुन..पु..ह..चि..स्वा..अनु..अभि..श्र..रे. इनमें तथा चररहित लग्नों में गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त- उत्तरायण, फाल्गुन मास छोड़कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि तथा रवि, गुरू, शुक्रवार और अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुन. पु. आश्ले. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. उत्तरा तीनों और रेवती नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। र. मं. श. वार, रिक्ता तिथि, ज्ये. अश्ले. म. [illegible] शुक्र अंग्रेजी फारसी विद्यारम्भ के लिए शुभ है।

उपनयन संस्कार- बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११वें,वैश्य १२ वें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६वें, क्षत्रिय २२वें और वैश्य २४ वें वर्ष तक संस्कार करा सकते हैं। उत्तरायण देवशयन के पूर्व र. चं. बु. गु. शु. वार, सामवेदी को मंगलवार भी विहित है, शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथि अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य आश्ले. तीनों उत्तरा ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. क्रूरयुक्त तथा वेधरहित इन नक्षत्रों में उपनयन संस्कार शुभ है। बालक का गुरुबल तथा चन्द्रबल देखे। सामवेदी को भोमबल भी आवश्यक है। ज्ये. शु. २, आषाढ़ शु. १०, पौष शु. ११, माघ शु. १२, संक्रांति दिवस, रोगबाण (८।९।७।२६ रवि के गतांशाः) गुरु शुक्र के बालवृद्धास्त को छोड़कर पूर्वान्ह में तथा अभिजित् मुहूर्त में यज्ञोपवीत धारण करावें। लग्नेश और च. शु. गु. ६, ८ में और च. शु. १२ वें, पापग्रह १।५।८ में अशुभ है। वृष तथा कर्क का पूर्णचन्द्र लग्न में शुभ होता है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है।

अभिजित मुहूर्त्त- नित्य मध्यान्ह संधिकाल की एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ से १२ बजकर १२ मिनट दोपहर तक अभिजित् मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजितमुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा-

"अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत। मध्यंदिन गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिदाह्वयः।।
नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।"

अथ विवाह संस्कार

विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार है, इससे मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरूष पुरूषत्व को प्राप्त होता है। विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म जाति सेवा के साथ देव, ऋषि, पितृऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह-संस्कार का समय-निर्णय हमारे ऋषि-मुनियों ने अतिसूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोग सर्वकाल विवाह के लिए शुभ मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से कोर्ट में जाकर तथा कपोल-कल्पित नियमानुसार विवाह करवा लेते है, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान-विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आचार्यों ने किए है, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते है-

ब्रह्मचर्य के पश्चात मनुष्य अपने विषम वर्षों में गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या १६के पूर्व विवाह न करें। कन्या के समवर्षों मे शुभ मुहूर्त्त में कन्या का पिता वा पालक योग्य वर्ण के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें। कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण-मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पती अपना जीवन सुखमय

व्यतीत कर सकें। कई नास्तिक मतवादी यह कहते हैं कि इतना घटित मिलान करने पर भी कहीं-कहीं वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है, तथा दाम्पत्य वियोग होता है, यह क्यों? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए- (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्म पत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता, इसलिए वर कन्या के जन्म पत्र शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य केतकी गणित से ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बने हैं या नहीं? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करावें। (३) क्या ज्योतिषीजी ने बालक का जहाँ का जन्म है वही का सूर्योदय लेकर जन्म पत्र बनाया है? (४) क्या लग्नसारिणी एवं सूर्योदय जन्म स्थान के लेकर लग्नसाधन किया है? आदि बातों का निर्णय कर जन्म पत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवाकर मिलाने पर ही वह मिलान योग्य होकर फलदायक होता है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना- यदि कन्या और वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहाँ दोषाक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुणसंख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बाईं ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

जन्मम जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्।।

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म-नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें, यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है या दोनों का जन्म-नाम ही लें और जन्म-नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें। विशेषतः दोनों के जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है। यथा-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेःप्रधानत्व जामराशि न चिन्तयेत् ।।१।।
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।।२।।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता। कुर्यात्षोड्शकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ।।३।।

नाम राशि विचार

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामाराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्।।४।।
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।५।।
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाम भात् चिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा।।६।।

इत्यादि विचारों से विवाह-मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नाम राशि से ही मिलान करना चाहिये। जन्म नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें।

ताराबल विचार-कृष्णाष्टम्यूर्ध्वनो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबल ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु। तारापवादः- पर्याय प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वशंका वऽर्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यांशोविपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमो शुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१, १०, १९	२, ११, २०	३, १२, २१	४, १३, २२	५, १४, २३	६, १५, २४	७, १६, २५	८, १७, २६	९, १८, २७
जन्म शुभ	सम्पत शुभ	विपत् अशुभ	क्षेम शुभ	प्रत्यरि अशुभ	साधक शुभ	वध अशुभ	मित्र शुभ	परम मित्र शुभ

वर वरण मुहूर्त्त

पंचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार, कृ.रो.पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में, चन्द्र बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के यहाँ आकर पूर्वोत्तर या पूर्वा पर दिशा में बैठ कुंकुम वा केसर से वर के तिलक करे, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें। कुलानुसार रुपया, मोहर (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़ खजूर या बताशा वर के मुँह में देकर "मेरी बहन अमुक नाम की (भ्राता हो तो अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें) आपको दी है" ऐसा कहकर यह मन्त्र पढ़ें-

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे।
अव्यगेऽपतितेऽक्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति।।

कन्या वरण मुहूर्त्त :-

पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, कृ. पूर्वा. ३. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. वा. विवाह -होक्त नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार सहित फल पुष्पों से कन्या वरण कर कुलानुसार आचार करें।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधू, वर की सगोत्र और वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो। दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें। दो सगी बहनों का, दो सगे भाइयों का वा भाई बहिनों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो सकता है। पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह से पीछे मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करे। विवाह, उपनयन, चूड़ा, सीमन्त, केशान्त से ६ मास तक लघु मंगलकार्य न करें। संवत्सर भेद से जैसे मांघ, फाल्गुन में एक मंगलकार्य हो तो आगे चैत्र के बाद दूसरा मंगलकार्य कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं। ऊपर कहा हुआ ६ मास का व्यवधान तीन पीढ़ी तक के ही पुरुषों को कहा है, अन्य पीढ़ी के पुरुषों को यह बन्धन नहीं।

मंगलकार्य के मध्य पितृकर्म (श्राद्धादि) अमंगल कार्य न करें। वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शांति करके विवाह करने में हानि नहीं। विवाह के पूर्व नांदीमुख श्राद्ध के बाद तथा विनायक स्थापन (बड़ा विनायक) हुए बाद तीन पीढ़ी तक की मृत्यु हो जाये तो वह कन्या तथा वर कन्या के माता [illegible]

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-१)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या	वर ➤	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	चरण →	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
चरण ↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.
मेष ४	अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ −४	२२॥ −४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३२॥	२८	२२ +५	२५ +५	२५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६
मेष ४	भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०१	२१॥ −४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५−	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६
मेष १	कृ.	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३६०	१६॥ ४	२०	२० १	२२	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६
वृष ३	कृ.	१८॥ −४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	३३	३० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२२ १५	२२ +५	२३॥ +५
वृष ४	रो.	२३॥ −४	२३॥ ४	११ ३४	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	२०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५−
वृष २	मृ.	२३॥ −४	१४॥ ३४	१८॥ −४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२२	१९॥	२५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५
मिथुन २	मृ.	२७	१८ ३	२२	२१॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ −४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३
मिथुन ४	आ.	१९ ३	२७	२२ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० −४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
मिथुन ३	पुन.	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४−	२२॥ ०४	१७ −४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥
कर्क १	पुन	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१
कर्क ४	पुष्य	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३
कर्क ४	श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९ ३	२८	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६
सिंह ४	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ −२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४
सिंह ४	पूफा	२६ +५	१८ ३५	२० १५−	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० −१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४
सिंह १	उफा	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५−	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४−	२७॥ −१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२
कन्या ३	उफा	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+
कन्या ४	हस्त	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
कन्या २	चि.	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३
	नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.

कन्या	वर ➤	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
चरण ↓	नक्षत्र	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष ४	अ.	२२॥	२६॥ −२	२२॥	१८॥ −६	२५॥ −६	१४ ३६	१३॥ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६॥ +४	अ.
मेष ४	भ.	१३॥ १३	२१॥	२१॥ −१	१७॥ −१६	१७॥ ३६	१९॥ −१६	२० −१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० −१	२४ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	२६॥ +४	भ.
मेष १	कृ.	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ −६	२५॥ −६	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ.
वृष ३	कृ.	२२॥ −६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२१॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ.
वृष ४	रो.	१९ १६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५−	२४॥ −१	२४॥ −१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
वृष २	मृ.	१२ ३६	२५ −६	१८॥ −६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ.
मिथुन २	मृ.	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० −२६	२३॥ −६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ.
मिथुन ४	आ.	२० −१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ −६	२३ −६	१७॥ −१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ.
मिथुन ३	पुन.	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ −६	२३ −६	१७॥ −६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क १	पुन	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ −६	२१ −६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुन
कर्क ४	पुष्य	११॥ ३	२६॥	२१	१९ −५	१८ ३५	२१ −५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ −२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२० +५	१८ ३५	२७ +५	पुष्य
कर्क ४	श्ले.	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० −५	२६ −५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५−	२१ १५	१३ ३५	श्ले.
सिंह ४	मघा	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६−	१९॥ १६−	१३ ३६	मघा
सिंह ४	पूफा	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ −१	२३॥ ३	२५॥ −१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ −६	१७॥ ३६	२५॥ −६	पूफा
सिंह १	उफा	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ −१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ −६	२५॥ −६	उफा
कन्या ३	उफा	१६॥ १२४−	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ −६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उफा
कन्या ४	हस्त	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
कन्या २	चि.	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ −६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥	चि.
	नक्षत्र →	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

इसमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि) की गुण सारिणी दी है। ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, तिरछी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भाग में नीचे के महादोषों के चिन्ह दिये हैं। चिन्हों का काम यह है एक नाड़ी के दोष की जगह (३) गण महादोष (मनुष्य, राक्षस) के स्थान में १ भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६) नव पंचम में (५) (द्विर्द्वादश) में (४) वैर योनि में (२) लिखें हैं

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-२)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या	वर ➤		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ २५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	चि.
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ −६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा.
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ --६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० २५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ −५	१८ −५	१५॥ −५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४२	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ २५	१८ १५	९॥ ३२५	वि.
	४	अनु.	२४॥ −६	१५॥ ३६	१९॥ −६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ −५	१८ ३५	२१ −५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अनु.
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ −६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ −५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये.
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ·६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	मूल.
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ −२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ −१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४−	१५॥ ३४	१७॥ १४−	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	पूषा.
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	[illegible] १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ −१४	२६॥ −१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ −६	२२ −६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ −१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥	३०॥	२२॥ ३	उषा.
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ −६	२२ −६	२२ −६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	श्र.
	२	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ −६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३८२	१६ ४२	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० −५	२४॥ −५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	ध.
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	शत
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० −१	२४॥ −१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ २५+	२६ +५	२० −१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० −१४	२८॥ −१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ −१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ −१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ २५−	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	पूभा.
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ −१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ −१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ −१५	२४ −१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उभा.
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ −२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रेव.
	नक्षत्र →		अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

और जहाँ थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (-) चिन्ह है। जहाँ स्वामी मैत्री आदि के दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (+) ऐसा चिन्ह बता दिया और जिस जगह भर्ता के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष) है। वहाँ (०) शून्य का चिन्ह है। और जहाँ कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां गुण ही लिखे हैं।

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रि-ज्येष्ठ कहते है। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में भी विवाह होते हैं। इस पंचांग के प्रारंभ में देश भेदानुसार बहुत विचारपूर्वक सभी विवाह मुहूर्त दिये गये हैं।

त्रिबल शुद्धि :-

श्रेष्ठ गुरु :- जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु- १।३।६।१०वाँ।

नेष्ट गुरु :-४।८।१२ वाँ। उच्चमित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

श्रेष्ठ सूर्य :- ३।६।१०।११ वाँ पूज्य सूर्य १।२।५।७।९ वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।

श्रेष्ठ चन्द्र :- १।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ। पूज्य चन्द्र १२वाँ। नेष्ठ चन्द्र ४।८ वाँ।

उपनयन में बालक १६ वर्ष से ऊपर हो गया हो और विवाह में कन्या १८ वर्ष से अधिक हो गई हो तो स्वराशि (धनु. मीन राशि) और उच्च (कर्क राशि) का गुरु जन्म या नाम राशि से चौथा १२वां हो तो द्विगुण पूजा से और अष्टम हो तो भी त्रिगुणित पूजा से विवाह और उपनयन संस्कार शुभदायक होता है, ऐसा ऋषियों का मत है।

विवाह में स्तम्भ स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिये सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ की संक्रांति में नैर्ऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में अग्निकोण में विवाह कार्य के लिए स्तम्भ स्थापित करें।

वधू वर तथा बटु की राशि पर से तैलादि लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधू वर तथा बटु की राशि से दिन तथा मौंजी दिवस के पूर्व दिन लेवें।

१- **नृदूरदोष** - वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से नृदूर दोष होता है।

२- **कन्या दूर**- कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र बहुत दूर होने 'कन्या दूर' शुभ है।

३- कन्या राक्षस गण की हो और वर मनुष्य गण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हो तो विवाह कल्याणप्रद होता है।

४-वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।

५-कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।

६- वर कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हो तो विवाह शुभ होता है।

७- अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्यु षडष्टक) हो और राशि कूट मैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरूद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे।।

नाड़िदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्।।
एकनक्षत्रजातानां नाडिदोषो न विद्यते। अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहे वर्जितः सदा।।
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्ष मेतेषां नाडिदोषो न विद्यते।।

मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।

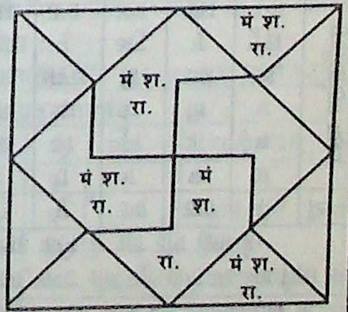
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वर। एतत्त्रिकोणकं ग्राह्य पुत्रपौत्रसुखावहम्।।

कुण्डली मिलान- वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी सुख, ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से दाम्पत्य में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो मनुष्य स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान् हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हों तो नेष्ट होता है। ऐसे ही वर को द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या की कुण्डली में परस्पर मारक हो तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या योग हो और कन्या की कुण्डली में पति सुख योग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुरयोग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्व को ग्राह्य मानकर मंगल आदि का दोष लिखा है। विशेषतः मंगल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या-विनाशकृत्।।

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है, इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली में देखना चाहिए। एक के तो मंगल हो तो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पापग्रह (शनि राहु) हो तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा-

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।



अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते।।
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत।।
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।।
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।

इत्यादि परिहार से भौम दोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम-अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली

का मिलान करे। परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक-ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्य योग जान पड़े तो शालिग्राम से, पिप्पल वृक्ष से, अर्क वृक्ष से, वा कुम्भ से यथा विधि विवाह कर गौदान, सुवर्ण-दान, महामृत्युंज्यादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य पुत्र, धन से युक्त होती है। इस पंचांग में आगे दी गई मेलापक सारिणी से गुण मिलान करें।

जन्मोत्थं च विलोक्य वालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।

विवाहांग कार्यारम्भ- पंचांग शुद्धि देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।९ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्र बल देखकर विवाह के नक्षत्र में जिस स्त्री को चन्द्रबल उत्तम हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना, कूटना, कलशादि स्थापना करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घडाना, वेदी रचना, चंदोवा, बांधना, वस्त्र सिलाना गणेशादि पूजन, नांदि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

विवाह में दश दोषों का विचार- विवाह समय निश्चित करने के लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्याग ने को लिखा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होने से दश दोषों का विचार करते है और इन दश मे से क्रूरयुति, वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा से पांच महा दोष ही विवाह में सर्वत्र वर्ज्य है।

चैत्र, पोष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासों में से रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य (महापात) और दग्धा-तिथि ये दश दोष है। इनका विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। हमने ये दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त्त इस पंचांग में दिये है। दोषों के क्रम से जहां दोष है वहां (S) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी खड़ी लकीर दी है। विवाह मुहूर्त्त में वर कन्या के जन्म मास, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र लग्न से तथा राशि से अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न तथा राशीश के शत्रु राशि का लग्न नवांश न लें। यह विवाह सूक्ष्म केतकी गणित से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। अन्तर वाले प्राचीन स्थूल गणित से विवाह मुहूर्त्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त होती है और अशुभ होने की सम्भावना रहती है।

यात्राविवाहोत्सवाजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चरुणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।

लत्तादोष चक्र १

ग्रहा.	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धन नाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धु नाश	कार्य हानि	कुल क्षय	मरण

उदाहरण :- सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से १२वां होने से यह सूर्य का लत्ता दोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष भी जानें।

पातदोष चक्र २ - हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि.न.
आर्द्रा पुनः श. पूफा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध म. ह.	अश्वि. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पूफा उभा. पूभा.	भ. मृ. श. पूभा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य. ह. रे.	अ. आ उषा. पूभा. पूषा. पूफा.	रो. ज्ये. ध. अश्ले. मू. उभा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उषा.	भ. श. वि. उफा. मृ. पूफा.	अ. म. ध. ज्ये. पूफा. स्वा	सूर्याक्रान्त नक्षत्र

३. युतिदोष :- जिस नक्षत्र का विवाह हो तो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युति दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू.मं.श.रा.के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

वेध दोष चक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अभि.	उषा.	पू.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेध दोष होता है, यह सर्वत्र विशेष रूप से त्याज्य है।

जामित्र दोष चक्र ५

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	वि.
अनु.	ज्य	ध.	पू. भा.	उ भा.	अ शिव	कृ.	मृ.	पुन	उ. फा	ह.	ग्र. न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र होता है। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है, अर्थात् १४ वें नक्षत्र में, पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्ज्य है।

बाणज्ञानाय सुलभ चक्र ६

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशिअर्कस्य	५कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय परत्वेन वर्ज्या
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यां
वन्हि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्य
नृप	४।१३।२२	नृप सेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यं
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्योः वर्ज्यम्

एकार्गल दोष ७- व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,

अतिगंड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

उपग्रह दोष ८- सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २४वें, २५वें नक्षत्र पर चन्द्र हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्तिसाम्य दोष चक्र ९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनुः	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

उदाहरण- मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में स्थूल क्रांति साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्ज्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। इस पंचांग के विवाह मुहूर्तों में गणितगत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है।

दग्धा तिथि दोषः १०

ध.	वृष	कर्क	कं.	सिंह	म.	सूर्य
मीन	कुम्भ	मेष	मि.	वृश्चि.	तु.	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय है।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यं च वाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्। लत्ता-दिदोषाणं परिहारवाक्यानि- लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरुक्षेत्र वागर जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गल च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्षकुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त बलखबुखारा) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्।। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितं भम्। त्यजेतु विद्धकिल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथया मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहार :- चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णत्रुतिम्वोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- चित्रां गते पातवित्रिदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रु-तिम्वोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा।। अत्यावश्यके। **वेध परिहारः-** पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)। अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयगो द्वितीयक चतुर्थगस्तु चादिमम् भिनति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः-भुक्तं भोग्यं तथाकान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः। अस्यापवादः- ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रू रभुक्तादिकानी च भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। जामित्रपरिहारः (व्यवहार समुच्चये)- स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्।। मुहूर्त्तचिन्तामणवपि- एकार्ग लोप- ग्रहपातलता जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः।।

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च. पापा.	०	शुक्र	०	०	च. शु. लग्नेश	सर्वे	चं.मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्या ग्रहाः
चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रान्ति साम्यंच				चं.	मं.	चंद्र भौम		विद्धभंच गौधूला त्याज्याः			

सर्वथा लग्नभंगयोगाः - व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखा न शस्ताः लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतो ग्लौः लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)।। वर्गोत्तमं विनांत्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्याशं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः।। दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतस्मोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः।। पग्वन्धादिलग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः। वादरायख :- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गहिताः।।

कर्त्तरी दोष :- लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वोः। सा कर्त्तरी स्याघ्जुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या"। केषाचिल्लग्नदोषाणां परिहारः- पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमी दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न।।

दोषापवादा ज्योतिर्निबंधे :- दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह। अपवादन्तरम्- उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसस्थे सितो वापि पन्नमान्यरुडो यथा। मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवाशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी।। अब्दावनर्तुमासोत्याः पक्षतिथ्यवर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसस्थे शुभग्रहे।। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्व ग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलय नयेद्।। बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्त्र लक्षमंगिराः।।

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	म.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्तगणपतौ
३	२	३	१।२	२।१	१।२	३	३	३		
६	३	६	३।४	३।४	४।५	६	६	६		लग्नं शुभं
८	११	११	५।६	६।५	९	८	८	८		विवाहे
१			९	९	१०	११	११	११	स्थानानि	स्याद्दशविंशो
			१०	१०	११					पकाधिकम्।
			११	११						
३॥	५॥	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार- लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवन शालिनी। तदा वै सर्वत्रर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्।। लग्न यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धेसति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते।। गोधूलि त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्तेशिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽधस्तिमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यता, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः।।

गोधूलिके त्याज्यदोषा:- कुलिकंक्रान्तिसाम्यश्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः।। **"अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।"** अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा।) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्त्त:- कृष्णे पक्षे भानुभौमार्कजानां वारे योगे चापि धिरण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्या।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु .	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च- सूर्यभात ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेध भृगुगुवैस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।।

वधू प्रवेश मुहूर्त्त :- जब विवाह होने पर वधू पति के घर पहले पहल आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर दिनों में अथवा ५,७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनो में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिन में तिथ्यादि पंचांग शुद्धि चन्द्रबल गुरु शुक्र के मूढत्वकां भी विचार नहीं करना। **"व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्।"** रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. भ. म. उत्तरा ३ पुष्य. अनु. इन नक्षत्रों और चं. बु. गु. शु. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में, २।५।८।११ लग्नों में, चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह:- वधू प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः।।

द्विरागमन मुहूर्त्त :- पिता के घर से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते है विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे वा ५वें वर्ष में वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु, वा शुक्र वार में, २।३।६।७ या १२वीं राशि के लग्न में, ह अश्वि. रेवती तीनों उत्तरा. रो.स्वा.पुन.पुष्य.श्र.ध.श.मृ.मू. चित्रा और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है।

सम्मुख दक्षिण निषेध:- सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृह से पति के घर जाना निषेध है। सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में नव वधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो। गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न हो, परन्तु रेवती से मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं। यथा- **रेवत्यादि मृगान्ते च यावतिष्ठति चन्द्रमा। तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभ:।।** अति आवश्यकता में शुक्र की शान्ति कर श्वेत वस्त्र, छत्र, स्वर्ण दान देकर जावे। राजविग्रह उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, देवता यात्रा आदि में जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं।

विवाह के पश्चात वधू के रहने का नियम :- विवाह के पश्चात प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ता के घर रहे तो पति के ज्येष्ठ भ्राता को, अषाढ़ में सास को, पौष में ससुर को अधिक मास में अपने आपको हानि करती है। चैत्र में पिता के यहां रहे तो पिता को हानि करती है। ज्येष्ठादि के अभाव में (न हो तो) उस मास का कोई दोष नहीं होता।

प्रथम युवति स्त्री संगम मुहूर्त्त :- पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्री के बाद समरात्रि में, रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३ रे. रिक्ता अमावसरहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित को प्रसन्न कर प्रथम स्त्री प्रसंग करे।

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त्त :- पंचांग शुद्धि देखकर वधू को चन्द्रबल देख, रिक्ता और क्षयरहित तिथि, शुभवार कृ.रो.मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि.ज्ये.श्र.ध.श. रेवती इन नक्षत्रों में २।५।८।११ लग्नों में, लग्न चतुर्थ अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान होने पर नूतन वधू से रसोई बनवाये।

पतिगृह से पितृगृह आने का मुहूर्त्त :- गुरु, चन्द्र, शुक्रवार शुभतिथि, भ.आ. अश्ले. मघा. पूर्वा.ज्ये.मू. इन नक्षत्रों के बिना अन्य नक्षत्रों में शुभ लग्न पंचांग शुद्धि देखकर मुहूर्त्त निश्चित करें।

स्त्री को वस्त्रा भूषण धारण मुहूर्त्त :- रिक्तामारहित तिथि चं. गु. शु. बु. वारा. अश्विनी ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. इन नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना शुभ है।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त्त :- आश्विन, का., वै., माघ., मार्ग., फा. तथा मेष, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ के सूर्य १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि, र.शु. गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन, पुष्य, स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. अनु. रो. मृ. वि. ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रों में लग्नसे ३।६।११ वें पापग्रह १।४।५।७।९।१० वें में शुभ ग्रह, चन्द्र ताराबल सहित, गुरु शुक्र के उदय में, शुभ लग्न मृत्यु आदि कुयोग रहित समय में, विष्णुका स्थिर में, शिव का चर में, दुर्गा का द्विस्वभाव लग्न में, कूर्मचक्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति।।

बावड़ी, बगीचा, तालाब, कूआं, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ व्रतोद्यापन दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन) देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये

कर्म गुरू के अस्त, बाल वृद्धत्व और मलमास में करना निषेध है।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा॥

कुयोग परिहार- तिथि वार में उत्पन्न हुए क्रकच (वारदग्ध) मृत्यु आदि रोग हूणदेश बंगाल और खसदेश (शिलांग) में ही वर्ज्य करने चाहिए, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्धं पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः। व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्या सर्वेषु कर्मसु॥ परिघयोग का अर्धयोग, शूल योग की ५ घटी, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, सर्व कार्य में वर्ज्य करें। तथा जन्म मास, जन्म तिथि जन्म नक्षत्र व्यतीपात, वैधृति, भद्रा पितृदिन, श्राद्ध, तिथि का क्षय, वृद्धि काल, अधिकमास, क्षयमास, कुलिक प्रहरार्ध पात, महापात (क्रान्तिसाम्य) और विष्कम्भ योग की तीन घटी प्रारम्भ की सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त- रिक्ता तिथि और मंगल के अतिरिक्त अन्य वारों में ह.वि.रो. रे. तीनों उत्तरा, पुष्य, अनु., अश्वि., अभि., नक्षत्रों में कुम्भ लग्न को त्यागकर अन्य लग्नों में, २।१०।११ भावों में शुभ ग्रह हो, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, चन्द्र शुक्र लग्न में हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि.रो.मृ.पुन. उत्तरा ३ ह.चि.अनु.श्र.रे. नक्षत्र रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु.शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो और ८।१२ वें स्थान में पाप ग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाक्रम (नौकरी) मुहूर्त्त- अ.मृ.चि.ह.पुष्य.अनु.रे. नक्षत्र, रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु.शु. वार शुभ ग्रह लग्न में हो, १०वें या ११वें सूर्य मंगल हो तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवक की परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार- **नीचराशिगते चन्द्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।**
चन्द्रेष्टमारिरिः फस्थे दोषो नास्ति न सशयः॥

अष्टम भौमदोष परिहार- **नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते॥

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार- **नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त्त- पुन.स्वा.मृग.रे.चि.अनु.वि. पुष्य श्र.ध.श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल- मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग हस्त नक्षत्र युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ.रो.आर्द्रा.अश्ले.उ.३.वि.ज्ये.मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यातिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईट का भट्ठा- में आग देने या ईट बनाने में मंगल और शनिवार शुभ है।

श्री काशीनाथमते क्रय-विक्रय मुहूर्त्त- पुष्य.पू.भा.अनु.श्र.ह.म.स्वा. उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु.भेषु सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु बेचने के नक्षत्र- पू.फा.पू.षा.पू.भा.वि.कृ.अश्ले.भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये है, **नोट-** बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ प्रतिशत हानि रहेगी, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचनेके नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० वार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य है।

नालिश अर्जी का मुहूर्त्त- ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो। कृ.आ.पुन.अश्ले.म.ज्ये.मू.वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार- गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणाकर आठ का भाग देवे जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होती है। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए। और देवस्थान की भूमि को बाहर से नापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्रह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वास्तुकर्तु नक्षत्र यावद् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तके	७	धनलाभ
पृष्ठे	७	हानि नैःस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान- घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई, चौड़ाई के गुणन) को ८ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय कम हो तो शुभ है, अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमिका शुभाशुभ जानना- नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमि पूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एकहाथ लंबा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें, यदि

जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा- मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले, अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त- वैशा.श्रा.मार्ग.फाल्गुन और मे. वृष. कर्क. सिंह. तुला वृश्चिक मृग कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे है, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११। १२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.,बु.,गु.,शु.,श. वारों में रो., मृ., चित्रा ह., स्वा., अनु. उत्तरा ३ ध. श. रे. बेध रहित नक्षत्रों में १।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पंचवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पाप ग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्
सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भे नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष	फल
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष- पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. श्र. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते है। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्- "संक्रांति मिति दिन पाचवें, सप्तम नवमे जाय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।९।१२।२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाश:	गृहेशनाश:	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गो॥ त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्रविचार- सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्यु प्रद। २ चरण के नाशक। ८ बाहु के सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुजा के भोगदायक। यह चुल्लिकचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त- माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभन:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयो:॥ (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में, रिक्तामारहित तिथियों में, चं.बु.गु.शु. इन वारों में, २।५।८।११ लग्न में। अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर ग्रह हों, १,६,८,१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वी राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो ऐसे समय में आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्य के साथ से दम्पत्ति को गृह-प्रवेश शुभ है।

गृह प्रवेश का विशेष मुहूर्त्त- पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै.श्रा.का.मार्ग.फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठेदिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी.मेष वृष	मि.कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनु: मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिंह कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशायारम्भे सूर्य:	मं. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु:
खातदिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैऋत्यां

द्वारशाखाचक्र सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	नक्ष	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश:
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त- अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ, नक्षत्र हों या चन्द्रमा मकर के उत्तरार्द्ध, मीन या कर्क में हो लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ईशान ३	पूर्व ३	आग्नेय ३
क्षार जल	खण्डितजल	सुजल
उत्तर जल	मध्य ३ स्वादु	दक्षिण ३
उत्तम जल	तथा शीघ्रजल	निर्जल
वायव्य ३	पश्चिम ३	नैर्ऋत्य ३
मिश्रितजल	जल	अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणा दिक्रमेण बोध्यम्

ईशान अ.भ.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.अश्ले जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. सुजलम्
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजल	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव:
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजल	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजम्

सूर्यभात्तड़ाचक्रम्

ईशान २	पूर्व २	आग्नेय. २
जलनाश	शोक	जलाधिक्य
उत्तर २	मध्य ५	दक्षिण २
अमृतं जल	बहुजल	जलनाश
वायव्य २	प. २	नैर्ऋत्य २
जलनाश	बहुजल	अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलं-वारिवाहे वारिहानि:। गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द. नै.प.वा.उ.ई. मध्य, वारिवाह। वाहे चामृत संज्ञकम्।

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे,
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा:,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.उत्तरा. ३.रे.एषु भेषु, कुजशनिवर्जिनवारेषु, २।३।५।६।७। ८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयो: नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तु: सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु। लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभि: पापै:, पूर्वान्हे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्- सिंहे सूर्य: शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्य: स्त्रियां हरि:। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्रा द्वयगदेव्य: स्थिरेऽखिला:।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तम:।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त:- श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तियौ बलिदानपुरस्परं वास्त्वर्चनं कार्यम्।।

अग्नि का वास किस लोक में है- जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुन: ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लगजाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है,शेष १बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि ही गणना शुक्ल प्रति पदा से,वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहूति-चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष- यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्येननैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी:। दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रु विग्रहै। शान्तिक्रमे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्ति :- क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे। शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रर्चिता प्रतिमां तत:। कुण्डे निवाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी-धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिक: स ऋणी भवेत्।।

यथा- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना। फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगूना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना।

भूमि का लेन-देन- गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पूफा. वि. अनु. मूल. पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त - मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु. भेषु, रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हल चक्रम्
सूर्य भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने

३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहु चक्रम्
राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त- ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो. मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभ:।

विशेष- रवेरौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमे: संजायते रज:। तस्माद्दिनत्रंयतत्तु बीजवापे परित्यजेत्।

नवान्नभक्षण मुहूर्त्त- मू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विष घटी रहित नक्षत्रों में शुभ है। नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू.बु.गु. शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त- अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थ लाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक, फिर दो-दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्र-गणना क्रम शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिने (नौमी चौदस चौथ चौपाया, मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहाराआदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त- मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३ रो.ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।९।११।१२ लग्न में शुभ है। तृणकाष्ठादि संग्रह निषेध तृण कष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चंद्रमा में नहीं करना चाहिए।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त- धनि.,अश्वि.,हस्त-चित्रा.,अनु.,पुन.,पुष्य.,ज्ये. एवं रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध मुहूर्त: ह. अ. पुष्य अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल. जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

यात्रा मुहूर्त्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम। रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य है। आत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों मे आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४।११।४०।१४।१४।१४ घटियां यात्रा में त्याज्य करें। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है। जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें।

चन्द्रवास

मेष, सिंह, धनुः का चन्द्र पूर्व में। वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में। मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिम में। कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्र उत्तर दिशा में। सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः। सर्वे दोषाः लयं यान्ति पुर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

अथ योगिनीवास चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा
चंद्र	रवि	गुरु	बुध	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार

कालराहु चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	दिशा
श	शु.	गु.	बुध	मं.	चं.	र.	वार

समय	शूल	आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः							
प्रातःकाल	पूर्वदिशा	र०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	वा०
मध्याह्न	दक्षिण	घृत	पय	गुड	पुष्प	दधि	घृत	तिल	भक्ष
संध्याकाल / अर्धरात्रि	पश्चिम / उत्तर	ताम्बुल	चन्दन	मद	तिल	दधि	यव	माषान	धारण

संमुखकालवासवर्ज्यम्

एकराशिस्थ चन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१७	३२	५१	६९	८६	१०१	१३१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि- जन्म लग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त सिंहस्थ गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

लग्न शुद्धि- शुभग्रह १।४।५।७।९।१० वें पापग्रह ३।६।१०।११ वें श्रेष्ठ हैं। चन्द्रमा १।६।८।१२ वें, लग्नेश ६।७।८।१२ वें शनि १० वें शुक्र ७ वें नेष्ट है।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नेऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोश्री	ति.अ.	वस्तुनि

अथ नक्षत्रशूलम्

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
ज्ये.	पूभा.	रो.	उफा.	भानि

यात्रानिवृतौ प्रवेशः- १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथि। चं. बु. गु. शु. श. वार। अ. रो. मृ. पुष्य. उ. ३ ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र. रे. ध. श. नक्षत्र। ३।५।६।८।९।११।१२ लग्न, ४।८ शुद्ध हों १।४।७।१०।५।९स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ वें में षापग्रह हो। शुभ नवांश में प्रवेश करें।

यात्रायां शुभशकुनानि- विप्र २ अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि,

मत्स्य, सयुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाण समये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति। अशुभशकुनानि-वन्ध्यास्त्री, चर्म, ईन्धन, सन्यासी, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बेकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, सेवन, शत्रु, महिषयुद्ध, छिक्का, दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा भवन्ति।

सर्वाङ्गसिद्धि योग- शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना। शेष प्रथम जगह में शून्य हो तो यात्रा में क्लेश, मध्य में शून्य हो तो धन क्षति और अन्त में शून्य हो तो महाकष्ट होता है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्- यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम्। विप्रादि क्रमत. स्वर्णसर्वधान्याम्बरादिकम्। (सर्वे स्वप्रियवस्तु वा)। गमनदिशी नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विपादिभिः यज्ञोपवीतादिना प्रस्थानं कार्यम्। तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्यजन ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या। परतोऽन्यमुहूर्त्तस्यावश्यकतां बोध्या। प्रस्थानकर्तुर्नियमाः- त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म्म च। तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्येजत् ।।१।। कटुतैलगुडक्षार पक्व मासाशनं तथा। भुक्त्वा यो यात्ससौ मोहाद् व्याधितः स निवर्तते।।

उ (उद्वेग) च (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)

इस चर्तुघटिका मुहूर्तमें ३।।। घटी की जगह दिनमान व रात्रिमानके अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं।

जन्मनक्षत्रप्रशंसा:- कृषि-भवन-विवाहोन्नाशने मौञ्ज्यब्दे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादि कृत्ये। पष्टाविशिष्टाभिषेके जन्मभद्रः प्रशस्त इति वदति वराहः क्षौर-यात्रां विहाय।। गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्ज्यब्दे। पाणिपीड़े प्रयाणे वर्ज्या द्वादशैवः शुभः।।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्त								रात्रो चतुर्घटिका मुहूर्त्त						
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	घटी	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	३।।।	अ	रो	ला	शु	चं	क	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	३।।।	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३।।।	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	र	ला	शु	चं.	३।।।	का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३।।।	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	ला	शु	चं	का	उ	अ	३।।।	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
रो	अ	रो	ला	शु	चं	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

कार्यसिद्धिज्ञानम्- लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिवस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्दिदौ ।।१।। एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यम्भवत्यन्यथा सन्देहः।

प्रश्नतो वर्षशुभाशुभविचार- तिथिवारर्क्ष योगानां युतिः संवत्सरान्विता। प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहता शेषके फलम् ।।१।। एकेन क्लेश, समता द्वाभ्यां, त्रितये महत्सुखम्।

पथिकागमन विचार-

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम्। अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।।
एकेन गमनं भवति द्वाभ्यां मार्ग उच्यते। तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमागतः।।
पञ्चमे पुनरावृत्ति षष्ठे व्याधि समन्वितः। सप्तमे शून्यतावृत्ति अष्टमे मरणं ध्रुवम्।।

प्रश्नाक्षरों को द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उनका फल इस प्रकार बताए- १. आने की सोच रहा है। २. चल पड़ा है। ३. रास्ते में है। ४. शीघ्र आ जाएगा। ५.ठहर के आएगा। ६. अस्वस्थ है। ७. नहीं आएगा। ८. मृत्यु या कष्ट में है।

देशान्तर से पत्र आयेगा कि नही?- प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो पत्र जल्दी आयेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। प्रश्न लग्न में चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आयेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

पुत्र लाभ होगा कि नही?- तत्कालीन तिथि की संख्या को ४ से गुणाकर, १ जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योग की संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये उसको तीन से गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगा, चिरंजीविता के लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचें तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराण का नवान्ह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवालक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करें। ३ शेष बचे रहें तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें, या उस विवाह में गुप्त दान से मदद करें, ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। ४।१।० शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी।

विवाह होगा कि नही?- यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ स्थानों में चन्द्रमा को वृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य. बुध वृहस्पति इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा या शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जायेगा।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन- प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलाये या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध हो। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीध सिद्धि हो, यह फल कहे।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू.भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी पर हों तो रोगी की मृत्यु होती है। प्रति दिन देखने से जिस दिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्ध के समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम- तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष, जल, शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष,चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष कहें। सूर्य के होने से देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहें। शनि के होने से अपने गोत्रकी देवी(सती)का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जलदेवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्म निष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोष सूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो, बलवान हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होते है। बलवान् पाप ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते है, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानों में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्- तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना। "उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ।।१।। राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्राश्च (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युगा (४), सप्त (७), दशा (१०), ऽर्काः (१२) नात्र जीवति।"

अथ गर्भिणीपुत्रादि ज्ञानम्- तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः।।१।। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्र की अश्विनी से करना।

आयुनिर्णयः- जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्र से आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्न से प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे, मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावे अल्पायुः। १।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में लग्नेश अष्टमेश तथा दशमेश हो तो दीर्घायु होती है। २।३।४।५।८।१२ इन स्थानों में पापग्रह हो तो मध्य आयु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायु, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तु ज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् । दिक संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तथा।।
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके।।
तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्।।

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो.पुष्य.उ. फा.वि.पूषा. ध.रे.	मृ.आश्ले. ह.अनु.उषा. श. अ.	आ.म.चि. ज्ये.अभि पूभा.भ.	पुन.पू.फा. स्वा.मू.श्र. उभा.कृ.	नक्षत्रा-णि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवण	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात)
१ भ्रमति वनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ ग्रहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न- यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घर में हो तो हार जायेगा। यदि लग्न और सप्तम स्थान में पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्न स्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थान में दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते हैं। प्रश्न काल में लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम−अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
अंकलेश्वर	२१।३८	७३।०३	−३७।४८	१६/३६	आर्वी	२०।५९	७८।१३	−१७।०८	+०४।०४	एरनाकुलम	०९।५९	७६।१८	−२४।४८	+०३।३६	कालका	३०।४७	७६।५७	−२२।१२	−०१।००
अंजार	२३।०७	७०।०१	−४९।५६	−२८।४४	आर्द्रा	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६	ऐरंडोल	२०।५५	७५।१९	−२८।४४	−०७।३२	कालीकट	११।१५	७५।४५	−२७।००	−०५।४८
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	−३७।२०	−१६।०८	ओरवा	२२।२८	६९।०५	−५३।४०	−३२।२८	ऐल्लोर	१६।४३	८१।०५	−०५।४०	+१५।३२	कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	−३८।१६	−१७/०४	अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	−३१।४०	−१०।२८	एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	−१९।४८	+०१।२४	कासगंज	२७।४८	७८।३९	−१५।२४	+०५।४८
अंबाला	३०।२३	७६।४६	−२२।५६	−०१।४४	अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	−१६।२८	+४०।४४	ओरछा	२५।२१	७८।३८	−१५।२८	+०५।४४	किशनगंज	२६।०७	८७।५८	+२१।५२	+४३।०४
अंबिकापुर	२३।१०	८३।१५	+०३।००	+२४।१२	अलीगंज भो.	२७।२०	७९।१२	−१३।१२	+०८।००	औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	−२८।४४	−०७।४०	किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	−४७।२८	−२६।१६
अकलकोट	१७।३३	७६।१३	−२५।१२	−०३।५२	अलीगंज ह.	२६।१२	८४।०८	+०६।३२	+२७।४४	ओरंगा वि.	२४।४५	८४।२५	+०७।४०	+२८।५२	किशनगढ़ अ.	२६।३५	७४।५१	−३०।३६	−०९।२४
अकोला	२०।४३	७७।०२	−२१।५२	−००।४८	अमेठी	२६।०७	८१।४७	−२०।५२	+१८।२०	कांकरोली	२५।०२	७३।५४	−३४।२४	−१३।१२	किशनगढ़ ज.	२७।१०	७५।२२	−२८।३२	−०७।२०
अगरतला	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६	अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५।०८	+५६।२०	कांडला	२३।०१	७०।१४	−४९।०४	−२७।५२	कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	−१२।२८	+०८।४४
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	−३८।४८	−१७।३६	अमरोहा	२८।५४	७८।३४	−१५।४४	+०५।२८	कडपा	१४।२८	७८।४९	−१४।४४	+०६।२८	कुमठा	१४।२५	७४।२४	−३२।२४	−११।१२
अचलपुर	२१।१९	७७।३०	−२०।१०	+०१।१२	आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२	कडी	२३।१८	७२।२०	−४०।४०	−१९।२८	करूड़वाड़ी	१८।०५	७५।२५	−२८।२०	−०७।०८
अजन्ता	२०।३६	७५।३६	−२७।३६	−०६।२४	इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	−३५।४०	−१४।२२	कडोद	२१।१३	७३।१४	−३७।०४	−१५।५२	कुशलगढ़	२३।०८	७४।२७	−३२।१२	−११।००
अजमेर	२६।२७	७४।४०	−३१।२०	−१०।०८	इचलकरंजी	१६।४१	७४।२७	−३२।१२	−११।००	कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८	कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	−१९।४०	+०१।३२	इटारसी	२२।३७	७७।४६	−१८।५६	+०२।१६	कटनी	२३।५०	८०।२३	−०८।२८	+१२।४४	कृष्णा	१६।२५	७७।१९	−२२।४४	+००।२८
अनन्तनाग	३३।४४	७५।१०	−२९।२०	−०८।०८	इटावा	२६।४७	७९।०२	−१३।५२	+०७।२०	कटोमण	२३।२८	७२।१४	−४१।०४	−१९।५२	केशरीयाजी	२४।०५	७३।४०	−३५।२०	−१४।०८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	−४५।१२	−२४।००	इटावा बीना	२४।१०	७८।११	−१७।१६	+०३।५६	कोण्णूर	११।५१	७५।२१	−२८।३६	−०७।२४	कोचीन	०९।५८	७६।१५	−२५।००	−०३।४८
अमरावती	२०।५६	७७।५१	−१८।३६	+०२।३६	इन्दरगढ़	२५।४४	७६।१२	−२५।१२	+०४।००	कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	−१९।३६	+०१।३६	कोटा	२५।११	७५।५०	−२६।४०	−०५।२८
अमलनेर	२१।०३	७५।०३	−२९।४८	−०८।३६	इन्दौर	२२।४३	७५।५३	−२६।२८	+०५।१६	कन्नौज	२७।०२	७९।५८	−१०।०८	+१०।५६	कोटायम	०९।०५	७६।३२	−२३।५२	−०२।४०
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	−३०।२८	−०९।१६	इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	−२।३२	+१२।४०	कपडवंज	२३।०२	७३।०५	−३७।४०	−१६।२८	कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	−२०।०८	+०१।०४
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	−०१।०४	+२०।००	इलोरा	२०।०५	७५।१०	−२९।२०	−०८।०८	कपूरथला	३१।२२	७५।२२	−२८।३२	−०७।२०	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	−३३।०८	−११।५६
अलवर	२७।३४	७६।३८	−२३।२८	−०२।१६	ईडर	२३।५०	७३।००	−३८।००	−१६।४८	करजत	१८।५५	७३।२०	−३६।४०	−१५।२२	कोन्नूर	११।२०	७६।४८	−२२।४८	−०१।३६
अल्लेपि	०९।३०	७६।२२	−२४।३२	−०३।२०	उज्जैन	२३।११	७५।४३	−२७।०८	−०५।५६	करमाला	१८।२४	७५।१२	−२९।१२	−०८।००	क्वीलोन	०८।५३	७६।३८	−२३।२८	−०२।१६
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	−११।२०	+०९।५२	उधना	२१।१२	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२	कर्णूल	१५।५०	७८।०३	−१७।४८	+०३।२४	कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	−५१।२०	−३०।०८
अलीबाग	१८।३९	७२।५०	−३८।४०	−१७।३६	उमरखेड	१९।३६	७७।४१	−१९।१६	+०१।५६	करनाल	२९।४२	७७।०२	−२१।५२	−००।४०	कांगड़ा	३२।०९	७६।१८	−२४।४८	−०३।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	−१७।४०	+०३।२८	उटकमंड	११।१७	७६।४४	−२३।०४	−०१।५२	करमसद	२२।३४	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२	कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	−४३।३६	−२२।२४
अहमदनगर	१९।०५	७४।४४	−३१।०४	−०९।५२	उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	−३५।१२	−१४।००	करीमनगर	१८।२८	७९।०६	−१३।३६	+०७।३६	काबुल अफ.	२४।२७	६९।०६	−५३।३६	−३२।२४
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३७	−३९।३२	−१८।२८	उन्नाव	२६।३३	८०।३०	−८०।००	+१३।०४	कलकत्ता	२२।३५	८८।२३	+२३।३२	+४४।४४	काशी	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२३।१२
आँबलीयासण	२३।१७	७२।२५	−४०।२०	−१९।०८	उम्बरगाँव	२०।१२	७२।४४	−३९।०४	−१७।५२	कलोल	२३।१४	७२।२८	−४०।०८	−१८।५६	काडी लंका	०७।२०	८०।४५	−०७।००	+१४।१२
आगरा	२७।११	७८।०२	−१७।५२	+०३।२०	उमरकोट	२२।४७	७४।५०	−३०।४०	−०९।२८	कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	−११।०८	+१०।०४	कायमगंज	२७।३५	७९।२१	−१२।३६	+०८।३६
आगास	२२।३०	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२	उमरेठ	२२।४२	७३।०८	−३७।२८	−१६।१६	काकीनाडा	१६।५९	८२।१३	−१ ।०८	+२०।०४	किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	−२६।४८	−०५।३६
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२४।००	उल्लासनगर	१९।१३	७३।०७	−३७।३२	−१६।२०	कानपुर	२६।२७	८०।२१	−८ ।३६	+१२।३६	कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	−२२।४८	−०१।३६
आणंद	२२।३५	७२।५८	−३८।०८	−१६।५६	उस्मानाबाद	१८।०८	७६।०५	−२१।४०	−००।२८	काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।२०	कैम्बलपुर पा.	३३।४८	७८।१८	−४०।४८	−१९।३६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	−१५।५६	+०५।१६	ऊधमपुर	३२।५५	७५।०७	−२९।३२	−०८।२०	कानानोर	११।५२	७५।२५	−२८।२०	−०७।०८	कोलम्बो	०६।५६	७९।५६	−१०।२६	+१०।४६
आदोनी	१५।३४	७७।१८	−२०।४८	+००।२४	उडीपी	१३।२१	७४।४५	−३१।००	−०९।४८	कामठी	२१।१०	७९।१२	−१३।१२	+०८।००	खंडवा	२१।५०	७६।२०	−२४।४०	−०३।२८
आबू	२४।३७	७२।४३	−३९।०८	−१७।३६	ऊंझा	२३।४७	७२।२४	−४०।२४	−१९।१२	कारंजा	२०।२९	७७।२९	−२०।०४	+०१।०८	खंडाला	१८।४५	७३।२२	−३६।३२	−१५।२०
आमोद	२२।००	७२।५३	−३८।२८	−१७।१६	एकलिंगजी	२४।४६	७३।४३	−३५।०८	−१३।५६	कारबार	१४।४८	७४।०८	−३३।२८	−१२।१६	खंभात	२२।१९	७२।३६	−७९।३६	−१८।२४
आरकोणम	१३।०६	७९।४१	−११।१६	+०९।५६	एटाकासगंज	२७।३५	७८।४१	−१५।१६	+०५।५६	कालपी	२६।०८	७९।४५	−११।००	+१०।१२	खंभालिया	२२।१२	६९।४०	−५१।२०	−३०।०८

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम—अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	+१९।१६	+४०।२८
खाराघोड़ा	२३।१०	७१।४२	−४३।१२	−२२।००
खुर्जा	२८।१४	७७।५१	−१८।३६	+०२।३६
खेडब्रह्मा	२४।०३	७३।०४	−३७।४४	−१८।३२
खेडा	२२।४५	७२।४०	−३७।२०	−१८।०८
खेरालु	२३।५४	७२।३८	−३७।२८	−१८।१६
खैरपुर	२७।२८	६८।४७	−५४।५२	−२३।४०
गया	२४।४८	८५।०१	+१०।०४	+३१।१६
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	−१७।२०	+०३।५२
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२२	+२५।३४
गिद्धौर	२४।५१	८६।०७	+१४।२८	+३५।४०
गिलगित्त	३५।५४	७४।२२	−३२।३३	−११।२१
गुरदासपुर	३२।०३	७५।२७	−१८।१२	−०७।००
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+०३।३६	+२४।४८
गोण्डा	२७।१०	८१।५७	−०२।१२	+१९।००
गोवा	१५।२५	७३।४७	−३४।५२	−१३।४०
गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	−५८।१२
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	−३१।१२	−१०।००
चित्रकूट	२५।१२	८०।५४	−०६।२४	+१४।४०
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+५८।१२
चम्बा	३२।२५	७६।१०	−२५।२०	−०४।०८
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	−२२।३२	−०१।२०
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	−११।३६	+०९।३६
छपरा बिहार	२५।४७	८४।४१	+०८।४४	+२९।५६
छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२९	−१२।०४	+०९।०८
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०	+३४।३२
जबलपुर	२३।१०	७९।५८	−१०।०८	+११।०४
जयपुर	२६।५५	७५।५०	−२६।४०	−०५।२२
जलपाई गुडी	२६।३२	८८।४६	+२५।०४	+४६।१६
जम्मू	३२।४४	७४।५४	−३०।२४	−०९।१२
जसवन्त नगर	२६।५१	७८।५५	−१४।२०	+०६।५२
जालन्धर	३१।१९	७५।३५	−२७।४०	−०६।२८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	−४९।४०	−२८।२२
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	−४६।१२	−२५।०८
जोधपुर	२६।१८	७३।०२	−३७।५२	−१६।४०
जौनपुर	२५।४६	८२।५३	+००।५२	+२२।०४
जींद	२९।१९	७६।२३	−२४।२८	−०३।१६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	−४७।३६	−२६।२४
झालावाड़	२४।३६	७४।०९	−३३।२४	−१२।१२
झाँसी	२५।२६	७८।३४	−१५।४४	+०५।२०
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	−२५।१२	−०४।००
ट्रावनकोर	०९।००	७७।००	−२२।००	−००।४८
टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	−२६।४०	−०५।२८
डलहौजी	३२।३०	७५।५४	−२६।२४	−०५।१२
डिवाई	२८।१२	७८।१५	−१७।००	+०४।१२
डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।५६
डूंगरपुर(राज.)	२३।५०	७३।४३	−३५।०८	−१३।५६
तलागंग	३२।५६	७२।२८	−४०।०८	−१८।५६
त्रिवेन्द्रम	०८।३०	७६।५७	−२२।१२	−०१।००
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४२	−१५।१२	+०६।००
दरभंगा	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।५२
द्वारका	२२।१६	६८।५७	−५४।१२	−४२।००
दारजिलिंग	२७।०३	८८।१६	+२३।०४	+४४।१६
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	−२१।१२	००।००
देहरादून	३०।१९	७८।०४	−१७।४४	+०३।२८
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	−२४।२८	−०३।१६
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	−१८।२८	+०२।४४
धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	−२९।१२	−०८।००
धूलिया	२०।५८	७४।४२	−३१।१२	−१०।००
ध्रांगध्रा	२३।००	७१।२८	−४४।०८	−२२।५६
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	−३६।५०	−१५।३८
नाडियाद	२२।४१	७२।५२	−३८।३२	−१७।२०
नाथद्वारा	२४।५६	७३।४८	−३४।४८	−१३।२६
नाभा	३०।२२	७६।१०	−२५।२०	−०४।०८
नागपुर	२१।०९	७९।०६	−१३।३६	+०७।३६
नासिक	२०।००	७३।४७	−३४।५२	−१३।४०
नैनीताल	२९।२५	७९।२७	−१२।१२	+०९।००
नीमच	२४।२८	७४।५१	−३०।३६	−००।२४
पटना	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
पठानकोट	३२।१८	७५।४२	−२७।१२	−०६।००
पटियाला	३०।२२	७६।२५	−२४।२०	−०३।०८
प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	−०२।२८	+१८।४४
पाटन (राज.)	१७।२२	७३।५३	−३४।२८	−१३।२६
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।४८	−२०।४८	+२०।२४

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
पानीपत	२९।२७	७६।५८	−२२।०८	−००।५६
पुरणिया	२५।४९	८७।३१	+२०। ४	+४१।१६
पूना	१८।३०	७३।५२	−३४।३२	−१३।२०
पोरबंदर	२१।३८	६९।३६	−५१।३६	−३०।२४
फतेहपुर	२७।०६	७७।४०	−१९।२०	+०१।५२
फर्रूखाबाद	२७।०३	७९।३७	−११।३२	+०९।४०
फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	−३१।००	−०९।४२
फिरोजपुर	३०।५७	७४।३६	−३१।३६	−१०।२४
फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	−०१।२८	+१९।४४
बड़ौदा	२२।१८	७३।१३	−३७।०८	−१५।५६
बम्बई	१८।५५	७२।५०	−३८।४०	−१७।२८
बरेली	२८।२२	७९।२४	−१२।२४	+०८।४२
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	−१२।००	+०९।१२
बर्धमान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	+४२।४०
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	−१८।३६	+०२।३६
बीजापुर	१६।५०	७५।४२	−२७।१२	−०६।००
बीकानेर	२८।०१	७३।१९	−३६।४४	−१५।३२
बंगलौर	१२।५८	७७।३५	−१९।४०	+०१।३२
बाँदा(उ.प्र.)	२५।२८	८०।२१	−०८।३६	+१२।२८
बाँसवाड़ा	२३।३३	७८।२६	−१६।१६	+०४।५६
बिलासपुर(हि.)	३१।१९	७६।५०	−२२।४०	−०९।२८
बिलासपुर(म.)	२२।०५	८२।१०	−०१।२०	+१९।५२
भड़ोंच	२१।४१	७३।००	−३८।००	−१६।४८
भटिन्डा	३०।११	७४।५७	−३०।१२	−०९।००
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	−२०।००	−०८।४८
भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४८
भोपाल	२३।१६	७७।२३	−२०।२८	+००।४४
भूटान	२७।३०	९०।००	+३०।००	+५१।१२
भुज	२३।१५	६९।००	−५१।१६	−३०।१२
मथुरा	२७।२८	७७।४१	−१९।१६	+ १।५६
मद्रास	१३।०५	८०।१७	−०८।५२	+१२।१२
मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	−२२।०८	−००।५६
मणिपुर स्टेट	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६७।०४
मालेगाँव ना.	२०।३१	७४।३०	−३२।००	−१०।४८
मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	−१४।४०	+०६।३२
मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+११।४२	+३२।५४
मेरठ	२९।०१	७७।४५	−१९।००	+०२।१२

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
मैसूर स्टेट	१२।१९	७६।४०	−२३।२०	−०२।०८
मुँगेर	२५।२३	८६।३०	+१६।००	+३७।१२
रतलाँम	२३।१९	७५।०३	−२९।४८	−०८।३६
रत्नागिरी	१७।००	७३।१९	−३६।४४	−१५।३२
रांची, रामगढ़	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३२।३२
रामपुर उ.प्र	२८।४७	७९।०२	−१३।५२	+०७।२०
रामेश्वर	०९।१७	७९।१८	−१२।४८	+०८।२४
रायबरेली	२६।१४	८१।१३	−०५।०८	+१६।०४
राजमहेन्द्री	१७। ५	८१।४८	−०२।४८	+१८।२४
रायपुर म.प्र.	२१।१५	८१।३८	−०३।२८	+१७।४४
रोहतक	२८।५४	७६।३८	−२३।२८	−०२।१६
रोपड़ पंजाब	३०।५७	७६।३०	−२४।००	−०२।४८
लखनऊ	२६।५१	८०।५९	−०६।२०	+१४।५२
लुधियाना	३०।५६	७५।५२	−२६।३२	−०५।२०
शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४८
शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	−१०।१२	+११।००
शिमला	३१।०६	७७।१०	−२१।२०	−००।०८
श्रीनगर का.	३४।०६	७४।५१	−३०।३६	−०९।२४
सवाईमाधोपुर	२६।००	७६।२३	−२४।२८	−०३।१६
सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	−१५।४८	+०५।२४
सतारा	१७।४२	७४।००	−३४।००	−१२।४८
सागर म.प्र.	२३।५०	७८।४५	−१५।००	+०६।१२
सूरत	२१।१२	७२।५०	−३८।४०	−१७।२८
सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।२४	−००।१२
सोलापुर	१७।४०	७५।४८	−२६।४८	−०५।२६
सोमनाथ	२१।०१	७०।२६	−४८।१६	−२७।०४
सिरोही	२४।५६	७२।५१	−३८।३६	−१७।२४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	−१७।०८	+०४।०४
हिसार	२९।१४	७५।४४	−२७।०८	−०५।३६
हाथरस	२७।३६	७८।०६	−१७।३६	+०३।३६
हैदराबाद	१७।२७	७८।३०	−१६।००	+०५।१२
होशियारपुर	३१।३२	७५।५५	−२६।२०	−०५।०८
होशंगाबाद	२२।४६	७७।४३	−१९।०८	+०२।०४
हसुवा	२६।१२	८४।०५	+०६।२०	+२७।३२
हरदोई	२७।२३	८०।१०	+०९।२०	+३०।३२
हाजीपुर	२५।३५	८३।११	+०१।४४	+२२।५६
हजारीबाग	२४।००	८५।२३	+११।३२	+३२।४४

सूर्योदयास्त स्थानीय मध्यमकाल (बिम्बशीर्ष) घण्टा-मिनटों में

स्टेण्डर्ड टाइम में किसी स्थान का सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि का जोड़ करें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थल स्टेण्डर्ड रेखांश से पश्चिम है। ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि घटा दें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थान स्टेण्डर्ड रेखांश से पूर्व में हैं

भारत में भा० स्टे० टा० ज्ञात करने के लिए- यदि स्थान ८२½° रेखांश से पश्चिम में हों तो जोड़ें + ४ x (८२½° – अभीष्ट स्थल का रेखांश) मिनट और यदि स्थान ८२½° रेखांश से पूर्व में हों तो घटाएं ४ x (अभीष्ट स्थल का रेखांश –८२½°) मिनट

अक्षांश / ता०	०°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
जन. १	५।५९	१८।०७	६।१७	१७।५०	६।३५	१७।३२	६।५६	१७।११	७।०८	१६।५९	७।२२	१६।४५	७।३८	१६।२८	७।५९	१६।०८	८।०८	१५।५८	८।१९	१५।४७	८।३२	१५।३५	८।४६	१५।२१	९।०३	१५।०४	जन. १
४	६।०१	१८।०९	६।१८	१७।५२	६।३६	१७।३४	६।५७	१७।१४	७।०९	१७।०२	७।२२	१६।४८	७।३९	१६।३२	७।५९	१६।१२	८।०८	१६।०३	८।१९	१५।५२	८।३०	१५।४०	८।४४	१५।२६	९।०१	१५।१०	४
८	६।०३	१८।११	६।२०	१७।५४	६।३७	१७।३७	६।५७	१७।१७	७।०९	१७।०५	७।२२	१६।५२	७।३८	१६।३६	७।५७	१६।१७	८।०६	१६।०८	८।१७	१५।५७	८।२८	१५।४६	८।४२	१५।३३	८।५७	१५।१७	८
१२	६।०५	१८।१३	६।२१	१७।५६	६।३८	१७।३९	६।५७	१७।२०	७।०९	१७।०९	७।२२	१६।५६	७।३७	१६।४१	७।५५	१६।२२	८।०४	१६।१३	८।१४	१६।०४	८।२५	१५।५३	८।३८	१५।४०	८।५३	१५।२५	१२
१६	६।०६	१८।१४	६।२२	१७।५८	६।३८	१७।४२	६।५७	१७।२३	७।०८	१७।१२	७।२०	१७।००	७।३४	१६।४६	७।५३	१६।२८	८।०१	१६।२०	८।१०	१६।१०	८।२१	१६।००	८।३३	१५।४८	८।४७	१५।३४	१६
२०	६।०८	१८।१५	६।२२	१८।००	६।३८	१७।४५	६।५६	१७।२७	७।०६	१७।१६	७।१८	१७।०५	७।३२	१६।५१	७।४९	१६।३४	७।५७	१६।२६	८।०६	१६।१७	८।१६	१६।०७	८।२७	१५।५६	८।४०	१५।४३	२०
२४	६।०९	१८।१६	६।२३	१८।०२	६।३८	१७।४७	६।५५	१७।३०	७।०४	१७।२०	७।१६	१७।१०	७।२९	१६।५६	७।४५	१६।४१	७।५२	१६।३३	८।००	१६।२५	८।१०	१६।१६	८।२०	१६।०५	८।३२	१५।५३	२४
२८	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०४	६।३७	१७।५०	६।५३	१७।३४	७।०२	१७।२४	७।१३	१७।१४	७।२५	१७।०२	७।४०	१६।४७	७।४७	१६।४०	७।५४	१६।३२	८।०३	१६।२४	८।१३	१६।१४	८।२४	१६।०३	२८
फर. १	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०५	६।३६	१७।५२	६।५१	१७।३७	७।००	१७।२८	७।०९	१७।१९	७।२०	१७।०८	७।३४	१६।५४	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४०	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४	८।१५	१६।१४	फर. १
५	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०६	६।३४	१७।५४	६।४८	१७।४१	६।५६	१७।३३	७।०५	१७।२४	७।१६	१७।१३	७।२८	१७।०१	७।३४	१६।५५	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४१	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४	५
९	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०८	६।३३	१७।५६	६।४६	१७।४४	६।५३	१७।३६	७।०१	१७।२९	७।१०	१७।१९	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३३	१६।५६	७।४०	१६।५०	७।४७	१६।४३	७।५५	१६।३५	९
१३	६।११	१८।१८	६।२१	१८।०९	६।३१	१७।५८	६।४२	१७।४७	६।४९	१७।४०	६।५६	१७।३३	७।०५	१७।२५	७।१५	१७।१५	७।२०	१७।१०	७।२५	१७।०४	७।३१	१६।५९	७।३७	१६।५२	७।४५	१६।४५	१३
१७	६।११	१८।१८	६।२०	१८।१०	६।२८	१८।००	६।३९	१७।५०	६।४४	१७।४४	६।५१	१७।३८	६।५९	१७।३०	७।०८	१७।२२	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१३	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३४	१६।५६	१७
२१	६।११	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२६	१८।०२	६।३५	१७।५४	६।४०	१७।४८	६।४६	१७।४३	६।५२	१७।३६	७।००	१७।२८	७।०४	१७।२५	७।०८	१७।२१	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१२	७।२३	१७।०६	२१
२५	६।१०	१८।१७	६।१६	१८।११	६।२३	१८।०४	६।३१	१७।५६	६।३५	१७।५२	६।४०	१७।४७	६।४६	१७।४१	६।५२	१७।३५	६।५६	१७।३२	६।५९	१७।२९	७।०२	१७।२५	६।०७	१७।२१	६।११	१७।१६	२५
मार्च १	६।०९	१८।१६	६।१५	१८।११	६।२१	१८।०५	६।२७	१७।५९	६।३०	१७।५६	६।३४	१७।५२	६।३९	१७।४७	६।४४	१७।४२	६।४७	१७।३९	६।५०	१७।३६	६।५२	१७।३४	६।५६	१७।३०	६।००	१७।२६	मार्च १
५	६।०९	१८।१५	६।१३	१८।११	६।१७	१८।०७	६।२२	१८।०२	६।२५	१७।५९	६।२८	१७।५६	६।३२	१७।५२	६।३६	१७।४८	६।३८	१७।४७	६।४०	१७।४४	६।४२	१७।४२	६।४५	१७।४०	६।४८	१७।३७	५
९	६।०८	१८।१४	६।११	१८।११	६।१४	१८।०८	६।१८	१८।०५	६।२०	१८।०३	६।२२	१८।००	६।२४	१७।५८	६।२८	१७।५५	६।२९	१७।५४	६।३१	१७।५२	६।३२	१७।५०	६।३४	१७।४९	६।३६	१७।४७	९
१३	६।०७	१८।१३	६।०८	१८।११	६।११	१८।०९	६।१३	१८।०७	६।१४	१८।०६	६।१६	१८।०४	६।१७	१८।०३	६।१९	१८।०१	६।२०	१८।०१	६।२१	१८।००	६।२२	१७।५९	६।२३	१७।५८	६।२४	१७।५६	१३
१७	६।०६	१८।१२	६।०६	१८।११	६।०७	१८।११	६।०८	१८।१०	६।०९	१८।०९	६।०९	१८।०९	६।१०	१८।०८	६।११	१८।०८	६।११	१८।०८	६।११	१८।०७	६।११	१८।०७	६।१२	१८।०७	६।१२	१८।०६	१७
२१	६।०४	१८।११	६।०४	१८।११	६।०४	१८।१२	६।०४	१८।१२	६।०३	१८।१३	६।०३	१८।१३	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१५	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१६	६।००	१८।१६	२१
२५	६।०३	१८।१०	६।०२	१८।११	६।००	१८।१३	५।५९	१८।१४	५।५८	१८।१६	५।५६	१८।१७	५।५५	१८।१८	५।५३	१८।२०	५।५२	१८।२२	५।५१	१८।२२	५।५०	१८।२३	५।४९	१८।२५	५।४८	१८।२६	२५
२९	६।०२	१८।०९	५।५९	१८।११	५।५७	१८।१४	५।५४	१८।१७	५।५२	१८।१९	५।५०	१८।२१	५।४७	१८।२३	५।४५	१८।२७	५।४३	१८।२८	५।४१	१८।३०	५।४०	१८।३१	५।३८	१८।३४	५।३६	१८।३६	२९

अक्षांश / ता०	0°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
अप्रेल २	६।०१	१८।०७	५।५७	१८।११	५।५३	१८।१५	५।४९	१८।१९	५।४६	१८।२२	५।४३	१८।२५	५।४०	१८।२९	५।३६	१८।३३	५।३४	१८।३५	५।३२	१८।३७	५।२९	१८।४०	५।२७	१८।४३	५।२४	१८।४५
६	६।००	१८।०६	५।५५	१८।१०	५।५०	१८।१६	५।४४	१८।२२	५।४१	१८।२५	५।३७	१८।२९	५।३३	१८।३४	५।२७	१८।३९	५।२५	१८।४२	५।२२	१८।४५	५।१९	१८।४८	५।१६	१८।५२	५।११	१८।५५
१०	५।५९	१८।०५	५।५३	१८।१०	५।४७	१८।१७	५।४०	१८।२४	५।३६	१८।२९	५।३१	१८।३३	५।२६	१८।३९	५।१९	१८।४४	५।१६	१८।४९	५।१२	१८।५२	५।०८	१८।५६	५।०५	१९।०१	५।००	१९।०५
१४	५।५८	१८।०४	५।५०	१८।१०	५।४४	१८।१८	५।३५	१८।२७	५।३०	१८।३२	५।२४	१८।३७	५।१८	१८।४४	५।१०	१८।५२	५।०७	१८।५६	५।०३	१९।००	४।५८	१९।०४	४।५४	१९।०९	४।४८	१९।१५
१८	५।५७	१८।०३	५।४८	१८।११	५।४१	१८।१९	५।३१	१८।२९	५।२५	१८।३५	५।१९	१८।४१	५।१२	१८।४९	५।०२	१८।५८	४।५८	१९।०३	४।५४	१९।०७	४।४८	१९।१२	४।४३	१९।१८	४।३६	१९।२५
२२	५।५६	१८।०२	५।४७	१८।११	५।३८	१८।२१	५।२६	१८।३२	५।२०	१८।३८	५।१३	१८।४५	५।०४	१८।५४	४।५४	१९।०४	४।४९	१९।०९	४।४५	१९।१५	४।३८	१९।२०	४।३२	१९।२७	४।२५	१९।३५
२६	५।५५	१८।०२	५।४५	१८।११	५।३५	१८।२२	५।२२	१८।३४	५।१६	१८।४१	५।०७	१८।४९	४।५८	१८।५९	४।४७	१९।१०	४।४१	१९।१६	४।३६	१९।२२	४।२९	१९।२९	४।२१	१९।३६	४।१३	१९।४५
३०	५।५४	१८।०१	५।४३	१८।१२	५।३२	१८।२३	५।१९	१८।३७	५।११	१८।४५	५।०२	१८।५३	४।५२	१९।०४	४।३९	१९।१७	४।३३	१९।२३	४।२७	१९।२९	४।२०	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४
मई ४	५।५४	१८।००	५।४२	१८।१२	५।२९	१८।२५	५।१५	१८।३९	५।०७	१८।४८	४।५७	१८।५७	४।४६	१९।१०	४।३२	१९।२३	४।२६	१९।३०	४।१८	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४	३।५१	२०।०४
८	५।५३	१८।००	५।४१	१८।१३	५।२७	१८।२६	५।१२	१८।४२	५।०३	१८।५१	४।५३	१९।०१	४।४०	१९।१४	४।२६	१९।२९	४।१९	१९।३६	४।११	१९।४४	४।०२	१९।५३	३।५२	२०।०३	३।४१	२०।१४
१२	५।५३	१८।००	५।४०	१८।१४	५।२५	१८।२८	५।०९	१८।४४	५।००	१८।५४	४।४८	१९।०५	४।३५	१९।१९	४।१९	१९।३५	४।१२	१९।४२	४।०४	१९।५१	३।५४	२०।००	३।४३	२२।११	३।३१	२०।२४
१६	५।५३	१८।००	५।३९	१८।१४	५।२४	१८।२९	५।०६	१८।४७	४।५७	१८।५८	४।४४	१९।०९	४।३१	१९।२३	४।१४	१९।४०	४।०५	१९।४८	३।५७	१९।५८	३।४६	२०।०८	३।३५	२०।२०	३।२१	२०।३४
२०	५।५३	१८।००	५।३८	१८।१५	५।२३	१८।३१	५।०४	१८।४९	४।५४	१९।०१	४।४१	१९।१३	४।२६	१९।२७	४।०९	१९।४६	४।००	१९।५४	३।५०	२०।०४	३।३९	२०।१५	३।२७	२०।२८	३।१२	२०।४३
२४	५।५३	१८।०१	५।३८	१८।१६	५।२२	१८।३३	५।०२	१८।५२	४।५१	१९।०३	४।३८	१९।१६	४।२२	१९।३२	४।०१	१९।५१	३।५५	२०।००	३।४५	२०।१०	३।३३	२०।२२	३।२०	२०।३६	३।०४	२०।५१
२८	५।५४	१८।०१	५।३८	१८।१७	५।२१	१८।३४	५।०१	१८।५४	४।४९	१९।०६	४।३६	१९।२०	४।१९	१९।३६	४।००	१९।५६	३।५०	२०।०६	३।४०	२०।१६	३।२८	२०।२८	३।१३	२०।४३	२।५७	२०।५९
जून १	५।५४	१८।०२	५।३८	१८।१८	५।२०	१८।३६	५।००	१८।५६	४।४८	१९।०९	४।३४	१९।२३	४।१७	१९।३९	३।५७	२०।००	३।४७	२०।१०	३।३५	२०।२१	३।२३	२०।३४	३।०८	२०।४९	२।५०	२१।०७
५	५।५५	१८।०२	५।३८	१८।१९	५।२०	१८।३७	४।५९	१८।५८	४।४७	१९।११	४।३२	१९।२५	४।१५	१९।४३	३।५४	२०।०४	३।४४	२०।१४	३।३२	२०।२६	३।१९	२०।३९	३।०३	२०।५५	२।४५	२१।१३
९	५।५६	१८।०३	५।३९	१८।२०	५।२०	१८।३९	४।५८	१९।००	४।४६	१९।१३	४।३१	१९।२८	४।१४	१९।४५	३।५२	२०।०७	३।४२	२०।१८	३।२९	२०।३०	३।१६	२०।४३	३।००	२०।५९	२।४०	२१।१९
१३	५।५७	१८।०४	५।३९	१८।२२	५।२०	१८।४०	४।५८	१९।०२	४।४५	१९।१५	४।३१	१९।३०	४।१३	१९।४७	३।५१	२०।१०	३।४०	२०।२१	३।२८	२०।३३	३।१४	२०।४७	२।५७	२१।०३	२।३७	२१।२३
१७	५।५८	१८।०५	५।४०	१८।२२	५।२१	१८।४१	४।५९	१९।०३	४।४६	१९।१६	४।३१	१९।३१	४।१३	१९।४९	३।५०	२०।१२	३।३९	२०।२३	३।२७	२०।३५	३।१३	२०।४९	२।५६	२१।०६	२।३६	२१।२६
२१	५।५८	१८।०६	५।४१	१८।२३	५।२२	१८।४२	५।००	१९।०४	४।४७	१९।१७	४।३२	१९।३३	४।१३	१९।५१	३।५१	२०।१३	३।४०	२०।२४	३।२८	२०।३६	३।१३	२०।५१	२।५७	२१।०७	२।३६	२१।२८
२५	५।५९	१८।०७	५।४२	१८।२४	५।२३	१८।४३	५।०१	१९।०५	४।४८	१९।१८	४।३३	१९।३३	४।१४	१९।५१	३।५२	२०।१३	३।४१	२०।२४	३।२९	२०।३६	३।१४	२०।५१	२।५८	२१।०७	२।३७	२१।२८
२९	६।००	१८।०७	५।४३	१८।२५	५।२४	१८।४३	५।०२	१९।०५	४।४९	१९।१८	४।३४	१९।३३	४।१६	१९।५१	३।५४	२०।१३	३।४३	२०।२४	३।३१	२०।३६	३।१७	२०।५०	२।००	२१।०६	२।४०	२१।२६
जुलाई ३	६।०१	१८।०८	५।४४	१८।२५	५।२५	१८।४४	५।०३	१९।०५	४।५०	१९।१८	४।३६	१९।३३	४।१८	१९।५०	३।५६	२०।१२	३।४६	२०।२२	३।३४	२०।३४	३।२०	२०।४८	३।०४	२१।०४	२।४४	२१।२४
७	६।०१	१८।०९	५।४५	१८।२५	५।२६	१८।४४	५।०५	१९।०५	४।५२	१९।१८	४।३८	१९।३२	४।२१	१९।४९	३।५९	२०।१०	३।४९	२०।२०	३।३७	२०।३२	३।२४	२०।४५	३।०९	२१।०१	२।४९	२१।२०
११	६।०२	१८।०९	५।४६	१८।२६	५।२८	१८।४३	५।०७	१९।०४	४।५५	१९।१६	४।४१	१९।३०	४।२४	१९।४७	४।०३	२०।०८	३।५३	२०।१८	३।४२	२०।२९	३।२९	२०।४१	३।१४	२०।५७	२।५६	२१।१४
१५	६।०२	१८।१०	५।४७	१८।२६	५।२९	१८।४३	५।०९	१९।०३	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२८	४।२७	१९।४४	४।०७	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	३।३४	२०।३७	३।२०	२०।५१	३।०३	२१।०८
१९	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३१	१८।४२	५।११	१९।०१	५।००	१९।१३	४।४७	१९।२६	४।३१	१९।४१	४।१२	२०।००	४।०३	२०।१०	३।५२	२०।२०	३।४१	२०।३१	४।२७	२०।४५	३।११	२१।००
२३	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३२	१८।४१	५।१३	१८।५९	५।०३	१९।१०	४।५०	१९।२३	४।३५	१९।३८	४।१७	१९।५६	४।०८	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	४।३४	२०।३८	३।२०	२०।५२
२७	६।०३	१८।१०	५।४९	१८।२४	५।३४	१८।४०	५।१६	१८।५७	५।०६	१९।०८	४।५४	१९।१९	४।३९	१९।३३	४।२२	१९।५१	४।१४	१९।५८	४।०४	२०।०८	३।५४	२०।१८	४।४२	२०।३०	३।२९	२०।४४
३१	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२४	५।३५	१८।३८	५।१८	१८।५५	५।०९	१९।०४	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२९	४।२७	१९।४५	४।२०	१९।५२	४।११	२०।०१	४।०१	२०।१०	४।५०	२०।२१	३।३८	२०।३४
अग. ४	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२२	५।३७	१८।३६	५।२१	१८।५२	५।१२	१९।००	५।०१	१९।११	४।४८	१९।२३	४।३३	१९।३९	४।२६	१९।४६	४।१८	१९।५३	४।०९	२०।०२	४।५९	२०।१३	३।४७	२०।२४
८	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।२१	५।३८	१८।३४	५।२३	१८।४८	५।१५	१८।५६	५।०५	१९।०७	४।५३	१९।१८	४।३९	१९।३२	४।३२	१९।३८	४।२५	१९।४५	४।१६	१९।५४	४।०७	१९।०३	३।५६	२०।१४
१२	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।१९	५।३९	१८।३१	५।२५	१८।४४	५।१८	१८।५२	५।०८	१९।०२	४।५८	१९।१२	४।४५	१९।२५	४।३९	१९।३१	४।३२	१९।३७	४।२४	१९।४५	४।१६	१९।५३	४।०६	२०।०३
१६	६।०१	१८।०८	५।५१	१८।१८	५।४०	१८।२९	५।२८	१८।४१	५।२१	१८।४८	५।१२	१८।५६	५।०३	१९।०६	४।५०	१९।१७	४।४५	१९।२३	४।३९	१९।२९	४।३२	१९।३६	४।२५	१९।४३	४।१६	१९।५२
२०	६।००	१८।०७	५।५१	१८।१६	५।४२	१८।२६	५।३०	१८।३७	५।२४	१८।४३	५।१६	१८।५०	५।०७	१८।५९	४।५६	१९।०९	४।५२	१९।१४	४।४६	१९।२०	४।४०	१८।२६	४।३३	१८।३३	४।२५	१९।४०
२४	६।००	१८।०६	५।५१	१८।१४	५।४३	१८।२३	५।३२	१८।३२	५।२७	१८।३८	५।२०	१८।४४	५।१२	१८।५२	५।०२	१९।०१	४।५८	१९।०६	४।५३	१९।११	४।४८	१८।१६	४।४२	१८।२२	४।३५	१९।२९
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्षांश / ता०	०°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
सित. १	५।५७	१८।०४	५।५१	१८।०९	५।४५	१८।१६	५।३७	१८।२३	५।३३	१८।२८	५।२७	१८।३२	५।२२	१८।३८	५।१४	१८।४५	५।११	१८।४९	५।०८	१८।५२	५।०३	१८।५६	४।५९	१९।००	४।५४	१९।०५	सित. १
५	५।५६	१८।०२	५।५१	१८।०७	५।४६	१८।१२	५।३९	१८।१९	५।३६	१८।२२	५।३१	१८।२६	५।२६	१८।३१	५।२०	१८।३७	५।१८	१८।३९	५।१५	१८।४२	५।११	१८।४५	५।०८	१८।४९	५।०४	१८।५३	५
९	५।५४	१८।०१	५।५०	१८।०५	५।४६	१८।०९	५।४१	१८।१४	५।३९	१८।१६	५।३५	१८।२०	५।३१	१८।२३	५।२६	१८।२८	५।२४	१८।३०	५।२२	१८।३२	५।१९	१८।३५	५।१६	१८।३८	५।१३	१८।४१	९
१३	५।५३	१८।००	५।५०	१८।०२	५।४७	१८।०५	५।४३	१८।०९	५।४१	१८।११	५।३९	१८।१३	५।३६	१८।१६	५।३२	१८।१९	५।३१	१८।२१	५।२९	१८।२२	५।२७	१८।२४	५।२५	१८।२६	५।२२	१८।२९	१३
१७	५।५२	१७।५८	५।५०	१८।००	५।४८	१८।०१	५।४५	१८।०४	५।४४	१८।०५	५।४२	१८।०६	५।४१	१८।०८	५।३८	१८।१०	५।३७	१८।११	५।३६	१८।१२	५।३५	१८।१४	५।३३	१८।१५	५।३२	१८।१६	१७
२१	५।५०	१७।५७	५।४९	१७।५७	५।४९	१७।५८	५।४८	१७।५९	५।४७	१७।५९	५।४६	१८।००	५।४६	१८।००	५।४४	१८।०२	५।४४	१८।०२	५।४३	१८।०२	५।४२	१८।०३	५।४२	१८।०४	५।४१	१८।०४	२१
२५	५।४९	१७।५५	५।४९	१७।५५	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५१	१७।५२	५।५०	१७।५२	५।५१	१७।५२	५।५१	१७।५२	२५
२९	५।४७	१७।५४	५।४९	१७।५२	५।५१	१७।५०	५।५२	१७।४९	५।५३	१७।४८	५।५४	१७।४७	५।५५	१७।४५	५।५६	१७।४४	५।५८	१७।४३	५।५८	१७।४२	५।५८	१७।४२	५।५९	१७।४१	६।००	१७।४०	२९
अक्टू. ३	५।४६	१७।५३	५।४९	१७।५०	५।५२	१७।४७	५।५४	१७।४४	५।५६	१७।४२	५।५८	१७।४०	६।००	१७।३८	६।०२	१७।३५	६।०४	१७।३४	६।०५	१७।३३	६।०६	१७।३१	६।०८	१७।३०	६।०९	१७।२८	अक्टू. ३
७	५।४५	१७।५२	५।४८	१७।४७	५।५३	१७।४४	५।५७	१७।३९	५।५९	१७।३७	६।०२	१७।३४	६।०५	१७।३०	६।०९	१७।२७	६।११	१७।२५	६।१२	१७।२३	६।१४	१७।२१	६।१७	१७।१९	६।१९	१७।१६	७
११	५।४४	१७।५१	५।४८	१७।४५	५।५४	१७।४०	५।५९	१७।३४	६।०३	१७।३१	६।०६	१७।२७	६।१०	१७।२३	६।१५	१७।१८	६।१७	१७।१६	६।२०	१७।१३	६।२२	१७।११	६।२६	१७।०८	६।२९	१७।०४	११
१५	५।४३	१७।५०	५।४९	१७।४३	५।५५	१७।३७	६।०२	१७।३०	६।०६	१७।२६	६।१०	१७।२१	६।१४	१७।१६	६।२१	१७।१०	६।२४	१७।०७	६।२७	१७।०४	६।३१	१७।००	६।३५	१७।५७	६।३८	१६।५२	१५
१९	५।४२	१७।४९	५।४९	१७।४१	५।५६	१७।३४	६।०५	१७।२६	६।०९	१७।२१	६।१४	१७।१५	६।२०	१७।०९	६।२८	१७।०२	६।३१	१६।५९	६।३५	१७।५५	६।३९	१६।५१	६।४४	१६।४६	६।४८	१६।४१	१९
२३	५।४१	१७।४८	५।४९	१७।४०	५।५८	१७।३१	६।०७	१७।२१	६।१३	१७।१६	६।१९	१७।१०	६।२६	१७।०३	६।३४	१६।५४	६।३८	१६।५०	६।४२	१७।४६	६।४७	१६।४१	६।५३	१६।३६	६।५८	१६।३०	२३
२७	५।४१	१७।४८	५।५०	१७।३९	५।५९	१७।२९	६।१०	१७।१८	६।१६	१७।१२	६।२३	१७।०५	६।३१	१६।५६	६।४१	१६।४७	६।४६	१६।४२	६।५०	१७।३७	६।५६	१६।३२	६।०२	१६।२५	७।०९	१६।१९	२७
३१	५।४०	१७।४७	५।५१	१७।३७	६।०१	१७।२६	६।१३	१७।१५	६।२०	१७।०७	६।२८	१७।००	६।३७	१६।५०	६।४८	१६।४०	६।५३	१६।३४	६।५८	१६।२९	७।०४	१६।२३	६।११	१६।१६	७।१९	१६।०८	३१
नव. ४	५।४०	१७।४७	५।५२	१७।३६	६।०३	१७।२४	६।१६	१७।१२	६।२४	१७।०४	६।३२	१६।५५	६।४२	१६।४५	६।५४	१६।३३	७।००	१६।२७	७।०६	१६।२१	७।१३	१६।१४	६।२१	१६।०७	७।२९	१५।५७	नव. ४
८	५।४०	१७।४७	५।५३	१७।३६	६।०५	१७।२३	६।१९	१७।०९	६।२७	१७।००	६।३७	१६।५१	६।४८	१६।४०	७।०१	१६।२६	७।०७	१६।२०	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०६	६।३०	१५।५८	७।३९	१५।४८	८
१२	५।४१	१७।४८	५।५४	१७।३५	६।०७	१७।२२	६।२३	१७।०६	६।३१	१६।५७	६।४२	१६।४७	६।५३	१६।३५	७।०८	१६।२१	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०७	७।३०	१५।५८	६।३९	१५।४९	७।५०	१५।३९	१२
१६	५।४२	१७।४९	५।५५	१७।३५	६।०९	१७।२१	६।२६	१७।०४	६।३५	१६।५४	६।४६	१६।४४	६।५८	१६।३१	७।१४	१६।१६	७।२१	१६।०८	७।२९	१६।००	७।३८	१५।५१	६।४८	१५।४१	८।००	१५।३०	१६
२०	५।४२	१७।५०	५।५७	१७।३५	६।१२	१७।२०	६।२९	१७।०२	६।३९	१६।५२	६।५१	१६।४१	७।०४	१६।२७	७।२०	१६।११	७।२८	१६।०३	६।३७	१५।५५	७।४६	१५।४५	६।५७	१५।३४	८।१०	१५।२१	२०
२४	५।४३	१७।५१	५।५८	१७।३५	६।१४	१७।१९	६।३३	१७।०१	६।४३	१६।५१	६।५५	१६।३८	७।०९	१६।२४	७।२६	१६।०७	७।३४	१५।५९	७।४४	१५।५०	७।५४	१५।४०	७।०५	१५।२७	८।१९	१५।१४	२४
२८	५।४५	१७।५२	६।००	१७।३६	६।१७	१७।१९	६।३६	१७।००	६।४७	१६।५०	६।५९	१६।३७	७।१४	१६।२२	७।३२	१६।०४	७।४१	१५।५५	७।५०	१५।४५	८।०१	१५।३५	८।१३	१५।२२	८।२८	१५।०८	२८
दिस. २	५।४६	१७।५३	६।०२	१७।३७	६।१९	१७।२०	६।३९	१७।००	६।५०	१६।४९	७।०३	१६।३६	७।१९	१६।२०	७।३८	१६।०१	७।४७	१५।५२	७।५६	१५।४२	८।०८	१५।३१	८।२१	१५।१७	८।३६	१४।०३	दिस. २
६	५।४७	१७।५५	६।०४	१७।३८	६।२२	१७।२१	६।४२	१७।००	६।५४	१६।४८	७।०७	१६।३५	७।२३	१६।१९	७।४३	१६।००	७।५२	१५।५०	८।०२	१५।३९	८।१४	१५।२८	८।२८	१५।१४	८।४४	१४।५८	६
१०	५।४९	१७।५७	६।०६	१७।४०	६।२४	१७।२२	६।४५	१७।०१	६।५७	१६।४९	७।११	१६।३५	७।२७	१६।१९	७।४७	१५।५९	७।५७	१५।४९	८।०८	१५।३८	८।२०	१५।२६	८।३४	१५।१२	८।५०	१४।५५	१०
१४	५।५१	१७।५८	६।०८	१७।४१	६।२७	१७।२३	६।४८	१७।०२	७।००	१६।५०	७।१४	१६।३६	७।३०	१६।१९	७।५१	१५।५८	८।०१	१५।४९	८।१२	१५।३८	८।२४	१५।२५	८।३९	१५।११	८।५६	१४।५४	१४
१८	५।५३	१८।००	६।१०	१७।४३	६।२९	१७।२४	६।५०	१७।०३	७।०२	१६।५१	७।१७	१६।३७	७।३३	१६।२०	७।५४	१५।५९	८।०४	१५।५०	८।१५	१५।३९	८।२८	१५।२६	८।४३	१५।११	९।००	१४।५४	१८
२२	५।५५	१८।०२	६।१२	१७।४५	६।३१	१७।२६	६।५२	१७।०५	७।०४	१६।५३	७।१९	१६।३८	७।३६	१६।२२	७।५६	१६।०१	८।०६	१५।५१	८।१७	१५।४०	८।३०	१५।२७	८।४५	१५।१२	९।०२	१४।५५	२२
२६	५।५७	१८।०४	६।१४	१७।४७	६।३३	१७।२८	६।५४	१७।०७	७।०६	१६।५५	७।२१	१६।४१	७।३७	१६।२४	७।५८	१६।०४	८।०८	१५।५४	८।१९	१५।४३	८।३२	१५।३०	८।४६	१५।१५	९।०४	१५।५८	२६
३०	५।५९	१८।०६	६।१६	१७।४९	६।३५	१७।३१	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५८	७।२२	१६।४४	७।३८	१६।२७	७।५९	१६।०७	८।०८	१५।५७	८।१९	१५।४३	८।३२	१५।३४	८।४६	१५।१९	९।०४	१५।०२	३०

नोट:- स्पष्ट गणित से सूर्योदय और सूर्यास्त में ५ से ७ मिनट का अन्तर आयेगा। दिन मान में ६ से ८ मिनट का अन्तर आयेगा।

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण--

जिस नगर सूर्योदय जानना हो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लेवें, वह मिनट+पूर्व के हो तो इस पंचांग के सूर्योदय में हीन करें और मिनट--पश्चिम के हो तो धन करें अर्थात् जोड़ें। अक्षांशादि सारिणी में देशान्तर मिनट से पहले धन + चिन्ह हों तो ऋण करें, ऋण--चिन्ह हों तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा, पश्चात इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लेवें। रविक्रान्ति और इष्टनगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरांतर मिनट लें, वह धन हो तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हो तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टें. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण से चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह दिनमान में ही हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें, वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घंटा मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से है। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें, और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों--इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें, तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय तिथ्यादि पंचांग होगा।

शुद्ध प्रथम आश्विन कृष्ण पक्ष २ बुधवार ता. ५ सितंबर २००१ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिति १४ भाद्रपद शाके १९२३ को हैदराबाद नगर का इस पचाग **से सूर्योदय, सूर्यास्त** दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टे. टा. घं. ६ मि. ०५ है। हैदराबाद दिल्ली से ५ मि. पूर्व में (अक्षाशादि सारिणी में देखें) अतः यह ५ मि. इस पंचाग के सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ०० हुए। यह हैदराबाद का इस पंचांग के माध्यम से सूर्योदय हुआ। अब सितम्बर मास की दैनिक-ग्रह सूर्यक्रान्ति में देखें। ता. ५ सितम्बर को रविक्रान्ति उत्तरा ६/४७ है। हैदराबाद के अक्षांश १७।१८ हैं। (अक्षांशादि सारिणी देखो) आगे चरान्तर सारिणी से १७ अक्षांश और ६ क्रान्तयंश के कोष्ठक में ६ मिनट है और ७ क्रान्तयंश में ७ मिनट है, यहां क्रान्तयंश ६।५ होने से क्रान्तयंश ७ से चरान्तर मिनट लेना चाहिए। अतः क्रान्तयंश ७ में चरान्तर मिनट ७ प्राप्त हुए यह मिनट धन आये। ऊपर के मध्यम सूर्योदय घं. ६ मि. ०० में जोड़ दिये तो हैदराबाद में स्टै. टा. घं. ६ मि. ७ यह स्पष्ट सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट ७ को ५ से गुणों तो ३ पल प्राप्त हुए। चरान्तर धन होने के कारण इस पंचांग के दिनमान ३१।१९ में ३५ पल हीन करने (विपरिणयन करने) से ३०।४४ यह हैदराबाद का दिनमान हुआ। इसका घण्टा मिनट किये तो घं. १२ मि. १७ हुए। यह ऊपर आये हुए हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय ६।०७ में जोड़ दिया तो घं. १८ मि. २४। यह हैदराबाद का स्टै. टा. से सूर्यास्त हुआ। यहां हैदराबाद सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ से २ मिनट बाद में है, इसके घटी पल किये तो ० घटी ५ पल हुए। यह घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सुर्योदय से हैदराबाद का स्पष्ट सुर्योदय बाद में होने **से इस पंचांग के तिथ्यादि की घटी पलों में घटा देने से भाद्रपद शुक्ल ७ मंगलवार को तिथि घटयादि ७/२३ अनु. २५/२२ यह हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय से तिथि** नक्षत्र स्पष्ट हुए। इसी प्रकार योग करण की घटी पलों में घटाकर बना लें। इसी प्रक्रिया से संसार के किसी भी नगर का सूक्ष्म पंचांग "श्रीविश्वविजय पंचांग" द्वारा बन सकता है। विशेष बात यह है कि "श्रीविश्वाविजय पंचांग" में तिथि नक्षत्र योग करण भद्रा चन्द्रमा आदि के घण्टा मिनट दिये हैं। वह भारत में सर्वत्र समान है। यह इसकी अनुपम विशेषता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

जैसे ता. ४ सितंबर २००१ को हैदराबाद का चरांतर लाना है। तो दैनिक रवि क्रांति सारिणी से इस दिन के रवि क्रांति **७/१४** है और हैदराबाद के आक्षांश १७/१८ है। रविक्रान्ति ७ के तुल्य हैं। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रांत्यंश की हैं और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश का हैं। क्रांत्यंश ७ तथा अक्षांश १७/१८ में देखो तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात में ७ मिनट प्राप्त हुए। अब यहाँ क्रान्ति उत्तर + धन होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

चरान्तर सारणी

उत्तराक्षांश : चरान्तर मिनट

क्रान्ति	यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन																												क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण										
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
२	४	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	६	६	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	३	३	४
४	८	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५
५	११	१०	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४	४	५	५	६
६	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५	५	६	६	७
७	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६	६	७	७	८
८	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१४	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६	७	८	९	९
९	१९	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१०	२१	२१	२०	१९	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८	८	१०	१२	१२
११	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३
१२	२६	२५	२४	२३	२२	२२	२१	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९	१०	१२	१३	१४
१३	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६
१४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११	१२	१४	१५	१७
१५	३३	३२	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२	१३	१५	१७	१८
१६	३५	३४	३३	३१	३०	२९	२८	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०
१७	३७	३६	३५	३४	३२	३१	३०	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४	१५	१६	१९	२१
१८	४०	३८	३७	३६	३४	३३	३२	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४	१६	१८	२०	२२
१९	४२	४१	३९	३८	३६	३५	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५	१७	१९	२१	२४
२०	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६	१८	२०	२३	२५
२१	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३८	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२४	२७
२२	४९	४८	४६	४५	४३	४१	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८
२३	५२	५०	४९	४७	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९	२१	२४	२७	३०
२४	५५	५३	५१	४९	४७	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१
२५	५७	५५	५३	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१३	११	९	७	४	२	१	३	६	९	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३
२६	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२५	२३	२१	१९	१६	१४	१२	९	७	५	२	१	४	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३५
२७	६३	६१	५९	५७	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३५	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३३	३७
२८	६५	६३	६१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४२	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५	२३	२०	१८	१५	१३	१०	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३१	३४	३८
२९	६८	६६	६४	६२	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३६	३४	३१	२९	२७	२४	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	१	४	७	११	१४	१७	२१	२४	२८	३२	३६	४०
३०	७१	६९	६७	६४	६२	६०	५७	५५	५३	५०	४८	४५	४३	४०	३८	३५	३३	३०	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	२	१	४	८	११	१५	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४१
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अक्षांश	यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																												क्रांति के विपरीत धन या ऋण करें										

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाईम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर ऋण धन चिह्नानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाईम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घं.मि.
न्यूजीलैंड (क)	+६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकेन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+४।३०
जापान कोरिया	+३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकेनहिल प्रांत उत्तर टेरेटोरी (आस्ट्रेलिया)	+४।०
सायबेरिया, रेखांश ९७।३० से १११।३० पूर्व तक तथा चीन हाँगकाँग	+२।३०
साराबान (ख)	+२।००
भारत (इण्डिया)	०।००
यूरोपियन (एसिया)	–२।३०
यूगेण्डा केनिया कालोनी	–३।००
पूर्वी यूरोप फिनलैंड (ग) तथा यूरोप कण्ट्री पूर्वीय विभाग तथा यूरोप जोन	–३।३०
पेलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रीका मध्य यूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रीया, हंगरी, स्विटजरलैंड, युगोस्लाविया अल्बानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसलीमाल्टा	–४।३०
ग्रीनवीच (घ) ब्रिटिश द्वीप	
पश्चिमी यूरोप (ङ)	–५।३०
हालैण्ड	–५।१०
आइसलैण्ड	–६।३०
पूर्वी ब्राजील	–८।३०
युरुगुआ	–९।००
ब्राउंडर न्यूफाउण्डलेण्ड (च)	–०९।१
अटलांटिक केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	–०९।०
पूर्वीय केनेडा ६८ से ८९ रेखांश पूर्वीय U.S.A. स्टेट्स चील (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	–१०।३०
मध्य केनेडा ८९ से १०३ रेखांश पर मध्य U.S.A. स्टेट्स् ब्रिटिश होण्डर्स (ज)	–११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	–१२।३०
(पैसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया, नेवड़ा आरगिन, वाशिंगटन	–१३।३०

टिप्पणी (क) अक्टूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक घं. ६ मि. ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता. १४ से दिसम्बर ता. १४ तक घं. २ मि. २० का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता. ३० तक अन्तर घं. २ मि. ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता. २२ से अक्टूबर ता. ७ अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और वेल्जियम के लिए ता. १९ अप्रैल से ता. ४ अक्टूबर तक अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्टूबर के पहले रविवार तक घं. ८ मि. १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता. १ से ३१ मार्च तक घं. ९ मि. ३० का अन्तर रहता है.

(ज) अक्टूबर ता. १ से फरवरी ता. १४ तक घं. ११ मि. ० का अन्तर रहता है।

इस प्रकार उपरोक्त कोष्ठक को काम में लाते समय, समय का अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर उपयोग करें।

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	+४	+१४	+१२	+३	–३	–३	+३	+६	०	–९	–१६	–११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	–१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	–१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	–१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	–१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	–३	३	+३	६	१	–९	१६	१२	३
३१	+१४		+४		–३		+६	+१		–१६	–१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यमकाल और स्पष्ट काल- स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाईम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाईम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारिणी में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं, वे मिनट ऋण हों तो स्टेण्डर्ड टाईम में घटा देने से और धन हों तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाईम) होगा। इस स्थानीय मध्यम टाईम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख का वेलांतर लेकर ऋण हों तो जोड़ने और धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाईम) का मान होगा।

समय-भेद विवरण- आजकल प्रायः सर्वसाधारण ज्योतिषियों को 'समय भेद' का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान को लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से एक अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले इस भेद को भलीभांति समझकर तदनन्तर जन्मपत्र आदि बनावें और एक बात का स्मरण रखना चाहिए कि जिस मान का जन्म टाईम हो उसी मान का जहाँ का जन्म हुआ हो वहां का सूर्योदय लेकर ही इष्ट शोधन करना चाहिए। अथवा जहाँ का जन्म हुआ हो वहाँ का दिनमान सूर्योदय लिया हो

मान का जन्म टाइम बनाकर इष्ट शोधन करना चाहिए। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टैण्डर्ड लेकर दिनार्ध से या दिनमास से इष्ट बना लिया करते है, यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमान से इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमान का टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकार ने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिए एक स्थान के मध्यम टाइम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में सर्वत्र वही टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व, भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था, तदनन्तर ग्रीन्विच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२।३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टैण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है, उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों से आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण का धन चिन्ह है, जिसमें ऋण के चिन्ह हो वह नगर स्टेण्डर्ड स्थान के पश्चिम में समझे और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

"वर्षफल"- प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते है परन्तु आधुनिक विज्ञानवेताओं ने सूक्ष्म यन्त्रों के वेधद्वारा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान ८ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ गताब्द) में ही नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक गताब्द में अधिक अन्तर पड़ने से प्रायः लग्न भी बदल जाता है। पूना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिविज्ञान वेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक मिलता है और कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल घटित होता है। यहां विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की दोनों वर्ष प्रवेश सारिणियां दे रहे है-

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वेधसिद्ध नवीनवर्षनामानुसारेण वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	११	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मुद्दादशा विधिः जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़कर ३ और जोड़ें, ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

मुद्दादशाक्रम

श.	ग्रह	मा.	दि.
१	सूर्य	०	१८
२	चन्द्र	१	०
३	मं.	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांशा २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	४४	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५
वृषभ	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	[illegible]
कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२
सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७
धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२८	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
११	१०	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनुः	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

इष्ट सांपातिक काल से जन्म लग्न ज्ञात करने की सरल विधि

श्री चन्द्रभान भाटिया, एम.एस.सी.

पिछले कुछ वर्षों से आपके प्रिय ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' में प्रतिदिन का सांपातिक काल (Sidereal Time) दिया जा रहा है। **अब सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०'(ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time) के ०.०० बजे मध्य रात्रि के आधार मान पर की गयी है।** इससे विश्व के किसी भी स्थान के लिए इष्ट सांपातिक काल की गणना की जा सकती है। इष्ट सांपातिक काल तथा जन्म स्थान की लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न सुगमता से शुद्ध तथा सूक्ष्म रूप से ज्ञात किया जा सकता है।

इस वर्ष लेख में पूर्ण संशोधन कर सांपातिक काल की गणना एवं लग्न ज्ञात करने की प्रक्रिया को कई उदाहरण देकर समझाया गया है। आशा है इससे पाठक लाभान्वित होंगे। -

सम्पादक

इष्ट सांपातिक काल की गणना

— जन्म समय अधिकतर **भारतीय मानक समय (Indian Standard Time)** के अनुसार ज्ञात होता है।

— **सर्वप्रथम इसे स्थानीय मध्यम समय** (Local Mean Time) में परिवर्तित किया जाता है।

— तत्पश्चात् इष्ट दिन का सांपातिक काल पंचांग में दी गयी दैनिक स्पष्ट ग्रह सारणी से ज्ञात किया जाता है।

— यदि इष्ट दिन विगत अथवा आगामी वर्षों में से हो, तो इसे पंचांग में दिये गए कोष्ठक (अ) (संशोधित), (ब) तथा (स) की सहायता से ज्ञात किया जाता है।

— इस सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०' (ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय **(L.M.T.)** के ००—०० बजे मध्य रात्रि के अनुसार की गयी है।

— सांपातिक काल की गणना करने के लिए जन्म स्थान के रेखांश के लिए संस्कार किया जाता है। प्रति १° रेखांश के अन्तर के लिए ०.६५७१ सैकन्ड (स्थूलतः२/३सैं.) है।

— यदि जन्म स्थान के रेखांश पूर्वी हों संस्कार धनात्मक और यदि रेखांश पश्चिमी हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (य) में दर्शाया गया है।

— जन्म स्थान संस्कार के संस्कारित इस सांपातिक काल में जन्म समय के स्थानीय (L.M.T.) को जोड़ा जाता है।

— इस योग में प्रति घण्टा १० सैं. स्थूल रूप से, अथवा सूक्ष्म रूप से ९.५८६ सैं. प्रति घण्टा जोड़ा जाता है। इस संस्कार को कोष्ठक (द) में दर्शाया गया है।

— यदि यह योग २४ घण्टों से अधिक हो तो योग में से २४ घण्टे घटा दिये जाते हैं।

— समय को सर्वदा रेलवे समयानुसार लिखना चाहिए अर्थात दोपहर १ बजकर ४५ मि. को १३ बजकर ४५ मि. रात्रि ११ बजकर २० मिनट को २३ बजकर २० मिनट, मध्य रात्रि के पश्चात २ बजकर १५ मि. को ०२ बजकर १५ मिनट आदि।

— दिनांक का आरम्भ मध्य रात्रि के पश्चात ००—००. बजे से ही मानना चाहिए।

इस प्रकार विश्व के किसी भी स्थान पर इष्ट समय के सांपातिक काल की गणना सरलता से की जा सकती है।

स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time)

हर देश का अपना **मानक समय (Standard Time)** होता है। भारत में पूर्वी रेखांश ८२°३०' के स्थानीय समय (L.M.T.) को ही पूर्ण देश का **मानक समय** (Standard Time) माना गया है। इसी समयानुसार सब सरकारी व गैर सरकारी कार्य होते हैं।

जन्म समय भी अधिकतर इसी मानक समयानुसार ज्ञात होता है। इष्ट सांपातिक काल ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम भा. प्र.स. (I.S.T.) को स्था. म.स. (L.M.T.) में परिवर्तित करते हैं।

— जिस स्थान का स्था. म. स. (L.M.T.) ज्ञात करना हो. उस स्थान के रेखांश यदि पूर्वी रेखांश ८२°३०' से कम हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा और यदि स्थान के रेखांश पूर्वी रेखांश ८२°३०' से अधिक हो तो संस्कार धनात्मक होगा।

— स्थानीय रेखांश व पूर्वी रेखांश ८२°३०' के अन्तर को ४ से गुणा करने पर जितना आये, वह मिनट व सैकन्ड में इस संस्कार का मान होगा।

— यह संस्कार **''स्टैण्डर्ड अन्तर''** के नाम से जाना जाता है। इसे प्रत्येक स्थान के लिए पंचांग में दी गयी **''अक्षांशादि सारणी''** में दिया गया है।

उदाहरण: दिल्ली का स्टैण्डर्ड अन्तर कितना है?

दिल्ली के रेखांश पू. ७७°१२' हैं। अतः (८२°३०')—(७७°१२')=५°१८'। इसे ४ से गुणा करने परः५°१८'x४=२१ मि. १२ सैं.। ये रेखांश पू. रेखांश ८२°३०' से कम होने के कारण ऋणात्मक है।

उदाहरण: दिल्ली में १७ बजकर ३० मि. भा. मा. स. (I.S.T.) का मान स्था. म.स. (L.M.T.) में कितना होगा?

दिल्ली का स्टै. अन्तर =२१ मि. १२सैं.।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	३०	००	भा.मा.स.
—		२१	१२	स्टै. अन्तर
	१७	०८	४८	स्था.म.सं.

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. (Sidereal Time) ज्ञात करना।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	५०	०	भा. मा. स.
—		२१	१२	स्टैं. अन्तर
	१७	२८	४८	स्था. म.स.

	घं.	मि.	सैं.	
	१	१४	२७	१० अक्टूबर १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सां.का.
–	०	०	५१	दिल्ली के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से
+	१	१३	३६	दिल्ली का ००-०० बजे स्था.म.स. (L.M.T) का सां.का.
+	१७	२८	४८	दिल्ली का १७-५० बजे भा.मा.स. (I.S.T) पर स्था.मा.स.(L.M.T)
		२	४८	१७ घंटा का संस्कार कोष्ठक (द) से
+			५	२९ मि. का संस्कार कोष्ठक (द) से
	१८	४५	१७	इष्ट समय का सां का.

उदाहरण: ४/५ जुलाई १९९३ की रात्रि को कलकत्ते में ०३-१५ बजे भा.मा.स. (I.S.T.) का सां.का. ज्ञात करना।

कलकत्ते के पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए स्टै. अन्तर +२३ मि. ३२ सै.

	घं.	मि.	सैं.	
	०३	१५	००	भा. मा. स. (I.S.T.)
+		२३	३२	स्टैं. अन्तर
	०३	३८	३२	कलकत्ता का स्था. मा. स. (L.M.T.)
	१८	५२	००	५ जुलाई १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सा. का.
–			५८	पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से:
	१८	५१	०२	कलकत्ता के लिए ००-०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
+	०३	३८	३२	इष्ट समय का स्था. मा. स. (L.M.T)
		३०		३ घं. का कोष्ठक (द) से संस्कार
+			०६	३८ मि. का कोष्ठक (द) से संस्कार
	२२	३०	१०	इष्ट समय का सां. का.

अन्य वर्षों के लिए गणना

उदाहरण: बम्बई पू. रेखांश ७२°५०', स्टैं अन्तर -३८ मि. ४० सै. के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सं. का ज्ञात करना।

	घं.	मि.	सैं.	
	२३	५०	००	बम्बई में भा. मा. स.
–		३८	४०	बम्बई के लिए स्टैं. अन्तर
	२३	११	२०	बम्बई के लिए स्था. मा. स.

पंचांग में दिये गए कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) से ४ फरवरी १९५० के लिए सा. का.

	६	४०	१८	कोष्ठक (अ) से १९५० का सां. का.
+	२	२	१३	कोष्ठक (ब) से साधारण वर्ष के लिए फरवरी माह का सां. का.
+	०	११	५०	कोष्ठक (स) से दिनांक ४ के लिए सां का.
	८	५४	२१	रेखांश ०°० का ००-०० बजे स्था.मा.स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
–			४८	बम्बई रेखांश ७२°५०' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
	८	५३	३३	बम्बई का ००-०० बजे स्था. म. स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
+	२३	११	२०	इष्ट समय का स्था. म. स. (L.M.T.)
		३	४७	२३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+			०२	११ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
	३२	८	४२	योग २४ घं. से अधिक होने पर २४ घं.घटाये
–	२४	००	००	
	८	८	४२	इष्ट समय का सां. का.

विदेश स्थित स्थान के लिए गणना

उदाहरण: ५ मई १९७६ को लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°५' पर १३-३० बजे G.M.T. का सां. का. ज्ञात करना।

लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°-५' का स्टैं. अन्तर :-० मि. २० सैं. होगा।

	घं.	मि.	सैं.	
	१३	३०	००	(G.M.T.) में समय
–	००	००	२०	स्टैं अन्तर
	१३	२९	४०	स्था. म. स. (L.M.T.)
	०६	३९	०९	कोष्ठक (अ) से १९७६ का सां. का.
+	०७	५७	०३	कोष्ठक (ब) से मई माह का प्लुत वर्ष के लिए
+	००	१५	४६	सा. का दिनांक ५ का कोष्ठक (स) से सां. का.
	१४	५१	५८	रेखांश ०°०' पर ५ मई १९७६ को ००-०० बजे स्था. म.स. पर सां. का.
	००	००	००	पश्चिमी रेखांश ०५' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
	१४	५१	५८	लन्दन का ५ मई १९७२ का ००-०० बजे स्था.म.स. से सा.का.
+	१३	२९	४०	इष्ट समय का स्था. स. स.
+	००	०२	०८	१३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+	०	०	०५	२९ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
	२८	२३	५१	
	२४	००	००	२४ घं. घटाने पर
	४	२३	५१	इष्ट समय वा सां. का.

सांपातिक काल व लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न ज्ञात करना

इस वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में दिल्ली अक्षांश २८°३८' का लग्न सारणी एवं सर्वोपयोगी दशम सारणी के अतिरिक्त बम्बई अक्षांश १८°५८' के लिए अक्षांश १९° की, कलकत्ता अक्षांश २२°३५' की, वाराणसी अक्षांश २५°१९' के लिए अक्षांश २५°२३' की लग्न सारणियां दी

जा रही है। ये लग्न सारणियां इनके अतिरिक्त भारत के कई स्थानो के लिए भी उपयोगी होगी।

सभी लग्न सारणियां २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणियां हैं।

यदि जिस समय की गणना हो उस समय यदि अयनांश २३°४५' अयनांश से अधिक हो तो जितना अधिक हो, वह सारणी से ज्ञात लग्न में से घटाना होगा और यदि यह अयनांश २३°४५' अयनांश से कम हो तो जितना कम हो वह सारणी से ज्ञात लग्न में जोड़ना होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (र) में दर्शाया गया है।

इन सारणियों के अतिरिक्त अक्षांश ०° से ६०° तक की सायन अर्थात ०° अयनांशीय लग्न सारणियां (कोष्ठक २ क व २ ख) भी दी जा रही है।

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. के लिए जन्म लग्न ज्ञात करना।

इससे पूर्व उदाहरण में दिल्ली में १० अक्टूबर १९९३ को १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

दिल्ली की लग्न सारणी से :

घं.	मि.	सैं.		रा.	अं.	क.
१८	४८	००	सां. का के लिए लग्न	११	२३	१५
१८	४४	००	सां. का. के लिए लग्न —	११	२१	५१
				००	०१	२४

अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर (०० ०१ २४)

अतः २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर ८४' हुआ।

अब इष्ट सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. सां. का. १८-४४-० से कितना अधिक है?

१८	४५	३७
— १८	४४	००
००	०१	३७

अर्थात १ मि. ३७ सैं. अथवा ९७ सैं. अधिक है।

२४० सैं. के सां. का. में अन्तर के लिए — लग्न में ८४' का अन्तर

तो ९७ सैं. के सा. का. में अन्तर — $\frac{८४\times९७}{२४०}$

= ३३'५७'' का अन्तर होगा।

अतः १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. के सां.का. के लिए लग्नः

	रा.	अं.	क.	वि.
	११	२१	५१	००
+			३३	५७
	११	२२	२४	५७ होगा

यह लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

इस उदाहरण में १० अक्टूबर १९९३ का अयनांश २३°४६'३०'' लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

अन्तर = २३°४६'३०''—२३°४५'= १'३०''

इष्ट दिन का अयनांश अधिक होने के कारण जन्म लग्न में संस्कार:

	रा.	अं.	का.	वि.	
	११	२२	२४	५७	
—			१	३०	अयनांश संस्कार
	११	२२	२३	२७	स्पष्ट व शुद्ध लग्न

उदाहरण: बम्बई पू. रेखांश ७२°५०, उत्तरी अक्षांश १८°५८' के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का जन्म लग्न ज्ञात करना।

इसके पूर्व के उदाहरण से इष्ट दिन व समय का सां. का. ८ घं. ८ मि. ४२ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

पंचांग में दी गयी बम्बई की लग्न सारणी से:

घं.	मि.	सैं.	रा.	अं.	क.
८	१२	०	६	६	२०
८	८	०	६	५	२४
०	४	०	०	०	५६

अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर - ५६'

अतः ४२ सैं. के लिए लग्न में अन्तर $\frac{५६\times४२}{२४०}$

=९'४८''

अतः जन्म लग्न

	रा.	अं.	क.	वि.
	६	५	२४	००
+			९	४८
	६	५	३३	४८

४ फरवरी १९५० का अयनांश २३°९'३६'' है।

२३°	४५'	००''
-२३	०९	३६
०	३५	२४

यह २३°४५' से ३५'२४'' कम है। अतः स्पष्ट व शुद्ध लग्न

	६	५	३३	४८
+			३५	२४
	६	६	०९	१२ होगी

इसी प्रकार दशम लग्न सारणी से दशम भाव स्पष्ट ज्ञात किया जा सकता है।

आगामी वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में अन्य प्रसिद्ध नगरो की निरयन लग्न सारणियां दी जायेगी।

इस प्रकार इष्ट सांपातिक काल ज्ञात कर विश्व के किसी भी स्थान के लिए शुद्ध निरयन लग्न सुगमतापूर्वक ज्ञात की जा सकती है।

४, तिलक नगर, मथुरा (उ. प्र.) २८१००१

संशोधित कोष्ठक (अ)

प्रत्येक वर्ष की १ जनवरी को मध्यरात्रि ००-०० बजे स्था. म. स. (L.M.T.) के अनुसार रेखांश ००' पर सांपातिक काल कोष्ठक

ई. सन्	सांपातिक काल घं.	मि.	सैं.	ई. सन्	सांपातिक काल घं.	मि.	सैं.	ई.सन्	सांपातिक काल घं.	मि.	सैं.
१९०१	६	३९	४८	१९३४	६	३९	४९	१९६७	६	३९	५०
१९०२	६	३८	५०	१९३५	६	३८	५२	१९६८	६	३८	५३
१९०३	६	३७	५३	१९३६	६	३७	५५	१९६८	६	४१	५२
१९०४	६	३६	५५	१९३७	६	४०	५४	१९७०	६	४०	५५
१९०५	६	३९	५४	१९३८	६	३९	५७	१९७१	६	३९	५८
१९०६	६	३८	५६	१९३९	६	३८	५९	१९७२	६	३९	०१
१९०७	६	३७	५९	१९४०	६	३८	०२	१९७३	६	४२	०१
१९०८	६	३७	०१	१९४१	६	४१	०१	१९७४	६	४१	०४
१९०९	६	४०	०१	१९४२	६	४०	०३	१९७५	६	४०	०६
१९१०	६	३९	०३	१९४३	६	३९	०५	१९७६	६	३९	०९
१९११	६	३८	३६	१९४४	६	३८	०८	१९७७	६	४२	०८
१९१२	६	३७	०९	१९४५	६	४१	०७	१९७८	६	४१	१०
१९१३	६	४०	०९	१९४६	६	४०	१०	१९७९	६	४०	१२
१९१४	६	३९	१२	१९४७	६	३९	१२	१९८०	६	३९	१५
१९१५	६	३८	१५	१९४८	६	३८	१५	१९८१	६	४२	१४
१९१६	६	३७	१८	१९४९	६	४१	१५	१९८२	६	४१	१६
१९१७	६	४०	१७	१९५०	६	४०	१८	१९८३	६	४०	१९
१९१८	६	३९	२०	१९५१	६	३९	२१	१९८४	६	३९	२२
१९१९	६	३८	२३	१९५२	६	३८	२४	१९८५	६	४२	२१
१९२०	६	३७	२५	१९५३	६	४१	२४	१९८६	६	४१	२४
१९२१	६	४०	२४	१९५४	६	४०	२६	१९८७	६	४०	२७
१९२२	६	३९	२७	१९५५	६	३९	२९	१९८८	६	३९	३०
१९२३	६	३८	२९	१९५६	६	३८	३२	१९८९	६	४२	३०
१९२४	६	३७	३१	१९५७	६	४१	३१	१९९०	६	४१	३३
१९२५	६	४०	३०	१९५८	६	४०	३४	१९९१	६	४०	३६
१९२६	६	३९	३३	१९५९	६	३९	३६	१९९२	६	३९	३८
१९२७	६	३८	३५	१९६०	६	३८	३८	१९९३	६	४२	३८
१९२८	६	३७	३८	१९६१	६	४१	३७	१९९४	६	४१	४०
१९२९	६	४०	३८	१९६२	६	४०	४०	१९९५	६	४०	४३
१९३०	६	३९	४१	१९६३	६	३९	४२	१९९६	६	३९	४५
१९३१	६	३८	४४	१९६४	६	३८	४५	१९९७	६	४२	४४
१९३२	६	३७	४७	१९६५	६	४१	४४	१९९८	६	४१	४७
१९३३	६	४०	४६	१९६६	६	४०	४७	१९९९	६	४०	४९

संशोधित कोष्ठक (य) सांपातिक के स्थानीय संस्कार हेतु

रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.
१°३१'	— १	३९°३४'	— २६	७७°३७'	— ५१
३°०३'	— २	४१°०५'	— २७	७९°०८'	— ५२
४°३४'	— ३	४२°३७'	— २८	८०°३९'	— ५३
६°०५'	— ४	४४°०८'	— २९	८२°११'	— ५४
७°३७'	— ५	४५°३९'	— ३०	८३°४२'	— ५५
९°०८'	— ६	४७°११'	— ३१	८५°१३'	— ५६
१०°३९'	— ७	४८°४२'	— ३२	८६°४५'	— ५७
१२°१०'	— ८	५०°१३'	— ३३	८८°१६'	— ५८
१३°४२'	— ९	५१°४५'	— ३४	८९°४७'	— ५९
१५°१३'	— १०	५३°१६'	— ३५	९१°१९'	— ६०
१६°४४'	— ११	५४°४७'	— ३६	९२°५०'	— ६१
१८°१६'	— १२	५६°१८'	— ३७	९४°२१'	— ६२
१९°४७'	— १३	५७°५०'	— ३८	९५°५३'	— ६३
२१°१८'	— १४	५९°२१'	— ३९	९७°२४'	— ६४
२२°५०'	— १५	६०°५२'	— ४०	९८°५५'	— ६५
२४°२१'	— १६	६२°२४'	— ४१	१००°२६'	— ६६
२५°५२'	— १७	६३°५५'	— ४२	१०१°५८'	— ६७
२७°२४'	— १८	६५°२६'	— ४३	१०३°२९'	— ६८
२८°५५'	— १९	६६°५८'	— ४४	१०५°००'	+ ६९
३०°२६'	— २०	६८°२९'	— ४५	१०६°३२'	— ७०
३१°५८'	— २१	७०°००'	— ४६	१०८°०३'	— ७१
३३°२९'	— २२	७१°३२'	— ४७	१०९°३४'	— ७२
३५°००'	— २३	७३°०३'	— ४८	१११°०६'	— ७३
३६°३१'	— २४	७४°३४'	— ४९	११२°३७'	— ७४
३८°०३'	— २५	७६°०६'	— ५०	११४°०८'	— ७५

विशेष : पश्चिम रेखांश के लिए संस्कार धनात्मक होगा।

कोष्ठक (र) अयनांश संस्कार हेतु

सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार
१९०१	+१°१६'	१९२६	+०°५५'	१९५१	+०°३४'	१९७६	+०°१३'
१९०२	१°१५'	१९२७	०°५४'	१९५२	०°३३'	१९७७	०°१२'
१९०३	१°१४'	१९२८	०°५३'	१९५३	०°३२'	१९७८	०°१२'
१९०४	१°१४'	१९२९	०°५३'	१९५४	०°३२'	१९७९	०°११'
१९०५	१°१३'	१९३०	०°५२'	१९५५	०°३१'	१९८०	०°१०'
१९०६	+१°१२'	१९३१	+०°५१'	१९५६	+०°३०'	१९८१	+०°९'
१९०७	१°११'	१९३२	०°५०'	१९५७	०°२९'	१९८२	०°८'
१९०८	१°१०'	१९३३	०°४९'	१९५८	०°२८'	१९८३	०°७'
१९०९	१°९'	१९३४	०°४८'	१९५९	०°२७'	१९८४	०°६'
१९१०	१°८'	१९३५	०°४८'	१९६०	०°२७'	१९८५	०°६'
१९११	+१°८'	१९३६	+०°४७'	१९६१	+०°२६'	१९८६	+०°५'
१९१२	१°७'	१९३७	०°४६'	१९६२	०°२५'	१९८७	०°४'
१९१३	१°६'	१९३८	०°४५'	१९६३	०°२४'	१९८८	०°३'
१९१४	१°५'	१९३९	०°४४'	१९६४	०°२३'	१९८९	०°२'
१९१५	१°४'	१९४०	०°४३'	१९६५	०°२२'	१९९०	०°१'
१९१६	+१°३'	१९४१	+०°४३'	१९६६	+०°२२'	१९९१	+०°१'
१९१७	१°३'	१९४२	०°४२'	१९६७	· ०°२१'	१९९२	०°०'
१९१८	१°२'	१९४३	०°४१'	१९६८	०°२०'	१९९३	— ०°१'
१९१९	१°१'	१९४४	०°४०'	१९६९	०°१९'	१९९४	— ०°२'
१९२०	१°०'	१९४५	०°३९'	१९७०	०°१८'	१९९५	— ०°३'
१९२१	+०°५९'	१९४६	+०°३८'	१९७१	+०°१७'	१९९६	— ०°४'
१९२२	०°५८	१९४७	०°३७'	१९७२	०°१७'	१९९७	— ०°४'
१९२३	०°५८'	१९४८	०°३७'	१९७३	०°१६'	१९९८	— ०°५'
१९२४	०°५७'	१९४९	०°३६'	१९७४	०°१५'	१९९९	— ०°६'
१९२५	०°५६'	१९५०	०°३५'	१९७५	०°१४'	२०००	— ०°७'

कोष्ठक (ब)

प्रतिमास के आरम्भ में साम्पातिक काल की वृद्धि

मास	साधारण वर्ष			प्लुत वर्ष		
	घं.	मि.	सैं.	घं.	मि.	सैं.
जनवरी	०	०	०	०	०	०
फरवरी	२	२	१३	२	२	१३
मार्च	३	५२	३७	३	५६	३३
अप्रैल	५	५४	५०	५	५८	४७
मई	७	५३	७	७	५७	३
जून	९	५५	२०	९	५९	१६
जुलाई	११	५३	३६	११	५७	३३
अगस्त	१३	५५	५०	१३	५९	४६
सितम्बर	१५	५८	३	१६	२	०
अक्टूबर	१७	५६	२०	१८	०	१६
नवम्बर	१९	५८	३३	२०	२	२९
दिसम्बर	२१	५६	५०	२२	०	४६

प्रत्येक तारीख को साम्पातिक काल की वृद्धि

कोष्ठक (स)

ता.	साम्पा. काल			ता.	साम्पा. काल		
	घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.
१	०	०	०	१६	०	५९	०८
२	०	३	५७	१७	१	३	५
३	०	७	५३	१८	१	७	१
४	०	११	५०	१९	१	१०	५७
५	०	१५	४६	२०	१	१४	५५
६	०	१९	४३	२१	१	१८	५१
७	०	२३	३९	२२	१	२२	४८
८	०	२७	३६	२३	१	२६	४४
९	०	३१	३२	२४	१	३०	४१
१०	०	३५	२९	२५	१	३४	३७
११	०	३९	२६	२६	१	३८	३४
१२	०	४३	२२	२७	१	४२	३०
१३	०	४७	१९	२८	१	४६	२७
१४	०	५१	१५	२९	१	५०	२४
१५	०	५५	१२	३०	१	५४	२०
				३१	१	५८	१७

कोष्ठक (ट)

प्रति घंटे (मिनट या सैकेन्ड) के लिए साम्पातिक काल का संस्कार

घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. —	प्रसे. — —	घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. —	प्रसे. — —
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	२१	३८	६	१४	३७
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	३
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

अयनांश सारिणी (त)

ई.सन्.	अ.	क.	वि.	ई.सन्.	अ.	क.	वि.
१९३६	२२	५७	४७	१९७२	२३	२७	५६
१९३७	२२	५८	३७	१९७३	२३	२८	४७
१९३८	२२	५९	२८	१९७४	२३	२९	३७
१९३९	२३	००	१८	१९७५	२३	३०	२७
१९४०	२३	१	०८	१९७६	२३	३१	१७
१९४१	२३	१	५८	१९७७	२३	३२	०८
१९४२	२३	२	४९	१९७८	२३	३२	५८
१९४३	२३	३	३९	१९७९	२३	३३	४८
१९४४	२३	४	२९	१९८०	२३	३४	३८
१९४५	२३	५	१९	१९८१	२३	३५	२९
१९४६	२३	६	१०	१९८२	२३	३६	१९
१९४७	२३	७	००	१९८३	२३	३७	०९
१९४८	२३	७	५०	१९८४	२३	३७	५९
१९४९	२३	८	४१	१९८५	२३	३८	५०
१९५०	२३	९	३१	१९८६	२३	३९	४०
१९५१	२३	१०	२१	१९८७	२३	४०	३०
१९५२	२३	११	११	१९८८	२३	४१	२०
१९५३	२३	१२	०२	१९८९	२३	४२	११
१९५४	२३	१२	५२	१९९०	२३	४३	०२
१९५५	२३	१३	४२	१९९१	२३	४३	५२
१९५६	२३	१४	३२	१९९२	२३	४४	४२
१९५७	२३	१५	२३	१९९३	२३	४५	५०
१९५८	२३	१६	१३	१९९४	२३	४६	२३
१९५९	२३	१७	०३	१९९५	२३	४७	१४
१९६०	२३	१७	५३	१९९६	२३	४८	०४
१९६१	२३	१८	४४	१९९७	२३	४८	५१
१९६२	२३	१९	३४	१९९८	२३	४९	४४
१९६३	२३	२०	२४	१९९९	२३	५०	३४
१९६४	२३	२१	१४	२०००	२३	५१	२४
१९६५	२३	२२	०२	२००१	२३	५१	५८
१९६६	२३	२२	५५	२००२	२३	५२	४८
१९६७	२३	२३	४५	२००३	२३	५३	३८
१९६८	२३	२४	३५	२००४	२३	५४	२९
१९६९	२३	२५	२६	२००५	२३	५५	१८
१९७०	२३	२६	१६	२००६	२३	५६	०९
१९७१	२३	२७	०५				

अयनांश सारिणी (थ)
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता.	अयनगति विकला	मास	ता.	अयनगति विकला
जनवरी	१	०	जुलाई	२	२५
	८	१		९	२६
	१५	२		१७	२७
	२३	३		२४	२८
	३०	४		३१	२९
फरवरी	६	५	अगस्त	७	३०
	१४	६		१५	३१
	२१	७		२२	३२
	२८	८		२९	३३
मार्च	७	९	सितम्बर	६	३४
	१५	१०		१३	३५
	२२	११		२०	३६
	२९	१२		२७	३७
अप्रैल	६	१३	अक्टूबर	५	३८
	१३	१४		१२	३९
	२०	१५		१९	४०
	२७	१६		२७	४१
मई	५	१७	नवम्बर	३	४२
	१२	१८		१०	४३
	१९	१९		१७	४४
	२७	२०		२५	४५
जून	३	२१	दिसम्बर	२	४६
	१०	२२		९	४७
	१७	२३		१७	४८
	२५	२४		२४	४९
				३१	५०

विदेश और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नगर देश नाम	अक्षांश अं. क.	ग्रीन्विच से रेखांश अं. क.	दिल्ली से देशान्तर घं. मि.
अदन (एडन अरब)	उ. १३।२५	पू. ४५।००	— २।०९
अर्जेन्टाइना (द. अमे.)	द. २६।१२	पू. ६४।४५	— ९।२८
आस्ट्रेलिया दक्षि.	द. ३२।००	पू. १४६।१७	+ ४।३६
काबुल (अफगानिस्तान)	उ. ३४।३०	पू. ६९।१७	— ०।३२
कांडी (सीलोन लंका)	उ. ०७।११	पू. ८०।३२	+ ०।१३
कांगो (प. अफ्रीका)	द. ०६।००	पू. १५।५०	— ४।०६
काहिरा (मिश्र)	उ. ३०।०२	पू. ३१।१५	— ३।०४
क्वेटा (बिलोचिस्तान)	उ. ३०।१३	पू. ६७।०१	— ०।४१
ग्रीन्विच (यूरोप)	उ. ५१।२०	००।००	— ५।०९
जेनेवा (स्विट्जर. पू.)	उ. ४६।१३	पू. ०६।०७	— ४।४५
जेरूशलम (इजरा.)	उ. ३१।४६	पू. ३५।१४	— २।४८
ट्रांसवाल (द. अफ्रीका)	द. २५।००	पू. २९।००	— ३।१३
ट्रिपोली (उ. अफ्रीका)	उ. ३२।४५	पू. १३।१५	— ४।१६
टोकियो (जापान)	उ. ३५।४२	पू. १३९।४५	+ ४।१०
तेहरान (ईरान)	उ. ३५।४१	पू. ५१।२५	— १।४३
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ. ४०।४३	पू. ७४।००	—१०।०५
नाईरोबी (पू. अफ्रीका)	द. ०१।२०	पू. ३६।४९	— २।४२
पेरिस (फ्रांस)	उ. ४८।५०	पू. ०२।२०	— ५।००
पेचिंग (चीन)	उ. ३९।५५	पू. ११६।२४	+ २।३७
बर्लिन (जर्मनी)	उ. ५२।३२	पू. १३।२५	— ४।१५
बल्गारिया (यूरोप)	उ. ४३।१८	पू. २६।१७	— ३।२४
बगदाद (ईराक)	उ. ३३।१८	पू. ४४।२७	— २।११
मक्का (अरब)	उ. २१।२५	पू. ४०।१२	— २।२८
मास्को (रूस)	उ. ५५।४५	पू. ३७।३७	— २।३९
माण्डले (ब्रह्मा)	उ. २२।००	पू. ९६।०८	+ १।१६
रोम (इटली)	उ. ४१।५५	पू. १२।२८	— ४।१९
लंदन (इंग्लैण्ड)	उ. ५१।३०	पू. ००।०५	— ५।०९
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१।०५	+ ०।५५
वाशिंगटन (अमेरिका)	उ. ३८।५५	पू. ७७।०४	— १०।१६
सिंगापुर (मलाया)	उ. ०१।१६	पू. १०३।४५	+ १।४६
[illegible] (चीन)	उ. २२।[illegible]	पू. [illegible]	+ [illegible]

दिल्ली अक्षांश २८°३८' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण: सांपातिक काल

घं. / मि.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.
०	२ १८ ३१	३ १४ १४	४ ९ ५७	५ ६ १५	६ २ ३३	६ २८ १६	७ २३ ५९	८ २१ ४९	९ २५ २०	११ ६ १५	० १७ १०	१ २० ४१
४	१९ २३	१५ ५	१० ५०	७ ८	३ २५	६ २९ ७	२४ ५२	२२ ५०	२६ ३६	७ ४१	१८ २५	२१ ४०
८	२० १६	१५ ५६	११ ४२	८ ०	४ १७	६ २९ ५८	२५ ४५	२३ ५०	२७ ५२	९ ६	१९ ३९	२२ ४०
१२	२१ ८	१६ ४७	१२ ३४	८ ५३	५ ९	७ ० ४९	२६ ३८	२४ ५१	२९ ८	१० ३२	२० ५२	२३ ३९
१६	२२ ०	१७ ३८	१३ २६	९ ४७	६ १	७ १ ४०	२७ ३१	२५ ५३	१० ० २५	११ ५८	२२ ५	२४ ३८
२०	२ २२ ५२	३ १८ २९	४ १४ १९	५ १० ४०	६ ६ ५३	७ २ ३१	७ २८ २४	८ २६ ५५	१० १ ४२	११ १३ २३	० २३ १८	१ २५ ३६
२४	२३ ४४	१९ २०	१५ ११	११ ३२	७ ४४	३ २२	२९ १७	२७ ५७	३ ०	१४ ४९	२४ ३०	२६ ३४
२८	२४ ३६	२० ११	१६ ३	१२ २५	८ ३६	४ १३	८ ० ११	२८ ५९	४ १९	१६ १३	२५ ४२	२७ ३२
३२	२५ २८	२१ २	१६ ५५	१३ १८	९ २८	५ ४	१ ४	९ ० २	५ ३८	१७ ३८	२६ ५४	२८ ३०
३६	२६ २०	२१ ५३	१७ ४८	१४ १०	१० २०	५ ५५	८ १ ५८	१ ६	६ ५८	१९ ३	२८ ६	१ २९ २७
४०	२ २७ ११	३ २२ ४४	४ १८ ४०	५ १५ ३	६ ११ ११	७ ६ ४६	८ २ ५५	९ २ १०	१० ८ १८	११ २० २७	० २९ १९	२ ० २४
४४	२८ ३	२३ ३६	१९ ३३	१५ ५६	१२ ३	७ ३७	३ ४७	३ १५	९ ३९	२१ ५१	१ ० २१	१ २०
४८	२८ ५४	२४ २७	२० २५	१६ ४९	१२ ५५	८ २९	४ ४१	४ २०	११ ०	२३ १५	१ ३०	२ १७
५२	२ २९ ४६	२५ १९	२१ १८	१७ ४२	१३ ४६	९ २०	५ ३६	५ २५	१२ २१	२४ ३८	२ ३८	३ १३
५६	३ ० ३७	२६ १०	२२ ११	१८ ३४	१४ ३७	१० ११	६ ३१	६ ३१	१३ ४३	२६ १	३ ४५	४ ९

घं. / मि.	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	३ १ २८	३ २७ १	४ २३ ३	५ १९ २७	६ १५ २९	७ ११ २	८ ७ २६	९ ७ ३८	१० १५ ६	११ २७ २४	१ ४ ५२	२ ५ ४
४	२ १९	२७ ५३	२३ ५६	२० १९	१६ २०	११ ५३	८ २१	८ ४५	१६ २९	२८ ४७	५ ५९	५ ५९
८	३ १०	२८ ४४	२४ ४८	२१ १२	१७ ११	१२ ४४	९ १७	९ ५२	१७ ५२	० ० ९	६ ५	६ ५४
१२	४ १	२९ ३५	२५ ४१	२२ ५	१८ ३	१३ ३६	१० १३	११ ०	१९ १५	१ ३०	७ १०	७ ४९
१६	४ ५३	४ ० २७	२६ ३४	२२ ५७	१८ ५४	१४ २७	११ १०	१२ ९	२० ३९	२ ५१	९ १५	८ ४३
२०	३ ५ ४४	४ १ १९	४ २७ २७	५ २३ ५०	६ १९ ४६	७ १५ १९	८ १२ ६	९ १३ १९	१० २२ ३	० ४ १२	१ १० २०	२ ९ ३८
२४	६ ३५	२ १०	२८ २०	२४ ४२	२० ३७	१६ १०	१३ ३	१४ २८	२३ २७	५ ३२	११ २४	१० ३२
२८	७ २६	३ २	४ २९ १२	२५ ३४	२१ २८	१७ २	१४ ०	१५ ३९	२४ ५२	६ ५२	१२ ३०	११ २६
३२	८ १७	३ ५४	५ ० ५	२६ २७	२२ १९	१७ ५४	१४ ५८	१६ ४९	२६ १७	० ८ ११	१३ ३०	१२ १९
३६	९ ८	४ ४६	५ ० ५८	२७ १९	२३ १०	१८ ४६	१५ ५६	१८ ०	२७ ४२	९ २९	१४ ३३	१३ १३
४०	३ ९ ५९	४ ५ ३७	५ १ ५०	५ २८ ११	६ २४ १	७ १९ ३८	८ १६ ५४	९ १९ १२	१० २९ ७	१० ४७	१ १५ ३५	२ १४ ६
४४	१० ५०	६ २९	२ ४३	५ २९ ४	२४ ५२	२० ३०	१७ ५२	२० २५	११ ० ३२	१२ ५	१६ ३७	१४ ५९
४८	११ ४१	७ २१	३ ३७	५ २९ ५६	२५ ४३	२१ २२	१८ ५१	२१ ३८	१ ५८	१३ २२	१७ ३९	१५ ४२
५२	१२ ३३	८ १३	४ ३०	६ ० ४८	२६ ३४	२२ १४	१९ ५०	२२ ५१	३ ५४	१४ ३८	१८ ४०	१६ ४५
५६	३ १३ २३	४ ९ १५	५ ५ २२	६ १ ४०	६ २७ २५	२३ ७	८ २० ५०	९ २४ ५	११ ४ ४९	० १५ ५४	१ १९ ४०	२ १७ ३८

कलकत्ता अक्षांश २२°३५' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण: सांपातिक काल

(बिलासपुर २२°५', द्वारका २२°१६', बड़ौदा २२°१८', राजकोट २२°१८', जामनगर २२°२७', खड़गपुर २२°३०', आनन्द २२°३४', इटारसी २२°३६', नड़ियाद २२°४९' आदि स्थानों के लिए भी इस लग्न-सारिणी का प्रयोग किया जा सकता है।

घं० / मि०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १५ ३९	३ १२ २	४ ८ ४४	५ ६ १५	६ ३ ४६	७ ० २८	७ २६ ५१	८ २४ ५७	९ २७ ४६	११ ६ १५	० १४ ४४	१ १७ ३३
४	१६ ३३	१२ ५४	९ ३८	७ १०	४ ४०	१ २१	२७ ४५	२५ ५७	२८ ५८	७ ३५	१५ ५६	१८ ३३
८	१७ २६	१३ ४७	१० ३३	८ ५	५ ३४	२ १३	२८ ३९	२६ ५८	२९ ११	८ ५५	१७ ७	१९ ३२
१२	१८ १९	१४ ४०	११ २७	९ १	६ २८	३ ६	७ २९ ३२	२७ ५८	१० १ २३	१० १४	१८ १७	२० ३१
१६	१९ १३	१५ ३३	१२ २२	९ ५५	७ २२	३ ५८	८ ० २६	८ २८ ५९	२ ३७	११ ३४	१९ २८	२१ ३०
२०	२ २० ६	३ १६ २६	४ १३ १७	५ १० ५२	६ ८ १७	७ ४ ५१	८ १ २१	९ ० ०	१० ३ ५१	११ १२ ५३	० २० ३८	१ २२ २९
२४	२० ५९	१७ १९	१४ ११	११ ४७	९ ११	५ ४४	२ १५	१ २	५ ६	१४ १३	२१ ४८	२३ २७
२८	२१ ५२	१८ १२	१५ ६	१२ ४३	१० ४	६ ३६	३ ९	२ ५	६ २०	१५ ३२	२२ ५७	२४ २५
३२	२२ ४४	१९ ४	१६ १	१३ ३८	१० ५८	७ २९	४ ४	३ ७	७ ३५	१६ ५१	२४ ६	२५ २२
३६	२३ ३७	१९ ५७	१६ ५६	१४ ३४	११ ५२	८ २१	४ ५९	४ १०	८ ५०	१८ ११	२५ १४	२६ २०
४०	२ २४ ३०	३ २० ४०	४ १७ ५१	५ १५ २९	६ १२ ४६	७ ९ १४	८ ५ ४३	५ १४	१० १० ६	११ १९ ३०	० २६ २२	१ २७ १७
४४	२५ २३	२१ ४३	१८ ४६	१६ २४	१३ ४०	१० ६	६ ४८	६ १७	११ २२	२० ४८	२७ २९	२८ १४
४८	२६ १६	२२ ३६	१९ ४०	१७ १९	१४ ३३	१० ५९	७ ४४	७ २१	१२ ३८	२२ ७	२८ ३६	१ २९ ११
५२	२७ ९	२३ ३०	२० ३५	१८ १४	१५ २७	११ ५१	८ ३९	८ २६	१३ ५५	२३ २४	० २९ ४३	२ ० ७
५६	२८ १	२४ २३	२१ ३०	१९ १०	१६ २१	१२.४३	९ ३४	९ ३०	१५ १२	२४ ४२	१ ० ४९	१ ४

घं० / मि०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २८ ५४	३ २५ १७	४ २२ २५	५ २० १०	६ १७ १३	७ १३ ३६	८ १० ३०	९ १० ३४	१० १६ ३०	११ २६ ०	१ १ ५५	२ २ ०
४	२ २९ ४७	२६ १०	२३ २०	२१ ०	१८ ७	१४ २९	११ २६	११ ४१	१७ ४८	२७ १८	३ ०	२ ५
८	३ ० ३९	२७ ३	२४ १६	२१ ५५	१९ ०	१५ २१	१२ २३	१२ ४७	१९ ६	२८ ३५	४ ४	३ ५१
१२	१ ३१	२७ ५७	२५ ११	२२ ५०	१९ ५४	१६ १४	१३ १९	१३ ५४	२० २३	२९ ५२	५ ९	४ ४६
१६	२ २४	२८ ५०	२६ ५	२३ ४४	२० ४७	१७ ७	१४ १६	१५ १	२१ ४२	० १ ८	६ १३	५ ४२
२०	३ ३ १७	३ २९ ४४	४ २७ १	५ २४ ३९	६ २१ ४०	७ १८ ०	८ १५ १३	९ १६ ८	१० २३ ०	० २ २४	१ ७ १६	२ ६ ३७
२४	४ ९	४ ० ३८	२७ ५६	२५ ३४	२२ ३३	१८ ५३	१६ १०	१७ १६	२४ १९	३ ४०	८ २०	७ ३१
२८	५ १	१ ३२	२८ ५२	२६ २९	२३ २६	१९ ४६	१७ ८	१८ २४	२५ ३९	४ ५५	९ २३	८ २६
३२	५ ५४	२ २६	४ २९ ४७	२७ २४	२४ १८	२० ३८	१८ ५	१९ ३३	२६ ५८	६ १०	१० २५	९ २१
३६	६ ४६	३ १९	५ ० ४३	२८ १९	२५ ११	२१ ३१	१९ ३	२० ४२	२८ १७	७ २४	११ २७	१० १५
४०	३ ७ ३९	४ ४ १३	५ १ ३८	५ २९ १३	६ २६ ३	७ २२ २४	८ २० १	९ २१ ५२	१० २९ ३७	० ८ ३९	१ १२ २९	२ ११ ९
४४	८ ३२	५ ८	२ ३३	६ ० ८	२६ ५७	२३ १७	२१ ०	२३ २	११ ० ५६	९ ५३	१३ ३१	१२ ३
४८	९ २४	६ २	३ २९	१ ३	२७ ५०	२४ ११	२१ ५९	२४ १३	२ १६	११ ७	१४ ३२	१२ ५७
५२	१० १७	६ ५६	४ २५	१ ५७	२८ ४३	२५ ४	२२ ५८	२५ २३	३ ३५	१२ १९	१५ ३२	१३ ५१
५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्षांश १९° की २३° ४५′ अयनांशीय निरयन लग्न सारणी (बंबई अक्षांश १८°५८′ के लिए) उपकरण : सांपातिक काल

घं० / मि०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १४ ३	३ १० ४६	४ ८ १	५ ६ १५	६ ४ २९	७ १ ४४	७ २८ २७	८ २६ ३८	९ २९ ०	११ ६ १५	० १३ ३०	१ १५ ५२
४	१४ ५७	११ ४०	८ ५७	७ १२	५ २४	२ ३७	२९ २१	२७ ३८	१० ० १०	७ ३२	१४ ४०	१६ ५२
८	१५ ५१	१२ ३४	९ ५३	८ ९	६ २०	३ ३१	८० १५	२८ ३८	१ २१	८ ४९	१५ ५०	१७ ५१
१२	१६ ४५	१३ २७	१० ४९	९ ६	७ १५	४ २४	१ ९	८ २९ ३८	२ ३२	१० ६	१६ ५९	१८ ५०
१६	१७ ३९	१४ २३	११ ४५	१० ३	८ १०	५ १७	२ ४	९ ० २९	३ ४४	११ २२	१८ ८	१९ ४९
२०	२ १८ ३२	३ १५ १५	४ १२ ४१	५ १० ५९	६ ९ ६	७ ६ ११	८२ ५८	९ १ ४०	१० ४ ५६	११ १२ ३९	० १९ १७	१ २० ४७
२४	१९ २६	१६ ९	१३ ३७	११ ५६	१० १	७ ५	३ ५३	२ ४१	६ ८	१३ ५६	२० २५	२१ ४५
२८	२० १९	१७ २	१४ ३३	१२ ५३	१० ५६	७ ५७	४ ४८	३ ४३	१० ७ ३०	१५ १२	२१ ३३	२२ ४३
३२	२१ १३	१७ ५६	१५ २९	१३ ५०	११ ५१	८ ५१	५ ४३	४ ४५	८ ३३	१६ २८	२२ ४०	२३ ४१
३६	२२ ६	१८ ५०	१६ २५	१४ ४७	१२ ४६	९ ४४	६ ३८	५ ५७	९ ४६	१७ ४५	२३ ४७	२४ ३९
४०	२ २३ ०	१९ ४४	४ १७ २१	५ १५ ४३	६ १३ ४१	७ १० ३७	८ ७ ३३	९ ६ ५०	१० ११ ०	११ १९ १	० २४ ५४	१ २५ ३६
४४	२३ ५३	२० ३९	१८ १७	१६ ४०	१४ ३६	११ ३१	८ ५८	७ ५३	१२ १४	२० १७	२६ ०	२६ ३३
४८	२४ ४७	२१ ३३	१९ १४	२ ७ ३७	१५ ३०	१२ २४	९ २४	८ ५६	१३ २८	२१ ३३	२७ ६	२७ ३०
५२	२५ ४०	२२ २७	२० १०	१८ ३४	१६ २५	१३ १७	१० १९	१० ०	१४ ४२	२२ ४८	२८ १२	२८ २६
५६	२६ ३३	२३ २१	२१ ७	१९ ३०	१७ २०	१४ १०	११ १५	११ ४	१५ ५७	२४ ३	० २९ १०	१ २९ २३

घं० / मि०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २७ २६	३ २४ १६	४२२ ३	५ २० २७	६ १८ १४	७ १५ ४	८ १२ ११	९ १२ ८	१०१७ ११	११ २५ १८	१ ० २२	२ ० १९
४	२८ २०	२५ १०	२३ ०	२१ २३	१९ ९	१५ ५७	१३ ७	१३ १३	१८ २७	२६ ३३	१ २६	१ १५
८	२ २९ १३	२६ ५	२३ ५६	२२ २०	२० ३	१६ ५०	१४ ४	१४ १८	१९ ४२	२७ ४८	२ ३०	२ ११
१२	३ ० ६	२७ ०	२४ ५३	२३ १६	२० ५७	१७ ४३	१५ ०	१५ २४	२० ५७	११ २९ २	३ ३४	३ ६
१६	३ ० ५९	२७ ५४	२५ ५०	२४ १३	२१ ५१	१८ ३७	१५ ५७	१६ ३०	२२ १३	० ० १६	४ ३७	४ २
२०	३ १ ५३	३ २८ ४९	४ २६ ४७	५ २५ ९	६ २२ ४६	७ १९ ३०	८ १६ ५४	९ १७ ३६	१०२३ २९	० १ ३०	१ ५ ४०	२ ४ ५७
२४	२ ४६	२९ ४४	२७ ४३	२६ ५	२३ ४०	२० २४	१७ ५१	१८ ४३	२४ ४५	२ ४४	६ ४३	५ ५२
२८	३ ३९	४ ० ३९	२८ ४०	२७ १	२४ ३४	२१ १७	१८ ४९	१९ ५०	२६ २	३ ५७	७ ४५	६ ४७
३२	४ ३३	१ ३४	४ २९ ३७	२७ ५७	२५ २८	२२ ११	१९ ४७	२० ५७	२७ १८	५ १०	८ ४७	७ ४२
३६	५ २६	२ २९	५ ०. ३४	२८ ५३	२६ २१	२३ ४	२० ४५	२२ ५	२८ ३४	६ २२	९ ४९	८ ३७
४०	३ ६ १९	४ ३ २४	५ १ ३१	५ २९ ४९	६ २७ १५	७ २३ ५८	८ २१ ४३	९ २३ १३	१०२९ ५१	० ७ ३४	१ १० ५०	२ ९ ३२
४४	७ १३	४ २०	२ २७	६ ० ४५	२८ ९	२४ ५१	२२ ४१	२४ २२	११ १ ८	८ ४६	११ ५१	१० २६
४८	८ ६	५ १५	३ २४	१ ४१	२८ ३	२५ ४५	२३ ४०	२५ ३१	२ २४	९ ५८	१२ ५२	११ २२
५२	८ ५९	६ १०	४ २१	२ ३७	६ २९ ५५	२६ ३९	२४ ३९	२६ ४०	३ ४१	११ ९	१३ ५२	१२ १५
५६	३ ९ ५३	४ ७ ६	५ ५ १८	६ ३ ३३	७ ० ५०	७ २७ ३३	८ २५ ३८	९ २७ ५०	११ ४ ५८	० १२ २०	१ १४ ५२	२ १३ ९

अक्षांश २५°२३' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी   उपकरण : साम्पातिक काल
(वाराणसी २५°१९' हैदराबाद (सिंध) २५°२२' प्रयाग २५°२५' झांसी २५°२७' आदि स्थानों के लिए)

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १६ ५७	३ १३ २	४ ९ १८	५ ६ १५	६ ३ १२	६ २९ २८	७ २५ ३३	८ २३ ३३	९ २६ ४३	११ ६ १५	० १५ ४७	१ १८ ५७
४	१७ ५०	१३ ५४	१० ११	७ ९	४ ५	७ ० २०	२६ २६	२४ ३३	२७ ५६	७ ३७	१७ ०	१९ ५७
८	१८ ४३	१४ ४६	११ ५	८ ४	४ ५८	१ १२	२७ २०	२५ ३४	९ २९ १०	९ ०	१८ १३	२० ५६
१२	१९ ३६	१५ ३८	११ ५८	८ ५८	५ ५२	२ ५	२८ १३	२६ ३५	१० ० २४	१० २२	१९ २५	२१ ५५
१६	२० २९	१६ ३०	१२ ५१	९ ५२	६ ४५	२ ५५	७ २९ ७	२७ ३६	१ ३९	११ ४५	२० ३७	२२ ५४
२०	२ २१ २१	३ १७ २२	४ १३ ४५	५ १० ४६	६ ७ ३७	७ ३ ४७	८ ० १	८ २८ ३८	१० २ ५५	११ १३ ७	० २१ ४८	१ २३ ५३
२४	२२ १४	१८ १४	१४ ३९	११ ४०	८ ३०	४ ३९	० ५५	८ २९ ४०	४ ११	१४ २८	२२ ५९	२४ ५१
२८	२३ ७	१९ ६	१५ ३३	१२ ३५	९ २३	५ ३१	१ ४९	९ ० ४२	५ २७	१५ ४५	२४ ९	२५ ४९
३२	२३ ५९	१९ ५८	१६ २६	१३ २९	१० १६	६ २३	२ ४३	१ ४५	६ ४४	१७ १२	२५ १९	२६ ४६
३६	२४ ५१	५० ५०	१७ २०	१४ २३	११ ९	७ १५	३ ३७	२ ४८	८ १	१८ ३३	२६ २८	२७ ४४
४०	२ २५ ४३	३ २१ ४३	४ १८ १३	५ १५ १७	६ १२ २	७ ८ ७	८ ४ २२	९ ३ ५२	१० ९ १९	११ १९ ५५	० २७ ३७	१ २८ ४१
४४	२६ ३६	२२ ३५	१९ ७	१६ ११	१२ ५५	८ ५८	५ २६	४ ५६	१० ३७	२१ १६	२८ ४५	१ २९ ३८
४८	२७ २८	२३ २७	२० १	१७ ५	१३ ४८	९ ५०	६ २१	६ १	११ ५५	२२ ३६	० २९ ५२	२ ० ३४
५२	२८ २०	२४ २०	२० ५५	१७ ५९	१४ ४०	१० ४२	७ १६	७ ६	१३ १४	२३ ५७	१ ० ५९	१ ३१
५६	२ २९ १३	२५ १२	२१ ४९	१८ ५३	१५ ३३	११ ३४	८ ११	८ ११	१४ ३३	२५ १७	२ ६	२ २७

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	३ ० ४	३ २६ ५	४ २२ ४३	५ १९ ४७	६ १६ २५	७ १२ २६	९ ७	९ ९ १७	१० १५ ५३	११ २६ ३७	१ ३ १३	२ ३ २३
४	० ५६	२६ ५७	२३ ३७	२० ४१	१७ १८	१३ १८	१० ३	१० २४	१७ १३	२७ ५७	४ १९	४ १८
८	१ ४८	२७ ५०	२४ ३१	२१ ३५	१०	१४ १०	१० ५९	११ ३१	१८ ३३	११ २९ १६	५ २४	५ १४
१२	२ ४०	२८ ४२	२५ २५	२२ २९	१९ ३	१५ २	११ ५६	१२ ३८	१९ ५४	० ० ३५	६ २९	६ ९
१६	३ ३२	३ २९ ३५	२६ १९	२३ २३	१९ ५५	१५ ५४	१२ ५२	१३ ४५	२१ १४	१ ५३	७ ३४	७ ४
२०	३ ४ २३	४ ० २८	४ २७ १३	५ २४ १७	६ २० ४७	७ १६ ४७	१३ ४९	९ १४ ५३	१० २२ ३५	० ३ ११	१ ८ ३८	२ ७ ५८
२४	५ १५	१ २१	२८ ७	२५ १०	२१ ४०	१७ ३९	१४ ४६	१६ २	२३ ५७	४ २९	९ ४५	८ ५३
२८	६ ०७	२ १४	२९ १	२६ ५	२२ ३२	१८ ३१	१५ ४४	१७ ११	२५ १८	५ ४६	१० ४५	९ ४७
३२	६ ५९	३ ७	४ २९ ५५	२६ ५७	२३ २४	१९ २३	१६ ४१	१८ २१	२६ ४०	७ ३	११ ४८	१० ४१
३६	७ ५१	४ ०	५ ० ५०	२७ ५१	२४ १६	२० १६	१७ ३९	१९ ३१	२८ २	८ १९	१२ ५०	११ ३५
४०	३ ८ ४३	४ ४ ५३	५ १ ४४	५ २८ ४५	६ २५ ८	७ २१ ९	१८ ३७	९ २० ४२	१० २९ २४	० ९ ३५	१ १३ ५२	२ १२ २९
४४	९ ३५	५ ४५	२ ३८	५ २९ ३९	२६ ०	२२ १	१९ ३६	२१ ५३	११ ० ४६	१० ५१	१४ ५४	१३ २३
४८	१० २६	६ ३८	३ ३२	६ ० ३२	२६ ५२	२२ ५०	२० ३४	२३ ५	२ ८	१२ ६	१५ ५५	१४ १७
५२	११ १८	७ ३२	४ २६	१ २५	२७ ४४	२३ ४७	२१ ३४	२४ १७	३ ३०	१३ २०	१६ ५६	१५ १०
५६	३ १२ १०	४ ८ २५	५ ५ २२	६ २ १९	६ २८ ३५	७ २४ ४०	८ २२ ३३	९ २५ ३०	११ ४ ५३	० १४ ३४	१ १७ [illegible]	२ १६ [illegible]

सर्वत्रोपयोगी २३°४५' निरयन दशम सारणी उपकरण: सांपातिक काल

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	११ ६ १५	० ८ २६	१ ८ २०	२ ६ १५	३ ४ १०	४ ४ ४	५ ६ १५	६ ८ २६	७ ८ २०	८ ६ १५	९ ४ १०	१० ४ ५
४	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७
८	८ २६	१० ३१	१० १५	८ ५	६ ५	६ ९	८ २६	१० ३१	१० १२	८ ५	६ ४	६ ८
१२	९ ३१	११ ३३	११ १२	८ ०	७ २	७ १२	९ ३१	११ ३३	११ १२	९ ०	७ २	७ १२
१६	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५
२०	११ ११ ४२	१३ ३६	१३ ५	२ १० ५०	३ ८ ५८	४ ९ १८	५ ११ ४२	६ १३ ३६	६ १३ ५	० १० ५०	९ ८ ५८	१० ९ १८
२४	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२
२८	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५
३२	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९
३६	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३
४०	११ १७ ८	१८ ४२	१ १७ ४७	२ १५ २६	३ १३ ५०	४ १४ ३७	५ १७ ८	६ १८ ४२	७ १७ ४७	८ १५ २६	९ १३ ५०	१० १४ ३७
४४	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१
४८	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५
५२	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९
५६	२१ २७	२२ ४३	२१ ३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४	२१ २७	६ २२ ४३	२१ ३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	११ २२ ३२	० २३ ४३	१ २२ २६	२ २० ४	३ १८ ४७	४ १९ ५८	५ २२ ३२	६ २३ ४३	७ २२ २६	८ २० ४	९ १८ ४७	१० १९ ५८
४	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३
८	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७
१२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२
१६	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७
२०	११ २७ ५३	० २८ ४०	२७ ४	२ २४ ४३	३ २३ ४८	४ २५ २२	५ २७ ५३	६ २८ ४०	७ २७ ४	८ २४ ४३	९ २३ ४८	१० २५ २२
२४	११ २८ ५७	० २९ ४०	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७	५ २८ ५७	६ २९ ३८	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७
२८	० ० १	१ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२	६ ० १	७ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२
३२	१ ५	१ ३६	१ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८	१ ५	१ ३६	७ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८
३६	२ ८	२ ३४	२ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	४ २९ ४३	२ ८	२ ३४	८ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	१० २९ ४३
४०	० ३ १२	३ ३२	२ १ ४०	२ २९ २५	३ २८ ५४	५ ० ४८	६ ३ १२	७ ३ ३२	८ १ ४०	८ २९ २५	२८ ५४	११ ० ४८
४४	४ १५	४ ३०	२ ३५	३ ० २१	३ २९ ५६	१ ५३	४ १५	४ ३०	२ ३५	९ ० २१	९ २९ ५६	१ ५३
४८	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	४ ० ५७	२ ५९	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	१० ० ५७	२ ५९
५२	६ २१	६ २६	४ २५	२ १५	१ ५९	४ ०४	६ २१	६ २६	४ २५	२ १५	१ ४८	४ ४
५६	० ७ २३	१ ७ २३	२ ५ २०	३ ३ १२	४ ३ २	५ ५ १०	६ ७ २३	७ ७ २३	८ ५ २०	९ ३ १२	१० ३ २	११ ५ १०

दैनिक लग्न सारिणी से लग्न ज्ञान

श्रीविश्वविजय पंचांग से भारत भर में अक्षांश ८ से ३५ तक के किसी भी नगर, ग्राम का लग्न समाप्तिकाल भा. स्टे. टा. से जानने की सरल विधि (सारणी) उदाहरण सहित मेरे परम स्नेही पंचांगकार कर्मठ विद्वान् स्व० श्री पीताम्बरदत्तजी ज्योतिषाचार्य के सुपुत्र श्री विनोद विजल्वाण ज्यो. एम. एस. सी. ने परिश्रमपूर्वक भेजी। वह पाठकों के लाभार्थ यहां प्रकाशित की जा रही है।

सम्पादक

श्रीविश्वविजय पंचांग का दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन कोष्ठक

लग्न. अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११.	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-६	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

इस लग्न सारणी कोष्ठक का श्रीविश्वविजय पंचांग की दैनिक लग्न सारणी में चिन्हानुसार मिनटों का संस्कार करने से तथा अंक्षाशादि सारणी पृष्ठ से इष्ट स्थान का चिन्ह धन ऋण के विपरीत मिनटों का देशान्तर संस्कार करने से भारत के ८ से ३५ अक्षांश तक के दैनिक लग्नों का समाप्ति काल जाना जा सकता है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं :-

(१) १ अप्रैल १९९२ को कलकत्ता में मेष लग्न का समाप्ति काल जानना है ? श्रीविश्वविजय पंचांग पृष्ठ १११ में कलकत्ता के अक्षांश २२/३५ व देशान्तर मिनट + ४४/४४ है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २२ अक्षांश के लिए मेष के नीचे +१२ मिनट व २३ अक्षांश के नीचे +१० मिनट है। अतः अक्षांश २२/३५ के लिए अनुमान से मिनट +११ संस्कार हुआ। पंचांग में पृष्ठ ७८ पर १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल घं० ८ मिनट २३ दिया है। इसमें +११ मिनट चिन्हानुसार युक्त करने पर ८/३४ हुआ। इसमें देशान्तर +४४/४४ मिनट (इसे ४५ मिनट मान लेना चाहिए) को धन चिन्ह के विपरीत ऋण किया तो ७ बजकर ४९ मिनट पर कलकत्ता में १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल आया।

(२) १/८/९२ को जयपुर में सिंह लग्न समाप्ति काल जानना है ? पृष्ठ ११२ में अक्षांश २६/५५ (इसे २७/० मानना चाहिये) व देशान्तर -५ मिनट है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २७ अक्षांश के सिंह लग्न का संस्कार +१ मिनट है। इसे पृष्ठ ८० के १/८/९२ के सिंह लग्न समाप्तिकाल ९/१३ में युक्त किया ९/१४ हुआ। देशान्तर -५ मिनट को चिन्ह के विपरीत धन किया ९/१९ जयपुर में सिंह लग्न का समाप्ति काल हुआ।

नोट : इस उक्त प्रकार से प्राप्त लग्नों के समाप्ति कालों में स्थिर वार्षिक संस्कार करने से तथा अयन चलन संस्कार करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आता है। यहां अयन चलन छोड़ दिया है वार्षिक संस्कार ज्ञात करने के लिए सन् को ४ से विभाजित करें जितना शेष बचे उतने मिनट लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। उदाहरण सन् १९८९ को ४ से विभाजित किया तो २ शेष बचा अतः २ मिनट युक्त करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आयेगा।

जिस ईस्वी सन् में ४ से विभाजित करने पर शून्य शेष आएं उस वर्ष १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लग्न समाप्ति कालों में ४ मिनट युक्त करें। २८ फरवरी के समय को ही २९ फरवरी का मान कर अन्य लग्न परिवर्तन संस्कार करें। उदाहरणार्थ २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न का परिवर्तन संस्कार -४ मिनट देशान्तर -१ मिनट है। अतः २८ फरवरी के समय १०/३२ को ही २९ फरवरी का मान कर ४ मिनट ऋण तथा १ मिनट धन किया तो १०/२९ घण्टादि २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न समाप्ति काल आया।

इस सारणी के निर्माण में पर्याप्त सूक्ष्मता ली गई है। तथापि सेकण्डों को छोड़ देने से समान चालन के कारण १ मिनट की स्थूलता सम्भव है। इससे भारत के प्रायः सभी नगरों का पर्याप्त सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल जाना जा सकता है। लगभग ३०० स्थलों के देशान्तर श्रीविश्वविजय पंचांग के पृष्ठ १११ व ११२ में दिये हुए हैं। उससे इतर स्थलों का देशान्तर जानने के लिए रेखांश ७७/१७ व ईष्ट स्थल के रेखांशों का अन्तर करें। ४ मिनट के एक रेखांश (१५ कला का १ मिनट) के अनुपात से देशान्तर मिनट आ जाते हैं यदि ईष्ट स्थल के रेखांश ७७/१७ से कम हों तो देशान्तर ऋण यदि ७७/१७ से अधिक हों तो + धन चिन्ह युक्त समझें। तब चिन्ह के विपरीत देशान्तर संस्कार उदाहरणों के समान करें।

कोष्ठक २ (क) सायन लग्न

सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.	सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.
००।००	०९०।००	०९२।००	०९४।०१	०९६।०५	०९८।२५	१००।३१	१०२।५६	१२।००	२७०।००	२६८।०१	२६५।५९	२६३।५५	२६१।४६	२५९।२९	२५७।०४
००।२०	०९४।३५	०९६।३४	०९८।३४	१००।३७	१०२।४३	१०४।५६	१०७।२६	१२।२०	२७४।३५	२७२।३६	२७०।३४	२६८।२८	२६६।१८	२६३।५७	२६१।२७
००।४०	०९९।११	१०१।०९	१०३।०७	१०५।०७	१०७।२०	१०९।२८	१११।३४	१२।४०	२७९।११	२७७।२२	२७५।२०	२७३।०४	२७०।५१	२६८।२८	२६५।५५
०१।००	१०३।४९	१०५।४४	१०७।४०	१०९।३६	१११।३६	११३।२९	११५।४९	१३।००	२८३।४९	२८१।५१	२७९।५०	२७७।४२	२७५।२९	२७३।०५	२७०।२७
०१।२०	१०८।२८	११०।२१	११२।१३	११४।०६	११६।०१	११७।५९	१२०।०३	१३।२०	२८८।२८	२८६।३२	२८४।३२	२८२।२६	२८०।२२	२७७।४६	२७५।०७
०१।४०	११३।२०	११५।००	११६।४८	११८।३७	१२०।२६	१२२।२९	१२४।२६	१३।४०	२९३।२०	२९१।२६	२८९।२९	२८७।२४	२८५।००	२८२।३५	२७९।५३
०२।००	११७।५५	११९।४१	१२१।२५	१२३।०८	१२४।५२	१२६।३९	१२८।२९	१४।००	२९७।५५	२९६।०५	२९४।२०	२९२।०८	२८९।५५	२८७।३०	२८४।४९
०२।२०	१२२।४३	१२४।२४	१२६।०३	१२७।४१	१२९।२०	१३०।५९	१३२।४२	१४।२०	३०२।४३	३००।५८	२९९।०६	२९७।०७	२९४।५८	२९२।३५	२८९।५४
०२।४०	१२७।३५	१२९।११	१३०।४५	१३२।१६	१३३।४८	१३५।२१	१३६।५६	१४।४०	३०७।३५	३०५।५५	३०४।०९	३०२।२४	३००।०९	२९७।४९	२९५।२०
०३।००	१३२।३२	१३४।०२	१३५।२८	१३६।५३	१३८।२०	१३९।४३	१४१।१०	१५।००	३१२।३२	३१०।५८	३०९।२७	३०७।२८	३०५।२८	३०३।२४	३००।३९
०३।२०	१३७।३३	१३८।५६	१४०।१५	१४१।३३	१४२।५०	१४४।०७	१४५।२५	१५।२०	३१७।३३	३१६।०६	३१४।३३	३१२।५१	३१०।५८	३०८।४९	३०६।२१
०३।४०	१४२।३९	१४३।५४	१४५।०५	१४६।१५	१४७।२३	१४८।३२	१४९।४२	१५।४०	३२२।३९	३२१।२०	३१९।५५	३१८।२२	३१६।३६	३१४।३७	३१२।२७
०४।००	१४७।४९	१४८।५५	१४९।५८	१५०।५९	१५१।५८	१५२।५८	१५३।५९	१६।००	३२७।४९	३२६।३९	३२५।२३	३२३।४९	३२२।२५	३२०।३७	३१८।२९
०४।२०	१५३।०४	१५४।००	१५४।५३	१५५।४५	१५६।३६	१५७।२६	१५८।१७	१६।२०	३३३।०३	३३२।०३	३३०।५८	३२९।४४	३२८।२३	३२६।४८	३२४।५५
०४।४०	१५८।२२	१५९।०८	१५९।५१	१६०।३३	१६१।१४	१६१।५५	१६२।३६	१६।४०	३३८।२२	३३७।३२	३३६।३९	३३५।३९	३३४।३०	३३३।११	३३१।३६
०५।००	१६३।४३	१६४।१८	१६४।५१	१६५।२३	१६५।५४	१६६।२५	१६६।५७	१७।००	३४३।४३	३४३।०५	३४२।२४	३४१।३८	३४०।४५	३३९।४३	३३८।२९
०५।२०	१६९।०७	१६९।३१	१६९।५३	१७०।१५	१७०।३६	१७०।५६	१७१।१७	१७।२०	३४९।०७	३४८।४२	३४८।२४	३४७।४२	३४७।०६	३४६।२४	३४५।३३
०५।४०	१७४।३३	१७४।४५	१७४।५६	१७५।०७	१७५।१८	१७५।२८	१७५।३९	१७।४०	३५४।३३	३५४।२०	३५४।०६	३५३।४०	३५३।३२	३५३।११	३५२।४४
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
०६।२०	१८५।२७	१८५।१५	१८५।०४	१८४।५३	१८४।४२	१८४।३२	१८४।२२	१८।२०	००५।२७	००५।४०	००५।५४	००६।२०	००६।२८	००६।५०	००७।२६
०६।४०	१९०।५३	१९०।२९	१९०।०७	१८९।४५	१८९।२४	१८९।०४	१८८।४३	१८।४०	०१०।५३	०११।२८	०११।४६	०१२।२८	०१२।५४	०१३।३६	०१४।२७
०७।००	१९६।१७	१९५।४२	१९५।०९	१९४।३७	१९४।०६	१९३।३५	१९३।०४	१९।००	०१६।१७	०१६।५५	०१७।३६	०१८।२२	०१९।२५	०२०।२७	०२१।३३
०७।२०	२०१।३८	२००।५२	२००।०९	१९९।२९	१९८।४६	१९८।०५	१९७।२४	१९।२०	०२१।३८	०२२।२८	०२३।२२	०२४।२२	०२५।३०	०२६।४९	०२८।२५
०७।४०	२०६।५७	२०६।००	२०५।०७	२०४।१५	२०३।२४	२०२।३४	२०१।४३	१९।४०	०२६।५७	०२७।५७	०२९।०२	०३०।२५	०३१।३७	०३३।२२	०३५।०७
०८।००	२१२।११	२११।०५	२१०।०२	२०९।०१	२०८।०२	२०७।०२	२०६।०१	२०।००	०३२।११	०३३।२१	०३४।३७	०३६।०१	०३७।३५	०३९।३३	०४१।३१
०८।२०	२१७।२१	२१६।०७	२१४।५५	२१३।४६	२१२।३७	२११।२८	२१०।१८	२०।२०	०३७।२१	०३८।४०	०४०।०६	०४१।३९	०४३।२४	०४५।२३	०४७।४३
०८।४०	२२२।२७	२२१।०४	२१९।४५	२१८।२७	२१७।११	२१५।५३	२१४।३५	२०।४०	०४२।२७	०४३।४३	०४५।२७	०४७।०९	०४९।०३	०५१।११	०५३।३९
०९।००	२२७।२८	२२५।५८	२२४।३२	२२३।०७	२२१।४२	२२०।१७	२१८।५०	२१।००	०४७।२८	०४९।०२	०५०।४३	०५२।३२	०५४।३२	०५६।४७	०५९।२१
०९।२०	२३२।२५	२३०।४९	२२९।१६	२२७।४४	२२६।१२	२२४।४०	२२३।०४	२१।२०	०५२।२५	०५४।०५	०५५।५१	०५७।४६	०५९।५१	०६२।११	०६४।५०
०९।४०	२३७।१७	२३५।३६	२३३।५७	२३२।१९	२३०।४१	२२९।०१	२२७।१८	२१।४०	०५७।१७	०५९।०३	०६०।५४	०६२।५३	०६५।०२	०६७।२५	०७०।०६
१०।००	२४२।०६	२४०।१९	२३८।३५	२३६।५२	२३५।०८	२३३।२१	२३१।३१	२२।००	०६२।०६	०६३।५५	०६५।५०	०६७।५३	०७०।०५	०७२।३०	०७५।१२
१०।२०	२४६।५०	२४५।००	२४३।१२	२४१।२३	२३९।३४	२३७।४१	२३५।४४	२२।२०	०६६।५०	०६८।४४	०७०।४१	०७२।४६	०७५।००	०७७।२६	०८०।०७
१०।४०	२५१।३२	२४९।३९	२४७।४७	२४५।५४	२४३।५९	२४२।०१	२३९।५७	२२।४०	०७१।३२	०७३।२८	०७५।२८	०७७।३४	०७९।४९	०८२।१४	०८४।५४
११।००	२५६।११	२५४।१६	२५२।२०	२५०।२४	२४८।२४	२४६।२१	२४४।१२	२३।००	०७६।११	०७८।०९	०८०।१०	०८२।१७	०८४।३१	०८६।५६	०८९।३३
११।२०	२६०।४९	२५८।५१	२५६।५३	२५४।५३	२५२।५०	२५०।४२	२४८।२७	२३।२०	०८०।४९	०८२।४८	०८४।५०	०८६।५६	०८९।१०	०९१।३२	०९४।०६
११।४०	२६५।२५	२६३।२६	२६१।२६	२५९।२४	२५७।१७	२५५।०५	२५२।४४	२३।४०	०८५।२५	०८७।२४	०८९।२६	०९१।३२	०९३।४८	०९६।०३	०९८।३३
								२४।००	०९०।००	०९२।००	०९४।०१	०९६।०५	०९८।२५	१००।३१	१०२।५६

कोष्ठक २ (ख) सायन लग्न उत्तर अक्षांश

सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.
००।००	१०५।३४	१०८।२८	[illegible]	११५।२२	११९।३७	१२४।३५
००।२०	१०९।४८	११२।३४	[illegible]	११९।०५	१२३।०३	१२७।४०
००।४०	११३।५९	११६।३६	११९।३०	१२२।४५	१२६।२८	१३०।४५
०१।००	११८।०७	१२०।३६	१२३।२०	१२६।२३	१२९।५०	१३३।४९
०१।२०	१२२।१४	१२४।३५	१२७।०८	१२९।५९	१३३।११	१३६।५२
०१।४०	१२६।१९	१२८।३२	१३०।५४	१३३।३४	१३४।३२	१३९।५५
०२।००	१३०।२५	१३२।२८	१३४।४१	१३७।०८	१३९।५२	१४२।५८
०२।२०	१३४।३०	१३६।२४	१३८।२०	१४०।४१	१४३।११	१४६।०१
०२।४०	१३८।३५	१४०।२०	१४२।२१	१४४।२५	१४६।३१	१४९।०५
०३।००	१४२।४१	१४४।१६	१४५।५८	१४७।४८	१४९।५१	१५२।०९
०३।२०	१४६।४७	१४८।१२	१४९।४३	१५१।२२	१५३।११	१५५।१३
०३।४०	१५०।५४	१५२।०९	१५३।२९	१५४।५५	१५६।३१	१५८।१८
०४।००	१५५।०१	१५६।०६	१५७।२५	१५८।३०	१५९।५१	१६१।२३
०४।२०	१५९।१०	१६०।०४	१६१।०२	१६२।०४	१६३।१२	१६४।२८
०४।४०	१६३।१९	१६४।०३	१६४।४९	१६५।३९	१६६।३३	१६७।३४
०५।००	१६७।२८	१६८।०१	१६८।३६	१६९।१४	१६९।५५	१७०।४०
०५।२०	१७१।३९	१७२।०१	१७२।२४	१७२।४९	१७३।१६	१७३।४७
०५।४०	१७५।४९	१७६।०३	१७६।१२	१७६।२५	१७६।३८	१७६।५३
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००
०६।२०	१८४।११	१८४।००	१८३।४८	१८३।३६	१८३।२२	१८३।०७
०६।४०	१८८।११	१८७।५९	१८७।३६	१८७।११	१८६।४४	१८६।१३
०७।००	१९२।३२	१९१।५९	१९१।२४	१९०।४६	१९०।०५	१८९।२०
०७।२०	१९६।४१	१९५।५८	१९५।११	१९४।२१	१९३।२७	१९२।२६
०७।४०	२००।५१	१९९।५६	१९८।४८	१९७।५६	१९६।४८	१९५।३२
०८।००	२०४।५९	२०३।५४	२०२।२५	२०१।३१	२००।०९	१९८।३७
०८।२०	२०९।०७	२०७।५१	२०६।३१	२०५।०५	२०३।२९	२०१।४३
०८।४०	२१३।१३	२११।४८	२१०।२०	२०८।३८	२०६।५०	२०४।४७
०९।००	२१७।२०	२१५।४४	२१४।०३	२१२।१२	२१०।०९	२०७।५१
०९।२०	२२१।२५	२१९।४०	२१७।४८	२१५।४५	२१३।२९	२१०।५५
०९।४०	२२५।३०	२२३।३६	२२१।३३	२१९।१९	२१६।४९	२१३।५९
१०।००	२२९।३५	२२७।३२	२२५।१९	२२२।५२	२२०।०८	२१७।०२
१०।२०	२३३।४१	२३१।२८	२२९।०४	२२६।२६	२२३।२८	२२०।०५
१०।४०	२३७।४६	२३५।२५	२३२।५२	२३०।०१	२२६।४९	२२३।०८
११।००	२४१।५३	२३९।२४	२३६।४०	२३३।३७	२३०।१०	२२६।११
११।२०	२४६।०२	२४३।२४	२४०।३०	२३७।१५	२३३।३२	२२९।१५
११।४०	२५०।१२	२४७।२६	२४४।२२	२४०।५५	२३६।५८	२३२।२०

सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.
१२।००	२५४।२६	२५१।३२	२४८।१८	२४४।३८	२४०।२३	२३५।२५
१२।२०	२५८।४३	२५५।४२	२५२।१८	२४८।२४	२४३।५३	२३८।३३
१२।४०	२६३।०६	२५९।५७	२५६।२३	२५२।१६	२४७।२७	२४१।४३
१३।००	२६७।३३	२६४।१८	२६०।३४	२५६।१४	२५१।०५	२४४।५६
१३।२०	२७२।०९	२६८।४६	२६४।५३	२६०।१९	२५४।५१	२४८।१३
१३।४०	२७६।५२	२७३।३४	२६९।२१	२६४।३३	२५८।४४	२५१।३६
१४।००	२८१।४३	२७८।१२	२७४।०१	२६८।५८	२६२।४७	२५५।०६
१४।२०	२८६।४९	२८३।१३	२७८।५४	२७३।३८	२६७।०३	२५८।४५
१४।४०	२९२।०६	२८८।२८	२८४।०३	२७८।३४	२७१।३६	२६२।३६
१५।००	२९७।४८	२९४।००	२८९।३२	२८३।५२	२७६।२९	२६६।४३
१५।२०	३०३।२५	२९९।५१	२९५।२२	२८९।३४	२८१।४९	२७१।१२
१५।४०	३०९।३०	३०६।०३	३०१।३९	२९५।४८	२८७।४३	२७६।१२
१६।००	३१५।५४	३१२।३९	३०८।२५	३०२।३८	२९४।२०	२८१।५३
१६।२०	३२२।३६	३१९।३९	३१५।४४	३१०।१२	३०१।५४	२८८।३६
१६।४०	३२९।३७	३२७।०४	३२३।३७	३१८।३६	३१०।४०	२९६।४८
१७।००	३३६।५५	३३४।५३	३३२।०४	३२७।५१	३२०।५१	३०७।१६
१७।२०	३४४।२८	३४३।०३	३४१।०२	३३७।५९	३३२।३७	३२०।५८
१७।४०	३५२।११	३५१।२७	३५०।२५	३४८।४७	३४५।५०	३३८।४८
१८।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
१८।२०	००७।४१	००८।३३	००९।३५	०११।१३	०१४।१०	०२१।१२
१८।४०	०१५।३२	०१६।५७	०१८।५८	०२२।०२	०२७।२३	०३९।०२
१९।००	०२३।०५	०२५।०७	०२७।५६	०३२।०९	०३९।१०	०५२।४४
१९।२०	०३०।२३	०३२।५७	०३६।२३	०४१।२५	०४९।२१	०६३।१२
१९।४०	०३७।२४	०४०।२१	०४४।१६	०४९।४८	०५८।०६	०७१।२४
२०।००	०४४।०६	०४७।२१	०५१।३५	०५७।२२	०६५।४०	०७८।०७
२०।२०	०५०।३०	०५३।५७	०५८।२१	०६४।१२	०७२।१७	०८३।४८
२०।४०	०५६।३५	०६०।०९	०६४।३८	०७०।२६	०७८।११	०८८।४८
२१।००	०६२।२२	०६६।००	०७०।२८	०७६।०९	०८३।३१	०९३।१७
२१।२०	०६७।५४	०७१।३२	०७५।५७	०८१।२६	०८८।२४	०९७।२४
२१।४०	०७३।११	०७६।४७	०८१।०६	०८६।२२	०९२।५७	१०१।१६
२२।००	०७८।२५	०८१।४८	०८५।५९	०९१।०२	०९७।१३	१०४।५४
२२।२०	०८३।०८	०८६।३६	०९०।३९	०९५।२७	१०१।१६	१०८।२४
२२।४०	०८७।५२	०९१।१४	०९५।०७	०९९।४२	१०५।०९	१११।४७
२३।००	०९२।२७	०९५।४२	०९९।२६	१०३।४७	१०८।५५	११५।०४
२३।२०	०९६।५५	१००।०३	१०३।३७	१०७।४४	११२।३३	११८।२७
२३।४०	१०१।१७	१०४।१८	१०७।४२	१११।३६	११६।०७	१२१।२७
२४।००	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३३	१२४।३५

षट् वर्ग सारणी चक्र

	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. चक्र		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सि.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ क.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कु.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा.स्टै. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला,सोलन		मद्रास		धर्मशाला,कांगड़ा		जम्मू(काश्मीर)	
	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
जन.१	०६।४७	१७।१५	०७।१५	१८।०९	०६।२०	१६।५९	०६।१४	१६।३९	०७।१९	१७।४१	०६।५४	१७।३९	०७।२१	१७।२८	०६।३५	१७।५०	०७।२८	१७।२८	०७।३३	१७।३४
६	०६।४९	१७।१९	०७।१७	१८।१२	०६।२२	१७।०३	०६।१४	१६।४२	०७।१९	१७।४४	०६।५४	१७।४३	०७।२२	१७।३२	०६।३७	१७।५३	०७।२८	१७।३२	०७।३४	१७।३७
११	०६।४९	१७।२२	०७।१८	१८।१५	०६।२२	१७।०६	०६।१४	१६।४६	०७।१९	१७।४८	०६।५४	१७।४६	०७।२२	१७।३६	०६।३८	१७।५६	०७।२९	१७।३७	०७।३४	१७।४१
१६	०६।४९	१७।२६	०७।१८	१८।१८	०६।२२	१७।१०	०६।१४	१६।४९	०७।१९	१७।५४	०६।५३	१७।४९	०७।२१	१७।४१	०६।३९	१७।५७	०७।२८	१७।४१	०७।३३	१७।४६
२१	०६।४९	१७।३०	०७।१८	१८।२२	०६।२२	१७।१३	०६।१३	१६।५३	०७।१९	१७।५७	०६।५३	१७।५२	०७।२०	१७।४५	०६।३९	१८।०१	०७।२६	१७।४५	०७।३२	१७।५१
२६	०६।४७	१७।३३	०७।१८	१८।२४	०६।२१	१७।१६	०६।१३	१६।५७	०७।१८	१८।०१	०६।५३	१७।५५	०७।१८	१७।४९	०६।३९	१८।०३	०७।२४	१७।४९	०७।३०	१७।५६
३१	०६।४५	१७।३७	०७।१७	१८।२८	०६।२०	१७।२०	०६।१२	१७।०१	०७।१६	१८।०५	०६।५२	१७।५९	०७।१६	१७।५४	०६।३९	१८।०६	०७।२२	१७।५४	०७।२७	१८।००
फर.५	०६।४३	१७।४१	०७।१५	१८।३०	०६।१८	१७।२३	०६।०९	१७।०५	०७।१३	१८।०९	०६।५२	१८।०२	०७।१४	१७।५८	०६।३८	१८।०८	०७।१९	१७।५९	०७।२४	१८।०५
१०	०६।४०	१७।४४	०७।१३	१८।३३	०६।१५	१७।२६	०६।०२	१७।०८	०७।१०	१८।१३	०६।५१	१८।०५	०७।११	१८।०२	०६।३७	१८।१०	०७।१५	१८।०४	०७।२०	१८।१०
१५	०६।३७	१७।४८	०७।११	१८।३५	०६।१२	१७।२९	०६।०३	१७।१२	०७।०६	१८।१६	०६।४८	१८।०८	०७।०७	१८।०६	०६।३५	१८।११	०७।११	१८।०८	०७।१६	१८।१४
२०	०६।३३	१७।५१	०७।०८	१८।३७	०६।०९	१७।३२	०५।५९	१७।१५	०७।०२	१८।१९	०६।४५	१८।१०	०७।०२	१८।१०	०६।३३	१८।१३	०७।०६	१८।१२	०७।११	१८।१८
२५	०६।२९	१७।५४	०७।०५	१८।३९	०६।०५	१७।३४	०५।५५	१७।१८	०६।५८	१८।२२	०६।४१	१८।१३	०६।५६	१८।१४	०६।३१	१८।१४	०७।००	१८।१६	०७।०६	१८।२२
मार्च२	०६।२४	१७।५६	०७।०१	१८।४१	०६।०१	१७।३७	०५।५०	१७।२१	०६।५४	१८।२५	०६।३८	१८।१५	०६।४९	१८।१८	०६।२८	१८।१४	०६।५३	१८।२०	०७।००	१८।२६
७	०६।२०	१७।५९	०६।५८	१८।४३	०५।५७	१७।३९	०५।४५	१७।२४	०६।४९	१८।२८	०६।३३	१८।१६	०६।४३	१८।२१	०६।२५	१८।१५	०६।४७	१८।२४	०६।५४	१८।२९
१२	०६।१५	१८।०१	०६।५४	१८।४४	०५।५२	१७।४१	०५।४०	१७।२६	०६।४४	१८।३१	०६।२९	१८।१८	०६।३७	१८।२५	०६।२२	१८।१६	०६।४०	१८।२९	०६।४८	१८।३२
१७	०६।१०	१८।०४	०६।५०	१८।४५	०५।४८	१७।४३	०५।३५	१७।२९	०६।३८	१८।३३	०६।२५	१८।२०	०६।३०	१८।२८	०६।१९	१८।१६	०६।३४	१८।३३	०६।४२	१८।३६
२२	०६।०४	१८।०६	०६।४५	१८।४७	०५।४३	१७।४४	०५।२९	१७।३१	०६।३२	१८।३६	०६।२०	१८।२२	०६।२४	१८।३१	०६।१६	१८।१७	०६।२८	१८।३६	०६।३६	१८।३९
२७	०५।५९	१८।०८	०६।४१	१८।४८	०५।३८	१७।४६	०५।२४	१७।३४	०६।२६	१८।३८	०६।१५	१८।२३	०६।१८	१८।३४	०६।१२	१८।१७	०६।२१	१८।३९	०६।२९	१८।४२
अप्रै १	०५।५४	१८।१०	०६।३७	१८।४९	०५।३३	१७।४८	०५।१८	१७।३६	०६।२०	१८।४१	०६।११	१८।२५	०६।१२	१८।३८	०६।०९	१८।१७	०६।१५	१८।४२	०६।२३	१८।४६
६	०५।४९	१८।१३	०६।३३	१८।५०	०५।२९	१७।५०	०५।१३	१७।३८	०६।१५	१८।४४	०६।०६	१८।२६	०६।०६	१८।४१	०६।०६	१८।१८	०६।०८	१८।४५	०६।१७	१८।५०
११	०५।४३	१८।१५	०६।२९	१८।५१	०५।२४	१७।५२	०५।०८	१७।४१	०६।११	१८।४७	०६।०२	१८।२८	०६।०१	१८।४५	०६।०२	१८।१८	०६।०२	१८।४९	०६।११	१८।५३
१६	०५।३९	१८।१७	०६।२५	१८।५३	०५।२०	१७।५३	०५।०३	१७।४३	०६।०६	१८।४९	०५।५८	१८।२९	०५।५५	१८।४८	०५।५९	१८।१८	०५।५६	१८।५२	०६।०५	१८।५६
२१	०५।३४	१८।१९	०६।२१	१८।५४	०५।१५	१७।५५	०४।५८	१७।४५	०६।०१	१८।५१	०५।५४	१८।३१	०५।४९	१८।५१	०५।५७	१८।१९	०५।५०	१८।५६	०५।५९	१८।५९
२६	०५।३०	१८।२२	०६।१८	१८।५५	०५।१२	१७।५७	०४।५४	१७।४८	०५।५६	१८।५४	०५।५०	१८।३३	०५।४४	१८।५४	०५।५४	१८।२०	०५।४५	१८।५९	०५।५३	१९।०३
मई १	०५।२६	१८।२४	०६।१५	१८।५७	०५।०८	१७।५९	०४।५०	१७।५०	०५।५२	१८।५७	०५।४७	१८।३५	०५।३९	१८।५८	०५।५२	१८।२२	०५।४०	१९।०२	०५।४८	१९।०६
६	०५।२२	१८।२७	०६।१२	१८।५९	०५।०५	१८।०२	०४।४६	१७।५३	०५।४८	१८।५९	०५।४४	१८।३७	०५।३५	१९।०१	०५।५०	१८।२२	०५।३६	१९।०६	०५।४३	१९।०९
११	०५।१९	१८।२९	०६।१०	१९।००	०५।०२	१८।०४	०४।४३	१७।५६	०५।४५	१९।०२	०५।४१	१८।३९	०५।३१	१९।०४	०५।४८	१८।२३	०५।३२	१९।०९	०५।३९	१९।१३
१६	०५।१६	१८।३२	०६।०८	१९।०२	०५।००	१८।०६	०४।४०	१७।५९	०५।४२	१९।०५	०५।३८	१८।४१	०५।२८	१९।०८	०५।४७	१८।२४	०५।२८	१९।१३	०५।३६	१९।१६
२१	०५।१४	१८।३५	०६।०६	१९।०४	०४।५८	१८।०८	०४।३८	१८।०१	०५।३९	१९।०८	०५।३७	१८।४३	०५।२५	१९।११	०५।४६	१८।२५	०५।२५	१९।१६	०५।३३	१९।१९
२६	०५।१२	१८।३७	०६।०५	१९।०६	०४।५६	१८।११	०४।३६	१८।०४	०५।३७	१९।११	०५।३६	१८।४५	०५।२२	१९।१४	०५।४५	१८।२७	०५।२२	१९।२०	०५।३०	१९।२१
३१	०५।११	१८।३९	०६।०४	१९।०८	०४।५५	१८।१३	०४।३५	१८।०६	०५।३५	१९।१३	०५।३५	१८।४७	०५।२०	१९।१७	०५।४५	१८।२८	०५।२०	१९।२३	०५।२८	१९।२६
जून ५	०५।११	१८।४२	०६।०४	१९।१०	०४।५५	१८।१५	०४।३४	१८।०८	०५।३५	१९।१५	०५।३५	१८।४८	०५।१९	१९।१९	०५।४५	१८।३०	०५।१९	१९।२५	०५।२७	१९।२९
१०	०५।११	१८।४४	०६।०४	१९।११	०४।५५	१८।१७	०४।३४	१८।११	०५।३५	१९।१८	०५।३५	१८।४९	०५।१९	१९।२१	०५।४५	१८।३१	०५।१८	१९।२७	०५।२७	१९।३२
१५	०५।११	१८।४६	०६।०५	१९।१३	०४।५५	१८।१८	०४।३४	१८।१२	०५।३५	१९।२०	०५।३५	१८।५१	०५।२०	१९।२२	०५।४६	१८।३३	०५।१९	१९।२९	०५।२७	१९।३४
२०	०५।१२	१८।४७	०६।०६	१९।१४	०४।५६	१८।२०	०४।३५	१८।१४	०५।३६	१९।२१	०५।३६	१८।५३	०५।२०	१९।२४	०५।४७	१८।३४	०५।२०	१९।३०	०५।२८	१९।३५
२५	०५।१३	१८।४८	०६।०७	१९।१५	०४।५७	१८।२१	०४।३६	१८।१५	०५।३७	१९।२२	०५।३७	१८।५५	०५।२१	१९।२६	०५।४८	१८।३५	०५।२१	१९।३२	०५।२९	१९।३६
३०	०५।१४	१८।४९	०६।०८	१९।१६	०४।५८	१८।२१	०४।३८	१८।१५	०५।३८	१९।२२	०५।३९	१८।५६	०५।२२	१९।२७	०५।४९	१८।३६	०५।२२	१९।३४	०५।३१	१९।३६

यह सूर्योदयास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण भवन उपयोगी संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा.स्टे. टाईम)

तारीख	वाराणसी		मुम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (काश्मीर)	
	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.
जुला.५	५।१६	१८।४९	६।१०	१९।१६	५।००	१८।२२	४।३९	१८।१५	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	५।५१	१८।३६	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६
१०	५।१८	१८।४८	६।११	१९।१६	५।०२	१८।२१	४।४१	१८।१५	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	५।५२	१८।३६	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५
१५	५।२०	१८।४७	६।१३	१९।१६	५।०४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	५।५३	१८।३६	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४
२०	५।२३	१८।४६	६।१५	१९।१५	५।०६	१८।१९	४।४६	१८।१२	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	५।५५	१८।३६	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२
२५	५।२५	१८।४४	६।१७	१९।१४	५।०८	१८।१८	४।४९	१८।१०	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	५।५६	१८।३५	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९
३०	५।२७	१८।४१	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	४।५१	१८।०८	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	५।५७	१८।३४	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६
अग.४	५।३०	१८।३८	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	४।५३	१८।०५	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	५।५८	१८।३२	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२
९	५।३२	१८।३५	६।२२	१९।०७	५।१४	१८।१०	४।५६	१८।०१	५।५८	१९।०६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९।०७	५।५९	१८।३०	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७
१४	५।३४	१८।३१	६।२३	१९।०४	५।१६	१८।०६	४।५८	१७।५७	६।०१	१९।०२	५।५५	१८।४२	५।४७	१९।०२	६।००	१८।२८	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२
१९	५।३६	१८।२७	६।२४	१९।०१	५।१८	१८।०२	५।०१	१७।५३	६।०३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	६।००	१८।२५	५।५२	१९।०४	६।००	१९।०६
२४	५।३९	१८।२२	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	५।०३	१७।४८	६।०५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	६।०१	१८।२२	५।५५	१८।५८	६।०३	१९।०१
२९	५।४१	१८।१७	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	५।०५	१७।४३	६।०७	१८।४८	६।००	१८।३०	५।५६	१८।४६	६।०१	१८।१९	५।५९	१८।५१	६।०६	१८।५६
सित.३	५।४३	१८।१२	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	५।०७	१७।३८	६।०९	१८।४२	६।०१	१८।२५	५।५८	१८।४०	६।०१	१८।१५	६।०२	१८।४५	६।०९	१८।५०
८	५।४४	१८।०७	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	५।०९	१७।३३	६।१२	१८।३७	६।०२	१८।२१	६।०१	१८।३४	६।०१	१८।१३	६।०६	१८।३८	६।१२	१८।४३
१३	५।४६	१८।०२	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	५।११	१७।२७	६।१४	१८।३१	६।०३	१८।१६	६।०४	१८।२८	६।०१	१८।०९	६।०९	१८।३२	६।१५	१८।३७
१८	५।४८	१७।५६	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	५।१३	१७।२२	६।१७	१८।२६	६।०५	१८।११	६।०७	१८।२१	६।०१	१८।०५	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०
२३	५।५०	१७।५१	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	५।१५	१७।१६	६।१८	१८।२०	६।०६	१८।०७	६।१०	१८।१५	६।०१	१८।०२	६।१५	१८।१८	६।२१	१८।२४
२८	५।५२	१७।४६	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	५।१७	१७।११	६।२०	१८।१४	६।०७	१८।०२	६।१४	१८।०८	६।०२	१७।५८	६।१८	१८।११	६।२४	१८।१७
अक्टू.३	५।५४	१७।४०	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	५।२०	१७।०५	६।२३	१८।०९	६।०९	१७।५७	६।१७	१८।०१	६।०२	१७।५५	६।२२	१८।०५	६।२८	१८।११
८	५।५६	१७।३५	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	५।२२	१७।००	६।२६	१८।०४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	६।०२	१७।५२	६।२५	१७।५८	६।३१	१८।०५
१३	५।५९	१७।३०	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	५।२४	१६।५५	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	६।०२	१७।४८	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९
१८	६।०१	१७।२५	६।३७	१८।११	५।३७	१७।०६	५।२७	१६।५०	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	६।०३	१७।४६	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३
२३	६।०४	१७।२१	६।३९	१८।०८	५।४०	१७।०२	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	६।०४	१७।४३	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८
२८	६।०७	१७।१७	६।४०	१८।०५	५।४२	१६।५९	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	६।०५	१७।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवं.२	६।१०	१७।१४	६।४२	१८।०२	५।४५	१६।५६	५।३६	१६।३८	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३९	१७।३०	६।०६	१७।३९	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८
७	६।१३	१७।१०	६।४५	१८।००	५।४८	१६।५३	५।३९	१६।३४	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	६।०८	१७।३८	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४
१२	६।१६	१७।०८	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	५।४३	१६।३२	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	६।१०	१७।३६	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०
१७	६।२०	१७।०६	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	५।४६	१६।३०	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	६।१२	१७।३६	६।५७	१७।२२	७।०३	१७।२७
२२	६।२३	१७।०५	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	५।५०	१६।२८	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	६।१४	१७।३६	७।०२	१७।१९	७।०८	१७।२५
२७	६।२७	१७।०४	६।५६	१७।५७	६।०१	१६।४८	५।५४	१६।२८	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७।००	१७।१७	६।१७	१७।३६	७।०६	१७।१७	७।१२	१७।२४
दिसं.२	६।३१	१७।०४	६।५९	१७।५७	६।०४	१६।४८	५।५७	१६।२७	७।०२	१७।३१	६।३८	१७।२८	७।०३	१७।१६	६।१९	१७।३७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४
७	६।३४	१७।०४	७।०२	१७।५८	६।०७	१६।४८	६।०१	१६।२८	७।०६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७।०७	१७।१६	६।२२	१७।३८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४
१२	६।३७	१७।०५	७।०५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६।०४	१६।२९	७।०९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।२५	१७।४०	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५
१७	६।४१	१७।०७	७।०८	१८।०१	६।१३	१६।५१	६।०७	१६।३१	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।२८	१७।४२	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६
२२	६।४३	१७।०९	७।११	१८।०३	६।१६	१६।५४	६।१०	१६।३२	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।३०	१७।४४	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८
२७	६।४५	१७।१२	७।१३	१८।०६	६।१८	१६।५६	६।१२	१६।३५	७।१७	१७।३८	६।५२	१७।३६	७।१९	१७।२३	६।३२	१७।४७	७।२५	१७।२३	७।३१	१७।३१
३१	६।४७	१७।१४	७।१४	१८।०८	६।२०	१६।५८	६।१४	१६।३८	७।१९	१७।४०	६।५३	१७।३८	७।२१	१७।२७	६।३४	१७।५०	७।२७	१७।२७	७।३३	१७।३४

हर्शल का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की एक प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग ८४ वर्ष लगते हैं, अर्थात् यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष तक रहता है। यह ग्रह शनि से अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ ग्रह है। आकस्मिक घटना तथा रोगोत्पादक विलक्षण प्रकृति का वियोग और स्थान त्याग प्रिय है। वर्तमान समय इस जगत में मोटर, रेलवे, तार, बिजली, टेलीफोन आदि यन्त्रों का शोध तथा नित्य प्रयोग में और वायुप्रकोप सम्बन्धी इन्फ्लूएंजा आदि रोगों से यथा सुधार प्रिय देशों में स्त्री, पति, माता, पिता, बन्धु आदि के त्याग से सिद्ध होता है कि इस ग्रह का प्रभाव जगत के मनुष्य प्राणी पर पड़ने लगा है। इस ग्रह की कुम्भ राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि शनि कुम्भ का स्वामी नहीं, प्रत्युत जैसे वृषभ और तुला का स्वामी शुक्र होता है, फिर भी वृषभ राशि का राहु स्वगृही माना जाता है, इसी प्रकार कुम्भ में हर्शल हो तो स्वगृही माना जाता है। यह वायुवेग-प्रिय गृह है। जिस पुरुष की कुण्डली में चन्द्र हर्शल से युक्त और स्त्री की कुण्डली में रवि हर्शल से युक्त हो अथवा केन्द्र तथा प्रतियोग करता हो तो ऐसे पुरुष या स्त्री को पूर्ण दाम्पत्य सुख नहीं होता। एवम् पांचवें सातवें स्थान में हर्शल हो तो उस पुरुष और स्त्री की चित्त-वृत्ति को चंचल करता है।

राशि विचार- हर्शल मिथुन, तुला और कुम्भ राशि में अत्यन्त बलवान समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि में अत्यन्त घातक फल देता है।

भाव विचार- यह ग्रह ५-९-१०-११ वें स्थान में शुभ और अन्य स्थानों में अशुभ माना गया है। लग्न में हर्शल हो तो मनुष्य विलक्षण स्वभाव का होगा। किन्तु मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का हो तो तीव्र बुद्धि और शोधक होगा। द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक सुख के लिए प्रतिकूल और अशुभ राशि का हो तो द्रव्य- हानि। तृतीय भाव में भ्रातृ सुख विघातक, सदा स्थानान्तर, यान्त्रिक वाहन से प्रवास योग। चतुर्थ भाव में आप्तवर्गों से शत्रुत्व, आयुष्य के अन्त समय में द्रव्य-हानि भूमि-सम्बन्धी कलह। पंचम भाव में सन्तति प्रतिबन्ध अथवा नाश, सन्तति सुख का अभाव। षष्ठ भाव में मातुल सुख का अभाव, रोग वृद्धि। सप्तम भाव में वैवाहिक जीवन दाम्पत्य सुख का नाश, परराष्ट्र सम्बन्ध। अष्टम भाव में आकस्मिक मृत्यु। नवम भाव में धार्मिक संस्था से सम्बन्ध, शास्त्रीय शोध में रुचि। दशम भाव में अधिकारी वर्ग से सम्बन्ध। ग्यारहवें भाव में कायदे कौंसिल देशी संस्था आदि से सम्बन्ध। बारहवें भाव में द्रव्य हानि, ऋण-योग, शत्रु के कारण कष्ट।

नेपच्यून का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग १६५ वर्ष का समय लगता है, अर्थात् एक राशि में लगभग १३$\frac{3}{4}$ वर्ष तक रहता है। यह जल राशि ग्रह है। अर्थात् मीन इसकी राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नहीं है, प्रत्युत मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होते हुए भी जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का नेपच्यून स्वगृही माना जाता है। इसका अर्थ, धर्म गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जल में रंग मिलने से जिस प्रकार जल का रंग बदल जाता है- उसी प्रकार नेपच्यून से जो ग्रह युक्त होगा, वैसे ही वह फल देता है। इसका प्रभाव रुधिराभिसरण में अधिक होता है। यह ग्रह १-५-९वें स्थान में सत्वप्रधान, २-४-६-८-१२ वें में तम प्रधान, ३-७-१०-११वें स्थान में रज प्रधान समझा जाता है। किन्तु यदि अशुभ स्थान और राशि में हो तो मनुष्य का स्वभाव पापवृत्ति की ओर होता है। इस ग्रह को ११-७-३-४-१२ इस क्रम से राशि प्रियतर है। शेष राशियां अप्रिय हैं। यह ग्रह १-३-५-९-११वें स्थान में कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन, तुला राशि में स्थित हो तो ऊँचा फल मिलना निश्चित है।

भावफल- लग्न में नेपच्यून हो तो जल प्रवासी, गौरवपूर्ण, निद्रारोगी। दूसरे भाव में हो तो साम्पत्तिक-हानि, कुटुम्ब-हानि। तीसरे भाव में १-३-५-९-११वें स्थान के स्वामी शुभ योग करता हो तो प्रवास से लाभ, मानसिक उत्कर्ष। चतुर्थ भाव में माता को कष्ट, सांपत्य मातृ योग, पापग्रह से युक्त हो तो कारावास, कृषि में हानि। पंचम भाव में पंचमेश और गुरु से युक्त हो तो पुत्र सन्तति, पंचमेश और शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति, शुक्र से अशुभ योग करता हो तो व्यभिचार वृत्ति। छठे भाव में र. चं. से युक्त या दृष्ट हो तो मूत्राशय रोग, अतिसार, संग्रहणी, विश्वासघात। ७वें भाव में सुन्दर रूप और स्वभाव की स्त्री का लाभ, स्त्री राशि या स्त्री ग्रह से युक्त हो तो स्त्री से लाभ, पापग्रह से पीड़ित हो तो स्त्री कष्ट। श. मं. रा. से युक्त और दृष्ट हो तो अत्यन्त अशुभ। अष्टम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो तो आकस्मिक लाभ पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो गुह्य भाग में विकार, राज दरबार में हानि। नवम् भाव में चर राशि का हो तो प्रवासी। दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट, व्यापार में हानि। ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र, जामाता, बन्धु लाभ आदि विचार करें। बारहवें भाव में चन्द्र से युक्त हो तो जहाज में नौकरी का योग, मंगल से युक्त हो तो अस्पताल सम्बन्धी नौकरी, शनि से युक्त हो तो गुप्त विभाग की नौकरी। यह ग्रह हर्शल से अधिक सामर्थ्यवान है। संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। इस भाव की राशि, स्वामी, ग्रह-दृष्टि ग्रहपूर्ति आदि का शुभाशुभ विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

मंगली योग परिहार- यदि कन्या की जन्मकुण्डली में १-४-७-८-१२वें घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण १-४-५-७-९-१०वें वृहस्पति हो तो मंगली दोष न होकर वह कन्या सुख-सौभाग्य सम्पन्न रहती है। यथा-

"वाचस्पतौ नवमपंचमकेन्द्र-संस्थे जाताऽङ्गना भवति पूर्ण-विभूतियुक्ता।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या सप्ताष्टके यदि भवेदशुभग्रहोऽपि।।"

श्री शरभ यन्त्रार्चन-पद्धति

"भूपेन्द्र दत्त शर्मा"

शाक्त-सम्प्रदाय की विशेषता

भारतीय आगम-शास्त्रों के अध्ययन से परिचय प्राप्त करके यह मत प्रसन्नता पूर्वक प्रति-पादित किया जा सकता है कि "तन्त्र" ही एक ऐसी साधना-पद्धति है, जिसमें चतुवर्ण प्रवेश की सुविधा है। वैदिक कर्म-काण्डों की जटिलता व पात्रता के Controvertial सिद्धान्तों से त्राण देने के लिए "तन्त्र" एक सुगम-प्रणाली (System) है। वेद के अनाधिकारी तथा शुचिता का शास्त्रानुकूल व्यवहार करने में असफल मनुष्य तन्त्र के मार्ग से भोग व योग के ऐश्वर्य का अनुभव करता हुआ परमात्मा में लीन होने का अभ्यस्त हो मुक्ति का अधिकारी बन जाता है। यद्यपि तन्त्र एक "गुह्य-मार्ग" है। इस मार्ग का अनुसरण करने के लिए वैष्णव-शाक्त-शैव-गाणपत्यादि सम्प्रदायों में से किसी एक सम्प्रदाय को स्वीकार करना भी परमावश्यक है। इन सभी सम्प्रदायों में " शाक्त-सम्प्रदाय" इस विषय के प्रति अति-महत्वपूर्ण सम्प्रदाय माना गया है। इस तन्त्र-मार्ग के अति-गुह्य-सिद्धान्त-सूत्र-साधना का ज्ञानात्मक व प्रयोगात्मक दोनों रूपों का ज्ञान "शाक्त-सम्प्रदाय" में प्रविष्ट हुए बिना कदापि सम्भव नहीं बन पड़ता। "शाक्त-सम्प्रदाय" में मुख्यतः "दश-महाविद्याओं" की साधना प्रधान है। तन्त्र-शास्त्रों में स्पष्ट रूप से उद्घोष है कि विभिन्न देवता विभिन्न युगों में फल देते हैं, किन्तु चारों युगों में फल-प्रदान करने की सामर्थ्य एक मात्र "दश-महाविद्याओं" में ही है। आम्नाय-क्रम" के आधार पर जब शिष्य की दीक्षा, शाक्तभिषेक व पूर्णाभिषेक संस्कार श्री गुरूदेव करते हैं, तभी शिष्य तन्त्र-साधना का पूर्णाधिकारी समझा जाता है। " आम्नाय-क्रम" से साधक-शिष्य "दश-महाविद्याओं" में से अपनी इष्ट महाविद्या की क्रियात्मक रहस्यमयी "चक्र-पूजा" (निशार्चन) के रहस्य से परिचित होता है और इन्हीं महाविद्याओं के अन्तर्गत ही अन्य विशिष्ट देवी/देवता के परिचय साथ-साथ................ देहली-द्वार साधन, त्रि-पथ व चतुष्पथ-साधन, बिल्व-मूल-साधन, वीर-साधन एवं लता-साधना जैसी गुह्य-साधनाओं का ज्ञान-साधना-पद्धति की प्राप्ति भी सुलभता से कर लेता है (किन्तु इनकी साधना वीर-भावोक्त रूप से होती है। पहले साधक पशु-भाव में ही रहता है तत्पश्चात् वह वीर-भाव की प्राप्ति करता है। लेख-विस्तार के भय से यहाँ यह सब समझाना सम्भव नहीं। इसके लिए अपने श्री गुरूदेव का सान्निध्य व सद् तन्त्र-ग्रन्थों का अध्ययन करें)। इन्हीं साधना-पद्धतियों में ही भगवान् श्री शरभेश्वर की साधना भी है, जो अति-सामर्थ्यवान् शीघ्र फलदायी है। जिसकी साधना-शक्ति के बल पर साधक अभीष्ट कार्यों में सफलता, असाध्य रोगों पर विजय, वाह्य और आन्तरिक शत्रुओं का अचूकता से दमन करने में समर्थ हो जाता है। अस्तु ....

पद्धति-परिचय

गत सम्वत् श्री विश्वविजय-पञ्चांग में " निग्रह-दारूण-सप्तक" लेख-विधान के अन्तर्गत भगवान् श्री शरभेश्वर (पक्षीराज) के परिचय से प्रभावित हो स्नेही पाठकों से यह प्रेरणा प्राप्त हुई कि इस विषय पर अन्य कुछ और भी लिखा जाए (वैसे, भविष्य में इस लेखन-परम्परा के अन्तर्गत ही जिज्ञासु स्नेही पाठकों व साधकों के लाभार्थ क्रमशः " श्री क्रोधराज-साधन, श्री नृसिंह पूजा-पद्धति, श्री बटुक भैरव पूजा-पद्धति, श्री घण्टाकर्ण कल्प-विधान, वृहद शिवा बलि-विधान, बीज मन्त्रात्मक सप्तशती, श्मशान काली-सहस्रनाम, श्री त्वरिता मन्त्र-विधान, लता-स्तोत्र, योनि-कवच, योनि-स्तोत्र, रजस्वला-स्तोत्र, जालन्धरनाथ सम्प्रदायान्तर्गत पियाग-कपालिक मन्त्र-साधनादि" असंख्य साधना-विषयों को प्रस्तुत किया जाएगा)। श्री शरभेश्वर का साहित्य प्रायः कम ही रूप में प्रकाशित है। मेरे अल्प ज्ञान के अनुसार मात्र दो ही ग्रन्थ स्वतन्त्र रूप से इन पर प्रकाशित हैं। इनमें एक ग्रन्थ तो पूज्यपाद "राष्ट्र-गुरु" स्वामी जी

द्वारा संकलित एवं श्री पीताम्बरा–संस्कृत–परिषद् (दतिया) से प्रकाशित "शरभ–तन्त्र" और दूसरा ग्रन्थ श्री काया–माया–रिचर्स–संस्थान (दिल्ली) से प्रकाशित "आकाश–भैरव–कल्प"। दोनों ही ग्रन्थ अति–सुन्दर व विशिष्ट साधना–विषयों से सुसज्जित हैं। जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही इन ग्रन्थों का अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। महा–महोपाध्याय डा० श्री गोपीनाथ जी कविराज ने भी अपने "तान्त्रिक–साहित्य" नामक सुविख्यात ग्रन्थ में श्री शरभेश्वर साधना से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों का उल्लेख किया है, जो हस्त–लिखित अवस्था में कई संस्थानों में सुरक्षित हैं। कुछ ग्रन्थ हस्त–लिखित अवस्था में ही व्यक्तिगत पुस्तकालयों में संग्रहित हैं, जिनके विषयों का ज्ञान पुस्तकालय स्वामी ही जानते होंगे! इस अल्पज्ञ लेखक के व्यक्तिगत पुस्तकालय मे भी "श्री शरभ यन्त्रार्चन–पद्धति" नामक प्राचीन हस्त–लिखित ग्रन्थ है। जिसके विषय निम्न प्रकार से हैं– प्रातः कृत्य, अर्चन–पद्धति, काम्य प्रयोग, कवच, सहस्रनाम, शरभाष्टक, मन्त्र–विधान, निग्रह–दारूण–सप्तक, चित्कलाकर्षण मन्त्र, दिव्य शतनाम–स्तोत्र, शरभ–माला–मन्त्र एवं (पृथक रूप से) शरभ–षट् प्रयोग। "शरभ–तन्त्र" में कुछ ऐसे विषय है जो उक्त ग्रन्थ से मेल पाते हैं। जैसे अर्चन–पद्धति, काम्य प्रयोग किन्तु यह मेल शब्दाक्षर रूपी पाठ–भेद प्रकट कराता है। "आकाश–भैरव–कल्प"से भी सहस्रनाम, कवच व काम्य प्रयोगादि विषयों में काफी पाठ–भेद पाया गया। प्रस्तुत जो "अर्चन–पद्धति" है, वह संक्षिप्त है। भविष्य में इसी संक्षिप्त अर्चन–पद्धति को वृहद् पद्धति के रूप में दिशा–मार्ग निर्देशानुसार सहित श्री विश्वविजय–पञ्चांग में ही प्रस्तुत करेंगे। वैसे शाक्त–साधक (जो चक्र–पूजा के मर्मज्ञ हो अथवा शाक्त–सम्प्रदाय के रहस्यों–साधनों से परिचित हों) अपने साधन–अभ्यास के आधार पर प्रस्तुत अर्चन–पद्धति को सरलता पूर्वक पूर्ण–विधि सहित प्रयोग करने में दक्ष होते हैं। उनके स्वयं के लिए यह विषय सरल ही नहीं अपितु वह अन्यों को भी विधिवत् रूप से समझाने में प्रवीणता प्राप्त किए हुए होते हैं।

विद्जनों की दृष्टि में शरभ

जन साधारण को भगवान् श्री शरभेश्वर का परिचय–ज्ञान कम ही मात्रा में हैं। इसका मूल कारण इनके विषय में प्रकाशित साहित्य की कमी है। कुछ विद्वान इनके विषय साधनों का ज्ञान विशिष्ट रूप से रखते हैं। किन्तु जन साधारण अथवा जिज्ञासु साधकों के ज्ञान साधन लाभार्थ कुछ भी प्रकट करने का प्रयत्न नहीं करते। और कुछ विद्जन ऐसे भी हैं जो अपूर्ण अथवा भ्रमित परिचय देते हैं। प्रमाण स्परूप हमारे पास एक अति–विशिष्ट विद्वान का पत्र है, जिसमें उन्होंने लिखकर भेजा है कि शरभ ही एक मात्र आठ पैरों वाला ऐसा प्रबल जीव था, जो सिंह को भी पछाड़ सकता था। भगवान् श्री विष्णु ने ही (?) श्री नृसिंह भगवान् का क्रोध शान्त करने के लिए " शरभावतार" लिया था। इसीलिए शरभेश्वर के रूप में भगवान श्री विष्णु की ही पूजा होती है क्योंकि "सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छन्ति"। अब इन विद्वान के विषय में क्या कहें? संस्कृत–हिन्दी शब्द–कोष के रचनाकार श्री वामन राम जी आप्टे भी शरभ के अर्थ को पूर्ण रूप से प्रकट नहीं कर पाए। उन्होंने "शब्द–कोष" में (पृष्ठ १००५ पर) शरभ का अर्थ इस प्रकार से दिया है, शरभः – (१) हाथी का बच्चा (२) आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैर का जन्तु ज़ो सिंह से भी बलवान होता है। किन्तु श्री आप्टे यदि यह भी उल्लेख कर देते कि "पुराणों में वर्णित श्रीनृसिंह के क्रोध–शमन हेतू भगवान् शिव का शरभावतार" तो अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होती। ब्रह्माण्ड–पुराण के उत्तर भाग से उद्घृत श्री ललिता सहस्रनाम (जो शाक्त–साधकों का साधनात्मक तन्त्र–ग्रन्थ भी है) से प्रत्येक साधक–वर्ग परिचित है। श्री विद्या के परम साधक श्री भास्कर राय जी ने इस सहस्रनाम पर "सौभाग्य–भास्कर" भाष्य–टीका भी लिखी, जो परान्बा के रहस्यों को बड़े ही ज्ञान–वर्धक ढंग से प्रकट करती है। इसी सहस्रनाम के फलश्रुति भाग (श्लोक २६७ की टीका) में श्री विद्योपासक ने लिखा है –

शरभेश्वरस्तदाख्यः शिवस्यावतारः नृसिंहावतारस्य विष्णुरपनयनायेति लैंगे कालिका पुराणौ च प्रसिद्धम्।

"आकाश–भैरव–कल्प" के संशोधक व व्याख्याकार कविराज पं० नानक चन्द जी शर्मा ने ग्रन्थ के मंगलाचरण में एवं आचार्य डा० रूद्रदेव जी त्रिपाठी ने "श्री बटुक–भैरव–साधना" व "रूद्रयामल–तन्त्र" में बड़े ही सुन्दर–सैद्धान्तिक–मौलिक ढंग से भगवान् श्री शरभेश्वर की महत्ता व परिचय को साधक–समुदाय के मध्य प्रस्तुत किया है।

पुराणों व प्राचीन–अर्वाचीन–संकलित तन्त्र–ग्रन्थों में भगवान् श्री शरभेश्वर के मन्त्र, स्तुति–स्तोत्र, साधना व कथादि प्रसंगो का उल्लेख स्थान–स्थान पर प्राप्य है। मेरू–तन्त्र, पुरश्चर्यार्णवः तन्त्र, मन्त्र–शास्त्र, मन्त्र–कोष, श्री बगलामुखी–रहस्य, साधना–रहस्य, श्री बटुक–भैरव–साधना, शिवोपासनांक. आदि नवीन व प्राचीन, संकलित अथवा स्वतन्त्र विषयक तन्त्र–ग्रन्थों में, न्यूनाधिक रूप में इनके मन्त्र–साधन–प्रयोग अथवा विशिष्ट कार्य महत्ता का वर्णन प्राप्त होता है। प्रयाग से प्रकाशित "शाक्त–धर्म" की सु–प्रतिष्ठित पत्रिका "चण्डी" में भी समय–समय पर इनके दुर्लभ विषय प्रकाशित होते रहते हैं।

कार्य-महत्ता

जिस समय साधक को " वीर–भावोक्त" श्मशान–साधना करनी अनिवार्य होती है तो उस स्थिति में श्मशान–साधना से पूर्व साधक को "शरभ–अघोर–पाशुपात–सुदर्शन–खड्ग रावण–क्रोधराज" जैसे विशिष्ट मन्त्र–विधानों से स्वयं को संरक्षित कर लेना चाहिए। ऐसा निर्देश तन्त्र–शास्त्रों में स्पष्ट रूप से दिया गया है। इस विषय में "शक्ति–संगम–तन्त्र" का कथन है –

दुर्गा विघ्नं च शरभ घोरं च सुदर्शनं, एता समय– विद्यास्तु जपेत् प्रत्यूह– शान्तये।

उक्त कथन से श्री शरभेश्वर की महत्ता ज्ञात होती है। इतना ही नहीं इसी कथन के समान भगवान् श्री शरभेश्वर की कृपा अपने साधकों पर ही नहीं होती। अपितु ये अन्य देवी–देवताओं के साधकों का संरक्षण भी करते हैं और उन साधकों पर कृत्याभिचारादि करने वाले शत्रुओं को घोर दण्ड भी देते हैं। श्री ललिता सहस्रनाम में कहा भी गया है (फलश्रुति श्लोक २६७) –

यस्त्विदं नाम साहस्रं सकृत पठति भक्तिमान्। तस्य ये शत्रवस्तेषां निहन्ता शरभेश्वरः।।

परम सौभाग्य है उन साधकों का जिनके आराध्य देव भगवान श्री शरभेश्वर हैं। इनके साधकों के प्रति शत्रु स्वप्न में भी अहित करने का विचार नहीं रखते। यह बात भी पूर्ण सत्य है कि इनकी साधना कोई साधारण नहीं, कठोर व उग्र है। किन्तु है शीघ्र फल–प्रद। यही कारण है कि "आकाश–भैरव–कल्प" में जितने भी (इनसे सम्बन्धित) प्रयोग–विधान वर्णित हैं, उन सभी को प्रत्यक्ष सिद्धि–प्रद कहा गया है।

कुछ स्पष्टीकरण

१– इनके कई प्रकार के ध्यान तन्त्र–ग्रन्थों में उल्लेखित हैं। गत सम्वत् के पञ्चांग में जो ध्यान प्रकाशित किया गया था, वह वृहद् रूप में था। अधिकांश साधक "चन्द्रर्कााग्निस्त्रि–दृष्टिः .... शरभः शालुवः पक्षिराजः" तक ही ध्यान अपनाते हैं अथवा कुछ अन्य ध्यानों को स्वीकारते हैं। अन्य ध्यानों में एक ध्यान यह भी है "मृगरत्वर्ध–शरीरेण पक्षाभ्या .... अष्ट–पादाय रूद्राय नमः शरभ–मूर्तये" जो उसी वृहद्ध्यान के अन्तिम दो श्लोक हैं। पञ्चाग में जो ध्यान है, वही ध्यान प्रयाग (कल्याण मन्दिर प्रकाशन) से प्रकाशित बहु–प्रसंशित व अति–उपयोगी अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ "मन्त्र–कोष" (पृष्ठ ७८) में भी दिया गया है। किन्तु "श्री बटुक–भैरव–साधना" (पृष्ठ १८८) मे यही ध्यान (कुछ पाठ भेद सहित) दो भागों मे करके दिया है। "पुरश्चर्यार्णवः तन्त्र (पृष्ठ ७०४, "मेरू तन्त्र" ३१ वें प्रकाश से उद्धृत) मे इस ध्यान का स्वरूप कुछ इस प्रकार है–

चन्द्रार्काग्निस्त्रि–नयनं काली–दुर्गा द्वि–पक्षकम्। विद्युज्जिह्वं वज्र–नखं वडवाग्न्युदरं तथा।।

व्याधि–मृत्यु–रिपुघ्नं चण्ड–वातातिवेगिनम्। रुद्र–भैरव–स्वरूपं च वैरि–वृन्द–निषूदनम्।।

मृगरस्त्वर्ध–शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुना–द्विजः। अधो–वक्त्रश्चतुष्पादस्तूर्ध्व–वक्त्रश्चतुर्भुजः।।

कालान्त–दहन–प्रख्यो नील–जीमूत–निःस्वनः। अरिर्यद्–दर्शनादेव विनष्ट–बल–विक्रमः।।

सटाच्छटोग्र–रूपाय पक्ष–विक्षिप्त–भूभृते। अष्ट–पादाय रूद्राय नमः शरभ–मूर्तये।।

"आकाश–भैरव–कल्प" व "शरभ–तन्त्र" के अध्ययन से साधकों को यह निर्णय भी ज्ञात हो जायेगा कि प्रत्येक पाठ–विधान (कवच–सहस्रनाम–स्तोत्रादि) व काम्य–प्रयोगो के लिए पृथक–पृथक ध्यान करने चाहिए। प्रसंग वश यहाँ दो और मुख्य ध्यान प्रस्तुत करते हैं –

प्रथम ध्यान :-

महा–मेरू समाकारं अष्ट–पादं रवि–प्रभम्। द्वा–त्रिंशद् बाहु संयुक्तं सूर्य–सोमाग्नि–लोचनम्।।

दुर्गा–काली द्वि–पक्षं च सुतीक्ष्ण घन–गर्जितम्। ऊर्ध्व–केशं महा–बाहुं नानालंकार–भूषितम्।।

वज्रमुष्टय–भयं चक्रं–शक्तिं दण्डांकुशौ तथा। खड्ग–खट्वांग–परशूनक्ष–मालास्थि शूलकम्।।

धनुश्च–मुशलं चाग्नि दधानं दक्षिणैः करैः। वरदं–पाश–हस्तं च गदा बाण–ध्वजौ तथा।।

क्रक च क्रोड शंखौ च खेटं नागं च पंकजम्। कपालं–पुस्तकं कुन्तं दुर्गाश्लिष्ट कारम्बुजम्।।

हलं वामे दधानं च भीषणं कर– पंकजैः। दंष्ट्रोल्लासं महा–सिंहच्छटाच्छट–नि–पिड़ितम्।।

द्वितीय ध्यान :-

वन्देऽहं घोर–घोर–प्रबल–तर महा–गण्ड–भेरुण्ड–सिंहम्। व्याघ्राश्व–क्रौड़े शाखा–मृग–खग–वनराट्–भल्लुकाद्यष्ट–वक्त्रम्।।

द्वा–त्रिंशत्–कोटि–बाहु–ज्वल–मुशल–गदा–शंख–चक्रादि–हेतुम्। विभ्राणां भीम–दंष्ट्रं शरभ–खल–गजान् भक्षयन्तं नृसिंहम्।।

२– जिज्ञासुओं का प्रश्न है कि जब श्री शरभेश्वर वैष्णव–सम्प्रदाय में भी पूजित हैं तब इनका "निग्रह–दारूण–सप्तक" भगवान श्री विष्णु अथवा श्री नृसिंह के मन्दिर या समक्ष क्यों नहीं करना चाहिए ? उत्तर रूप में यहाँ यह स्पष्टीकरण है कि उक्त निर्देश उन व्यक्तियों के लिए है जो सविधि रूप से दीक्षित न हुए हों ! अथवा जिज्ञासुजन बिना विचार किए ही मात्र अभिचारिक प्रयोग के उद्देश्य से काम्य–कर्म हेतू इस स्तोत्र को माध्यम बनाते हों। सविधि–पूर्वक दीक्षित साधक के लिए यह नियम विचारणीय नहीं है। वैसे यही निर्देश कुछ विद्जनों ने "सहस्रनाम" पाठ के लिए भी दिया है। उदाहरण स्वरूप चौमूँ (राजस्थान) निवासी पं० श्री गोविन्द जी शास्त्री (जो श्री शरभेश्वर के गुह्य–विषयों के ज्ञाता भी हैं) ने अपनी "मन्त्र–विज्ञान" (पृष्ठ ११३) नामक कृति में स्पष्ट लिखा है कि "मारण–प्रयोग में पक्षीराज–सहस्रनाम का अनुष्ठान अचूक और अति–समर्थ है। इसका अनुष्ठान ही पांच दिन का होता है। पर यह अत्यन्त–उग्र

... प्रयोग होता है। इसका प्रयोग ... भी श्री नृसिंह के मन्दिर में नहीं करना चाहिए। आचार्य डा० रुद्रदेव जी त्रिपाठी ने तो कुछ इसी कथन के समान एक सत्य–घटना का उल्लेख "श्री बटुक–भैरव–साधना" में किया है। जिसके मनन से अनेक बातें सार्थक बन पड़ती है। सत्य तो यह है कि ऐसे निर्देश हमारे सिद्ध–साधकों ने अपनी साधना के बल पर स्वानुभूत कर साधक–समुदाय के हितार्थ प्रकट किए।

३– तीसरा स्पष्टीकरण विनियोग व ऋष्यादिन्यास से है। किसी भी देवता के मन्त्रादि के जप–पाठ से पूर्व विनियोग व ऋष्यादिन्यास का विशेष महत्व होता है। विनियोग में ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक और अभीष्ट फल–इन सबका उल्लेख रहता है और इन्हीं के माध्यम से ऋष्यादिन्यास सम्पन्न किया जाता है। कुछ विनियोग ऐसे भी हैं जिनमें यह सभी बातें पूर्ण–रूप से प्राप्त नहीं होती। उदाहरण स्वरूप "श्री शरभेश्वर मन्त्र व निग्रह–दारुण–सप्तक" का विनियोग देखें–

- अस्य श्री शरभेश्वर–मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अति–जगती छन्दः, श्री शरभो देवता, ॐ खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

- अस्य श्री निग्रह–दारुण–सप्तक स्तोत्रस्य वासुदेवो ऋषिः, स्रग्धरा छन्दः, श्री शरभेश्वरो देवता, तत्प्रसाद सिद्ध्यर्थे सर्व–शत्रु नाशने विनियोगः।

उक्त कथन का तात्पर्य यह नहीं कि ऐसे विनियोग शक्ति–हीन होते हैं। यदि विनियोग में इन सभी का उल्लेख नहीं किन्तु ऋषि, छन्द और देवता का उल्लेख तो अवश्य ही रहता है। और किसी भी विनियोग में इन्ही तीनों की विशेष महत्ता भी है। कहा भी गया है– ऋषिच्छन्दो देवतानां विन्यासेन बिना, जप्यते साधितोऽप्येष तुच्छ–फलं भवेत्।

अर्थात, ऋषि, छन्द और देवता का विन्यास किए बिना जो मन्त्र जप किया जाता है या साधना की जाती है, उसका फल तुच्छ ही होता है। अतः स्पष्ट है कि विनियोग में यदि ऋषि, छन्द और देवता का उल्लेख होने से भी ऋष्यादिन्यास सम्पन्न किया जाता है।

४– चौथा स्पष्टीकरण श्री विक्रम सम्वत् २०५३ (पश्चिमोत्तर भारत के चण्डीगढ़ अक्षांश–रेखांश पर निर्मित) के पञ्चांग (पृष्ठ ३८ / ३९) मे प्रस्तुत दीक्षा के भ्रमित विषय से सम्बन्धित है। उक्त सम्वत् के पञ्चांग में "शत्रु–नाशक प्रमाणिक–प्रयोग" के प्रस्तुतकर्ता ने जिस प्रकार से दीक्षा के प्रकार व दीक्षा–ग्रहण का वर्णन किया है, वह नितान्त भ्रामक है। उन्होंने लिखा है कि "दीक्षा दो प्रकार की होती है – शाम्भवी व नादेयी।" स्पष्ट है कि प्रस्तुतकर्ता दीक्षित साधक नहीं हैं और न ही उन्होने गूढ़ता–पूर्वक "तन्त्र–ग्रन्थों" का अध्ययन किया है। प्रायः सभी "तन्त्र–ग्रन्थों" में दीक्षा–विशेष पर महत्व दिया गया है और इन्हीं मे दीक्षा के कई प्रकारों का वर्णन भी सविधिरूप से किया गया है। अध्ययनोपरान्त यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि इन दीक्षा–प्रकारों में भी कितने ही भेद प्रकट होते हैं। उक्त प्रस्तुतकर्ता ने जिस प्रकार "शाम्भवी–दीक्षा" का वर्णन किया है, वह पूर्णतः भ्रामक विधि–युक्त है। जबकि "शाम्भवी–दीक्षा" का वर्णन कुछ इस प्रकार से "तन्त्र–ग्रन्थों" में किया गया हैं –

गुरोरालोक–मात्रेण, भाषणात् स्पर्शनादपि। सद्यः संजायते ज्ञानं, सा दीक्षा शाम्भवी मता।।

अर्थात् श्री गुरुदेव के कृपा–पूर्वक देखने से अथवा सम्भाषण (वार्तालाप) से तथा स्पर्श (प्रेम–पूर्वक शिष्य को छूने मात्र) से शिष्य के हृदय मे जो तत्काल ही ज्ञान होने लगता है, उसे "शाम्भवी–दीक्षा" कहते हैं। यही "शाम्भवी–दीक्षा" का प्रमाणिक वर्णन है। अतः जिज्ञासु साधकों–पाठकों से निवेदन है कि भ्रामक–उल्लेखों से दूर हो विषय का ज्ञान अपने श्री गुरुदेव व प्रमाणिक "तन्त्र–ग्रन्थों" से ही ज्ञात करें।

भूल-सुधार

श्री गुरूदेव की आज्ञा व दिशा–मार्ग–निर्देश के बिना किसी भी पुस्तक से प्रकाशित विधान को पढ़ "प्रयोग" अथवा "साधना" नहीं करनी चाहिए। सम्भव हो कि प्रकाशित विधान में (मनुष्य स्वभाव–वश) मुद्रण होते समय कहीं त्रुटि–दोष हो जाए! साधना से पूर्व साधक के लिए यह एक नियम–निर्देश "तन्त्र–शास्त्रों" में दिया गया है कि "ज्ञात्वा श्री गुरू वक्त्राब्जात् कृता पूजा महा–फला"। इस नियम–निर्देश को स्मरण रखते हुए अपने श्री गुरुदेव से प्रकाशित साधना विधान–विषय को अच्छी प्रकार समझ कर पश्चात् साधना आरम्भ करनी चाहिए। इससे साधक प्रकाशित विधान के मुद्रण समय में हुई त्रुटि–दोष का भी संशोधन कर सकेगा। गत् सम्वत् के पञ्चांग में कुछ त्रुटि–दोष सम्भव हो गये। पाठक–गण क्षमाकर, विधान में निम्न–प्रकार से संशोधन करने का कष्ट करें –

श्री विक्रम-सम्वत् २०५७, पृष्ठ १४७–४८

	अशुद्ध	शुद्ध
ध्यान की तीसरी पंक्ति में	अरुस्थौ	ऊरूस्थौ
ध्यान की चौथी पंक्ति में	शरभः पक्षिराजः	शरभः शालुवः पक्षिराजः
मानस–पूजा की छठी पांक्ति में	धापयामि	घ्रापयामि
मानस–पूजा की सातवी पंक्ति में	अनामिकांगुष्ठ	मध्यमांगुष्ठ
स्तोत्र की आठवी व उन्नीसवी पंक्ति में	त्वद्हस्त	त्वद्धस्त
स्तोत्र की चौदहवी पंक्ति में	माम	माम्
स्तोत्र की बीसवी पंक्ति मं	कुलष	कलुषं

अथ श्री शरभ यन्त्रार्चन-पद्धति

ॐ श्री गणेशाय नमः। ॐ रात्रि शेषे समुत्थाय गुरूं ध्यायेच्छिरोम्बुजे। वरदाभयदं शम्भुं पक्षीराज स्वरूपकम्। एवं ध्यात्वा पक्षिराजं गायत्र्यष्टोत्तरं जपेत्। पक्षिराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमाहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्। तत्रासनमारत्तीर्ये ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः इत्यासनं सम्पूज्योपविश्य भूतशुद्धि प्राण–प्रतिष्ठा मातृकान्यासांतां नित्य क्रियां कृत्वा गुं गुरूभ्यो नमः वाम कर्णे, गं गणपतये नमः दक्षे, क्षं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे, श्री शरभेश्वराय नमः हृदिन्यसेत्। ॐ अस्य श्री शरभेश्वर महा–मन्त्रस्य कालाग्नि रूद्र ऋषये नमः शिरसि, जगती छन्दसे नमः मुखे, भगवते शरभेश्वर देवतायै नमः हृदि, खं बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः नाभौ, स्वेच्छा प्रयोग सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे। ॐ खें खां खं फट् अं कं खं गं घं ङ. आं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ प्राणग्रहासि–प्राणग्राहासि हुं फट् इं चं छं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ सर्वशत्रु संहारणाय उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शरभ शालुवाय एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ पक्षिराजाय ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ हुं फट् स्वाहा अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादि न्यासः भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। अथध्यानम्–

ऊरुस्थौ व्याधि–मृत्यू शरभ–वर–खगश्चण्ड–वातातिि–योगः। संहर्ता सर्व–शत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।।

इति ध्यात्वा पञ्चोपचारे पूजां कुर्यात्। अथ जप विधिः अविघ्नं कुरू माले त्वं जप काले सदा मम। सिद्धिं मे देहि सततं देवता प्रीति कारकम्।। ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः सिद्धिं कुरू–कुरू इति मालां सम्पूज्य तार शब्देन सहित अष्टोत्तरशतं जपेत्। माला मन्त्रं प्रवक्ष्यामि रहस्यं शृणु शोभने। मन्त्र स्मरण मात्रेण करस्था सर्व सिद्धयः। ॐ नमः पक्षिराजायेति मालां मन्त्रं जपेत्। त्वं माले सर्वदेवानां प्रतिदा शुभदा मम। शुभं कुरूष्व मे भद्रे यशोवीर्यञ्च सर्वदा। इति मालां संस्थाप्य उत्तरं न्यासान्ते गुह्याति गुह्ये मन्त्रेण जप फलं देव दक्षिण करे समर्पयेदिति विधिः।

श्री देव्युवाच – देव–देव महा–देव गिरीश जगतः पते। त्राहि मां जगतां नाथ सच्चिदानन्द विग्रह।। मन्त्राणामपि यत्सारं सर्व लोकोपकारकम्। रक्षणं सर्व जन्तूनां ब्रूहिमे तद् विभो मम।।

श्री शिव उवाच – रहस्यंशृणु देविशि सर्वरक्षा करं नृणाम्। यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां कुल नाशनम्।। श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्नि रूद्र ऋषिः, जगती छन्दः, देवो भगवान् शरभेश्वरः, खंकार बीज मित्युक्तं स्वाहा शक्ति स्ततः परम्, फट्कारं कीलकं प्रोक्तनीरजायत लोचने, स्वेच्छा प्रयोग सिद्धयर्थे विनियोगस्तथाम्बिके। मन्त्राक्षरैः करन्यासं मातृका सहितं शिवे।। अंगन्यासं ततः कृत्वा ध्यात्वा वै शरभेरश्वरम्। तारं प्रथम मुद् धृत्य खें खां खं फट् तथैव च।। प्राण ग्रहासि द्वितयं हुं फट् च तदनन्तराम्। सर्वेति पदमाभाष्य शत्रु संहारणाय च।। शरभः शालुवायेति पक्षिराजाय तद्वदेत्। हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं द्विचत्वारिंशदक्षरम्।। जपेद्वर्ण सहस्राणि समाहितेन साधकः। दशांश तर्पणं होमं तद्दशांश जितेन्द्रियः, अभ्यंग स्नान शुद्धान्तः, करणान्भोजये द्विजान् ।। इति जप विधिः।

अथ यन्त्रक्रमः – भस्म मध्ये लिखेद्विद्वान् शरभेश्वर यन्त्रकम्। रक्त पुष्पैश्च गन्धाद्यैः पूजां कुर्यात् विचक्षणः।। सप्तरात्रं जपेन्मन्त्रं सहस्त्रद्वय मानवः। तद्भस्म चैकी कृत्वा तु धारये द्यस्तु मानवः।। संग्रामे शत्रवो दृष्ट्वा पलायन्ते च तत्क्षणात्। एवं भस्म प्रभावेन कम्पतेऽखिल देवताः।। तत्कोपाद्भुवनं देवि नाशमेति च तत्क्षणात्। स्वर्ग–भूतल–पाताल वासिनोऽमर्त्य मर्त्यकाः।। शालुव स्मरणादेव मरणंयात्य हेतुकम्। शालुवस्य प्रयोगेन त्रि–मूर्तिनैव रक्षति।। षट् सप्त कोष्ठेषु विलिख्य शारभं, रेखाग्र शूलेषु तदग्र साध्यकम्। वाह्येषु मायावृत्त तार हेतुकं, समाधितं चक्रवर जयामिधम्।। पूर्वादितो यजेद्विद्वानिद्राद्रीन्परमेश्वरि। यन्त्रस्योभय पार्श्वे तु व्याधि मृत्यू यजेत्ततः।। भैरवं वाडवाग्निं च पुरतः परिपूजयेत्। भद्रकाली तथा दुर्गा सन्धि स्थाने यजेत्प्रिये।। तत्कोष्ठेषु च देवेशि मन्त्र वर्णान् समर्चयेत्। मध्य कोष्ठे यजेत्शालुं भावुकं शरभेश्वराम्।। आवाहनादि पूजान्तं मूल–मन्त्रेण पूजयेत्। धूप दीपैर्महादीपैः कुलदीपैर्विशेषतः।। क्रमणेवं वराहरोहे शरभं परिपूजयेत्। इत्येतत्कथितं देवि गुह्याद् गुह्यतरं महत्।। राज्यं देयं शिरो देयं न देयं यस्य कस्याचित्। गोपनीयं–गोपनीयं–गोपनीयं प्रयत्नतः।। इति पूजा यन्त्रम्।

अथातोन्य प्रकारेण पूजा यन्त्रं मयोच्यते। दिव्यगन्धयुते प्रशस्ते भस्मानि त्रि–कोणाष्टदल–द्वादशदल–षोडशदल–भूपुर द्वन्द्वात्मकं अरत्नि चक्रमुद धृत्य पुष्पाञ्जलि त्रयं दत्वा वक्ष्यमाणरीत्या छागबलिं दत्वा स्व वामभागे सामान्यर्घ्य स्थापनं कुर्यात्। चन्दनादिना चतुरस्रं विलख्य श्वासोर्ध्वनुद हस्ताभ्यां मत्स्य मुद्रया त्रि–कोण वृत्त चतुरस्त्रात्मकं मण्डलं कृत्वा ॐ आधार शक्तये नमः इति सम्पूज्य मुलमुच्चरन् श्री शरभेश्वर पूजायाः सामान्यार्घ्याधारं स्थापयामि इति संस्थापय तन्मध्ये नमः इति जलेनापूर्य तत्र गंगेचेति मन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य ॐ इति गंगादिभिः सम्पूज्य मूलेनाष्ट वारं अभिमन्त्र्य धेनू–योनि मुद्रां प्रदर्शये इति सामान्यर्घ्य स्थापनम्।

अथ मन्त्रविशोधनम्। यथा यन्त्रात्मनोर्मध्य चन्दनमुत्क्षिप्य चतुरस्र भूमौ मत्स्य मुद्रया चतुरस्र वृत्त षट्कोण–त्रि–कोणं मण्डलं कृत्वा वामावर्तेन दक्षिणाग्रेषु सम्पूज्य षट्कोणेषु षडंगै सम्पूज्य पञ्चरत्नेन चतुरस्र कोणेषु सम्पूज्य यथा ग्लूं गगन लोकरत्नाय नमः। स्लूं स्वर्ग०। म्लूं मर्त्य०। प्लूं पाताल०। न्लूं नाग० इति सम्पूज्य। पूं पूर्णगिरि पीठाय नमः। उं उड्यान०। जां जालन्धर०। कां कामरूप० इति सम्पूज्य अप्रक्षालितमाधारं गृहीत्वा श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्यामाधारं स्थापयामिति संस्थापयेत्। तत्र रं अग्नि मण्डलाय धर्मप्रद दशकलात्मने श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याधाराय नमः इति सम्पूजयेत्। हुं ब्रह्माण्ड चषकाय स्वाहेति पात्रं प्रक्षाल्य नमः इति गन्धादिना सम्पूज्य धूपयित्वा मुलमुच्चरन् श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्य पात्रं स्थापेत्। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूमार्चि कलायै नमः। ४ रं ऊष्म०। ४ लं ज्वलिनी०। ४ वं ज्वालिनी०। ४ शं विस्फुलिंगिनी०। ४ षं सुश्री०। ४ सं सुरूपा०। ४ हं कपिला०। ४ लं हव्य०। ४ क्षं कव्य०। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निदूतं वृणिमहे होतारं विश्व वेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः र म ल व र यूं इत्याधारे अ[illegible]नें कलाभिः सम्पूज्य पात्र संस्थापय।

अं सूर्यमण्डलाय धर्मप्रद द्वादश कलात्मने श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्य पात्राय नमः इत्यभ्यर्च्य। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनी कलायै नमः। ४ खं बं तापिनी०। [illegible] गं फं धूम्रा०। ४ घं पं मरीचि०। ४ ङं नं ज्वलिनी०। ४ चं धं रूचि०। ४ छं दं सुषुम्ना०। ४ जं थं भोगदा०। ४ झं तं विश्वा०। ४ ञं णं बोधिनी०। ४ [illegible] ढं धारिणी०। ४ ठ डं क्षमा०। क्लीं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृर्त्यञ्च। हिरण्येन सविता रथेन देवो याति भुवनानि [illegible]श्यन्। हां ह्रीं हूं [illegible]हैं हौं हः ह म ल व र यूं इति सूर्य कलाभिः सम्पूज्य श्री शरभेश्वर विशेषार्घ्याय नमः इति मूलेन द्रव्यमापूर्य।

[illegible] सोममण्ड[illegible]ाय कामप्रद षोडश कलात्मने श्री शरभेश्वर हेतू पात्रामृताय नमः इत्यभ्यर्च्य। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृता कलायै नमः। ४ आं मानदा०। [illegible]स[illegible]ष्टि०। ४ उं पुष्टि०। ४ ऊं रति०। ४ ऋं धृति०। ४ ॠं राशिनी०। ४ लृं चन्द्रिका०। ४ लॄं कान्ति०। ४ एं ज्योत्सना०। ४ ऐं श्री०। ४ इं पूषा०। ४ इ[illegible]ना०। ४ अं पूर्णा०। ४ अः पूर्णमृता०। ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं आप्यायस्व समेतु विश्वतः सोमब्रह्मभवा वाजस्य संगथे। सां सीं सूं सैं सौं ४ ओं प्रीति०। ४ औं अं[illegible] कलाभिः सम्पूज्य गन्ध पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्चर्य हेतू योनि मुद्रां प्रदर्श्य पूजायाः द्रव्य पञ्चशोधनं कृत्वा चक्रोद्धारं कृत्वा पीठ सः स म ल व र यूं इति षोड[illegible] पूजां कुर्यात्।

अथ चक्रोद्धारः। त्रि–कोणं [illegible]लिखेत् पूर्वं तद्वहिर्वृत्तमालिखेत्।। तद्वहिश्चाष्ट पत्रन्तु द्वादशारं ततः परं षोडशारं ततः पश्चात् ततो भूपुर युग्मकम्। त्रि–कोणं मध्य देवेशं शरभं शालु[illegible]श्वरम्।। चिरध्यात्वा ततो मन्त्री गुरू पाद युगं स्मरेत्। आवाहनादि षोडशोपचार पूजां कृत्वा चन्द्रं–सूर्यं च वहि च त्रि–कोणे विलिखेत् क्रमात्।। भैरवं [illegible]दवग्निं च दुर्गा–काली च पृथक–पृथक त्रि–कोणे वृत्त मध्ये चतुर्दिक्षु लिखेत् क्रमात्। इन्द्रमाग्निं यमं चैव नैर्ऋतिं वरूणं सोमं तथेशानं दलेष्वष्टसु विन्यस[illegible]न।।

पार्श्वद्वये यजेद्देवि व्याधि–मृत्यू ततः परम्। मद[illegible]नां रक्त चामुण्डां मोहिनीं द्राविणीं तथा।।

शब्दाकर्षिणिकां वाणीं रमां मायां पुलिन्दिनीम्। शास्ता[illegible] क्षोभिणीं ज्येष्ठां द्वादशारे यथा क्रमम्।।

षोडशारे ततः पश्चात् षोडशस्वर देवताः। गणेश्वरं यमं स्क[illegible]न्दं भैरवञ्च महा–दिशाम्।।

त्वरितां वीरभद्रञ्च वडवानल भैरवम्। महा–माया यजेद्देवि वाय[illegible]व्यादि विदिक्षु च।।

आरभ्य चाग्रतो मन्त्री ब्राह्मयाद्याश्चाष्ट मातृकाः। परितस्तु यजेत् सर्वा[illegible] ककाराद्वर्ण देवताः।।

एतद्यन्त्रं महा–देवि सर्व कामार्थ सिद्धये। षोडशारे ततः पश्चात् षोडश स्वर देवताः।।
अणिमाद्याष्ट सिद्धिश्च प्रादक्षिण्येन् वै लिखेत्। इति यन्त्रम्।

त्रि–कोण मध्ये बीजं देवेशं मूल मन्त्रं चन्द्रं–सूर्यं–वह्निं श्रां श्रीं ऐं वृत्त मध्ये भैरवं वडवाग्निं च दुर्गां–कालीं भं भ्रूं क्षं दुं पार्श्वे व्याधि–मृत्यू हां हैं अष्टदलेषु इन्द्रादि लं० रं० यं० क्षं० वं० यं० सं० ह्रीं०। द्वादशारे मदनादि० क्लीं० ह्रीं० हूं० द्रां० हैं० सं० श्रीं० क्ष्यूं० क्ष्म्रूं० क्ष्म्रां० मं०। षोडशारे अकारादि स्वराधि दैवत बीजाः ऊँ सौं० श्रौं० हीं० घ्रां० घ्रैं० ज्यां० षं० क्यं० द्रैं० ऐं० अं० कं० ह्रौं० डं० हीं०। पूर्वादि० गं० यं० स्कं० भं०, वायव्यादि० त्रैं० घ्रीं० वं० ईं० इति देव स्थापनं कृत्वा पीठ–पूजां प्राण–प्रतिष्ठामावरण पूजां च कुर्यात् तद्यथा चक्रं प्रोक्षणी पात्र जलेन सम्प्रोक्ष्य पीठ–पूजां कुर्यात् मं मण्डूकाय नमः। कं कालाग्नि–रुद्राय०। अं आधार शक्तयै०। कूं कूर्माय०। धं धारायै०। सुं सुधा सिन्धवे०। श्वें श्वेत द्वीपाय०। सुं सुर वृक्षेभ्यो०। मं मणिमय हर्म्याय०। हैं हैममय पीठाय०। धं धर्माय०। ज्ञां ज्ञानाय०। वैं वैराग्य०। ऐं ऐश्वर्याय०। अं अधर्मयाय०। अं अज्ञानाय०। अं अवैराग्याय०। अं अनैश्वर्याय०। मध्ये अं अनन्ताय०। तं तत्वमयपद्माय०। आं आनन्द– कन्दाय०। सं सविन्नालाय०। विं विकारमय केसरेभ्यो०। पं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो०। पं पञ्चाशद्वर्ण कर्णिकायै०। सूं सूर्य कलायै०। इं इन्द्र मण्डलाय०। सं सत्वे०। रं रजसे०। तं तमसे०। अं आत्मने०। अं अन्तरात्मने०। पं परमात्मने०। वां वामा शक्तयै०। जें ज्येष्ठा श०। कां कान्ति श०। कां काल श०। कं कलविकरण्यै श०। बं बलविकरण्यै श०। सं सर्वदमन्यै श०। मं मनोन्मन्यै श० इति पीठ सम्पूज्य। तन्मध्ये ऊँ नमो भगवते सकल गुणात्मक शक्ति युक्तायानन्ताय योग पीठात्मने नमः इत्यासनं सम्पूज्य तत्र मूलेन मूर्ति सम्पूज्य आवाहयेत्। प्राणायाम ऋष्यादि कर–षडंगन्यास ध्यानादिकं कृत्वा पुष्पाञ्जलिमानीय हृदय कमल मध्यस्थं सांगं सपरिवारं सायुधं सवाहनं शूलिनी दुर्गा सहितं श्री शरभेश्वरं आवाहयमिति यन्त्र मध्ये पुष्पाञ्जलि निक्षिप्य आवाहनादि मुद्रां प्रदर्श्य मूलमुच्चरन् चतुर्थ्यन्तेन् आवाहयामि आवाहितो भव स्थापितो भव सन्निहितो भव सन्निरुद्धो भव अवगुण्ठितो भव सकली कृतोभव इत्यावाह्य इति पीठ पूजा। अथ प्राण– प्रतिष्ठा कुर्यात् यन्त्रे तद्यथा लेलिहान मुद्रया हृदि हस्तं दत्वा त्रिर्जपेत् ततः पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा त्रिः सम्पूज्य सन्तर्प्य मूल मन्त्रेण उपचारान् कृत्वा तत्र पाद्यार्घ्याचामनीयं मधुपर्कार्घ्यं सामान्यार्घ्यवत्पात्राणि स्थापयित्वा मूलान्ते चतुर्थ्यन्तेन् इदं पाद्यं पादयोः पुनर्मूलान्ते इदमर्घ्यं हस्तयोः इदमाचमनीयं मुखे, इदं मधुपर्कं पुनराचमनीयं मुखे, इदं स्नानं सर्वांगे, इदं वस्त्रं, इदमुपवीतं, इदमाभूषणं, इदं गन्धं, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, इदं दीपं, इदं नैवेद्यं, इदं ताम्बूलं, इदं फलं, इदं दक्षिणा समर्पयामि नमः इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य। पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा आवरण पूजां कुर्यात् तद्यथा मध्ये मूलेन त्रिः सम्पूज्यसन्तर्प्यः ईशानासुर वायव्य मध्य दिक्ष षडंग पूजयेत् मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः हृदयादि षडंग देवताः सागाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा – अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति प्रथमावरणम्। ततः त्रि–कोण वामदक्षिणोर्ध्व कोणेषु ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्रां चन्द्रं पूजयामि नमः। ४ श्रीं सूर्यं पू०। ४ ऐं महा–वह्निं पू०। त्रिकोणान्ते चतुर्दिक्षु पुरतः ४ भं भैरवं पू० पश्चिम भागे। ४ भ्रूं वडवाग्नि पू० दक्षिण०। ४ क्षं कालीं पू० वाम०। ४ दुं शूलिनी दुर्गां पू० पार्श्वद्वये। ४ हां व्याधिं पू०। ४ हैं मृत्यूं पू० इति सम्पूज्य। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः चन्द्रादि देवताः सागाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तुनमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा–अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति द्वितीयावरणम्। ततो अष्टदलेषु पूर्वादि ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं लं इन्द्रं सवज्रं पू०। ४ रं अग्निं सशक्ति पू०। ४ यं यमं सदण्डं पू०। ४ क्षं नैर्ऋतिं सखड्गं पू०। ४ वं वरुणं सपाशं पू०। ४ यं वायुं सांकुशं पू०। ४ सं सोमं सगदां

पू०। ४ ह्रीं ईशानं सत्रिशूलं पू० इति सम्पूज्य। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः इन्द्राद्यष्ट दिग्देवताः सागाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा—अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणगात वत्सलाः, भक्तया समर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति तृतीयावरणम्। ततः द्वादश स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन् मदनाद्याः पूजयेत् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं मदनं सबाणं पू०। ४ ह्रीं रक्त चामुण्डां सायुधां पू०। ४ हुं मोहिनीं सायुधां पू०। ४ द्रां द्राविणीं सांगं सपरिवारं सायुधं सवाहनं सशिवां पू०। ४ हैं शब्दाकर्षिणिकां पू०। ४ सं वाणी पू०। ४ श्री रमां पू०। ४ क्ष्यूं मायां पू०। ४ क्ष्म्रूं शत्रु पुलिन्दनीं पू०। ४ क्ष्म्रां शास्तारं पू०। ४ क्ष्म्रूं क्षोभिणीं पू०। ४ मं ज्येष्ठां पूं० इति सम्पूजय। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः मदनाद्याः देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा— अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति चतुर्थावरणम्। ततः षोडश दले स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन् षोडश स्वरः देवताः पूजयेत्तद्यथा ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ब्रह्माणं सांगं सपरिवारं सायुधं सवाहनं सशक्तिकं पू० इति सर्वत्र पूजयेत्। ४ आं सौं परां० पू०। ४ इं श्रौं विष्णुं० पू०। ४ ईं ह्रीं मायां० पू०। ४ उं घ्रां वराहं० पू०। ४ ऊं द्रैं पृथ्वीं० पू०। ४ ऋं ज्यां० विधिं पू०। ४ ॠं षं शिवं० पू०। ४ लृं क्यं० नासत्यं. पू०। ४ लृं त्रैं द रं पू०। ४ एं ऐं वीरभद्रं० पू०। ४ ओं औं भारतीं० पू०। ४ अं कं शुकं० पू०। ४ अं ह्यौं शंकरं० पू०। ४ अं डं रूद्रं० पू०। ४ अः ह्रीं कालरूद्रं० पू० इति सम्पूज्य। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः ब्रह्माद्याः षोडश स्वरः देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा— अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पयेतुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति पञ्चमावरणम्। ततः प्रथमं भूपुरे पूर्वादि ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपति पू०। ४ यं यमं पू०। ४ स्कं स्कन्दं पू०। ४ भं भैरवं पू०। विदिक्षु वायव्यादि ४ त्रैं त्वरितां पू०। ४ घ्रीं वीरभद्रं पू०। ४ बं वडवानलं भैरवं पू०। ४ ईं महा—मायां पू०। बाह्य भूपुरे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन् ब्राह्माद्याः पूजयेत् ४ आं ब्राह्मीं पू०। ४ ईं माहेश्वरीं पू०। ४ ऊं कौमारीं पू०। ४ ॠं वैष्णवीं पू०। ४ लृं वाराहीं पू०। ४ ऐं माहेन्द्रीं पू०। ४ औं चामुण्डां पू०। ४ अः महा—लक्ष्मीं पू० इति सम्पूज्य। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः गणपत्याद्याः देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा—अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पयेतुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् इति षष्ठावरणम्। ततः परितोवृत्त क्रमेण ब्रह्माद्याः ककारादि वर्ण देवताः पूजयेत् ॐ ऐं ही श्रीं कं ब्रह्माणं पू०। ४ खं जान्हीं पू०। ४ गं गणेशं पू०। ४ घं भैरवं पू०। ४ ङं. कालीं पू०। ४ चं भद्रकालीं पू०। ४ छं जातवेदसं पू०। ४ जं अर्द्धनारीश्वरं पू०। ४ झं परमात्मनं पू०। ४ ञं पृथ्वीं पू०। ४ टं चण्डं पू०। ४ ठं शुकं पू०। ४ डं विष्णुं पू०। ४ ढं बलभद्रं पू०। ४ णं धनदं पू०। ४ तं पराशक्तिं पू०। ४ थं दुर्गां पू०। ४ दं निर्विकल्पं पू०। ४ धं अग्निं पू०। ४ नं० नासत्यं पू०। ४ पं फं दस्त्रं पू०। ४ बं भार्गवं पू०। ४ भं ईश्वरं पू०। ४ मं मदनं पू०। ४ यं वायुं पू०। ४ रं कृशानुं पू०। ४ लं शुक्रं पू०। ४ वं वरूणं पू०। ४ शं शंकरं पू०। ४ षं द्वादशादित्यान् पू०। ४ सं भारती पू०। ४ हं सदाशिवं पू०। ४ लं इन्द्रं पू०। ४ क्षं नृसिंह पू० इति सम्पूज्य। मूलेन त्रिः मूलमुच्चार्य एताः ब्रह्माद्याः ककारादि वर्ण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सन्तर्पिताः सन्तु नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा—अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सलाः, भक्तया समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्। इति सामान्यार्घ्योदकेन् दक्ष हस्ते जलं समर्प्य मम शान्तिदाः शुभदाः सन्तु इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नमेत् सप्तमावरणम्। इत्थमावरणं पूजनं कृत्वा पाद्यार्घ्याचमनीयं दद्यात्।

।। श्री वटुकादि पञ्च-बलि ।।

१. स्व गृह्योक्त विधिना–विधाय तत्रेशानाग्नेय नैर्ऋति–वायव्यादि कोणेषु सामान्यार्घ्य [illegible] चतुष्टयं कृत्वा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं व्यापक मण्डलाय नमः इति मण्डल चतुष्टयं सम्पूज्य। तत्र साधारं, सदीपं, सजलं, सर्वान्न पात्र चतुष्टयं विधाय। ॐ वं वटुकनाथाय नमः इति वटुक भैरवामावाह्यः। ॐ वं वटुकनाथ बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं सम्पूज्य। ॐ ॐ ॐ एह्येहि देवी पुत्र वटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रि–नेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय–नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं ग्रहण–गहण स्वाहा। एषः बलिर्वं वटुकाय नमः इति वामांगुष्ठानामिकाभ्यां धृत्वा द्वितीय खड्ग धारया बलिं हरेत्। ॐ बलि दानेन सन्तुष्टो वटुकः सर्व सिद्धिदः, शान्ति करोतु मे नित्यं भूत–वेताल सेवितः। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा नमेत् इति वटुक बलिः।

२. अथ आग्नेय मण्डले यां योगिनीभ्यो नमः। भो सर्व योगिन्याः इहागच्छन्तु इत्यावाह्य गन्धादिभि सम्पूज्य ॐ योगिनी बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं सम्पूज्य ॐ ॐ ॐ ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन तले भू–तले निष्कले वा। पाताले वाऽतले वा सलिल–पवन–योर्यत्र कुत्र स्थितो वा।। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा पुष्प–धूप–दीपदिकेन। प्रीताः देव्यः सदा नः शुभ–बलि–विधिना पान्तु वीरेन्द्र–वन्द्याः।। ॐ यां योगिनीभ्यो हुं फट् सर्व–वर्ण–योगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा इति वामांगुष्ठानामिकाभिः बलिं हरेत्। ॐ या काचिद् योगिनी रौद्री सौम्या घोर–तरा परा। भूचरी–खेचरी–व्योमचरी प्रीतास्तु मे सदा।। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा नमेत् इति योगिनी बलिः।

३. अथ नैर्ऋति मण्डले क्षं क्षेत्रपालाय नमः इति क्षेत्रपालमावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य ॐ क्षेत्रपाल बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं पूजयेत्। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान क्षेत्रपाल इहागच्छ इमं धूप–दीपादि–सहितं बलिं गृहण–गृहण आपय आपय सिद्धिं में प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा। एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः इति वामांगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिं हरेत्। ॐ योऽस्मिन् क्षेत्रे निवारी च क्षेत्रपालस्य किंकरः। प्रीतोऽयं बलि–दानेन शान्तिं रक्षां करोतु मे।। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा नमेत् इति क्षेत्रपाल बलिः।

४. अथ वायव्य मण्डले गं गणपतये नमः इति गणपतिमावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य ॐ गणपति बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं पूजयेत्। ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्व–जनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलिं गहण–गृहण स्वाहा। एषः बलिर्गं गणपतये नमः इति वामांगुष्ठ–मध्यमाभ्यां बलिं हरेत्। ॐ सर्वदा सर्व कार्याणि निर्विघ्नानी सुसाधय। सन्निधिं कुरू मे नित्यं गण–राज स–शक्तितः।। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा नमेत् इति गणपति बलिः।

५. ततः स्ववाम भागे सर्वभूत बलिं दद्यात्। सां सर्वभूतेभ्यो नमः। सुरासुर गणद्वा सर्वभूतगणा इहागच्छन्तु इत्यावाह्य गन्धादिभिः सम्पूज्य ॐ सर्वभूत बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं पूजयेत्। ॐ ह्रीं सर्व–विघ्न–कृद्भ्यो सर्व–भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। एष बलिःसर्व–भूतेभ्यो नमः इति वामांगुष्ठादि सर्वांगुलीभ्यः बलिं हरेत्। ऐं भूता ये विविधाकारा दिव्य भूम्यन्तरिक्षगाः। पातालातल–संस्थाश्च शिव–योगेन भाषिताः।। क्रूराद्याः सप्त–सन्धाश्च इन्द्राद्येषु व्यवस्थिताः। ध्रुवाद्याः सर्व–गन्धर्वा ऐन्द्राद्या सर्व–देवताः।। ते सर्वे प्रीति–मनसो भूत्वा गृहणन्त्विमां बलिम्। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा नमेत् इति सर्व–भूत बलिः।

ॐ सर्वाभ्यो बलि–देवताभ्यो नमः इति सर्वभ्यर्च्य नाराच मुद्रां बध्वा बलिदानेन सन्तुष्टा क्षमध्वं बलि–देवताः। यथा सुखं विहरन्तु यथेच्छा सुदिशासु च।। वटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्व विधायिनः। शान्तिं पुष्टिं प्रयच्छन्तु ते प्रसादात् सदाशिवः।। स्तुत्वा मुद्रां विसर्ज्य प्रोक्षणी जलेन आत्मानं

प्रोक्षयेदिति बलिदान विधिः।।

ततः उत्तरापोषणं दत्वा नैवेद्यं विसृज्य कर प्रक्षालनाचमनादि दद्यात् नीराञ्जनं कुर्यात् ततः स्वर्णादि पात्रे अष्टदलं विरच्य गोधूम पिष्ट रचितानि नव दीपानि पात्रे संस्थाप्य मूलेन प्रज्वाल्य अष्टदिक्षु ब्राह्मयाद्याः मध्ये मूलेन सम्पूज्य अमृतीकृत्य अवगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य मूलेनाष्टधाभि मन्त्र्य जानुभ्यामवनीं गत्वा नीराञ्जनं कुर्यात्।

समस्त देव–देवेश–परिवार गणावृत्त आरार्त्तिकमिदं देव गृहाण मम सिद्धये इति आरार्त्तिक मन्त्रेण परिवर्त्य भूमा कारेण परिभ्रामयेत् इत्यारार्त्तिक विधिः। ततः मूलमष्टोत्तरशतं जपेत् ततः कवचं स्तोत्र सहस्रनामादि परायणं कुर्यात्।

श्री शरभ-कवच

।।श्री देव्युवाच।।

सर्वज्ञ सर्वमन्त्रस्य सर्वाचार्य शिव प्रभो। शरभं कवचं दिव्यं सर्वरक्षाकरं परम्।।
वज्रपञ्जर नामाख्यं वद मे करुणाकर।

।।श्री ईश्वरोवाच।।

वक्ष्यामि शृणु देवेशि सर्वं लक्षणमद्भुतम्। शरभं कवचं नाम्ना चतुर्वर्ग फलप्रदम्।।

विनियोग :-

ऊँ अस्य श्री शरभ–शालुव–पक्षिराजाख्य कवचस्य सदाशिव ऋषिः, बृहस्पति छन्दः, श्री शरभेश्वरो देवताः, प्रणवो बीजं, प्रकृतिः शक्तिः, अव्यक्तं कीलकं, चतुर्वर्ग फल प्राप्त्यर्थे जपे (पाठ) विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :-

शिरसि सदाशिवाय ऋषये नमः
मुखे बृहस्पत्यै छन्दसे नमः
हृदि श्री शरभेश्वराय दैवतायै नमः
गुह्ये ऊँ बीजाय नमः
पादयोः प्रकृत्यै शक्तये नमः

नाभौ अव्यक्त कीलकाय नमः

सर्वांगे चतुर्वर्ग फल प्राप्त्यर्थं विनियोगाय नमः

करन्यास व अंगन्यास :-

खां खीं खूं खैं खौं खः से पूर्व की भांति करें।

ध्यान :-

रत्नाभं सुप्रसन्नं त्रि–नयनममृतोन्मत्त भूषाभिरामम्। कारूण्याम्बोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्र रेखावतंशम्।।

शंखाध्माताखिलाशा प्रतिहतविधिना भासमानात्मभासम्। सर्वेशं शालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि।।

मानस-पूजन :-

पूर्व की भांति करें।

।।श्री महा-रूद्राय नमः।।

ॐ श्री शिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः। पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः।।१।।

शिखाग्रं पातु मे शम्भु निर्टिलं पातु शंकरः। ईश्वरो वदनं पातु भ्रुवोर्मध्यं पुरान्तकः।।२।।

भ्रुवौ पातु मम स्थाणुः कपर्दी पातु लोचने। शर्वो मे श्रोत्रयोः पातु वागीशः पातु लम्बिकाम्।।३।।

नासयोर्मे वृषारूढो नासाग्रं वृषभध्वजः। स्मरारिः पातु मे तालुर्वरोष्ठयोर्भक्त वत्सलः।।४।।

जिह्वां मम सदा पातु सर्व–विद्या प्रदायकः। पातु मृत्युञ्जयो दन्ताश्चिबुकं पातु भूतराट्।।५।।

परमेशः कपोलौ मे त्रिकं पातु कपालभृत्। कण्ठं पशुपतिः पातु शूली पातु हनू मम।।६।।

स्कन्धद्वयं हरः पातु धूर्जटिः पातु मे भुजौ। भुजद्वयं महा–देवं ईशानो मम कूर्परम्।।७।।

मुष्टि सन्धि जगन्नाथ प्रकोष्ठौ चन्द्रशेखरः। मणिबन्धं त्रि–नेत्रो मे भीमः पातु करस्तलम्।।८।।

करपृष्ठं मृडः पातु रूद्रोऽङ्गुष्ठद्वयं मम। उमासहायस्तर्जन्यौ भर्गो मे पातु मध्यमे।।९।।

अनामिके करालस्य कालकण्ठः कनिष्ठिके। गंगाधरोऽङ्गुलीपर्वाण्य प्रमेयो नखानि मे।।१०।।

ईशानः पातु दोर्मूलं मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु। वक्षस्तत्पुरूषः पातु कक्षौ दक्षाध्वरान्तकः।।११।।

अघोरो हृदयं पातु वामदेव स्तनद्वयम्। भालदृक् जठरं पातु नाभिं नारायण प्रियः।।१२।।
कुक्षिं प्रजाकरः पातु कुक्षिं पार्श्वं महा–बलः। सद्योजातः कटि पातु पृष्ठ भागं तु भैरवः।।१३।।
मोहनोजघनं पातु गुदं मम जितेन्द्रियः। ऊर्ध्वरेता लिंगदेशे वृषणं वृषभध्वजः।।१४।।
ऊरूद्वयं भवः पातु जानुयुग्मं भवान्तकः। हुंकार पातु मे जंघे फट्कारो मम गुल्फके।।१५।।
वषट्कारः पाद पृष्ठं वौषट्कारोंऽघ्रिणस्तले। स्वाहाकारोंऽगुलीर्पार्श्वे स्वधाकारोंऽगुलीर्मम।।१६।।
त्वरितः सर्व सन्धिन्मे रोमकूपे नृसिंहाजित्। त्वचं पातु मनोवेगः कालजिद् रुधिरं मम।।१७।।
पुष्टिदः पातु मे मांस मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु। सर्वात्मास्थिञ्चयं पातु मज्जां मम जगत्प्रभुः।।१८।।
शुक्रं वृद्धिकरः पातु बुद्धिं वाचामधीश्वरः। मूलाधाराम्बुजं पातु भगवान् शरभेश्वरः।।१९।।
स्वाधिष्टानमजः पातु मणिपूरं हरिप्रियः। अनाहतं शालुवेशो विशुद्धं जीवनायकः।।२०।।
सर्वज्ञानप्रदो देवो ललाटं मे सदाशिवः। ब्रह्मरन्ध्रं महा–देवः पक्षिराजोऽखिलाकृतिम्।।२१।।
सर्वलोक वशीकारः पातु मां खरगर्वजित्। वज्र–मुष्टि–वराभीति हस्तः कालाग्नि सन्निभः।।२२।।
विजया सहितःपातु चैन्द्रीं ककुभमाग्निजित्। शक्ति–शूल–कपालासिहस्तः सौदामिनी प्रभः।।२३।।
जयायुतो महा–भीमः पातु वैश्वानरीं दिशाम्। दण्डासि–शूल–मुसलं–हाल–पाशांकुश–कराम्बुजः।।२४।।
यमान्तकोऽजितायुक्तोयाम्यीं पातु दिशं यमीम्। खड्ग–खेटाग्नि–परशु हस्तः शत्रु विमर्दनः।।२५।।
अपराजितया युक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतिं दिशम्। पाशांकुश–धनुर्बाण–पाणिः श्रेणी मुखाग्रगः।।२६।।
हरिद्राभौऽनिशं पायाद्वारूणीं दिशमात्मजित्। ध्वजाग्र कवचोदार भुजो दुर्गायुतः खगः।।२७।।
चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशम्। गदाक्षस्रग्वराभीति करम्भोजः शिवायुतः।।२८।।
कनकाभो महा–तेजाःपातु कौबेरकी दिशम्। त्रि–शूलहि–कपालाग्निदोः स्तलो विद्ययायुतः।।२९।।
भस्मोद्धूलित सर्वांगो दिशं पात्वपराजिताम्। जपाक्ष–पुस्तकां भोज कमण्डलुं कराम्बुजः।।३०
ऊर्ध्वं पातु गिरायुक्तः सर्वभूत हितेरतः। शंख–चक्रं गदाऽभीति–हस्तः पद्मायुतोऽव्ययः।।३१
नीलाञ्जन समोनीलः पातालं पात्वनारतम्। अनुक्त विदिशः पातु शालवो नृसिंहजित्।।३२।।
शरभः पातु संग्रामे युद्धे वैरिकुलान्तकः। सर्व सौभाग्यदः पातु जाग्रत्स्वप्न–सुषुप्तिषु।।३३।।
सर्व सम्पत्प्रदः पातु धनाध्यक्षादिकं मम। सन्तानदः सुतान्पातु पुत्रानायुष्करोऽनिशम्।।३४।।

बन्धून्वृद्धिकरः पातु गृहं मम वशं करः। ग्रामं ग्रामेश्वरः पातु राज्यं मम दिगम्बरः।।३५।।
राष्ट्रं शान्तिकरः पातु राजानं धर्मदायकः। मार्गं दुष्टहरः पातु मम कार्याणि भैरवः।।३६।।
बटुकः पातु मे सर्वं त्र्यवस्थासु भयेषु च। स्पर्श–वीक्षण–संयुक्तः प्राणरक्षां मनोजवः।।३७।।
प्रधानमूर्तिभावश्च प्रासादेष्वाशु सिद्धिकृत्। साधकः प्रणवं माया बीजं नमो भगवतेति च।।३८।।
प्रतिनाम चतुर्थ्यतं स्पर्श इत्यभिधीयते। द्विर्ज्वल–प्रज्वले साध्यं साधय द्विर्द्विरक्ष तत् ।।३९।।
सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहान्तं युग्–वीक्षणम्। स्पृशन् पश्यन् जपं कृत्वा प्रतिस्थानं समाहितः।।४०।।
प्रार्थयेदखिलं स्वेष्टं हृदिस्थं शालुवेश्वरम्। ये ग्रामघातकाः क्रूराः कपटा दौष्टिका भटाः।।४१।।
तस्कराः शत्रवो क्रुद्धा वधे सक्ताः पलाशनाः। छदमचारः विदोभ्रष्टा दिवाचर–निशाचराः।।४२।।
ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवात पराहताः। स्त्री–बाल–सहिताः क्षिप्रं पितृ–मातृ कुलान्विताः।।४३।।
भग्नचित्ता गतप्राणाः यान्तु देशान्तरं स्वयम्। ये च दुष्टग्रहाः शक्ताः पिशाचा देवयोनयः।।४४।।
चतुः षष्टिगणाः सप्तसप्तत्युन्मादका ग्रहाः। अष्टाशीति महा–भूताः सप्तकोटि महा–ग्रहाः।।४५।।
नवति ज्वर भेदाश्च शत–भेदाश्च कृत्तिकाः। पञ्चाशद् गणनाथाश्च नियुताः कृत्रिम ग्रहाः।।४६।।
प्रेतारूढास्त्रयस्त्रिंशत्पिण्डदान परायणाः। अयुतं क्षुद्र–भेदाश्च चत्वारिंशच्छिवाह्वयाः।।४७।।
द्वात्रिंशद्वह्निवक्त्राश्च विंशन्मार्जार वक्त्रकाः। चतुः षष्टयाखुरूपाश्च ये चान्ये क्षुद्रयोनयः।।४८।।
ते सर्वे शालुवेशस्य शखं–निःस्वन–मोहिताः। विषण्णाः स्खलिताः शान्ताः प्राण–त्राण–परायणाः।।४९।।
गच्छन्तु सम्प्रयोक्तारो देशान्तरमनिच्छया। ये चान्येवनजा ग्राम्याः शुनकोरगवृश्चिकाः।।५०।।
आशीविषाः शिवा व्याला व्याघ्र–ऋक्षेभ सूकराः। गृध्राः श्येनाः खगाः काकाः दंशका भ्रन्शका मृगाः।।५१।।
एते शरभहस्ताग्र–नख–क्षत–विमोक्षगाः। स्रवद्रक्त छटासिक्ताः शिलातल निताडिताः।।५२।।
सम्भेदिता नखैः शीघ्रं नश्यंत्वखिल दुश्चराः। न दंशत्पुरगाः क्वापि वातोतिवक्षितु।।५३।।
न दहत्वसवो वह्निरायात्वापो न चाधिकाः। न वर्षत्वतिवृष्टिश्च न पतत्व शनिः क्वचित्।।५४।।
नाक्रामत्वपमृत्युश्च न रोगानाशुभं क्वचित्। न म्रियते भञ्जनो न भवत्वशुभं क्वचित्।।५५।।
न वदन्त्वसहो वाक्यं जन्तवो मम देशके। नास्याद्वैरं च जन्तूनां अन्येषां राजके मम।।५६।।
भवन्तु सुखिनः सर्वे–सर्वे सन्तु पतिव्रताः। सर्वाः सूयन्तां सत्पुत्रान्पुत्रीश्च शुभ लक्षणाः।।५७।।

सर्वे सर्वाश्च नंदन्तु सन्तु सम्कल्याणकारकाः। राजन्वती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिकः।।५८।।
सम्स्रवन्तु पयोगावः फलंत्वोषध्योऽधिकम्। भवन्तु फलदा वृक्षाः सिद्धिर्भवतु मेऽखिला।।५६।।
ममास्तु तरसा नूनमात्माज्ञानं चञ्चलम्। काम–क्रोध–महा–मोहा लोभ सम्मोह मत्सराः।।६०।।
न सन्तु भगवन्क्वापि सर्वेश करूणानिधे। श्री शरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे।।६१।।
देहि मे निश्चलां भक्तिं प्रणतोऽस्मि पुनः पुनः। गौरी वल्लभ कामारे कालकूटविषादन।।६२।।
मामुद्धरापदंभोधेस्त्रिपुरहनांतकान्तक। शालुवेश जगन्नाथ सर्वभूतहिते रत।।६३।।
पाहि मां तरसा चौरान् दुष्टान्नाशय नाशय। कालभैरव विश्वेशं विश्वरक्षापरायण।।६४।।
रक्ष मूषक–चौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो। पक्षिराज महा–देव प्रणतार्ति विनाशन।।६५।।
मदीयानि पदार्थानि नित्यं पालय–पालय। सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वदुष्ट विनाशका।।६६।।
तस्करेण हृतं वस्तु द्रुतं दापय दापय। ये च मे वादिनो दिक्ष क्षद्रोपद्रवकारकाः।।६७।।
सर्वाचार–परिभ्रष्टा मानहीनाश्च रोधकाः। ते सर्वे शालुवेशस्य मुसलायुध चूर्णिताः।।६८।।
नश्यन्तु निमिषार्धेन पावकावृत्ततूलवत्। ये जन द्रोहिणोल्पाश्च तत्कालेऽहित भाषिणः।।६६।।
सत्कर्म विघ्नकर्तारः शान्त भक्षपरायाणाः। तु शालुवेश हस्ताग्र–खड्गनिर्भिन्नदेहिनः।।७०।।
पतन्तु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयांत्वलम्। त्वदंघ्रि ध्यान निर्दग्धान्पायत्क्रेशार्थ मन्त्रिणः।।७१।।
मह्यं द्रुह्यन्ति ये तेषां विभवानि क्षयंत्वरम्। त्वदाचार परं भक्तं साधकानां विवेकिनम्।।७२।।
ये चाक्रमन्ति संग्रामे ते'गच्छन्तु पराहताः। त्वदीयेनैव मार्गेण संचरन्तं जपातुरम्।।७३।।
ये वदन्ति परीवादं भ्रान्ताः शीघ्रं भवन्तु ते। त्वद्दसममलं वीरं ये मां तर्जते बलात्।।७४।।
मनसा ये न मन्यन्ते तत्स्वान्तं भ्राम्यतु क्षणात्। मनसा कर्मणा वाचा ये इत्यंत्पतिदुःसहम्।।७५।।
ते महा–रोग शोकाघैः पतंत्वाशु शिवाज्ञया। मदीयानि पदार्थानि गृहीन्तु योऽवलोकते।।७६।।
तत्क्षणादेव नष्टार्थो भवत्वादीश्वराज्ञया। मदीयं द्रव्यमादय ये गच्छन्तिह तस्कराः।।७७।।
सिंहारि–पाश–सम्बद्धास्ते गच्छन्तु प्रदक्षिणम्। सीमातीताश्च ये चौरा गृहीतद्रव्य संचयाः।।७८।।
अवशावयवास्तेन तु आगछन्तु शिवाज्ञया। तस्करा निम्नगास्वान्त–धान्य–वस्त्र–धनादिकाः।।७६।।

पक्षिराज पराकृष्टाः समागच्छन्तुतेद्रुतम्। समाहृत पदार्था ये देशातीताश्च तस्कराः।।८०।।

शरभेश–हलाकृष्टा तस्यागच्छन्तु सानुगाः। चौरा गृहीतुमुद्युक्ताः समागच्छन्ति मां गृहे।।८१।।

ते शालुवेशपक्षोत्थ वातैर्गच्छन्तु सत्वरम्। शान्तं विवेकिनं भक्तं त्वदांघ्रि ध्यानतत्परम्।।८२।।

दुह्यन्ति ये सहप्राणास्तेसं यान्तु यमां पुरीम्। षट्त्रिंशत्कोष्ठके यन्त्रे रेखाशूलाग्र मध्यमे।।८३।।

स्वेच्छा मन्त्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्य साधकः। मध्ये पाशांकुशे वहि साध्य नाम लिखेत्क्रमात्।।८४।।

उदङ्. मुखः सहस्रन्तु रक्षणाय जपेन्निशि। नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमादिङ्. मुखः।।८५।।

मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्। रोगानिग्रहणे चाष्टरात्रमाग्नेयदिङ्. मुखः।।८६।।

इति गुह्यं महा–मन्त्रं परमं सर्वसिद्धिदम्। शरभेशाख्य–कवचं चतुर्वर्ग फल–प्रदम्।।८७

प्रत्यहं प्रतिपक्षं वा प्रतिमास मथापि वा। यो जपेत्प्रतिवर्षं वा वरेण्यः स शिवो भवेत्।।८८।।

एवं हि जपतः पुंसः पातकं चोपातकम्। सर्वं विलयमाप्नोति रविणा तिमिरं यथा।।८९।।

दशाब्दं यो जपेन्नित्यं प्रातरूत्थाय साधकः। सर्वसिद्धि समाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत् ।।९०।।

त्रि–कालं ध्यानपूर्वं तु जपेद् द्वादश–वार्षिकम्। कायेनानेन सो देवि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ।।९१।।

शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने। सोऽणिमादि गुणान् प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा ।।९२।।

अतलादिधरण्यादि भुवनानि चतुर्दश। विचरेत्कामवित्सर्वैः पूज्यमानो यथासुखम् ।।९३।।

त्रि–मासं यो जपेन्नित्यमष्टोत्तर सहस्रकम्। सहसा शरभेशस्य स्वरूपं लभतेऽम्बिके ।।९४।।

षण्मासं यो जपेद्देवि प्रयतस्तु दृढव्रतः। मद्रूपधारकैर्मर्त्यैः सह सिद्धि प्रदायकैः।।९५।।

मम लोके च सम्पूज्यो विष्णुलोके तथैव च। ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निवार्य्यते ।।९६।।

इन्द्राग्नियम रक्षेश जलेश पवनैः सदा। सोमेशानक लक्ष्मीशैर्दिशांपालैश्च पूज्यते ।।९७।।

आदित्य–सोम–पृथ्वीश–बुध–श्री–गुरू–भार्गवैः। पूज्यते स ग्रहैः सर्वैः शनि–राहु–केतुभिः।।९७।।

भृग्वंगिरः पुलस्त्यैश्च पुलहात्रि–मरीचिभिः। दक्ष–काश्यप–भृगवादियोगिभिश्च पूज्यते ।।९९।।

भैरवैर्वसुभी रूद्रैरादित्यैर्गाणपत्यकैः। दिग्गजैश्च महा- नागैर्दिव्यास्त्रैर्दिव्य वाहनैः।।१००।।

माहेश्वरैर्महा-रत्नैः कामधेनू सुरद्रमैः। सरिद्भिः सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः।।१०१।।

दानवै राक्षसैः क्रूरैः सिद्ध-गन्धर्व-किन्नरैः। यक्षैर्विद्याधरैर्नागैरप्सरोभिः प्रपूज्यते ।।१०२।।

अपस्मार ग्रहैर्भीमैरुन्मत्तैर्ब्रह्मराक्षसैः। वेतालैः खेचरैर्मर्त्यैः कूष्माण्डै राक्षस ग्रहैः।।१०३।।

व्यालवत्क्रतमोहारैः स्त्रीग्रहैः पापविग्रहैः। भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैर्ग्रहैः सर्वत्र पूज्यते ।।१०४।।

ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः। पशु-पक्षि-मृग-व्यालैः पूज्यते सर्वजन्तुभिः।।१०५।।

किमत्र बहुना देविः तव वक्ष्ये यथा तथम्। मया च विष्णुना चैव विश्वकर्त्रा च पाल्यते।।१०६।।

भवान्या च गिरा लक्ष्म्या ब्रह्माण्याद्यष्ट मातृभिः। प्राणेश्वरादि योगीन्द्रैर्योगिनीभिः स पाल्यते ।।१०७।।

य इदं पूजयेद्भक्त्या तस्यासाध्यं न विद्यते। कवचेन्द्रं महा-मन्त्रं जपेत्तस्मादनुत्तमम् ।।१०८।।

उच्चाटने मरूद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः। प्रागाननोऽभिवृद्धौ तु सर्वेष्वीशानदिङ्. मुखः।।१०६।।

यो जपेत्कवचं नित्यं त्रिं-काल ध्यान-पूर्वकम्। सर्वसिद्धिमवाप्नोति सहसा साधकोत्तमः।।११०।।

।।श्री देव्युवाच।।

देव-देव महा-देव शिव कारूण्यवारिधे। पाहि मां प्रणतं स्वामिन्प्रसीद परमेश्वर।। १११।।

सर्वार्थसाधनोपाय सर्वेश्वर्य-प्रदायक। समस्तापत्प्रतीकार चन्द्रशेखर ते नमः ।। ११२।।

यत्कृत्यं तन्न कृतं यद कृत्यं तत्कृत्य वदाचरितम्। उभयोः प्रायश्चितं शिव तव नामाक्षरोच्चरितम्।। ११३।।

।। श्री शरभ-कवचं सम्पूर्णम् ।।

* श्री शरभेश्वर दिव्य-शतनाम - स्तोत्र *

।। श्री गणेशाय नम :।।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री शरभेश्वर दिव्य–शतनाम–स्तोत्र–मन्त्रस्य अघोर ऋषिः, अमृत–गायत्री छन्दः, महा–वीर शरभेश्वरो देवता, शरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :-

ॐ अघोर ऋषये नमः शिरसि

अमृत–गायत्री छन्दसे नमः मुखे

महा–वीर शरभेश्वर देवतायै नमः हृदये

शरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास व अंगन्यास :-

खां खीं खूं खैं खौं खः से पूर्व की भांति करें।

चन्द्रार्काग्निस्त्रि–दृष्टि................ से ध्यान व पूर्व की भांति मानस–पूजन भी करें।

।। श्री नृसिंह उवाच।।

ॐ नमः शिवाय शान्ताय शंकरायार्त्ति हारिणे। भयस्कराय पक्षीणाम्पतये शरभात्मने ।।१।।

अंविकापतये तुभ्यमुनायापतये नमः। जाताय वहुधा लाके प्रभूताय नमो नमः।।२।।

रूद्राय नीलरूद्राय वटुभद्राय चेतसे नमः। मीढुष्टमाय देवाय शिपिविष्टायते नमः ।।३।।

नाराय च सुताराय तारणाय नमो नमः। हरिकेशाय देवाय शाम्भवेमदशत्रवे।। ४।।

देवानां शम्भवे तुभ्यं मन्यवे रूद्ररूपिणे। कपर्दिने नमस्तुभ्यं कालकण्ठाय ते नमः।। ५।।

हिरण्याय नमस्तुभ्यं श्री कण्ठाय नमो नमः। नमो डमरू–त्रिशूलाय उग्राय च नमो नमः ।। ६।।

भीमाय भीम रूपाय धर्मरूपाय ते नमः । भस्मदाय शरीराय कमण्डलु धराय च ।। ७ ।।

नमो ह्रस्वाय दीर्घाय वामनाय नमो नमः। अग्रेश्वरायवै तुभ्यं नमो दूरतराय च ।। ८ ।।

धन्दिने शूलिने तुभ्यं दैत्यानां मर्म भेदिने। सद्योजाताय–वामाय–घोराय च नमो नमः ।। ६ ।।

तत्पुरुषाय नमस्तुभ्यं ईशानाय नमो नमः । ब्रह्मणे–विष्णु रूपाय रूद्राय शिव रूपिणो ।। १० ।।

नमो रूद्राय कल्पाय महा–ग्रासाय विद्मवे। नमो भवाय शर्वाय नमः पर शिवायते।। ११।।

काल–कालाय–कालाय महा–कालाय मृत्यवे। वीराय वीरभद्राय क्षयकाराय शूलिने ।। १२ ।।

महा–देवाय महते पशूनाम्पतये नमः। एकाय नीलकण्ठाय पिनाकिने ।। १३ ।।

नमोऽनंताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्यु–मृत्यवे। पराय च परमेशाय परात्परतरायते ।। १४ ।।

परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये । नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भावने ।। १५ ।।

कैवर्त्ताय किराताय महा–व्याधाय शाश्वते। भैरवाय शरण्याय काम–कालपुरारये ।। १६ ।।

नमः पापौघ संहत्रे विष्णुकालान्त कारिणे। त्र्यम्बकाय त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे ।। १७ ।।

निरालं च नित्याय शाम्भवे वायु सम्भवे। भवोद्भवाय शुद्धाय सर्वदेवोद्भवायते ।। १८ ।।

मृत्युञ्जयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये। मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे ।। १६ ।।

मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः। अव्यक्ताय विकाराय स्थिराय स्थिरधन्विने ।। २० ।।

स्थाणवे कृत्तिवासाय नमः पञ्चार्थ हेतवे। नमस्ते द्विजराजाय धनानाम्पतये नमः ।। २१ ।।

योगीश्वराय नित्याय सत्वाय परमेष्ठिने नमः। सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वेश्वरायते ।। २२ ।।

एक–द्वि–त्रि–चतुः पञ्च कृत्वास्तेऽस्तु नमो नमः। दशकृत्वः शतकृत्वः सहस्रकृत्वो नमो नमः।। २३ ।।

नमोऽपरिमितिं कृत्वेऽन्नतकृत्वे नमो नमः। ॐ नमः शालुवेशाय शरभेशायते नमः ।। २४ ।।

।। श्री शरभ दिव्य–शतनाम–स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री शरभ सहस्रनाम - स्तोत्र

विनियोग :-

अस्य श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज सहस्रनाम–स्तोत्र–मन्त्रस्य कालाग्नि–रूद्रो–वामदेव ऋषिः, अति–जगती छन्दः, शरभ–शालुवो देवता, हखां बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं मम चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे सहस्रनाम पाठे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास :-

ॐ कालाग्नि–रूद्रः वामदेव ऋषये नमः शिरसि।

अति–जगती छन्दसे नमः मुखे।

शरभ–शालुव देवतायै नमः हृदये।

हस्रां बीजाय नमः गुह्ये।

स्वाहा शक्तये नमः पादयो।

फट् कीलकाय नमः नाभौ।

चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास व अंगन्यास :-

ॐ हस्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः	–	हृदयाय नमः
ॐ हस्रीं तर्जनीभ्यां नमः	–	शिरसे स्वाहा
ॐ हस्रूं मध्यमाभ्यां नमः	–	शिखायै वषट्
ॐ हस्रैं अनामिकाभ्यां नमः	–	कवचाय हुम्
ॐ हस्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः	–	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ हस्रः करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः	–	अस्त्राय फट्

ॐ भूर्भवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः ।

ध्यान :-

क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापः क्व विश्वम्भरः,

क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेन्दुः क्व देवासुराः।

कल्पान्तः शरभेश्वरः प्रमुदितः श्री सिद्ध योगेश्वरः,

श्रीमत्कान्तः श्रीकलानाथः श्रेयदः श्रेयवारिधिः। मुक्तकेशो गिरिशयः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।।१७।।

मालाधरो मनः श्रेष्ठो मम मानस हंसकः। शिपिविष्टश्चन्द्रमौली हंसो मीढुष्टमोऽनद्यः ।।१८।।

मन्त्रराजो मन्त्ररूपो मन्त्रपुण्यफलप्रदः।अर्व्यः सूर्योग्निराशिभ्यः प्रथमः पावकद्युतिः ।।१९।।

गुरुमण्डलरूपस्थो गुरुमण्डलकारणः। अचरस्तारकस्तारो वस्वन्योऽनन्त विग्रहः ।।२०।।

तिथि–मण्डल–रूपश्च वृद्धि–क्षयविवर्जितः। द्वीप्यः स्रोतस्य ईशानो धुर्यो गव्ययुतो व्ययः ।२१।।

प्रथमः प्रथमाकारो द्वितीयः शक्ति संयुतः। गुणत्रय–तृतीयोऽसौ युगरूपश्चतुर्थकः ।।२२।।

पूर्वजः परजो ज्येष्ठः कनिष्ठो विश्वलोचनः। पञ्चभूतात्मा साक्षीशो ऋतुः षड्गुणभावनः ।।२३।।

अप्रगल्भो मध्यमो र्व्योमजघन्योऽजघन्यः शुभः। सप्तधातुस्वरूपश्च अष्टमः सिद्ध सिद्धिदः ।।२४।।

प्रतिसूर्योऽनन्तरूपः सौम्यो याम्यः सुराश्रयः। नवनाद नवम्यस्थो दशदिग्रूपधारकः ।।२५।।

रूद्र एकादशाकारो द्वादशादित्य दीपनः। वन्यो वसान्यः पूतात्मा श्रवः कक्षः प्रतिश्रवाः ।।२६।।

व्यञ्जनो व्यञ्जनातीतो विसर्गः स्वरभूषणः। आशुषेणो महा–सेनो महा–वीरो महा–रथः ।।२७।।

अनन्तो अव्ययो आद्यौ आदिशक्ति–वरप्रदः। श्रुतिसेनः श्रुतः साक्षी कवची वशकृद्वशी ।।२८।।

आनन्दश्चाद्यसंस्थान आद्याकारणलक्षणः। आहनन्योऽनन्यनाथो दुंदुभ्योनिष्ट नाशकः ।।२९।।

कर्ता कारयिता कार्यः कार्यकारण भावगः। धृष्ण–प्रमश ईड्यात्मा वदान्यो वेदसम्मतः ।।३०।।

कलानाथः कलातीतः काव्य–नाटक–बोधकः। तीक्ष्णेषुपाणिः प्रहितः स्वायुधः शस्त्रविक्रमः ।।३१।।

कालहन्ता कालसाध्यः कालचक्र प्रवर्तकः। सुधन्वा सुप्रसन्नात्मा विश्व वक्त्रः सदागतिः ।।३२।।

कालाग्निरूद्र–सन्दीप्तः कालान्तक भयंकरः। खड्गीशः खड्गनाशश्च खड्गशक्तिः परायणः ।।३३।।

गर्वघ्नः शत्रुहन्ता गमागमविवर्जितः। यज्ञकर्म फलाध्यक्षो यज्ञमूर्तिरनातुरः ।।३४।।

धनस्वामी धनानन्दो धनधारा प्रवर्तकः। धनकर्ता धनत्राता धनबीज समृद्धिदः ।।३५।।

क्रीडा–नाटक–नायको विजयते देवो महा–शालुवः।।

मानस-पूजन :-

पूर्व की भाँति करें।

।। श्री भैरव उवाच।।

श्री नाथो रेणुकानाथो जगन्नाथो जनाश्रयः। श्री गुरुर्गुरुगम्यश्च गुरुरूपः कृपानिधिः ।।१।।

हिरण्यबाहुः सेनानी दिक्पतिस्तरूराट्टरः। हरिकेशः पशुपतिश्रेहात्सः स्पिञ्जरो मृडः ।। २।।

गणेशो गणनाथश्च गणेपूज्यो गणाश्रयः। विव्याधिर्बभ्रुशः श्रेष्ठः परमात्मा सनातनः ।।३।।

पीठेशः पीठरूपस्थः पीठपूज्यः सुखावहः। सर्वाम्नाय जगत्कर्ता पुष्टेशो नंदिकेश्वरः ।।४।।

भैरवो भैरव–श्रेष्ठो भैरवायुध धारकः। आततायी महा–रौद्रः संसारास्त्रः सुरेश्वरः ।।५।।

सिद्धः सिद्धिप्रदः साध्यः सिद्धमण्डल पूजितः। उपवीत रहस्यात्मा क्षेत्रेशो वननायकः ।।६।।

वटुरूपो वटुस्वामी वटुपालनकारणः। रोहितः स्थपतिः सुतो वणिजो मन्त्रिरून्नतः ।।७।।

पदरूपः पदप्राप्तोपदेशः पदनायकः। कक्षेशोऽहुः भूतदेवो भुवं तिर्वारिवस्कृतः ।।८।।

दूतिक्रमो दूतिनाथो शाम्भवः शंकर प्रभुः। उच्चैर्घोषो घोषरूपः पत्तीशः पाशमोचकः ।।९।।

वीरोवीर्यप्रदः शूरोवीरेशो वीरदायकः (वरदायकः)। औषधीशः पञ्चवक्त्रः कृत्स्नवीतो भयानकः ।।१०।।

वीरनाथो वीररूपो वीर–आयुधधारकः। सहमानः स्वर्णरेतो निर्व्याधिर्निरुपल्लवः ।।११।।

चतुराश्रम निष्ठश्च चतुर्मूर्तिश्चतुर्भुजः। अव्याधिनीशः ककुभो निषंगी स्तेनरक्षकः ।।१२।।

घटीशो घटिकारूपः पलसंकेत वर्द्धक। मन्त्रात्मा तस्कराध्यक्षो वंचकः परिवंचकः ।।१३।।

नवनाथो नवांकस्थो नवचक्रेश्वरो विभुः। अरण्येशः परिचरो निचेयुः स्नायुरक्षकः ।।१४।।

वीरावलीप्रियः शान्तो युद्ध–विक्रम–दर्शकः। प्रकृतेशो गिरिचरः कुलिंचेशो गुहेष्टदः ।।१५।।

पञ्चाञ्जकतत्त्वस्थस्तत्त्वातीत स्वरूपकः। भवः शर्वो नीलकण्ठः कपर्दी त्रिपुरान्तकः ।।१६।।

श्रीमत्कान्तः श्रीकलानाथः श्रेयदः श्रेयवारिधिः। मुक्तकेशो गिरिशयः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।।१७।।

मालाधरो मनः श्रेष्ठो मम मानस हंसकः। शिपिविष्टश्चन्द्रमौली हंसो मीढुष्टमोऽनद्यः ।।१८।।

मन्त्रराजो मन्त्ररूपो मन्त्रपुण्यफलप्रदः।अर्व्यः सूर्योग्निराशिभ्यः प्रथमः पावकद्युतिः ।।१९।।

गुरुमण्डलरूपस्थो गुरुमण्डलकारणः। अचरस्तारकस्तारो वस्वन्योऽनन्त विग्रहः ।।२०।।

तिथि–मण्डल–रूपश्च वृद्धि–क्षयविवर्जितः। द्वीप्यः स्रोतस्य ईशानो धुर्यो गव्ययुतो व्ययः ।२१।।

प्रथमः प्रथमाकारो द्वितीयः शक्ति संयुतः। गुणत्रय–तृतीयोऽसौ युगरूपश्चतुर्थकः ।।२२।।

पूर्वजः परजो ज्येष्ठः कनिष्ठो विश्वलोचनः। पञ्चभूतात्मा साक्षीशो ऋतुः षड्गुणभावनः ।।२३।।

अप्रगल्भो मध्यमो व्योमजघन्योऽजघन्यः शुभः। सप्तधातुस्वरूपश्च अष्टमः सिद्ध सिद्धिदः ।।२४।।

प्रतिसूर्योऽनन्तरूपः सौम्यो याम्यः सुराश्रयः। नवनाद नवम्यस्थो दशदिग्रूपधारकः ।।२५।।

रूद्र एकादशाकारो द्वादशादित्य दीपनः। वन्यो वसान्यः पूतात्मा श्रवः कक्षः प्रतिश्रवाः ।।२६।।

व्यञ्जनो व्यञ्जनातीतो विसर्गः स्वरभूषणः। आशुषेणो महा–सेनो महा–वीरो महा–रथः ।।२७।।

अनन्तो अव्ययो आद्यौ आदिशक्ति–वरप्रदः। श्रुतिसेनः श्रुतः साक्षी कवची वशकृद्वशी ।।२८।।

आनन्दश्चाद्यसंस्थान आद्याकारणलक्षणः। आहनन्योऽनन्यनाथो दुंदुभ्योनिष्ट नाशकः ।।२९।।

कर्ता कारयिता कार्यः कार्यकारण भावगः। धृष्ण–प्रमश ईड्यात्मा वदान्यो वेदसम्मतः ।।३०।।

कलानाथः कलातीतः काव्य–नाटक–बोधकः। तीक्ष्णेषुपाणिः प्रहितः स्वायुधः शस्त्रविक्रमः ।।३१।।

कालहन्ता कालसाध्यः कालचक्र प्रवर्तकः। सुधन्वा सुप्रसन्नात्मा विश्व वत्कः सदागतिः ।।३२।।

कालाग्निरूद्र–सन्दीप्तः कालान्तक भयंकरः। खड्गीशः खड्गनाशश्च खड्गशक्तिः परायणः ।।३३।।

गर्वघ्नः शत्रुहन्ता गमागमविवर्जितः। यज्ञकर्म फलाध्यक्षो यज्ञमूर्तिरनातुरः ।।३४।।

धनस्वामी धनानन्दो धनधारा प्रवर्तकः। धनकर्ता धनत्राता धनबीज समृद्धिदः ।।३५।।

लोप्यो लुप्यः पर्णशद्यः पर्ण पूर्णः पुरातनः। उकार सन्धि–स्वाध्यायो वेदवर्णनसांगकः ।।३६।।

भूतोभूतपतिर्भूपो भूधरो भूधरायुधः। छन्दः सारः छन्दकर्ता छन्दास्यन्वयधारकः ।।३७।।

भूतसंगो भूतमूर्ति भूतेहा भूतिभूषणः। छत्रसिंहासनाधीशो भक्तछत्रसमृद्धिमान् ।।३८।।

मदनो मादको माद्यो मधुहा मधुरप्रियः। मधुर्मधुकरः शूरो मधुरो मदनान्तकः ।।३६।।

जपो जपप्रियो जप्यो जपसिद्धि प्रदायकः। जपसंख्यो जपाकारः सर्वमन्त्रजपप्रियः ।।४०।।

वृषरूपोधरो देवो वृषवृद्धि विवर्धकः। यमशासनकर्ता च यमपूज्यो यमाधिपः ।।४१।।

निरञ्जनो निराकारो निर्लिप्तो निरूपाधिकः। टंकायुधः शिवप्रीतष्टंकारो लांगलायुधः ।।४२।।

निष्प्रपञ्चो निराधारो निरीहो निरूपद्रवः। सपर्याप्रीतिडामर्य स्तम्भडामरस्थापकः ।।४३।।

सत्वः सत्वगुणोपेतः सत्ववित्सत्ववित्प्रियः। सदासेव्योग्ररूपाय पक्ष्यविक्षिप्त भूभृते ।।४४।।

धनदो धननाथश्च धनधान्य प्रदायकः। अष्टपादाय रूद्राय नमः शरभ मूर्तये ।।४५।।

नादो नाद प्रियो नाम्यो नाद ब्रह्माण्ड नायकः। ॐ नमो रूद्राय–रौद्राय महोग्रासाय जिष्टमवे ।।४६।।

नाद–ज्ञानरतो नित्यो नादान्त–पद–दायकः। पलरूपः पलातीतः पलाक्षर – लक्षणः ।।४७।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वभूतान्यः श्रुतिहा श्रुतिभूषणः। रूद्राक्षमालाभरणो रूद्राक्ष प्रिय वत्सलः ।।४८।।

रूद्राक्षवत्सो रूद्राक्षरूपो रूद्राक्षभक्षकः। फलदः फलदाता च फलकर्ता फलप्रियः ।।४६।।

फलाश्रयः फलातीतः फलमुक्तो निरञ्जनः। बलानन्दो बलग्रामो बलीशो बलनायकः ।।५०।।

ॐ खे खां घ्रां ह्रीं वीरभद्रः सम्राट्–दक्ष–मखान्तकः। भविष्यज्ञो भायत्राता भयकर्ता भयरिहा ।।५१।।

विघ्नेश्वरो विघ्नहर्ता गुरूदेवः शिरोमणिः। भावनारूपध्यानस्थो भावार्थ फलदायकः ।।५२।।

आं श्रां ह्रां कल्पित–कल्पस्थः कल्पना पूरणालयः। भुजंग–विलसत्कण्ठो भुजंगाभरणप्रियः ।।५३।।

ॐ ह्रीं ह्रूं मोहनोत्कर्ता छन्दः मानस तोषकः। मानातीतः स्वयं मान्यो भक्तमानन्द संश्रयः ।।५४।।

मृगेन्द्र चर्म–वसनो नारसिंह–निपातनः। रकार अग्निबीजस्थो अपमृत्यु विनाशकः ।।५५।।

ॐ फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें हूं मृत्युहा दुष्टेष्टो मृत्यूपूजितः। व्यक्तो व्यक्ततमो व्यक्तो रतिलावण्य–सुन्दरः ।।५६।।

रतिनाथो रतिप्रीतो निधनेशो धनाधिपः। रमाप्रियकरो रम्यो लिंगात्मा लिंगविग्रहः ।।५७।।

ॐ क्ष्रों क्ष्रों क्ष्रों क्ष्रों ग्रहाकारो रत्नविक्रय विग्रहः। ग्रहकृद् ग्रहभुग्ग्राही ग्रहविग्रहलक्षणः ।।५८।।

ॐ नमः पक्षिराजाय दावाग्निरूप रूपकः। घोरपातक नाशय सूर्यमण्डल सुप्रभः ।।५६।।

पवनः पावको वासामो महा–कालो महा–पहः। वर्द्धमानो वृद्धिरूपो वृद्धभक्ति प्रियोत्तमः ।।६०।।

ॐ हूं हूं हूं सर्वगः सर्वः सर्वजित्सर्वनायकः। जगदेकः प्रभुः स्वामी जगद्वंद्यो जगन्मयः ।।६१।।

सर्वान्तरः सर्वव्यापी सर्वकर्म प्रवर्तकः। जगदानन्ददो जन्म–जरा–मरण–वर्जितः ।।६२।।

सर्वार्थसाधकः साध्यः सिद्धि–साधक–साधकः। खट्वांगी नीतिमान्सत्यो देवतात्मात्मसम्भवः ।।६३।।

हविर्भोक्ताः प्रीतोहव्य वाहव्यकृन्नमः। कपालमालाभरणः कपाली विष्णु वल्लभः ।।६४।।

ॐ ह्रीं अप्रवेश रोगाय स्थूलास्थूल विशारदः। कलाधीशस्त्रिकालज्ञो दुष्टविग्रह कारकः ।।६५।।

ॐ डुं डुं डुं डुं नटवरो महा–नाट्यविशारदः। क्षमाकरः क्षमानाथः क्षमापूरित लोचनः ।।६६।।

वृषांको वृषभाधीशः क्षमासाधन साधकः। क्षमाचिन्तन प्रतिस्थो वृषात्मा वृषभध्वजः ।।६७।।

ॐ क्रों क्रों क्रों क्रों महा–कायो महा–वक्षो महा–भुजः। मूलाधार निवासश्च गणेशः सिद्धिदायकः ।।६८।।

महा–स्कन्धो महा–ग्रीवो महद्वक्त्रो महच्छिरः। महादरो महानुष्ठो महा–दंष्ट्रो महा–हनुः ।।६६।।

सुंदरभ्रूः सुनयनः षट्चक्रो वर्णलक्षणः। मणिपूरे महा–विष्णुः सुललाटः सुकन्धरः ।।७०।।

सत्यवाक्यो धर्मवेत्ता प्रजासृजन–कारणः। स्वाधिष्टाने रूद्ररूपः सत्यज्ञः सत्यविक्रमः ।।७१।।

ॐ ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं महा–देवो द्रव्यशक्ति–समाहितः। कृतज्ञः कृतकृत्यात्मा कृतकृत्यः कृतागमः ।।७२।।

ॐ हं हं हं हं गुरूरूपः सोऽहं मन्त्रार्थ मन्त्रगः। व्रतकृद् व्रतविच्छ्रेष्ठो व्रतविद्वान्महा–व्रती ।।७३।।

सहस्रारे–सहस्राक्षो व्रताधारे व्रतेश्वरः। व्रतप्रियो व्रताकारश्चित्तनिर्वाण दर्शकः ।।७४।।

ॐ ह्रीं हूं क्लीं श्रीं क्लीं ह्रीं फट् स्वाहा "पादएकनून"। अतिरागी वीतरागः कलान्शोऽनाहतध्वनिः ।।७५।।

मणिपूरक यन्त्रस्थो रागहेतुर्विरागवित्। रागघ्नो रागशमनो लम्बिकाम्योभिषिञ्चितः ।।७६।।

सहस्रदलगर्भस्थश्चन्द्रिकाद्रवसंयुतः। अन्तर्निष्ठो महा–बुद्धिः प्रदाता नीतिवित्प्रियः ।।७७।।

नीतिकृन्नीतिविन्नीरन्तर्यागः स्वयं सुखीन। विनीतविछक्ति नीतिस्वरूपो नीतिसंश्रयः ।।७८।।

स्वभावो यन्त्रसंचारस्तन्तुरूपोऽमलच्छविः। क्षेत्रकर्मप्रवीणश्च क्षेत्रकीर्तनवर्धनः ।।७६।।

क्रोधजित्क्रोधनः क्रोधीजनवित्क्रोधरूपधृक्। विश्वरूपो विश्वकर्ता चैतन्यो यन्त्रचालकः ।।८०।।

मुनिध्येयो मुनित्राता शिवधर्मोधुरन्धरः। धर्मज्ञो धर्मसम्बन्धो ध्वान्तदो ध्वस्त संशयः ।।८१।।

इच्छा–ज्ञान–क्रियातीतः प्रभवः पार्वतीपतिः। हं हं हं हं लतारूपः कल्पनावाञ्छितप्रदः ।।८२।।

कल्पवृक्षः कल्पनस्थः पुण्यश्लोक प्रयोजकः। प्रदीपो–निर्मलः प्रौढ़ः परमः परमागमः।।८३।।

ॐ जूं जूं जूं सर्वसंक्षोभः सर्वसंहार कारकः। क्रोधदः क्रोधहा क्रोधी जनहा क्रोधकारणः।।८४।।

गुणवान्गुण विस्रस्तः सत्वविद्यावरोधकः। गुणाधारो गुणाकारः सत्वकल्याणदेशिकः।।८५।।

सत्वरः सत्य–सद्भावः सत्य–विज्ञान–लोचनः। वीर्यवान्वीर्यच्छ्रेष्ठो वीर्यविद्वीर्य संश्रयः।।८६।।

"ॐ हां हीं हूं क्लीं श्रीं ब्लूं क्रां आं हीं क्रों हूं फट् स्वाहा"

वीर्याकारो वीर्यकरः छिन्नमूलो महा–जयः। अविछिन्न–प्रभावश्री वीर्यहा वीर्यवर्द्धकः।।८७।।

कालवित्कालकृत्कालो बलप्रमथनो बली। छिन्नपापः छिन्नपाशो विछिन्नभययातनः।।८८।।

मनोन्मनो मनोरूपो विछिन्नभयनाशनः। विछिन्नसंग संकल्पो बलप्रमथनो बलः।।८६।।

विद्या प्रदाता विद्येशः शुद्धबोधः सदोदितः। शुद्धबोधो विशुद्धात्मा विद्यामात्रैक संशयः।।६०।।

शुद्ध सत्व विशुद्धान्तो विद्या वेद विशारदः। गुणाधारो गुणाकारः सत्व–कल्याणदेशिकाः।।६१।।

सवरः सत्व–सद्भावः सत्व–विज्ञान–लोचनः। वीर्यवान्वीर्यविच्छ्रेष्ठः सत्व–विद्यावबोधकः।।६२।।

अविनाशी समासीनो विशुद्धज्ञानगोचरः। ॐ हीं श्रीं ऐं सौः शिवं कुरू कुरू स्वाहा।।६३।।

संसार–यन्त्र–वाहाय महा–यन्त्रप्रवर्तिने। नमः श्री व्योम–सूर्याय मूर्ति वैचित्र्य हेतवे।।६४।।

जगज्जीवो जगत्प्राणो जगदात्मा जगद्गुरूः। आनन्दरूप–नित्यस्थः प्रकाशानन्द रूपकः।।६५।।

योग–ज्ञान महा–राजयोग ज्ञानमयः शिवः। अखण्डानन्ददाता च पूर्णानन्द स्वरूपवान्।।६६।।

वरदाय–विकाराय सर्वकारण हेतवे। कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।।९७।।
अघोरायाग्निनेत्राय दण्डिने घोररूपिणे। भिषग्गण्याय चण्डाय अकुलीशाय शम्भवे।।९८।।
ऊँ हुं क्षूं रूं क्लीं शिवाय नमः। घण्टारवः सिद्धघण्टो गजघण्टो ध्वनिप्रियः।।९९।।
गगनाख्यो गजावासो गरलांशो गणेश्वरः। सर्वपक्षि–मृगाकारः सर्वपक्षिमृगाधिपः।।१००।।
चित्रो विचित्रसंकल्पो विचित्रो विषदोदयः। निर्भवो भवनाश्च निर्विकल्पो विकल्पकृत्।।१०१।।
कक्षवित्फलकः कर्त्ता कोविदः कामशासनः। निन्दा–द्वेषातीत–कर्त्ता निन्दिद्वेषापहारकः।।१०२।।
कालाग्निरुद्रः सवेशः शमरूपः शरभेश्वरः। प्रलयानलकृद्धव्यः प्रलयानलशासनः।।१०३।।
त्र्यम्बकोऽरिपुषड्वर्गो नाशक्रोधनदः प्रियः। अक्षोभ्यः क्षोभरहितः क्षोभदः क्षोभनाशकः।।१०४।।
ऊँ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः मणि–मन्त्रौषधादीनां शक्तिरूपाय शम्भवे। अप्रमेयाय देवाय वषट् स्वाहा च स्वधात्मने।।१०५।।
धौर्मूधा–दशदिग्बाहूश्चन्द्र–सूर्याग्नि लोचनः। पातालांघ्रिखिलाकुक्षिः सुमुखो गगनोदरः।।१०६।।
कालनादः कालबिन्दुः कालज्योतिः सनातनः। अलौकिक कलोदारः कैवल्य फलदायकः।।१०७।।
कौलः कुलेशः कुलजः कविः कर्पूरभास्वरः। कामेश्वरः कृपासिन्धुः कुशलः कूलभूषणः।।१०८।।
कुन्देंदु–शंख धवलो भस्मोद्धूलित विग्रहः। कौपीनवसनः कान्तः केवलः कल्पपादपः।।१०९।।
भस्माभरणहृष्टात्मा तुष्टः पुष्टोऽरिषूदनः। स्थाणुर्दिगम्बरो भर्गो भगनेत्रभृदुज्जवलः।।११०।।
त्रि–काग्निकालः कालाग्निरद्वितीयो महाशयः। सामप्रियः सामकर्ता सामगः सामगप्रियः।।१११।।
धीरो दान्तो महा–धीरो धैर्यदो धैर्यवर्द्धकः। लावण्यराशिः सर्वज्ञः सुबुद्धि बुद्धिमद्वरः।।११२।।
तारणाश्रयरूपस्थस्तारणाश्रयदायकः। तारकस्तारकः स्वामीस्तारणस्तारणप्रियः।।११३।।
एकतारो द्वितारश्च तृतीयो मन्त्र–आश्रयः। एकरूपोश्चैकनाथो बहुरूपः स्वरूपवान्।।११४।।
लोकसाक्षी त्रि–लोकेशस्त्रि–गुणातीत मूर्तिमान्। बालस्तरूणरूपस्थो वृद्धरूपप्रदर्शकः।।११५।।
अवस्थात्रय–रूपस्थ अवस्था–त्रयवर्जितः। वाच्य–वाचक–भावार्थो वाक्यार्थ प्रियमानसः।।११६।।
ऊँ सौः सौः सौः वाक्यप्रमाणस्थो महा–वाक्यार्थ बोधकः। परमाणु प्रमाणस्थः कोटिब्रह्माण्डनायकः।।११७।।
ऊँ हं हं हं हं ह्रीं वामदेवाय नमः। कक्षवित्पुलकः कर्ता कोविदः कामशासनः।।११८।।
कपर्दी केसरी कालः कल्पनारहिताकृतिः। खं खेलः खेचरः ख्यातः खन्यवादी खमुद्यतः।।११९।।

खाम्बरः खण्डपरशुः खंचक्षुः खड्गलोचनः। अखण्ड ब्रह्मखण्ड श्रीरखण्ड ज्योतिख्ययः।।१२०।।

षट्चक्रोस्योझान स्रष्टा षट्ज्योतिः षट्भिरर्चित। गरिष्ठो गोपतिर्गोप्ता गम्भीरो ब्रह्मगोलकः।।१२१।।

गोवर्धन गतोगुर्वी गर्वातीतो गुणाकरः। गंगाधरोंऽगसंगम्यो गकारो गहरागमः।।१२२।।

कर्पूरगौरो गौरीशौ गौरीगुरू गुहाश्रयः। धूर्जटिः पिंगलजटो जटामण्डलमण्डितः।।१२३।।

मनोजवो जीवहेतुरन्धकासुरसूदनः। लोकबन्धुः कलाधारः पाण्डुरः प्रमथाधिपः।।१२४।।

अव्यक्तलक्षणो योगी योगीशो योगपुंगवः। भूतावासो जनावासः सुरावासः सुमण्डलः।।१२५।।

भववैद्यो योगिवैद्यो योगिसिंहहृदासनः। युगावासो युगाधीशो युगकृद्युगमत्कृतः।।१२६।।

किरीटलट भालेन्दु मणिकंकणभूषितः। रत्नांगदांगो रत्नेशो रत्नरञ्जितपादुका।।१२७।।

नवरत्नगुणोपेत किरीटीरत्नकञ्चुकः। नानाविधानेकरत्नलसत्कुण्डलमण्डितः।।१२८।।

दिव्यरत्नगणोत्कीर्ण कण्ठाभरणभूषितः। नवभालेन्दु श्रीर्नासापुटभ्राजित–मौक्तिकः।।१२९।।

रत्नांगुलीय विलसत्करशाखा–नखप्रभः। रत्नभ्राजद्धेमसूत्र लसत्कटितटः पटुः।।१३०।।

वामांगभागविलसत्पार्वती–वीक्षणः–प्रियः। लीलाविलम्बितवपुर्भक्तमान सुमन्दिरः।।१३१।।

मन्द–मन्दार–पुष्पौघ–लसद्वायुनिषेवितः। कस्तूरी विलसद्भालो दिव्य–वेष–विराजितः।।१३२।।

दिव्यं देह प्रभाकूटः सन्दीपदिंगम्बरः। देवासुरगुरूस्तव्यो देवासुर नमस्कृतः।।१३३।।

हस्तराजत्पुण्डरीकः पुण्डरीकनिभेक्षणः। सर्वशास्त्रगुणमयः सर्व–लोकेष्ट–भूषणः।।१३४।।

सर्वेष्टदाता सर्वेष्टस्फुरन्मंगलविग्रहः। अविद्यालेशरहितो नानाविद्यैकसंश्रयः।।१३५।।

मूर्तिभवत्कृपापूरो भक्तेष्टफलपूरकः। सम्पूर्णकामः सौभाग्यनिधिः सौभाग्यदायकः।।१३६।।

हितैषी हितकृत्सौख्यः परार्थैकप्रयोजकः। शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणः।।१३७।।

जिष्णुर्नेता वषट्कारो भ्राजिष्णुर्भोजनं हविः। भोक्ता भोजयिता जेता जितारिर्जितमानसः।।१३८।।

अक्षरः कारणः क्रुद्धः शमदः शारदाप्लवः। आज्ञापकश्च गम्भीरः कविर्दुःस्वप्ननाशनः।।१३९।।

पञ्चब्रह्मसमुत्पत्तिः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः। व्योमकेशो भीमवेषो गौरीपतिरनामयः।।१४०।।

भवाब्धितरणोपायो भगवान्भक्तवत्सलः। वरो वरिष्ठ–तेजिष्ठः प्रियाप्रियवधः सुधीः।।१४१।।

यन्ताऽयविष्ठः क्षोदिष्ठो यविष्ठो यमशासनः। हिरण्यगर्भो हेमांगो हेमरूपो हिरण्यदः।।१४२।।

ब्रह्मज्योतिरनावेश्यश्चामुण्डाजनको रविः। मोक्षार्थीजनकः सेव्यो मोक्षदो मोक्षदायकः।।१४३।।

महा–शमशान–निलयो वेदाश्वोभूरथस्थिरः। मृगव्याधो धर्मधामप्रच्छन्नस्फटिकः प्रभः।।१४४।।

सर्वज्ञः परमार्थात्मा च ब्रह्मानन्दाश्रयो विभुः। शरभेशो महा–देवः परब्रह्म–सदाशिवः।।१४५।।

सुरविः कृतिकर्त्ता च सुरातीतः स्वयं विभुः। स्वर्गतः स्वर्गतिर्दाता नियन्ता नियताश्रयः।।१४६।।

भूमिरूपो भूमिकर्ता भूधरो भूधराश्रयः। भुजनाथो भुजकर्ता भूतसंहारकारकः।।१४७।।

भविष्यज्ञो भवत्राता भवदो भवहारकः। वरदो वरदाता च वरप्रीतो वरप्रदः।।१४८।।

कूटस्थः कूटरूपश्च त्रि–कूटो मन्त्रविग्रहः। मन्त्रार्थो मन्त्रगम्यश्च मन्त्रेशो मन्त्रभागकः।।१४९।।

सिद्धमन्त्रः सिद्धिदाता जपसिद्धिः स्वभावकः। नामतीतो नामरूपो नामरूपगुणाश्रयः।।१५०।।

गुणकर्ता गुणत्राता गुणातीतो गुणारिहा। गुणग्रामो गुणधीशो गुणनिर्गुण कारकः।।१५१।।

अकार–मातृकारूपो अकारातीतभावनः। परमैश्वर्यदाता च परमप्रीतिदायकः।।१५२।।

परमः परमानन्दः परानन्दः परात्परः। वैकुण्ठपीठमध्यस्थो वैकुण्ठो विष्णुविग्रहः।।१५३।।

कैलाशवासी कैलाशः शिवरूपः शिवप्रदः। जटाजूटैर्भूषितांगो भस्म–धूसरभूषितः।।१५४।।

दिग्वाससो दिग्विभागो दिगन्तरनिवासक :। ध्यानकर्ता ध्यानमूर्तिर्धारणाधारणप्रिय : ।।१५५।।

जीवन्मुक्तिपुरीनाथो द्वादशांतस्थितप्रभुः। तत्वस्थस्तत्वरूपस्थस्तत्वातीतोऽति–तत्वतः।।१५६।।

तत्वसाम्यस्तत्वगम्यस्तत्वार्थ सर्वदर्शकः। तत्वासीनस्तत्व मार्गस्तत्वान्तस्तत्व विग्रहः।।१५७।।

दर्शनीयातिगोदृश्योदृश्यातीतोऽति दर्शकः। दर्शनोदर्शनातीतो भावनाकाररूपकृत् ।।१५८।।

मणिपर्वत संस्थानो मणिभूषण भूषितः। मणिप्रीतो मणिश्रेष्ठो मणिस्थो मणिरूपकः।।१५९।।

चिन्तामणिगृहान्तस्थः सर्वचिन्ताविवर्जितः। चिंन्ताक्रान्तो भक्तचिन्तश्चिन्तनाकार–चिन्तकः ।।१६०।।

अचिंत्योचिंत्यरूपश्च निश्चिंत्यो निश्चयात्मकः। निश्चयो निश्चयाधीशो निश्चयात्मक दर्शकः।।१६१।।

त्रि–विक्रमस्त्रिकालज्ञस्त्रिधामा त्रि–पुरान्तकः। ब्रह्मचारी व्रतप्रीतो गृहस्थो गृहवासकः ।।१६२।।

परंधाम परंब्रह्म परमात्मा परात्परः। सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वसाक्षी विलक्षणः ।।१६३।।

मणिद्वीपो द्वीपनाथो द्वीपान्तो द्वीपरक्षणः। सप्तसागरकर्ता च सप्तसागरनायकः ।।१६४।।

महीधरो महीभर्ता महीपालो मनस्विनः। महीव्याप्तो व्यक्तरूपः सुव्यक्तो व्यक्तभावनः।। १६५।।

सुखेषादय सुखपतिः सुगमः सुसमाश्रयः। तापत्रयाग्निसन्तप्त समाह्लादन – चन्द्रमाः।।१६६।।
तारणस्तापसाराध्यस्तनुमध्यस्तमोपहः। परारूपः पराध्येयः परदैवत–दैवतः।।१६७।।
ब्रह्मपूज्यो जगत्पूज्यो भक्तपूज्यो वरप्रदः। अद्वैताद्वैतचित्तश्च द्वैताद्वैतविवर्जितः।।१६८।।
अभेद्यः सर्वभेद्यश्च भेद्यभेदकवेधकः। लाक्षारक्षः सुवर्णाभः प्लवंग प्रियोत्तमः।।१६६।।
शत्रुसंहारकर्ता च अवतारपरो हरः। संविदात्मा संविदेशः संविज्ञान प्रदायकः।।१७०।।
संवित्कर्ता च भक्तश्च संविदानन्दरूपवान्। संशयातीत सर्वार्थः संशयात्मातिदूरगः।।१७१।।
निःसंशयो मनोध्येयः सर्वसंशयहारकः। शैवमन्त्रः शिवप्रीतो दीक्षा शैवस्वभावगः ।।१७२।।
भूपतिः क्ष्माकृतो भूपो भूप–भूपत्वदायकः। रार्वधर्मसमायुक्तः सर्वधर्मविविर्द्धकः।।१७३।।
सर्वशास्ता सर्ववेत्ता सर्वभोक्ता स्वतृप्तिमान्। भक्तिभावावतारश्च भुक्ति–मुक्ति–प्रदायकः।।१७४।।
भक्त–सिद्धार्थ–सिद्धिश्च सिद्धि–बुद्धि–फलप्रदः। वाराणसी–वासदाता वाराणसी–वरप्रदः ।।१७५।।
वाराणसीनाथरूपो गंगामस्तकधारकः। पर्वताश्रयकर्ता च लिंग–पर्वत–त्र्यम्बकः ।।१७६।।
लिंग–देही लिंगपतिलिंगपूज्योऽति दुर्लभः। रूद्रप्रियो रूद्रसेव्य उग्ररूपविराट्कृतः।।१७७।।
मालारूद्राक्ष भूषांगो जपरूद्राक्षतोषकः। सत्यसिद्धः सत्यदाता सत्यकर्ता सदाश्रयः।।१७८।।
सत्यसाक्षी सत्यलक्ष्मी लक्ष्म्यातीतमनोहरः। जनको जगदाधीशो जनिता जननिश्चयः।।१७६।।
सृष्टिस्थितः सृष्टिरूपः स्थितिरूपः स्थितिप्रदः। संहाररूपः कालाग्निः कालसंहारकारकः ।।१८०।।
सप्तपाताल–पादस्थो महदाकाश–शीर्षवान्। अमृतो अमृताकारो अमृतामृतरूपकः ।।१८१।।
अमृताकारचित्तस्थो अमृतोद्भवकारणः। अमृताकारनित्यस्थो अमृतद्रवरूपिणः।।१८२।।
अमृतान्शोऽमृताधीशोऽमृताप्रीतिविवर्द्धनः। अनिर्देश्यो अनिर्वांगो अनंगोनंगाश्रयः।।१८३।।
श्रेयदः श्रेयरूपश्च श्रेयातीतः फलोत्तमः। सारांशः सारसाक्षी च सारासार–विचारणः ।।१८४।।
धारणातीतभावस्थो धारणान्वयगोचरः। गोचरो गोचरातीतो अतीतप्रियगोचरः।।१८५।।
प्रिय–प्रियः प्रियः स्वार्थी स्वार्थः अर्थफलप्रदः। अर्थार्थसाक्षी लक्ष्यांशोनुक्ष्य लक्षणविग्रहः।।१८६।।
जगदीशो जगत्त्राता जगन्मय जगद्गुरूः। गुरूमूर्तिः स्व–संवेद्यावेद्यो वेदकरूपकः।।१८७।।
रूपातीतो रूपकर्ता सर्वरूपार्थदायकः। अर्थदोअर्थमानश्च अर्थार्थी अर्थदायकः।।१८८।।

विभवो वैभवः श्रेष्ठःसर्ववैभवदायकः। चतुः षष्टि–कला–सूत्र चतुः षष्टिकलामयः।।१८६।।

पुराणश्रवणाकारः पुराणपुरुषोत्तमः। पुरातनः पुराख्यातः पूर्वजो पूर्व–पूर्वकः।।१६०।।

मन्त्र–तन्त्रार्थसर्वज्ञः सर्वमन्त्र प्रकाशकः। तन्त्रवेत्ता–तन्त्रकर्ता तन्त्रातन्त्रनिवासकः।।१६१।।

तन्त्रगम्यस्तन्त्रमान्यस्तन्त्र–यन्त्र फलप्रदः। सर्वतन्त्रार्थतत्वज्ञस्तन्त्रराजः स्वतन्त्रकः।।१६२।।

ब्रह्माण्डकोटिकर्ता च ब्रह्माण्डोदरपूरकः। ब्रह्माण्डदेशदाता च ब्रह्मज्ञान परायणः।।१६३।।

स्वयंभूः शम्भुरूपश्च हंसविग्रह निस्पृहः। श्वास–निःश्वास उच्छ्वासः–सर्वसंशयतारकः।।१६४।।

सोऽहं रूपः स्वभावश्च सोऽहं रूपप्रदर्शकः। सोऽहमस्मीति नित्यस्थः सोऽहं–हंसः–स्वरूपवान्।।१६५।।

हंसोहंसः स्वरूपश्च हंसविग्रह–निस्पृहः। श्वासो–निश्वास–विश्वासः पक्षिराजो निरञ्जनः।।१६६।।

फल-श्रुति

अष्टाधिकसहस्रन्तु नाम साहस्रमुत्तमम्। कीर्तयन्ति सदातेषां वाञ्छितार्थ फलं लभेत्।।१६७।।

एककालं–द्वि–कालं वा त्रि–कालं श्रद्धयान्वितः। शत्रवस्तस्य नश्यन्ति क्षमा रूपो भविष्यति।। १६८।।

नित्य–संकीर्तना–शक्तः कीर्तयेत्पुण्यवासरे। संक्रान्तौ विषुवे चैव पौर्णमास्यां विशेषतः।।१६६।।

यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां–कुलनाशनम्। भोग–मोक्षप्रदं श्रेष्ठं भुक्ति–मुक्ति–फलप्रदम्।।२००।।

सर्वपापप्रशमनं सर्वापस्मारनाशनम्। राजचौरादि–मृत्यूनां–नाशनं जयवर्द्धनम्।।२०१।।

उदङ्.मुखः सहस्रं तु रक्षणाय जपेन्निशि। नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमादिङ्.मुखः ।।२०२।।

मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्। रोगनिग्रहणेश्चाष्ट रात्रेग्नेयमुखो जपेत्।।२०३।।

पठन्ता श्रृण्वतां चैव सर्वदुःख विनाशकृत्। धन्यं यशस्यमायुष्यभाग्यं पुण्यवर्द्धनम्।।२०४।।

योगसिद्धिप्रदं सम्यक् शिवज्ञान प्रकाशितम्। शिवलोकैक सोपानं वाञ्छितार्थैकसाधनम्।।२०५।।

विष–ग्रह–क्षयकरं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम्। सदादुःख प्रशमनं सर्वोत्पातनिवारणम्।।२०६।।

यावन्न दृश्यते देवि शरभो भयनाशकः। तावन्न दृश्यते जाप्यं वृहदारण्यकोब्रवीत्।। २०७।।

सहस्रनामप्राप्तेरिमस्नैकैकोच्चारणात्पृथक। स्नातोभवति जाह्नव्यां दिव्य–दृष्टि स्थिरोभुवि।। २०८।।

सहस्रनामसद्विद्यां शिवस्य परमात्मनः। यो निष्ठास्यति कलपान्ते शिवकल्पो भविष्यति।।२०६।।

हिताय सर्वलोकानां शरभेश्वर भाषितम्। स ब्रह्मा स हरिः सोऽर्कः स शक्रो वरूणो यमः।।२१०।।

धनाध्यक्षः स भगवान् सचैकः सकलं जगत्। सुखाराध्यो महा–देवस्तपसा येन तोषितः।।२११।।

पौर्णमास्यां रविवारे त्रिःसप्तवार पाठतः। स्वप्नेदर्शनमाप्नोति कार्यभागेऽपिदृश्यते।।२१२।।

रविवारे दशावृती रोगनाशो भविष्यति। सर्वदा सर्वकार्यार्थी जपेत्सिद्धयति सर्वदा।।२१३।।

धनार्थी धनमाप्नोति यशोर्थी यशमप्नुयात्। निष्कामः कीर्तयेनित्यं ब्रह्मज्ञानमयोभवेत्।।२१४।।

बिल्वैर्वा तुलसीपुष्पैश्चम्पकैर्वकुलादिभिः। कल्हारैर्जातिकुसुमैरंबुजैर्वातिलाक्षतैः।।२१५।।

एभिर्नाम सहस्रैस्तु अर्चयेद्भक्तिमान्नरः। कुलं तारयते तेषां कल्पकोटिशतैरपि।।२१६।।

।।श्रीशरभ–सहस्रनाम–स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

काम्य-प्रयोग

ठकारं पूर्वमालिख्य तद्बाह्ये वर्तुलं लिखेत्। तद्बाह्ये चतुरस्रं तु तद्बाह्येऽष्टदलं तथा।।१।।

तद्बाह्ये षोडशदलं तद्बाह्ये वृतमालिखेत्। तद्बाह्ये पञ्चकोणं च ठकारे साध्यनाम च ।।२।।

वर्त्तुले मूलमालिख्य स्वरान् षोडश पार्वती। वृत्तेचाभिमतं सार्द्धं वाणस्य पञ्चकोणके ।।३।।

"द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः" एवमालिख्य यन्त्र तु तालपत्रे प्रयत्नतः। स्नुहिक्षीरं जलेक्षिप्त्वा यन्त्र तत्रैव निक्षिपेत्।।४।।

चुल्लोपरि चिरं स्थाप्य क्वाथै सर्वत्र शत्रवः । गृहं त्यत्व त्वा पलायन्ते प्रसादात्सालुवस्य च ।।५।।

साधकै सर्वसिद्धिः स्याद्रिपुर्देशान्तरं व्रजेत् । शालुवं पक्षिराजानं यो ध्यायेल्लोक पूजितम् ।।६।।

शत्रुणां सर्व संघातानोत्पद्यन्ते कदाचन। चन्दनं च सकर्पूरं कस्तूरी कुङ्.कुमान्वितम् ।।७।।

वामावर्तं लिखेन्मन्त्रं शरभं चिन्तयेन्नरः। ललाटे तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।।८।।

देवांश्चापि वशीकुर्यात् किं पुनर्मानवादयः। गोरोचनं च गोक्षीरं गोघृतं गोमयं तथा ।।९।।

शन्यार्कांगारवारे तु मूलनैव तु होमयेत् । देवासुर मनुष्याणां स्त्रीणांपुसां वशकृद्भवेत् ।।१०।।

अजमाहिषकं चैव नवनीतं तथा नरः। हुतेन मूलात्यंचाहे साध्यनाम पूरः सरम् ।।११।।

साध्यं वश्योभवत्सत्यं क्षिप्रमेवन् संशयः। अजामानुष काकानां रूधिरं प्रेतवाससा ।।१२।।

संवेष्ट्रा पुत्तलीं चैव साध्यनाम विनिर्मितम् । शत्रुप्राणान् प्रतिष्ठाप्य प्रेत केशैश्च वेष्टयेत् ।।१३।।

शरभेनाभिमन्त्रियत्वा निखनेत् प्रेतभूमिषु। निखनेत्तत्र प्रेतस्य हृदये शिरसेश्चलात् ।।१४।।
केशान्गृहीत्वा संवेष्ट्रा पुत्तलीं प्राणपूर्वकम् । शवदाहस्थले चैव निक्षिपेदाशु चालयेत् ।।१५।।
शालुवं पक्षिराजानं यो ध्यायेच्च दिने-दिने। जपेद् दश सहस्रन्तु शतमष्टोत्तरं तु वा ।।१६।।
कृष्णाष्टमी समारभ्य यावत् कृष्ण चतुर्दशी। मासान्त समय प्राप्ते वैरिवंश क्षयो भवेत् ।।१७।।
कारस्करं तु भल्लातं तैलेनाष्टशतं हुनेत्। मासान्ते शत्रवस्तस्य पालयन्ते न संशयः ।।१८।।
शमी-दर्भादि-पयसा चाष्टोत्तरशतं हुनेत्। दिनत्रयं महेशानि सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।।१९।।
विभीतकतरोरष्ट-प्रादेश-परिमाणकम्। काष्ठमादाय यत्नेत शालुवं च स्मरन्निशि ।।२०।।
यान्नाम्ना कटुतैलाक्तं शतमष्टोत्तरं जपेत् । मासान्ते मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम् ।।२१।।
अपामार्गस्य समिधौ पायसं सघृतं हुनेत् । रात्रौ गभ्रख्ति मासान्तेन्पश्यन्ति च ।।२२।।
यदातिनः पञ्चस्नुहि समिद्भिर्या घाम्यांस्यात्सर्षपैस्तिलै । महा-निशार्द्धे साहस्रं जुहुयाद् दिवसेन हि।।२३।।
पञ्चाहे सा प्रणश्यति सगोत्राः शत्रवोभृशम्। शालुवं पक्षिराजानं पूजयेत् साधकोत्तमः।।२४।।
साष्टविंशति संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयेत्सुधीः। शुक्लप्रतिपदारभ्य पौर्णिमायां तु नित्यशः ।।२५।।
यो जपेदष्ट साहस्रं मुच्यते सर्वपातकैः। शरभ शालुवं ध्यात्वा एतद् विधिवदाचरेत् ।।२६।।
पुत्तलीं च विधायाथ कुलालचक्र मृण्मयीम्। वायुं सम्याग्विधानेन कृत्वा स्थाप्य समाहितः।।२७।।
स्नुहि क्षीरेण संप्लुष्य स्पृष्टस्तदयुतं जपेत्। उन्मत्तमूले निखनेदपस्मारी भवेत्तदा ।।२८।।
शालुवं शिवरूपं च ध्यात्वा सम्यक् समाहितः। निम्बमूलेन कृत्वा तु पुत्तलीं च यथाविधिम् ।।२९।।
पुत्तल्यां वायुमारोप्य स्पृष्टवाताऽयुतं जपेत्। श्मशाने निखनेदेवी पुत्तलीं शत्रु चालयेत्।।३०।।
उन्मत्तमूले पुत्तल्यां वायुमारोप्य साधकः। स्पृशन्निघ्नन्नयुतं मन्त्री ध्यात्वा शत्रून्तंद्रित : ।।३१।।
निक्षिपेछुल्क देशे तु शत्रुणां चालनं भवेत्। शन्यर्कांगारवारे तु जपेदयुत संख्यया।।३२।।
त्रि-दिनान्ते रिपून्बद्धवा चालयेदाशु साधकः। दूर्वांकुरैर्घृताक्तैश्च गोमयैश्च विशेषतः ।।३३।।
तिला-लाजास्सर्षपाश्च मिश्रीकृत्य हुनेत्तदा । त्रि-दिनान्ते शत्रुसंघाः पलायन्ते न संशयः ।।३४ ।।
पिष्टेन पुत्तलीं कृत्वा मूलेनैव तु पूजयेत् । मांसयुक्तं तु नैवेद्यं ताम्बूलं तु निवेदयेत् ।।३५ ।।
लाक्षरसेन संयुक्तं बिम्बस्य च शिरोगले । साध्यनाम च संयुक्तं लिखित्वा चैव पुत्तलीम् ।।३६ ।।

सदापचेत्ततो वहन्वौ समिद्भिर्पिचु मन्दकै। गणिकायांगणे होमं कृत्वा च विधानतः ।। ३७ ।।
जपादयुतमात्रेण पलायन्ते न संशयः । अर्कमूलं समादाय पुत्तलीं च यथा विधि।। ३८।।
तस्य प्राणस्य पवनं विदधीत यथोदितम्। तस्याश्च हृदिदेशे तु माया बीजं समालिखेत्।। ३६।।
तस्या शिरसि चालिख्य वह्नि बीजं सबिन्दुकम्। पादयोश्च तथाऽऽलिख्य पृथ्वी बीजं च भैरवम्।।४०।।
उभयो स्कन्धयोश्चैव वायुः बीजं च भार्गवम् (वाग्भवम्)। भार्गवं वदने पृष्ठे श्री बीजं भुवनेश्वरीम् ।। ४१ ।।
पूजां च विधिवत्कृत्वा नैवेद्यं तु निवेदयेत्। निखनेदर्क मूले च पलायन्ते न संशयः ।।४२।।
ततःशत्रु शरीरं च स्फोटकं पक्षिशालुवः। सप्ताहाच्च यम स्थाने सर्वशत्रवः गच्छेन्न संशयः।।४३।।
केवलं जप मात्रेण क्षयन्ते सर्वशत्रवः । चतुरांगुली विस्तारं दशांगुली समायुतम् ।। ४४ ।।
श्मशान मृत्तिकायां तु पुत्तलीं कारयेद्बुधः। श्मशानाग्नि समादाय उन्मत्त रस संयुतम् ।। ४५।
पुत्तली–हृदि खेंकारं पार्श्वे चिन्तामणि लिखेत्। मस्तके कामराजं च हंस बीजं च मुर्धनि ।।४६ ।।
स्नुहिक्षीराभिषेकं च विधिवत्प्राण–पूर्वकम्। स्नुहिवृक्षस्याधो भागे खनेत्प्रादेश मात्रकम् ।।४७।।
शुक्ल प्रतिपदारभ्य अष्टम्यन्तं जपेत्सुधीः। यो द्विजः सततं ध्यायेत् पलायन्ते तस्य शत्रवः ।।४८।।
खादिरं पुत्तलीं कृत्वा पवनं च यथा विधि। तस्य स्पृष्टवा चायुतं मन्त्रं यो जपेन्निशि साधकः ।।४६।।
राज–चौर–भयान्मुक्तः सर्वत्र स्याद्धि पूजितः। पुत्तलीं खादिर मूले निक्षिपेद् यस्य नामतः।।५०।।
पुत्र–मित्र कलत्रादिन्त्यक्त्वा देशान्तरं व्रजेत्। पराजिताः पलायन्ते शत्रवो नात्र संशयः ।।५१।।
शालुवं पक्षिराजनं शरभं शिव रूपिणम्। राजवृक्षस्य पुत्तल्यां भूर्बीजं स्मरवह्निना।।५२।।
वाग्भवं वायु बीजं च श्री बीजं भुवनेश्वरीम्। प्रादक्षिण्येन वेष्टव्य पुत्तल्यो परि लेखिता।।५३।।
मूलेन राजवृक्षस्य समिद्धोमो विधीयते। अष्टोत्तर सहस्रं च शतमष्टोत्तर च वै।।५४।।
हुनेच्च विधिवन्मन्त्र चतुष्पथे विधानतः। त्रि–दिनान्ते च विद्वेषं शत्रूणां च परस्परम्।।५५।।
रिपवः संक्षयं यान्ति पलायन्ते न संशयः।

।।इति श्री आकाश–भैरव–कल्पोक्त अरिखण्डे शरभ काम्य–प्रयोग विधिर्नाम चतुश्चत्वारिंशत्पटलः।।

शरभ-षट्प्रयोग

।।श्री पार्वत्युवाच।।

विश्वेश्वर विरूपाक्षः विश्वेश्वर सदाशिव।

महा–काल कृता कोटि–कोटि भेदा पूर्व मनुत्तमम्।।१।।

।।ईश्वरोवाच।।

इदानी श्रोतमिच्छामि शालवं मन्त्र मुत्तमम्। यस्यानुष्ठान मात्रेण प्रयोगादिषु सर्वशः।।२।।

वक्षे लोक हितार्थाय सर्वलोक हितेरतः। क्षिप्र प्रयोगादि मन्त्रं सर्वशत्रु विनाशनम्।।३।।

सर्वशत्रु प्रसमनं सर्वलोक वशकरम्। भ्रामरी सर्वदुःरवघ्नं भ्रष्ट राज्य मनुत्तमम्।।४।।

भयंकरं भयहरं भासमान भवौषधम्। सप्तावृत्याय संयुक्तं सद्गुरोर्मुखनि सृतम्।।५।।

दीक्षा मार्गेण गृहणीयाद्गुरू यत्नेन् तोषितं तथा। स्त्रच महा–मन्त्रं नित्यं च तदनन्तरम्।।६।।

वीरभद्रालये वाथ दुर्गस्थानेषु वा पुनः। शिवालये महा–नद्यां स्वगृहे कालिका गृहे।।७।।

वृन्दावने बिल्वमूले निशगोष्टे विशेषतः। भू शुद्धिं विधिवत्कृत्वा भूत शुद्धिमथाचरेत्।।८।।

मातृका द्वितयं मन्त्र मन्त्रास्यास्य विधानतः। मूल मन्त्र महं वक्षे शालुवस्य विशेषतः।।६।।

ॐ कार पूर्वकं चैव खें खें वर्णद्वयं तथा। घ्रां घ्रां घ्रीं घ्रीं समायुक्तं हुं फट् सर्व समन्वितम्।।१०।।

सर्वशत्रु पदं चैव शरभाय पदं वदेत्। पक्षिराजाय इत्युत्का हुं फट् स्वाहान्तमुच्चरन्।।११।।

मन्त्राय शालवश्चैव पूर्णमिष्ट पदं प्रिये। शालवस्य च मन्त्रस्य छन्दोति जगति स्मृतः।।१२।।

वासुदेवो ऋषि प्रोक्तो देवता पक्षिशालवः। कालाग्नि रूद्र दैवत्य खें बीजं समुदीरितम्।।१३।।

स्वाहा शक्ति च देवेशि मन्त्रास्यास्य विधानतः। पूर्वोक्त नियमाचारैः शालुवस्य विधानतः।।१४।।

अयुतं तु पुरश्चरणं दशांशं होममाचरेत्। सघृतैः पायसैर्वाऽपि शर्करा मिश्रितैः प्रिये।।१५।।

शर्करोदक मिश्रं च तर्पणं तत्र कारयेत्। ब्राह्मणान् भोजये देवि यथोक्तं शत मात्रतः।।१६।।

मन्त्र सिद्धिभवे तस्य प्रयोगं पुनराचरेत्। नैवेद्यं पायसं दत्वा माषान्नं च विशेषतः।।१७।।

समर्पयेत् समन्त्रज्ञ मूल मन्त्रेण पार्वती। ताम्बूलं च समासाद्यं पूजयेत्सर्वकर्मसु।।१८।।

प्रणवं सम्पुटितं एको न चत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः।

।।श्री पार्वत्युवाच।।

देव–देव महा–देव यद हन्तव वघ्त्रभाः।।१६।।

षट्प्रयोग विधिन्नाम वद कारूण्यवारिधे।

।।ईश्वरोवाच।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि प्रयोगं शुलभं प्रिये।।२०।।

शान्ति–पुष्टि तथा वश्याकर्षणं स्तम्भनं तथा। मारणोच्चाटनादीनि षट्प्रयोगं विधानतः।।२१।।

मन्त्रादौ साध्यनामान्तु मन्त्रान्ते पल्लवं तथा। शान्ति कर्माणि सर्वत्र शृणु शान्तिकरं परम्।।२२।।

साध्यनाम पुरा प्रोक्तं तथा विधामितौ। मध्ये पल्लव संयुक्तं मन्त्रैर्नाम प्रशस्तिकम्।।२३।।

ततः पुष्टिकरं प्रोक्तं सर्वमन्त्रेष्वयं विधिः। मन्त्रादौ मन्त्र मध्ये च मन्त्रान्ते पल्लवं तथा।।२४।।

साध्यनाम तथा प्रोक्तं सर्वमन्त्र करं परम्। मन्त्रार्स्यर्द्वं द्व मध्यस्थं नामाक्षर करं तथा।।२५।।

पल्लवं सर्वदा प्रोक्तं वायु बीजेन संयुतम्। आकर्षणन्तु विज्ञेयं सहस्रं जपमाचरेत्।।२६।।

पुटितं मूल मन्त्रेण साध्यनामाक्षरं तथा। एकं च मन्त्रवर्णत्वु साध्यनामाक्षरैः क्रमः।।२७।।

षट्कर्म च ततः प्रोक्तं हुंकारं च कृतं तथा। त्रि–सहस्रं जपित्वातदुच्चाटनमुदीरितम्।।२८।।

मारणो चैव विज्ञेयो त्रि–सम्पुटितमाचरेत्। खें बीजं साध्यनामेदं एकैकं पल्लवं तथा।।२६।।

सहस्रं पल्लवं चैव जपेत् मारण कर्मणि। षट्प्रयोग विधिश्चैव सत्यं शंकर भाषितम्।।३०।।

।।ईश्वरोवाच।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि प्रयोगे नास्ति अजसा। सम्मोहनं तु वक्ष्यामि शृणु पर्वत नन्दिनी।।३१।।

गिरिराज कुमारे च कर्पूरं चैव कस्तूरी। कण्जा मूलेन मथितं तन्मध्ये मन्त्रालिखेत्।।३२।।

भूतशुद्धिं विधायादौ प्राणास्ढाय नमाचरेत्। पूजयेद् रक्त पुष्पेण त्रि–दिनं चैव पार्वति।।३३।।

तं चन्दनं ललाटे तु तिलकाकार ईक्षते। अण्डजः पिण्डजश्चैव सम्मोहयति तत्क्षणात्।।३४।।

भस्म मध्ये लिखेद् यन्त्रं शालुवं शरभेश्वरः। पूर्वोक्तः पुष्पै पूर्वोक्तै। पूजामारम्भते नरः।।३५।।

सप्तरात्रं जपेन्तत्र नित्यं जप सहस्रकः। तद्भस्ममेकी कृत्वा तु सतुर्येधारयेन्नरः।।३६।।

संग्रामे सर्वशत्रूणां पलान्ते ततः क्षणात्। एतद्रस्म प्रभावं च निर्विघ्नं जायते नरः।।३७।।

चतुरांगुल प्रमाणं तु द्वादशांगुलमुन्नतः। श्मशाने लिख्यते देवि श्रौहाये तद्मतिका।।३८।।

धत्तूर रस संयुक्तं पेषयेत्सम्मृजेश्वरी। पूत्तलीं कारयेद्देवीं पञ्चांगुल महोन्नतः।।३६।।

श्मशानांगारमार्निस्यं धत्तूर रस संयुतम्। चितिकाष्टेन लेखिन्या पूतल्याः हृदि लेख्येत्।।४०।।

खेंकारं च समालिख्येत्मूर्ति मध्ये विचक्षणम्। स्नुहीक्षीरं च लिप्त्वाद्याा त्रि–धालेये नमाचरेत्।।४१।।

प्राण स्थापनयोर्च्च च पूत्तलीं स्थापयेतन्तः। स्नुह्वदयो भाग देशन्तु प्रादेशं निखनेतयोः।।४२।।

पूत्तली तत्र निक्षिप्य छादयेन्मतृिकां प्रिये। मारणं सप्तरात्रं च सत्यं सत्यं न संशयः।।४३।।

(अथ वशीकरणमाह) गोरोचनं तु गोक्षीरं गोघृतं गोमयं तथा। शन्याकांगारवारेषु मूलेन पृथकवारयेत्।।४४।।

देवानपि वशीकुर्यात् कि मुक्ता मानुषादयः। लब्धो महिषकं चैव नवनीतोतुयन्नरा।।४५।।

सनित्यं च हुतं मूलं साध्यनाम पुरः सरम्। साध्य वश्यं भवेत् क्षिप्रं सत्यं सत्यं न संशयः।।४६।।

नारी च दासी भवति शिवेन परिभाषितम्। (अथोच्चाटनमाह) अजामानुषकारन्तु रूधिरं प्रेतवाससम्।।४७।।

संवेष्ट्रा पूत्तलीं चैव साध्यनामपुरः सरम्। इत्येतत्पिशितं मन्त्रः प्रेतस्य शिरसिस्थितः।।४८।।

केशान् गृहीता संवेष्ट्रा पूत्तलीं प्राण–पूर्वकम्। श्रद्धया संस्थिते नैव नखनेवास्करालये उच्चाटन भवेदस्य।।४६।।

शिवेन परिभाषितं साध्याक्षर समादाय। पुत्तलीन्मार्ग संयुताः पूत्तल्यां वायुमादयः।।५०।।

मूलमन्त्रं यथाविधिः देवस्य महती पूज्ये। स्नुहीक्षीर स मंजसा नैवेद्यां सा पिक्षिप्ताज्यं नैवेद्यं च निवेदयेत्।।५१।।

पश्चाद्वो मन्त्र कूर्वात् सर्षयैश्च सुशोभितैः। मूलेनाष्टशतं हुत्वा वायव्याभि मुखे तथा।।५२।।

अष्टाविंशति तैलेन पूत्तल्यां सुसमाहितः। तालवृक्षेण वघ्नीयात् प्रेरकेश्वर साधकः।।५३।।

एवं कृत्वा दिनान्ते तु शत्रूणां चायु गच्छति। शालुवं पक्षिराजानं यो जपेद्वदिने–दिने।।५४।।

जपेदष्ट सहस्रन्तु शतमष्टोत्तरन्तु ही। कृष्णाष्टमी समारभ्य यावत्कृष्ण चतुर्दशी।।५५।।

जपेन शत्रु सकलं कुलक्षयमतो भवेत्। महाग्नि सम्मुखे देवि मूलादेव विनश्यति।।५६।।

समी समिद्धः पयसा अष्टोत्तरशतं प्रिये। होतव्यं त्रि–दिनं चैव सर्वरोगान् जपेत्।।५७।।

प्रिये कृष्ण प्रतिपदं चैव आरभ्यन्तं चतुर्दशी। पर्यन्तं पूजये देवीं चितितार्थं भवेत् प्रिये।।५८।।

शालुवस्य प्रयोगं च त्रि–मूर्ति नैव रक्षति। अपामार्ग समिद्वाश्च तिलतैलं घृतं चयत्।।५६।।

क्षीरेण त्रीणिसं कुर्यात् पञ्चम्यांगार वासरः। आरभ्याष्टमी पर्यन्तं समाप्यं होम कर्मणि।।६०।।

अष्टोत्तरशतं हुत्वा अष्टोत्तर सहस्रकम्। एवं प्रतिदिनं कृत्वा मासान्ते शत्रु खेचरः।।६१।।

गजान्तं तत्पदं चैव गच्छन्ति शिव शासनम्।

अथ यन्त्रोद्धार :-

लिखे त्रि–कोणं वृत्तं च वसु द्वादशकं दलम्।।६२।।

कला यन्त्रं च तद्वाद्यं भूपुरं द्वितीयं क्रमात्। वेदद्वार समायुक्तं शालुवं शालव प्रिये।।६३।।

शैव पीठे समा वाह्य मध्ये श्री शरभेश्वरः। स्वाग्रदिषु त्रि– कोणेषु सोम सूर्य कलां यजेत्।।६४।।

ततो वृत्तं दक्ष वामे पुरुतः पृष्टि देशके। कालीं दुर्गां भैरवीं च वड्वानलमीश्वरीम्।।६५।।

इन्द्रादिकानष्ट पत्रेषु सायुधांश्च यजेत प्रिये। मदनं रक्त चामुण्डां मोहिनीं द्राविणीं तथा।।६६।।

शब्दाकर्षणिकां वाणीं मायान्तुहिनन्दिनीम्। शास्तारं क्षोभणीं ज्येष्ठां द्वादशादि यजेत्क्रमात्।।६७।।

षोडषारे महेशानि षोडश स्वर शक्तयः। गणेश्वरं यमं स्कन्दं भैरवं च महा–दिशिम्।।६८।।

स्त्वरितं वीरभद्र च वडवानल भैरवम्। महा–मायां च वाह्यादि यजेद्देवि दिक्षु च।।६९।।

ब्राह्मण्याद्यष्टकं पश्चादिग्वि दिक्षु क्रमात् यजेत्। पुनर्मध्ये परं शम्भु शरभं शालुवेश्वरम्।।७०।।

त्रि–कोणे वृत्तयोर्मध्ये सायुधानि यजेत्क्रमात्। देवस्याग्रे षडंगानि ततो धूपादिकं यजेत्।।७१।।

यथा शक्ता मूल विद्यां जपित्वा प्रदं निवेदयेत्।

।। इति नित्य विधिः ।।

पुरश्चर्यातु देवेशि साक्षरैर्लक्षमादरात्।।७२।।

दशांश होममात्रैश्च दशांश ब्रह्म भोजनम्। अभावे द्विगुणं जप्त्वा कुर्यादपि षडंगकम्।।७३।।

अथवाक्षर सहस्रं च जप्त्वाकं जतरोरपि। पृथक द्विगुण होमादि कुर्यादिति प्रबोधयेत्।।७४।।

तद्वाह्ये वेष्टये देवि षट्त्रिंशद् योनि शक्तये। ततः सिद्धिप्रदो मन्त्रो भवेदिति न संशयः।।७५।।

शत्रोश्च प्रतिमा भूमौ लिखित्वा स्थापयेत्ततः। हृद्देशे वह्नि संस्थाप्य हुनेत् सिद्धार्थं वैरि च।।७६।।

सहयन्तु सप्तदिनं प्रतिमायान्तु शत्रवः। प्रयोग सिद्धिर्नतरं पूर्ववत्पुरश्चरणं कुर्यात्।।७७।।

आत्म रक्षणार्थं एवं षट् प्रयोग बोधव्यम्।

।। इति शरभ षट्प्रयोग समाप्तः ।।

प्रस्तुत विषयों के सम्बन्ध में : श्री विश्वविजय–पञ्चांग २०५८ के इस भाग में लेख, श्री शरभ यन्त्रार्चन–पद्धति, कवच, दिव्य शतनाम –स्तोत्र, सहस्रनाम व दो प्रकार के काम्य–प्रयोग प्रकाशित किए गये। श्री विक्रम सम्वत् २०५६ को इसी पञ्चांग में और भी महत्वपूर्ण श्री शरभेश्वर से सम्बन्धित विषय प्रकाशित किए जायेंगे, जिनमें श्री शरभ पूजा–पद्धति, सहस्रनामावली, श्री शरभाष्टक, श्री शरभ–संकल्प, मन्त्र–साधन, माला–मन्त्र, श्री चित्कलार्षण–मन्त्र, विभिन्न प्रकार के अभिचार–कृत्या प्रयोग व निवारण, श्री शरभ–शाबर–मन्त्र, श्री शूलिनी दुर्गा मन्त्रादि साधन–विधान प्रमुख होंगे। पाठकों को हम यह भी स्पष्ट कर दें कि मूल हस्त–लिखित ग्रन्थ मे जो विषय जैसे था, उसको यथावत् रूप से प्रकाशित किया गया। यदि कुछेक पाठकों या साधकों को उच्चारण करने मे कहीं कठनाई का अनुभव प्रतीत आए तो वह सन्धि–विच्छेद का प्रयोग करें, इससे उनको पाठोच्चारण करने मे सुलभता प्राप्त हो जायेगी। प्रसंग वश प्रकाशित विषयों के सम्बन्ध में कुछ बातें पाठक–वर्ग ज्ञात कर लें –

१. श्री शरभ यन्त्रार्चन-पद्धति :- मूल व संक्षिप्त है, जिसके विषय में लेख के अन्तर्गत स्पष्ट कर दिया गया हैं। "श्री शरभ–तन्त्र" (श्री पीताम्बरा संस्कृत–परिषद "दतिया") में भी यही अर्चन–पद्धति है किन्तु काफी पाठ–भेद व प्रस्तुत अर्चन–पद्धति के क्रम (श्लोकादि) में भी वृद्धि है। अध्ययनोपरान्त यह अर्चन–विषय उचित प्रकार से समझा जा सकता है।

२. श्री शरभ-कवच :- एक महत्वपूर्ण व परमशक्ति से सम्पन्न यह कवच है। इसकी फलश्रुति के अध्ययन से इसकी विशेषता ज्ञात की जा सकती है। पाठ क्रम भी इसका दो प्रकार से है, एक तो प्रस्तुत रूप में ही है और दूसरा क्रम विशेष है। इस विशेष क्रम का रहस्य कवच के श्लोक ३८–४० मे द्रष्टव्य है। निर्देश रूप में यहां समझा दिया जाता है। जब कवच पाठ करें तब कवच के प्रत्येक श्लोक में उल्लेखित देवता का नाम मन्त्र में संयुक्त करें, जैसे प्रथम श्लोक का एक उदाहरण देखें–

* ॐ ह्रीं नमो भगवते श्री शिवाय मम पुरतः ज्वल–ज्वल, प्रज्वल–प्रज्वल, साध्यं साधय–साधय सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहा–श्री शिवः पुरतः पातु।

३. दिव्य शतनाम-स्तोत्र :-

भगवान् श्री नृसिंह कृत है। जिसकी रचना इन्होंने भगवान् श्रीशरभेश्वर के कठोर बन्धन से मुक्त होने के लिए की थी। नाम रूप "दिव्य" प्रभाव से युक्त यह स्तोत्र है। नित्य–प्रतिदिन पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

४. श्री शरभ-सहस्रनाम :-

वैसे तो श्री शरभ सम्बन्धी सभी विषय महत्वपूर्ण हैं किन्तु सहस्रनाम की महत्ता विद्जनों के अनुभव में कुछ विशेष ही है। इस अल्पज्ञ लेखक को भी इस सहस्रनामानुष्ठान के कई लाभवन्तित अनुभव हुए हैं। श्लोक १६७ से २१६ तक फल–श्रुति भाग में सहस्रनाम पाठ के निर्देश दिए हैं। साधकों को उक्त श्लोक क्रम का विधिवत् अध्ययन करना चाहिए। वैसे यहां यह भी स्पष्ट कर देना उचित है कि यदि इस सहस्रनाम को नामावली रूप में परिवर्तित कर दिया जाए तो १००८ से भी अधिक नाम प्रकट होंगे। यह कथन सहस्रनाम में भी द्रष्टव्य है।

५. काम्य-प्रयोग (एक व दो) :-

यन्त्रार्चन–पद्धति की भांति यह भी मूलवत् ही प्रस्तुत किए गये। दोनों प्रकार के काम्य–प्रयोग अति महत्वपूर्ण व शीघ्र फलदायी है। काम्य–प्रयोग "एक" आकाश–भैरव–कल्प व श्री शरभ–तन्त्र में भी प्रकाशित है किन्तु तीनों के मिलान में पाठ भेद प्राप्त होते हैं। काम्य–प्रयोग "दो" में पहले मन्त्र विषय का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् काम्य–प्रयोग पश्चात् यन्त्र–क्रम का वर्णन है। विषय संयुक्त है अतः इसी कारण श्लोक क्रम की गणना भी संयुक्त रूप से ही दी गई है, जबकि मूल ग्रन्थ मे श्लोक क्रम नहीं दिया गया। अन्त में स्नेही पाठकों, जिज्ञासु साधकों व आदरणीय विद्जनों से यही प्रार्थना करता हूँ कि श्री शरभेश्वर से सम्बन्धित प्रकाशित विषय मे यदि अज्ञात वश त्रुटि हो जाए या प्रतीत हो तो अवश्य सूचित करें। विषय लुप्त न हो और श्रीशरभेश्वर के साहित्य मे वृद्धि हो, इसी हेतू यह सभी विषय–सामग्री अपनी क्षीण–बुद्धि–बल से सम्पादित कर श्री विश्वविजय पञ्चांग में प्रस्तुत की।

शेष सम्वत् २०५९ में.................................

आपका कृपाभिलाषी

"भूपेन्द्र दत्त शर्मा"

१४५ – नया बाँस, नदी मार्ग

मुजफ्फरनगर – (उ०प्र०) २५१००२

दूरभाष – (०१३१) ४५१८२७

।। श्री शरभेश्वराय नमः ।।

(यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां कुल–नाशनम्)

गत् वर्ष के पंचांग में 'निग्रह दारुण सप्तक' के प्रकाशन के उपरान्त अनेक स्नेही पाठकों ने इस विषय को विस्तार से जानने की जिज्ञासा व्यक्त की थी। पाठकों के उक्त आग्रह को स्वीकार करके, विद्वान लेखक ने प्रसिद्ध शक्तिपीठ कामाख्या भगवती के श्रीचरणों में निवास करते हुए परिश्रम पूर्वक, लिखकर यह लेख स्नेही पाठकों के हितार्थ भेजा है। लेखक ने उदारतापूर्वक इस लेख के प्रकाशन में भी सहयोग दिया है तथा भविष्य में दुर्लभ, सारगर्भित, साहित्य प्रदान करते रहने का आश्वासन दिया है। पाठकों तथा इस पंचांग की ओर से उनके यशस्वी होने की पराम्बा के श्रीचरणों में विनयपूर्वक प्रार्थना है। इस वर्ष के पंचांग को शरभार्चन विशेषांक के रूप में प्रस्तुत करने की प्रसन्नता है।

सम्पादक–श्रीविश्वविजयपंचांग

जिज्ञासा त्रय......कन्या का विवाह कब, किधर कैसे वर से होगा?

पं० कृष्णानन्द उपाध्याय
"साहित्य विशारद, कर्मकाण्ड भूषण, ज्योतिष केसरी, ज्योतिष सरस्वती
पो०- छापर, जिला- चुरू (राजस्थान) फोन नं० : ०१५६८ ४२२३५

वेद के छः अंगों में ज्योतिष शास्त्र को नेत्र कहा गया है और है भी जिस प्रकार नेत्रहीन मनुष्य के लिए संसार असार है उसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र के सम्यक् अध्ययन अध्यापन के बिना सभी विद्यायें अपूर्ण हैं। समाज के समग्र विकास में नक्षत्र विज्ञान खगोल में स्थित ग्रह और उनकी स्थिति संचार एवं उससे घटित होने वाले फलाफल का कथन मेदिनीय भविष्य हो या व्यक्ति विशेष के जीवन का फलाफल (शुभाशुभ) फलकथन करने के लिए ज्योतिष शास्त्र की मुख्य भूमिका रही है आज भी यह परम्परा अक्षुण्ण चली आ रही है। लाखों करोड़ों एव अरबों मील दूरी के ग्रहों को ज्योतिषी ग्रह गणित करके सूर्योदयास्त गुरु शुक्र बुधादि का उदय अस्त तथा ग्रहण आदि का समय स्थान व प्रभाव वर्षों पहले कथन करते हैं जिसमें इस विद्या को कोई राज्याश्रय प्राप्त नहीं है। केवल ब्राह्मणों एवं शास्त्र वेत्ताओं के अथक लगन व परिश्रम के परिणाम स्वरूप आज आधुनिक युग की चकाचौध में एक आश्रयहीन ज्योतिषी जो बताता है दूसरी ओर करोड़ों रुपयों की लागत से बनी हजारों मशीनें तथा उनको चलाने वाले हजारों रुपयों के भोक्ता-इंजीनियर का आँकड़ा गलत हो जाता है। अतः ऐसी विषम परिस्थितियों में भी भारतवर्ष के दैवज्ञों ने इस विद्या की रक्षा की है और इससे समाज का कल्याण किया है। ऐसे ज्योतिषशास्त्र व उसके रक्षक पूर्णाचार्यों का सरकार व समाज दोनों को ऋणी रहना चाहिए।

प्रस्तुत लेख का विषय है जिज्ञाया त्रय–प्रत्येक सद् गृहस्थ की अनेक इच्छाऐं रहती है- जैसे-धनलाभ कब, किस दिशा में व किस व्यापार से अथवा संतति लाभ कब पुत्र या पुत्री इत्यादि। इसी संदर्भ में प्रायः सभी ज्योतिषियों के पास ऐसे अभिभावकों की प्रचुरता से जिज्ञासा होती है- कि पुत्री की शादी कब, किस वर्ष में होगी, किस दिशा में होगी तथा वर कैसा होगा? यह है **जिज्ञासा त्रय**- सभी सदगृहस्थों की यह मूल भूत जिज्ञासाऐं रहती हैं और ऋतम्भरा प्रज्ञा से काम लेने वाले महामनिषी भारतीय ज्योतिर्गणना अनुसार एतद् विषय में अपना पक्ष प्रस्तुत करके उनकी जिज्ञासा शान्त करते हैं- इसी विषय में यहाँ प्रस्तुत किया जाता है कि विवाह योग्य कन्या के अभिभावक तथा **"ज्योतिष के अध्येता"** प्रेमी सज्जनों के लाभार्थ कुछ सोदाहरण दिशादि का ज्ञान विवाह वर्ष एवं वर की प्रकृति के लक्षण। कन्या की जन्मकुण्डली के ७वें भाव से एतद् विषय की जानकारी प्राप्त होती है। सप्तम भावस्थ राशि, सप्तमेश व उसकी मुख्यदिशा तथा सप्तम भावग्रह इनके अनुसार उपरोक्त विषय की जानकारी होती है।

जिज्ञासा-प्रथम विवाह कब (शादी की आयु)

१. सप्तमेश बुध हो पाप ग्रह से सम्बन्ध न हो तो लड़की की शादी १३ से १६ वर्ष की कुमार अवस्था में होती है क्योंकि सप्तमेश बुध कुमार ग्रह है और कौमार्यावस्था में ही वैवाहिक सुख देता है।

२. सप्तमेश मंगल पापाक्रान्त नहीं हो तो १६ से १८ वर्ष तक विवाह होता है।

३. शुक्र सप्तमेश हो पाप ग्रहों से संबंध नहीं हो तो २० वर्ष की आयु में विवाह हो जाता है।

४. चन्द्रमा सातवें घर के स्वामी हो तो २२वें वर्ष में विवाह होता है।

५. गुरु सातवें के स्वामी हो तो २४ वर्ष में विवाह होता है।

६. सूर्य ७ वें भाव के स्वामी हो तो २६वें वर्ष में शादी होती है।

७. शनि सप्तमेश हो तो २८ वें वर्ष तक शादी होती है। ये ग्रह पाप प्रभावित नहीं हो तो यदि सप्तमेश पर शुभग्रहों का प्रभाव रहे तो विलम्ब के वर्षों में २ वर्ष की कमी होती है। अर्थात् २८ की जगह २६ वें वर्ष तक शादी हो जाती है। इसके विपरीत यदि सप्तमेश पापाक्रान्त हो पापग्रह से दृष्ट या सम्बंध करता हो तो ४ वर्षों का विलम्ब और + कर देना चाहिए। बुध यदि अपनी स्वराशि ३, ६ का होकर ७वें घर बैठा हो तो अतिबाल्या अवस्था में शादी होती है- आयु १० से १३ वर्ष की होगी। यथा :

सोमात्मजों भौमो भृगुश्च सोमो, देवेन्द्र पूज्योर्कः तथा च मन्दः।
क्रमेण कालस्य दिशन्ति मात्राम्। सौम्यस्तु स्वल्पो मन्दस्तु दीर्घः।। *"होराशतक"*

अर्थात् बुध, मंगल, शुक्र, चन्द्र, गुरु, सूर्य तथा शनि क्रमशः काल की मात्रा को जतलाते हैं। बुध सबसे अल्प मात्रा और मन्द (शनि) सबसे अधिक मात्रा। बुध का नाम ही कुमार है, अतः कुमार अवस्था से विशेष संबंध है और ये शीघ्र कार्य करने वाला है। यथा -**सौम्यस्तु स्वल्पों............।**

जिज्ञासा-द्वितीय शादी की दिशा :-

इस विषय में प्रायः जातकों के अभिभावक पूछते हैं। पंडितजी किस दिशा में लग्न (विवाह) का योग है किधर के शहरों गांवों वा क्षेत्रों में जाये इत्यादि इस के लिए देखें-

(क) सप्तम भाव में २, ५, ८, ११ (वृष, सिंह वृश्चिक, कुम्भ) राशियाँ हो तो समीप अर्थात ७०-७५ किलो मीटर के अन्दर विवाह होता है।

(ख) सप्तमेश चन्द्रमा-शुक्र, वृह० हो तथा लग्नेश लग्न से चौथे भाव तक कहीं बैठा हो तो-शादी अपने ही गाँव शहर उसी जगह हो जाती है।

(ग) ७वें भाव में मेष, कर्क, तुला, मकर राशि हो तो शादी दूर देश में होती है। लगभग २०० किलोमीटर तक की दूरी हो सकती है।

(घ) ७वें भाव में ३, ६, ९, १२वीं राशियां हो तो शादी न अति दूर न नजदीक यह दूरी १०० किलोमीटर तक हो सकती है।

(ङ) यदि सप्तमेश सप्तम भाव से १२वें भाव तक बीच में कहीं हो तो शादी दूर देश-प्रान्तान्तर २०० किलोमीटर से भी दूरी पर होगी।

शादी की दिशा :-

७वें भाव में १, ५, ९ राशि हो तो पूर्व दिशा,
२, ६, १० राशि हो तो दक्षिण दिशा,
३, ७, ११ राशि हो तो पश्चिम दिशा,
४, ८, १२ राशि हो तो उत्तर दिशा जानना चाहिए।

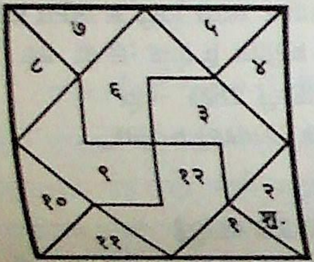
सप्तम भावस्थ ग्रह व सप्तमेश ग्रह की दिशा का ज्ञान भी रखना आवश्यक है।

सूर्य, शुक्र = पूर्व, चन्द्र, शनि = पश्चिम,
मंगल, राहु, केतु = दक्षिण, बुध, गुरु = उत्तर

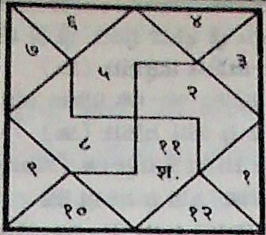
(२) सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं रहने पर सप्तम भाव की राशि दिशा में शादी होती है।

(३) यदि सप्तम भाव में कोई ग्रह हो तो सप्तमस्थ ग्रह की दिशा में शादी होगी ऐसा समझना चाहिए। यदि कोई भी ग्रह नहीं हो तो सप्तम भाव पर जिन-जिन ग्रहों की दृष्टि है उन उनमें जो अधिक बलवान है उसकी दिशा में शादी होगी। शुक्र जहां बैठा हो उससे सप्तम भाव तक गिने उस सप्तम भाव में जो राशि है। उस राशि के स्वामी की दिशा में शादी होवे जैसे-शुक्र ९वें भाव में है वृष का, इससे ७वें भाव में वृश्चिक राशि हुई वृश्चिक स्वामी मंगल है- मंगल की दिशा-दक्षिण अत: शादी दक्षिण दिशा में होगी।

उदाहरण (क)



शुक्र सातवें वृश्चिक हुई वृश्चिक का स्वामी मंगल-मंगल की दिशा-दक्षिण है अस्तु।



उदाहरण (ख)

श्रीमान का जन्म लग्न सिंह है। सप्तमेश शनि स्वग्रही है। सप्तम भावस्थ शनि की दिशा पश्चिम है। शादी पश्चिम दिशा में हुई है।

जिज्ञासा तृतीय :- वर कैसा मिलेगा?

(१) ७वें घर का स्वामी शुभ ग्रह (चं, बु, गु, शु) या ७ वें भाव में स्थित हो अथवा सप्तम भाव को देख रहा हो तो लड़की का पति "वर" सम आयु का या २-४ वर्ष के अन्तर का गौर वर्ण, सुन्दर, सुशील होगा।

(२) सप्तम भाव में पापग्रहों (सू.मं.श.रा. के) का प्रभाव हो तो कन्या की उम्र से १०-१२ वर्ष आयु में बड़ा वर मिलेगा।

(३) सप्तमेश ग्रह के अनुसार पति के स्वभावादि का विशेष परिचय।

सूर्य :-सूर्य सप्तमेश हो तो पति गोल मुख मण्डल, देदीप्यमान ललाट, आकर्षक व्यक्तित्व वाला कंचन स्वर्णाभ रंग का सुन्दर यशस्वी राजकर्म करने वाला "सरकारी" नौकर पेशा या राजमान्य व्यक्ति होगा।

चन्द्र :- सप्तमेश ग्रह यदि चन्द्रमा हो तो शांत स्वभाव गौर वर्ण मध्यम कद सुडौल शरीर, अच्छा, खानपान का शौकीन, स्त्रियों में लोकप्रिय, सम्मोहन चेहरा युक्त राज कर्मचारी होगा।

मंगल :- मंगल सप्मेश हो तो वर हृष्टपुष्ट, रक्त गौरागं शरीर कुछ क्रोधी स्वभाव वाला, नियम का पालन करने वाला, सत्यवादी, कामी, छोटा कद वाला, शूरवीर, विद्वान, मातृ प्रेमी तथा सेना, पुलिस, कारखाना या सरकारी सेवा में रहते उच्च पद तक प्राप्त करने वाला होगा।

बुध :- बुध के सप्तमेश होने पर सदा युवा लगने वाला, सुन्दर आकर्षक चेहरा, मध्यम कद वाला, सबके साथ घुलने -मिलने वाला, धन का आकाँक्षी, स्वतंत्र व्यवसाय वाला, जिद्दी स्वभाव वाला, राजस्व, खाद्य, माप-तौल, कृषि आदि सरकारी विभाग में कार्यरत व्यक्तित्व वाला होगा पति बड़ा विद्वान भी होगा।

गुरु :- गुरु. के सप्तमेश होने पर पति लम्बा कद, पीत गोरागं वर्ण सुडौल शरीर, अध्यापक शिक्षावृत्ति, जज या न्यायिक कार्यालय में काम करने वाला लोकप्रिय होगा।

शुक्र:- सप्तमेश यदि शुक्र हो तो पति मध्यम कद वाला, व्यावसायिक, धन को प्रमुखता देने वाला, आकर्षक चेहरा, घने बालों वाला, स्त्री-प्रेमी होगा। शारीरिक गठन

मजवूत होगा एवं दूसरों में झगड़ा लगाने का कार्य भी करने वाला होगा

शनि : - शनि सप्तमेश होने पर पति लम्बा कद, आकर्षक चेहरा, लम्बा मुख, सत्यवादी, गौरवर्ण, अंग्रेजी भाषा (विदेशी भाषा) में तेज, पतला दुबला शरीर वाला, जिद्दी स्वभाव का होगा।

राहु-केतु :- यदि सप्तम भाव में रा० के० में कोई भी हो तो सप्तम भाव के राशि स्वामी अर्थात् सप्तमेश के गुण धर्म युक्त स्वभाव वाला पति होगा।

उपरोक्त जिज्ञासा त्रय के संबंध में लेख के तीन चरणों में शादी कब होगी, किस दिशा में होगी तथा वर कैसा होगा ? इन तीन समस्या शंका आर्थात् जिज्ञासाओं पर प्रकाश डाला गया है- विवाह योग्य वर्ष व्यतीत हो जाने पर भगवान की आराधना करनी चाहिए- कभी-कभी किसी जातिका लड़की की कुण्डली में कुछ ऐसा भी ग्रह योग बन जाता है जो विवाह के सामान्य वर्षों में विवाह नहीं होने देता बाधाएं आती रहती हैं। बार-बार लड़के वाले आते हैं लड़की देखकर चले जाते हैं। सगाई वाग्दान बात बीच में ही शान्त हो जाती है अथवा अर्थाभाव से विवाह में विलम्ब उपस्थित हो जाता है।

कुछ अड़चने ऐसी भी आती हैं- विवाह तय हो जाने पर भी विवाह पूर्व कुछ-न-कुछ विघ्न बाधाएं आती हैं। एतद् सब के पीछे- ग्रहों का शुभाशुभ अदृष्ट फल ही काम करता है। आज का व्यक्ति चाहे माने या न मानें परन्तु धर्माधर्म, पाप पुण्य, अनुकूल ग्रह प्रतिकूल ग्रह का शुभाशुभ फल जरूर होता है। ग्रहशान्ति, मन्त्र जाप, स्तोत्र पाठ, यन्त्र धारण करना तथा व्रतोपवास द्वारा अनुकूलता प्राप्त होती है।

व्रत की परिभाषा नियम व व्रत का स्वरूप कैसा हो- **कुछ सिद्ध व्रत एवं उनके नियम :-**

(क) सौभाग्य दायक मंगलव्रत एंव मंगल यंत्र की प्रतिष्ठा पूर्वक आराधना (स्वानुभूत)

(ख) मंगलागौरी व्रत एवं देवी पूजन।

(ग) सीता स्वयम्वर के संदर्भ में गौरी पूजन का प्रसंग उसका पाठ (स्वानुभूत:) रामचरित मानस।

(घ) वट सावित्री व्रत, (१) सोमवार व्रत एवं शिवार्चन।

(ङ) शुक्रवार व्रत (१) शुक्र ग्रह के शान्त्यर्थ (२) संतोषी माता के प्रीत्यर्थ (३) श्रवण शुक्रवार का व्रत लक्ष्मी व्रत (४) देवी गीता का पाठ एवं शुक्रवार को देवी पूजन विशेष (देवी भागवत)

(च) गणेश चतुर्थी व्रत गणेश पूजन विशेष गणेश अथर्व शीर्ष का १०८ पाठ एवं सहस्त्रार्चन

(छ) सप्तमेश ग्रह का व्रत पूजन एवं दान यदि सप्तमेश नीच, वक्र, पापाक्रान्त हो तो जपानुष्ठान भी।

(ज) कात्यायनी देवी का व्रत एवं पूजन (श्रीमद् भागवत महापुराण)

••••••

दाम्पत्य जीवन–सुखी या दुःखी

-ओम प्रकाश पालीवाल, एम.ए., एल. एल. बी.

विवाह के लिये कुंडली मिलान कराते समय वर कन्या के अभिभावक यह भी पूछते हैं कि क्या इनका विवाहित जीवन सुखमय रहेगा ? उन्हें यह ज्ञात नहीं होता कि विवाहित जीवन के सुख दुःख का विवाह मेलापक से कोई सीधा संबंध नहीं होता। दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा इसका निर्णय तो जातक की जन्म कालीन ग्रह-स्थिति पर निर्भर करता है। कुंडली-मिलान तो यह बताता है कि दाम्पत्य जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव को मिलकर सहन करने की क्षमता उनमें है। ज्योतिष ग्रंथों में इस विषय पर विशद वर्णन मिलता है। इस लेख में उनके सार की समीक्षा की जाती है।

विवाह का विचार वर कन्या दोनों की कुंडलियों में समान रूप से सप्तम भाव से किया जाता है। स्त्री जातक में पति की आयु का विचार तथा वैधव्य का विचार अष्टम भाव से करते हैं।

"पत्युः कलत्रतो रन्ध्राद वैधव्यस्य" *(बृ. पा. हो. शा. ८०/४)*

जो स्त्रियां नौकरी या स्वतंत्र व्यवसाय नहीं करती उनकी कुंडली में नवम स्थान भी विचारा जाता है जो उनके सौभाग्य को दर्शाता है। इस प्रकार स्त्री जातक में सप्तम, अष्टम तथा नवम भाव इस संबंध में विचारणीय हैं। इनमें सप्तम स्थान पति का भाग्य, अष्टम मांगल्य तथा नवम सौभाग्य दर्शाता है। अधिक सूक्ष्म विचार के लिए नवांश कुंडली भी देखी जाती है। पराशर का निर्देश है- **"नवमांशे कलत्राणां"।**

प्रत्येक भाव का विचार करते समय भाव, भावेश, भाव कारक तथा इनसे युति अथवा दृष्टि करने वाले ग्रहों का विचार किया जाता है। यदि ये शुभ सुस्थानस्थ, बली हैं तो भाव संबंधी शुभ फल देते हैं। अन्यथा होने पर अशुभ फल।

इस संबंध में 'जातक तत्व' में महादेव ने कहा है

"लग्नाच्चंद्राद्वा द्यूनं शुभेन स्व पतिना वा युतं दृष्टं कलत्र संपत"

(जा.त. प्रकीर्ण तत्व सप्तम विवेक सूत्र १६०)

अर्थात् लग्न से अथवा चंद्रमा से सप्तम भाव अपने स्वामी से अथवा शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो स्त्री का सुख अच्छा रहेगा। इस प्रकार लग्न और चंद्रमा दोनों से विचार करने को कहा है।

'जातकादेश मार्ग' में इसे अधिक स्पष्ट शब्दों में निम्न प्रकार कहा है :

"द्यूने बलोद्रिक्त शुभेश मित्र प्राप्तेक्षिते द्यून पतौ सिते वा।
सद्वर्ग संस्थे सबले च भार्या भवन्ति तत्खेट गुणानुरूपाः।।" *(जा आ.भा. १३/१)*

(१) यदि सप्तम भाव अपने बली स्वामी से, बलवान शुभ ग्रह, से बलवान मित्र से

(सप्तमेश के मित्र से) युत या दृष्ट हो;

(२) यदि सप्तमेश बलवान हो, तथा बली शुभ ग्रहों और बली मित्र ग्रहों से युत या दृष्ट हो;

(३) यदि स्त्री कारक शुक्र बलवान हो; बली शुभ ग्रहों और बली मित्र ग्रहों से युत या दृष्ट हो;

(४) यदि सप्तम भाव मध्य शुभ वर्गों में हो;

(५) यदि सप्तमेश शुभ वर्गों में हो; और

(६) यदि शुक्र भी शुभ वर्गों में हो

तो जातक को दाम्पत्य सुख पूर्ण मात्रा में मिलता है। दूसरे शब्दों में उसका दाम्पत्य-जीवन सुखी होता है। यह सुख ग्रह के गुण के अनुरूप होता है। परंतु ऐसा पूर्णरूप से होना संभव नहीं कि भाव, भावेश तथा कारक तीनों ही पूर्ण बली हों, शुभ ग्रह तथा मित्रों से युत अथवा दृष्ट हों और शुभ (बुध, गुरु, शुक्र और शुक्ल पक्षीय चंद्र) ग्रहों के वर्गों (सप्तवर्ग) में भी हों। यहां बली का अर्थ षड्बल में बली होना है। महर्षि पराशर के अनुसार सूर्य तथा गुरु प्रत्येक ६१/२ रूप; मंगल तथा शनि प्रत्येक ५ रूप; चंद्र ६ रूप; बुध ७ रूप तथा शुक्र ५१/२ रूप बल पाकर सुबली माने गए हैं। इससे कम बल होने पर उन्हें बलहीन माना गया है। यहां पर ग्रंथकार का अभिप्राय ग्रह के अति बली होने से है। (बलोद्रिक्त=बल+उद्रिक्त; का अर्थ 'बढ़ा हुआ, अत्यधिक, अतिशय' आदि है) बली ग्रह शुभ फल देता है इसके प्रमाण-वाक्य फलित ग्रंथों में अनेकत्र हैं। उपरोक्त शुभता के ऊपर ही दाम्पत्य-जीवन सुखी होता है। दोनों की शुभता तथा सुखमयता में सीधा संबंध है।

दुःखी दाम्पत्य जीवन :

(अ) सप्तम में ग्रह : निम्न ग्रहों के सप्तम भाव में होने पर दाम्पत्य-जीवन दु:खी होता है।

१. पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु तथा इनसे युत बुध)

२. पाप दृष्ट ग्रह

३. बल हीन (उपरोक्त रुप बल से कम बल वाले ग्रह) तथा पाप वर्गों में स्थित ग्रह

४. पंचमेश

५. अष्टमेश

६. पाप युत शुक्र (शुक्र को विवाह कारक माना गया है। कारक ग्रह का भाव में होना उस भाव संबंधी फल का नाश करता है।)

इनमें से जितने भी अधिक और जितनी अधिक मात्रा में दोष युक्त ग्रह सप्तम भाव में होंगे उतना ही दाम्पत्य जीवन दु:खी होगा।

(ब) सप्तमेश : निम्न स्थितियों में दाम्पत्य जीवन दु:खी बनाता है :

१. सप्तमेश शत्रु-क्षेत्र या नीच राशि गत अथवा अस्त होकर पाप ग्रह से दृष्ट हो।

२. सप्तमेश बल-हीन हो।

३. सप्तमेश ६, ८ या १२ में स्वोच्च, स्वक्षेत्री या स्व वर्गोत्तमी न होकर स्थित हो।

४. सप्तमेश के नवांश का स्वामी पाप ग्रह हो। यदि सूर्य सप्तमेश होकर पाप ग्रह की राशि या नवांश में गया हो और पाप ग्रह से दृष्ट या युत हो।

२. सप्तमेश क्रूर षष्टयंश में गया हो।

(स) कारक (शुक्र):

१. यदि वह नीच राशि या नीच नवांश में हो।

२. ६, ८ या १२ में स्थित हो।

नवांश कुंडली :-

इसके पश्चात् सूक्ष्म अध्ययन के लिये नवांश कुंडली को देखते हैं। यद्यपि **'पाराशर होरा शास्त्र में'** वर्ग कुंडलियों से फलादेश करने की विधि प्रचलित नहीं मिलती फिर भी विद्वान ज्योतिषी निम्न तथ्यों को देखते हैं:-

१. नवांश कुंडली के लग्न से ग्रहों की स्थिति देखते हैं। यदि ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) त्रिकोण (५, ९) तथा लाभ (११) में है तो अपनी दशा में शुभ फल देता है। ३, ६, ८, १२ में होने पर अशुभ फल तथा २ में सम फल देता है।

२. नवांश लग्न का जन्म-लग्न की राशि में पड़ना उत्तम माना गया है क्योंकि तब लग्न वर्गोत्तमी होता है। यह दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाता है। यदि नवांश कुंडली का लग्नेश भी वर्गोत्तमी है तो सोने में सुहागे वाली कहावत चरितार्थ होती है।

३. इस कुंडली में ग्रह का उच्च, स्वक्षेत्री तथा वर्गोत्तमी होकर सुस्थानस्थ होना सुखी दाम्पत्य जीवन देता है, नीच होने से दु:खी।

४. ग्रह का दिग्बली होना भी शुभफलप्रद है।

५. इस कुंडली में ३, ८ में स्थित ग्रह अपनी दशा में दाम्पत्य जीवन को नष्ट करने में सक्षम है।

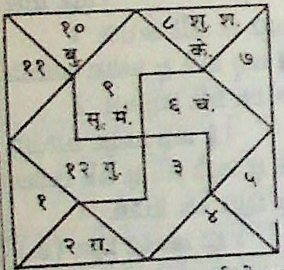
६. स्त्री कारक शुक्र का इस कुंडली में लग्न में होना अच्छा नहीं।

विषय को स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण देते हैं:-

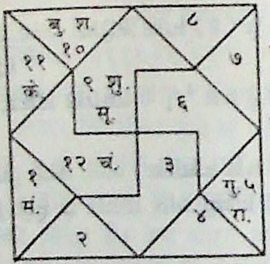
उदाहरण १ : जन्म १३ जनवरी, १९२८ प्रात: काल ९ बजकर १२ मिनट पर (सूर्योदय से पूर्व)। उत्तर अक्षांश २९/१ पूर्व रेखांश ७७/४५ चित्रापक्षीय अयनांश २२/५१/७/ जन्म-कुंडली और नवांश कुंडली निम्न प्रकार है :

जातकादेश मार्ग के उपरोक्त सिद्धांतों को प्रथम जन्म लग्न कुंडली पर लागू करते हैं। यह कुंडली पुरुष की है।

जन्म लग्न ८/२७/९



नवांश कुंडली



सुखी दाम्पत्य जीवन :-

१. धनु लग्न है। सप्तम भाव मिथुन राशि में है जो अपने स्वामी बुध से दृष्ट नहीं। शुभ ग्रह चंद्र, गुरु और शुक्र से भी पूर्ण दृष्टि से नहीं देखी जाती। (यहां पूर्ण दृष्टि का ही विचार करते हैं) यह बलवान मित्र ग्रह सूर्य से दृष्ट है जिसका षड्बल ७ ३/४ रूप से अधिक है। अत: सूर्य दृष्टि का शुभ फल-सुखी दाम्पतय जीवन।

२. सप्तमेश बुध बलवान नहीं है उसका षड्बलैक्य ७ रूप से कम है। अत: दाम्पत्य-जीवन में सुख नहीं देता।

३. स्त्री कारक शुक्र बलवान है उसका षड्बल ५१/२ रूप से अधिक है। बली शुभ ग्रह गुरु (८/१८ रूप बल) से दृष्ट है। बली मित्र ग्रह शनि (५/२६ रूप बल से युत है। अत: सुखी दाम्पत्य-जीवन देता है।

४. सप्तम भाव मध्य २/२७/९ है।यह शुभ वर्गों में है। सप्त वर्ग में ६ वर्ग शुभ हैं केवल द्वादशांश ही मेष राशि में होने से अशुभ वर्ग में है। यहां वर्ग गणना पराशर के परिवृत्ति सिद्धांत द्वारा की गई है जिससे होरा, द्रेष्काण तथा त्रिशांशं प्रचलित पद्धति से भिन्न आते हैं। शुभ वर्गों में होने से दाम्पत्य जीवन सुखी।

५. सप्तमेश बुध (स्पष्टांश ९/१/१६) सप्तवर्ग में केवल ३ शुभ वर्गों में है और दाम्पत्य सुख में कमी करता है।

६. शुक्र (स्पष्टांश ७/१७/५२) सप्तवर्ग में ५ शुभ वर्गों में है जिससे वह सुखी दाम्पत्य जीवन देता है।

अब चंद्र लग्न से देखते हैं :-

१. सप्तम भाव अपने स्वामी बली गुरु (८/१८ रूप बल)से युत हैं बलवान शुभ ग्रह चंद्र (६/४० रूप बल) से दृष्ट है। यह भाव गुरु के मित्र बली मंगल (८/२० रूप बल) से दृष्ट है। इस प्रकार सप्तम भाव सभी प्रकार से सुखी दाम्पत्य जीवन दर्शाता है।

२.सप्तमेश गुरु ८/१८ रूप बल प्राप्त करके पूर्ण बली है। वह बली शुभ ग्रह चंद्र तथा बलशाली मित्र ग्रह मंगल से दृष्ट है। इस प्रकार सप्तमेश गुरु भी सभी प्रकार से सुखी दाम्पत्य जीवन दर्शाता है।

३. स्त्री कारक शुक्र ही रहेगा तथा वह जन्म लग्न में वर्णित कारणों से बली होने से सुखी दाम्पत्य जीवन देता है।

४. सप्तम भाव मध्य ११/८/२१ है तथा उसे ५ शुभ वर्ग मिले हैं, शेष २ अशुभ है। अत: सुखी दाम्पत्य जीवन।

५. सप्तमेश गुरु के स्पष्टांश ११/५/२५/४३ हैं। इस प्रकार उसे ४ शुभ तथा ३ अशुभ वर्ग मिले हैं। यह भी सुखी दाम्पत्य जीवन दर्शाता है।

६. शुक्र को सप्तवर्ग में ५ शुभ वर्ग मिले हैं जिससे सुखी दाम्पत्य-जीवन के संकेत हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जन्म लग्न से सप्तमेश बुध षड्बल में निर्बल है तथा वर्गों में भी केवल ३ शुभ वर्ग मिले हैं। इस प्रकार वह सुखी दाम्पत्य जीवन देने में असमर्थ है। शेष तथ्य सुखी दाम्पत्य जीवन दर्शाते हैं। चंद्र लग्न से सभी प्रकार से सुखी दाम्पत्य जीवन है। यह गुरु के गणों के अनुरूप होगा।

दु:खी दाम्पत्य जीवन :-

(अ) कोई पाप ग्रह सप्तम भाव में नहीं है।

(ब) सप्तमेश बुध अस्त है और पाप ग्रह शनि से दृष्ट होने से दाम्पत्य जीवन दु:खी बनाता है। बुध बलहीन है उसका षड्बल ७ रूप से कम है। इसके नवांश का स्वामी शनि पाप ग्रह है।

(स) कारक शुक्र १२ में स्थित होने से दाम्पत्य जीवन को दु:खी बनाता है।

बुध और शुक्र आंशिक रूप से दु:खी दाम्पत्य जीवन दर्शाते हैं।

नवांश कुंडली द्वारा सूक्ष्म अध्ययन :-

१. नवांश कुंडली का लग्न धनु राशि में होने से वर्गोत्तमी लग्न है जिसका शुभ फल दाम्पत्य जीवन में सुख देता है।

२. नवांश कुंडली का लग्नेश ९ वें भाव में राहु के साथ है। गुरु यहां से नवांश कुंडली के लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखकर शुभता प्रदान करता है।

३. स्वक्षेत्री शनि तथा वर्गोत्तमी बुध २ में सम फलदायक हैं।

४. स्त्री कारक शुक्र का नवांश कुंडली के लग्न में होना स्त्री सुख में कमी करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने वाले योग अधिक हैं। जातक की पत्नी अधिकतर किसी न किसी रोग से ग्रस्त रहती है परंतु गृहस्थी को संभाले हुए है। विवाहित जीवन की स्वर्ण जयन्ती मना चुके हैं।

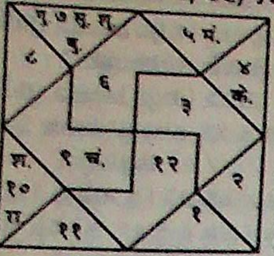
उदाहरण २ :-

कन्या का जन्म १२ नवंबर, १९३४ प्रात: ४ बज. ६ मिनट पर (सूर्योदय से पूर्व)। उत्तर अक्षांश २८/२४, पूर्व रेखांश ७७/५४; चित्रा पक्षीय अयनांश २२/५६/५१ / जन्म कुंडली और नवांश कुंडली निम्न प्रकार है :-

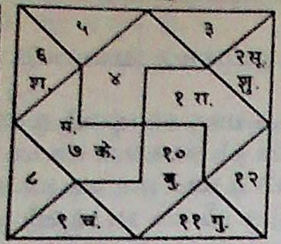
सुखी दाम्पत्य जीवन के योग :-

(अ) लग्न से : १. कन्या लग्न से सप्तम भाव मीन राशि में पड़ता है। यह अपने

जन्म लग्न ५/२२/१४



नवांश कुंडली



स्वामी गुरु से दृष्ट नहीं है परंतु मित्र मंगल से दृष्ट है। मंगल का षड्बल ७/१५ होने से मंगल अति बली है। इस कारण दाम्पत्य जीवन में सुख देता है।

२. सप्तमेश गुरु ६¹/₂ रूप से अधिक बल पाकर बलशाली है। बली शुभ ग्रह बुध से युत है। शुक्र षड्बल में निर्बल है। बुधयुत होने से शुभ फल दायक।

३. यह कुंडली स्त्री की है। पर दाम्पत्य जीवन का कारक शुक्र ही रहेगा। शुक्र षड्बल में हीन बली होने से शुभ फल देने में असमर्थ। परंतु दो बली शुभग्रह बुध, गुरु से युत होने के कारण अशुभता में कमी आई है।

४. सप्तम भाव मध्य (११/२२/१४) को सप्त वर्ग में ३ शुभ वर्ग तथा ४ अशुभ वर्ग मिले हैं। (वर्ग शोधन पाराशर के परिवृत्ति सिद्धान्त के अनुसार है। इसमें प्रचलित होरा, द्रेष्काण तथा त्रिशांश से भिन्न वर्ग आते हैं। इस सिद्धांत में वर्ग राशियों को ही दिये जाते हैं तथा हर वर्ग में १२ राशियों को मिलते हैं प्रचलित होरा में केवल सूर्य, चंद्र को वर्ग देते हैं तथा त्रिशांश में शेष ५ ग्रहों को। प्रत्येक वर्ग में मेष से प्रारम्भ करते हैं तथा क्रमानुसार मीन तक जाते हैं। फिर मेष से प्रारम्भ करके समाप्ति तक यही क्रम चलता है।) इस प्रकार सप्तम भाव मध्य में अशुभ वर्गों की अधिकता से दाम्पत्य जीवन के सुख में न्यूनता आती है।

५. सप्तमेश गुरु (६/१३/५७/३८ को भी सप्त वर्ग में ३ शुभ तथा ४ अशुभ वर्ग प्राप्त होने से दाम्पत्य जीवन के सुख में कमी ।

६. शुक्र(६/२४/९/५६) को सप्तवर्ग में ६ शुभ वर्ग तथा १ अशुभ वर्ग मिला है। इस कारण दाम्पत्य-जीवन में सुख देता है।

(ब) चंद्र लग्न से :

१. चंद्रमा धनु राशि में होने से सप्तम भाव मिथुन राशि में पड़ता है। यह अपने स्वामी बुध से पूर्ण दृष्टि से नहीं देखा जाता। बलवान शुभ ग्रह गुरु से दृष्ट होने से सुखी दाम्पत्य जीवन देता है।

२. सप्तमेश बुध का षड्बल लगभग ७ ¹/₂ रूप है। इस कारण वह बली होकर दाम्पत्य जीवन में सुख देता है।

३. कारक शुक्र ही रहेगा अत: उपरोक्त लग्न (३) में वर्णित सारे तथ्य यहां पर भी लागू होंगे।

४. सप्तम भाव मध्य २/२७/२४/२६ है। इसे ६ शुभ वर्ग तथा १ अशुभ वर्ग मिला है। शुभ वर्गों की अधिकता से सुखी दाम्पत्य जीवन है।

५. सप्तमेश बुध (६/१०/१८/३४) को ४ शुभ तथा ३ अशुभ वर्ग मिले हैं। शुभ वर्गों की अधिकता से सुखी दाम्पत्य-जीवन।

(६) शुक्र (६/२४/९/५६) को सप्तवर्ग में ६ शुभ वर्ग तथा १ अशुभ वर्ग मिला है। इस कारण दाम्पत्य जीवन में सुख देता है।

दु:खी दाम्पत्य–जीवन के योग :–

(अ) लग्न तथा चंद्र दोनों ही से सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं।

(ब) सप्तमेश : लग्न कुंडली में सप्तमेश गुरु शत्रु-क्षेत्री है तथा पाप ग्रह शनि से दृष्ट है। गुरु के नवांश का स्वामी शनि पाप ग्रह है।

चंद्र कुंडली से सप्तमेश बुध मित्र क्षेत्री है। परंतु इसके नवांश मकर का स्वामी शनि पाप ग्रह है।

(स) कारक शुक्र का स्वराशि तथा स्व नवांश में होना अच्छा है। परंतु अस्त होने से दोषी है तथा हीनबली भी है। षड्बल में लगभग ४ ³/४ रूप बल मिला है।

अष्टम भाव :- यह कुंडली स्त्री की है अत: इसका अष्टम भाव भी विचारना होगा।

जन्म लग्न से अष्टम भाव मेष राशि में पड़ता है। यह भाव अपने स्वामी मंगल से दृष्ट नहीं है। परंतु दो मित्र ग्रहों सूर्य तथा गुरु से दृष्ट है। तीन शुभ ग्रह बुध, गुरु और शुक्र से भी दृष्ट हैं। इस कारण पति का सुख देता है।

चंद्र लग्न से अष्टम भाव कर्क राशि में पड़ता है। यह भाव अपने स्वामी से दृष्ट नहीं। दो पाप ग्रहों-शनि, राहु से दृष्ट है। अष्टम में केतु की स्थिति मांगल्य में बाधा डालती है।

सूक्ष्म अध्ययन के लिये नवांश कुंडली को देखते हैं। इस कुंडली का लग्न कर्क है जिसका स्वामी चंद्रमा इसमें छठे स्थित है जो अशुभ फलदायी है। परंतु सप्तम में बुध तथा अष्टम में गुरु होने से यह चंद्रमा लग्नाधि योग का एक घटक हो जाता है। लग्न से ६, ७, ८ में शुभ ग्रहों के होने से यह योग बना जो शुभ फल देता है।

नवांश कुंडली में मंगल, बुध, राहु और केतु केन्द्र में हैं तथा सूर्य शुक्र लाभ स्थान में। अत: ये ग्रह अपनी दशा/अंतर्दशा में शुभ फलदाई। जातक का विवाह चंद्र महादशा के सूर्य अंतर में हुआ।

तृतीयस्थ शनि और अष्टमस्थ गुरु अपनी दशा/अंतर्दशा में अशुभ फल दे सकते हैं। इस समय शनि महादशा में शुक्र का अंतर चल रहा है।

दोनों उदाहरण एक पति-पत्नि के हैं जिनका विवाह मार्च १९५० में हुआ था।

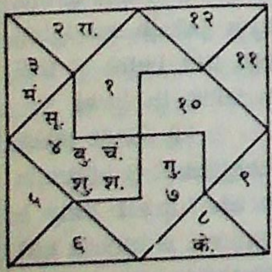
सम्पर्क सूत्र : ३२७८, सेक्टर १५ डी, चंडीगढ़-१६००१५

पाकिस्तान का लोकतंत्र बनाम सैनिक शासन

रमेश चन्द्र जैन, ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र,
बिजौलियाँ- ३११६०२ (राज.), फोन : ०१४८९-३६१३६

भारत और पाकिस्तान दोनों एक ही साथ १४/१५ अगस्त १९४७ की महानिशा में अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होकर विभाजित होने के साथ जब स्वतंत्र हुए तब दोनों देशो की ग्रह स्थितियां तो समान थी लेकिन लग्न की राशियों में अन्तराल था। इसी महत्वपूर्ण अन्तर की वजह से दोनों देशों के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास में जमीन आसमान का अन्तर हैं। जब भारत आजाद हुआ स्थिर लग्न राशि वृषभ उदय हो रही थी और तृतीय पराक्रम भाव में पंचग्रही योग चल रहा था। इसी के विपरीत पाक में चर लग्न राशि मेष का उदय हो रहा था और चतुर्थ भूमिभाव में पंचग्रही योग विद्यमान था। जो दोनों देशों के उद्देश्यों में असमानता का प्रमुख कारण है। जहां एक और भारत विश्व के उन्नतिशील देशों में अग्रणी लोकतंत्रीय प्रणाली से विख्यात राष्ट्र हैं। वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान अभी तक अनेक विवादों से ग्रसित अल्पविकसित सैनिक शासित और आंतककारी (उग्रवादी) राष्ट्र के नाम से ख्यात हैं।

पाक कुंडली



प्रत्येक कुंडली में लग्न लग्नेश का विशेष महत्व होता है। ये दोनों राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। पाक की लग्न राशि मेष और इसका स्वामी अंगारक मंगल अग्नितत्व प्रधान क्रूर संज्ञक हैं।इस राशि और ग्रह से प्रधान व्यक्ति पुरूषार्थी, महत्वाकांक्षी, धैर्यशील, आज्ञाकारी, साहसिक कार्यों में अग्रणी, और महत्वपूर्ण पदों को शोभित करने वाले नेतृत्व प्रधान होते हैं। साथ ही हिंसा, भय, लूट, आतंक, अपहरण, बलात्कार, रक्तपात, क्रूरता, हिंसा व युद्धादि कार्यों में भी इस ग्रह की विशेष भूमिका रहती है। विशेषतया भूमि विवाद में अग्रणी रहता है। राशि व ग्रह पर शुभ ग्रहों का प्रभाव जातक को ख्याति प्रसिद्धि प्रदान करते हैं। इसी के विपरीत पाप ग्रहों का प्रभाव जातक को कुख्यात व अपयश के भागीदार बनाते हैं।

पाक की लग्न राशि व लग्नेश मंगल और लाभ भाव पर गुरु की शुभ दृष्टि का प्रभाव है। जो पाक का अस्तित्व बनाने में सहायक है। लेकिन साथ ही लग्न पर शनि की दृष्टि पाक के दीर्घकालीन अस्तित्व में बाधक हैं। तृतीय भाव में मिथुन राशि का मंगल राहु नक्षत्र का पाप ग्रहों के मध्य स्थित हैं। जो पाक के नेतृत्व को दुर्बल करता है, लेकिन सैनिक शासकों के वर्चस्व को बरकरार रखता है

क्रूरा महाक्रूरा की लोकोक्ति के अनुसार जब पापग्रह पाप प्रभावित हो तो उसकी शुभता क्षीण हो जाती है। मंगल क्रोध व नेतागिरी करने में अत्यन्त आतुरता करता है। दूषित मंगल का ऐसा स्वभाव सा बन जाता है कि वह किसी नियम कानून या शासक को अधिक दिन तक नहीं देख सकता है। ऐसे वातावरण में जो भी व्यक्ति शासन करता है या शासन के विरूद्ध आवाज उठाता है या राष्ट्रहित की बात करता है तो उसे पदच्युती का सामना करना पड़ता है और किसी भी प्रकार की सजा देने में हिचकिचाहट नहीं होती है। पाकिस्तान के अपदस्थ शासकों को व सेना प्रमुखों का लम्बा इतिहास इसका प्रमाण है।

द्वितीय वाणी कुटुम्ब व धन भाव में राहु स्थित हैं। ज्योतिष के मान्य ग्रन्थों के अनुसार दूसरे घर का मालिक पाप ग्रहों से युत हो और दूसरे घर में पापग्रह बैठे हों तो नि:स्वयोग होता हैं। पाक का द्वितीयेश शुक्र पापयुक्त और द्वितीय में पापी राहु स्थित हैं। जिसके पास अपना कुछ नहीं होता है; दांत और नेत्र खराब होते हैं; अच्छे वचन नहीं बोलता और कुटुम्ब भी विफल होता है। अच्छी संगति में नहीं रहता; बुद्धि पुत्र, विद्या और वैभव से हीन होता है। जिसके धन को शत्रु लोग हर लेते हैं। यह नि:स्वयोग का अर्थ है? जो पाक राष्ट्र में न्यूनाधिक रूप से लागू होता है। चन्द्र राशि से राहु लाभ में और गुरु की लाभ भाव पर दृष्टि पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को येन केन प्रकारेण मजबूत रखता है। लेकिन सूर्य नक्षत्र का राहु पाक की आन्तरिक स्थिति व एकता में विविध बाधाओं का उत्पादक हैं। पाकिस्तान में अनेक पार्टियों व नेताओं पठानों का वर्चस्व है। प्रान्तों में भी विरोध, वैमनस्यता, उपद्रव, अशान्ति व झगड़े चलते रहते हैं। दूसरे भाव का राहु कपट की वाणी या दो अर्थ की बात बोलने वाला होता है। पाकिस्तान भारत के खिलाफ सर्वत्र और सभी माध्यमों से दुष्प्रचार जारी रखता है और झूठे वक्तव्य देता ही रहता है।

राजनीतिकारक राहु इस्लाम का प्रतिनिधि ग्रह है। लग्न स्वामी मंगल राहु नक्षत्र का धार्मिक उन्माद उत्पन्न करता है। इस्लाम खतरे में है। इसी एक मात्र औजार से पाक के शासक राजनैतिक शक्ति प्राप्त करते हैं। जेहाद का उद्घोष करते हैं और वहां के धार्मिक नेता जनता व सैनिक प्रमुखों पर प्रभाव बनायें रखते हैं।

चतुर्थ भाव जनमत, मातृभूमि, गृहशान्ति व शिक्षा का भाव होता है। जहां चन्द्र राशि पाप ग्रहों से प्रभावित लोकतंत्र में बाधक है तथा विश्व के अन्य राष्ट्रों से भिन्न इस राष्ट्र की पृथक छवि बनाने में सहायक हैं। चन्द्रमा जन जन का मन होता है। लेकिन क्षीण है। जनमानस को दूषित करता है और शिक्षा का प्रतिशत घटाता है। बुध तृतीय षष्ठ का स्वामी होने से हानिकारक है। पाकिस्तान में सैनिकों का हस्तक्षेप करता है और पड़ोसी राष्ट्र भारत से नियमित रूप से शत्रुता का भाव रखता है। शुक्र द्वितीय सप्तम का स्वामी होने से आर्थिक विषमताएं, क्रयशक्ति का ह्रास, कुटुम्बियों

में विरोधाभास, महिला अधिकारों की हानि, मिथ्या और झूठे वक्तव्य की उत्पत्ति करता हैं। पंचमेश सूर्य शुभ हैं, लेकिन अशुभ शनि के साथ हो जाने से पांचों ग्रहों का सहवास चतुर्थ भाव को बिगाड़ रहा है।। जिसकी वजह से भूस्वर्ग कश्मीर के भाग को लेकर भारत से शत्रुता व बदले की भावना पाल रखी है।

पाप ग्रह जहां भी स्थित होते हैं उस भाव को और जिसे देखते हैं उस भाव को खराब करते हैं। पाक कुंडली का चतुर्थ भूमि भाव पाप ग्रहों से प्रभावित होने से पाकिस्तान कश्मीर को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाने पर आमदा है और इसी भाव से सूर्य शनि की दृष्टि राज्य भाव पर होने से शासन संचालन में कुशल नैतृत्व का पाकिस्तान में अभाव हैं। चन्द्र कुंडली से भी सातवें भाव पर मंगल शनि की दृष्टि पाकिस्तान में अत्यधिक और अनावश्यक सैन्य सामग्री और सैनिक शासन की मनोवृत्ति बनाते हैं। शनि लोकतंत्र व राजनीति का ग्रह हैं। लेकिन पाकिस्तान की कुंडली में योग कारक न होकर राजयोग भंग करता है। इसलिये पांच दशक व्यतीत हो जाने पर भी पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकारें अकालग्रस्त रही हैं और सेनापतियों का बोलबाला चलता आ रहा हैं।

किसी भी जातक की कुण्डली में जब तक अनुकूल दशा का आगमन नहीं होता तो उसका सारा जीवन उथल-पुथल में ही व्यतीत हो जाता है। लगभग यही स्थिति पाक कुण्डली में विद्यमान हैं। वृहस्पति का लग्न व मंगल पर शुभ प्रभाव तथा चन्द्र से केन्द्र में गुरु के होने से पाकिस्तान का अस्तित्व बना हुआ है। लेकिन आठवें भाव का केतु मंगल से षडाष्टक होने से अकाल मृत्यु में सहायक बनता है। राष्ट्र को विविध संकटों की ओर धकेलता है। जन्म का शनि चन्द्र राशि और लग्न दोनों पर अशुभ प्रभाव रखता है।

पाकिस्तान अपने जन्म से अगस्त १९६५ तक शनि महादशा के प्रभाव में रहा। शनि शत्रु भाव के बुध नक्षत्र का है। दशा आरम्भ से ही प्रथम युद्ध भारत के साथ किया। सितम्बर ४९ से मई ५२ बुध अवधि शनि दशा में सितम्बर ५१ में प्रधानमंत्री लियाकत खाँ की हत्या हुई। उपरान्त जून ५३ से अगस्त ५६ शुक्र अवधि शनि दशा में नजरुद्दीन और मोहम्मद अली प्रधानमंत्री बने और अगस्त सितम्बर ५५ में अपदस्थ कर दिये गये। अगस्त ५७ से फरवरी ५९ मनकारक चन्द्र अवधि दशा में अक्टूबर ५७ में सुहरावर्दी सरकार का पतन हुआ और अक्टूबर ५८ में सैनिक शासक अयूबखां ने पाकिस्तान की सत्ता संभाली और सैनिक शासन लागू कर दिया।

सितम्बर १९६५ से अगस्त १९८२ तक पाक बुध महादशा के प्रभाव में रहा। बुद्धि कारक बुध शनि नक्षत्र का जिन ग्रहों के साथ होता है उसी के अनुरूप फल देता है। पाकिस्तान की कुण्डली में तृतीय व शत्रु भाव का स्वामी होने से पापी व अशुभ है। तृतीय से पड़ोसी राष्ट्र का विचार होता है। ज्यों ही दशा आरम्भ हुई सितम्बर ६५ में भारत के साथ दूसरा युद्ध किया और पराजित हुआ। जनवरी ६९ से नवम्बर ७१ शुक्र अवधि बुध दशा में मार्च ६९ में सैनिक शासक याह्या खां ने अयूब खां को सत्ता से हटाकर सैनिक शासन संभाला। और इसी अवधि में ७ दिसंबर १९७० को पाकिस्तान के इतिहास में पहली बार आम चुनाव हुए और जुल्फीकार भुट्टो प्रधानमंत्री बने। दिसम्बर ७१ से सितम्बर ७२ सूर्य अवधि बुध दशा में तीसरी बार भारत के साथ युद्ध किया और पराजित हुआ। सूर्य आत्मकारक होने से पाकिस्तानी की आत्मा पीड़ित हुई। पाकिस्तान का एक और विभाजन हुआ। पूर्वी पाकिस्तान स्वतन्त्र हुआ। याह्या खां ने पाकिस्तान की सारी शक्ति भुट्टों को सौंपी और जुलाई ७२ में भारत पाकिस्तान के मध्य महत्वपूर्ण शिमला समझौता हुआ। अक्टूबर ७२ से फरवरी ७४ मनकारक चन्द्र अवधि बुध दशा में १९७३ में पाकिस्तान में लोकतान्त्रिक संविधान लागू हुआ और आम चुनाव हुए। भुट्टो प्रधानमंत्री बने। मार्च ७५ से सितम्बर ७७ राहु अवधि बुध दशा में मार्च ७७ में (दूसरी बार) आम चुनाव हुए और भुट्टो पुनः सत्ता में आये। लेकिन जुलाई ७७ में सैनिक शासक जिया उल हक ने प्रधानमंत्री भुट्टों को अपदस्थ कर जेल में डाल दिया और पुनः शक्तिपूर्वक पाकिस्तान की सत्ता संभाल ली। और सैनिक शासन लागू कर दिया और सितम्बर ७७ से दिसम्बर ७९ के मध्य गुरु अवधि बुध महादशा में अपदस्थ प्रधानमंत्री भुट्टों पर मुकदमा चलवाकर फांसी पर लटका दिया।

सितम्बर ८२ से अगस्त ८९ तक केतु महादशा का प्रभाव रहा। केतु शनि नक्षत्र का आयु भाव में स्थित हैं। सितम्बर ८७ से अक्टूबर ८८ शनि अवधि केतु दशा में अगस्त ८८ में जिया उल हक की विमान दुर्घटना में अकाल मृत्यु हुई और नवम्बर ८८ से अक्टूबर ८९ बुध अवधि केतु महादशा में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो विश्व की पहली युवा महिला प्रधानमंत्री बनी।

सितम्बर ८९ से शुक्र महादशा चल रही हैं शुक्र शत्रु राशि का सूर्य बुध शनि चन्द्र से पाप प्रभावित होकर केन्द्र में स्थित है। ज्योतिष के पंचग्रही योगानुसार जातक धनहीन, दीर्घाकृति, शरीर में अनेक रोग, पुत्र नष्ट हो जाये ऐसी स्थिति रहती हैं। ज्योतिष ग्रन्थों का यह भी मत है कि सूर्य चन्द्र दोनों कर्क या सिंह राशि में हो तो मनुष्य का शरीर कृश होता है। पापदृष्ट और अन्य दुर्योग होने से यक्ष्मा भी हो जाता है। पाकिस्तान की तुलना उक्त दोनों योगों से की जा सकती है। सितम्बर ८९ से दिसम्बर ९२ शुक्र अवधि शुक्र दशा में बेनजीर को पद छोड़ना पड़ा और १९९०-१९९१ में नवाज शरीफ प्रधानमंत्री बने। जनवरी ९३ से दिसम्बर ९३ सूर्य अवधि शुक्र दशा में नवाज शरीफ अयोग्य घोषित हुये; पुनः प्रधानमंत्री बने; और बर्खास्त हुये और अस्पष्ट बहुमत से बेनजीर भुट्टो पुनः प्रधानमंत्री बनी। नवम्बर ९६ से अक्टूबर ९९ राहु अवधि शुक्र महादशा में पाकिस्तान की राजनीति में आश्चर्यजनक मोड़ आया।

नवम्बर ९६ में बेनजीर बर्खास्त हुई और फरवरी ९७ में नवाज शरीफ दो तिहाई बहुमत से पुनः प्रधानमंत्री बने और फरवरी ९९ में भारत पाक के मध्य लाहौर समझोता हुआ। मई ९९ में चतुर्थ कारगिल युद्ध हुआ। सेना और सरकार के मध्य मतभेद उजागर हुए। जिसकी परिणति स्वरुप १२ अक्टूबर ९९ को आर्मी चीफ परवेज मुशर्रफ ने नवाज शरीफ को सत्ता से अपदस्थ कर जेल में डाल दिया और पाकिस्तान की सत्ता बलपूर्वक संभाल ली। यह घटनाक्रम ठीक उसी प्रकार से घटित हुआ जब १९७७ में राहु अन्तरदशा में जिया उल हक ने भुट्टो को अपदस्थ कर जेल में डाल दिया था।

उपरोक्त ज्योतिषीय विश्लेषण से यह जाहिर है कि ग्रहों के दूषित प्रभाव से पाकिस्तान में लोकतान्त्रिक सरकारें अकालग्रस्त रही और सैनिक शासन और इस्लाम कट्टरपंथिता का बोलबाला पाकिस्तान में हावी रहा।

पाकिस्तान की कुंडली में शुभ ज्योतिष योग और ग्रहस्थितियों का अभाव है और पापग्रहों का वर्चस्व हैं। पापग्रह अनिष्ट कारक और संहारक होते हैं। लग्न राशि मेष युद्धप्रिय हैं और मंगल युद्ध का देवता है। पाकिस्तान अपने जन्म से ही भारत से बदले की भावना से प्रेरित होकर चार युद्ध कर चुका है और छद्म युद्ध सदैव जारी रखता है। राहु पृथकतावादी आणविक अस्त्र-शस्त्र, बम विस्फोट, भय आतंक, निर्दयता में सहयोगी की भूमिका निभाने में सहायक हैं। शनि लग्न व चन्द्र राशि को प्रभावित करते हुये राष्ट्र की सुख शान्ति व सुशासन में बाधक हैं। यद्यपि चन्द्र, बुध, शुक्र नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं जो पाक राष्ट्र की पहचान बनाये हुए हैं लेकिन भाव अधिपत्य से तथा सूर्य शनि के संसर्ग से दूषित है जिसकी वजह से पाक की धरती पर अनेक उग्रवादी और आतंककारी संगठन पाकिस्तान में सक्रिय हैं राहु केतु जोखिम भरे कार्यों, मादक तस्करी, हत्या, अपहरण में विशेष भूमिका निभाते हैं। एक मात्र बृहस्पति पाकिस्तान के भाग्य में सहायक है।

शुक्र भोग विलास सुन्दरता राजनैतिक गतिविधियाँ और स्त्रीयोचित गुणों का ग्रह है। चतुर्थ भाव में दिशा बली है। पाकिस्तान की कुंडली में द्वितीय धन कुटुंब और सप्तम सैन्य शक्ति, व्यापार, वादविवाद भाव का स्वामी है और बुध नक्षत्र का होकर पाप प्रभाव में हैं। जो पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को आशाजनक नहीं रखेगा। अनुचित कार्यों में अधिक लिप्त करेगा। सप्तमेश होने से मारकता का प्रभाव रखता है। फलस्वरूप पाकिस्तान का अधिकांश व अत्यधिक व्यय मारणात्मक सामग्री सैनिक संसाधन व सैन्य शक्ति बढ़ाने पर होगा। जिससे पाक ऋणग्रस्त और दिवालिया भी हो सकता है। शुक्र महादशा के दस वर्ष व्यतीत हुए हैं और दस वर्ष अभी भोगने शेष हैं। विगत एक दशक में पाकिस्तान ने सैन्य संसाधन, नशीले पदार्थों की तस्करी, व्यापार आणविक अस्त्र शस्त्र बढ़ाने व अनेक आतंकवादी और उग्रवादी संगठनों को कश्मीर भारत और विश्व के अन्य भागों में सक्रिय व संचालन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं। शुक्र द्वितीयेश होने से भी मारक हैं। जो वहां के कुटुम्बियों में परस्पर विरोधाभास और आन्तरिक एकता में विघटन का प्रमुख कारण हैं। नवम्बर ९९ से जून २००२ तक शुक्र महादशा में गुरु की अन्तरदशा रहेगी। गुरु पाक की कुंडली में भाग्य-धर्म-न्याय और बारहवें व्यय हानि, दो भाव का स्वामी होकर लग्न लाभ और मंगल पर शुभ दृष्टि रखता है। प्रमुख त्रिकोण का स्वामी होने से योगकारक है। शुक्र और गुरु नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं। लेकिन गुरु देवताओं का और शुक्र राक्षसों का आचार्य है परस्पर शत्रु भाव रखते हैं। शुक्र राशि तुला भी गुरु की शत्रु राशि हैं। इसलिये इस महान ग्रह की शुभता में अशुभता भी विलीन हैं। शुभता की वजह से यदाकदा लोकतांत्रिक सरकारें प्रभाव में आती हैं और भारत से मैत्रीपूर्ण संवाद कायम करने में सफल होती हैं। लेकिन अशुभता की वजह से पाक की राजनीति में धार्मिक कट्टरवाद और सेना हावी रहती है। न्यायापालिकाओं का हनन होता है। कुशल नेतृत्व प्रसिद्धि में विविध व्यवधान उपस्थित होते हैं और भारत के प्रति सहानुभूति की जगह कट्टर विरोध प्रदर्शित करने की भावना सदैव जागृत रहती है। नवम्बर ९९ से गुरु की अन्तरदशा लगते ही २४ दिसम्बर ९९ को भारत का विमान अपहरण कांड इसका ज्वलंत उदाहरण है। गुरु महादशानाथ शुक्र का शत्रु है और शुक्र लग्नेश मंगल का शत्रु है। मई २००० तक शनि भी पाक की नीच लग्न राशि मेष में भ्रमण करेगा। इसलिये इस अवधि में पाकिस्तान भारत के विरूद्ध और अधिक शत्रुतापूर्ण वातावरण उत्पन करेगा। आतंककारी और उग्रवादी गतिविधियों में तेजी लायेगा। कश्मीर में भय आतंक फैलायेगा और निरपराध लोगों की हत्या करेगा। भारत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों का अपहरण या हत्या करने का प्रयास करेगा और अनेक संवेदनशील और महत्वपूर्ण ठिकानों को नष्ट भ्रष्ट करने की साजिश में लिप्त रहेगा। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ISI का जाल विश्वव्यापी दृष्टिगोचर होने लगेगा।

गुरु की लग्न पर दृष्टि सैनिक शासन को बल प्रदान करेगी और भारत विरोधी घोषित और अघोषित युद्ध के लिये प्रेरित करती रहेगी। परवेज मुशर्रफ मुजाहिदीनो के माध्यम से सैनिक शक्ति का विस्तार करेंगे और लोकतंत्र की जड़ें कमजोर करेंगें। पाकिस्तान में पुनः शीघ्र ही लोकतंत्र स्थापित हो जाए इसकी संभावनाएं लगभग क्षीण सी रहेगी।

जून व अगस्त २००० से शनि गुरु का वृष में और राहु का मिथुन राशि में भ्रमण होगा। जो पाक की आन्तरिक स्थिति को दूषित करेगा। असाधारण गतिविधियाँ जन्म लेने लगेंगी। जो पाकिस्तान के भविष्य के लिये प्रश्नवाचक चिन्ह लगायेगीं। महत्वपूर्ण प्रान्तों में अराजकता और राजद्रोह की स्थिति उत्पन्न होगी। यद्यपि पाक की जनता पर सैनिक सरकार का नियंत्रण रहेगा। लेकिन असंतोष अशान्ति की ज्वालाएं भी भभकने लगेगी। सितम्बर से जनवरी २००१ के मध्य गुरु शनि के वक्रत्व काल में और जून २००२ तक पाकिस्तान का एकमात्र उद्देश्य भारत विरोधी षडयंत्रों को अंजाम देने का ही रहेगा। इस अवधि में पाकिस्तान द्वारा छद्म युद्ध, महायुद्ध, आतंक,

उग्रवाद, छल-कपट इत्यादि चरम सीमा पर रहेंगे। गुरु की मंगल पर दृष्टि परमाणु युद्ध भी करवा सकती हैं। विश्व की महाशक्तियाँ अमेरिका, चीन, ब्रिटेन इत्यादि महाराष्ट्र भी पाकिस्तान के अस्तित्व एवं गतिविधियों को लेकर चिंतित होंगे। लेकिन ये राष्ट्र स्वार्थों के अभिप्रेत पाकिस्तान के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करने में असमर्थ ही रहेंगे।

जुलाई २००२ से अक्टूबर २००५ शुक्र महादशा में शनि की अन्तरदशा पाकिस्तान के अस्तित्व के लिये अशुभ सूचक रहेगी। इस अवधि में गृह युद्ध या देश विप्लव की स्थिति उत्पन्न होनी संभव रहेगी। पाकिस्तान का तीसरा और अन्तिम विभाजन होने की पूर्ण संभावना है। पूर्वोत्तर और दक्षिण भाग खंडित हो सकते हैं।

पाकिस्तान की कुंडली दूषित मंगल प्रधान है। इसलिये भारत से संवाद या द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से कोई सुलह समझौता हो जाय इसकी कतई संभावना नहीं है। भूमि भाव पाप ग्रहों से प्रभावित होने से पाकिस्तान वर्तमान अस्तित्व में नहीं रह पायेगा और न ही लोकतंत्र और सैनिक सरकार स्थायी रूप से स्थापित हो पायेंगी। अस्तित्व रहने तक अस्थिरता अशान्ति बनी रहेगी। प्रत्येक वर्ष के अगस्त सितम्बर और अक्टूबर मास शुभ व अशुभ घटनाओं से ओतप्रोत रहेंगे।

पृष्ठ २१७का शेष

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के क्रांति शर
(प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टें. टा.) संवत् २०५८ वि.

मास ता.	यूरेनस,				नेप्च्यून,				प्लूटो			
	क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अप्रैल १	द. १४	२०	द. ०	४१	द. १८	२	उ. ०	९	द. ११	५७	उ. १०	४४
मई १	१४	१	०	४२	१७	५५	०	९	११	४८	१०	४९
जून १	१३	५६	०	४४	१७	५७	०	९	११	४३	१०	५०
जुलाई १	१४	५	०	४५	१८	५	०	९	११	४२	१०	४५
अगस्त १	१४	२५	०	४५	१८	१८	०	८	११	४९	१०	३५
सितंबर १	१४	४९	०	४५	१८	३०	०	८	१२	१	१०	२२
अक्टू. १	१५	७	०	४५	१८	३८	०	८	१२	१६	१०	९
नवम्बर १	१५	१३	०	४४	१८	३९	०	७	१२	३२	९	५९
दिसंबर १	१५	४	०	४३	१८	३२	०	७	१२	४५	९	५३
जनवरी १	१४	४९	०	४२	१८	१८	०	६	१२	५४	९	५२
फरवरी १	१४	९	०	४२	१८	१	०	६	१२	५५	९	५५
मार्च १	द. १४	[illegible]	द. ०	[illegible]	द. १७	[illegible]	उ. ०	६	द. १२	५२	उ. १०	१

।। श्री नाथजी ।।

हनुमानजी की साधना से धन ऐश्वर्य सुख समृद्धि की प्राप्ति

- रमेश चन्द्र नामधर श्री नव दुर्गा ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

प्राचीन शास्त्रों, तांत्रिक ग्रन्थों में हनुमान साधना के ऐसे चमत्कारी मन्त्र-तन्त्र स्तोत्र दिये गये हैं जिसका श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान या पाठ करने से धनं, ऐश्वर्य, सुख, समृद्धि, प्रतिष्ठा के साथ साथ मानव की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। भगवान शंकर के ग्यारहवें रुद्र अंजनी नन्दन पवन सुत हनुमानजी आज भी पृथ्वी पर विद्यमान हैं और भक्तों के दुःख दूर करने में सक्षम हैं। अनेकों साधु-सन्तों, सिद्ध साधकों- योगियों- उपासकों को इस घोर कलियुग में मारुति नन्दन के दर्शन भी हुए हैं।

आज की विषम परिस्थिति, आर्थिक मन्दी और भयंकर मंहगाई में मनुष्य का मन दुर्बल या पंगु बन गया है। रात दिन चिन्ता, भविष्य की आशंका, दरिद्रता, मृत्यु का डर, शोर-शराबा, मानहानि, गुण्डागर्दी, नौकरी, व्यापार में अस्थिरता, भ्रष्टाचार, परिवार में कलह, आपस में मुठभेड़, एक दूसरे के प्रति अविश्वास, शासन की अस्थिरता, मारकाट, आतंकवाद, लूटपाट, चोरी-डकैती, बलात्कार तथा अन्य विभिन्न असाध्य रोगों के कारण मनुष्य का मन भयभीत, शक्तिहीन, असहाय सा हो गया है। हर व्यक्ति सुख-शान्ति की खोज में भटक रहा है लेकिन शान्ति कहीं नहीं दिखाई दे रही है। जब मानव का मानवीय बल समाप्त हो जाए तो हर प्राणी को हनुमानजी की साधना का सहारा लेना चाहिये जिससे बल, बुद्धि, विद्या, अतुलनीय साहस, पराक्रम, शक्ति प्राप्त हो सके।

भगवान शंकर के अवतार राम भक्त अतुलित बलधाम हनुमानजी की नियमित साधना से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक चिन्ताओं से मुक्ति, शक्ति, बल, तेज, पराक्रम, साहस की प्राप्ति, धन, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, व्यापार-व्यवसाय, उद्योग-धन्धे, कल कारखाना में आश्चर्य जनक उन्नति, भय, व्याधि, पीड़ा, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी, यक्षिणी, वीर-बेताल, अन्य शक्तियों से मुक्ति, राजभय, शत्रुभय, मृत्युभय, दारुण संकट से मुक्ति, बुद्धिहीन विद्यार्थियों को बल-बुद्धि, विद्या की प्राप्ति, समस्त सांसारिक कष्टों और विपत्तियों का नाश नियमित साधना से दूर किया जा सकता है।

मेरा छोटा भाई अफसरों की अनबन, भयंकर शत्रुता के कारण सरकारी सर्विस खो चुका था और फिर से नौकरी पाने के लिए न्यायालय के चक्कर काट रहा था। मैंने परामर्श दिया कि हनुमान चालीसा, संकटमोचन हनुमानाष्टक और बजरंग बाण को प्रातः रात्रि श्रद्धा भक्ति- विश्वास से मेंहदीपुर बालाजी और सालासर हनुमानजी का चित्र स्थापित करके पाठ करो फिर से सरकारी सर्विस लग जायेगी। मुकदमे में विजय मिलेगी और

भ्रष्ट अधिकारियों को हनुमानजी दंड भी देंगे। हनुमानजी की कृपा से एक वर्ष बाद सरकारी सर्विस का आदेश मिला और भ्रष्ट अधिकारी असाध्य रोग से ग्रसित हो गये।

विश्व प्रसिद्ध विष्णु स्वरूप श्रीनाथजी की तीर्थ नगरी नाथद्वारा में शाक्त, शैव, वैष्णव, जैन सम्प्रदाय के लोग, बड़े-बड़े धनपतियों, उद्योगपतियों, सिद्ध साधकों उपासकों, साधु-सन्त, योगियों का आगमन होता रहता है। उनका मानना है कि कलियुग में हनुमान, भैरव गणपति, लक्ष्मी-काली-दुर्गा-अन्नपूर्णा, शिव-शक्ति की साधना शीघ्र फलदायी होती है। साधना सिद्ध गुरु से मंत्र दीक्षा लेकर करनी चाहिये जिससे साधना में विघ्न बाधा उपस्थित न हो।

हनुमानजी की असीम अनुकम्पा धन, ऐश्वर्य, सुख-शान्ति-समृद्धि, व्यापार-व्यवसाय-उद्योग-धन्धे से निरन्तर उन्नति चाहने वाले साधक मूल मंत्र का जाप या हनुमान चालीसा- संकट मोचन हनुमानाष्टक का पाठ स्वयं करे और अपने नाम से मारुति स्तोत्र- राम रक्षा स्तोत्र या रुद्रयामलोक्त सम्पुटित श्री सूक्त का पाठ भगवान श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा कम से कम तीन वर्ष या पाँच वर्ष तक श्रद्धा से करवायें। श्रीनाथजी और सुदर्शन चक्र की रक्षार्थ चारों दिशाओं के सिद्ध हनुमानजी का स्वरूप नाथद्वारा में विराजमान है वे आपके समस्त मनोरथ पूर्ण करेंगे।

मैं पाठकों की सेवा में सिद्ध अमोघ गुरु गम्य- सिद्ध हनुमान साधकों के चमत्कारी मन्त्र प्रयोग बता रहा हूँ आप श्रद्धा- भक्ति- विश्वास से नियमित एक माला जप करे और अधिक से अधिक इष्ट मित्रों को भी मंत्र प्रयोग बताएं। आप पर मारुति नन्दन हनुमानजी की असीम अनुकम्पा होगी। जब हनुमान जी की कृपा हो गई तो भगवान राम-सीता शिव-शक्ति की कृपा स्वतः हो जायेगी।

हनुमानजी के चमत्कारी मन्त्र प्रयोग

मंत्र न. १ :-

"ॐ नमो चिंतामणि हनुमते आयुष्य आरोग्य ऐश्वर्यादि वांछित सकल मम् अष्ट सिद्धि नव निधि देहि देहि स्वाहा"

इस मंत्र को श्रद्धा भक्ति विश्वास से राम पंचायत मेहंदीपुर बालाजी या सालासर हनुमानजी का रंगीन चित्र के पास प्राण प्रतिष्ठित श्री यन्त्र, लक्ष्मी यन्त्र, कुबेर यन्त्र, गणपति यन्त्र ताम्र पत्र या फोटोग्राफ के यन्त्र स्थापित करके स्वयं ऊन के आसन पर पूर्व या उत्तर मुँह बैठकर रुद्राक्ष या लाल चंदन की माला से १०८ बार जप करे हनुमानजी की साधना के पूर्व रामनाम का स्मरण 'ॐ नमः शिवाय' के जप से हनुमानजी शीघ्र प्रसन्न होते हैं। हनुमानजी को नैवेद्य में तुलसी पत्र चढ़ायें। इस मंत्र के प्रभाव से आयुष्य आरोग्य- धन ऐश्वर्य सुख- समृद्धि की वृद्धि होगी। मंत्र जप प्रातः या रात्रि में घर में कर सकते हैं।

मंत्र न. २ :-

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते हनुमते मम कार्येषु ज्वल ज्वल प्रज्जवल प्रज्जवल असाध्यं साधय साधय मां रक्ष रक्ष सर्व दुष्टेभ्यो हुँ फट् स्वाहा"

इस मंत्र को प्रथम मंत्र की विधि के अनुसार कम से कम एक माला या पाँच माला जप करें। इस मंत्र के प्रभाव से भूत-प्रेत-पिशाच, अदृश्य शक्तियों से रक्षा, रोग निवृत्ति, शत्रुओं का विनाश, इच्छित लक्ष्मी प्राप्ति, व्यापार-व्यवसाय, उद्योग-धन्धे में आश्चर्य जनक उन्नति कठिन से कठिन कार्य में सफलता मिलती है। इस मंत्र की नियमित साधना से दुष्ट शत्रुओं द्वारा व्यापार में किया गया तांत्रिक प्रभाव या भेली विद्या का प्रकोप समाप्त होकर, व्यापार धन्धा भाग्य बन्धा हो तो खुल जाता है। हनुमानजी के श्रद्धा भक्ति से इन मंत्रों का जप करने से असमर्थ व्यक्ति आर्त भाव से हनुमान चालीसा, संकट मोचन हनुमानाष्टक, बजरंग बाण, हनुमान साठिका का नियमित पाठ कर सकते हैं।

मन्त्र ३ :-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अंजनी सुताय विद्महे वायु पुत्राय धी महि तन्नो हनुमत प्रचोदयात"

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध हनुमानजी की प्रतिमा या घर में एकान्त स्थल में मेहंदीपुर बालाजी के रंगीन फोटो के पास ताम्रपत्र के श्रीयन्त्र, लक्ष्मी यन्त्र, कुबेर यन्त्र, गणपति यन्त्र स्थापित करे।

हनुमानजी सहित सिद्ध यन्त्रों की पंचोपचार पूजन करके स्वयं ऊन के आसन पर पूर्व मुख बैठकर लाल चंदन या रुद्राक्ष की माला से २१ दिन में सवा लाख जप करें। प्रसाद मालपूवों का चढ़ाये फिर वे मालपुवे स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय ही करना है। २१वें दिन स्वप्न में नाग के दर्शन होंगे मंत्र साधना की सिद्धि का सूचक होगा। जप दिन की १० बजे या रात्रि को १० बजे बाद ही करना चाहिये। हनुमानजी की कृपा से स्वप्न में नाग दर्शन के बाद धीरे-धीरे धन, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, व्यापार-व्यवसाय में आश्चर्यजनक उन्नति होगी। अगर आपके अशुभ बाधक ग्रह के प्रकोप से धन हानि, भयंकर कर्जदारी बढ़ी हो तो ग्रह जप के साथ महामृत्युंज्य जाप करना कर साधन शुभ मुहूर्त पर करें। साधना काल में २१ दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करें क्षौर नहीं करवाये। अगर कोई साधक किसी कारणवश २१ दिन में सवा लाख जप करने में असमर्थ हो तो नियमित एक माला या पाँच माला या ग्यारह माला श्रद्धा से जप कर सकते हैं मारुति नन्दन की कृपा से धन-ऐश्वर्य समृद्धि धीरे-धीरे बढ़ेगी।

नाथद्वारा भगवान श्रीनाथजी की ध्वजा और सुदर्शन चक्र में अदृश्य रूप से साक्षात् हनुमानजी का पहरा है और नगर के चारों दिशाओं में सिद्ध चमत्कारी- चैतन्य हनुमानजी का स्वरूप विद्यमान हैं। पाठक गण नियमित रुद्रयामालोक्त सम्पुटित श्री सूक्त का पाठ मेरी देख रेख में करवा सकते हैं जिससे राम भक्त हनुमानजी की कृपा से समस्त

मनोकामना के साथ साथ धन ऐश्वर्य सुख समृद्धि- व्यापार व्यवसाय उद्योग-धन्धे में आश्चर्यजनक उन्नति होगी।

आज से ३० वर्ष पूर्व मेरे घनिष्ठ मित्र अर्थाभाव से अत्यन्त दु:खी- दारिद्र-संकट ग्रस्त भयंकर कर्जदारी से त्रस्त थे। भगवान श्री नाथजी के दर्शनाथ ज्योतिष-तांत्रिक विद्या के सिद्ध-उपासक सन्त का आगमन हुआ। उन्होंने मेरे मित्र की जन्म पत्रिका हस्त रेखा का अवलोकन करके परामर्श दिया कि शनि राहु-केतु ग्रह जप के साथ महामृत्युंज्य जप हर वर्ष श्रद्धा से योग्य विद्वान से करवाकर हनुमानजी की साधना करो और अपने नाम से कम से कम ५ वर्ष रुद्रयामालोक्त श्री सूक्त का पाठ श्री नाथजी- सुदर्शन चक्र की साक्षी में करवाओ जिससे पूर्व जन्म के पाप नाश होकर- साधना द्वारा लक्ष्मी कृपा व व्यापार- व्यवसाय में उन्नति होगी समस्त दु:ख दूर होंगे। मेरे मित्र ३० वर्षों से नियमित साधना कर रहे हैं। हनुमानजी की कृपा से आज लाखों का बैंक बैलेन्स, करोड़ों की जमीने, कारें, बंगले, आलीशान मारबल का व्यवसाय है। वे स्वयं इतने व्यस्त रहते हुये भी नियमित प्रात: रात्रि ११-११ माला श्रद्धा से जप करते हैं। मेरे मित्र का मानना है कि पुण्य से भाग्य परिवर्तन होता है रोग-शोक-संकट दूर होते हैं। मासिक वेतन से पंडितों को नियुक्त कर रखा है वे रुद्रयामालोक्त श्री सूक्त के साथ अन्य पूजा पाठ करते रहते हैं।

मंत्र ४ :- "ॐ नमो हनुमंताय आवेशय आवेशय स्वाहा"

मंगलवार को साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करके लाल ऊन के आसन पर बैठकर उपर लिखे प्रथम मंत्र की विधि अनुसार जप करे। शारीरिक बल, असाध्य रोग से छुटकारा, बैरोजगार को रोजगार की प्राप्ति होगी।

मंत्र ५ :- "ॐ ह्रीं मर्कट मर्कटाय सत्यं दर्श दर्शाय स्वाहा"

इस मंत्र का नियमित जप से स्वप्न में हनुमानजी धन रोजगार के मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रथम विधि अनुसार मंत्र जप करे।

मंत्र ६ :- "ॐ नमो हनुमते भय भजंनाय सुखं कुरु कुरु स्वाहा"

प्रथम विधि के अनुसार मंत्र जप से समस्त भय का नाश- सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

विचित्र वीर हनुमान स्त्रोत्रम्

ॐ ह्रीं नमो भगवते विचित्रवीर हनुमते प्रलय कालानल प्रभा- प्रज्वलनाय, प्रताप वज्र देहाय, अंञ्जनीगर्भ संभूताय, प्रकट वीर दैत्य दानव यक्षरक्षोगण ग्रह बंधनाय, भूतग्रह बंधनाय प्रेतग्रह बंधनाय- पिशाचग्रह बंधनाय, शाकिनी डाकिनी ग्रह बंधनाय- काकिनी ग्रह बंधनाय, ब्रह्म ग्रह बंधनाय- ब्रह्म राक्षस ग्रह बंधनाय, चौर ग्रह बंधनाय- मारिग्रह बंधनाय, एहि एहि आगच्छ आगच्छ, आवेशय आवेशय, मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय, स्फुर स्फुर, प्रस्फुर प्रस्फुर, सत्यं कथय- व्याघ्रमुख बंधन, सर्प मुख बंधन, राजमुख बंधन- नारी मुख बंधन, सभामुख बंधन- शत्रुमुख बंधन- सर्व मुख बंधन- लंका प्रसाद भञ्जन, अमुकं में वशमानय क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं राजान वश मानय। श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीणां आकर्षय आकर्षय शत्रून मर्दय मर्दय मारय मारय चूरय चूरय खे खे श्री राम चन्द्राज्ञया मम कार्य सिद्धि कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हें ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा"

मेहंदीपुर बालाजी के रंगीन फोटोग्राफ के सामने विचित्र वीर हनुमान स्तोत्र के ११०० जप करने से समस्त शत्रुओं का नाश, इच्छित लक्ष्मी प्राप्ति, भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी, काकिनी से रक्षा होती है। जब जब मैं संकट में पड़ा विचित्र वीर हनुमान के स्त्रोत्र से समस्त विघ्न बाधा संकटों से मुक्ति मिली।

इस हनुमान साधना संबंधित विशेष जानकारी जवाबी पत्र भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र:- रमेश चन्द्र नामधर, श्रीनव दुर्गा ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
९ श्री जी मार्केट नाथ द्वारा, जिला राजसमन्द (राजस्थान) ३१३३०१

पृष्ठ १७ का शेष

ग्रहों के उदयास्त

वि. सम्वत् २०५८ में मंगल अस्त नहीं होगा।

बुध	अप्रैल	११	पूर्वास्त
बुध	मई	५	पश्चिमोदय
बुध	जून	७	पश्चिमास्त
बुध	जून	२६	पूर्वोदय
बुध	जुला.	२४	पूर्वास्त
बुध	अग.	१९	पश्चिमोदय
बुध	अक्टू.	७	पश्चिमास्त
बुध	अक्टू.	२०	पूर्वोदय
बुध	नव.	१२	पूर्वास्त
बुध	दिस.	२९	पश्चिमोदय
बुध	जन.	२१ (२००२)	पश्चिमास्त
बुध	फर.	३	पूर्वोदय
बुध	मार्च	२५	पूर्वास्त
गुरु	जून	४	पश्चिमास्त
गुरु	जून	२८	पूर्वोदय
शुक्र	मार्च	२८	पश्चिमास्त
शुक्र	अप्रैल	१	पूर्वोदय
शुक्र	दिस.	२१	पूर्वास्त
शुक्र	फर.	८ (२००२)	पश्चिमोदय
शनि	मई	७	पश्चिमास्त
शनि	जून	१३	पूर्वोदय

पंचांगुली साधना का प्रत्यक्ष चमत्कार

हमने, 'सामुद्रिक शास्त्र के सन्दर्भ में हाथ की रेखाओं एवं पर्वतों के बारे में स्पष्ट वर्णन किया है। परंतु पंचांगुली साधना के विषय में वर्णन नहीं किया गया है। इस अध्याय में पंचांगुली साधना का प्रत्यक्ष चमत्कार एवं इसकी पूरी जानकारी प्रदान करने के लिए हम यह प्रयास कर रहे हैं। क्योंकि शास्त्र का मत है कि गुरु बिना गत नहीं शाह बिना पत नहीं। अर्थात् मैं अपने पूर्वजों के बताये हुए गोपनीय रहस्य को आज विश्व के सामने व्यवहारिक हस्त रेखा शास्त्र नामक इस पुस्तक में वर्णन कर रहा हूँ कि सफल भविष्य वक्ता बनने के लिए तथा ज्योतिष शास्त्र में विश्व विख्यात बनने के लिए पंचांगुली साधना अति आवश्यक है। क्योंकि हस्त रेखाओं की पुस्तकों का अध्ययन करने से सफल भविष्य वक्ता बनना असम्भव है, न ही उस भविष्यवाणी की सटीक आवाज होती है। ज्योतिष एवं हस्त रेखा विशेषज्ञ को अपने ईष्ट के बल पर डंके की चोट से भविष्यवाणी करनी चाहिए। इसलिए इस युग में साधक गुरु मिलना दुर्लभ है। जो किसी को विद्या का उच्च मार्ग दिखा दिखा सके। विश्व विख्यात कीरो जिसका आज भी नाम हस्त रेखाओं के क्षेत्र में विश्व की धरोहर बन कर गूंज रहा है परन्तु कीरो हस्त रेखाओं के विषय में इतना अनुभवी नहीं था। पंचांगुली साधना पूर्ण करने से उसका नाम विश्व में विख्यात हुआ पंचांगुली देवी की जिस भविष्य वक्ता के ऊपर पूर्ण कृपा हो उसके कहे हुए वचन कभी असत्य नहीं हो सकते। ऐसा भविष्य वक्ता त्रिकालदर्शी बन सकता है। अर्थात् तीनों कालों का भविष्य कथन स्टीक रूप में समय से पहले कर सकता है। आप लोगों ने हर किस्म के देवी देवताओं के चित्र तो देखे होंगे परन्तु पंचांगुली देवी का चित्र कुछ प्रमुख भविष्यवक्ताओं के पास ही उपलब्ध हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति नियम पूर्वक पंचांगुली देवी की साधना करता है, तो वह शीघ्र ही सफल भविष्य वक्ता बन सकता है। किसी भी व्यक्ति का हाथ देखने से उसका भूत, वर्तमान, भविष्य, भविष्य वक्ता के सामने साकार हो उठता है। ऐसे भविष्यवक्ता शुभ तथा अशुभ तथा सूक्ष्म रहस्यों से भी भलिभांति परिचित हो जाता है। यह साधना प्राचीन योगियों तथा सिद्ध पुरुषों के पास आज भी विराजमान है। परन्तु इस साधना का प्रयोग सिर्फ पात्र को ही देना चाहिये अपात्र को नहीं। सही गुरु के मिलने से वह व्यक्ति सफल भविष्यवक्ता बन जाता है, उसे ज्योतिष का ज्ञान तथा अंक विद्या एवं जन्म पत्री ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं होती।

पंचांगुली देवी की साधना कैसे करें?

सन् १९७५ में मैंने पंचांगुल देवी की साधना युवावस्था में की थी। इस साधना के लिए सिद्ध पुरुष एवं ज्योतिष शिरोमणि स्व. पं दुर्गानन्द ज्योतिर्विद, ग्राम तलवाडा निवासी नंगल डैम जिला रोपड़ (पंजाब) के द्वारा मुझे पंचांगुली साधना का चमत्कार प्रयोग कराया गया। परन्तु यह साधना इतनी कठिन है कि आम व्यक्ति इस साधना को नहीं कर सकता। तपस्या का अर्थ है कि तपाना तथा उस तपस्या की कृपा से व्यक्ति आनन्द विभोर हो उठता है। फिर उसके ऊपर भूख, प्यास, सुख, दुख, जागना सोना, सब चीजों पर मनुष्य का अधिकार हो जाता है तो यह समझ लेना चाहिए कि पंचांगुली साधना की जागृति हो चुकी है। परन्तु जब इस साधना में लीन होता है तो उन्हीं दिनों में मनुष्य के ऊपर बड़े बड़े संकट तथा नयी नयी परेशानियां आनी शुरु हो जाती हैं तथा मार्ग में ऐसे कांटे पड़ जाते हैं कि उनको पार करना आम आदमी के वश की बात नहीं होती। यह साधना २७ दिन की जाती है। परन्तु जो मैं स्पष्ट लेखनी से लिख रहा हूँ, वह आज तक किसी भी भविष्यवक्ता ने नहीं लिखा है। मैं जन हित के लिए पूर्ण ज्ञान के तौर पर इसका वर्णन कर रहा हूँ कि इस पंचांगुली साधना का हस्त नक्षत्र अर्थात् हाथों का नक्षत्र में कार्तिक के महीने में हस्त नक्षत्र से शुरु करके हस्त नक्षत्र तक जातक करें। यह जप सिर्फ २७ दिन का होता है तथा एक माला प्रतिदिन जाप करें तथा उसी माला का दशांश हवन पंचमेवा एवं देशी घी से करें। जप करते समय काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को त्याग दें एवं पंचांगुली जप रुद्राक्ष से या तुलसी माला से करें। जप करने से पहले माला का पूजन करें। तथा गणित मंत्र 'ॐ गणगणपति नमः' की एक माला प्रतिदिन करें। जप करते समय कुशासन या ऊनी कम्बल का आसन रखें। पूर्वाभिमुख होकर के साधना करें। साधना करते समय गुरु की साक्षी में ही साधना करनी चाहिए या गुरु के परामर्श के अनुसार ही साधना करनी चाहिए तभी उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। जप करने से पहले आसन शुद्धि नवग्रहों का पूजन, गणपति पूजन तथा गणपति की माला प्रतिदिन करें उसके पश्चात पंचांगुली मन्त्र का जाप करें। जाप के दिनों में अपने सभी कार्य त्याग दें तथा घर में ही रहें, घर से बाहर कहीं न जायें। घर मे ही शयन करें। २८ दिन लगातार अन्न का त्याग करें तथा फलाहार ही करें।

जपकाल के नियम

जपकाल में निम्न नियमों का पालन करना अति आवश्यक है।

भूमि शयन, ब्रह्मचर्य का पालन, नित्य स्नान, मौन, नित्य दान, गुरु सेवा, पापकर्म का त्याग, नित्य पूजा अर्चना, ईष्ट देव तथा गुरु में श्रद्धा, जप निष्ठा, पवित्रता

इस साधना में कुछ बातों का ध्यान अति आवश्यक है।

१. स्त्री संसर्ग तथा स्त्री चर्चा साधना काल में त्याज्य है। २. क्षौर कर्म न करें। ३. संध्या गायत्री स्मरण निश्चित हो। ४. नग्न अवस्था में, बिना स्नान किये, अपवित्र हाथ से तथा सिर पर कपड़ा रखकर भी जप करना निषेध है। ५. जप के समय माला पूरी किये बिना बातचीत नहीं करनी चाहिए। ६. जप के समय में छींक, नींद, थूकना, डरना, अपवित्र वस्त्र, बातचीत, क्रोध आदि जप काल में वर्जित हैं। ७. आलस्य, जम्भाई, छींक, अप्रश्य, अपान वायु होने पर हाथ धोवें तथा कानों को जल से स्पर्श करें। ८. पहले दिन जितना जप किया जाये रोज उतना ही जप करें। इसे घटाना या बढ़ाना नहीं चाहिए। ९. जप काल में शौच जाने पर पुनः स्नान करें तथा साफ वस्त्र पहनें।

पंचांगुली साधना में कई ऐसे गूढ रहस्य हैं जो आज तक किसी भी भविष्यवक्ता ने हस्त रेखा शास्त्रों में वर्णित नहीं किये हैं। जब तक पंचांगुली साधना की जानकारी न हो जावे तथा इसका जप हवन, जप संख्या, जप में बैठने का समय, जप से उठने का समय हमेशा एक ही होना चाहिए तथा जप का आसन तथा स्थान भी एक ही होना चाहिए। जप करते समय पंचांगुली माता पर पूर्ण विश्वास तथा निष्ठा होनी चाहिए, यह शंका न करें कि, कि 'मैं जो साधना कर रहा हूँ तथा इतना

हमेशा के लिए ही मन से निकाल देनी चाहिए। जप करने से पहले अपने इष्ट देव तथा गुरु देव को साक्षी रख कर मन ही मन सच्चे मन से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि मैं जो पंचांगुली साधना कर रहा हूँ, वह आपकी प्रेरणा द्वारा कर रहा हूं। आप ही इस अनुष्ठान को करने वाले हैं तथा आप की इस अनुष्ठान को कराने वाले हैं। आप ही इसको पूर्ण करने वाले हैं।

पंचांगुली यन्त्र

हमने विगत वर्षों में ज्योतिष की कई प्रमुख पुस्तकों का अवलोकन किया परन्तु उन पुस्तकों में पंचांगुली यन्त्र को पूर्ण रूप से छिपाकर रखा गया है। जो सही रूप में पंचांगुली यन्त्र है वह किसी भी पुस्तक में उपलब्ध नहीं है। कुछ लेखकों ने अपनी पुस्तक का सर ऊँचाा करने के लिए मन घड़ण्त पंचांगुली यन्त्र प्रकाशित कराये हैं। ऐसे यन्त्र की पूजा करने से साधक को स्वप्न मात्र में भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। आज मैं विश्व के हित के लिए पंचांगुली साधना यन्त्र अवलोकन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस यन्त्र का इतना कमाल है कि जिसको इस यन्त्र की पूर्ण रूप से सिद्धि प्राप्त हो जाती है तब, इस यन्त्र का जल से स्नान कराकर किसी भी पीड़ित प्राणी को पिलाया जाये तो उसका दैविक, भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का दोष हो या कोई बाहरी छाया हो या दवाईयां काम न कर रही हों रोग बिगड़ चुके हों, बड़े बड़े विशेषज्ञ फेल हो चुके हों तो इस यन्त्र के पानी के प्रयोग से उनके असाध्य रोग दूर होकर मनुष्य स्वस्थ हुये हैं तथा भूत, प्रेत छाया भी दूर हुई है। जप करने से पहले संकल्प करें।

सबसे पहले श्री गणेश का पूजन एवं नवग्रह पूजन विधि-विधान से करें तथा ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि का पूजन तथा इष्ट देवता तथा कुल देवता एवं गुरु देवता का श्रद्धा से पूजन करें। उसके पश्चात कलश का पूजन करें। नव ग्रहो के लिए नवग्रह का चित्र सामने रखकर एक साथ थाली में प्रतिदिन रोली से नवग्रहो का चित्र बनायें तथा सभी नवग्रहों का जल तिलक, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य तथा मोली से अलग अलग पूजन करें। यदि साधक को नवग्रहों के मन्त्र पढ़ने का ज्ञान नहीं है तो ऊपर लिखित सामग्री चढ़ाते समय, 'ॐ गण गणपते नमः', कह कर सारी सामग्री गणपति भगवान पर चढ़ावें एवं नमस्कार करें। ऐसे ही ॐ काराय नमः कह कर सारी सामग्री चढ़ा कर नमस्कार करें। ऐसे ही सूर्य चन्द्र मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू, केतू आदि को अलग अलग कह करके सारी सामग्री चढ़ावें तथा हर मंत्र की सामग्री चढ़ाते समय ओम सूर्य नारायणाय नमः सूर्य के लिए तथा इसी प्रकार अन्य के लिए भी नाम लेंवे। ऐसे ही कलश का पूजन करने के लिए ओम वरुणाय नमः मंत्र का जाप करें। उसके पश्चात हाथ में चावल एवं पुष्प लेकर सभी नवग्रहों से प्रार्थना करें।

ओम ब्रह्मामुरारीः त्रिपुरान्तकारी भानु शशि भूमि सुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वेग्रहा शान्ति कराः भवन्तु।

इसके पश्चात हाथ जोड़कर साधक प्रार्थना करे कि हे नवग्रहों मेरे ऊपर से सभी ग्रहों का अनिष्ट दूर हो तथा नवग्रहों की शान्ति हो उसके पश्चात दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ कर प्रार्थना करे।

ओम आकाशात्पतितम् तोयं यथा गच्छति सागरः। सर्वदेव नमस्कारं केशवम्प्रतिगच्छति। नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो ब्राह्मण हिताय च। जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः

अर्थात् सभी देवताओं से प्रार्थना करें कि मैं जो श्रद्धा भावना से इस साधना को आपकी कृपा से कर रहा हूं इस साधना रुपी अनुष्ठान से मुझे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हो। इसके पश्चात अंग न्यास करें।

ॐ परशरि मूर्तये नमः शिरसि।	साधक अपने सिर को हाथ लगाये।
मंयगले नमः मुखे।	साधक अपने मुख पर हाथ लगाये।
सुन्दरयै नमः हृदि।	साधक अपने हृदय पर हाथ लगाये।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये	साधक अपने कमर पर हाथ लगाये
सौः बीजाय नमः पादयो।	साधक अपने पैर पर हाथ लगायें।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।	साधक अपने नाभि पर हाथ लगायें।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।	साधक शरीर के सारे अंगों को हाथ लगाये।

कर शुद्धि न्यास

हाथ की रेखाओं को शुद्ध करने के लिए मंत्र

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ क्रीं मध्माभ्यां वषट्।	ॐ आं अनामिकाभ्यां हुम्।
ॐ सौः कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	ॐ ह्रीं श्रीं सौः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः।	ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्रीं शिखायै वषट्।	ॐ आं कवचाय हुम्।
ॐ सौः नेत्रत्रयाय वौषट्।	ॐ ह्रीं श्रीं सौः अस्त्रायफट्।

संकल्प

ओम् अस्य श्री कस्या-चित सच्चिदानन्द रुपस्य ब्रह्मणो अनिर्वाच्य मायाशक्ति विजृमिता विद्या योगात् कालकर्म स्व-भावाविर्भूत महत्तवा दिताहं कारोद्भूत वियदादि पंच महाभूतेन्द्रिय देवता निर्मिते अंडकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्तध्यवावर्तिनी भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदद्धरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य श्री सित वाराह वतारेण ध्रिय मायाणां यस्यां धरित्र्याम् भुवर्लोके संहितायां सप्तद्वीप मंडितायां क्षीरोदार्धाब्ध द्विगुणतीय वलयिकृत लक्ष्योजन विस्तीर्ण जम्बूद्वीपे स्वर्गस्थिता अमराद्या-सा शितवतारे गंगादि सरिद्विः प्राविते: निखिल जन मुनिकृत निर्वसतिके नैमिषारण्ये कन्या कुमारिके क्षेत्रे पुष्कराण्ये श्री मन्मार्तण्डस्य कृपापात्र कालत्रित यज्ञ गर्गवाराह गणितायां संख्यायां श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्ध श्री श्वेत वाराह नाम्नि प्रथम कल्पे,

द्वितीय यामे तृतीये मुहूर्ते, चतुर्थ युगे स्वायंभुवः स्वरोचितः उत्तमः तामसः रैवतः चाक्षुसेति षण्मनुनां मतिक्रमोष्यात् क्रम्यमाणे संप्रति वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशंति में वर्ष त्रिनवे त्रिग्नेयाते कलियुगे कलि प्रथम चरणे श्री मल्लवणाव्ये उत्तरे तीरे गंगा यमुनयो पश्चिमे तटे शालीवाहन बौद्धावतारे विक्रम भूपकृतः संवत्सरे संवत... नाम संवत्सरे (एको न त्रशत्युत्तरद्वि सहस्त्र में) वर्ष रविर्नारायण (उत्तरायेन)... कृतौ महामांगल्यप्रद मासोत्तमें मासे शुभ मासे...पक्षे आद्य तिथौ... वाराधिपति श्रीमद् वासरे यथा नक्षत्र योगकारण लग्न एवं ग्रह विशेषण विशिष्टतयां अमुक राशिस्थिते सूर्य अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेसु ग्रहेसु यथा यथा राशि स्थिते सप्तसु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यस्थितौ... गोत्रस्य श्री (यजमान का नाम) यजमानस्य शरीरे आयु आरोग्यं ऐश्वर्यवांछित फल प्राप्तये भार्यादि सर्व सम्पत्ये चिंतितार्थस्य आदि व्याधि जरा मृत्यु भय शोक निवृत्तये परमैश्वर्य सम्पर्त्ये निरुपत्यै अमुक कर्मण पंचांगुली देवी पूजन कर्मणी सांगता सिद्धयर्थ ममः समस्त कुटम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविघ्नोपशांतये भूत, भविष्यत्, वर्तमान त्रिविधोत्पात शांतये भूरिभाग्याप्तये पुनः कृतस्य करिष्यमाणः कर्मणः साम्य पुप्त महाफल वाप्तये नित्य नूतन आत्मनः क्षीरोदिपट फुलादिवास सुरभि चन्दनः कर्पूरः कस्तूरी केत्याद्य नेक शरीर भूषण समृद्धयर्थ सुवर्ण रौप्य निखिल धातु प्रवाल मौक्तिक माणिक्येन्द्र नीलवज्र वैडूर्यादि नाना रत्न बहुल प्राप्तये यवः व्रीही गोधुम तिल माष मुद्गाद्य नेक धान्यानां संतताभि वृद्धये अश्वशाला गजशाला गौशाला सर्व चतुष्पदशाला प्रपाद्यादिशाला देवपूजास्थान, ब्राह्मण संतर्पणादि सर्वस्यानानाम् सर्व विघ्नोपशांतये ममः इह जन्मनि पंचागुली प्रीति द्वारा सर्वापत्तिनिवृत्ति पूर्वकः अल्पायु निवृत्ति पूर्वकः जन्म लग्नात् गोचरात् चतुरस्त्र अष्ट द्वादश स्थान स्थित सूर्यादि क्रूर ग्रह तज्ञनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं दशा अन्तर्दशा उपदशा जनितारिष्ट ज्वर दाह पीड़ा नेत्रकर्णादियो पीड़ा निवृत्ति पूर्वकं अल्पायु निवृत्ति पूर्वकश्चाधि दैविक भौतिक आध्यात्मिक जनितः क्लेशः कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधागौध निवृत्ति पूर्वक शरीरारोग्यर्था धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्धयर्थ राजद्वारतः व्यापारतश्च लाभार्थ चतुर्विध पुरुषार्थ सिध्यर्थ विजयार्थ जयार्थ क्षेमार्थ गतवस्तु प्राप्त्यर्थ स्थिर लक्ष्मी संचितार्थ पुत्र पौत्रा अविछिन्न धन समृद्धयर्थ वेदशास्त्रोक्त फला वाप्तये कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सद्विष्ट सिद्धयर्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ सद्विष्ट सिद्धयर्थ यथा सम्पादित सामग्रयां कलश स्थापनं पंचागुली पूजन महं करिष्ये।

तदंगत्वेन निर्विघ्नतां परि समाप्तयर्थ गणपति पंचौकार वास्तु दिव्यादि चतुःषष्टी योगिनी अजरादि पंचाणत् क्षेत्रपाल सप्त चिरंजीव सप्तवसोधारा सप्तऋषि गौर्यादि षोडशमातृका वरुण कलश सूर्यादि नवग्रह तदांगभूत अधिदेवता प्रत्यधि देवता स्थापन पूजनांतर मित्ती पंचांगुली आवाहनं कलशस्थापन तस्योपरि पंचांगुली यहं पूजनं तदंगत्वैनादौ गणपति पूजनं महं करिष्ये।

पंचागुली ध्यान - पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने। अधिष्ठात्री करिष्यासौ शक्ति श्री त्रिदिशेशितुः।।

पंचांगुली मंत्र

ओम् नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेत मध्ये पिशाच मध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शाकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ी मध्ये विनारी मध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता पंचागुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ओम् ठं ठं ठं स्वाहा।

यंत्र पूजा

ध्यानम् -- ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुली देवीनम् ध्यानामि।

आवाहनम - यन्त्र पर चावल बढ़ाते हुए पंचांगुली देवी का आवाहन करें।

ॐ आगच्छगच्छ देवशि त्रैलोक्य तिमिरामहे। क्रियमाणां मया दत्त गृहाण सुरसत्तमें। ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि।

आसनम - रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम। आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी। ॐ भूर्भवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्यम - उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुक्तम। पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि।

इसी प्रकार नीचे लिखे सभी मंत्रों मे उच्चारण करें।

अर्घ्यम - ॐ अर्घ्य गृहाण देवेशि गन्ध पुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु में देवि गृहणार्घ्यम् नमोस्तुते।।

आचमनीयम् - सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम। आचमन्यतां दत्तं ग्रहीत्वा परमेश्वरी।।

पयस्नानम्- दूध से स्नान करायें।

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

दहीस्नानम - पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रति गृह्यताम।।

घृतस्नानम् - नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्। वृत तुभ्यं प्रदास्यामिः स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।

मधुस्नानम - तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्य स्नानार्थ प्रति गृह्यताम्।

शर्करास्नानम - इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थ प्रति गृह्यताम्।।

पंचामृत स्नान- दूध, दही, जल, शहद तथा घी से स्नान करायें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें। पयो दधि घृत मधुशर्करा यान्वितम। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थ प्रति गृह्यताम्।।

वस्त्रम् - सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारिणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रति गृह्यताम्।

यज्ञोपवीत - नवभिस्तन्तु भिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।

गन्धम् - श्री खण्डं चन्दनं दित्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपन सर्वश्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम्।।

अक्षत- चावल चढ़ायें तथा मन्त्र का उच्चारण करें।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुभाक्ता सुशोभिता। मया निवेदिता भक्तया गृहाण परमेश्वरि।।

पुष्पाणि - ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि प्रीत्यर्थ प्रति गृह्यताम्।।

सौभाग्य द्रव्याणि - श्वेत चूर्णं रक्त चूर्णं हरिद्रा कुंकुभाविन्तै। नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरि।।

धूपम् - बनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयों गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम्।।

दीपम् - आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिनां योजितं मया। दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्या तिमिरा पहम्।।

नैवेद्यम् - नैवेद्य गृह्यता देवि भक्तिं से ह्यचलां कुरु। ईप्सितं में वरं देहि परत्रेह परांगतिम्।।

ताम्बूलम् - पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दैलैर्युतम। एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम्।।

अखण्ड फलम् - इदं फल मया देवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन में सफला वाप्तिर्भवेजन्मनि जन्मनि।।

दक्षिणा - हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसौ।अनन्त पुण्य फलदम् मतः शांति प्रयच्छमे।।

कर्पूरार्तिक्यम् - ॐ आरार्ति पार्थिव घुयंग रजः पितुर प्रायिधामभिः। दिवः सदा घुयंग सि बृहती वितिष्ठिस आत्वेषं वर्तते तपः।। ॐ कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरंच प्रदीपितम्। आरर्तिक्य महं कुर्वे पश्य में वर दो भव।।

मंत्र पुष्पाञ्जलि - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।। हाथ में जल और पुष्प लेकर यन्त्र के चारों ओर तीन बार प्रदक्षिणा करें। यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणं पदे पदे।।

विशेषार्घ्य- दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि हे महादेवि हमने जो कुछ किया है वह सभी आप ही कराने वाले हैं तथा आप की ही कृपा एवं गुरु प्रेरणा से हम इस अनुष्ठान का आयोजन कर रहे हैं। अतः हे देवि आप इस यज्ञ को पूर्ण करने के लिए अपनी कृपा प्रदान करें।
नमस्ते देवदेवश नमस्ते धरणीधर। नमस्ते जगदाधार अर्घ न प्रति गृह्यताम्।।
वरदत्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थदं। अनेन सफलार्धेण फलदोस्तु सदा मम।
गतः पापं गतःदुःख गतं दारिद्र य मेव ऽ च। आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।।

इस प्रकार से पंचांगुली यन्त्र का पूजन करने के दोनों हाथों में चावल तथा पुष्प लेकर यन्त्र की तीन बार प्रदक्षिणा करें और चावल तथा पुष्प यन्त्र के ऊपर चढ़ावें तथा माता से प्रार्थना करें कि हे माता मैंने जो श्रद्धा एवं भाव से अक्षत पुष्पों से आपका जो पूजन किया है इससे मेरा अनुष्ठान पूर्ण हो तथा पंचांगुली माता का दिव्य दृष्टि चमत्कार मेरे भविष्य कथन में हमेशा के लिए बना रहे।

त्रिकाल भविष्य चमत्कारी बनने के लिए पंचांगुली साधना

पंचांगुली साधना के बिना कोई भी भविष्यवक्ता सफल नहीं हो सकता। ऐसे ही जितने भी विश्व में त्रिकालज्ञ हुए हैं उन पर अवश्य ही शक्ति की कृपा रही है। चाहें वह शक्ति की कृपा किसी रूप में क्यों न हो। यह साधनायें अलग अलग रूपों में तथा अलग अलग विधियों में होती हैं। परन्तु इनमें कुछ साधनायें तामसिक होती हैं परन्तु वह साधनायें ब्राह्मण वर्ग के लिए शोभा नहीं देती क्योंकि इससे उनका ब्रह्त्व समाप्त हो जाता है।

जो भी प्राचीन ऋषि-मुनि तथा सफल भविष्यवक्ता हुए हैं उन्हें इन्हीं शक्तियों के द्वारा दिव्यवाणी प्राप्त हुई हैं। उसी दिव्य ज्ञान के द्वारा कई वर्षों की आने वाली घटनाओं का वर्णन समय से पहले ही चमत्कार के रूप में दिखातें रहे। पंचांगुली देवी साधना पूर्ण रूप से शुद्ध तथा सात्विक वृत्ति देने वाली है। इस साधना के द्वारा मनुष्य के ऊपर बड़े-बड़े अत्याचार तथा संकट तथा हर प्रकार की व्याधियां समाप्त हो जाती हैं। जब मैंने युवावस्था में श्री पंचांगुली साधना का प्रयोग किया था तो उस प्रयोग के करने से भूत, वर्तमान, भविष्य जन समूह का हाथ देखने से अपने आप ही मुख में प्रकट होने लगा। परीक्षा के समय में परीक्षा पत्र में क्या क्या प्रश्न आयेंगे। उसकी भविष्यवाणी भी पहले ही करके दी जाती रही। जो सटीक सिद्ध होती थी।

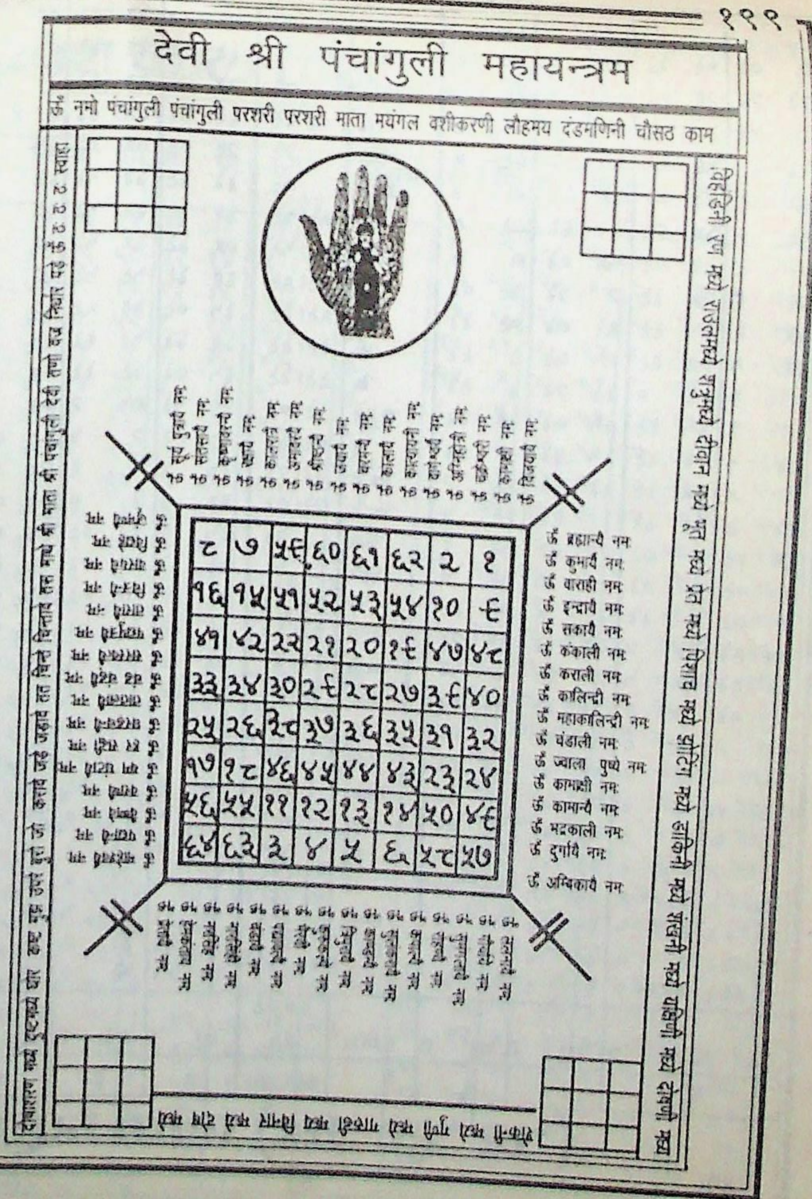
बचपन से ही पूजा पाठ आदि में काफी ध्यान रहा, परन्तु ज्योतिष के बारे में इतना ज्ञान नहीं था लेकिन इस साधना के करने से जब किसी की जन्मपत्रिका भविष्य कथन के लिए तथा हस्त

रेखा भविष्य कथन किया जाता था तो जनता को ऐसी ऐसी बातें बता दी जाती थीं कि वह प्रशंसा करते नहीं थकते थे। आज इस साधना की कृपा से ही मैं इस मंजिल तक पहुंचा हूं तथा आशा करता हूं कि यदि आप श्रद्धा एवं विश्वास से इस साधना को करेंगे तो निश्चय ही भविष्य कथन में महारत हासिल कर सकेंगे। चाहें वह ज्योतिष के विषय में कुछ भी न जानता हो या ज्योतिष की गणना के विषय में अनभिज्ञ भी क्यों न हो तो भी वह सफल भविष्यवक्ता तथा ख्याति प्राप्त कर सकता है। परन्तु यह स्मरण रखने की बात है कि जैसे बैट्री खत्म होने के बाद पुन: बैट्री चार्ज करनी पड़ती है। उसी प्रकार पंचांगुली साधना करने के पश्चात भी ऐसे जातक को आजीवन एक माला प्रतिदिन करनी चाहिए। जिससे उसका भविष्य कथन कभी भी असत्य नहीं हो सकता। हमने इस साधना की वास्तविकता को सही रूप में वर्णन किया है जो अन्य ग्रन्थों में तथा पुस्तकों में मिलना असम्भव है। जब साधक की पंचांगुली साधना पूर्ण हो जाये तो साधक को प्रतिदिन इसकी साधना जारी रखनी चाहिए तथा मन्त्र सिद्धि के बाद साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन सुबह उठकर, मन्त्र का जाप करने के पश्चात अपने हाथ मे फूंक मारे एवं हाथ में पंचांगुली देवी के चित्र को साक्षत रूप में देखे तथा उसी हाथ को अपने सारे शरीर के ऊपर घुमाये। पंचांगुली माता का यन्त्र एवं पंचांगुली देवी का चित्र पूजा के स्थान में लाल वस्त्र का आसन बिछा कर स्थापित करे एवं पंचमेवा का भोग लगाये। ऐसा करने से उस साधक को प्रश्नकर्त्ताका भूत, भविष्य, वर्तमान शीशे की तरह दिखने लग जायेगा, एवं उस विषय में की गई भविष्यवाणी सदैव सत्य सिद्ध होगी। ऐसा अनेक हस्तरेखा विशेषज्ञों का विचार है यह स्पष्ट सटीक है कि पंचांगुली साधक की पूर्ण साधना आजीवन पर्यन्त तभी सफल सिद्ध हो सकती है जबकि वह साधक निम्न श्लोक के अनुसार अपना जीवन निर्वाह करे।

मातृवत परदारेशु परद्रव्येशु लोष्टवत। आत्मा सर्व भूतेषु यह पश्यति सह पश्यति सहपण्डितः।।

जो साधक पथ भ्रष्ट हो जाता है उसकी साधना क्षण भर में समाप्त हो जाती है। तथा उसकी वाकवाणी की सत्यता हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है। समाज में उसका सम्मान होने के बजाय तिरस्कार होना शुरु हो जाता है। जब साधक अपनी पूर्ण आयु व्यतीत करने वाला हो तो उसे चाहिए कि इस गोपनीय विद्या को किसी पात्र व्यक्ति को विद्या संकल्प करके अर्थात् उसे शिष्य बनाकर उसे हमेशा के लिए ही अर्पित कर देवे ताकि प्राचीन ऋषि मुनियों की इस धरोहर तथा अमूल्य विद्या साधक के साथ ही समाप्त न हो जाये। क्योंकि शास्त्र का ऐसा मत है कि विद्वान कर्मकाण्डी के जाने के पश्चात उसकी कीर्ति उसका सम्मान तथा उसके किये गये चमत्कारों का जनसमूह प्रशंसा करे तो ऐसा साधक शरीर छोड़ने पर जीवित बना रहता है। यदि वह किसी को गोपनीय विद्या प्रदान न करे तथा अपने साथ ही उस विद्या को ले जावे तो उसका अगला जन्म अच्छी योनि को प्राप्त नहीं होता। ऊपर लिखित पंचांगुली साधना में जो हमारा अपना निजी अनुभव रहा है वह हमने इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

सम्पर्क सूत्र- **डा. हरिदेव द्विवेदी**, 25 बी., डी. डी. ए. फ्लैट्स, शाहपुर जाट, नई दिल्ली-49, फोन : 6491118, 6496759, e-mail-amarji @ bal.net. in
Visit us on we b- Vish wajyotish.com



चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अप्रैल २००२	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	वि.	९	२१	१४	५१	२०	२३	१	५७
१।२	अनु.	७	३४	१३	१५	१८	५७	०	४३
२।३	ज्ये.	६	३२	१२	२४	१८	१९	०	१७
३।४	मू.	६	१८	१२	२२	१८	२९	०	४०
४।५	पू.षा.	६	५३	१३	९	१९	२८	१	५०
५।६	उ.षा.	८	१४	१४	४१	२१	१०	३	४१
६।७	श्र.	१०	१५	१६	५०	२३	२७	६	५
७।८	ध.	१२	४५	१९	२६	२	८	८	५१
८।९	श.	१५	३४	२२	१८	५	३	११	४८
९।१०	पू.भा.	१८	३३	१	१८	८	३	१४	४८
१०।११	उ.भा.	२१	३३	४	१७	११	१	१७	४५
१२	रे.	०	२८	७	१०	१३	५२	२०	३३

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मार्च २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२६।२७	अश्वि.	१९	५०	२	६	८	२१	१४	३४
२७।२८	भ.	२०	४५	२	५६	९	५	१५	१२
२८।२९	कृ.	२१	१८	३	२३	९	२७	१५	२९
२९।३०	रो.	२१	३०	३	३०	९	२८	१५	२५
३०।३१	मृ.	२१	२०	३	१५	९	८	१४	५९

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अप्रैल २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	आर्द्रा	२०	४९	२	३८	८	२५	१४	११
१।२	पुन.	१९	५६	१	३९	७	२१	१३	१
२।३	पुष्य	१८	४०	०	१८	५	५५	११	३०
३।४	श्ले.	१७	४	२२	३८	४	१०	९	४१
४।५	म.	१५	११	२०	४१	२	१०	७	३८
५।६	पू.फा.	१३	६	१८	३३	०	१	५	२८
६।७	उ.फा.	१०	५५	१६	२३	२१	५१	३	.२०
७।८	ह.	८	४९	१४	१९	१९	५०	१	२३
८	चि.	६	५६	१२	३१	१८	८	२३	४६
९	स्वा.	५	२६	११	९	१६	५३	२२	४०
१०	विशा.	४	२९	१०	२१	१६	१६	२२	१३
११	अनु.	४	१३	१०	१६	१६	२२	२२	३०
१२	ज्ये.	४	४२	१०	५७	१७	१५	२३	३५
१३।१४	मूल	५	५९	१२	२५	१८	५४	१	२५
१४।१५	पू.षा.	७	५९	१४	३५	२१	१३	३	५३
१५।१६	उ.षा.	१०	३४	१७	१७	०	१	६	४६
१६।१७	श्र.	१३	३२	२०	१८	३	५	९	५१
१७।१८	धनि.	१६	३७	२३	२३	६	८	१२	५२
१८।१९	शत.	१९	३५	२	१७	८	५७	१५	३६
१९।२०	पू.भा.	२२	१३	४	४८	११	२२	१७	५३
२१	उ.भा.	०	२३	६	५०	१३	१५	१९	३९
२२	रेवती	२	०	८	१९	१४	३६	२०	५१
२३	अश्वि.	३	५	९	१६	१५	२५	२१	३३
२४	भ.	३	३९	९	४३	१५	४६	२१	४७
२५	कृ.	३	४७	९	४६	१५	४३	२१	३९
२६	रो.	३	३३	९	२७	१५	१९	२१	११
२७	मृग.	३	२	८	५१	१४	४०	२०	२८
२८	आर्द्रा	२	१५	८	२	१३	४८	१९	३३
२९	पुनः	१	१७	७	१	१२	४४	१८	२६
३०	पुष्य	०	८	५	५०	११	३१	१७	११
३०।१	श्ले.	२२	५१	४	३०	१०	०९	१५	४७

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मई २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	म.	२१	२५	३	३	८	४०	१४	१८
२।३	पू.फा.	१९	५५	१	३२	७	८	१२	४५
३।४	उ.फा.	१८	२२	२३	.५९	५	३०	११	१४
४।५	ह.	१६	५२	२२	३१	४	११	९	५१
५।६	चि.	१५	३२	२१	१४	२	५७	८	४१
६।७	स्वा.	१४	२६	२०	१३	२	२	७	५२
७।८	विशा.	१३	४४	१९	३८	१	३४	७	३१
८।९	अनु.	१३	३१	१९	३४	१	३८	७	४५
९।१०	ज्ये.	१३	५४	२०	६	२	२०	८	३०
१०।११	मूल	१४	५६	२१	१८	३	४२	१०	९
११।१२	पू.षा.	१६	३७	२३	८	५	४२	१२	१७
१२।१३	उ.षा.	१८	५४	१	३३	८	१३	१४	५५
१३।१४	श्र.	२१	३८	४	२१	११	६	१७	५१
१५	धनि.	०	३७	७	२२	१४	७	२०	५२
१६	शत.	३	३७	१०	२०	१७	२	२३	४३
१७।१८	पू.भा.	६	२३	१३	१	१९	३७	२	१२
१८।१९	उ.भा.	८	४४	१५	१४	२१	४२	४	८
१९।२०	रे.	१०	३१	१६	५२	२३	१०	५	२६
२०।२१	अश्वि.	११	३९	१७	५०	२३	५९	६	५
२१।२२	भ.	१२	९	१८	११	०	१०	६	८
२२।२३	कृ.	१२	३	१७	५७	२३	४८	५	३८
२३।२४	रो.	११	२७	१७	१४	२२	५९	४	४३
२४।२५	मृ.	१०	२६	१६	८	२१	४८	३	२८
२५।२६	आर्द्रा	९	७	१४	४५	२०	२३	२	०
२६।२७	पुन.	७	३७	१३	१३	१८	४९	०	२५
२७	पुष्य	६	०	११	३६	१७	१२	२२	४७
२८	श्ले.	४	२३	९	५९	१५	३५	२१	११
२९	म.	२	४८	८	२५	१४	२	१९	४१
३०	पू.फा.	१	१९	६	५८	१२	३८	१८	१८
३०।३१	उ.फा.	२३	५९	५	४१	११	२४	१७	७

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जून २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	हस्त	२२	५१	४	३७	१०	२३	१६	१०
१।२	चि.	२१	५८	३	४८	९	३८	१५	३०
२।३	स्वा.	२१	२३	३	१८	९	१३	१५	११
३।४	विशा.	२१	९	३	१०	९	१२	१५	१५
४।५	अनु.	२१	२०	३	२७	९	३६	१५	४७
५।६	ज्ये.	२१	५९	४	१४	१०	३०	१६	४९
६।७	मूल	२३	९	५	३१	११	५५	१८	२१
८	पू.षा.	०	४९	७	१९	१३	५१	२०	२५
९	उ.षा.	३	०	९	३७	१६	१५	२२	५४
१०।११	श्र.	५	३५	१२	१७	१९	०	१	४४
११।१२	धनि.	८	२९	१५	१३	२१	५९	४	४४
१२।१३	शत.	११	२९	१८	१४	०	५८	७	४२
१३।१४	पू.भा.	१४	२४	२१	६	३	४६	१०	२५
१४।१५	उ.भा.	१७	२	२३	३७	६	१०	१२	४१
१५।१६	रे.	२९	१०	१	३६	८	०	१४	२१
१६।१७	अश्वि.	२०	४०	२	५६	९	९	१५	२०
१७।१८	भ.	२१	२८	३	३३	९	३५	१५	३५
१८।१९	कृ.	२१	३२	३	२७	९	१९	१५	९
१९।२०	रो.	२०	५६	२	४१	८	२४	१४	५
२०।२१	मृ.	१९	४४	१	२२	६	५८	१२	३२
२१।२२	आर्द्रा	१८	८	२३	३६	५	६	१०	३६
२२।२३	पुन.	१६	४	२१	३२	२	५९	८	२५
२३।२४	पुष्य	१३	५१	१९	१८	०	४३	६	९
२४।२५	श्ले.	११	३५	१७	२	२२	२८	३	५५
२५।२६	म.	९	२३	१४	५२	२०	२१	१	५१
२६।२७	पू.फा.	७	२२	१२	५५	१८	२८	०	३
२७	उ.फा.	५	३९	११	१७	१६	५६	२२	३६
२८	ह.	४	१८	१०	२	१५	४७	२१	३४
२९	चि.	३	२३	९	१४	१५	६	२१	०
३०	स्वा.	२	५६	८	५४	१४	५४	२०	५६

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जुलाई २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	विशा.	२	५९	९	४	१५	१२	२१	२०
२	अनु.	३	३१	९	४४	१५	५८	२२	१४
३	ज्ये.	४	३२	१०.	५२	१७	१३	२३	३६
४।५	मूल	६	१	१२	२७	१८	५५	१	२४
५।६	पू.षा.	७	५५	१४	२७	२१	१	३	३६
६।७	उ.षा.	१०	१२	१६	४९	२३	२८	६	८
७।८	श्र.	१२	४९	१९	३१	२	१३	८	५७
८।९	धनि.	१५	४१	२२	२५	५	१०	११	५६
९।१०	शत.	१८	४१	१	२६	८	११	१४	५६
१०।११	पू.भा.	२१	४१	४	२५	११	८	१७	५०
१२	उ.भा.	०	३१	७	११	१३	४९	२०	२५
१३	रे.	३	०	९	३३	१६	४	२२	३३
१४।१५	अश्वि.	४	५९	११	२३	१७	४५	०	३
१५।१६	भ.	६	२०	१२	३३	१८	४३	०	५१
१६।१७	कृ.	६	५६	१२	५८	१८	५७	०	५३
१७।१८	रो.	६	४७	१२	३७	१८	२५	०	१०
१८	मृ.	५	५३	११	३३	१७	११	२२	४७
१९	आर्द्रा	४	२०	९	५१	१५	२१	२०	४८
२०	पुन.	२	१४	७	३९	१३	२	१८	२४
२०।२१	पुष्य	२३	४५	५	५	१०	२४	१५	४३
२१।२२	श्ले.	२१	१	२	१९	७	३७	१२	५५
२२।२३	म.	१८	१३	२३	३२	४	५१	१०	१०
२३।२४	पू.फा.	१५	३१	२०	५३	२	१६	७	४०
२४।२५	उ.फा.	१३	५	१८	३२	०	१	५	३२
२५।२६	ह.	११	४	१६	३९	२२	१५	३	५४
२६।२७	चि.	९	३५	१५	१९	२१	५	२	५३
२७।२८	स्वा.	८	४४	१४	३७	२०	३३	२	३२
२८।२९	विशा.	८	३३	१४	३६	२०	४२	२	५१
२९।३०	अनु.	९	२	१५	१५	२१	३१	३	४९
३०।३१	ज्ये.	१०	९	१६	३१	२२	५५	५	२१

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अगस्त २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	मू.	११	४९	१८	१९	०	५०	७	२३
१।२	पू.षा.	१३	५७	२०	३२	३	९	९	४७
२।३	उ.षा.	१६	२६	२३	६	५	४७	१२	२९
३।४	श्र.	१९	११	१	५४	८	३८	१५	२२
४।५	ध.	२२	६	४	५१	११	३६	१८	२१
६	श.	१	६	७	५१	१४	३६	२१	२१
७।८	उ.भा.	४	६	१०	५०	१७	३३	०	१६
८।९	पू.भा.	६	५९	१३	४०	२०	२१	३	०
९।१०	रे.	९	३९	१६	१५	२२	५१	५	२५
१०।११	अश्वि.	११	५७	१८	२८	०	५६	७	२३
११।१२	भ.	१३	४७	२०	९	२	२९	८	४६
१२।१३	कृ.	१५	०	२१	१२	३	२१	९	२८
१३।१४	रो.	१५	३२	२१	३३	३	३१	९	२६
१४।१५	मृ.	१५	१८	२१	८	२	५५	८	३९
१५।१६	आर्द्रा	१४	२०	१९	५९	१	३५	७	९
१६।१७	पु.	१२	४०	१८	१०	२३	३७	५	२
१७।१८	पुष्य	१०	२६	१५	४७	२१	८	२	२६
१८	श्ले.	७	४४	१३	०	१८	१६	२३	३१
१९	म.	४	४६	१०	०	१५	१४	२०	२८
२०	पू.फा.	१	४२	६	५६	१२	११	१७	२७
२०।२१	उ.फा.	२२	४४	४	२	९	२१	१४	४१
२१।२२	ह.	२०	३	१	२७	६	५३	१२	२१
२२।२३	चि.	१७	५१	२३	२३	४	५८	१०	३५
२३।२४	स्वा.	१६	१६	२१	५९	३	४४	९	३३
२४।२५	वि.	१५	२५	२१	२०	३	१७	९	१८
२५।२६	अनु.	१५	२२	२१	२९	३	३९	९	५२
२६।२७	ज्ये.	१६	७	२२	२६	४	४७	११	११
२७।२८	मू.	१७	३७	०	५	६	३६	१३	८
२८।२९	पू.षा.	१९	४३	२	१९	८	५७	१५	३६
२९।३०	उ.षा.	२२	१६	४	५८	११	४०	१८	२३
३१	श्र.	१	७	७	५२	१४	३६	२१	२२

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
सितंबर २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	ध.	४	७	१०	५२	१७	३८	०	२३
२।३	श.	७	८	१३	५३	२०	३७	३	२१
३।४	पू.भा.	१०	५	१६	४८	२३	३०	६	१२
४।५	उ.भा.	१२	५३	१९	३३	२	१३	८	५१
५।६	रे.	१५	२९	२२	६	४	४१	११	१६
६।७	अश्वि.	१७	४९	०	२१	६	५१	१३	२१
७।८	भ.	१९	४८	२	१४	८	३९	१५	१
८।९	कृ.	२१	२२	३	४१	९	५७	१६	१२
९।१०	रो.	२२	२४	४	३४	१०	४२	१६	४७
१०।११	मृ.	२२	५०	४	५१	१०	४९	१६	४४
११।१२	आर्द्रा	२२	३७	४	२७	१०	१४	१६	०
१२।१३	पु.	२१	४२	३	२२	९	०	१४	३५
१३।१४	पुष्य	२०	९	१	४०	७	९	१२	३५
१४।१५	श्ले.	१८	१	२३	२४	४	४६	१०	६
१५।१६	म.	१५	२६	२०	४४	२	१	७	१७
१६।१७	पू.फा.	१२	३३	१७	४८	२३	४	४	१९
१७।१८	उ.फा.	९	३४	१४	४९	२०	५	१	२२
१८	ह.	६	३९	११	५७	१७	१७	२२	३९
१९	चि.	४	१	९	२५	१४	५२	२०	२१
२०	स्वा.	१	५१	७	२४	१३	०	१८	३९
२१	वि.	०	२०	६	४	११	५१	१७	४१
२१।२२	अनु.	२३	३४	५	३१	११	३०	१७	३३
२२।२३	ज्ये.	२३	३९	५	४९	१२	१	१८	१७
२४	मू.	०	३५	६	५७	१३	२१	१९	४८
२५	पू.षा.	२	१८	८	५०	१५	२४	२२	०
२६।२७	उ.षा.	४	३८	११	१७	१७	५८	०	४०
२७।२८	श्र.	७	२४	१४	८	२०	५३	३	३८
२८।२९	धनि.	१०	२४	१७	९	२३	५५	६	४१
२९।३०	श.	१३	२६	२०	११	२	५५	९	३९

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अक्टूबर २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३०।१	पू.भा.	१६	२२	२३	४	५	४५	१२	२५
१।२	उ.भा.	१९	४	१	४२	८	२०	१४	५५
२।३	रे.	२१	३०	४	४	१०	३६	१७	८
३।४	अश्वि.	२३	३८	६	७	१२	३४	१९	१
५	भ.	१	२६	७	४९	१४	१२	२०	३३
६	कृ.	२	५३	९	११	१५	२८	२१	४३
७	रो.	३	५७	१०	१०	१६	२०	२२	२९
८	मृ.	४	३७	१०	४२	१६	४६	२२	४८
९	आर्द्रा	४	४८	१०	४६	१६	४२	२२	३६
१०	पु.	४	२९	१०	१९	१६	७	२१	५३
११	पुष्य	३	३८	९	२०	१५	०	२०	३९
१२	श्ले.	२	१६	७	५०	१३	२४	१८	५५
१३	म.	०	२५	५	५४	११	२१	१६	४७
१३।१४	पू.फा.	२२	१२	३	३६	९	०	१४	२२
१४।१५	उ.फा.	१९	४४	१	६	६	२७	११	४९
१५।१६	ह.	१७	१०	२२	३२	३	५४	९	१७
१६।१७	चि.	१४	४१	२०	५	१	३१	६	५८
१७।१८	स्वा.	१२	२६	१७	५७	२३	२८	५	२
१८।१९	वि.	१०	३८	१६	१६	२१	५७	३	४०
१९।२०	अनु.	९	२५	१५	१४	२१	५	२	५९
२०।२१	ज्ये.	८	५६	१४	५६	२१	०	३	६
२१।२२	मू.	९	१५	१५	२८	२१	४३	४	१
२२।२३	पू.षा.	१०	२२	१६	४६	२३	१३	५	४२
२३।२४	उ.षा.	१२	१४	१८	४८	१	२४	८	२
२४।२५	श्र.	१४	४१	२१	२२	४	४	१०	४७
२५।२६	ध.	१७	३१	०	१६	७	१	१३	४७
२६।२७	श.	२०	३२	३	१७	१०	२	१६	४६
२७।२८	पू.भा.	२३	२९	६	११	१२	५३	१९	३३
२९	उ.भा.	२	१२	८	५०	१५	२६	२२	१
३०।३१	रे.	४	३४	११	६	१७	३६	०	५

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
नवम्बर २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	अश्वि	६	३१	१२	५७	१९	२०	१	४२
१।२	भ.	८	३	१४	२१	२०	३९	२	५४
२।३	कृ.	९	९	१५	२२	२१	३३	३	४३
३।४	रो.	९	५१	१५	५९	२२	४	४	९
४।५	मृ.	१०	१२	१६	१४	२२	१५	४	१४
५।६	आर्द्रा	१०	१२	१६	९	२२	५	३	५९
६।७	पु.	९	५३	१५	४५	२१	३५	३	२५
७।८	पुष्य	९	१३	१५	१	२०	४७	२	३१
८।९	श्ले.	८	१५	१३	५७	१९	३९	१	१९
९	म.	६	५८	१२	३७	१८	१४	२३	५०
१०	पू.फा.	५	२६	११	०	१६	३५	२२	८
११	उ.फा.	३	४१	९	१३	१४	४५	२०	१७
१२	ह.	१	४९	७	२०	१२	५२	१८	२४
१२।१३	चि.	२३	५६	५	२८	११	१	१६	३५
१३।१४	स्वा.	२२	९	३	४५	९	२१	१४	५९
१४।१५	वि.	२०	३८	२	१९	८	१	१३	४५
१५।१६	अनु.	१९	३०	१	१८	७	८	१२	५९
१६।१७	ज्ये.	१८	५४	०	५०	६	४९	१२	५०
१७।१८	मू.	१८	५४	१	१	७	१०	१३	२२
१८।१९	पू.षा.	१९	३७	१	५४	८	१४	१४	३६
१९।२०	उ.षा.	२१	१	३	२८	९	५८	१६	२९
२०।२१	श्र.	२३	३	५	३९	१२	१६	१८	५५
२२	ध.	१	३६	८	१८	१५	१	२१	४४
२३।२४	शत	४	२८	११	१३	१७	५८	०	४२
२४।२५	पू.भा.	७	२७	१४	१०	२०	५३	३	३६
२५।२६	उ.भा.	१०	१७	१६	५७	२३	३५	६	१२
२६।२७	रे.	१२	४७	१९	२१	१	५२	८	२२
२७।२८	अश्वि	१४	४९	२१	१५	३	३८	१०	०
२८।२९	भ.	१६	१९	२२	३६	४	५०	११	३
२९।३०	कृ.	१७	१४	२३	२२	५	२९	११	३३

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टै. टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
दिसंबर २००१	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३०।१	रो.	१७	३६	२३	३७	५	३६	११	३३
१।२	मृ.	१७	२९	२३	२३	५	१६	११	७
२।३	आर्द्रा	१६	५७	२२	४६	४	३४	१०	२०
३।४	पु.	१६	६	२१	५१	३	३५	९	१७
४।५	पुष्य	१५	०	२०	४१	२	२३	८	३
५।६	श्ले.	१३	४३	१९	२३	१	२	६	४१
६।७	म.	१२	१९	१७	५८	२३	३६	५	१५
७।८	पू.फा.	१०	५३	१६	३१	२२	९	३	४७
८।९	उ.फा.	९	२६	१५	४	२०	४३	२	२२
९।१०	ह.	८	२	१३	४२	१९	२२	१	३
१०	चि.	६	४४	१२	२६	१८	८	२३	५२
११	स्वा.	५	३६	११	२०	१७	६	२२	५३
१२	वि.	४	४१	१०	३०	१६	२०	२२	११
१३	अनु	४	४	९	५८	१५	५४	२१	५१
१४	ज्ये.	३	४९	९	५०	१५	५२	२१	५६
१५	मू.	४	१	१०	९	१६	१९	२२	३०
१६	पू.षा.	४	४४	११	०	१७	१७	२३	३७
१७।१८	उ.षा.	५	५९	१२	२३	१८	४९	१	१७
१८।१९	श्र.	७	४७	१४	१८	२०	५२	३	२७
१९।२०	ध.	१०	४	१६	४३	२३	२२	६	३
२०।२१	श.	१२	४५	१९	२८	२	१२	८	५६
२१।२२	पू.भा.	१५	४१	२२	२५	५	१०	११	५४
२२।२३	उ.भा.	१८	३८	१	२१	८	४	१४	४५
२३।२४	रे.	२१	२४	४	३	१०	३९	१७	१४
२४।२५	अश्वि.	२३	४७	६	१८	१२	४६	१९	१२
२६	भ.	१	३६	७	५७	१४	१५	२०	३१
२७	कृ.	२	४५	८	५५	१५	३	२१	८
२८	रो.	३	११	९	११	१५	९	२१	४
२९	मृ.	२	५७	८	४८	१४	३६	२०	२२
३०	आर्द्रा	२	६	७	४९	१३	२९	१९	८
३१	पुन.	०	४५	६	२१	११	५६	१७	२९

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जनवरी २००२	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	पुष्य	२३	२	४	३३	१०	४	१५	३४
१।२	श्ले.	२१	४	२	३३	८	२	१३	३१
२।३	म.	१९	०	०	२९	५	५८	११	२८
३।४	पू.फा.	१६	५८	२२	२९	४	०	९	३२
४।५	उ.फा.	१५	५	२०	३८	२	१३	७	४९
५।६	ह.	१३	२६	१९	४	०	४३	६	२४
६।७	चि.	१२	६	१७	५०	२३	३४	५	२१
७।८	स्वा.	११	८	१६	५८	२२	४८	४	४१
८।९	वि.	१०	३५	१६	३०	२२	२७	४	२५
९।१०	अनु.	१०	२५	१६	२७	२२	३०	४	३५
१०।११	ज्ये.	१०	४१	१६	४९	२२	५८	५	९
११।१२	मू.	११	२१	१७	३५	२३	३०	६	७
१२।१३	पू.षा.	१२	२५	१८	४५	१	६	७	२९
१३।१४	उ.षा.	१३	५३	२०	१९	२	४७	९	१५
१४।१५	श्र.	१५	४६	२२	१७	४	५०	११	२५
१५।१६	ध.	१८	१	०	३८	७	१६	१३	५६
१६।१७	श.	२०	३६	३	१८	१०	०	१६	४३
१७।१८	पू.भा.	२३	२७	६	११	१२	५६	१९	४१
१९	उ.भा.	२	२६	९	११	१५	५६	२२	४०
२०।२१	रे.	५	२४	१२	७	१८	४९	१	२९
२१।२२	अश्वि	८	९	१४	४६	२१	२२	३	५६
२२।२३	भ.	१०	२८	१६	५७	२३	२४	५	४८
२३।२४	कृ.	१२	१०	१८	२९	०	४५	६	५९
२४।२५	रो.	१३	९	१९	१६	१	२१	७	२२
२५।२६	मृ.	१३	२०	१९	१५	१	८	६	५७
२६।२७	आर्द्रा	१२	४४	१८	२८	०	९	५	४८
२७।२८	पुन.	११	२४	१९	५८	२२	३०	४	०
२८।२९	पु.	९	२८	१४	५४	२०	१९	१	४३
२९	श्ले.	७	५	१२	२६	१७	४६	२३	६
३०	म.	४	२५	९	४४	१५	२	२०	२१
३१	पू.फा.	१	४०	६	५८	१२	१८	१७	३८

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
फरवरी २००२	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१।१	उ.फा.	२२	५९	४	२१	९	४४	१५	८
१।२	ह.	२०	३३	२	०	७	२९	१३	०
२।३	चि.	१८	३२	०	६	५	४२	११	२१
३।४	स्वा.	१७	१	२२	४४	४	२९	१०	१७
४।५	वि.	१६	७	२१	५९	३	५३	९	५०
५।६	अनु.	१५	५०	२१	५१	३	५५	१०	१
६।७	ज्ये.	१६	९	२२	२०	४	३२	१०	४७
७।८	मू.	१७	३	२३	२१	५	४१	१२	३
८।९	पू.षा.	१८	२६	०	५१	७	१८	१३	४५
९।१०	उ.षा.	२०	१५	२	४५	९	१७	१५	५०
१०।११	श्र.	२२	२३	४	५८	११	३४	१८	११
१२	ध.	०	४९	७	२८	१४	८	२०	४८
१३	शत.	३	२९	१०	११	१६	५३	२३	३६
१४।१५	पू.भा.	६	१९	१३	३	१९	४८	२	३२
१५।१६	उ.भा.	९	१७	१६	२	२२	४७	५	३२
१६।१७	रे.	१२	१७	१९	२	१	४६	८	२९
१७।१८	अश्वि.	१५	१२	२१	५३	४	३४	११	१३
१८।१९	भ.	१७	५१	०	२७	७	२	१३	३५
१९।२०	कृ.	२०	५	२	३४	९	०	१५	२३
२०।२१	रो.	२१	४४	४	२	१०	१७	१६	२९
२१।२२	मृ.	२२	३९	४	४५	१०	४८	१६	४८
२२।२३	आर्द्रा	२२	४४	४	३८	१०	२९	१६	१६
२३।२४	पु.	२२	१	३	४२	९	२१	१४	५७
२४।२५	पुष्य	२०	३०	२	१	७	२९	१२	५५
२५।२६	श्ले.	१८	१९	२३	४१	५	२	१०	२०
२६।२७	म.	१५	३८	२०	५४	२	९	७	२३
२७।२८	पू.फा	१२	३६	१७	५०	२३	३	४	१५

शेष पृष्ठ १३ पर

सन् २००१ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

अप्रैल २००२	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
ता.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
१	२२	४६	८	४७	२१	४८	८	१२	२२	४६	९	२१	२२	६	८	५९
२	२३	५०	९	३३	२२	५०	८	५९	२३	४७	१०	१०	२३	५	९	५०
३	२४	४९	१०	२२	२३	४८	९	५०	२४	४५	११	२	२४	२	१०	४३
४	०	४९	११	१५	२४	४३	१०	४३	०	४५	११	५६	०	२	११	३७
५	१	४४	१२	९	०	४३	११	३८	१	३९	१२	५०	०	५६	१२	३१
६	२	३२	१३	५	१	३२	१२	३२	२	२९	१३	४४	१	४७	१३	२४
७	३	१५	१४	१	२	१७	१३	२६	३	१४	१४	३६	२	३३	१४	१५
८	३	५२	१४	५५	२	५७	१४	१८	३	५५	१५	२७	३	१६	१५	०४
९	४	२६	१५	४८	३	३३	१५	९	४	३२	१६	१६	३	५६	१५	५१
१०	४	५७	१६	४१	४	७	१५	५९	५	७	१७	५	४	३३	१६	३७
११	५	२७	१७	३३	४	३९	१६	४८	५	४१	१७	५२	५	९	१७	२२
१२	५	५६	१८	२५	५	११	१७	३७	६	१४	१८	४०	५	४४	१८	०८

मार्च २००१	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
ता.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
२६	७	१४	१९	५०	६	२९	१९	१	७	३३	२०	४	७	०४	१९	३१
२७	७	४७	२०	४७	७	५	१९	५५	८	११	२०	५७	७	४४	२०	२२
२८	८	२२	२१	४५	७	४३	२०	५१	८	५०	२१	५१	८	२५	२१	१४
२९	९	१	२२	४६	८	२४	२१	४९	९	३३	२२	४८	९	१०	२२	०९
३०	९	४५	२३	४७	९	१०	२२	४९	१०	२०	२३	४७	९	५९	२३	०६
३१	१०	३४	२४	४९	१०	००	२३	४९	११	११	२४	४६	१०	५१	२४	०४

अप्रैल	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
ता.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
१	११	२९	०	४९	१०	५६	२४	४८	१२	८	०	४६	११	४८	०	४
२	१२	२९	१	४८	११	५६	०	४८	१३	८	१	४६	१२	४८	१	३
३	१३	३४	२	४४	१२	५९	१	४५	१४	११	२	४३	१३	५०	२	१
४	१४	४१	३	३५	१४	४	२	३८	१५	१४	३	३७	१४	५१	२	५७
५	१५	४८	४	२१	१५	८	३	२७	१६	१७	४	२७	१५	५१	३	४९
६	१६	५४	५	३	१६	११	४	१२	१७	१८	५	१३	१६	५०	४	३८
७	१७	५९	५	४३	१७	१३	४	५५	१८	१८	५	५८	१७	४७	५	२५
८	१९	३	६	२०	१८	१४	५	३६	१९	१७	६	४०	१८	४४	६	११
९	२०	५	६	५८	१९	१३	६	१६	२०	१५	७	२२	१९	३९	६	५५
१०	२१	७	७	३६	२०	१२	६	५८	२१	१२	८	५	२०	३४	७	४१
११	२२	७	८	१७	२१	१०	७	४०	२२	९	८	५०	२१	२९	८	२७
१२	२३	६	९	००	२२	७	८	२५	२३	५	९	३५	२२	२३	९	१५
१३	२४	१	९	४५	२३	१	९	१२	२३	५८	१०	२३	२३	१६	१०	४
१४	०	१	१०	३४	२३	५२	१०	१	२४	४९	११	१३	२४	७	१०	५४
१५	०	५२	११	२५	२४	४०	१०	५२	०	४९	१२	४	०	७	११	४४
१६	१	३९	१२	१७	०	४०	११	४४	१	३७	१२	५५	०	५६	१२	३४
१७	२	२१	१३	११	१	२४	१२	३६	२	२२	१३	४६	१	४१	१३	२४
१८	३	०	१४	४	२	५	१३	२७	३	३	१४	३६	२	२४	१४	१३
१९	३	३६	१४	५८	२	४३	१४	१८	३	४२	१५	२६	३	५	१५	१
२०	४	९	१५	५२	३	१९	१५	१०	४	१९	१६	१६	३	४५	१५	४९
२१	४	४२	१६	४६	३	५४	१६	१	४	५६	१७	६	४	२३	१६	३७
२२	५	१४	१७	४१	४	२८	१६	५४	५	३२	१७	५७	५	१	१७	२५
२३	५	४७	१८	३८	५	४	१७	४८	६	९	१८	५०	५	४१	१८	१५
२४	६	२१	१९	३७	५	४१	१८	४४	६	४८	१९	४४	६	२२	१९	८
२५	६	५९	२०	३८	६	२२	१९	४२	७	३०	२०	४२	७	७	२०	३
२६	७	४२	२१	४१	७	७	२०	४३	८	१६	२१	४१	७	५५	२१	०
२७	८	३०	२२	४४	७	५६	२१	४४	९	७	२२	४१	८	४७	२१	५९
२८	९	२४	२३	४४	८	५१	२२	४४	१०	३	२३	४१	९	४३	२२	५९
२९	१०	२३	२४	४१	९	५०	२३	४२	११	२	२४	३९	१०	४२	२३	५७
३०	११	२६	०	४१	१०	५२	२४	३५	१२	४	०	३९	११	४३	२४	५३
३१																

सन् २००१ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

मई	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१२	३१	१	३३	११	५५	०	३५	१३	६	१	३३	१२	४४	०	५३
२	१३	३७	२	१९	१२	५८	१	२४	१४	७	२	२३	१३	४३	१	४५
३	१४	४१	३	१	१४	००	२	९	१५	७	३	१०	१४	४१	२	३४
४	१५	४५	३	४०	१५	००	२	५१	१६	६	३	५३	१५	३६	३	२०
५	१६	४७	४	१७	१६	००	३	३१	१७	३	४	३५	१६	३१	४	४
६	१७	४९	४	५४	१६	५९	४	११	१८	१	५	१६	१७	२६	४	४८
७	१८	५१	५	३१	१७	५७	४	५१	१८	५८	५	५८	१८	२१	५	३२
८	१९	५२	६	१०	१८	५६	५	३२	१९	५५	६	४१	१९	१६	६	१७
९	२०	५२	६	५१	१९	५४	६	१६	२०	५२	७	२६	२०	११	७	४
१०	२१	४९	७	३६	२०	५०	७	२	२१	४७	८	१३	२१	५	७	५३
११	२२	४३	८	२४	२१	४३	७	५१	२२	४०	९	३	२१	५८	८	४४
१२	२३	३३	९	१५	२२	३३	८	४२	२३	३०	९	५४	२२	४८	९	३५
१३	२४	१७	१०	७	२३	१९	९	३४	२४	१६	१०	४६	२३	३५	१०	२६
१४	०	१७	११	१	२४	०१	१०	२६	०	१६	११	३७	२४	२०	११	१६
१५	०	५८	११	५४	०	१	११	१८	०	५९	१२	२८	०	२०	१२	५
१६	१	३५	१२	४८	०	४०	१२	१०	१	३९	१३	१८	१	१	१२	५४
१७	२	९	१३	४१	१	१७	१३	००	२	१७	१४	०७	१	४१	१३	४१
१८	२	४१	१४	३५	१	५२	१३	५१	२	५३	१४	५७	२	१९	१४	२८
१९	३	१३	१५	२९	२	२६	१४	४३	३	२९	१५	४७	२	५७	१५	१६
२०	३	४५	१६	२५	३	१	१५	३६	४	५	१६	३९	३	३६	१६	६
२१	४	१९	१७	२४	३	३७	१६	३२	४	४३	१७	३३	४	१७	१६	५७
२२	४	५५	१८	२५	४	१७	१७	३०	५	२४	१८	३०	५	००	१७	५२
२३	५	३६	१९	२८	५	००	१८	३१	६	९	१९	३०	५	४७	१८	४९
२४	६	२३	२०	३३	५	४८	१९	३४	६	५९	२०	३१	६	३८	१९	५०
२५	७	१५	२१	३६	६	४३	२०	३६	७	५४	२१	३३	७	३५	२०	५१
२६	८	१४	२२	३६	७	४२	२१	३६	८	५४	२२	३४	८	३५	२१	५१
२७	९	१८	२३	३१	८	४५	२२	३२	९	५७	२३	३०	९	३७	२२	४९
२८	१०	२४	२४	१९	९	४९	२३	२३	११	००	२४	२२	१०	३८	२३	४३
२९	११	३०	०	१९	१०	५२	२४	०९	१२	२	०	२२	११	३८	२४	३२
३०	१२	३४	१	२	११	५४	०	९	१३	२	१	९	१२	३६	०	३२
३१	१३	३७	१	४१	१२	५४	०	५१	१४	००	१	५३	१३	३२	१	१९

जून	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१४	३९	२	१८	१३	५२	१	३१	१४	५७	२	३४	१४	२६	२	३
२	१५	३९	२	५४	१४	५०	२	१०	१५	५३	३	१४	१५	१९	२	४५
३	१६	४०	३	२९	१५	४७	२	४८	१६	४८	३	५५	१६	१२	३	२८
४	१७	४०	४	७	१६	४५	३	२८	१७	४५	४	३६	१७	६	४	१२
५	१८	४०	४	४६	१७	४२	४	१०	१८	४१	५	२०	१८	१	४	५७
६	१९	३८	५	२९	१८	३९	४	५५	१९	३६	६	६	१८	५५	५	४५
७	२०	३४	६	१५	१९	३४	५	४३	२०	३१	६	५४	१९	४८	६	३५
८	२१	२५	७	५	२०	२५	६	३३	२१	२२	७	४५	२०	४०	७	२६
९	२२	१२	७	५७	२१	१३	७	२५	२२	१०	८	३६	२१	२९	८	१७
१०	२२	५५	८	५१	२१	५७	८	१७	२२	५५	९	२८	२२	१५	९	८
११	२३	३३	९	४५	२२	३८	९	१०	२३	३६	१०	२०	२२	५८	९	५८
१२	२४	८	१०	३९	२३	१५	१०	१	२४	१५	११	१०	२३	३८	१०	४७
१३	०	८	११	३२	२३	५०	१०	५२	०	१५	११	५९	२४	१६	११	३४
१४	०	४०	१२	२५	२४	२४	११	४२	०	५१	१२	४८	०	१६	१२	२१
१५	१	१२	१३	१८	०	२४	१२	३३	१	२६	१३	३८	०	५४	१३	८
१६	१	४३	१४	१२	०	५८	१३	२४	२	१	१४	२८	१	३१	१३	५६
१७	२	१५	१५	९	१	३३	१४	१८	२	३८	१५	२०	२	१०	१४	४५
१८	२	५०	१६	८	२	१०	१५	१४	३	१७	१६	१५	२	५१	१५	३८
१९	३	२८	१७	१०	२	५१	१६	१४	४	००	१७	१३	३	३६	१६	३४
२०	४	१२	१८	१५	३	३७	१७	१६	४	४७	१८	१५	४	२६	१७	३३
२१	५	३	१९	२०	४	२९	१८	२०	५	४०	१९	१८	५	२०	१८	३५
२२	६	०	२०	२४	५	२७	१९	२४	६	४०	२०	२१	६	२०	१९	३८
२३	७	४	२१	२२	६	३१	२०	२३	७	४३	२१	२१	७	२३	२०	३९
२४	८	११	२२	१५	७	३७	२१	१८	८	४८	२२	१६	८	२७	२१	३६
२५	९	१९	२३	१	८	४३	२२	७	९	५३	२३	६	९	३०	२२	२९
२६	१०	२६	२३	४२	९	४७	२२	५१	१०	५५	२३	५२	१०	३०	२३	१७
२७	११	३१	२४	२०	१०	४८	२३	३२	११	५५	२४	३५	११	२७	२४	०२
२८	१२	३३	०	२०	११	४८	२४	११	१२	५२	०	३५	१२	२२	०	२
२९	१३	३४	०	५६	१२	४५	०	११	१३	४८	१	१५	१३	१६	०	४५
३०	१४	३४	१	३१	१३	४२	०	४९	१४	४४	१	५५	१४	८	१	२८

सन् २००१ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

जुलाई	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१५	३३	२	७	१४	३९	१	२८	१५	३९	२	३५	१५	१	२	१०
२	१६	३२	२	४५	१५	३५	२	९	१६	३४	३	१७	१५	५५	२	५५
३	१७	३०	३	२६	१६	३१	२	५२	१७	२९	४	२	१६	४८	३	४१
४	१८	२६	४	११	१७	२६	३	३८	१८	२३	४	४९	१७	४१	४	२९
५	१९	१९	४	५९	१८	१९	४	२७	१९	१६	५	३८	१८	३३	५	१९
६	२०	८	५	५०	१९	८	५	१८	२०	५	६	२९	१९	२३	६	१०
७	२०	५२	६	४३	१९	५४	६	१०	२०	५१	७	२१	२०	१०	७	१
८	२१	३१	७	३७	२०	३५	७	३	२१	३४	८	१३	२०	५४	७	५२
९	२२	८	८	३१	२१	१४	७	५४	२२	१३	९	४	२१	३५	८	४१
१०	२२	४१	९	२४	२१	४९	८	४५	२२	५०	९	५३	२२	१४	९	२९
११	२३	१२	१०	१७	२२	२३	९	३५	२३	२५	१०	४२	२२	५२	१०	१५
१२	२३	४३	११	९	२२	५६	१०	२५	२४	००	११	३०	२३	२९	११	२
१३	२४	१४	१२	२	२३	३०	११	१५	२४	३५	१२	१९	२४	६	११	४८
१४	०	१४	१२	५६	२४	५	१२	७	०	३५	१३	९	०	६	१२	३६
१५	०	४६	१३	५३	०	५	१३	१	१	१२	१४	२	०	४५	१३	२६
१६	१	२२	१४	५२	०	४४	१३	५७	१	५१	१४	५७	१	२७	१४	१९
१७	२	२	१५	५५	१	२६	१४	५७	२	३५	१५	५६	२	१३	१५	१६
१८	२	४८	१७	००	२	१४	१६	०	३	२५	१६	५८	३	४	१६	१६
१९	३	४२	१८	४	३	९	१७	४	४	२१	१८	१	४	१	१७	१९
२०	४	४३	१९	६	४	११	१८	६	५	२३	१९	४	५	३	१८	२२
२१	५	५०	२०	३	५	१७	१९	५	६	२९	२०	३	६	८	१९	२२
२२	७	०	२०	५३	६	२५	१९	५८	७	६	२०	५७	७	१४	२०	१८
२३	८	१०	२१	३८	७	३२	२०	४६	८	४१	२१	४६	८	१७	२१	१०
२४	९	१८	२२	१९	८	३७	२१	२९	९	४४	२२	३१	९	१८	२१	५८
२५	१०	२३	२२	५६	९	३९	२२	१०	१०	४५	२३	१४	१०	१५	२२	४३
२६	११	२६	२३	३२	१०	३९	२२	४९	११	४३	२३	५५	११	११	२३	२७
२७	१२	२८	२४	८	११	३७	२३	२८	१२	३९	२४	३५	१२	४	२४	१०
२८	१३	२८	०	८	१२	३४	२४	९	१३	३५	०	३५	१२	५८	०	१०
२९	१४	२७	०	४६	१३	३१	०	९	१४	३०	१	१७	१३	५१	०	५४
३०	१५	२५	१	२६	१४	२७	०	५१	१५	२५	२	०	१४	४४	१	३९
३१	१६	२१	२	९	१५	२२	१	३६	१६	१९	२	४६	१५	३७	२	२६

अगस्त	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
ता.	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१७	१५	२	५६	१६	१५	२	२३	१७	१२	३	३५	१६	२९	३	१५
२	१८	४	३	४५	१७	५	३	१३	१८	२	४	२५	१७	१९	४	६
३	१८	५०	४	३८	१७	५१	४	५	१८	४८	५	१६	१८	७	४	५७
४	१९	३१	५	३१	१८	३४	४	५७	१९	३२	६	८	१८	५२	५	४७
५	२०	८	६	२५	१९	१३	५	४९	२०	१२	६	५९	१९	३४	६	३७
६	२०	४२	७	१९	१९	५०	६	४१	२०	५०	७	४९	२०	१३	७	२५
७	२१	१४	८	११	२०	२४	७	३१	२१	२५	८	३८	२०	५१	८	१२
८	२१	४४	९	४	२०	५७	८	२१	२२	००	९	२६	२१	२८	८	५८
९	२२	१५	९	५६	२१	३०	९	१०	२२	३४	१०	१४	२२	५	९	४४
१०	२२	४६	१०	४९	२२	४	१०	०	२३	१०	११	३	२२	४२	१०	३१
११	२३	१९	११	४३	२२	४०	१०	५२	२३	४७	११	५४	२३	२२	११	१९
१२	२३	५६	१२	४०	२३	१९	११	४६	२४	२८	१२	४६	२४	५	१२	९
१३	२४	३८	१३	४०	२४	४	१२	४३	०	२८	१३	४२	०	५	१३	३
१४	०	३८	१४	४२	०	४	१३	४३	१	१४	१४	४१	०	५३	१४	००
१५	१	२७	१५	४५	०	५४	१४	४५	२	५	१५	४२	१	४५	१५	००
१६	२	२३	१६	४७	१	५१	१५	४७	३	३	१६	४४	२	४४	१६	१
१७	३	२७	१७	४६	२	५४	१६	४७	४	६	१७	४४	३	४६	१७	३
१८	४	३५	१८	४०	४	१	१७	४३	५	१२	१८	४१	४	५२	१८	१
१९	५	४६	१९	२८	५	९	१८	३४	६	२०	१९	३४	५	५७	१८	५६
२०	६	५७	२०	११	६	१७	१९	२१	७	२५	२०	२२	७	०	१९	४७
२१	८	५	२०	५१	७	२२	२०	४	८	२९	२१	७	८	१	२०	३५
२२	९	१२	२१	२९	८	२५	२०	४५	९	३०	२१	५०	८	५९	२१	२०
२३	१०	१६	२२	६	९	२६	२१	२५	१०	२९	२२	३२	९	५५	२२	५
२४	११	१८	२२	४४	१०	२६	२२	६	११	२७	२३	१४	१०	५१	२२	५०
२५	१२	१९	२३	२४	११	२४	२२	४९	१२	२४	२३	५८	११	४५	२३	३६
२६	१३	१९	२४	७	१२	२१	२३	३३	१३	२०	२४	४४	१२	३९	२४	२३
२७	१४	१७	०	७	१३	१७	२४	२०	१४	१५	०	४४	१३	३३	०	२३
२८	१५	११	०	५३	१४	११	०	२०	१५	८	१	३१	१४	२६	१	१२
२९	१६	२	१	४२	१५	२	१	१०	१५	५९	२	२१	१५	१७	२	२
३०	१६	४८	२	३३	१५	५०	२	०१	१६	४७	३	१२	१६	५	२	५३
३१	१७	३१	३	२६	१६	३३	२	५३	१७	३१	४	४	१६	५०	३	४४

सन् २००१ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

सितम्बर	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१८	९	४	२०	१७	१३	३	४५	१८	१२	४	५५	१७	३३	४	३३
२	१८	४३	५	१४	१७	५०	४	३६	१८	५०	५	४५	१८	१३	५	२२
३	१९	१६	६	७	१८	२५	५	२७	१९	२६	६	३५	१८	५२	६	९
४	१९	४७	६	५९	१८	५९	६	१७	२०	१	७	२३	१९	२९	६	५६
५	२०	१७	७	५२	१९	३२	७	७	२०	३५	८	१२	२०	५	७	४२
६	२०	४८	८	४५	२०	५	७	५७	२१	१०	९	०	२०	४२	८	२८
७	२१	२०	९	३८	२०	४०	८	४८	२१	४७	९	५०	२१	२१	९	१५
८	२१	५५	१०	३४	२१	१७	९	४१	२२	२६	१०	४१	२२	२	१०	४
९	२२	३४	११	३१	२१	५९	१०	३५	२३	८	११	३५	२२	४७	१०	५६
१०	२३	१९	१२	३१	२२	४५	११	३३	२३	५६	१२	३१	२३	३६	११	५०
११	२४	१०	१३	३२	२३	३८	१२	३२	२४	५०	१३	२९	२४	३०	१२	४७
१२	०	१०	१४	३३	२४	३६	१३	३२	०	५०	१४	२९	०	३०	१३	४७
१३	१	९	१५	३१	०	३६	१४	३१	१	४८	१५	२९	१	२९	१४	४६
१४	२	१३	१६	२६	१	४०	१५	२८	२	५२	१६	२५	२	३२	१५	४५
१५	३	२२	१७	१६	२	४६	१६	२०	३	५७	१७	१९	३	३५	१६	४०
१६	४	३२	१८	१	३	५४	१७	८	५	३	१८	९	४	३९	१७	३२
१७	५	४१	१८	४२	५	००	१७	५३	६	८	१८	५५	५	४१	१८	२२
१८	६	५०	१९	२१	६	५	१८	३६	७	१०	१९	४०	६	४१	१९	९
१९	७	५६	२०	००	७	८	१९	१७	८	१२	२०	२३	७	३९	१९	५५
२०	९	२	२०	३८	८	१०	१९	५९	९	१२	२१	६	८	३७	२०	४१
२१	१०	६	२१	१९	९	११	२०	४२	१०	११	२१	५१	९	३४	२१	२८
२२	११	८	२२	१	१०	११	२१	२७	११	१०	२२	३७	१०	३०	२२	१६
२३	१२	८	२२	४७	११	९	२२	१४	१२	७	२३	२६	११	२६	२३	६
२४	१३	५	२३	३६	१२	५	२३	४	१३	२	२४	१६	१२	२०	२३	५७
२५	१३	५८	२४	२७	१२	५८	२३	५५	१३	५५	०	१६	१३	१२	२४	४८
२६	१४	४७	०	२७	१३	४७	२४	४८	१४	४४	१	७	१४	२	०	४८
२७	१५	३०	१	२१	१४	३२	०	४८	१५	२९	१	५९	१४	४८	१	३९
२८	१६	९	२	१४	१५	१३	१	४०	१६	११	२	५०	१५	३२	२	२९
२९	१६	४५	३	८	१५	५१	२	३२	१६	५०	३	४१	१६	१३	३	१८
३०	१७	१८	४	२	१६	२६	३	२३	१७	२७	४	३१	१६	५१	४	६

अक्टू.	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१७	४९	४	५४	१७	०	४	१३	१८	२	५	२०	१७	२९	४	५३
२	१८	१९	५	४७	१७	३३	५	३	१८	३६	६	८	१८	६	५	३९
३	१८	५०	६	४०	१८	७	५	५३	१९	११	६	५७	१८	४३	६	२६
४	१९	२२	७	३४	१८	४१	६	४४	१९	४७	७	४७	१९	२१	७	१३
५	१९	५६	८	२९	१९	१८	७	३७	२०	२५	८	३८	२०	१	८	२
६	२०	३४	९	२६	१९	५८	८	३१	२१	७	९	३१	२०	४५	८	५३
७	२१	१६	१०	२५	२०	४२	९	२८	२१	५३	१०	२६	२१	३२	९	४६
८	२२	५	११	२५	२१	३२	१०	२६	२२	४४	११	२४	२२	२४	१०	४२
९	२२	५९	१२	२५	२२	२७	११	२५	२३	३९	१२	२२	२३	२०	११	३९
१०	२४	००	१३	२३	२३	२७	१२	२३	२४	३९	१३	२०	२४	२०	१२	३७
११	२५	५	१४	१८	२४	३०	१३	१९	०	३९	१४	१६	०	२०	१३	३४
१२	१	५	१५	७	०	३०	१४	१०	१	४२	१५	९	१	२१	१४	२९
१३	२	१२	१५	५२	१	३५	१४	५९	२	४५	१५	५८	२	२२	१५	२१
१४	३	२०	१६	३४	२	४०	१५	४३	३	४८	१६	४५	३	२३	१६	१०
१५	४	२७	१७	१३	३	४४	१६	२६	४	५१	१७	२९	४	२३	१६	५७
१६	५	३४	१७	५१	४	४७	१७	७	५	५२	१८	१२	५	२१	१७	४३
१७	६	४०	१८	३०	५	५०	१७	४९	६	५३	१८	५५	६	१९	१८	२९
१८	७	४५	१९	१०	६	५२	१८	३२	७	५३	१९	४०	७	१७	१९	१६
१९	८	५०	१९	५२	७	५४	१९	१७	८	५४	२०	२७	८	१५	२०	५
२०	९	५३	२०	३८	८	५५	२०	४	९	५३	२१	१५	९	१२	२०	५५
२१	१०	५४	२१	२६	९	५४	२०	५४	१०	५१	२२	६	१०	९	२१	४७
२२	११	५०	२२	१८	१०	५०	२१	४६	११	४६	२२	५८	११	४	२२	३९
२३	१२	४१	२३	१२	११	४१	२२	३९	१२	३८	२३	५१	११	५६	२३	३२
२४	१३	२७	२४	६	१२	२९	२३	३२	१३	२६	२४	४३	१२	४४	२४	२३
२५	१४	८	०	६	१३	११	२४	२५	१४	९	०	४३	१३	२९	०	२३
२६	१४	४५	१	०	१३	५०	०	२५	१४	४९	१	३५	१४	११	१	१३
२७	१५	१९	१	५४	१४	२७	१	१६	१५	२६	२	२५	१४	५०	२	१
२८	१५	५०	२	४७	१५	१	२	७	१६	२	३	१४	१५	२८	२	४८
२९	१६	२१	३	४०	१५	३४	२	५७	१६	३६	४	३	१६	५	३	३५
३०	१६	५१	४	३३	१६	७	३	४७	१७	११	४	५१	१६	४१	४	२१
३१	१७	२३	५	२७	१६	४१	४	३८	१७	४६	५	४१	१७	१९	५	८

सन् २००१ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

नवम्बर	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१७	५६	६	२२	१७	१७	५	३१	१८	२४	६	३२	१७	५९	५	५७
२	१८	३३	७	२०	१७	५६	६	२५	१९	५	७	२५	१८	४२	६	४८
३	१९	१४	८	१९	१८	४०	७	२२	१९	५०	८	२१	१९	२९	७	४१
४	२०	१	९	२०	१९	२९	८	२१	२०	४०	९	१९	२०	२०	८	३७
५	२०	५४	१०	२१	२०	२२	९	२०	२१	३५	१०	१७	२१	१६	९	३५
६	२१	५३	११	२०	२१	२१	१०	१९	२२	३३	११	१६	२२	१४	१०	३३
७	२२	५६	१२	१५	२२	२३	११	१५	२३	३४	१२	१२	२३	१४	११	३०
८	२४	१	१३	५	२३	२६	१२	७	२४	३६	१३	५	२४	१४	१२	२४
९	०	१	१३	५०	२४	२९	१२	५५	०	३६	१३	५४	०	१४	१३	१६
१०	१	७	१४	३१	०	२९	१३	३९	१	३८	१४	४०	१	१३	१४	४
११	२	१२	१५	१०	१	३१	१४	२१	२	३८	१५	२३	२	११	१४	५०
१२	३	१७	१५	४७	२	३२	१५	१	३	३७	१६	५	३	८	१५	३४
१३	४	२१	१६	२४	३	३३	१५	४१	४	३७	१६	४७	४	४	१६	१९
१४	५	२६	१७	२	४	३४	१६	२२	५	३६	१७	३०	५	१	१७	५
१५	६	३०	१७	४२	५	३६	१७	६	६	३६	१८	१५	५	५८	१७	५२
१६	७	३४	१८	२६	६	३७	१७	५२	७	३६	१९	३	६	५६	१८	४२
१७	८	३७	१९	१४	७	३८	१८	४२	८	३५	१९	५३	७	५४	१९	३४
१८	९	३७	२०	६	८	३६	१९	३४	९	३३	२०	४६	८	५१	२०	२७
१९	१०	३२	२१	००	९	३१	२०	२८	१०	२८	२१	४०	९	४५	२१	२९
२०	११	२१	२१	५५	१०	२१	२१	२२	११	१८	२२	३३	१०	३६	२२	१४
२१	१२	५	२२	५०	११	७	२२	१५	१२	४	२३	२६	११	२३	२३	५
२२	१२	४४	२३	४४	११	४८	२३	८	१२	४६	२४	१७	१२	७	२३	५४
२३	१३	१८	२४	३८	१२	२५	२३	५९	१३	२४	०	१७	१२	४७	२४	४२
२४	१३	५१	०	३८	१३	००	२४	४९	१४	०	१	६	१३	२५	०	४२
२५	१४	२१	१	३०	१३	३३	०	४९	१४	३५	१	५५	१४	२	१	२८
२६	१४	५१	२	२३	१४	५	१	३८	१५	९	२	४३	१४	३८	२	१४
२७	१५	२२	३	१६	१४	३९	२	२९	१५	४४	३	३२	१५	१६	३	०
२८	१५	५४	४	११	१५	१४	३	२०	१६	२०	४	२२	१५	५५	३	४८
२९	१६	३०	५	८	१५	५२	४	१४	१७	०	५	१५	१६	३७	४	३८
३०	१७	९	६	७	१६	३४	५	११	१७	४४	६	१०	१७	२२	५	३१

दिसम्बर	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१७	५५	७	९	१७	२२	६	१०	१८	३३	७	८	१८	१३	६	२७
२	१८	४७	८	११	१८	१५	७	११	१९	२७	८	८	१९	८	७	२६
३	१९	४६	९	१३	१९	१४	८	१२	२०	२६	९	९	२०	७	८	२६
४	२०	४९	१०	११	२०	१६	९	१०	२१	२८	१०	७	२१	८	९	२५
५	२१	५४	११	३	२१	१९	१०	५	२२	३०	११	२	२२	९	१०	२२
६	२३	००	११	५०	२२	२२	१०	५४	२३	३२	११	५३	२३	९	११	१४
७	२४	५	१२	३२	२३	२४	११	३९	२४	३२	१२	३९	२४	६	१२	२
८	०	५	१३	११	२४	२५	१२	२१	०	३२	१३	२२	०	६	१२	४८
९	१	८	१३	४७	०	२५	१३	०	१	३१	१४	३	१	२	१३	३२
१०	२	११	१४	२३	१	२४	१३	३९	२	२८	१४	४४	१	५७	१४	१५
११	३	१३	१४	५९	२	२३	१४	१८	३	२६	१५	२५	२	५१	१४	५९
१२	४	१६	१५	३७	३	२३	१५	००	४	२३	१६	८	३	४७	१५	४४
१३	५	१९	१६	१९	४	२३	१५	४४	५	२२	१६	५४	४	४३	१६	३२
१४	६	२१	१७	४	५	२३	१६	३१	६	२१	१७	४२	५	४०	१७	२२
१५	७	२२	१७	५४	६	२२	१७	२२	७	१९	१८	३४	६	३७	१८	१५
१६	८	२०	१८	४७	७	१९	१८	१५	८	१६	१९	२७	७	३३	१९	९
१७	९	१२	१९	४२	८	१२	१९	१०	९	८	२०	२२	८	२६	२०	२
१८	९	५९	२०	३८	९	००	२०	५	९	५७	२१	१५	९	१५	२०	५५
१९	१०	४०	२१	३४	९	४३	२०	५८	१०	४१	२२	८	१०	१	२१	४६
२०	११	१७	२२	२८	१०	२२	२१	५०	११	२१	२२	५८	१०	४३	२२	३४
२१	११	५०	२३	२१	१०	५८	२२	४०	११	५८	२३	४७	११	२२	२३	२१
२२	१२	२१	२४	१३	११	३१	२३	२९	१२	३३	२४	३५	११	५९	२४	७
२३	१२	५०	०	१३	१२	४	२४	१९	१३	६	०	३५	१२	३५	०	७
२४	१३	२०	१	५	१२	३६	०	१९	१३	४०	१	२३	१३	११	०	५२
२५	१३	५१	१	५८	१३	१०	१	९	१४	१६	२	१२	१३	४९	१	३९
२६	१४	२५	२	५३	१३	४६	२	१	१४	५३	३	२	१४	२९	२	२७
२७	१५	२	३	५१	१४	२६	२	५६	१५	३५	३	५६	१५	१२	३	१८
२८	१५	४५	४	५१	१५	११	३	५४	१६	२१	४	५२	१६	०	४	१२
२९	१६	३४	५	५४	१६	२	४	५४	१७	१३	५	५२	१६	५४	५	१०
३०	१७	३१	६	५७	१६	५९	५	५७	१८	१२	६	५४	१७	५३	६	११
३१	१८	३४	७	५९	१८	२	६	५८	१९	१४	७	५५	१८	५५	७	१२

सन् २००२ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

जनवरी	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	१९	४१	८	५५	१९	७	७	५६	२०	१९	८	५३	१९	५८	८	११
२	२०	४९	९	४६	२०	१३	८	४९	२१	२३	९	४७	२१	०	९	७
३	२१	५६	१०	३१	२१	१७	९	३७	२२	२५	१०	३७	२२	०	९	५९
४	२३	२	११	१२	२२	१९	१०	२१	२३	२६	११	२२	२२	५८	१०	४७
५	२४	५	११	४९	२३	१९	११	१	२४	२४	१२	४	२३	५३	११	३२
६	०	५	१२	२५	२४	१८	११	४०	०	२४	१२	४४	२४	४८	१२	१५
७	१	७	१३	०	०	१८	१२	१९	१	२१	१३	२५	०	४८	१२	५८
८	२	९	१३	३७	१	१६	१२	५९	२	१८	१४	६	१	४२	१३	४२
९	३	१०	१४	१६	२	१५	१३	४१	३	१५	१४	५०	२	३७	१४	२८
१०	४	१२	१५	००	३	१४	१४	२६	४	१२	१५	३६	३	३२	१५	१६
११	५	१२	१५	४७	४	१३	१५	१४	५	१०	१६	२६	४	२८	१६	७
१२	६	१०	१६	३८	५	९	१६	६	६	६	१७	१८	५	२३	१७	००
१३	७	४	१७	३२	६	३	१७	०	७	००	१८	१२	६	१७	१७	५३
१४	७	५२	१८	२८	६	५३	१७	५५	७	५०	१९	६	७	८	१८	४६
१५	८	३६	१९	२४	७	३८	१८	४९	८	३६	१९	५९	७	५५	१९	३८
१६	९	१४	२०	१८	८	१९	१९	४१	९	१७	२०	५०	८	३८	२०	२७
१७	९	४९	२१	१२	८	५६	२०	३२	९	५५	२१	४०	९	१९	२१	१५
१८	१०	२१	२२	४	९	३०	२१	२२	१०	३१	२२	२८	९	५६	२२	१
१९	१०	५०	२२	५६	१०	३	२२	११	११	५	२३	१६	१०	३३	२२	४६
२०	११	२०	२३	४८	१०	३५	२३	०	११	३८	२४	३	११	८	२३	३१
२१	११	४९	२४	४१	११	७	२३	५०	१२	१२	०	३	११	४४	२४	१८
२२	१२	२१	०	४१	११	४१	२४	४३	१२	४८	०	५२	१२	२२	०	१८
२३	१२	५५	१	३६	१२	१८	०	४३	१३	२६	१	४३	१३	३	१	६
२४	१३	३५	२	३४	१३	०	१	३८	१४	९	२	३७	१३	४८	१	५८
२५	१४	२०	३	३४	१३	४७	२	३६	१४	५८	३	३४	१४	३८	२	५३
२६	१५	१२	४	३७	१४	४०	३	३६	१५	५२	४	३४	१५	३३	३	५१
२७	१६	१३	५	३९	१५	४१	४	३८	१६	५३	५	३५	१६	३४	४	५२
२८	१७	१९	६	३९	१६	४६	५	३९	१७	५८	६	३६	१७	३८	५	५३
२९	१८	२९	७	३४	१७	५३	६	३५	१९	४	७	३३	१८	४३	६	५२
३०	१९	३९	८	२३	१९	१	७	२७	२०	१०	८	२६	१९	४६	७	४७
३१	२०	४८	९	७	२०	६	८	१४	२१	१४	९	१५	२०	४७	८	३९

फरवरी	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२१	५४	९	४७	२१	९	८	५८	२२	१५	१०	००	२१	४५	९	२७
२	२२	५९	१०	२४	२२	११	९	३८	२३	१४	१०	४२	२२	४२	१०	१२
३	२४	२	११	०	२३	११	१०	१८	२४	१२	११	२४	२३	३७	१०	५६
४	०	२	११	३८	२४	१०	१०	५८	०	१२	१२	६	२४	३३	११	४१
५	१	५	१२	१६	०	१०	११	४०	१	१०	१२	४९	०	३३	१२	२६
६	२	६	१२	५८	१	९	१२	२४	२	८	१३	३४	१	२८	१३	१४
७	३	७	१३	४४	२	८	१३	११	३	५	१४	२३	२	२४	१४	३
८	४	५	१४	३३	३	४	१४	२	४	१	१५	१४	३	१९	१४	५५
९	४	५९	१५	२६	३	५९	१४	५४	४	५५	१६	६	४	१२	१५	४८
१०	५	४९	१६	२१	४	४९	१५	४८	५	४६	१७	००	५	३	१६	४०
११	६	३४	१७	१६	५	३५	१६	४२	६	३२	१७	५३	५	५१	१७	३२
१२	७	१३	१८	११	६	१७	१७	३५	७	१५	१८	४४	६	३६	१८	२२
१३	७	४९	१९	५	६	५५	१८	२६	७	५४	१९	३५	७	१७	१९	१०
१४	८	२१	१९	५८	७	३०	१९	१७	८	३०	२०	२३	७	५५	१९	५६
१५	८	५२	२०	५०	८	३	२०	६	९	५	२१	११	८	३२	२०	४२
१६	९	२१	२१	४१	८	३५	२०	५५	९	३८	२१	५८	९	७	२१	२७
१७	९	५०	२२	३४	९	७	२१	४४	१०	११	२२	४६	९	४३	२२	१२
१८	१०	२०	२३	२७	९	४०	२२	३५	१०	४६	२३	३५	१०	२०	२२	५९
१९	१०	५३	२४	२२	१०	१५	२३	२७	११	२२	२४	२७	१०	५८	२३	४९
२०	११	२९	०	२२	१०	५३	२४	२२	१२	२	०	२७	११	४०	२४	४१
२१	१२	१०	१	२०	११	३६	०	२२	१२	४७	१	२१	१२	२६	०	४१
२२	१२	५८	२	२०	१२	२५	१	२०	१३	२७	२	१८	१३	१८	१	३६
२३	१३	५३	३	२१	१३	२१	२	२०	१४	३३	३	१७	१४	१४	२	३४
२४	१४	५५	४	२०	१४	२२	३	२०	१५	३५	४	१६	१५	१६	३	३३
२५	१६	२	५	१७	१५	२८	४	१७	१६	४०	५	१५	१६	१९	४	३३
२६	१७	१३	६	९	१६	३६	५	११	१७	४६	६	१०	१७	२४	५	३०
२७	१८	२४	६	५५	१७	४४	६	१	१८	५२	७	१	१८	२७	६	२३
२८	१९	३३	७	३८	१८	५०	६	४७	१९	५६	७	४९	१९	२८	७	१४

सन् २००२ के दैनिक चंद्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में संवत् २०५८ वि.

मार्च	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	२०	४१	८	१७	१९	५४	७	३०	२०	५९	८	३४	२०	२८	८	२
२	२१	४८	८	५६	२०	५७	८	१२	२२	०	९	१७	२१	२६	८	४८
३	२२	५३	९	३४	२२	००	८	५३	२३	०	१०	०	२२	२३	९	३४
४	२३	५८	१०	१३	२३	१	९	३६	२४	०	१०	४५	२३	२१	१०	२१
५	२५	०	१०	५५	२४	१	१०	२१	०	०	११	३१	२४	१८	११	९
६	१	०	११	४१	०	१	११	८	०	५९	१२	१९	०	१८	११	५९
७	२	०	१२	३०	१	००	११	५८	१	५७	१३	१०	१	१४	१२	५१
८	२	५६	१३	२२	१	५५	१२	५०	२	५२	१४	२	२	९	१३	४४
९	३	४७	१४	१६	२	४७	१३	४४	३	४३	१४	५६	३	१	१४	३६
१०	४	३३	१५	११	३	३४	१४	३८	४	३१	१५	४९	३	४९	१५	२८
११	५	१४	१६	६	४	१७	१५	३१	५	१५	१६	४०	४	३४	१६	१८
१२	५	५०	१७	०	४	५६	१६	२२	५	५४	१७	३१	५	१६	१७	७
१३	६	२३	१७	५३	५	३१	१७	१३	६	३१	१८	२०	५	५५	१७	५४
१४	६	५४	१८	४५	६	५	१८	२	७	६	१९	८	६	३२	१८	३९
१५	७	२४	१९	३७	६	३७	१८	५१	७	३९	१९	५५	७	८	१९	२५
१६	७	५३	२०	२९	७	८	१९	४०	८	१३	२०	४३	७	४३	२०	१०
१७	८	२२	२१	२२	७	४१	२०	३०	८	४६	२१	३२	८	१९	२०	५६
१८	८	५४	२२	१६	८	१५	२१	२२	९	२२	२२	२२	८	५७	२१	४४
१९	९	२८	२३	१३	८	५१	२२	१६	१०	०	२३	१४	९	३७	२२	३५
२०	१०	६	२४	११	९	३२	२३	१२	१०	४२	२४	९	१०	२१	२३	२८
२१	१०	५०	०	११	१०	१८	२४	९	११	२९	०	९	११	१०	२४	२३
२२	११	४१	१	१०	११	९	०	९	१२	२१	१	६	१२	३	०	२३
२३	१२	३८	२	८	१२	६	१	७	१३	१९	२	३	१३	००	१	२०
२४	१३	४१	३	४	१३	८	२	४	१४	२०	३	०	१४	०	२	१८
२५	१४	४८	३	५६	१४	१३	२	५७	१५	२४	३	५५	१५	३	३	१४
२६	१५	५७	४	४४	१५	१९	३	४८	१६	२९	४	४७	१६	५	४	८
२७	१७	७	५	२७	१६	२६	४	३५	१७	३३	५	३५	१७	७	४	५९
२८	१८	१६	६	८	१७	३१	५	१९	१८	३७	६	२१	१८	७	५	४८
२९	१९	२५	६	४७	१८	३६	६	१	१९	४०	७	५	१९	७	६	३५
३०	२०	३३	७	२५	१९	४०	६	४३	२०	४२	७	४९	२०	६	७	२२
३१	२१	४०	८	५	२०	४५	७	२६	२१	४४	८	३४	२१	६	८	१०

पृष्ठ २१३ का शेष

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्र शर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) संवत् २०५८ वि.

द. = दक्षिण

उ. = उत्तर	मार्च सन् २००२						अप्रैल सन् २००२					
	सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर	
ता.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	द. ७	४०	उ. ३	१४	उ. ४	५७	उ. ४	२३	द. १७	१३	उ. २	५
२	७	२१	द. २	५९	४	३४	४	४६	२१	२	०	५५
३	६	५९	८	५४	३	५३	५	९	२३	३३	०	१७
४	६	३५	१४	१०	२	५८	५	३२	२४	४२	द. १	२५
५	६	१२	१८	३२	१	५४	५	५६	२८	३०	२	२७
६	५	४९	२१	४६	०	४७	६	१७	२३	६	३	२१
७	५	२६	२३	४६	द. ०	२२	६	४१	२०	३८	४	४
८	५	३	२४	३०	१	२७	७	३	१७	२०	४	३६
९	४	३९	२४	००	२	२७	७	२५	१३	२२	४	५६
१०	४	१६	२२	२०	३	१९	७	४८	८	५३	५	३
११	३	५२	१९	४२	४	२	८	१०	४	६	४	५७
१२	३	२९	१६	१५	४	३३	८	३२	उ. ०	५२	४	३८
१३	३	५	१२	१०	४	५२	८	५४	५	५१	४	७
१४	२	४१	७	३८	४	५९	९	१६	१०	३९	३	२५
१५	२	१८	२	४९	४	५३	उ. ९	३७	उ. १५	६	द. २	३२
१६	१	५४	उ. २	६	४	३३						
१७	१	३०	६	५९	४	२						
१८	१	७	११	३९	३	२०						
१९	०	४३	१५	५५	२	२८						
२०	०	१९	१९	३५	१	२८						
२१	उ. ०	५	२२	२५	०	२३						
२२	०	२८	२४	११	उ. ०	४५						
२३	०	५२	२४	३९	१	५३						
२४	१	१६	२३	३९	२	५६						
२५	१	३९	२१	८	३	५१						
२६	२	३	१७	[illegible]	४	३२						
२७	२	२६	१२	४	४	५६						
२८	२	५०	६	८	५	००						
२९	३	१३	द. ०	१२	४	४२						
३०	३	३७	६	२९	४	४						
३१	उ. ४	००	द. १२	१६	उ. ३	१०						

उ. = उत्तर

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) संवत् २०५८ वि.

द. = दक्षिण

ता.	मार्च सन् २००१						अप्रैल सन् २००१						मई सन् २००१						जून सन् २००१						ता.
	सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	
१							उ. ४	२९	उ.२२	५२	द. ०	२८	उ. १५	२	उ. १९	२४	उ. ३	२	उ. २२	२	उ. १	४५	उ. ५	१४	१
२							४	५२	२२	४७	उ. ०	४६	१५	२०	१५	३९	३	५७	२२	१०	द. ३	४२	५	३	२
३							५	१५	२१	१५	१	५८	१५	३८	१०	५९	४	३७	२२	१८	८	५३	४	३६	३
४							५	३८	१८	२०	३	३	१५	५५	५	४४	५	१	२२	२५	१३	३५	३	५३	४
५							६	१	१४	१५	३	५८	१६	१२	०	१३	५	५	२२	३२	१७	३२	२	५९	५
६							६	२३	९	१८	४	३६	१६	२९	द. ५	१७	४	५२	२२	३८	२०	३६	१	५७	६
७							६	४६	३	४९	४	५७	१६	१६	१०	२६	४	२१	२२	४४	२२	३४	०	५०	७
८							७	९	द. १	४९	४	५८	१७	३	१४	५८	३	३६	२२	५०	२३	२३	द. ०	१८	८
९							७	३१	७	१६	४	४१	१७	१९	१८	४१	२	४०	२२	५५	२३	४	१	२४	९
१०							७	५३	१२	१३	४	८	१७	३५	२१	२२	१	३७	२३	०	२१	४०	२	२६	१०
११							८	१५	१६	२६	३	२१	१७	५०	२२	५५	०	३१	२३	४	१९	१९	३	२१	११
१२							८	३७	१९	४२	२	२५	१८	६	२३	१९	०	३६	२३	८	१६	१०	४	७	१२
१३							८	५९	२१	५४	१	२३	१८	२१	२२	३६	द. १	३९	२३	१२	१२	२३	४	४२	१३
१४							९	२१	२३	०	०	१८	१८	३५	२०	५२	२	३८	२३	१५	८	५	५	६	१४
१५							९	४२	२२	५९	द. ०	४५	१८	५०	१८	१५	३	३०	२३	१८	३	२६	५	१६	१५
१६							१०	४	२१	५४	१	४७	१९	४	१४	५३	४	१२	२३	२०	उ. १	२७	५	१२	१६
१७							१०	२५	१९	५२	२	४३	१९	१७	१०	५३	४	४४	२३	२२	६	२४	४	५३	१७
१८							१०	४६	१७	०	३	३२	१९	३१	६	२५	५	४	२३	२४	११	१२	४	१९	१८
१९							११	७	१३	२५	४	१२	१९	४४	१	३७	५	१०	२३	२५	१५	३८	३	३०	१९
२०							११	२८	९	१४	४	४२	१९	५७	उ. ३	२२	५	२	२३	२६	१९	२१	२	२७	२०
२१							११	४८	४	३८.	४	५९	२०	९	८	२०	४	३८	२३	२६	२२	२	१	१३	२१
२२							१२	९	उ. ०	१५	५	२	२०	२१	१३	४	३	५८	२३	२६	२३	२०	उ. ०	६	२२
२३							१२	२९	५	१४	४	५०	२०	३३	१७	१४	३	४	२३	२६	२३	३	१	२६	२३
२४							१२	४९	१०	५	४	२३	२०	४४	२०	३३	१	५९	२३	२५	२१	१०	२	४१	२४
२५							१३	८	१४	३४	३	४१	२०	५५	२२	४१	उ. ०	४५	२३	२४	१७	५३	३	४५	२५
२६	उ.२	९	उ. १	४८	द. ४	५९	१३	२८	१८	२३	२	४७	२१	६	२३	२३	०	३३	२३	२२	१२	३२	४	३४	२६
२७	२	३२	६	४०	४	४६	१३	४७	२१	१६	१	४२	२१	१६	२२	३३	१	४९	२३	२०	८	२८	५	५	२७
२८	२	५६	११	१९	४	१८	१४	६	२२	५५	उ. ०	३०	२१	२६	२०	१६	२	५८	२३	१७	३	२	५	१७	२८
२९	३	१९	१५	३१	३	३६	१४	२५	२३	१०	०	४४	२१	३६	१६	४४	३	५६	२३	१४	द. २	२६	५	१०	२९
३०	३	४२	१९	१	२	४२	उ. १४	४३	उ.२१	५८	उ. १	५६	२१	४५	१२	१६	४	४०	उ. २३	११	द. ७	४०	उ. ४	४६	३०
३१	उ.४	६	उ.२१	३३	द. १	३८							उ. २१	५३	उ. ७	९	उ. ५	६							३१

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टें. टा.) संवत् २०५८ वि.

उ.= उत्तर द. = दक्षिण

ता.	जुलाई सन् २००१						अगस्त सन् २००१						सितम्बर सन् २००१						अक्टूबर सन् २००१						ता.
	सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	
१	उ. २३	७	द. १२	२८	उ. ४	७	उ. १८	३	द. २३	७	उ. ०	१८	उ. ८	२०	द. १८	४७	द. ३	२९	द. ३	८	द. ८	१९	द. ४	५४	१
२	२३	३	१६	३५	३	१६	१७	४८	२३	२४	०	४८	७	५८	१५	२७	४	९	३	३१	३	३७	५	००	२
३	२२	५८	१९	५१	२	१६	१७	३२	२२	३४	द. १	५२	७	३६	११	३१	४	३९	३	५४	उ. १	१७	४	५१	३
४	२२	५३	२२	७	१	१०	१७	१७	२०	४४	२	४९	७	१४	७	७	४	५७	४	१७	६	१०	४	२९	४
५	२२	४८	२३	१६	०	२	१७	१	१८	०	३	३९	६	५२	२	२५	५	१	४	४०	१०	५४	३	५४	५
६	२२	४२	२३	१७	द. १	५	१६	४४	१४	३३	४	२०	६	३०	उ. २	२४	४	५३	५	३	१५	१४	३	७	६
७	२२	३६	२२	११	२	८	१६	२८	१०	३१	४	४९	६	७	७	१२	४	३०	५	२६	१८	५६	२	१०	७
८	२२	२९	२०	७	३	५	१६	११	६	५	५	५	५	४५	११	४६	३	५५	५	४९	२१	४७	१	५	८
९	२२	२२	१७	११	३	५४	१५	५४	१	२३	५	९	५	२२	१५	५६	३	८	६	१२	२३	३०	उ. ०	४	९
१०	२२	१५	१३	३५	४	३३	१५	३६	उ. ३	२५	४	५९	५	००	१९	२७	२	१०	६	३५	२३	५४	१	१५	१०
११	२२	७	९	२७	५	०	१५	१९	८	१०	४	३५	४	३७	२२	४	१	४	६	५८	२२	५१	२	२३	११
१२	२१	५९	४	५५	५	१४	१५	१	१२	४१	३	५७	४	१४	२३	२९	उ. ०	७	७	२०	२०	२०	३	२५	१२
१३	२१	५१	उ. ०	१०	५	१५	१४	४३	१६	४६	३	७	३	५१	२३	३०	१	२०	७	४३	१६	३०	४	१४	१३
१४	२१	४२	४	४१	५	१	१४	२४	२०	८	२	५	३	२८	२१	५८	२	३०	८	५	११	३६	४	४७	१४
१५	२१	३३	९	२८	४	३३	१४	६	२२	२८	उ. ०	५४	३	५	१८	५४	३	३२	८	२७	५	५८	५	२	१५
१६	२१	२३	१३	५९	३	५०	१३	४७	२३	२८	०	२२	२	४२	१४	३३	४	२१	८	५०	द. ०	१	४	५६	१६
१७	२१	१३	१७	५७	२	५३	१३	२८	२२	५५	१	३९	२	१९	९	१३	४	५१	९	१२	५	५७	४	३०	१७
१८	२१	३	२१	४	१	४५	१३	९	२०	४४	२	५१	१	५६	३	२१	५	०	९	३४	११	२८	३	४७	१८
१९	२०	५२	२२	५८	उ. ०	२८	१२	४९	१७	३	३	५२	१	३२	द. २	३९	४	४९	९	५५	१६	१४	२	५१	१९
२०	२०	४१	२३	२२	०	५२	१२	३०	१२	१४	४	३७	१	९	८	२१	४	१९	१०	१७	१९	५९	१	४७	२०
२१	२०	३०	२२	६	२	११	१२	१०	६	४१	५	१	०	४६	१३	२७	३	३४	१०	३८	२२	३३	०	३८	२१
२२	२०	१८	१९	१६	३	२१	११	५०	०	५०	५	५	०	२२	१७	४१	२	३८	११	००	२३	५१	द. ०	३०	२२
२३	२०	६	१५	८	४	१७	११	३०	द. ४	५४	४	१९	०	१	२०	५३	१	३५	११	२१	२३	५५	१	३५	२३
२४	१९	५४	१०	६	४	५५	११	९	१०	१२	४	१६	०	२४	२२	५५	०	२९	११	४२	२२	४९	२	३४	२४
२५	१९	४१	४	३४	५	१२	१०	४९	१४	५०	३	२९	०	४८	२३	४५	०	३७	१२	३	२०	४२	३	२६	२५
२६	१९	२८	द. १	४	५	१०	१०	२८	१८	३६	२	३३	द. १	११	२३	२६	द. १	३९	१२	२३	१७	४३	४	८	२६
२७	१९	१५	६	२९	४	५०	१०	७	२१	२२	१	३०	१	३४	२२	२	२	३६	१२	४४	१४	१	४	४०	२७
२८	१९	१	११	२८	४	१४	९	४६	२३	१	०	२५	१	५८	१९	४१	३	२६	१३	४	९	४७	४	४९	२८
२९	१८	४७	१५	४६	३	२५	९	२५	२३	३३	०	४०	२	२१	१६	३०	४	६	१३	२४	५	७	५	६	२९
३०	१८	३३	१९	१४	२	२८	९	३	२२	५८	द. १	४२	द. २	४४	द. १२	३९	द. ४	३६	१३	४४	उ. ०	१३	४	५८	३०
३१	उ. १८	१८	द. २१	४३	उ. १	२४	उ. ८	४३	द. २१	३८	द. ३	३९							द. १४	३	उ. ४	४६	द. ४	३७	३१

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रांति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टें. टा.) संवत् २०५८ वि.

उ.= उत्तर   द. = दक्षिण

ता.	नवम्बर सन् २००१						दिसम्बर सन् २००१						जनवरी सन् २००२						फरवरी सन् २००२						ता.
	सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		सूर्य क्रां.		चंद्र क्रां.		चंद्र शर		
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	
१	द. १४	२३	उ. ९	३९	द. ४	३	द. २१	४७	उ. २०	३१	द. १	३१	द. २३	२	उ. २२	४७	उ. २	५७	द. १७	१३	उ. ६	५२	उ. ५	८	१
२	१४	४२	१४	१३	३	१५	२१	५६	२३	१	०	१७	२२	५७	१९	५५	३	५७	१६	५६	०	५४	५	००	२
३	१५	१	१८	१३	२	१७	२२	५	२४	११	०	५८	२२	५२	१५	४६	४	४२	१६	३८	द. ४	५९	४	३३	३
४	१५	१९	२१	२२	१	११	२२	१३	२३	५२	२	११	२२	४६	१०	४४	५	८	१६	२०	१०	२९	३	५०	४
५	१५	३८	२३	२५	उ. ०	०	२२	२१	२२	२	३	१७	२२	३९	५	९	५	१५	१६	३	१५	१८	२	५५	५
६	१५	५६	२४	९	१	१२	२२	२८	१८	५१	४	१२	२२	३२	द. ०	३७	५	३	१५	४४	१९	१५	१	५२	६
७	१६	१४	२३	२७	२	२२	२२	३५	१४	३३	४	५१	२२	२५	६	१६	४	३३	१५	२६	२२	८	०	४४	७
८	१६	३१	२१	१८	३	२४	२२	४२	९	२७	५	१३	२२	१८	११	३१	३	४७	१५	७	२३	५०	द. ०	२४	८
९	१६	४९	१७	५१	४	१४	२२	४८	३	५२	५	१५	२२	९	१६	८	२	५०	१४	४८	२४	१८	१	३०	९
१०	१७	६	१३	२०	४	५०	२२	५४	द. १	५३	४	५९	२२	१	१९	५२	१	४५	१४	२९	२३	३२	२	३०	१०
११	१७	२३	८	२	५	८	२२	५९	७	३०	४	२५	२१	५२	२२	३२	०	३५	१४	९	२१	४०	३	२३	११
१२	१७	३९	२	१७	५	७	२३	४	१२	४२	३	३६	२१	४२	२३	५९	द. ०	३५	१३	४९	१८	५१	४	६	१२
१३	१७	५५	द. ३	३७	४	४६	२३	८	१७	१२	२	३५	२१	३३	२४	१०	१	४३	१३	२९	१५	१४	४	३८	१३
१४	१८	११	९	१६	४	७	२३	१२	२०	४४	१	२६	२१	२२	२३	७	२	४४	१३	९	११	४	४	५७	१४
१५	१८	२७	१४	२३	३	१४	२३	१५	२३	६	०	१४	२१	१२	२०	५९	३	३७	१२	४९	६	२९	५	३	१५
१६	१८	४२	१८	३८	२	९	२३	१८	२४	११	द. ०	५८	२१	१	१७	५६	४	१९	१२	२८	१	४१	४	५६	१६
१७	१८	५७	२१	४६	०	५९	२३	२१	२३	५८	२	५	२०	४९	१४	११	४	४०	१२	७	उ. ३	१२	४	३६	१७
१८	१९	११	२३	३९	द. ०	१२	२३	२३	२२	३३	३	५	२०	३७	९	५४	५	७	११	४६	८	०	४	५	१८
१९	१९	२५	२४	१३	१	२१	२३	२४	२०	६	३	५५	२०	२५	५	१६	५	१२	११	२५	१२	३४	३	२१	१९
२०	१९	३९	२३	३१	२	२५	२३	२६	१६	५०	४	३४	२०	१२	०	२७	५	३	११	४	१६	४३	२	२८	२०
२१	१९	५३	२१	४३	३	२१	२३	२६	१२	५४	५	१	१९	५९	उ. ४	२६	४	४१	१०	४२	२०	१३	१	२७	२१
२२	२०	६	१८	५९	४	७	२३	२६	८	३१	५	१५	१९	४६	९	१३	४	६	१०	२०	२२	४९	०	१९	२२
२३	२०	१९	१५	२९	४	४१	२३	२६	३	४८	५	१६	१९	३२	१३	४५	३	१९	९	५८	२४	१४	उ. ०	५२	२३
२४	२०	३१	११	२३	५	४	२३	२५	उ. १	६	५	३	१९	१८	१७	४८	२	२१	९	३६	२४	१३	२	२	२४
२५	२०	४३	६	५१	५	१४	२३	२४	६	२	४	३६	१९	३	२१	६	१	१४	९	१४	२२	३६	३	७	२५
२६	२०	५४	२	१	५	१०	२३	२२	१०	५१	३	५६	१८	४९	२३	२२	०	१	८	५२	१९	२५	४	२	२६
२७	२१	६	उ. २	५८	४	५२	२३	२०	१५	२०	३	३	१८	३३	२४	१६	उ. १	१४	८	२९	१४	५३	४	४०	२७
२८	२१	१७	७	५५	४	२०	२३	१७	१९	१२	१	५९	१८	१८	२३	३४	२	२७	द. ८	७	उ. ९	२०	उ. ४	५९	२८
२९	२१	२७	१२	४१	३	३५	२३	१४	२२	१०	उ. ०	४७	१८	२	२१	१५	३	३१							२९
३०	द. २१	३७	उ. १६	५९	द. २	३८	२३	११	२३	५४	०	२९	१७	४६	१७	२७	४	२२							३०
३१							द. २३	६	उ. २४	९	उ. १	४६	द. १७	२९	उ. १२	३१	उ. ४	५५							३१

शेष पृष्ठ २१० पर

मंगलादि ग्रहों के क्रांतिशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) संवत् २०५८ वि.

उ = उत्तर, द = दक्षिण

तारीख		मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख	
सन् ई.		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		सन् ई.	
२००१		अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	२००१	
मार्च	२५	द. २२	२६	उ. ०	२८	द. ९	४१	द. २	११	उ. २०	४९	उ. ०	३४	उ. १२	४०	उ. ८	११	उ. १७	४३	द. १	५०	मार्च	२५
	२८	२२	३६	०	२४	८	७	२	१९	२०	५४	०	३४	११	५१	८	१२	१७	४८	१	४९		२८
	३१	२२	४५	०	२०	६	२१	२	२३	२१	००	०	३३	१०	५२	७	५६	१७	५३	१	४९		३१
अप्रैल	१	२२	४८	०	१९	५	४३	२	२४	२१	१	०	३३	१०	३०	७	४९	१७	५४	१	४९	अप्रैल	१
	४	२२	५७	०	१४	३	४४	२	२२	२१	७	०	३३	९	२३	७	२३	१७	५९	१	४८		४
	७	२३	५	०	९	१	३५	२	१६	२१	१३	०	३२	८	१५	६	५१	१८	४	१	४७		७
	१०	२३	१३	०	४	उ. ०	४३	२	६	२१	१८	०	३२	७	८	६	१५	१८	८	१	४७		१०
	१३	२३	२१	०	२	३	९	१	५१	२१	२४	०	३२	६	७	५	३५	१८	१३	१	४६		१३
	१६	२३	२९	०	८	५	४१	१	३२	२१	२९	०	३१	५	१२	४	५४	१८	१८	१	४६		१६
	१९	२३	३७	०	१४	८	१९	१	८	२१	३५	०	३१	४	२७	४	१२	१८	२३	१	४५		१९
	२२	२३	४५	०	२१	१०	५९	०	४०	२१	४०	०	३१	३	५०	३	३१	१८	२८	१	४५		२२
	२५	२३	५३	०	२८	१३	३७	०	१०	२१	४५	०	३०	३	२३	२	५२	१८	३३	१	४५		२५
	२८	२४	०१	०	३५	१६	९	उ. ०	२२	२१	५०	०	३०	३	६	२	१५	१८	३८	१	४४		२८
मई	१	२४	९	०	४३	१८	२९	०	५४	२१	५५	०	३०	२	५७	१	४०	१८	४३	१	४४		१
	४	२४	१८	०	५२	२०	३२	१	२३	२२	०	०	२९	२	५७	१	७	१८	४७	१	४४		४
	७	२४	२७	१	१	२२	१४	१	४८	२२	५	०	२९	३	५	०	३७	१८	५२	१	४३		७
	१०	२४	३६	१	१०	२३	३४	२	७	२२	१०	०	२९	३	२०	०	१०	१८	५७	१	४३		१०
	१३	२४	४६	१	२०	२४	३१	२	२०	२२	१४	०	२९	३	४१	द. ०	१६	१९	२	१	४३		१३
	१६	२४	५६	१	३०	२५	७	२	२४	२२	१८	०	२८	४	८	०	३९	१९	६	१	४२		१६
	१९	२५	७	१	४१	२५	२५	२	२१	२२	२३	०	२८	४	४०	०	५९	१९	११	१	४२		१९
	२२	२५	१७	१	५२	२५	२६	२	१०	२२	२७	०	२८	५	१६	१	१८	१९	१६	१	४२		२२
	२५	२५	२८	२	३	२५	१३	१	५०	२२	३०	०	२८	५	५७	१	३५	१९	२०	१	४२		२५
	२८	२५	३९	२	१४	२४	४७	१	२२	२२	३४	०	२७	६	४१	१	४९	१९	२४	१	४२		२८
	३१	२५	५०	२	२६	२४	१२	०	४६	२२	३७	०	२७	७	२७	२	२	१९	२९	१	४१		३१
जून	१	२५	५३	२	३०	२३	५९	०	३३	२२	३८	०	२७	७	४३	२	६	१९	३०	१	४१	जून	१
	४	२६	३	२	४१	२३	१४	द. ०	१२	२२	४१	०	२७	८	३३	२	१६	१९	३४	१	४१		४
	७	२६	१३	२	५२	२२	२५	१	२	२२	४४	०	२७	९	२४	२	२५	१९	३९	१	४१		७
	१०	२६	२१	३	३	२१	३३	१	५३	२२	४७	०	२७	१०	१६	२	३२	१९	४३	१	४१		१०
	१३	२६	२९	३	१४	२०	४२	२	४३	२२	४९	०	२६	११	९	२	३८	१९	४६	१	४१		१३
	१६	२६	३५	३	२४	१९	५५	३	२७	२२	५१	०	२६	१२	३	२	४२	१९	५०	१	४१		१६
	१९	२६	४०	३	३३	१९	१७	४	२	२२	५३	०	२६	१२	५६	२	४५	१९	५४	१	४१		१९
	२२	२६	४५	३	४१	१८	५०	४	२५	२२	५५	०	२६	१३	४९	२	४७	१९	५७	१	४१		२२
	२५	२६	४८	३	४९	१८	३७	४	३४	२२	५७	०	२६	१४	४०	२	४८	२०	१	१	४१		२५
	२८	२६	५०	३	५५	उ. १८	३८	द. ४	३२	उ. २२	५८	उ. ०	२६	उ. १५	३१	द. २	४७	उ. २०	४	द. १	४१		२८

मंगलादि ग्रहों के क्रांतिशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) संवत् २०५८ वि.

उ = उत्तर   द = दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
सन् ई.	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		सन् ई.
२००१	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	२००१
जुलाई १	द. २६	५१	द. ४	१	उ. १८	५३	द. ४	१८	उ. २२	५९	द. ०	२६	उ. १६	२०	द. २	४६	उ. २०	७	द. १	४१	जुलाई १
४	२६	५१	४	५	१९	१९	३	५५	२३	००	०	२६	१७	६	२	४३	२०	११	१	४१	४
७	२६	५१	४	९	१९	५४	३	२५	२३	०	०	२५	१७	५१	२	३९	२०	१४	१	४१	७
१०	२६	५१	४	१२	२०	३४	२	५०	२३	१	०	२५	१८	३२	२	३५	२०	१६	१	४१	१०
१३	२६	५१	४	१४	२१	१५	२	११	२३	१	०	२५	१९	११	२	३०	२०	१९	१	४२	१३
१६	२६	५०	४	१५	२१	५२	१	३१	२३	१	०	२५	१९	४६	२	२४	२०	२२	१	४२	१६
१९	२६	५०	४	१५	२२	२०	०	५०	२३	१	०	२५	२०	१८	२	१७	२०	२८	१	४२	१९
२२	२६	५०	४	१५	२२	३४	०	११	२३	०	०	२५	२०	४५	२	१०	२०	२७	१	४२	२२
२५	२६	५०	४	१४	२२	२९	उ. ०	२४	२३	०	०	२५	२१	८	२	२	२०	२९	१	४२	२५
२८	२६	५१	४	१३	२२	१	०	५४	२२	५९	०	२५	२१	२७	१	५३	२०	३१	१	४३	२८
३१	२[illegible]	५२	४	११	२१	९	१	१८	२२	५८	०	२५	२१	४१	१	४५	२०	३३	१	४३	३१
अगस्त १	२६	५२	४	११	२०	४७	१	२४	२२	५७	०	२५	२१	४५	१	४२	२०	३३	१	४३	अगस्त १
४	२६	५४	४	९	१९	२६	१	३८	२२	५६	०	२५	२१	५२	१	३२	२०	३५	१	४३	४
७	२६	५५	४	६	१७	४६	१	४५	२२	५५	०	२५	२१	५४	१	२३	२०	३७	१	४३	७
१०	२६	५६	४	३	१५	५३	१	४५	२२	५३	०	२५	२१	५२	१	१३	२०	३८	१	४४	१०
१३	२६	५८	४	०	१३	५०	१	४०	२२	५२	०	२५	२१	४३	१	३	२०	४०	१	४४	१३
१६	२६	५९	३	५७	११	४०	१	३०	२२	५०	०	२५	२१	३०	द. ०	५३	२०	४१	१	४४	१६
१९	२७	०	३	५३	९	२६	१	१६	२२	४८	०	२५	२१	११	०	४३	२०	४२	१	४५	१९
२२	२७	१	३	५०	७	११	०	५९	२२	४६	०	२५	२०	४७	०	३३	२०	४३	१	४५	२२
२५	२७	२	३	४६	४	५६	०	३९	२२	४४	०	२५	२०	१७	०	२३	२०	४४	१	४५	२५
२८	२७	१	३	४२	२	४२	०	१७	२२	४२	०	२५	१९	४३	०	१४	२०	४५	१	४६	२८
३१	२७	०	३	३८	०	३०	द. ०	६	२२	३९	०	२५	१९	३	०	४	२०	४६	१	४६	३१
सिंतबर १	२७	०	३	३७	द. ०	१३	०	१४	२२	३९	०	२५	१८	४९	०	१	२०	४६	१	४६	सिंतबर १
४	२६	५८	३	३३	२	२०	०	३९	२२	३६	०	२६	१८	३	उ. ०	९	२०	४६	१	४६	४
७	२६	५५	३	२८	४	२१	१	४	२२	३४	०	२६	१७	१२	०	१८	२०	४७	१	४७	७
१०	२६	५०	३	२४	६	१७	१	३०	२२	३२	०	२६	१६	१७	०	२६	२०	४७	१	४७	१०
१३	२६	४५	३	२०	८	६	१	५५	२२	२९	०	२६	१५	१८	०	३४	२०	४७	१	४८	१३
१६	२६	३८	३	१६	९	४६	२	१९	२२	२७	०	२६	१४	१४	०	४२	२०	४७	१	४८	१६
१९	२६	३०	३	११	११	१७	२	४२	२२	२४	०	२६	१३	७	०	५०	२०	४७	१	४८	१९
२२	२६	२१	३	७	१२	३६	३	३	२२	२२	०	२६	११	५७	०	५७	२०	४७	१	४९	२२
२५	२६	१०	३	२	१३	४०	३	२१	२२	२०	०	२६	१०	४४	१	३	२०	४७	१	४९	२५
२८	२५	५७	२	५८	१४	२५	३	३३	२२	१८	०	२७	९	२७	१	९	२०	४७	१	५०	२८
अक्टूबर १	२५	४३	२	५३	१४	४६	३	३९	२२	१६	०	२७	८	९	१	१४	२०	६	१	५०	अक्टूबर १
४	द. २५	२७	द. २	४९	द. १४	३७	द. ३	३६	उ. २२	१४	द. ०	२७	उ. ६	४८	उ. १	११	उ. २०	[illegible]	द. १	५०	४

उ = उत्तर

मंगलादि ग्रहों के क्रांतिशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) संवत् २०५८ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
सन् ई.	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		सन् ई.
२००१-२००१	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	२००१-२००१
अक्टूबर ७	द. २५	९	द. २	४४	द. १३	५२	द. ३	१९	उ. २२	१२	द. ०	२७	उ. ५	२५	उ. १	२२	उ. २०	४५	द. १	५१	अक्टूबर ७
१०	२४	५०	२	३९	१२	२६	२	४७	२२	१०	०	२७	४	१	१	२६	२०	४४	१	५१	१०
१३	२४	२९	२	३५	१०	२५	१	५८	२२	८	०	२७	२	३५	१	२९	२०	४३	१	५१	१३
१६	२४	६	२	३०	८	१०	०	५९	२२	७	०	२८	१	८	१	३१	२०	४२	१	५२	१६
१९	२३	४१	२	२६	६	९	उ. ०	२	२२	६	०	२८	द. ०	१९	१	३२	२०	४१	१	५२	१९
२२	२३	१४	२	२१	४	४८	०	५५	२२	५	०	२८	१	४७	१	३३	२०	४०	१	५२	२२
२५	२२	४६	२	१७	४	१८	१	३४	२२	४	०	२८	३	१५	१	३३	२०	३९	१	५२	२५
२८	२२	१५	२	१२	४	३७	१	५८	२२	३	०	२९	४	४२	१	३३	२०	३८	१	५३	२८
३१	२१	४४	२	७	५	३४	२	९	२२	२	०	२९	६	९	१	३१	२०	३७	१	५३	३१
नवंबर १	२१	३२	२	६	५	५९	२	१०	२२	२	०	२९	६	३८	१	३१	२०	३६	१	५३	नवंबर १
४	२०	५८	२	१	७	२९	२	८	२२	२	०	२९	८	३	१	२९	२०	३५	१	५३	४
७	२०	२२	१	५७	९	११	१	५९	२२	२	०	२९	९	२६	१	२६	२०	३३	१	५३	७
१०	१९	४५	१	५२	११	०	१	४५	२२	२	०	३०	१०	४८	१	२३	२०	३२	१	५३	१०
१३	१९	६	१	४८	१२	४९	१	२८	२२	३	०	३०	१२	८	१	२०	२०	३०	१	५३	१३
१६	१८	२६	१	४४	१४	३६	१	९	२२	३	०	३०	१३	२५	१	१६	२०	२८	१	५३	१६
१९	१७	४४	१	३९	१६	१९	०	४९	२२	४	०	३०	१४	३९	१	११	२०	२७	१	५३	१९
२२	१७	१	१	३५	१७	५५	०	२९	२२	५	०	३०	१५	४९	१	६	२०	२५	१	५३	२२
२५	१६	१६	१	३१	१९	२५	०	८	२२	६	०	३१	१६	५६	१	०	२०	२३	१	५३	२५
२८	१५	३०	१	२६	२०	४५	द. ०	१२	२२	७	०	३१	१७	५९	०	५४	२०	२१	१	५३	२८
दिसंबर १	१४	४४	१	२२	२१	५७	०	३२	२२	९	०	३१	१८	५८	०	४८	२०	२०	१	५३	दिसंबर १
४	१३	५६	१	१८	२२	५९	०	५१	२२	११	०	३१	१९	५२	०	४२	२०	१८	१	५२	४
७	१३	७	१	१४	२३	५१	१	८	२२	१२	०	३१	२०	४१	०	३५	२०	१६	१	५२	७
१०	१२	१७	१	१०	२४	३१	१	२४	२२	१४	०	३२	२१	२४	०	२८	२०	१५	१	५२	१०
१३	११	२६	१	६	२५	०	१	३९	२२	१६	०	३२	२२	२	०	२१	२०	१३	१	५१	१३
१६	१०	३५	१	२	२५	१७	१	५१	२२	१८	०	३२	२२	३४	०	१४	२०	११	१	५१	१६
१९	९	४२	०	५८	२५	२१	२	१	२२	२०	०	३२	२३	०	०	७	२०	१०	१	५१	१९
२२	८	४९	०	५४	२५	१२	२	८	२२	२२	०	३२	२३	२०	०	०	२०	८	१	५०	२२
२५	७	५६	०	५१	२४	४९	२	११	२२	२४	०	३२	२३	३३	०	८	२०	७	१	५०	२५
२८	७	२	०	४७	२४	१३	२	११	२२	२६	०	३२	२३	४०	०	१५	२०	५	१	४९	२८
३१	६	८	०	४३	२३	२२	२	६	२२	२८	०	३३	२३	४०	०	२२	२०	४	१	४९	३१
जनवरी १, २००२	५	४९	०	४२	२३	२	२	३	२२	२८	०	३३	२३	३९	०	२४	२०	४	१	४८	जनवरी १, २००२
४	४	५५	०	३९	२१	५५	१	५१	२२	३०	०	३३	२३	३०	०	३१	२०	३	१	४८	४
७	४	०	०	३५	२०	३७	१	३१	२२	३२	०	३३	२३	१५	०	३८	२०	२	१	४७	७
१०	द. ३	५	द. ०	३२	द. १९	१२	द. १	३	उ. २२	३४	द. ०	३३	द. २२	५३	द. ०	४४	उ. २०	१	द. १	४६	१०

मंगलादि ग्रहों के क्रांतिशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टें. टा.) संवत् २०५८ वि.

उ = उत्तर   द = दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
सन् ई.	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		सन् ई.
२००२	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	२००२
जनवरी १३	द. २	१०	द. ०	२८	द. १७	४५	द. ०	२७	उ. २२	३५	द. ०	३३	द. २२	२५	द. ०	५०	उ. २०	०	द. १	४६	जनवरी १३
१६	१	१४	०	२५	१६	२४	उ. ०	१८	२२	३७	०	३३	२१	५१	०	५६	२०	०	१	४५	१६
१९	०	१९	०	२२	१५	२१	१	११	२२	३८	०	३३	२१	११	१	१	१९	५९	१	४४	१९
२२	उ. ०	३६	०	१९	१४	४५	२	५	२२	४०	०	३३	२०	२५	१	६	१९	५९	१	४४	२२
२५	१	३१	०	१६	१४	४१	२	५४	२२	४१	०	३३	१९	३४	१	१०	१९	५९	१	४३	२५
२८	२	२५	०	१३	१५	६	३	२६	२२	४२	०	३२	१८	३८	१	१४	१९	५९	१	४२	२८
३१	३	१९	०	१०	१५	४८	३	३७	२२	४३	०	३२	१७	३६	१	१८	१९	५९	१	४१	३१
फरवरी १	३	३८	०	९	१६	५	३	३५	२२	४३	०	३२	१७	१४	१	१९	१९	५९	१	४१	फरवरी १
४	४	३१	०	६	१६	५३	३	२०	२२	४४	०	३२	१६	७	१	२२	२०	०	१	४०	४
७	५	२५	०	३	१७	३६	२	५२	२२	४५	०	३२	१४	५६	१	२४	२०	०	१	४०	७
१०	६	१७	०	०	१८	१०	२	१८	२२	४६	०	३२	१३	४२	१	२६	२०	१	१	३९	१०
१३	७	९	उ. ०	२	१८	३४	१	४२	२२	४६	०	३२	१२	२३	१	२७	२०	२	१	३८	१३
१६	८	०	०	५	१८	४६	१	६	२२	४७	०	३२	११	२	१	२७	२०	३	१	३७	१६
१९	८	५१	०	७	१८	४७	०	३३	२२	४७	०	३२	९	३९	१	२७	२०	५	१	३७	१९
२२	९	४१	०	१०	१८	३६	०	१	२२	४८	०	३२	८	१३	१	२७	२०	६	१	३६	२२
२५	१०	३०	०	१२	१८	१३	द. ०	२७	२२	४८	०	३२	६	४५	१	२६	२०	८	१	३५	२५
२८	११	१८	०	१४	१७	३८	०	५३	२२	४८	०	३१	५	१५	१	२४	२०	९	१	३४	२८
मार्च १	११	३३	०	१५	१७	२४	१	०	२२	४८	०	३१	४	४५	१	२३	२०	१०	१	३४	मार्च १
४	१२	२०	०	१७	१६	३३	१	२२	२२	४८	०	३१	३	१४	१	२१	२०	१२	१	३३	४
७	१३	६	०	२०	१५	३१	१	४०	२२	४८	०	३१	१	४२	१	१८	२०	१४	१	३३	७
१०	१३	५०	०	२२	१४	१७	१	५४	२२	४८	०	३१	०	१०	१	१४	२०	१६	१	३२	१०
१३	१४	३४	०	२४	१२	५१	२	५	२२	४८	०	३१	उ. १	२३	१	१०	२०	१८	१	३१	१३
१६	१५	१६	०	२६	११	१५	२	१३	२२	४८	०	३१	२	५५	१	५	२०	२१	१	३०	१६
१९	१५	५७	०	२८	९	२८	२	१६	२२	४८	०	३१	४	२७	१	०	२०	२३	१	३०	१९
२२	१६	३७	०	२९	७	३०	२	१५	२२	४७	०	३१	५	५८	०	५४	२०	२६	१	२९	२२
२५	१७	१५	०	३१	५	२१	२	११	२२	४७	०	३१	७	२८	०	४८	२०	२८	१	२८	२५
२८	१७	५२	०	३३	३	३	२	१	२२	४६	०	३०	८	५६	०	४२	२०	३१	१	२८	२८
३१	१८	२७	०	३५	०	३५	१	४८	२२	४५	०	३०	१०	२३	०	३५	२०	३४	१	२७	३१
अप्रैल १	१८	३९	०	३५	उ. ०	१७	१	४२	२२	४५	०	३०	१०	५१	०	३३	२०	३५	१	२७	अप्रैल १
४	१९	१२	०	३७	२	५५	१	२२	२२	४४	०	३०	१२	१५	०	२६	२०	३८	१	२६	४
७	१९	४४	०	३९	५	४०	०	५८	२२	४३	०	३०	१३	३६	०	१८	२०	४०	१	२६	७
१०	२०	१५	०	४०	८	२७	०	२९	२२	४२	०	३०	१४	५४	०	१०	२०	४३	१	२५	१०
१३	उ. २०	४३	उ. ०	४३	उ. ११	१३	उ. ०	२	उ. २२	४१	द. ०	३०	उ. १६	८	द. ०	२	उ. २०	४६	द. १	२५	१३

शेष पृष्ठ १९२ पर

द्वितीया चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार भविष्य सं. २०५८वि.

चैत्र शुक्ल पक्ष



पीत वर्ण

दक्षिण शृंग

संवत् २०५८ वि. चैत्र शुक्ल १ सोमवार दिनांक २६ मार्च सन् २००१ ई० को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से पीत वर्ण वाला दिखलाई देगा। पश्चिमी देशों में विग्रह, जनता में उथल-पुथल मच जाया करती है। रुई कपास, ऊन, काष्ठ, लोहा, घी, तेल पर तेजी के योग दिखलाई देते हैं। धान्य में गेहूं, चना, उड़द, मटर, सरसों, मक्का में घोर तेजी के प्रायः योग बन रहे हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता के भाव कुछ गिर जाते हैं। जूट, पाट, बारदाने, हींग, जीरा, धनियां, कालीमिर्च, मखाने, दाख, किशमिश के भाव पर कुछ घटबढ़ के साथ तेजी पर जाया करते हैं। सुख सामान्य सर्वत्र बना रहता है।

वैशाख शुक्ल पक्ष



रक्त वर्ण

समशृंग

संवत् २०५८ वि. वैशाख शुक्ल १ मंगलवार दिनांक २४ अप्रैल सन् २००१ ई. को चन्द्र दर्शन सम शृंग से लालवर्ण वाला दिखलाई दे रहा है। गेहूँ, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, चावल, घी, तेल, रुई, कपास काष्ठ, घास, फूस के भाव कुछ गिर जाते हैं। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव होता है। पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल के भाव कुछ तेजी पर आते हैं। दाख, किशमिश, कालीमिर्च, मखाने, चिरोंजी, लौंग, कमलगट्टा, गूगल के भाव कुछ गिर जाते हैं। जूट, पाट, बारदाने, फल, दूध, दही, गुड़, खाण्ड के भाव अधिक नीचे पर जाते हैं। शीताधिक्य, शीत लहर न होकर ऋतु परिवर्तन संभव होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष



श्वेत वर्ण

समशृंग

संवत् २०५८ वि० ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष गुरुवार दिनांक २४ मई सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन श्वेत वर्ण से दिखलाई देता है। इस मास में गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का, उड़द, मसूर, माष, मोंठ पर कुछ तेजी दिखलाई देती है। काष्ठ, मिट्टी के तेल, सरसों, चावल आदि के भाव गिर जाते हैं। किशमिश, दाख, लौंग, गूगल, सोंठ, खटाई, चिरोंजी के भाव कुछ ऊंचे पर जाते हैं प्रान्तीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव होता है। देश के किसी वरिष्ठ नेता का निधन भी संभव होगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में भीषण गर्मी हो

आषाढ़ शुक्ल पक्ष



पीत वर्ण

उत्तर शृंग

संवत् २०५८ वि. अषाढ़ शुक्ल पक्ष १ शुक्रवार दिनांक २२ जून २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण संयुक्त दिखलाई देगा। जनता में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सुख-शांति का वातावरण बन सकता है। गेहूँ, चना, मटर, चावल, श्रीफल, घी, तेल, हींग, मखाने, कालीमिर्च, किशमिश, दाख पर अच्छी तेजी होगी। सोना, चांदी ताम्बा, पीतल, जस्ता, लोहा पर घोर तेजी हो। दक्षिण भारत में प्राकृतिक प्रकोप संभव होगा।

श्रावण शुक्ल पक्ष



रक्त वर्ण

उत्तर शृंग

संवत् २०५८ वि. श्रावण शुक्ल २ रविवार दिनांक २२ जुलाई सन् २००१ ई. को उत्तर शृंग से लाल वर्ण वाला चन्द्रमा दिखलाई देगा। गेहूँ, चना, जौं, चावल, मक्का, श्रीफल, घी, तेल पर अच्छी तेजी हो। हींग, मखाने, तिलहन, चिरोंजी, किशमिश, दाख, कालीमिर्च आदि पर घोर तेजी होती है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा पर कुछ मंदी के योग दिखलाई देते हैं। उत्तर भारत में विग्रह की पूर्ण संभावना है। सुख-शान्ति का वातावरण बना रहे।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष



रक्त वर्ण

उत्तरशृंग

संवत् २०५८ वि. भाद्रपद शुक्ल २ सोमवार दिनांक २० अगस्त सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से रक्तवर्ण से दिखाई देगा। गेहूँ, चना, मटर, मूंग, मसूर, मोंठ, जीरा, धनियां, हींग, कालीमिर्च, दाख, किशमिश पर घोर तेजी होती है। दूध, दही, शहद, फल, घी, तेल के भाव कुछ गिर जाते हैं। पाक सीमा पर कुछ हरकते पैदा हो सकती हैं। प्राकृतिक प्रकोप भी संभव है। जिससे जन-धन का भारी विनाश संभव होगा।

प्रथम आश्विन शुक्ल पक्ष



पीत वर्ण

उत्तर शृंग

संवत् २०५८ वि. प्रथम आश्विन शुक्ल १ मंगलवार दिनांक १८ सितंबर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीतवर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में भ्रष्टाचार, पापाचार, झगड़े, लूटपाट, तोड़फोड़, उत्तराखंड की ओर वारदातें हो सकती हैं। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश में अच्छी वर्षा से अच्छी राहत मिल सकेगी। धान्य धातुवाने पर अच्छी तेजी हो। गेहूँ जीरा, सरसों के व्यापारी लाभ उठावें।

द्वि. आश्विन शुक्ल पक्ष



श्वेत वर्ण

उत्तरशृंग

संवत् २०५८ वि. द्वितीय आश्विन शुक्ल गुरुवार दिनांक १८ अक्टूबर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तरशृंग से श्वेत वर्ण से दिखलाई देगा। अतः इस मास में पृथ्वी के पश्चिमी भाग में भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप के दुष्परिणाम दृष्टिगोचर होंगे। जापान, जर्मन, अमेरिका के लिए समय अच्छा नहीं कहा जा सकता है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, गेहूं, चना, मटर, चावल, घी, तेल में घोर तेजी के प्रायः योग हैं।

कार्तिक शुक्ल पक्ष



श्वेत वर्ण

उत्तरशृंग

संवत् २०५८ वि. कार्तिक शुक्ल १ शुक्रवार दिनांक १६ नवम्बर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तरशृंग से श्वेत वर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में गेहूं, चना, जौं, चावल, मूंग, मसूर पर घोर तेजी। धान्य, धातुवाने, सोना, चांदी, लोहा, पीतल, ताम्बा पर अच्छी तेजी होती है। दक्षिण में भूस्खलन, भूकम्प आदि के प्रायः योग बनते दिखाई देते हैं। पाक, बंग्लादेश, नेपाल में जनक्रांति की पूर्ण संभावना है। फल नेष्ट दिखाई देता है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (पीत वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. मार्गशीर्ष शुक्ल २ रविवार दिनांक १६ दिसम्बर सन २००१ ई. को चन्द्र दर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण से हो रहा है। विश्व नये रोग से आक्रान्त हो सकता है। मासान्त में लोक सभा में हुड़दंग, मतभेदता हो सकती है। गेहूं, चावल, चना, चांदी सोना, ताम्बा, दाख, किशमिश, हींग, जीरा, धनियां के भाव घोर तेजी पर जा सकते हैं। ईराक , इजरायल, मिश्र में जन क्रांति की संभावना है।

पौष शुक्ल पक्ष (श्याम वर्ण, उत्तरशृंग)

संवत् २०५८ वि. पौष शुक्ल २ मंगलवार दिनांक १५ जनवरी सन् २००२ ई. को चन्द्रदर्शन श्याम वर्ण से होगा। इससे अशुभ फल ही दृष्टिगोचर होता है। उत्तर पश्चिम में जन क्रान्ति भड़क सकती है। गेहूँ, चना मटर, मक्का, उड़द मसूर मोंठ, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील पर घोर तेजी होती है। हींग, जीरा, धनियां, घी, तेल, काष्ठ के भाव भी ऊंचे पर जावें।

माघ शुक्ल पक्ष (श्याम वर्ण, सम शृंग)

संवत् २०५८ वि. माघ शुक्ल २ गुरुवार दिनांक १४ फरवरी सन् २००२ ई. को चन्द्र दर्शन समशृंग से श्यामवर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में गेहूं, चना, मटर, मक्का, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर पर कुछ मन्दापन होता है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील, का भाव कुछ तेज होता है। प्रान्तीय मंत्रिमंडलों में फेर बदल हो।

फाल्गुन शुक्लपक्ष (पीत वर्ण, दक्षिण शृंग)

संवत् २०५८ वि. फाल्गुन शुक्ल १ शुक्रवार दिनाँक १५ मार्च सन् २००२ ई. चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से पीतवर्ण से दिखलाई देगा किशमिश, दाख, हींग जीरा, मखाने, धनियां, गूगल, कवलकट्टा, पेट्रोल, डीजल के भाव विशेष तेजी पर जाते हैं। गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का, उड़द, मसूर मोंठ के भाव गिर जाते हैं। सोना, चांदी ताम्बा, लोहा, स्टील पर घोर तेजी हो जाया करती है। व्यापारी लाभ उठावें।

विक्रम संवत् २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक : ओंकार दैवज्ञ (व्यापार अनुसंधान केन्द्र, हापुड़, यू.पी.)

श्री गणेशाय नमः। श्री दुर्गा देव्यै नमः। रवियोग में भारतीय परंपरा के अनुसार उच्चतम योग में यह लेख भारतीय ही नहीं विश्व व्यापारियों के हितार्थ विक्रम सं. २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य लिखा है। सर्वप्रथम आकाशीय कौंसिल के चुनाव में ५१०२ वर्ष व्यतीत होने पर शाके १९२३ में राष्ट्र के स्वामी राजा चन्द्र सौम्य शुभ ग्रह और मंत्री भी शुभ ग्रह भृगुजी बने हैं चन्द्र और भृगु दोनों शुभ ग्रह हैं और वर्ष लग्न में चन्द्र-शुक्र श्री भगवान भास्कर के साथ मीन गुरु की राशि में दब जाने से प्रधान मंत्री जी को कुछ ताकतें दबाने की कोशिश करती रहेंगी। ताकि प्रधान मंत्री की छवि गिरे, पर गिरेगी नहीं क्योंकि गुरु जी शुक्र राशि में भीतरी मदद देने से घात करने वाले मुंह ताकते ही रहेंगे। चूंकि यह लेख हमारा राजनैतिक नहीं है इसलिये इस कलम के साथ राजनैतिक लेख बन्द करते हुए व्यापार पर ही लेख लिखते हैं।

आकाशी चुनाव- सस्येश चन्द्रमा, धान्येश शनि, मेघेश गुरु, रसेस बुध, नीरसेश चन्द्रमा, फलेश गुरु, धनेश सूर्य, दुर्गेश गुरु, ये दस अधिकारी है इनमें शुभ ग्रहों के अधिकार ज्यादा होने से समय शुभ के साथ ही इस वर्ष एक प्रकार से आतंकवाद की समाप्ति और हीन वर्ग की उन्नति प्रत्यक्ष दिखाई देगी।

रोहिणी निवास तट पर, समय निवास धोबी के, समय विश्वा २०, समय वाहन मृग, स्तंभ २, जल तृण, सोमवती २, बुधाष्टमी ३, तिथि क्षय १८, तिथि वृद्धि १०, उत्पत्ति वि. ९३, खपति ८४, वर्षा वि. ७, धान्यम ७, तृणम् ९, शीतम १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि क्षय बराबर, सत्यम् आधा, धर्म १।।, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे, ग्रहण १ चन्द्रमा, आषाढ़ शुदि १५, यह वर्ष प्रभु कृपा से उत्तम रहेगा।

भैरव भवानी संवाद २०५८ की झलक पढ़िये:-

भैरव प्रश्न :- भैरव पूछे शक्ति माता से, जग जननी पर जाय।
सं. २०५८ के विक्रम साल का कहो मात समुझाय।।

भवानी उत्तर- भैरव सुनो ध्यान से - मन चिन्ता करो दूर।
अट्ठावन के वर्ष में धर्म ही होगा प्रजा का नूर।।
चन्द्र राष्ट्रपति मंत्री भृगु ये हैं शुभ संयोग।
राजा मंत्री की चाल से प्रजा भोगे उत्तम भोग।।
शुभ ग्रह के अधिकार में मिल गये अष्ट अधिकार।
आतंकवाद के सभी राष्ट्र प्रतिकूल हों
धर्म वृद्धि ही होंगे मंगलाचार।।
अनाज पति रविपुत्र हैं और श्रावण में शनि पांच।

सर्व वस्तु तेजी होगी व्यापारियों यह भी समझो सांच।।
धोबी घर समय निवास है संवत् विश्वा बीस।
भैरव चिन्ता मत करो वर्ष के रक्षक हैं जगदीश।।

टिप्पणी विशेष- इस वर्ष के ग्रह अधिकार यह सिद्ध करते हैं कि अच्छे राष्ट्र सभी आतंकवाद के खिलाफ एक जुट होंगे और राजा मंत्री दोनों ही स्त्री हैं अत: नारियों की जय विशेष अधिकार के साथ भारत के कई जिलों में सफाई सुंदरता का दृश्य भी दिखाई देगा। कुछ गुप्त भेदी क्योंकि २ अधिकार पाप ग्रहों को मिलने के साथ वर्षेश लग्न कालसर्प के प्रभाव में इस वर्ष का यह योग घरेलू नेता ही गुप्त बैरी होंगे और बैशाख, ज्येष्ठ तथा मंगशिर, माघ, फाल्गुन में शहनाइयों की गूंज से भारत के उत्तर प्रदेश पंजाब में खुशी का वातावरण छायेगा तथा चांदी सोना के भाव गत वर्षों की अपेक्षा उच्चतम शिखर पर होंगे।

चैत्र शुक्ल विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रवारी होने से और १४ दिन का १ पक्ष १५ के स्थान तिथि टूटने से शुद्धि ७ टूटने से शुदि में दशमी भौमवार क्रिकच योग से संबंधित होने से शुदी ८ अष्टमी रविवार को शुक्र पूर्व में उदय होने से अनाजों के भाव उच्चतम रेट से एकदम गिरेंगे पर धातु चांदी सिक्का चढ़ेगा तथा शृंगार का लेडीज सामान धीरे-धीरे शुदि ८ अष्टमी बाद कपड़ा रत्न श्वेत वस्तु चावल आदि मीठा चीनी गुड़ शक्कर भी तेजी की ओर करवट लेंगे। चैत्र शुक्ल पक्ष में द्वितीय भौमवार चैत्र शुदि १० भौमवार चन्द्र वगोत्तम चन्द्र के अधिकार की वस्तुओं में तेजी लायेगा और शुदि ३ बुधवार के लास्ट घटी पर शुदि नवमी सोमवार को दैनिक तेजी १०१ तो मंदी ५१ लगाने से अवश्य ही लाभ सट्टे वायदे के चांसों से प्राप्त करें।

बैसाख विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

बैसाख सं. २०५८ में ५ सोमवार खाद्य पदार्थों में मंदी करेंगे इसलिये गेहूं चना जौ मटर आदि खाद्य पदार्थों में प्रथम तो बाजार पड़े से रहेंगे पर सोमवती अमावस्या से १ सप्ताह में अच्छी मन्दी आयेगी शुदि में दशमी टूट जाने से दिशावरी मांग बढ़ने से खाद्य पदार्थों में मंदी रुकेगी और सरकारी खरीद से कुछ मार्केट संभल जायेंगे। इम्फीरियर लाइन के प्रभाव से धातु पदार्थ तेजी में नये भाव बनायेंगे तथा मैंथा शेयर के भाव गिर-२ कर संभलेंगे। वैशाख बदि तीज की रात्रि को बुधास्त होने से १ नई लाइन बनेगी विचार है कि गुड़ मीठा चीनी शक्कर में तेजी नये सिरे से उठेगी पर तिलहनों में मन्दी का धीरे धीरे प्रभाव होने से तेलों में मंदी रहेगी पर असली घी और वनस्पति के टीनों की तेजी कमाल दिखा देगी सोयाबीन दाल में तेजी उठेगी परन्तु यह ध्यान रखना अगर वैशाख बदि १२ पर तेजी न उठे तो हाजिर सट्टे में सभी जगह मंदी आने से नहीं चूकेगी दाल उड़द अरहर में भी यही ध्यान पूर्ण रूप से निश्चित है। वैशाख बदि पक्ष में वैशाख बदि तीज भौमवार को दूसरे दिन की और दूसरे दिन भी दैनिक तेजी मंदी १०१ और ५१ के अनुपात से लगाना लाभप्रद रहेगा। वैशाख शुक्ल पक्ष में १०वीं मिती घटी है इस और साथ ही भौम वक्री १२ मिती की रात्रि को होने से मुद्रास्फीति की दर इस अवसर पर गिर कर १०-१४ प्रतिशत होगी और विदेशी प्रतिस्पर्धा से लोहा इस्पात एल्मोनियम आदि से संबंधित वस्तु लेने से पर्याप्त लाभ होगा। वैशाख शुदि पूर्णिमा को वृष राशि में अस्त होने से १ या ३ माह तक प्रभाव मार्केटों में बनाऐंगे शेयरों में तेजी का प्रभाव बनायेंगे तथा इंटरनेट सुविधा वाले कम्प्यूटर एक्सेसेरीज भी उपलब्ध तो होंगे ही इसी अवसर पर गुड़ के भाव भी ऊंचाई पर जाने से नहीं रुकेंगे। बिना आयोडीन वाले नमक के विरोध में गहरी चिन्ता तथा सरकारी आंकड़े व्यापार के प्रति हैरत अङ्गेज सिद्ध होंगे।

ज्येष्ठ विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

ज्येष्ठ २०५८ में ५ भौमवार हैं कृष्ण पक्ष की नौमी वृद्धि और शुक्ल पक्ष की द्वितीया का घटना फसल की वस्तुओं को लोप कारक तथा कुछ अंश विशेष तेजी कारक होने से ज्योतिष शास्त्र यह सिद्ध करता है कि चौतर्फा तेजी से चीनी २८ से ५६ या दोगुनी भी उछलेगी। खाद्यान्नों व दलहनों में मांग बढ़ने से प्रथम तो ज्येष्ठ वदि १ से आठें तक विचित्र चाल धोखा देगी पर नवमी के बाद १० दिन में चावलों व पंसारी की ७५ परसेंट वस्तु देशी व वनस्पति के साथ आलू भी तेजी पर जायेंगे पर यह आवश्यक नोट है कि वायदे चालू सट्टे जैसे गुड़ तेल मैंथा आलू चांदी सोना सभी वस्तु में ध्यान यह अवश्य रखना कि लगते जेठ बदि १ से ७ तक तो पूर्व माह की लाइन चलेगी पर बदि ८ भौमवार को गत शुक्र के बने हुए नीचे भाव कटें तो मन्दी वर्ना न कटें तो तेजी का श्रीगणेश १० दिन का ऐसा शुरु होगा कि यह चांस ही इस माह का गोल्डन चांस साबित रह जायेगा और सटोरिये खूब लाभ उठायेंगे। पिछले लेख के अलावा रोहिणी बुध कृत्तिका रवि, संक्रांति वृष की सोमवारी ७ मिती को दलहनों में मिला जुला रुख और गेहूँ थोक में गिरावट हाथों हाथ लाभ देंगी। इधर लो उधर विक्रय करो यह नीति भी व्यापारियों को लाभ देगी। चांदी सट्टे में उछलेगी पर सोना स्थिर रहेगा। कांशी पीतल स्टील के भाव नई ऊंचाई पर जायेंगे। सट्टे में तेजी मन्दा खाना अच्छा रहेगा और तारुणी करना इस माह ज्यादा अच्छा रहेगा। सुपीरियर लाइन का चलना इस माह का सिद्ध करता है कि चालू सट्टे के नए भाव हर मंगल और शुक्र को बनेंगे। गुरुवार सोमवार को हर सट्टे में रियक्शन आना भी जरूर-२ निश्चित होगा इसलिये रियक्शन को लाइन का टूटना समझकर व्यापार कतई न बदलें यह नोट ध्यान रखना। ज्येष्ठ शुदि ७ भौम को जिस वस्तु के भी सट्टे में या हाजिर में नीचे के बने पिछले भाव कटें तो मंदी न कटें तो तूफानी रिकार्ड तोड़ तजी ४ दिन की आयेगी यह संकेत हम इसीलिये दे रहे हैं कि रिसाले को पढ़ने वाले उजाले में अंधविश्वास ही व्यापार में जबरदस्त हानि का कारण बन जाता है। अत: हमारे लेख का माध्यम अन्धविश्वास नहीं सिखाता है। शुक्ल जेठ में बुध वक्री यानि उल्टा चलने लगेगा और चौथे दिन गुरु अस्त हो जायेंगे इस वास्ते देश के विदेशी मुद्रा भंडार में

लगातार गिरावट के आसार बनेंगे। दिल्ली बम्बई सर्राफा में तेजी का ब्रेक लगने से सिक्का तथा २४ कैरट सुवर्ण जेवरात के भाव तथा बिस्कुट में मन्दी आने के संकेत उपरोक्त ग्रह दे रहे हैं पर देसी घी बाजार वनस्पति तेजी पर जायेगा। लेकिन अलौह धातु मैंथा रसायन बाजारों में तेजी ही चलती रहेगी।

आषाढ़ विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आषाढ़ में ५ गुरु ५ ही शुक्र हैं अत: मोटी लाइन गत माह की चालू परिवर्तन होने के योग हैं। मृगे रवि और बुधास्त १ ही दिन १ ही साथ आषाढ़ वदि १ ता. ७ जून को होने से ७ व ८ को ही गुड़ तेल सरसों में तेजी मंदी फलेंगे। यहां २५१ तेजी तो २५१ मंदी भी डालें और हाथों हाथ सौदा बराबर करें। आषाढ़ वदि २ शुक्र को पिछले भौम के नीचे भाव जिस वस्तु में कटें उनमें १ सप्ताह की मोटी मंदी जाने काश न कटें तो तेजी चलेगी। काश नीचे ऊंचे भाव न कटें तो घटाबढ़ी में मार्केट चलेगा कोई लाइन भी न बनेगी। बस इतनी समझ रख कर व्यापार करना। इन्हीं योगों से सीमेंट शेयरों में तेजी का योग भी बनता है यह तेजी इसी पूर्ण पक्ष में आयेगी। आषाढ़ वदि ६ मिति को शनि देव उदय हो रहे हैं। लोहें सम्बन्धी वस्तु तेजी पर जायेंगी। गुड़ खंडसारी में पूर्व लाइन कल से बदलेगी पर विशेष रूप से सभी तिलहनों में भाव या तो पड़ जायेंगे अगर वदि ९ शुक्र को पिछले भौम के भाव नीचे कटेंगे तो मंदी न कटें तो तेजी की साप्ताहिक लाइन चालू होगी यह असर संक्रान्ति के कारण निश्चित है क्योंकि यहां मिथुन संक्रांति का असर पड़ेगा। आलू में तेजी चालू होगी सर्राफा में स्थिरता चलेगी लहसुन प्याज का भी स्टाक लाभ देगा।

मूंगफली के भाव पड़े रहेंगे परन्तु किराना में तेजी उपरोक्त वस्तुओं के साथ आने के चांस हैं गेहूं चना के भाव गिर कर वदि १३ से बढ़ेंगे। आषाढ़ वदि १४ बुध को १ दिन पूर्व वक्री वृषे बुध होने से आज शनि के भाव गुड़ सट्टे वायदे के नीचे के नहीं कटेंगे तो तेजी चलेगी क्योंकि आषाढ़ शुदि ३ चौथ १ है और बुध का पूर्व में उदय शुदि ५ सोमवार को रात्रि के ४० घड़ी पर हो रहा है। और आशा है कि पेट्रोलियम मंत्रालय तेल कंपनियों के पक्ष में न होकर विरोधाभास करे इसी कारण तेजी मंदी का नवीनीकरण न होने से मार्केटों में मायूसी छाई रहे। मुंबई शेयर मार्केट मैंथा में तेजी का उछाला आयेगा। आषाढ़ शुदि ८ गुरुवार को ही गुरु ग्रह का उदय होने से पीली वस्तु में पूर्व मन्दी चल रही होगी तो तेजी का असर प्रारंभ होगा। गुरु का असर सट्टे गुड़ में भी पड़ता है इस वास्ते हल्दी गुड़ तथा अन्य पीली वस्तु सभी में १ मन्दी का झोंका आकर तेजी खड़ी होगी। सोना चांदी के भाव भी बढ़ेंगे। इसी माह में पूर्णिमा को धन राशि में चांद्र ग्रहण होने से घृत, तेल, गल्ला तिलहनों में तेजी आयेगी। चन्द्र ग्रहण पड़ जाने के बाद दूसरे दिन १० बजकर ५१ से १ घंटे में जिस वस्तु में जिधर लाइन चले अगर वह लाइन ४ या ६ घंटे बाद भी चलेगी तो जानो १ सप्ताह पूर्ण चलेगी काश धोखा दे तो सौदा काटकर डबल विपरीत बोलना, यह खास संकेतिक चांस है ध्यान रखना।

श्रावण विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

श्रावण में ५ शुक्र ५ ही शनि हैं ये २ वार १ शुभ १ अशुभ मिले जुले असर करेंगे कभी भारी मंदी कभी तेजी की खींच होगी। शुभ अशुभ २ ग्रहों का अधिकार होने से पश्चात्य देशों में राज्य विग्रह होने से अशांति असंतोष का असर भारी असर शेयर मार्केट में पड़ेगा। श्रावण बदि १ को ३१ घड़ी पर स्वराशि मिथुन में व्यापार पति बुध प्रवेश होने से सभी व्यापारों पर असर पड़ेगा जिस वस्तु में मंदी चल रही है वह एकदम पलट श्रावण बदि २ से होगी। गुड़ चांदी सोना लाहा तेल अलसी खल बिनौला परंतु सट्टे वायदे और हल्दी में भी पलट का चांस चलेगा। यदि बुध ज्योतिष में हरी वस्तु का स्वामी कहा जाता है तो ये भी मानना है कि बुध व्यापार पति भी कहा जाता है। श्रावण बदि ७ को आर्द्रा बुध सारी बुध की वस्तु में तेजी कारक है परंच मार्गी भौम वृश्चिक राशि में मार्गी मन्दी कारक है। कभी-२ ग्रहों के विपरीत असर होने से दलहन तिलहन चांदी सोना गुड़ आलू वायदे तथा मैंथा से तेजी अगर वदि ८ शनिवार को १२ बजे पर चले तो जानना कि तेजी ५ दिन पूर्ण चल कर बाद ३ दिन मंदी का रियक्शन चलेगा। लेकिन एकबात ध्यान रखना श्रावण शुदि २ चन्द्रदर्शन रविवारी के चौथे रोज पंचमी को दिन के १४ घड़ी दिन चढ़े व्यापार पति बुध का अस्त होना आय में वृद्धि के बावजूद बैंक का इंडिया का मुनाफा घटने का चांस सम्पन्न होने से तेजी को प्रोत्साहन विशेष रुप से चांदी, कपड़े तथा मीठे में भाव बढ़ेंगे। मैंथा, हल्दी की व तिलहन की बनी लाइन शुदि ४ भौमवार की पूर्ण १ सप्ताह चलेगी। मेवा बाजार बढ़ेगा, छोटी इलायची, धनियां, अजवायन, चिरौंजी के भाव भी बढ़ेंगे। सट्टे में ता. २४ से २६ में नजराने तेजी भी सट्टे वायदों में २५ व २६ में फलेगी।

भाद्रपद विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस मास में ५ रविवार हैं अत: सूर्य की अधिकृत वस्तु तेजी पर जायेंगी, अत: खाण्ड, गुड़, खंडसारी पर पाबन्दी लगेगी तो भी व्यापारी लाभ उठायेंगे और सुपीरियर लाइन के प्रभाव से जीरा, धनियां, इलायची, बादाम में भी अन्दरूनी टोन तेजी की बनी रहेगी। अंका पल्ली में आवक कमजोर पूर्वी गोदावरी में भी मांग बढ़ेगी, झूंठी खबरें विशेष उड़ेंगी। वायदा कारोबार आलू, गुड़, तेल सरसों, मैंथा मार्केटों में खिंचाव रहेगा। पर एक नोट है प्रथम तो पूर्व की चालू माह की लाइन चलेगी परंच सिंह बुध ता. ११ अगस्त मिती भादों बदि ७ को प्रवेश होने से ६ दिन में मोटी लाइन चलेगी। आज शनिवार है आज से पूर्व बने नीचे भाव न कटे तो एक दम ६ दिन की मोटी लाइन चलेगी तेजी की पर तभी सम्भव है जैसा लिखा है उसी अनुसार चले जरा भी उल्टा चले तो फौरन डबल कटिंग करके लाभ उठाना। भादो बदि १२ शुक्रवार को सिंह संक्रांति ४५ मु. मंदी कारक मानी जाती है। प्रौढ़ावस्था में बैठने से भी भारी तेजी में ब्रेक लगने का चांस ज्योतिष से सोना, दलहन, मैंथा व शेयर, चांदी में चूरी, चना, हरड़, हैशियन, सुतली, बोरी, बारदाना

में प्रभावशाली है। १ प्रभाव विशेष रूप में इस योग के खिलाफ है कि इसी दिन आर्द्रा ३ चर्णे गुरु प्रवेश भी है इस वास्ते शुक्रवार को भादो बदी १३ को १२ बजकर ४५ मिनट तक सभी ही वस्तु में नहीं जिस वस्तु में भी पिछले भौमवार के नीचे भाव कटें तो उसी सट्टे में मन्दी ५ दिन चलकर मार्केट ठप्प होगा। देहली मार्केट के साथ हापुड़, मुजफ्फरनगर पर प्रभाव पड़ने से राजस्थान, पंजाब, मारवाड़ की मंडियों में भी असर पड़ेगा। मुंबई अरंडा, रुई पर भी ग्रहों का असर पड़ेगा। यह सीजन किसानों को उत्तम परन्तु आम व्यापारियों को खराब रहेगा। ऐसा ज्योतिष शास्त्र से सिद्ध होता है। भाद्रपद शुक्ल में चन्द्र दर्शन सोमवारी सभी सट्टों में मंदी कारक हैं पर शुदि ४ बुध को सूर्य निकलते ही कर्क शुक्र होने से पिछली चली लाइनें पलटेंगी परन्तु शुदि ६ शुक्र को मूले धनुषि भौम तेजी दाता है साथ ही इसी दिन पुष्ये शुक्र मंदी कारक लगने से ये क्लीअर सिद्ध होता है कि आगामी सोम शुदि ९ तक हर वायदे सट्टे में बनी लाइन चलती रहेंगीं पर भादों शुदि १० भौम वार को कन्या बुध का असर एक सां भादो शुदि १५ तक चलता रहेगा। इस वास्ते शुदि १० भौमवार को बनी ११ बजकर ४२ मिनट की लाइन पर ही आलू, गुड़, चांदी, सोना, तिलहन आदि पर व्यापार करें पर ऐसा होगा कि धातु पदार्थ तेज तो खाद्य पदार्थ मन्दे या खाद्य पदार्थ मंदी पर तो दीगर वस्तु विपरीत चल जाती है। यहां के ग्रह प्रभावों का इसी प्रकार असर होगा।

प्र. आश्विन विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में ५ सोमवार ५ मंगलवार हैं। बदि पक्ष में तिथि घटना शुदि में दशमी तिथि का बढ़ना कन्यामानी संक्रांति ३० मुहूर्ती तथा सोमवती अमावस्या यह सभी ग्रह मोटी तेजी में ब्रेक का काम करेंगे। पर १ विशेष नोट है कि विश्व में चीनी की सप्लाई की चर्चा विशेष जोरों से उठेगी परंतु भारत में ऊंचे भाव जो भी अशौज बदि या विशेष तुला बुध होने तक यानि तुला बुध अशौज शुदि १ भौम वार को संक्रमण करने के बाद और हस्ते रवि शुदि १०वीं को और वक्री शनि भी इसी दिन होने से तथा शुदि आश्विन में रविवार शुदि त्रयोदशी पर बुध उल्टी गति से चलने लगेंगे तब तो आलू भी घोर मंदी का वातावरण बनायेगा। पर लोहेतर धातुओं में तथा सर्राफा में तेजी का वातावरण छाया रहेगा। इस संवत् में २ आश्विन हैं इस वास्ते भी कुछ निराला चांस शीरे में निकलेगा। आरक्षित शीरे के साथ प्रतिबन्ध हटाया जाये ऐसा राज्य सरकार पेंतरा फेंक सकेगी और गुड़ पर पूर्णतया कर प्रणाली हटा ली जाये ऐसा भी होने के अनुमान ज्योतिष दृष्टि से सिद्ध होते हैं। बदि प्रतिपदा सोमवार को पिछले गुरुवार के ऊंचे भाव तिल तेल में न कटेंगे तो अच्छी मन्दी आयेगी यह मंदी ७ में १० दिन ही चलेगी। चांदी सोना व अन्य धातुओं में वदि ४ शुक्रवार को १ बजे की बनी लाइन सीधी १५ दिन चलेगी इसी मध्य पाकिस्तान से तिथि टूटी एकादशी गुरुवार से १५ दिन में ही व्यापार बढ़ने की संभावना है। शुदि में प्रतिपदा भौमवारी चन्द्रदर्शन से मैंथा मार्केटों में तेजी आयेगी काश १ से २ यानि शुदि द्वितीया को तेजी न चलेगी तो १० दिन की मंदी आयेगी। तेल तिलहन आदि सरसों व गुड़ में शुदि १० पर शनि वक्री होने से ५ या ७ दिन में ही मोटी लाइन चलेगी नीचे के बने मंगल व शुक्र के भाव न कटें तो तेजी आयेगी वर्ना नहीं यह बात ध्यान रख कर चांदी सोने में भी तथा हापुड़ गुड़ आलू व मुजफ्फरनगर, दिल्ली के सट्टों में भी व्यापार करें।

द्वितीय आश्विन विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

द्वितीय आश्विन में ५ बुधवार ५ गुरुवार होने से मुंबई सटोरियों के दबाव से सेंसेक्स बढ़ेगा यद्यपि मुंबई शेयर बाजार में शुरु माह के चार दिन अन्तर्गत मीडिया क्षेत्र की कम्पनियों में सटोरियों विकवाली चलने से प्रारंभिक तेजी गायब होती नजर आयेगी पर उपरोक्त पीरियड के बाद हमारी यह उपरोक्त दी गई पेशीनगोई सच साबित होगी। बुध ग्रह की हर वस्तु में तेजी खड़ी होगी और प्रारंभ माह से ८ या १३ दिन में तेल के मूल्य बढ़ेंगे और डालर के मुकाबले में रुपये की विनिमय दर में सुधार होगा और व्यापार के प्रति सरकारी आंकड़े सच सिद्ध नहीं होंगे। द्वितीय आश्विन बदि ५ रविवार को बुधास्त गुड़, आलू, खल, सरसों की लाईन शुदि ६ सोमवार को १२ घं. १८ मिंट की लाइन पकड़ कर ७ दिन मे मोटा लाभ उठाना। चांदी सोना गिल्ट कांशा तांबा की तेजी भी १० रोज यहां आयेगी और कम्प्यूटीकरण बेंक आधार पर हो न कि शाखा आधार पर ऐसे भी निर्देश निकलने से शेयरों पर तेजी का असर द्वि. आश्विन शुदि ५ तक रहेगा चूंकि द्वितीय आश्विन शुदि ५ को रविवार है इस वास्ते तथा द्वितीय अशौज ७ भौमवार को मार्गी बुध कन्या राशि में होने से पूर्ण असर कन्या राशि के अधिकार की वस्तु में शुदि ७ भौमवार को गत् शुक्र के नीचे भाव कटें तो मंदी न कटे तो मन्दी समाप्त जानें। यह विचार कर व्यापार करें। पर बोरी बारदाना को हर मंदी में तथा रुई, सूत को खरीद कर व्यापार से लाभ उठायें। चांस तो बहुत हैं पर इस माह तमाम में बेजोखों का सौदा नजराना तेजी मंदी लगाने का १ ही दिन सर्वोत्तम है ता. ६ अक्टूबर को घंटी बंद पर ८ के लिए काश ८ को न फले १ बजे तक तो २४ घंटे आगे भी यह चांस काम करेगा।

कार्तिक विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

कार्तिक सं. २०५८ में ५ शुक्रवार तथा गुरु देव वक्री बदि ३ को और इसी दिन से तुला बुध होने से मोटी तेजी में ब्रेक लगेगा। खंडसारी को अवसर पाकर निकालने का प्रयत्न करें। कार्तिक बदि पक्ष में सप्तमी टूटी है अत: थोक व्यापारी सावधान हो जायें तथा आगे भारी मंदी की सूचना है। वनस्पति इकाइयों के विरुद्ध कुछ आदेश सरकारी भी और व्यापारियों के स्वतंत्र दिमाग भी मंदी को बढ़ावा देंगे। कार्तिक में यद्यपि दीवाली पर तेल विक्रय खूब होता है तो भी तेजी में न रहें क्योंकि इस वर्ष में बुधास्त पूर्व में कार्तिक बदि १२ सोमवार को होने से हमारे विचार को बल मिलने की आशा पूर्ण है। कार्तिक बदि चौथ सोमवार को आलू में तथा चांदी में मूंगफली, बिनौला, गुड़, सरसों में पिछले

गुरुवार के ऊँचे भाव कटें तो तेजी ५ दिन की निकलेगी। काश ऊंचे भाव न कटें तो जोरदार मंदी आयेगी। यह चांस इस पक्ष का स्पेशल है इस के बाद सभी मार्केटों में कार्तिक बदि १२ सोमवार तक बाजार घटाबढ़ी में यानि स्थिर रहेंगे। कार्तिक बदि १३ को धन तेरस तथा बुधास्त होने से जोरदार मंदी चलेगी पर यह जरूरी नोट है कि ठीक ११ बज. १७ तक जिस वस्तु में मंदी न चले तो खरीद कर ५ दिवसीय चांस से लाभ उठाना। कार्तिक शुदि में सप्तमी तक मार्केट स्थिर रहेंगे पर शुदि अष्टमी शुक्रवार को जिस वस्तु में गत भौम के नीचे भाव क्रौस होंगे मंदी पूर्ण माह चलेगी काश ऊंचे भाव कटें तेजी ही तेजी पूर्णिमा तक चलेगी।

मार्गशीर्ष विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष में ५ शनि और ५ ही रविवार और सुपीरियर लाइन तमाम महीने चलने से तेजी कारक हैं परंच बदि में तिथि क्षय शुदि तिथि वृद्धि मंदी कारक है। जब दो योग होते हैं तब या तो घटबढ़ होती है या पृथक पृथक वस्तुओं में तेजी मन्दी चला करती है या ऐसे ज्योतिष योगों में व्यापारियों के हंगामे भी चला करते देखे गये हैं। या कभी-कभी व्यापार सुधारों के लिये नये-नये परिषदों का गठन भी होता है। चाय का बाजार गर्म जोशी से वृद्धि पर होगा। गेहूं, चना, मैदा, सूजी, ज्वार, जौ में बदि ३ पर जब ज्येष्ठा पर बुध १३ घड़ी पर प्रवेश होगा तब से ७ दिन में तेजी का जोर होगा साथ ही रूई, सूत तथा काजू, बादाम, अखरोट आदि मेवों में तेजी का जोर होगा बाद में इस उपरोक्त पीरियड के रियक्शन आयेंगे, दालों में सुधार होगा। तिलहन तेल मार्केटों में धनुषि बुध जब एकादशी भौम के दिन निकलने से पूर्व ही प्रवेश होने से खाद्य व अखाद्य तेलों में गिरावट आयेगी, जो १५ दिन चलेगी। पर कालीमिर्च कोचीन बड़ी छोटी इलायची में वक्री रोहिणी द्वितीय पादे शनि ३० घड़ी पर होने से अगले दिन शुदि १ शनिवार ४ दिन में तेजी आयेगी। शुदि ५ वृद्धि और ६ घट शुक्र के दिन मूले धनुषि शुक्र तथा शुक्र अस्त होने पर चांदी, सोना, घी, देशी व वनस्पति में, नमक, अमचूर, कलोंजी, अजवायन, मेथी, मखाना, काजू, किशमिश, बादाम, पिस्ता, छुहारा, गोला में मंदी १५ दिन की चलकर बाद मार्केट ठप्प होंगे और चीनी खंडसारी तथा सूत बाजार कुछ दलहन भी मंदे होंगे। चावलों के भाव गिरेंगे अत: अभी स्टाक न करें। रसायनों का स्टाक अन्तिम माह के ५ दिन में करना लाभ प्रद रहेगा। मैंथा, गुड़, सरसों, आलू, तेल सट्टे वायदे के चांस इस माह में प्रथम तो तेजी पर रहेगा परन्तु बदि की मंगला चौथ पिछले शुक्र के नीचे भाव कटें तो तेजी कतई समाप्त और ८ दिन में ही ये चांस मोटा लाभ देगा पर शेयर मार्केट तथा सोना और दालों में मार्केट विपरीत चलेगा। भूलकर हाजिर गुड़, खांड, चीनी का स्टाक नहीं करना। हां यहां की मंदी सराफा में स्टाक करने को ठीक है। बदि १२ की तिथी क्षय होना भी सट्टे वायदे में १ चांस बम्बई महाराष्ट्र से लेकर दिल्ली मुजफ्फरनगर हापुड़ के मार्केटों में ३ दिन या ५ दिन की मंदी निकलेगी बाद मार्केट ५ दिन ही ठप्प होंगे। शुदि में गुड़, आलू, तेल, तिलहन, सरसों का विशेष चांस पुन: दो २ चांस आते हैं। प्रथम तो बदि ४ मंगल जिसका विवरण हम पूर्व लिख आए हैं दूसरा चांस शुदि ४ को भी मंगलवार होने से फिर चौथ के ४ ही दिन बाद आकाश तक के पूर्व में शुक्रास्त है यह डबल चांस है इसे ही कमर तोड़ चांस कहते हैं इस दिन गत शुक्र के नीचे भाव कटें तो ६ या ९ दिन की मंदी आयेगी। भाव न टूटे तो मार्केटों में सौदा है ही नहीं इस प्रकार घटा बढ़ी होगी। शुदि १२ गुरुवार को उपरांत १२ बजे बुधदेव व्यापार पतिजी उदय होते ही मार्केटों की चाल को बदल देंगे। मैंथा भी नया रंग दिखायेगा लेकिन किशमिश, छुहारा, पिश्ता, हैशियन, जूटपाट बारदाना मंदे में लेना लाभकारी रहेगा। गुजरात, महाराष्ट्र, कोल्हापुर, शोलापुर, जलगांव की मांग उठेगी।

पौष विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस मास में ५ सोमवार पूर्ण रूप से मंदी कारक है कृष्ण पक्ष ४ मिति का टूटना भी मंदी कारक। चन्द्र ग्रह के अधिकार की वस्तुओं में विशेष मंदी का योग बन रहा है। चीनी खंडसारी गुड़ में तथा घी में भारी मंदी नीचे भाव बनेंगे। बदि १ सोमवारी चावल चांदी खंडसारी पूर्ण माह मंदी चाहती है। इसमें चन्द्रवार तथा भौमवार शुक्रवार ही वायदे सट्टे में मुंबई दिल्ली, हापुड़, मुजफ्फरनगर आदि में चालू वायदों में बनेंगे। पौष बदि २ से १ हफ्ता मंदी का है व्यापार पति बुध पौष बदि ८ रविवार को २४ घड़ी पर प्रवेश होंगे इसलिये भी तथा ५ दिन बाद ही मीने भौम होने से इसी मध्य तेल परिशो धन क्षेत्र में नई सिफारिश हो सकेंगी तथा आशा है कि इंडाल में अल्कान की ३४ से ४४ फीसदी अंश भागिता हिंडाल्को खरीदे तथा शेयरों की तेजी पर ब्रेक लगे। चन्द्रमा सब ग्रहों से तेजी चलने में प्रसिद्ध है, चूंकि इस माह में पूर्ण रूप से अधिकृत है चन्द्र दर्शन मित्र ग्रह भौम की साय काल में हो रहे हैं चन्द्र का मित्र सूर्य भी मकर में प्रवेश संक्रांति बाल्यअवस्था में भूखी बैठी है अत: ध्यान रखिये हिंदुस्तानी सरकार का अन्य देशों के साथ [illegible] नया करार होने से गुप्त व्यापार की जड़ें मजबूत होंगी। पौष बदि १३ से शुदि ३ बुधवार तक भगवान भास्कर वर्गोत्तम मे चलेंगे अत: तेल व दलहन तिलहन सोने में ६ दिन की लाइन गुड़ के साथ आलू में भी चलेगी। अगर पौष बदि १३ शुक्र को गत भौम के नीचे भाव कटें तो मंदी न कटें तो तेजी का चांस बिना रिएक्शन के चलेगा। बाद सभी मार्केट स्थिर घटबढ़ में चलेंगे। गेहूँ चना बाजरा मक्की में तेजी, मूंगफली कालो मिर्च तथा पिस्ता, बादाम, अखरोट हल्दी नमक, अमचूर, लोबिया मटर बेसन में तेजी आयेगी या मंद भी रहेंगे तो लिवाल लाभ उठा सकेंगे तथा चालू गुड़, तेल, सरसों आलू सट्टों में शुदि एकादशी शुक्रवार की लाइन १२ बजकर १७ मिनट की ही चालू लाइन पूर्ण माह चलेगी और धीरे-२ मंदी चांदी व सोने में तथा पीतल तांबे व कांसी अल्मोनियम में तेजी चलेगी।

माघ विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह के मध्य में ५ भौम ५ बुध होने से व्यापारियों में जागृति उत्पन्न होने से, चहल पहल होने से मार्केटों में रौनक नज़र आयेगी। शुक्र भी उदय इस माह में चन्द्र दर्शन

भी बुधवारी होने से और अपनी मित्र राशि मेष में होने से कभी कभी राजनैतिक परिस्थितियों का भी असर पड़ता है। पूरा माह सरकार करोड़ों में उत्पादन के दावे करें (करना धरना कुछ नहीं यह माहौल सामने आवे) इसी कारण नई लिवाली आगाऊ सौदों की निकलेगी और मैंथा तथा शेयरों व रसायन वस्तुओं में नई चमक जागृत होने से चांस निकलेगा और भौम के असर से तांबा कंपनियां उत्पादों के दाम बढ़ायेंगे तथा घाटे पर नियंत्रण के लिये उत्तरदायित्व विधेयक आये या आगे आने की दशा बनेगी। दिल्ली शेयर बाजार और मुंबई शेयरों में नई मांग निकलने की सम्भावना है। इस माह की बदि १ भौमवार को तो कोई असर मार्केट में नहीं पड़ेगा पर माघ बदि २ बुध को ४९ घड़ी रात को वक्री उषा बुध प्रवेश से अगले दिन से राजस्थान की मांग उठने से मैदा, सूजी, दलहन, तिलहन, दाल, मसूर, अरहर, लोबिया, चना, गेहूँ, बासमती तथा मूंगफली, अखाद्य तेल भी तेज होंगे तथा किराना बाजार व रसायन बाजार में तेजी का योग बनेगा। गुड़ में आज की १ बजे की लाइन १ सप्ताह तक चलेगी पर सरसों में आज से पलट का चांस सम्पन्न होगा। चांदी में स्थिर, सोना तेज होगा। अगर लाल वस्तु तेज न चले तो घाटे से सौदा न काटना क्योंकि बुधाष्टमी शुदि में जोरदार तेजी कारक है। माघ बदि १० टूटी है जिसे मन्दा मानते हैं पर इस पर यकीन नहीं करते क्योंकि माघ बदि ११ कुंभ शुक्र और इसी दिन उदय शुक्र तथा फौरन ११ मिति वृद्धि मार्गी शनि हो रहे हैं और इसी टाइम में इन्फीरियर लाइन चलने से शंका उत्पन्न होती है कि यहां पूर्ण खोज करके ही सौदा करें। आज एकादशी को अगर बीते भौमवार के भाव नीचे जिस वस्तु में कटेंगे तो घोर मंदी न कटें तो तेजी उसी वस्तु में चलेगी। यह लाइन शुदि बुधाष्टमी तक चलेगी यद्यपि रिएक्शन आयेंगे पर हमारी राय में रिएक्शन में लाइन का ही व्यापार काटिये। चांदी सोना गुड़ तेल खल सरसों आलू आदि में लाइन पकड़ कर ही व्यापार करना। बुधाष्टमी शुदि माघ में पूर्ण हफ्ते भर का चांस देगी आज की लाइन १ बज. ४ मिनट की हर वस्तु में पकड़ कर पूर्ण पूर्णिमा पर बुधवार के ही दिन ता. २७ फरवरी तक लाभ उठाना।

फाल्गुन विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

फाल्गुन २०५८ में खास विचार है कि इस माह ५ गुरुवार और भगवान भास्कर व्यापार पति बुध से आगे चलते रहेंगे और मार्केट वायदे सट्टे जैसे गुड़ खल सरसों तेल मैंथा, चांदी आदि में तारुणी करना ही लाभप्रद रहेगा। हाजिरी मार्केट में भी तारुणी करना लाभप्रद सिद्ध होगा लेकर बैठ जाना या बेचकर मोटा लाभ हो ये सोचना भी बुद्धिमानी नहीं होगी। आलू अब बेचना वायदे में लाभप्रद नहीं होगा। अगला नया वायदा खरीदना चालू बेचना क्योंकि बदि ३ मंदी कारक है। सभी वायदे सट्टे बेचना पर मीने शुक्र बदि ५ रविवार को है अगर कर्ब रेट गुड़, सरसों, तेल, खल के मंदे के बने तो मन्दी ४ दिन में आ सकेगी। काश कर्ब रेट दीखें कि तेजी के रहे हैं तो तेजी ४ या ७ दिन चलेगी। इस पीरिएड में रंग तेज होंगे तथा धातु पदार्थ मैंथा तथा मुंबई शेयर भी तेज होंगे भविष्य में चीनी निर्यात होगी ऐसे अफवाहें उड़ने की मार्केटों में तेजी मन्दी का विशेष माध्यम बनेगा। खाद्य पदार्थों में जैसे गेहूं, चना, जौ आदि में इसी माह इस वर्ष की लास्ट तेजी होगी। एशियाई मार्केटों में नई उड़ती अफवाहें सोने में गिरावट का योग शुक्ला २ से ७ दिन में हो ऐसा योग होने से सावधान रहकर व्यापार करें। इस माह शुदि प्रतिपदा से मीन संक्रान्ति के असर जिस वायदे सट्टे की वस्तुओं में पिछले भौम के नीचे भाव कटें तो मंदी वर्ना न कटें तो तेजी। १ सप्ताह का यह चांस कमाल दिखा देगा। अन्य मेवों में तथा रसायन वस्तुओं में तेजी की कमर टूट जायेगी। शेयर में बाजार इस माह के उतरते ५ दिन में तेजी होगी। मोटी तेजी मंदी फाल्गुन शुदि ९ को शनि के दिन सोमवार की १०१ तेजी तो ५० मंदी गुड़ चांदी सोना सरसों में खल में मैंथा तथा तिलहन में डालकर लाभ उठाना।

चैत्र कृष्ण विक्रम सं० २०५८ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आधा चैत्र सं. २०५८ में फाल्गुन की लाइन ही चलेगी और प्रथम तो चैत्रवदि ४ तक कोई लाइन नहीं जंचती है पर पिछले स्टॉक गेहूं चना जौ आदि को निकाल देना ही अच्छा रहेगा। यद्यपि मोटी लाइन इस माह में किसी भी वस्तु में दिखाई नहीं देती है तो भी आलू सदा नया लेना लाभप्रद रहेगा। तिलहन के सभी वायदे पड़े रहेंगे परंतु चैत्र वदि ५ भौमवार आर्द्रा के ३ चरण में गुरु भारी मन्दी मिट्टी से लेकर सोने तक करने में समर्थ है। पर आज ही इसी दिन रोहिणी ३ शनि का अपोजिट असर कारक है इस वास्ते आज की बनी नहीं, कल की ११ बजकर ५५ मिनट तक बनी लाइन ही सम्पूर्ण चैत्र वदि ३० तक असर कायम रखेगी। सिर्फ चैत्र वदि १३ बुधवार को अश्विनी मेषे बुध रियेक्शन ही देगा। पर उपरोक्त बात पर ही ध्यान रखकर व्यापार करें और बर्तनों में पीतल कांसा तथा चांदी सोना गिल्ट तेजी पर जायेगा। सूत, रूई, महीन कपड़ों का स्टाक करना ही अच्छा लाभ कारक रहेगा।

पृष्ठ ४१ का शेष

तो कम से कम इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा ५ जुलाई गुरुवार को सायं तक खुले स्थान में जाकर ध्वजा पूजन पूर्वक विधिवत वायु-परीक्षा करके अपने राष्ट्र के शुभाशुभ फल का निर्णय करें।

वाणिज्य व्यवसाय

इस वर्ष धान्यादि पदार्थों का प्रतिनिधित्व बुध ग्रह को प्राप्त हुआ है। वर्ष प्रवेश कुण्डली में बुध व्यापार भाव का अधिपति होकर व्ययभाव में मित्र राशि का होकर बैठा है अत: अन्न के उत्पादन में कमी आयेगी एवं विदेश व्यापार में खाद्य पदार्थों (अन्न) का महत्त्वपूर्ण स्थान होगा एवं अन्न के भाव में तेजी की प्रबल सम्भावना बन रही है। चन्द्रमा जो कि वर्ष का राजा भी है एवं नीरसेश है स्वयं क्षीण है अत: चांदी, मोती, सफेद, रंग की वस्तुएं मंहगी होंगी। शुक्र जो कि श्रृंगार एवं विलासिता से संबंधित वस्तुओं को प्रभावित करता है तृतीयाधिप एवं अष्टमाधिप होकर उच्चस्थ है तथा अस्त होने के सन्निकट है जिससे शुक्र के आधीन वस्तुओं हीरा, श्रृंगार सामग्री आदि के भावों में तेजी का रुख रहेगा। सूर्य जो कि स्वर्णाभूषण को मुख्यत: प्रभावित करता है षष्ठेश एवं अष्टमेश के साथ लग्नस्थ होने से अपने आधीन वस्तुओं गुड़, छुआरा, माणिक्य, लाल पत्थर लाल रंग की वस्तुएं एवं स्वर्ण के दामों में तेजी का रुख लाएगा।

वायुमण्डल वर्षारिगोत्पादि

इस वर्ष की ग्रह स्थिति के आधार पर प्राचीन ग्रन्थों से सार्वत्रिक वर्षादि का सामूहिक विचार यहाँ लिख रहा हूँ। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तानुसार वर्षा वायु भिन्न प्रान्तों में विभिन्न रूपों में होती है। भारतीय वायुशास्त्र में प्रत्येक नगर या मंडल में प्रतिदिन की वायु मेघगर्जना बादल विद्युतादि की परीक्षा द्वारा व वृष्टि-गर्भ लक्षण का उल्लेख है। जैसे- आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा द्वारा तत्रद्देशीय दुर्भिक्ष-सुभिक्ष का ज्ञान होता है, वैसे ही प्रत्येक मास की प्रमुख तिथियों की वायु वर्षा मेघ-गर्जन आदि अन्तरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है। इस कार्य के लिए प्रत्येक प्रान्त व मंडल में एक वायु-वृष्टि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हो जिसमें प्रतिदिन की वायु-वर्षा का रिकार्ड रखा जाये, उस अन्तरिक्ष दिव्य निमित्त और ग्रह योगों का मिलान करके वर्षादि की जो भविष्यवाणी की जायेगी वह उस स्थान के लिए सत्य सिद्ध होगी। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तों के बिना केवल ग्रहयोगों से की गई भविष्यवाणी सर्वत्र शतप्रतिशत सही हो यह निश्चित नहीं। यह बात विगत ४२ वर्षों से इस पंचांग में निरन्तर लिखी जा रही है परन्तु केन्द्रीय शासन ने राष्ट्र के लिए परमोपयोगी इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। प्रतिवर्ष बाढ़ और सूखा से यत्र-तत्र भयंकर विनाश हो रहा है।

वर्षा योग

सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से दस नक्षत्र वर्षाकारक माने गये हैं। भारत में २१ जून से मेघागमन (मानसून का प्रारम्भ) माना जाता है। समुद्र तटवर्ती दक्षिणवर्ती भारत में मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य प्रवेश होने पर १० जून के लगभग मानसून सक्रिय हो जाता है। वर्षा एवं कृषि उत्पादन के लिए सूर्य आर्द्रा प्रवेश का विशेष महत्व है।

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगोवा।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च सम्पूर्ण सस्या वसुधा तदा स्यात्।।

भारत में वर्षा के दिन

आषाढ़ कृष्ण पक्ष में ७ जून से २१ जून २००१ तक वायु वेग बढ़ेगा एवं वायु में गर्मी की अधिकता होगी। आषाढ़ शुक्ल पक्ष में २२ जून से ५ जुलाई के मध्य की अवधि में कहीं तेजवायु के साथ खण्ड वृष्टि तथा कहीं सामान्य वर्षा होगी। उत्तर प्रदेश, हरियाण, दिल्ली पंजाब, राजस्थान, केरल आसाम, महाराष्ट्र मध्य प्रदेश, उड़ीसा के अधिकांस भागों में व्यापक वर्षा होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में तेज वर्षा तथा समुद्र तटवर्ती भूभागों में झंझावात के साथ वर्षा होगी। श्रावण कृष्ण पक्ष ६ जुलाई से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा ४ अगस्त के मध्य की कालावधि में बुध के जलानाड़ी, गुरु, शुक्र के सौम्या नाड़ी में होने से अधिकांश भागों में व्यापक सामान्य वर्षा होगी। कुछ भागों में तेज वायु के साथ वर्षा का अवरोध होगा एवं खण्डे वृष्टि होगी क्योंकि मास के पूर्वाध भाग में सूर्यके साथ राहु एवं बुध स्थित हैं। भाद्रपद कृष्ण ५ से १९ अगस्त के मध्य की अवधि में बुध के सूर्य आगे स्थिति होने एवं अमृता नाड़ी में होने से कहीं-कहीं अच्छी वर्षा होगी एवं कुछ भागों में तेज वायु के साथ खण्डवृष्टि होगीं। भाद्रपद शुक्ल पक्ष २० अगस्त से २ सितम्बर की कालावधि में सूर्य बुध के अमृतानाड़ी एवं नीरा नाड़ी में स्थित होने से कहीं तेज वायु के साथ वर्षा होगी एवं कहीं भारी वर्षा होगी। इस अवधि में वर्षा व्यापक होगी एवं कुछ भाग अतिवर्षण से प्रभावित होंगे। ३ सितम्बर से २ अक्टूबर के मध्य खण्ड वृष्टि, वायु के साथ वर्षा होगी एवं कुछ भाग तेजवायु-तूफान से प्रभावित होंगे। ३ अक्टूबर से २ नवम्बर की अवधि में छिट पुट बूंदाबांदी एवं ऋतु परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर होंगे। माघ मास (सौर) १४ जनवरी से १२ फरवरी के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होगा एवं तेज शीतलहर चलेगी एवं कुछ भागों में हल्की वर्षा बूंदा-बांदी होगी। समुद्रतटीय भागों में वायु वेग के साथ कहीं हल्की एवं कहीं तेज वर्षा भी होगी। माघ शुक्ल पक्ष में अचानक शीत बढ़ेगी जिससे पर्वतीय क्षेत्र ज्यादा प्रभावित होंगे। २७ फरवरी से ऋतुपरिवर्तन के लक्षण प्रकट होंगे।

वर्तमान २१वीं शती का यह प्रथम चरण ग्रह-गणनानुसार संसार के इतिहास में अभूतपूर्व भयंकर उलटफेर कारक है। महामाया से प्रार्थना है कि वे युद्धोन्मादी राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि दें और विश्व को विनाश के गर्त में ले जाने से बचावें। भारत की तपोधन, आध्यात्मिक महान विभूतियाँ ही विश्व का कल्याण करेंगी।

स्वस्ति प्रजाभ्य: परिपालयन्तां न्याय्येनमार्गेण महीं महीपा:।
गोब्राह्मणेभ्य: शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्ता: सुखिनो भवन्तु।

मंगलाकांक्षी

पौष शुक्ल ९ गुरुवार
संवत् २०५७ विक्रमी
दिनांक: ४-१-२००१

पं० सुधाकर शर्मा त्रिवेदी
ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हि.प्र.)
पं० विनोद बिजल्वाण, एम. एस.सी.
९१, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश

संवत् २०५८ विक्रमी का द्वादश राशिफल

सम्पर्क सूत्र-पं० विनोद बिजल्वाण M.S.C.
११, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश (उत्तरांचल)

मेष राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

१३ अप्रैल तक आर्थिक स्थिति सामान्य, स्वास्थ्य कुछ विपरीत रहेगा। १४ मई तक यात्राओं की अधिकता, शत्रु पक्ष से विवाद, आर्थिक स्थिति अनुकूल, आय के नये स्त्रोत। १३ जून से आर्थिक लाभ, रक्त विकार, ज्वरादि से पीड़ा कारोबार विस्तार की योजना बनेगी। मित्रों से लाभ, विवाद में विजय होगी तथा मान सम्मान में वृद्धि होगी। १५ जुलाई से मान सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति, शत्रु से विवाद सम्भव, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। १५ अगस्त से मानसिक अशान्ति, शत्रु से विवाद, मित्रों से मनमुटाव, आर्थिकलाभ उत्तम किन्तु अपव्यय भी होगा। १५ सितम्बर से शत्रु पराजित, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, आर्थिक स्थिति अनुकूल, मित्रों से सहयोग मिलेगा। १५ अक्टूबर से यात्राओं के प्रसंग बनेंगे, मन में अशान्ति, गुप्त शत्रु बाधा पहुंचाने का प्रयास करेंगे, धन का अपव्यय अधिक होगा। १४ नवम्बर से स्वास्थ्य में गिरावट, आर्थिक लाभ उत्तम, व्यय की अधिकता रहेगी। १४ दिसम्बर से मन में अशान्ति, धार्मिक कार्यों में अरुचि, व्यय की अधिकता किन्तु आर्थिक लाभ की स्थिति भी अनुकूल रहेगी। १४ जनवरी से कार्यों में सफलता, आर्थिक लाभ उत्तम तथा मन में प्रसन्ता तथा धन का अपव्यय भी अधिक होगा। १२ फरवरी से धन का अपव्यय, मानसिक अशान्ति, पारिवारिक असन्तोष किन्तु आर्थिक लाभ भी होगा तथा शत्रु भी उत्पन्न होंगे। १३ मार्च से धन व्यय अधिक, शत्रु से बाधा तथा मानसिक चिन्ता रहेगी। आपको शनि की साढ़ेसाती लौहपाद पर उतरती हुई होने से कष्टकारी है अत: शनि के दान जपादि से सन्तुष्ट करें।

वृष राशि (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

१३ अप्रैल तक मानसिक अशान्ति, आर्थिक स्थिति मध्यम, धन का अपव्यय होगा। १३ अप्रैल से अपव्यय की अधिकता, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ मई से मानसिक चिंता में वृद्धि, आर्थिक स्थिति मध्यम, स्वास्थ्य विपरीत। स्थान परिवर्तन या यात्रा के प्रसंग। १३ जून से शत्रु भय, पत्नी को कष्ट, आर्थिक लाभ उत्तम, पारिवारिक अशान्ति मानसिक चिन्ता। १५ जुलाई से आर्थिक लाभ उत्तम शत्रु नाश, मानसिक चिनाओं में कमी होगी। १५ अगस्त से मानप्रतिष्ठा में कमी, स्वास्थ्य विपरीत मानसिक चिन्ता, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ सितम्बर से मानसिक चिन्ता, स्वास्थ्य विपरीत, आर्थिक स्थिति मध्यम, वाहन से लाभ। १५ अक्टूबर से शत्रु परास्त, मित्रों से सहयोग, धार्मिक कार्यों से अरुचि, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता होगी। १४ नवम्बर से यात्रा के प्रसंग होंगे, स्थान परिवर्तन, शत्रु से बाधा उत्पन्न होगी तथा मानसिक अशान्ति रहेगी। १४ दिसम्बर से स्वास्थ्य कुछ विपरीत, मन में अशान्ति, आर्थिक स्थिति मध्यम, अकस्मात धन लाभ होगा। १४ जनवरी से धार्मिक कार्यों से अरुचि, आर्थिक लाभ, मानसिक प्रसन्नता, रुके कार्य बनेंगे। १२ फरवरी से रुके कार्य बनें, कारोबार में वृद्धि, व्यय की अधिकता, मानसिक चिन्ता। १३ मार्च से आर्थिक लाभ में वृद्धि, रुके कार्य बनेंगे, गुप्त शत्रु उत्पन्न होंगे। शनि की साढ़ेसाती ताम्रपाद हृदय पर होने से सुख सम्पति कारक है।

मिथुन राशि (क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)

१२ अप्रैल तक रुके कार्य बनेंगे, आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। १३ अप्रैल से आर्थिक लाभ उत्तम, आय के नये स्त्रोत बनेंगे, स्वास्थ्य कुछ विपरीत, मानसिक चिन्ता। १४ मई से अपव्यय की अधिकता, पत्नी को पीड़ा। ३० मई से आर्थिक लाभ में वृद्धि। १३ जून से स्थान परिवर्तन, यात्रा, आर्थिक लाभ उत्तम, शत्रु पराजित, मानसिक अशान्ति। १५ जुलाई से मानसिक अशान्ति में कमी, शत्रु पराजित, आर्थिक स्थिति अनुकूल। १५ अगस्त से आर्थिक लाभ उत्तम, कारोबार में वृद्धि, यात्रा के प्रसंग, पत्नी पक्ष की चिन्ता। १५ सितम्बर से मान प्रतिष्ठा में कमी, मानसिक चिन्ता, मित्रों से सहयोग, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ अक्टूबर से मानसिक चिन्ता सन्तान पक्ष की चिन्ता, शत्रु पक्ष बाधा उत्पन्न करें, रक्त विकार ज्वरादि से पीड़ा सम्भव, आर्थिक लाभ मध्यम भूमि-मकान-वाहन लाभ सम्भव। १४ नवम्बर से शत्रु पराजित, रुके कार्य बनें, गुप्त शत्रु भी बढ़ें। १४ दिसम्बर से यात्रा के प्रसंग होंगे, गुप्त शत्रु हों, मन में भय व चिन्ता। १४ जनवरी से स्वास्थ्य विपरीत, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ सामान्य। १२ फरवरी से धार्मिक कार्यों में अरुचि, आर्थिक लाभ सामान्य, मानसिक चिन्ता, मित्रों से सहयोग। १३ मार्च से रुके कार्य बनें, आर्थिक लाभ सामान्य, मानसिक चिन्ता रहेगी। आपको शनि की साढ़ेसाती रजत पाद पर मस्तक पर चढ़ती होने से सुख-सम्पत्ति बढ़ाने वाली उत्तम है।

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

१३ अप्रैल तक धार्मिक कार्यों में अरुचि, मित्रों से मनमुटाव, संतान पक्ष की चिंता, आर्थिक लाभ सामान्य। १३ अप्रैल से रुके कार्य बनें, शत्रु पराजित हों, धार्मिक आयोजनों में भाग लें, आर्थिक स्थिति अनुकूल, मित्रों से सहयोग प्राप्त हो। १४ मई से आर्थिक लाभ उत्तम, मानसिक चिन्ता, कारोबार की वृद्धि। १३ जून से अपव्यय में वृद्धि, सन्तान पक्ष की चिन्ता, शारीरिक पीड़ा। ३० जून से आर्थिक लाभ। १५ जुलाई से स्थान परिवर्तन या यात्रा, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम होगा। १५ अगस्त से मानसिक चिन्ता, स्वास्थ्य कुछ विपरीत, शत्रु पराजित हों, आर्थिक लाभ मध्यम होगा।

१५ सितम्बर से मान सम्मान में वृद्धि, मित्रों से सहयोग प्राप्त हो, आर्थिक लाभ उत्तम। १५ अक्टूबर से मान प्रतिष्ठा में कमी, स्त्री पक्ष की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। १४ नवम्बर से मानसिक चिन्ता में वृद्धि, शत्रुभय, स्वास्थ्य विपरीत सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, आर्थिक लाभ सामान्य। १४ दिसम्बर से शत्रुपराजित हों, स्वास्थ्य कुछ विपरीत, आर्थिक लाभ सामान्य होगा। १४ जनवरी से यात्राओं के प्रसंग होंगे, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा पहुंचायेंगे, मानसिक चिन्ताओं में वृद्धि, अपव्यय की अधिकता। १२ फरवरी से शरीर स्वास्थ्य विपरीत, मानसिक चिन्ता में वृद्धि, आर्थिक लाभ मध्यम। १३ मार्च से धार्मिक कार्यों में अरुचि, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम।

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

१३ अप्रैल तक स्वास्थ्य विपरीत, शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे। १३ अप्रैल से धार्मिक कार्यों में अरुचि, सन्तान पक्ष की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ मई से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, सन्तान पक्ष की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम। १३ जून से आर्थिक स्थिति उत्तम, शत्रु पक्ष बाधा उत्पन्न करेगा, सामान्य मानसिक चिन्ता। १५ जुलाई से अपव्यय की अधिकता, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम। १५ अगस्त से स्थान परिवर्तन, यात्रा के प्रसंग, संतान पक्ष की चिंता, स्वास्थ्य कुछ विपरीत, धार्मिक कार्य में व्यय, आर्थिक लाभ मध्यम। १५ सितम्बर से मानसिक चिंता, स्वभाव में कुछ तेजी, शत्रु पराजित होंगे, आर्थिक लाभ सामान्य। १५ अक्टूबर से अपने पराक्रम से विशेष लाभ, मित्रों का भी सहयोग मिलेगा, शत्रु परास्त, स्वभाव में कुछ तेजी। १४ नवम्बर से मानप्रतिष्ठा में कमी, स्त्री पक्ष से चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम, संतान पक्ष से प्रसन्नता होगी। १४ दिसम्बर से मानसिक चिन्ता, स्त्री पक्ष से चिन्ता, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता होगी। १४ जनवरी से शत्रु परास्त, मानसिक चिन्ता रक्त विकार ज्वरादि से पीड़ा, आर्थिक लाभ मध्यम। १२ फरवरी से यात्रा के प्रसंग, मित्रों से मतभेद, मानसिक चिन्ता होगी। १३ मार्च से स्वास्थ्य मध्यम, मानसिक चिन्ता, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ मध्यम होगा।

कन्या राशि (टो, पा, पी, पू. ष, ण, ठ, पे, पो)

१३ अप्रैल से स्वास्थ्य कुछ विपरीत, आर्थक स्थित अनुकूल, साधारण मानसिक चिन्ता १४ मई से मित्रों से मतभेद, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम १३ जून से रुके कार्य बनें, मित्रों से सहयोग, आर्थिक लाभ सामान्य। १५ जुलाई से कारोबार में वृद्धि आर्थिक लाभ, मित्रों से सहयोग, मानसिक चिन्ता १५ अगस्त से व्यय की अधिकता, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगें, आर्थिक लाभ मध्यम। १५ सितम्बर से यात्रा के प्रसंग, स्थान परिवर्तन शत्रु बाधा उत्पन्न करें, आर्थिक लाभ मधयम। १५ अक्टूबर से मानसिक चिन्ता, सन्तान पक्ष की चिन्ता, शत्रु परास्त, मित्रों से सहयोग, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ नवम्बर से आर्थिक लाभ उत्तम, मित्रों से सहयोग, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि। १४ दिसम्बर से मान प्रतिष्ठा में कमी, आर्थिक लाभ मध्यम, शत्रु परास्त, मकान-वाहन-सम्पत्ति का लाभ सम्भव। १४ जनवरी से मानसिक चिन्ता, स्त्री पक्ष की चिन्ता, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता होगी। १२ फरवरी से शत्रु पराजित, रुके कार्य बनेंगे, आर्थिक लाभ सामान्य होगा। १३ मार्च से यात्राओं की अधिकता, स्थान परिवर्तन, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, मानसिक चिन्ता में वृद्धि धार्मिक कार्यों में अरुचि, आर्थिक लाभ सामान्य होगा। आपको शनि एवं राहु को जपदानादि संतुष्ट से करना हितकर होगा।

तुला राशि (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

१३ अप्रैल से स्थान परिवर्तन, यात्रा के प्रसंग होंगे, अपव्यय की अधिकता, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १४ मई से स्वास्थ्य विपरीत, आर्थिक लाभ, मित्रों से सहयोग, मानसिक चिन्ता। १३ जून से मित्रों से विचारों में मतभेद, कार्यों में बाधा, अपव्यय। १५ जुलाई से रुके कार्य बनेंगे, आर्थिक लाभ मध्यम, कुछ पारिवारिक अशान्ति। १५ अगस्त से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, शत्रु परास्त होंगे। १५ सितम्बर से धन का अपव्यय अधिक, आर्थिक लाभ मध्यम, आय के नये स्त्रोत बनेंगे। १५ अक्टूबर से स्थान परिवर्तन या यात्रा के प्रसंग हों, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ नवम्बर से मानसिक चिंता, पारिवारिक अशान्ति, सन्तान पक्ष की चिन्ता, शत्रु पराजित, आर्थिक लाभ सामान्य। १४ दिसम्बर से मित्रों से सहयोग, अपने पराक्रम से लाभ अर्जित, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ सामान्य। १४ जनवरी से मानसिक चिन्ता, मान प्रतिष्ठा में कुछ कमी, शत्रु पराजित, आर्थिक लाभ मध्यम, सम्पत्ति, वाहन का लाभ। १२ फरवरी से मानसिक अशान्ति, स्त्री पक्ष की चिन्ता, सन्तान पक्ष से लाभ, स्वास्थ्य विपरीत। १३ मार्च से शत्रु पराजित, मित्रों से सहयोग, स्त्री पक्ष की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम। आपको शनि की ढैय्या ताम्र पाद में होने से सुख सम्पत्ति कारक है।

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

१३ अप्रैल तक शत्रु परास्त होंगे, स्वभाव में तेजी रहेगी. राज्य पक्ष से लाभ, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता। आर्थिक स्थिति मध्यम। १४ मई तक यात्रा के प्रसंग, स्थान परिवर्तन, व्ययाधिक्य, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १३ जून से स्वास्थ्य विपरीत, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, मानसिक अशान्ति, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ जुलाई से धार्मिक कार्यों में अरुचि, गुप्त शत्रुकृत बाधा, आर्थिक लाभ मध्यम। १५ अगस्त से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, व्यय अधिक, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ सितम्बर से कारोबार में वृद्धि, आय के नये स्त्रोत बनेंगे, मानसिक चिन्ता भी रहेगी। १५ अक्टूबर से

अपव्यय की अधिकता, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, कारोबार की वृद्धि। १४ नवम्बर से स्थान परिवर्तन या यात्रा के प्रसंग, आर्थिक स्थिति मध्यम, पारिवारिक अशान्ति, शत्रु पराजित होगा। १४ दिसम्बर से मानसिक चिन्ता में वृद्धि, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक स्थिति सामान्य, स्त्री पक्ष की चिन्ता। १४ जनवरी से मान सम्मान में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, कारोबार का विस्तार, सन्तान पक्ष की चिन्ता, राज्य पक्ष से लाभ की संभावना, स्त्री पक्ष की चिन्ता रहेगी। १२ फरवरी से मान प्रतिष्ठा में कमी, पारिवारिक अशान्ति, आर्थिक स्थिति सामान्य, शत्रु पराजित होंगे, वाहन-भूमि-सम्पत्ति का लाभ सम्भव, मानसिक चिन्ता रहेगी। १३ मार्च से मानसिक चिन्ता, सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रु पराजित, स्त्री पक्ष की चिन्ता, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे। आर्थिक स्थिति सामान्य। आपके गोचर में राहु केतु की स्थिति के कारण रोग चिन्ता व अपव्ययकारी होने के कारण राहु केतु को जपदानादि से सन्तुष्ट करें।

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

१३ अप्रैल से मानसिक चिन्ता, संतान पक्ष की चिन्ता, धन का अपव्यय, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, वाहन सम्पत्ति का लाभ संभव, पारिवारिक अशान्ति, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ मई से शत्रुपराजित होंगे, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, क्रोध की अधिकता रहेगी, मानसिक अशान्ति रहेगी, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता होगी। १३ जून से स्थान परिवर्तन, यात्रा के प्रसंग, धन का अपव्यय, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १५ जुलाई से स्वास्थ्य विपरीत, मानसिक अशान्ति, राज्यपक्ष से लाभ, धन का अपव्यय अधिक, रक्त विकार, ज्वरादि से शरीर पीड़ा। १५ अगस्त से धार्मिक कार्यों में अरुचि, बनते कार्यों में रुकावट, मित्रों से मनमुटाव, आर्थिक लाभ मध्यम। १५ सितम्बर से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा तथा कारोबार का विस्तार होगा। गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। १५ अक्टूबर से आर्थिक लाभ बढ़ेगा। अपव्यय की अधिकता, मानसिक अशान्ति। १४ नवम्बर से धन का अपव्यय, आर्थिक लाभ मध्यम, मानसिक अशान्ति रहेगी। १४ दिसम्बर से स्थान परिवर्तन, यात्रा की सम्भावना, आर्थिक लाभ, मित्रों से सहयोग, पराक्रम से लाभ व मान सम्मान में वृद्धि, मानसिक चिन्ता रहेगी। १४ जनवरी से मानसिक चिन्ता में वृद्धि, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक स्थिति मध्यम। १२ फरवरी से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, आर्थिक लाभ उत्तम, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, मानसिक चिन्ता में कमी, वाहन मकान-सम्पत्ति का लाभ सम्भव। १३ मार्च से मान प्रतिष्ठा में कमी, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे, सन्तान पक्ष की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम, शत्रु पराजित हो, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको राहु के कारण पारिवारिक अशान्ति व मानसिक चिन्ता इस वर्ष फरवरी तक रहेगी। अतः राहु को जपदानादि से सन्तुष्ट करने पर लाभ होगा।

मकर राशि (भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

१३ अप्रैल से मान प्रतिष्ठा में कमी, कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी, धन का अपव्यय मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। १४ मई से मानसिक चिन्ता, रक्त विकार, ज्वरादि से पीड़ा, वाहन-मकान- सम्पत्ति आदि का लाभ, शत्रु पराजित, आर्थिक स्थिति सामान्य। १३ जून से रुके कार्य बनेंगे, शत्रु पराजित हों, आर्थिक लाभ उत्तम, मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा कारोबार का विस्तार होगा, मित्रों से सहयोग बढ़ेगा। १५ जुलाई से यात्राओं के प्रसंग होंगे या स्थान परिवर्तन, आर्थिक लाभ उत्तम, मानसिक चिन्ता, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १५ अगस्त से शरीर पीड़ा, ज्वरादि कष्ट, मानसिक चिन्ताओं में वृद्धि, आर्थिक स्थिति मध्यम, व्यय की अधिकता। १५ सितम्बर से धार्मिक कार्यों से अरुचि, मित्रों से मतभेद, कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। १५ अक्टूबर से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, आर्थिक लाभ होगा तथा कारोबार में वृद्धि। १४ नवम्बर से आर्थिक लाभ में वृद्धि, कौटुम्बिक अशान्ति तथा स्वभाव में तेजी, कारोबार का विस्तार, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, सन्तान पक्ष की प्रारम्भ में चिन्ता उपरान्त सन्तान पक्ष से प्रसन्नता। १४ दिसम्बर से धन का अपव्यय अधिक, मानसिक चिन्ता में वृद्धि, राज्य पक्ष से लाभ सम्भव, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। १४ जनवरी से यात्रा के प्रसंग होंगे, स्थान परिवर्तन, मानसिक अशान्ति, शत्रु पराजित हों, आर्थिक स्थिति मध्यम। १२ फरवरी से गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, धन का अपव्यय अधिक होगा, आर्थिक लाभ मध्यम होगा। १३ मार्च से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ उत्तम, मकान-जमीन- वाहन का लाभ सम्भव। आपको इस वर्ष शनि को जपदानादि से सन्तुष्ट करने से मानसिक चिन्ता में कमी होगी तथा फरवरी के मध्य में राहु का उपचार श्रेयस्कर होगा।

कुम्भ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

१३ अप्रैल से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, आर्थिक लाभ, मानसिक चिन्ता रहेगी। १४ मई से मान प्रतिष्ठा में कमी, मित्रों से मतभेद, आर्थिक लाभ सामान्य मानसिक चिन्ता। १३ जून से मानसिक चिन्ता में वृद्धि, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे, वाहन-जमीन का लाभ सम्भव। १५ जुलाई से शत्रु पराजित होंगे, आर्थिक लाभ सामान्य, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता। १५ अगस्त से यात्रा के प्रसंग या स्थान परिवर्तन, आर्थिक लाभ, गुप्त शत्रु बाधा पहुंचाने का प्रयास करेंगे, मानसिक चिन्ता। १५ सितम्बर से स्वास्थ्य विपरीत, ज्वरादि से पीड़ा, आर्थिक लाभ, कारोबार की वृद्धि, मानसिक चिन्ता। १५ अक्टूबर से धार्मिक कार्यों से अरुचि, मित्रों से मतभेद, गुप्त शत्रु कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे, रक्त विकार आदि से पीड़ा, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ नवम्बर से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक चिन्ता

एवं अपव्यय की अधिकता होगी, आर्थिक लाभ मध्यम होगा। १४ दिसम्बर से आर्थिक लाभ, कारोबार का विस्तार, मित्रों से सहयोग, स्वभाव में कुछ तेजी रहेगी। १४ जनवरी से धन का अपव्यय अधिक, मानसिक चिन्ता में वृद्धि, आर्थिक लाभ मध्यम, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १२ फरवरी से यात्रा के प्रसंग, स्थान परिवर्तन, मित्रों से सहयोग, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करें, आर्थिक लाभ। १३ मार्च से कुटुम्ब की चिंता, धन का अपव्यय, आर्थिक लाभ, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। आपको शनि की ढैय्या सुवर्ण पाद पर होने से धन हानि, आर्थिक परेशानी, पारिवारिक चिन्ता तथा शत्रुकृत बाधा एवं कारोबार में मन्दी से व स्वास्थ्य विपरीत होने से परेशानी होगी अत: आप शनि को जपदानादि से सन्तुष्ट करें। साथ ही राहु का उपचार भी आवश्यक है।

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

१३ अप्रैल से शत्रु बाधा उत्पन्न करें, कुटुम्ब की चिन्ता, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ मई से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, आर्थिक लाभ, मानसिक चिन्ता, गुप्त शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १३ जून से मान सम्मान में कमी, मानसिक चिन्ता, मित्रों से मतभेद, गुप्त शत्रुकृता बाधा, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ जुलाई से मानसिक चिन्ता, सन्तान पक्ष की चिन्ता, वाहन-मकान आदि का लाभ सम्भव, मित्रों से सहयोग, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ अगस्त से रुके कार्य बनें, मानसिक चिन्ता, आर्थिक लाभ। १५ सितम्बर से यात्रा के अवसर, स्थान परिवर्तन, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे, आर्थिक स्थिति मध्यम। १५ अक्टूबर से ज्वरादि से स्वास्थ्य विपरीत, आर्थिक लाभ, मानसिक चिन्ता। १४ नवम्बर से कार्यों में बाधा, मित्रों से मतभेद, रक्तविकारादि से स्वास्थ्य विपरीत, धन का अपव्यय, आर्थिक लाभ मध्यम। १४ दिसम्बर से रुके कार्य बनेंगे, मित्रों से सहयोग प्राप्त हो, धन का अपव्यय, मानसिक चिन्ता रहेगी, आर्थिक लाभ सामान्य। १४ जनवरी से कारोबार में वृद्धि, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, आर्थिक लाभ उत्तम, शत्रु बाधा उत्पन्न करेंगे। १२ फरवरी से ज्वरादि से शरीर पीड़ा, मानसिक अशान्ति, धन का अपव्यय अधिक, आर्थिक लाभ में वृद्धि। १३ मार्च से स्थान परिवर्तन या यात्रा के प्रसंग होंगे, धन का अपव्यय, शत्रु परास्त होंगे तथा आर्थिक लाभ उत्तम एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। आपको फरवरी मध्य तक राहु के विपरीत होने से राहु को जपदानादि से सन्तुष्ट करना श्रेयस्कर होगा। जून के मध्य तक गुरु की भी पूजा करें।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य संवत् २०५८

परिलेखकर्त्ता- अखिलेश कुमार जैन, पोरसा वाले

अप्रैल २००१

(A) ११ अप्रैल के मध्य चांदी २५०-९९९ की तेजी आये तो ११ अप्रैल से १५ मई के मध्य चांदी में २५०-५५५ की जोरदार मन्दी आयेगी। २५ मार्च से १५ अप्रैल तक लालमिर्च ७०२, पोस्तादाना ९९९, रुई १५०, तिल ३६०, जीरा ५०२, हल्दी २५२ की जोरदार तेजी आ सकती हैं। मगर चना में घटबढ़ से जोरदार मन्दी बन सकती है। १५ मार्च से २५ अप्रैल तक देशी घी २५२ प्रति टीन की भारी तेजी, जावित्री ५४, मोम गुड़ ७२, कालीमिर्च ९९९ की भड़कती तेजी आ सकती है।

(B) (D-M-7Y) १५ अप्रैल या २७ अप्रैल से मूँगफली तेल, सोयाबीन तेल में जोरदार मन्दी का धमाका हो सकता है। २३ अप्रैल से सूर्य बुध की सुपीरियर युति से तेल शेयर में १० दिन पूर्व से चाँदी में जोरदार मंदी आ सकती है।

मई २००१

(A) २७ अप्रैल से १५ मई तक चना ११५, सोयाबीन तेल ३६०, तिल ४६१, रुई १५४, लहुसन १५०, कालीमिर्च पोस्तादाना मूँग सौंठ ७०२, मसूर ९९९, धनियाँ २०५, मटर ९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। १ मई से ५ जून तक सरसों ७०-१९९ भड़कती तेजी, सोयाबीन, अरहर, चना, मटर आदि में जोरदार तेजी आ सकती है। डालडा मूल्य में भारी वृद्धि हो सकती है।

(B) ११ मई से १८ मई तक तेलों में जोरदार मन्दी बन सकती है।

१ जून के आसपास शेयर इन्डेकस ऊँचा होकर आगे मंदी चल सकती है। ११ मई से १९ जुलाई मंगल वक्री जीरा गुड़ शेयर्स चना में तूफानी तेजी आ सकती है।

जून २००१

(A) २५ मई से ११ जून तक चीनी ६५, काबली चना २९९, खोपरा गोला ९९, देशी घी ५४, पोस्तादाना ७०२ की तेजी, फलीतेल ३६०, अरण्डी तेल, लालमिर्च ५०४, हल्दी २५०, तिल ९९ की तेजी आ सकती है। इसके अलावा अरहर ११८, कालीमिर्च ७०२ की तेजी। गेहूँ, उड़द में तेजी आ सकती है। १५ जून से २७ जून के मध्य अरहर ९० की मन्दी, जीरा ४०५, सरसों में १५० मन्दी झटका लग सकता है। २ जून से ३० जून तक जावित्री, कालीमिर्च, जौ ३६, मसूर २६ की तेजी आ सकती है। २० जून से ३ जुलाई तक किशमिश ५०२, खण्डसारी ९०, गुड़ ७७ की जालिम झड़पी तेजी आ सकती है। १५ जून से २ जूलाई के मध्य कभी कालीमिर्च ९९९ व लाल मिर्च ७०२ की मन्दी आ सकती है। बाजार रूख देखकर व्यापार करें लाभ-हानि की कभी किसी हालत में जिम्मेदारी नहीं। १६ मई से २७ जून के मध्य चांदी ५५५, सोना १९९

की जोरदार मन्दी आ सकती है।

(B) ११ जून से तेलों में मन्दी आ सकती है। १६ जून सूर्य बुध की इनफिरियर युति से तेल शेयर्स में तेजी आ सकती है।

जुलाई २००१

२७ जून से १२ जुलाई के बीच सरसो ७२-१५० की भड़कती तेजी व तिल तेल ३६०, अरण्डी तेल १५०, अरहर १९९, मसूर ६५, चना ३६, रुई ९९ की तेजी आ सकती है। २ जुलाई से २१ जुलाई के मध्य खोपरा गोला ४०५ की जोरदार मन्दी, बड़ी इलायची, पिपरमेंट में मन्दी मगर राजमा २५० तेजी, अमचूर ९९९, उड़द १५०, अरहर ९९, किशमिश ९९९, पोस्तादाना मे तेजी आ सकती है।

अगस्त २००१

५ अगस्त को सूर्य बुध की सुपीरियर युति से तेल दाल, शेयर्स से तेजी चल सकती है। २ अगस्त से ३० अगस्त तक गेहूँ ३६, ग्वार में १५० की तेजी, बाजरा ३५, मूँग उड़द अरहर ७७, जीरा में ३६० की तेजी बन सकती है। इसके अलावा सौंफ, हल्दी, रुई, अजवाइन तेल खोपरा कोकोनट आयल में भारी तेजी आ सकती है। १४ अगस्त तक सरसों १५०, अरहर ९९, मसूर भड़कती तेजी तो, १६ अगस्त से २३ अगस्त सरसों बिनौला में मन्दी आ सकती है। अथवा २५ जुलाई से २७ अगस्त तक सरसों में २५०, मूंगफली ५६० की जोरदार तेजी आ सकती है। नोट- ३ अगस्त या १४ अगस्त से ५ दिन को खाद्य तेलों में जोरदार मन्दी का झटका लग सकता है। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। १५ अगस्त से २९ सितम्बर तक सरसों अरहर मसूर चना भयंकर तेजी आकर नये ऊँचे भाव हो सकते हैं।

सितम्बर २००१

५ सितंबर से १५ सितंबर तक काली मिर्च, धनियां, केसर ९९९ की जोरदार मंदी आ सकती है। १८ सितंबर से ११ अक्टूबर तक देशी घी, पिपरमेंट, बिनौला तेल, नारियल तेल, जौ, गेहूं में भारीतेजी, तो काबली चना, राजमा २५० की मन्दी, धनिया, सौंफ में जोरदार मंदी आ सकती है। इसके अलावा लाल मिर्च, सौंठ, चावल में मंदी आ सकती है। २ सितंबर से ९ सितम्बर मूंगफली तेल, सोयाबीन में मन्दी आ सकती है। २५ अगस्त से १६ सितम्बर तक हल्दी, मिर्च, जीरा, पोस्तादाना, अजवायन में जोरदार तेजी बन सकती हैं। हर बड़ी तेजी के उछाले में बेचते चलें। १५-२० दिन पहले से शेयर्स मार्केट में मन्दी चल सकती है। ९ अक्टूबर या ५ दिसम्बर में बम्बई शेयर इंडैक्स नीचा टच होकर आगे शेयर्स में अच्छी तेजी आ सकती हैं। २७-९-२००१ से७-२-२००२ तक शनि वक्री से तेल, अरहर, चना, मसूर में तेजी, शेयर्स में मंदी होकर बाद में तेजी भी आ सकती है।

अक्टूबर २००१

१४ अक्टूबर सूर्य बुध की इनफीरियर युति से तेल, चांदी में तेजी आ सकती है। २५ सितंबर से ११ अक्टूबर तक देशी घी टीन में १५० की भड़कती तेजी तो इसके अलावा पिपरमेंट, लौंग, धनियां, जीरा, लाल मिर्च, खोपरा गोला तेल, बिनौला तेल, मटर, मसूर में अच्छी तेजी आ सकती है। मगर उड़द मूंग मोंठ में २५० की जोरदार मंदी। इसके अलावा काबली चना, सौंफ, हल्दी, चावल में मंदी आ सकती है। ५ अक्टूबर से से २३ अक्टूबर तक सरसों, बिनौला में तेजी तो, मूंगफली तेल, सोयाबीन में मन्दी आ सकती हैं। २५ सितंबर से १४ अक्टूबर तक राजमा, अरहर, गुवार में अच्छी तेजी आ सकती हैं। २१ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक सरसों, फली तेल, बिनौला में जोरदार मन्दी आ सकती है।

नवंबर २००१

२७ अक्टूबर से ११ नवंबर तक लौंग, सुपारी, तिल, तेल, रुई, वारदाना, डालडा, वनस्पति घी में अच्छी तेजी आ सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। ५ नवंबर से २७ नवंबर तक बड़ी इलाइची, चना, गुआर, जावित्री, सरसों, अरहर, किसमिस, पोस्तादाना, खसखस, पिपरमेंट, तिल, चीनी में अच्छी तेजी आ सकती है। खोपरा गोला, रुई, हल्दी में अच्छी तेजी बन सकती है। बाजार रुख देख कर ही व्यापार करें, व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी नही। ३ अगस्त गुरु राहु की युति, चण्डाल योग से- जुलाई अगस्त में गेहूँ, अरहर, चना, हल्दी, जीरा, गुवार, लहसुन में अच्छी तेजी आ सकती है। ३ फरवरी २००१ से मंगल वृश्चिक राशि में, १० अप्रैल को धन राशि में, १० जून को पुन: वक्रगति से वृश्चिक राशि में, २६ अगस्त को पुन: धन राशि में प्रवेश व्यापार जगत् में भारी घटाबढ़ी सूचक है। १८ अक्टूबर को मकर राशि में प्रवेश तेलों में भारी तेजी आ सकती है। ३० नवंबर को कुंभ राशि में प्रवेश से शेयर्स में तुफानी तेजी दे सकता है। गुरु १५ जून तक वृष राशि में १६ जून २००१ से ५ जुलाई २००१ मिथुन राशि में भ्रमण करेगा- यहां राहु गुरु मिथुन में एक साथ चलने से चण्डाल योग से भयंकर तेजी चलने की आशा है। शनि ग्रह पूरे वर्ष वृष राशि में रहेगा। ११ फरवरी २००२ से राहु वृष राशि में व २७ जुलाई २००२ शनि मिथुन राशि में प्रवेश करने पर राहु शनि एक साथ होने पर विदेशों में सन् १९३९ की तरह युद्ध छिड़ सकता है। ११ फरवरी २००२ से २७-७-२००२ तक, शनि राहू एक साथ तथा अप्रैल मई २००१ में मंगल ग्रह वृष राशि में एक साथ- शनि राहू मंगल बुध शुक्र ग्रह एक साथ होंगें

६ फरवरी २००१ को राहु आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से रुई गुड़ तेलों में आगे भारी तेजी आ सकती है। ४-१०-२००१ को मृगशिर नक्षत्र प्रवेश राहु से- शेयर्स मारकेट में आगे एक-२ महीने बाद तेजी आ सकती है।

२१ मई २००१ से शनि ग्रह रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश होगा। ७ मार्च २००१ को गुरु रोहिणी नक्षत्र, १७ मई को मृगशिर, १५ जुलाई को आर्द्रा, २९ सितम्बर को पुनर्वसु

नक्षत्र में गुरु प्रवेश होगा। २-११ २००१ से २ मार्च २००२ तक गुरु वक्री होने से शेयर्स में तेजी आ सकती है।

दिसंबर 2001

१ दिसंबर से २७ दिसंबर तक चना १५०, अरहर ३६०, सरसों १५०-२९९ की भड़कती तेजी आ सकती हैं। २५ नवम्बर से ७ जनवरी २००२ तक लौंग २०-७० की खतरनाक तेजी आ सकती है। २७ दिसम्बर से २०जनवरी २००२ तक सरसों में ३६० की जोरदार मन्दी, फली तैल ३९९ की खतरनाक मन्दी बन सकती हैं। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। २५ दिसंबर से २५ जनवरी तक उड़द २५०, मूंग ३६० की जोरदार मन्दी आवेगी। २५दिसंबर से १५ जनवरी तक A.C.C., रिलाइंस शेयर्स में भयंकर मंदी आवे तो १५जनवरी से २७ जनवरी तक शेयर्स मारकेट में भयंकर तेजी आ कर के बाद में १५-२० दिन जोर दार मंदी का धमाका होगा। ४ दिसंबर को सूर्य बुध युति से शेयर्स तेल में मंदी आ सकती है।

जनवरी 2002

१ जनवरी से ३० जनवरी तक अरहर ४६०, चना १५०, मसूर ३९९, सरसों में ५६१ की खतरनाक मन्दी बन सकती है। २७ जनवरी से ११ फरवरी तक मूंग-उड़द में जोरदार मन्दी आ सकती है। १९ जनवरी से ८ फरवरी तक बुध वक्री रहने से ११ जनवरी से १ फरवरी तक तेलों २५०-५०६ की जोरदार मंदी के बाद २ फरवरी से ७-१० दिन में फली तेल, बिनौला तैल में तेजी तो २५ फरवरी से ७ अप्रैल तक जीरा गुड़ में तेजी, अरहर मसूर में तूफानी तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

फरवरी 2002

२ फरवरी से ५ फरवरी तक तेलों में जोरदार मंदी, ५फरवरी से ११ फरवरी तक तैल तिलहन में अस्थाई तेजी आ सकती है। १५ फरवरी से २५ फरवरी तक अरहर १५०, चना २५० जोरदार मंदी आयेगी। १८ फरवरी से २७ फरवरी तक सरसों तेल ३६०, बिनौला तेल २५० की जोरदार मंदी बन सकती है। ११ फरवरी से २५ मार्च तक उड़द, मूंग, मोठ में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ मार्च से २ मई के बीच हल्दी में ५०० की जोरदार तेजी, चना २५०, अरहर ३६९, मसूर ३६०, सरसों २९९ की एक बार तूफानी तेजी बन सकती है।

मार्च 2002

१५ मार्च से ७ अप्रेल तक चना ६१, मसूर २९९, सरसों १५० की जोरदार तेजी आ सकती है। २७ फरवरी से १५ मार्च तक लौंग में जोरदार मंदी आ सकती है। २९ मार्च से १५ अप्रैल तक सरसों में २५० की मन्दी, अरहर २५०, चना मसूर में २०५ की झड़पी की मन्दी आ सकती है। व्यापार में किसी प्रकार की कोई गारण्टी नहीं होगी।

बाजार संक्षिप्त सार सन् 2001-2002 ई०

२८-१०-१९९८ को अरहर २८५२ थी वो अभी ११-१०-२००० को १४७० के भाव रह गए हैं। ७-११-२००२ तक अरहर ४१९९ के नये भाव हो सकते हैं। दान पुण्य, धर्म, तप, त्याग करते रहें, जिससे भाग्य वृद्धि होकर व्यापार में लाभ हो सके। सरसों २८-१०-१९९८ को २७००-२८०५ के नये ऊँचे भाव हुए, ११-१०-२००० को ११५० के करीब भाव रह गए हैं। सन् २००० के वर्षाकाल में पानी वर्षा कम हुई है। सूखे जैसी स्थिति है। पाम आयल तैल मलेशिया विदेशों से ४३ लाख टन आयात होने से तेलों में भारी मंदी चल रही है। २३-१०-१९९८ को सरसों तेल ६५-७० रुपये प्रति किलो था, अब २५ रुपये प्रति किलो के भाव चल रहे हैं। ३१-१२-२००१ या १५-१-२००२ तक सरसों तेल ५५-७२ के भाव होने का अनुमान है। गुड़ नीचे ७७७ ऊँचे में १६०० हो सकता है। चीनी १६-९९ KG वाली २१-९९ KG के भाव बिक सकती है। पोस्तादाना ८१ वाला १४०-१६० पौने २ वर्ष के अन्दर भाव हो सकते हैं। हल्दी ३८ वाली १४-१६ के भाव नीचे होकर- आगे ढाई वर्ष में घटबढ़ से अच्छी तेजी आ सकती है। बीच बीच में अच्छी मंदी Reaction भी आ सकते है। उड़द सन् १९९९ में १७००-१८०० के भाव थी। वो जून २००० में २१०० के आसपास नये भाव टच हुए अभी ३०-१२-२००० को २७०० के भाव चल रहे हैं- ११ जुलाई २००२ तक कभी ७९९-९९९ के नीचे भाव हो सकता है। सन् १९९६ में नारियल तैल टीन १५ KG के भाव ११५१-११९९ के भाव थे, अभी ५७०-५९० के भाव चल रहे हैं वो ढाई वर्ष में ११००-१४९९ के भाव हो सकते हैं। ज्वार ९०० वाली २ वर्ष में १९००-२९९९ के भाव हो सकते हैं। २¼ वर्ष में नमक, लहसुन, बड़ी इलाइची, रुई में अच्छी तेजी बन सकती है।

शेयर्स बाजार

शेयर बम्बई B.S.E. संवेदी सूचकांक जो २३-१०-१९९८ को २७४१ के करीब था वो १५ महीने में बढ़ करके १४ फरवरी २००० को ६१५० से होकर १०२ दिन बाद २३ मई २००० को ३८३१ होकर १३ सितम्बर २००० को ४७६३ होकर १९-१०-२००० को ३४९१ नीचा Index होकर फिर बाजार बढ़े। १३ दिसम्बर २००० को ४३३३ होकर, २६-१२-२००० को ३८७० के आसपास INDEX बताया जा रहा है। ११-७-२००१ या २१-११-२००१ तक के मध्य २५००-२९०७ के B.S.E. index के निम्नतम स्तर को छू सकता है।

नीचे शेयर्स मारकेट की तूफानी घटाबढ़ी की तारीखें प्रस्तुत की जा रही हैं। इन तारीखों के १५-२० दिन पहले से ५ दिन बाद तक भयंकर मन्दी आकर-नीचे भाव हो सकते हैं। नीचे भाव बनने के बाद आगे १५-२१ दिन में अच्छी तेजी शेयर्स मारकेट में आ सकती है। यदि लिखी तारीख में १५-२० दिन से तेजी चले-तो यहां ऊंचे भाव बनने

की आशा है। बाजार रुख देख कर व्यापार करें:-

(१) ३ मार्च २००१ (२) १८ अप्रेल २००१ (३) २३ जून २००१ (४) ५ जुलाई २००१ (५) १६ नवम्बर २००१ (६) ३० अप्रेल २००२ (७) ११ जून २००२ इन तारीखों के पास १५ दिन पूर्व बाजार खतरनाक इकतरफा लाइन चल सकती है। बम्बई शेयर स्टॉक एक्सचेन्ज में करीब २१९९ या २ हजार कम्पनी के शेयर-बाजार की घटाबढ़ी हो सकती है। किसी में तेजी आती है तो कभी किसी में मंदी आती है। अत: भिन्न भिन्न पद्धतियों से तेजी मंदी चांस निकालने से कभी-कभी कहीं-कहीं विरोधाभास भी हो सकता है। अत: बाजार रुख देखकर व्यापार करें। इन तारीखों के १०-१५ दिन पूर्व पहले मंदी का अन्धड़ (आंधी) चल सकती है। सावधानी से व्यापार करें, व्यापार में जिम्मेदारी कभी भी नहीं होगी।

शेयर्स मारकेट के चांस

शेयर्स बाजार ही ऐसा मार्केट है, जिसमें किसी शेयर के भाव पंद्रह महीनों से लेकर, ढाई वर्ष में, साढ़े ३ गुने से लेकर २० से ४५ गुने होते देखे गए हैं। ऐसे भाव चना, गुवार, सरसों के भावों में बढ़ोत्तरी होती नहीं देखी गई है। सरसों में ९ महीनों से लेकर २ साल में ड्योढ़े से २ गुने से कुछ अधिक भाव होकर फिर तो आधे पौने भाव रह सकते हैं। जैसे कि सन् १९९८ में जी टैली फिल्म शेयर २७३ को एक शेर का भाव था, वो फरवरी २००० में १६३० के भाव हुए यानी १०० शेयर सवा सत्ताईस हजार लगाते तो सवा सोलह लाख हो जाते। फिर यही शेयर १६३० वाला, अक्टूबर २००० में ३००-२५० के आसपास भाव बताए गए। यानी १६ लाख के ढाई या ३ लाख रह जावें। कोई मामूली बात तो नहीं। अर्थात् शेयर्स मारकेट में एक रुपये के ३ या ४ रुपये होना फिर ३-४ रुपये के एक रुपया रह जाना मामूली सी बात है। कभी-कभी तो १०० रुपये के ५ रुपये ही रह जाते हैं। बड़े घाटे हानि को सरसों, गेहूँ से लाभ कवर करने में ५-७ वर्षों में परा कर पाते तो शेयर मारकेट यदि लाइन सही मिल जाये, बड़े घाटों को डेढ़-२ वर्ष में पूरा किया जा सकता है। जैसे कि १४ से २३ फरवरी २००० के मध्य जी टैली फिल्म शेयर १६३० का बेच देते, १५-१०-२००० तक नीचा भाव २१० भाव में खरीद कर दे दे तो, १०० शेयर में- १२ लाख की रकम ८ महीने के अन्दर मिल जाती। यानी २३-१०-१९९८ से लेकर १९-१०-२००० के बीच २ वर्ष में १५ लाख + १२ लाख = २७ लाख रुपये शेयर्स मारकेट में कमा सकते थे- थोड़ी सी रकम से।

२३-१०-१९९८ को A.C.C. शेयर ८२ का भाव था, वो २७-१२-१९९९ के बीच ३०३ का भाव हुआ। ऐसा कोई सवा चौदह महीने में पौने चार गुना हुआ। फिर १९-१०-२००० तक, १० महीने में वापिस A.C.C शेयर का भाव ८४ का रह गया। फिर ५५ दिन में तेजी आई ए.सी.सी. शेयर १६८-१७० के करीब भाव हुए यानी पौने २ महीने में २ गुणा के करीब भाव होना सहज बात तो नहीं है। सरसों, चना, जीरा में ऐसी तो तेजी आती नहीं देखी गई है। शेयर्स मारकेट की तेजी व मन्दी-दोनों ही बड़ी खतरनाक रूप से पलटी देखी गयी है।

इनफोसिस टेक्नोलोजी (Infosys Technology) शेयर फरवरी २००० में १३८१३ के टॉप भाव में बिका, १९-४-२००० को इनफोसिस टेक्नोलोजी शेयर ७२५०, २८-४-२००० को ८१००, ५ मई को ८५००, २९ मई को ५८७६, ३१मई को ६९९६, ३ जुलाई को ८६५६, २६ जुलाई २००० को इन्फोसिस शेयर भाव ६६०८ रह गया। ४-८-२००० को ६२८८, १३-९-२००० को ८८४७ हो गया। यानी ४० दिन में ६२८८ वाला Infosys ८८४७ के भाव होना एक बड़ी बात है। १९-१०-२००० को ६१५०होकर फिर तेजी चली, ७-८ नवम्बर के आसपास ८००१-८१०० के करीब भाव होकर २७-१२-२००० को ५४५०-५५०० के आस पास भाव बताए गए हैं। मतलब शेयर मारकेट में १५ दिन ३८ या ५५ से ६५ दिन की यदि इकतरफी तेजी या इकतरफा मन्दी की लाइन मिल जाये- तो व्यापार में बड़ा लाभ कमाया जा सकता है। कभी-कभी नीचे Lowest भाव बनाने के १०२ से १०४ दिन बाद शेयर में, HIGHEST या २० Lowest भाव भी होते देखे गये हैं। मतलब रोज रोज का तेजी या मन्दी व्यापार शेयर्स मारकेट में लाभ कमाना, संभावना काफी कम है। नीचे में खरीदना और ऊँचे भाव में बेचना, व्यापार में लाभ मिलने का लक्षण है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी। वस्तु शेयर्स भावों के संबंध में कोई जवाबदारी नहीं होगी। उपरोक्त लिखे भावों से शेयर भारकेट की घटाबढ़ी समझें। ग्राफिक सदस्य बनकर बाजार तेजी मन्दी की लम्बी लाइनों की जानकारी लेवें।

(१) १३ दिसम्बर २००० से ३ जनवरी २००१ तक शेयर्स मारकेट ३००-४०० पोइन्ट की मन्दी, तो ४ जनवरी २००१ से १५ जनवरी २००१ तक, A.C.C L & T, S.B.I, रिलाइन्स, इनफोसिस टेकनोलोजी, NIIT, DSQ आदि शेयर्स में तेजी आये तो १७ जनवरी से २७ जनवरी या ९-२-२००१ तक नीचे भाव हो सकते हैं। अथवा बाजार जैसी लाइन पकड़े वैसा ही व्यापार करें। B.S.E. संवेदी शेयर्स सूचकांक ५००-७०० की जोरदार गिरावट आ सकती है। बाजार रुख देखकर ही व्यापार करें।

(२) १६ मार्च से २-४-२००१ तक शेयर्स मारकेट में जोरदार मन्दी आ सकती है।

(३) ९ मई से २१ जून २००१ तक शेयर्स में अच्छी तेजी आ सकती है। यहाँ ७००- ९०० पोइन्ट की तेजी आ सकती है।

(४) २ जुलाई से ११ सितम्बर २००१ तक शेयर्स मारकेट में अच्छी तेजी आ सकती है। फिर भी ५-७ अगस्त से जैसी बाजार लाइन पकड़े वैसा व्यापार करें।

(५)१६ सितम्बर से २७ अक्टूबर के बीच शेयर्स मारकेट ७००-९०० पोइन्ट की तूफानी गिरावट आकर फिर इस मन्दी के बाद २२-३१ दिन में सवाए-ड्योढ़े भावों की कुछ शेयरों में तेजी आने की संभावना हैं ग्राफिकल सदस्य बन कर ताजी सलाह मंगावें।

(६) २७ नवम्बर से २१-१२-२००१ तक शेयर्स मारकेट में ७००-९०७ *Point* की तेजी आ सकती है।

(७) २३ दिसम्बर २००१ से ७ मार्च २००२ के मध्य शेयर्स में तूफानी गिरावट ७००-११०७ Point की B.S.E. शेयर्स सूचकांक में मंदी आ सकती है।

(८) ९ मार्च से २७ मार्च २००२ के बीच, S.B.I, L&T, L.M.L, WIPRO, DSQ, A.C.C, अपोलो, सैंचुरी, टिस्को, रिलायंस में अच्छी तेजी आ सकती है।

(९) २१ मार्च से ११ अप्रैल २००२ के बीच जोरदार मन्दी अथवा ये मन्दी बढ़ी तो २७ अप्रैल २००२ तक मन्दी चल सकती है। फिर बाजार जैसी लाइन पकड़े वेसे व्यापार करें। २७-४-२००२ से १५ मई २००२ तक शेयर्स मारकेट में तेजी आयेगी। यदि २५ से २१ अप्रेल के बीच मन्दी में नीचें भाव बने हो तो ही तेजी मानें अन्यथा मन्दी आयेगी। १५ मई २००२ से २९ जून तक अच्छी तेजी आयेगी। २९-६-२००२ से १५ सितम्बर २००२ तक अच्छी तेजी चलने की आशा है। व्यापार में लाभ हानि की कोई किसी प्रकार की गारण्टी नहीं होगी।

कुछ महत्वपूर्ण चांस

(१) २५ अप्रेल २००१ के ५-९ दिन इधर उधर, B. S. E. शेयर्स INDEX ऊँचा या नीचे भाव होने का समय है। यह मंदी एक महीने या डेढ़ महीने पूर्व से चली आ रही लाइन में INDEX में ९००-११०० Point की गिरावट या तेजी का उछाला आकर के बाद में २३ दिन या ४५ दिन के अन्दर ७०० POINT की तेजी चलेगी। २० से २९ अप्रेल २००१ तक LOWEST नीचा भाव बने तो आगे ९०० POINT की तेजी अन्यथा मन्दी समझना। शेयर मारकेट में २१९९ कम्पनी के शेयर्स प्रचलित हैं। अत: कभी कोई मंदी में तो कोई किसी शेयर्स में तेजी चलती है। अत: दूसरे तरीके से तेजी मन्दी इस प्रकार चल सकती है।

(A) (-१७४५ डी) १५ जनवरी से २७ मार्च २००१ तक A.C.C., Reliance, इनफोसिस टैकनोलाजी शेयर्स में अच्छी तेजी, फिर भी लाइन जैसी चले वैसा ही व्यापार करें। २७ मार्च से ५ अप्रेल तक जोरदार मन्दी अथवा ये मन्दी २७ अप्रैल २००१ तक चल सकती है।

(B) २३ जुलाई या २१ अगस्त से १५ सितम्बर २००१ तक शेयर्स में तूफानी तेजी आ सकती है। यहाँ १६-१९ अगस्त या १५ सितम्बर २००१ शेयर्स Top अथवा LOWEST होने का समय है। यहाँ तूफानी लाइन चलने की आशा है। ७००-१५०० पोइन्ट की लाइन २५-३८ दिन के अन्दर चल सकती है।

(C) २० अप्रेल २००२ या ५ मई २००२ इन तारीखों के आसपास तेजी या मंदी २५ दिन पूर्व से चलकर भयंकर घटाबढ़ी के विस्फोट में नीचा या ऊँचा B.S.E INDEX टच हो सकता है। सावधानी से व्यापार करें। ग्राफिकल सदस्य बनकर, शेयर्स चाँस मंगायें। फोन PP ३६६५१८, ५४०३८९ या पते की जानकारी ज्ञात करें। एकदम एक सप्ताह में ५००-७०० पोइन्ट की तेजी के उबाल में माल बेचना व महीने या डेढ़ महीने की मंदी की गिरावट में नीचे भाव बने, अच्छी कम्पनी के शेयर्स खरीदें- १५-२३ दिन की तेजी में डयोढ़े सवाए भाव बढ़ने पर ७७ % माल तेजी में बेचना नहीं भूलें। महत्वपूर्ण FORMULA को उपयोगी होने पर उपयोग में ला सकते हैं।

(D) (१) २५ जनवरी २००१ इसके १०-१५ दिन पूर्व से महत्वपूर्ण लाइन चल सकती है। (२) ५-४-२००१ (३) २५-७-२००१ (४) १-९-२००१ (५) २१-२-२००२ (६) २०-४-२००२ (७) २३-६-२००२, १५-२० दिन पूर्व से लाइन चल कर २-३ दिन में लाइन बदलकर इकतरफा तेजी मंदी ११-१५ दिन को चल सकती है।

(E) नीचे भावों में खरीदना ऊँचे भाव में बेचना हमेशा याद रखें अथवा २ अप्रैल २००१ से २५-४-२००१ तक तूफानी लाइन चलेगी। (B) २८ जून २००१ से १९-७-२००१ तक (C) १५-९-२००१ से १८-१०-२००१ तक यहां या फिर २१-११-२००१ को नीचा भाव बन सकते हैं। उपरोक्त ५ प्रकारों में जो लाइन सही चल रही हो, उसे ही उपयोग में लावें।

नोट :- सन् २००० में पानी वर्षा न के बराबर हुई। खेत जमीन में सरसों गेहूँ की बुवाई २५ से ४१ % हुई है भीषण सूखा पड़ा है। ३० दिसम्बर २००० को कुछ वर्षा हुई है। शायद २१ जनवरी २००१ को पानी वर्षा हो सकती है। ऐसा सूखा ३५-४० सालों से नहीं सुनने में आया है। सन् १९४१-१९६४ सन् १९८७ में सूखा पड़ा था पर ये सूखा ज्यादा विकराल रूप में है।

पिरामिड शक्ति का रहस्य

'PYRAMID' (पिरामिड) शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों को (पिरा+मिड को जोड़कर बना है। 'PYRA' का अर्थ 'अग्नि' है तथा 'MID' का अर्थ मध्य है। पिरामिड शक्ति के विशेष प्रभाव (बायोकोस्मिक तथा विद्युत चुम्बकीय) का प्रमाणिक तौर से पता लगाने वालों में सर्वप्रथम फ्रेन्च वैज्ञानिक Mr. M. Bovis थे। उनका अनुसरण चेकोस्लावाकिया के एक रेडियो इंजीनियर Mr. Karel Drbal ने किया।

12 से 24 घन्टे तक पिरामिड के अन्दर निम्न वस्तुएं रख कर लाभ प्राप्त करें।

1. पिरामिड के नीचे रखा गया पानी कोस्मिक वाटर बन जाता है। और ऐसे COSMIC WATER के सेवन से पाचन क्रिया मजबूत होती है। जख्म-इनफैक्शन, त्वचा रोग आदि को समाप्त करता है। 2. सिगरेट, काफी, पाऊडर, चाय पत्ती आदि में से हानिकारक तत्त्वों के प्रभाव को कम कर देता है। 3. अंग्रेजी दवाईयों के साईड इफैक्ट को कम करता है। 4. खाद्य पदार्थों में विटामिन्स की बढ़ोत्तरी करता है।

पिरामिड और स्वास्थ्य

आप पिरामिड "9X9" का बनाये तथा उपचार के वक्त रोगी उत्तर-दक्षिण दिशा की तरफ लेटे या फिर पिरामिड का एक कोना उत्तर की तरफ हो। (दिशासूचक यंत्र से उत्तर दिशा ज्ञात करें)। लगभग 15 से 20 मिन्ट तक पिरामिड लाभ लेवें। यह लाभ दिन में दो बार अवश्य लेवें।

1. अनिद्रा व एसिडिटी :- पीठ के बल तथा आप पिरामिड को मणीपुर चक्र (SOLARPLUXES) पर 15 से 20 मिनट प्रतिदिन रखे। 2. साइनस, आंखें-नाक एवं दाँतों की समस्या :- पीठ के बल पर लेटकर आप अपने पूरे चेहरे पर माथे से ठुड्डी तक 15 मिनट पिरामिड को रखें। 3. माइग्रेन-कान-बाल की समस्या :- आप कुर्सी पर बैठे ही पिरामिड को सिर पर टोपी की तरह पहने। कम से कम 10 मिनट तक। 4. छाती की समस्या :- पीठ के बल लेटकर पिरामिड को छाती पर (हृदय क्षेत्र से हटाकर) 15 मिनट रखें। 5. कमर-पीठ दर्द :- आप पेट के बल लेट जायें तथा पिरामिड को रीढ़ क हड्डी के ऊपर रखें। यदि एक पिरामिड है तो जहां ज्यादा दर्द है वहीं पर ही रखें यदि दो पिरामिड हो तो सोने पे सुहागा रहेगा। 6. घुटनों की समस्या :- आप लेट कर या बैठ कर लगभग 20 मिनट तक अपने घुटनों के ऊपर पिरामिड रखे। आप अलग-अलग पिरामिड अलग-घुटनों के ऊपर भी रख सकते हैं। 7. टखने-पैर की समस्या :- दोनों पांवों के मध्य आप कुर्सी पर बैठकर पिरामिड को जमीन पर रखें तथा अपने दोनों पंजों को पिरामिड की बाहरी दीवार से छुआ कर 20 मिनट तक रखें। 8. मानसिक दक्षता के लिए :- पिरामिड को प्रतिदिन सुबह-शाम 10 से 15 मिनट तक सिर पर टोपी की तरह पहने। पिरामिड कफ, सर्दी-जुकाम, जोड़ों के दर्द, कब्जी आदि बीमारियों में रामबाण दवा है।

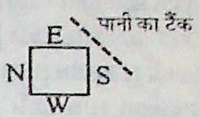
पिरामिड का प्रयोग

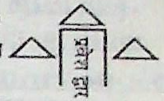
आत्मविश्वास बढ़ाने वाला, ध्यान-साधना-योग में शीघ्र दक्षता प्रदान करता है। आप चलते-फिरते भी पिरामिड अपने पास रख सकते हैं। प्लास्टिक के छोटे-2 पिरामिड बने होते हैं जिनमें छोटे-छोटे नौ पिरामिड बने होते हैं। इन पिरामिडों को प्रयोग करते समय भी नुकीले हिस्से बाहर की तरफ रखे। इससे आपकी छाती की समस्या, अनिद्रा के निदान के साथ-साथ हृदय को मजबूती, तनाव मुक्ति, सांस की बीमारी में लाभप्रद है। पुरुष अपने शर्ट या अन्दरूनी बनियान की जेब में रखें। स्त्रियां अपने ब्रा मध्य में रखे।

पिरामिड और वास्तु

जब आपके पास वास्तु दोष निवारण का कोई और उपाय न सूझ रहा हो (बिना तोड़-फोड़ के) तब आप पिरामिड को अपनाकर वास्तु दोष काफी हद तक दूर कर सकते हैं:-

1. यदि मकान/प्लॉट में कार्नर ज्यादा हो तो तब जितने कार्नर (CORNER) हों वहां पर पिरामिड रख देवें या लटका देवें। 2. यदि प्लॉट/मकान की आकृति ठीक न हो तो उस जगह के अन्दरूनी हिस्से को काल्पनिक तौर पर चोरस आकृति देवें तथा उस काल्पनिक चोरस के चारों कार्नरों पर पिरामिड लगाये व रखें। 3. बच्चों की एकाग्रचितता के लिए उनकी पढ़ाई की टेबल पर, कुर्सी के नीचे रखें या फिर बच्चे जहां पढ़ते हो वहां पर पिरामिड लटका देवें। 4. पूरे मकान/आफिस आदि को ऊर्जामय बनाने के लिए उस जगह को काल्पनिक तौर पर नौ हिस्सों में बांटे तथा उन नौ हिस्सों में पिरामिड लगाये या रखें। 5. यदि आग्नेय कोण (SE) में पानी का टैंक हो तब आप काल्पनिक तौर पर पानी के टैंक व आग्नेय कोण पर एक रेखा खींचे तथा काल्पनिक रेखा पर कुछ पिरामिड (छोटे-छोटे) रखें। 6. अपने आफिस, घर, दुकान आदि में भी आप पिरामिड रखकर चमत्कारिक प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं। आप भी अपनी कुर्सी-टेबल आदि के नीचे एक-एक रखें। 7. प्रवेश द्वार गलत जगह पर हो तब प्रवेश द्वार पर (बाहरी तरफ) ऊपर व दाएं-बाएं पिरामिड लगायें। 8. यदि आपके कमरे में वास्तु दोष है तब आप कमरे के प्रवेश द्वार के ऊपर (बाहरी तरफ) तथा अन्दर दो विपरित दिशाओं पर एक-एक पिरामिड रखें या चिपकाये या लटकायें। *लेखक- "पंडित रविन्द्रा" न्यूमिरोलोजिस्ट, डाउजर, यूरोपियन वास्तुकार, रेकी- मैग्नीफाईड, पिरामिड- क्रिस्टल- रूद्राक्ष हिलर*





ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

साईज़ 24 × 18 सें. मी.

मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला युगप्रवर्त्तक अद्वितीय प्रकाशन

लेखक :- प्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक-श्रीमार्त्तण्ड पंचांग)

विवाहसम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी जन्मकुण्डलियों के मिलान पर यह एक प्रामाणिक पुस्तक है । इस पुस्तक में छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है । **चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैंडर्ड अन्तर; समस्त भारत के 8 से 36 अक्षांश वाले किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवम् सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं.टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 1971 से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली पुराने पंचांगों की सहायता के बिना 10-15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम और छठे अध्याय में ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक 11 निबन्ध दिए गए हैं ।**

इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए—

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी 36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं । इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है । इस मिलान सारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलान सारणियां भी इस पुस्तक में आपको मिलेंगी।

(2) गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक ''नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'' आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित ''एक-नक्षत्र-जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'' - आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है। ।

(3) कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय के लिए इस पुस्तक में 7 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटाव मात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वर-कन्या के विवाहसंबंध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है । कुजदोष मात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(4) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन-मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूलग्रन्थों (संहिता, होरा आदि)से सैंकड़ों प्रमाण वाक्य पदे-पदे उद्धृत किए गए हैं।

''क्या नाडीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है ?,'' ''कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है''?— इस प्रकार की अनेक मिलानसंबंधी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित सप्रमाण समाधान इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

381. Urban Estate . Ph-2. Jalandhar से Capt .A.P. Singh इस पुस्तक के बारे में लिखते हैं —'' It is really an eye-opener unique book on Horoscope-matching''
(जन्मपत्र-मिलान पर यह वस्तुतः एक आंखें खोल देने वाली अद्वितीय पुस्तक है।)

पुस्तक का डाक व्यय सहित मूल्य 375 रुपये M.O. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए। ध्यान रहे- वी.पी. नहीं की जाएगी । M.O. के कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखिए।

मूल्य 350 रु. + डाक व्यय 25 रु.

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,
अभिजित् प्रकाशन, 59/6 (अभिजित्), P.O पंचकूला (हरियाणा)
Pin-134 109
Phone- 0172 —565303

सकल पदारथ हैं जग माही, भाग्यहीन नर पावत नाहीं।

प्राचीन भृगु संहिता महाशास्त्र

(संस्कृत-हिन्दी) (भाषा-टीका सहितम्)

यह ग्रंथ सभी दस खण्डों में हमारे यहाँ उपलब्ध है -

- भृगु संहिता कुण्डली खण्ड
- भृगु संहिता फलित खण्ड
- भृगु संहिता स्त्री खण्ड
- भृगु संहिता राज खण्ड
- भृगु संहिता नरपति जयचर्या खण्ड
- भृगु संहिता मूक प्रश्न विचार खण्ड
- भृगु संहिता संतान उपाय खण्ड
- भृगु संहिता नष्ट जन्मांग दीपिका खण्ड
- भृगु संहिता जातक प्रकरणम खण्ड
- भृगु संहिता सर्वाशिष्ट निवारण खण्ड

★ शास्त्रों मे ऐसा वर्णन है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवनकाल में तीन समय ऐसे आते है जैसे दो शुभ और एक अशुभ या दो अशुभ और एक शुभ। अतः मनुष्य का यह जान पाना अत्यन्त ही कठिन है कि शुभ समय कब आयेगा, परन्तु भृगु संहिता ग्रंथ के द्वारा प्रत्येक समस्या का समाधान संभव है। महर्षि भृगु ऋषि ने प्रत्येक प्राणी के वर्तमान, भूतकाल एवम् भविष्यकाल के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की है।

★ प्रत्येक व्यक्ति के जीवनकाल में घटति घटना का विवरण, जातक की उम्र के मुताबिक होगा। जैसे एक वर्ष से पांच वर्ष तक, पाँच से दस वर्ष तक, पच्चीस से तीस आदि मृत्यु का कारण भी उपलब्ध है।

★ कुण्डली खण्ड में अनेक कुण्डली और फलित खण्ड में उसका फलादेश अर्थात ज्योतिष शास्त्र का कोई भी विषय इस ग्रंथ में निहित है (ग्रंथ का एक-एक अक्षर अपनी जगह पर सर्वथा उपयुक्त एवम् बहुत गहरे अर्थो से युक्त है। इस महान् ग्रंथ का एक-एक खण्ड अनेक ग्रंथों की बराबरी करता है।

★ ग्रहों की दृष्टि का फल व नष्ट ज..ऊ का स्टीक विचार तो अनूठा एवम् अद्वितीय है ही, परस्पर राजयोगों का विस्तृत व प्रमाणिक विवेचन भी इसमें मिलेगा। भृगु संहिता महाशास्त्र को पढ़े बिना ज्योतिष स्वाध्याय आधा अधूरा सा ही रह जाता है।

★ सौभाग्यशाली समुद्र सबके जीवन में एक बार अवश्यक आता है। जिसके पास ज़ितना बड़ा पात्र होता है, उतना उसमें भर लेता है। सौभाग्य वृद्धि के समय का पूर्व ज्ञान हो तो उसका समुचित लाभ न उठा पाने का दुःख आदि की सम्यक् जानी प्राप्त की जा सकती है "भृगु संहिता महाशास्त्र" से।

★ यह प्राचीन ग्रंथ अनेक वर्षों की खोज, हजारों मील की यात्रा सैकड़ों विद्वानों के अध्यवसाय तथा लाखों रुपये व्यय करके अत्यन्त ही जीर्ण दशा में कठिनता से, सर्वधारण जनता के हित के लिए यह महान् ग्रंथ सुलभ हो चुका है।

★ सुविस्तृत व मिलावट से रहित सर्वतोभावेन अर्थ बोधक व्याख्या से युक्त एक प्रमाणिक एवम् प्राचीन ग्रंथ, जो स्वयं एक पुस्तकीय पुस्तकालय में विभाजित है और तीन सुन्दर सजिल्द (क्लाथ बाइंडिंग) में उपलब्ध है।

पुराणाकार साईज 20 X 30/6 बढ़िया सफेद लगभग 2500 पृष्ठ मूल्य 4800 (अड़तालिस सौ रुपये मात्र)।

सभी प्रकार की धार्मिक, इण्डस्ट्रियल, टैक्नीकल, ज्योतिष ग्रंथ आदि की पुस्तकें प्राप्त करने का एकमात्र स्थान-

डी.पी. बी. पब्लिकेशंस

110, बड़शाहबुल्ला चौक, पो. बॉक्स 2037, चावड़ी बाजार, दिल्ली- 110006 ☎ 3273220, 3251630

वास्तुकला एवं मंत्र-तंत्र-यंत्र संबंधित पुस्तकें एवं सिद्धि प्रदायक शास्त्रोक्त यंत्र

वास्तुकला सम्बन्धी पुस्तकें

	मूल्य रुपये
वास्तुकला और भवन निर्माण	१२५/-
भारतीय वास्तु शास्त्र	७५/-
सचित्र विश्वकर्मा प्रकाश (संस्कृत श्लोक और व्याख्या)	१२०/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी पुस्तकें

दश महाविद्या तन्त्र सार (योगीराज यशपाल जी)	५०/-
बगलामुखी महासाधना (योगीराज यशपाल जी)	५०/-
यंत्र विधान (योगीराज यशपाल जी)	११०/-
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि (योगीराज यशपाल जी)	११०/-
यंत्र माला (योगीराज यशपाल जी)	४०/-
संजीवनी विद्या: महामृत्युंजय प्रयोग (योगी० यशपाल जी)	३५/-
सिद्ध शाबर मंत्र (योगीराज यशपाल जी)	४५/-
तंत्र प्रयोग (लेखक: योगीराज यशपाल जी)	४०/-
आदित्य हृदय स्तोत्र- सूर्योपासना सहित (यशपाल जी)	२५/-
उड्डीश तंत्र (सम्पादन: योगीराज यशपाल जी)	२५/-
दत्तात्रेय तंत्र (सम्पादन: योगीराज यशपाल जी)	२५/-
मंत्र रामायण (योगीराज यशपाल जी)	२५/-
आदि मंत्र शास्त्र (योगीराज यशपाल जी)	२५/-
तंत्र महायोग (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३५/-
महाविद्या तन्त्र- मन्त्र (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३५/-
सचित्र तान्त्रिक जड़ी-बूटी दर्शन (यो० अटवाल)	४५/-
गुरु नानक मंत्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	२५/-
मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)	३०/-
बावन जंजीरा (यशपाल जी व अटवाल जी)	५०/-
मंत्र दीक्षा और रहस्य (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)	४०/-
तंत्र के अचूक प्रयोग (तांत्रिक बहल)	३०/-
पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (बहल)	३०/-
... नागमणि (तांत्रिक बहल)	३०/-
... रोग निवारण (तांत्रिक बहल)	४०/-
... यंत्र और व्याख्या सहित) तांत्रिक बहल	३०/-
... बहल)	३०/-

सिद्धि प्रदायक शास्त्रोक्त विधि-विधान पूर्वक निर्मित यन्त्र

शुद्ध तांबे की चादर पर पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से शुभ घड़ी-मूहूर्त्त में तैयार किये गये ये यंत्र साधकों के लिए वरदान हैं-

1. श्री यंत्र
2. महालक्ष्मी ऋद्धि-सिद्धि
3. श्री दुर्गा (अम्बा) यंत्र
4. सिद्धि श्री सरस्वती यंत्र
5. श्री गणेश यंत्र
6. श्री गायत्री यंत्र
7. श्री महामृत्युंज्य यंत्र
8. श्री बगलामुखी यन्त्र
9. श्री महाकाली यन्त्र
10. श्री कुबेर यन्त्र
11. श्री कनकधारा यन्त्र
12. श्री सिद्धबीसा यन्त्र
13. श्री पंचदशी यन्त्र
14. श्री लक्ष्मी गणेश यन्त्र
15. श्री मंगल यन्त्र
16. श्री राम यन्त्र
17. श्री राम चरण चिन्ह
18. श्री सूर्य महायन्त्र
19. श्री नारायण यन्त्र
20. श्री नवनाथ यन्त्र
21. श्री घण्टा कर्ण यन्त्र
22. श्री घटार्गल यन्त्र
23. श्री कार्यसिद्धि यन्त्र
24. श्री गायत्री यंत्र
25. श्री नवग्रह यंत्र
26. श्री षोड्शमातृका यन्त्र
27. श्री बटुक भैरव यंत्र
28. श्री वशीकरण यंत्र
29. श्री व्यापार वृद्धि यंत्र
30. श्री लक्ष्मी कुबेर यंत्र
31. श्री सूक्त यंत्र
32. श्री दुर्गाबीसा यंत्र
33. श्री शाबर यंत्र
34. श्री नर्वाण यंत्र
35. श्री संतान गोपाल यंत्र
36. श्री हनुमान यंत्र
37. राहु यंत्र
38. केतु यंत्र
39. शनि यंत्र
40. मंगल यंत्र
41. श्री विनायक यंत्र
42. श्री विष्णु यंत्र

नोट: उपरोक्त सभी ताम्र यन्त्र हमारे यहां उपलब्ध हैं। प्रत्येक यन्त्र का मूल्य 251/-रुपये डाक खर्च सहित। आधी रकम एडवांस भेजना अनिवार्य।

धार्मिक और अध्यात्मिक

चमत्कारी ॐ महिमा एवं साधना	५०/-
शंकराचार्य विरचित- तत्व बोध और आत्म बोध	६०/-
मन को वश में कैसे करें	५०/-
प्रभु मिलेंगे कैसे	५०/-
गुरुवाणी (श्रीगुरुग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ, अनुवाद सहित)	१७५/-
श्री गुरुग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ	२५०/-
हमारे सोलह संस्कार: औचित्य एवं महत्त्व	३०/-
ध्यान साधना	७५/-
मन की अद्भुत शक्तियाँ	७५/-
ध्यान योग चिकित्सा	९०/-
विवेक चूड़ामणि (हिन्दी अर्थ व व्याख्या)	१२५/-
ब्रह्मसूत्र: वेदान्त दर्शन	५०/-
योगवाशिष्ठ: महारामायण	१००/-
योगवाशिष्ठ के सिद्धान्त	७५/-
अष्टावक्र गीता	९०/-
जीवन साधना से आत्मिक आनन्द	५०/-
ज्ञान से मानसिक शान्ति	५०/-
धर्म क्या है?	६०/-
जीवन में सुख की खोज	३०/-
आत्मा की जीवन यात्रा	४०/-
भारत के सन्त और भक्त	१००/-
कबीर वाणी (अनुवाद सहित)	७५/-
पातंजल योग सूत्र (हिन्दी व्याख्या सहित)	९०/-
अवधूत गीता (मूल अनुवाद, व्याख्या)	७५/-
कर्मफल और पुनर्जन्म	२५/-

...री आप 200/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें चुनकर उनका पूरा मूल्य एवं 15/- रुपये डाक खर्च के मनीऑर्डर से हमें भेज दें, ...जिस्टर्ड डाक से भेज देगें (रजिस्ट्री खर्चा 25 से 30 रुपये आता है)। बाकि का डाक व्यय हम देगें। वी. पी. नहीं भेजी जाती है।

...र भेजें- अग्रवाल बुक डिपो 460, खारी बावली, दिल्ली-6 फोन: (011) 2943254, 3936116